☆ सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै ☆

निहकलंक हरिशब्द भण्डार

दूसरा भाग

http://nehklankharshabad.com/

✪ तत्करा ✪

मिती-सम्मत	नाम	स्थान		पंना नं:
१५ विसाख २००६ बिक्रमी	रणजीत कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	००१
१७ विसाख २००६ बिक्रमी	माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	०१३
०५ जेठ २००६ बिक्रमी	प्रेम सिँघ दे गृह	बुग्घे	अमृतसर	०२०
०६ जेठ २००६ बिक्रमी		बुग्घे	अमृतसर	०६५
०६ जेठ २००६ बिक्रमी	प्रेम सिँघ दे गृह रात दे समें	बुग्घे	अमृतसर	०८४
०८ जेठ २००६ बिक्रमी	बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	०६७
१८ जेठ २००६ बिक्रमी	लछमण सिँघ दे गृह	दिल्ली	दिल्ली	११३
पहली सावण २००६ बिक्रमी		मेरठ छाउणी	मेरठ	१३६
१५ सावण २००६ बिक्रमी		मेरठ छाउणी	मेरठ	१६६
२१ सावण २००६ बिक्रमी	माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	१६०
२२ सावण २००६ बिक्रमी	माता रणजीत कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	१६५
२३ सावण २००६ बिक्रमी		जेठूवाल	अमृतसर	२०४
२४ सावण २००६ बिक्रमी	माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	२२३
२४ सावण २००६ बिक्रमी	रणजीत कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	२३२
१४ भादरों २००६ बिक्रमी		मेरठ छाउणी	मेरठ	२३८
१७ भादरों २००६ बिक्रमी		मेरठ छाउणी	मेरठ	२६७
०४ कत्तक २००६ बिक्रमी	माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	२६०
०५ कत्तक २००६ बिक्रमी	माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	३००
पहली माघ २००६ बिक्रमी	प्रेम सिँघ दे गृह	बुग्घे	अमृतसर	३१६
०२ माघ २००६ बिक्रमी	प्रेम सिँघ दे गृह	बुग्घे	अमृतसर	३७७

१७ चेत	२०१०	बिक्रमी	मेरठ छावणी	मेरठ	३८५
१६ चेत	२०१०	बिक्रमी	मेरठ छावणी	मेरठ	४०८
पहली जेठ	२०१०	बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह	जेठूवाल	अमृतसर	४३६

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

* १५ विसाख २००६ बिक्रमी रणजीत कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल *

गुर किरपा जन सेव कमाए। गुर किरपा जन, दर आए। गुर किरपा गुरसिख गुर मार्ग लाए। गुर किरपा घर नौं निध उपजाए। गुर किरपा रिद्ध सिद्ध गुर वस कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सेवा लाए। गुर किरपा गुर होए रखवाला। गुर किरपा गुर सद प्रितपाला। गुर किरपा गुर जोत जगाए गुरसिख ज्वाला। गुर किरपा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान होए आप रखवाला। प्रभ किरपा कर भरे भण्डारे। कर किरपा देवे शब्द अधारे। गुर किरपा गुरसिख आए प्रभ चरन दुआरे। गुर किरपा गुरसिख गुर चरन निमस्कारे। गुरमुख साचा गुर पूरा तारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुःख भंजन दुःख निवारे। प्रभ किरपा गुर वड मेहरवान। गुर किरपा जीव उपजे गुर चरन ध्यान। गुर किरपा गुरसिख करे चरन अशनान। गुर किरपा गुर देवे सोहँ नाम निधान। गुर किरपा प्रभ पाया वड बलवान। गुर पूरा गुरसिख साचा शब्द मेल मिलाण। गुर पूरा गुरसिख दर पाईए आत्म ब्रह्म ज्ञान। गुरमुख पूरा मेटे आत्म अन्ध अज्ञान। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस जोत सरूपी आण। गुर पूरा गुर दया कमाए। गुर पूरा गुरसिख दरस दिखाए। गुर किरपा गुरसिख हरस मिटाए। गुर किरपा गुरसिख आत्म मेघ बरसाए। गुर किरपा गुरसिख आत्म तृखा मिटाए। गुर पूरा गुरमुख साचे लेख लिखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपणी सेवा लाए। गुर पूरा गुर सूरा। लिखावे करावे शब्द पूरा। गुरमुख देवे नाउँ मेवा। गुर पूरा शब्द अनहद तूरा। आत्म करे भरपूरा। वड्याई देवे विच देवी देवा। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बिरथा जाए ना तेरी सेवा। गुर पूरा सिख चरनी लाग। गुर पूरा गुरसिख लगाए भाग। गुर पूरा सोहँ शब्द उपजाए साचा राग। गुर पूरा आत्म यति रखाए, तृष्ना काम ना पोहे आग। गुर पूरा

गुरचरन सुहाए, लगाए सिख जिउँ बाशक नाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरसिख चरनी लाग। गुर पूरा जीव जन्त उपाए। गुर पूरा गुरसिख नीव रखाए। गुर पूरा गुरमुख साचे बूझ बुझाए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूपी मेल मिलाए। गुर पूरा गहर गम्भीर। गुर पूरा आत्म देवे गुरसिख धीर। गुर पूरा रक्खे पति अन्तकाल ना लथ्थे चीर। गुरमुख पिलाए प्रभ अमृत साचा सीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सार ना जाणे साध सन्त फ़कीर। गुर पूरा कलि जामा पाए। गुर पूरा भेखधारी सर्ब भुलाए। गुरमुखां प्रभ पूरा दिस आए। गुर पूरा जोत अधारी जोत रहाए। गुर पूरा प्रभ गिरधारी जामा मातलोक विच पाए। गुर पूरा गुर चरन बणाए। हरि का द्वार गुरसिख विरला नाव्हण जाए। गुर पूरा हउमे रोग सोहँ करे कारी, आत्म रोग सर्ब मिटाए। गुर पूरा वड दाता वड भण्डारी, नाम दान दर भिच्छया पाए। गुर पूरा गुरमुख साचे आत्म जोत जगाई, गुर पूरा गुरसिख समाए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम भिख्या पाए। गुर पूरा गुरमुख साचे लेख लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरसिखां पूरन आस कराए। गुर पूरा गुर भगत उधारे। गुर पूरा ब्रह्म विचारे। गुर पूरा गुर जोत अधारे। गुर पूरा साचा विवहारे। गुर पूरा गुरसिख साचे पंचम जेठ साचे तिवहारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत विच मात उतारे। आवे पंचम पंचम पंचम मुख। साध संगत दिसावे साचा सुख। प्रगट जोत निहकलंक अमृत चुआए मुख। आत्म मिटाए सर्ब शंक, सुफल कराए मात कुक्ख। एक लगावे आपणे अंक, जगत तृष्ना मिटावे भुक्ख। महाराज शेर सिँघ गुरसिख तरावे, गर्भवास ना उपजे उलटा रुक्ख। गुर पूरा गुर दातार। गुर पूरा दुखियां भुख्यां पावे सार। गुर पूरा भोग लगाए रुक्ख्यां सुक्ख्यां गुरसिखां जाए तार। गुर पूरा भाग लगाए दुखियां, सर्ब जाए पैज संवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उज्जल करे मुखीआं, जो जन आए दरबार। गुर पूरा पूरन मति पाए। गुर पूरा गुरमुख साचे साचा सति रखाए। गुर पूरा आत्म यति, सोहँ बीज बिजाए। गुर पूरा गुरसिख रक्खे पत्त, चार यारां चोबदार बणाए। एका उपजावे चलावे सोहँ तत्त, महाराज शेर सिँघ नाउँ रखावे। पुरा गुर पूरन उपदेश। पूरा गुर जोत सरूपी किया वेस। गुर पूरा कलिजुग जामा पाया गुरसिख समाया झूठी काया वटाया भेस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई ना जाणे दर खड़े ब्रह्मा विष्न महेष। गुर पूरा वड वड्याई। गुर पूरा सृष्ट भुलाई। गुर पूरा साध संगत साचा सति रखाई। गुर पूरा अन्तकाल कलि सर्ब भृष्ट कराई। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई साचे मार्ग देवे लाई। गुर पूरा सच मार्ग लाए। गुर पूरा सारंगधर आप अख्वाए। गुर पूरा गुरदेव आप आपणी कल प्रगटाए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द चलाए। गुर पूरा सच शब्द लिखाए।

गुर पूरा सृष्ट सबाई एका मार्ग लाए। गुर पूरा सोहँ साचा नाम चार वरन रखाए। गुर पूरा मात साचा थाउँ चरन धर जाए सुहाए। साचा गुर अगम्म अथाहो, निहकलंक जोत सरूपी कलि जामा पाए। गुर पूरा राउ रंक इक्क कराए, आपणा हुक्म आप वरताए। गुर पूरा बैठे आप अडोल अटंक जे कोई देखे दिस ना आए। गुरसिख पूरे जोत सरूपी लाए तनक, आप आपणा दरस दिखाए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे कलि आपणी सेवा लाए। गुर पूरा सज्जण सुहेला। गुर पूरा विछड़यां कलि कराया मेला। गुर पूरा पारब्रह्म परमेश्वर अचरज खेल आप प्रभ खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत साचा प्रभ मिलण दा वेला। गुर पूरा गुर मेल मिलाए। गुर पूरा अचरज खेल कलि आप कराए। गुर पूरा बिन अग्न तेल जोत सरूपी सृष्ट जलाए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल जगत वरताए। गुर पूरा अचरज खेल कराए। गुर पूरा सृष्ट सबाई आप समाए। गुर पूरा जामा धार निहकलंक आप आपणा वक्त सुहाए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा डंक वजाए। गुर पूरे नाद धुन वजाया। गुर पूरे गुरमुख साचे आत्म सुन्न समाध खुल्हाया। गुर पूरे गुरसिख कलि विरले लाध, आपणी सेव लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूर्ब लहणा झोली पाया। गुर पूरा सच फल दवाए। गुर पूरा गुरसिख कर दरस सद बलि बलि जाए। गुर पूरा गुरसिख आत्म मेघ बरसाए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे दरस संसा रोग गंवाए। गुर पूरा संसा रोग गंवाया। गुर पूरा सोहँ साचा जोग कमाया। गुर पूरा गुरसिख तीन लोक वड्आया। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख जगत ना पोहे माया। गुर पूरा माया अग्न जलाए। गुर पूरा गुरसिख पूरे आत्म आपणी जोत जगाए। गुर पूरा गुरसिख सद रसना वाचे प्रभ सर्ब सोत खुल्हाए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोती मेल मिलाए। गुर पूरा आत्म जोत जगाए। गुर पूरा गुरसिख साचे सद रहाए। गुर पूरा सर्ब कला भरपूरा, गुरमुख साचे रिहा समाए। गुर पूरा वड नूरी नूरा एका जोत एका रंग कराए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे बुध बिबेक कराए। गुर पूरा गुरसिख बिबेक। गुर पूरा एका बख्शे चरन टेक। गुर पूरा एका एक अकार सोहँ देवे नाम एक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत अग्न लावे सेक। गुर पूरा सांतक सीतला। गुर पूरा साचा मीतला। गुर पूरा गुरसिख चरन लाग गुरमुख मानस जन्म जीतला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलावे साची रीतला। सोहँ शब्द जग साची रीती। गुर पूरा गुरसिखां आत्म करे पुनीती। गुर पूरा कर दरस गुरमुख साचे काया सीतल कीती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सर्ब जीआं दी परखी नीती। गुर पूरा कर्म उजागर। गुर पूरा वड वड सागर। गुर पूरा सति सति सति नागर।

गुर पूरा गुरसिखां जोत जगाए झूठी देह गागर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां कराए निर्मल कर्म उजागर।
गुर पूरा सद निराहारा। गुर पूरा कर किरपा गुरसिख पार उतारा। गुर पूरा आदि अन्त कोई ना जाणे वड पारावारा। गुर
पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका चरन रखावे साचा दुआरा। गुर पूरा सच द्वार। गुर पूरा पार उतारनहार। गुर
पूरा देवे वड्याई सर्ब संसार। गुर पूरा प्रगटे जोत निहकलंक अवतार। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां
जाए तार। गुर पूरा दुःख भंजन। गुर पूरा चरन धूढ़ देवे साचा अंजन। गुर पूरा गुर दरस जीव साचा जग मजन। गुर
पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा साक सैण सज्जण। गुर पूरा साचा सनबंध। गुर पूरा आत्म मिटावे अज्ञान
अन्ध। गुर पूरा होए सहाए, जम नेड़ ना आए सर्ब कटाए फंद। गुर पूरा होए सहाए दरस दिखाए गुरसिख उपजाए सचा
चन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुःख दर्द मिटाए आत्म उपजाए परमानंद। गुर पूरा सुख उपजाए। गुर पूरा
दर्द दुःख मिटाए। गुर पूरा कलिजुग भुक्ख गंवाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सतिजुग साचा सूखम सुख उपजाए।
गुर साचा सुख उपजाए। सतिजुग साचा मार्ग लाए। गुर पूरा दुःख दर्द मिटाए। गुर पूरा कलिजुग अन्तिम अन्त कराए।
गुर पूरा सांतक सति वरताए। गुर पूरा कलिजुग झूठा खेल मिटाए। गुर पूरा गुरमुख साचे नाम दृढ़ाए। सोहँ साचा नाम
४ सद रसना गाए। गुर पूरा मदिरा मास नष्ट कराए। अन्तकाल कलि कोई रहण ना पाए। गुर साचा सति सन्तोख गुरसिख ४
०२ रखाए। दर दर भिक्ख कोई मंगण ना जाए। गुर पूरा कलिजुग विख आप गंवाए। गुर पूरा सोहँ साची रंगण रंगाए। ०२
गुर पूरा गुरसिख साचे अंगण लगाए। गुर पूरा गुरसिख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सेवा लाए।
गुर पूरा सेव कमाओ। गुर पूरा कर दरस आत्म तृप्ताओ। गुर पूरा मानस जन्म सुफल कराओ। गुर पूरा लक्ख चुरासी
गेड़ कटाओ। गुर पूरा आत्म नेड़ सद नेड़ वसाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस गुरमुख साचे अन्तकाल
कलि तर जाओ। साचा गुर दया धारी। पूरन गुर सदा निमस्कारी। साचे गुर चरन बलिहारी। कलिजुग आए पैज संवारी।
साची जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत निरँकारी। साचा प्रभ जोत निरँकार। साचा प्रभ जोत सरूपी करे
अकार। साचा गुर सन्त मनी सिँघ प्रभ साचे दिया तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दिया चरन प्यार। साचा
गुर सर्ब गुण। प्रभ अबिनाशी चरन लगाए गुरमुख चुण। साचा गुर सोहँ शब्द उपजावे धुन। गुरमुख विरला लए कन्न
सुण। साचा गुर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां जगाए जीव जन्तां विच्चों चुण। गुर पूरा एका जोत। गुर पूरा
गुरसिखां चलावे एका गोत। गुर पूरा कर दरस आत्म मैल जाए सभ धोत। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां

जगाए आत्म जोत। गुरसिखां आत्म जोत जगाए। गुर पूरा सोहँ साचा जाप जपाए। गुर पूरा गुरसिख सेवा विच घृत टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दीपक जोत जगाए। गुर पूरा गुरसिख तरावे। गुर पूरा आत्म तृखा मिटावे। गुर पूरा गुरसिख रिख मुन उपजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए। गुर पूरा गुरसिख तारे। गुर पूरा कलि खेल अपारे। गुर पूरा गुरमुख हिरदे जोत अधारे। गुर पूरा एका जोत जगाए एका एकँकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच धारे। गुर पूरा दया कमाए। गुर पूरा गुरसिख साचे सेव लगाए। गुर पूरा गुरसिख वड देवी देव बणाए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए। गुर पूरा गुरसिख भण्डारा। गुर पूरा देवे नाम अधारा। गुर पूरा गुरमुख साचे आत्म जोत करे उज्जयारा। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नर अवतारा। गुर पूरा वड देवी देव। गुर पूरा गुरसिख लगावे आपणी सेव। गुर पूरा सोहँ देवे साचा नाउँ आत्म साचा मेव। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव ना पावे भेव। कलिजुग जीव प्रभ भुलाया। आप आपणा प्रभ छुपाया। जोत सरूपी कलि जामा पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया। निहकलंक कलि जामा धारया। गुरमुख विरले किसे पूरन परमेश्वर विचारया। साचा प्रभ महान रामेश्वर ना दीसे निराधारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलंकनिह जामा घनकपुरी विच धारया। गुर पूरा गुरसिख वड्याई। गुर पूरा गुरसिख तराई। गुर पूरा सोहँ साची भिक्ख दवाई। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे लए तराई। गुर पूरा सतिगुर सूरा सोहँ शब्द जपाए आत्म जोत जगाए साची नूरा। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला भरपूरा। गुर पूरा गुर माण रखाए। गुर पूरा गुरमुख तराए। गुर पूरा आत्म भुक्ख मिटाए। गुर पूरा निज घर सुख उपजाए। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साची भिख्या पाए। गुर पूरा सद बलिहार। गुर पूरा देवे जोत अधार। गुर पूरा एका जोत करे अकार। गुर पूरा मानस जन्म जाए सुधार। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बेड़ा लावे पार। गुर पूरा सच देवे ज्ञान। गुर पूरा एका बख्शे चरन ध्यान। गुर पूरा गुरमुख देवे सोहँ सच ज्ञान। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ साध संगत बख्शे चरन ध्यान। गुर पूरा कारज सिद्ध। गुर पूरा गुरसिख उपजावे नौं निध। गुर पूरा गुरमुख उपजावे शब्द चलावे गुर मिलण दी साची बिध। गुर पूरा सोहँ शब्द उपावे। गुर पूरा एका जोत अकार रखावे। गुर पूरा शब्द अधार धीर धरावे। गुर पूरा अमृत झिरना नीर वहावे। गुर पूरा गुरमुख साचे अमृत साचा सीर पिलावे। गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा तीर चलावे। सोहँ साचा तीर चलाया। साचे प्रभ कलि कर्म कमाया।

कलिजुग अधर्म सर्ब मेट मिटाया। जीव कुकर्मी कोई रहण ना पाया। एका ब्रह्म एका धर्म जगत चलाया। एका वरन आप उपाया। चार वरन प्रभ सरन लगाया। कारन करन इक्क खेल रचाया। तारन तरन सतिजुग साचा मार्ग लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा नाम जपाया। आप आपणा प्रभ उपाए। जोत सरूपी जोत प्रगटाए। चार वरन इक्क गोत कराए। एका जोत जीव जन्त धराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाए। एका जोत जगत अधारी। एका जोत प्रभ निरँकारी। एका जोत वड संसारी। एका जोत प्रभ निराहारी। एका जोत भगत वछल आप गिरधारी। एका जोत निहकलंक नरायण नर अवतारी। एका जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग खेल करे अपारी । साचा प्रभ साचा राग। गुरमुख साचे प्रभ चरन लाग। वेला अन्तकाल कलि उठ उठ उठ जाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि पकड़े तेरी वाग। अन्तकाल कलि आया मात अन्त। प्रभ अबिनाशी माया पाई जगत बेअन्त। सर्ब घट वासी गुरमुख विरले जगाए सन्त। एका शब्द देवे रहरासी, देवे दरस बैठ इकन्त। कलिजुग जीव होए मदिरा मासी, नज़र ना आए साचा कन्त। प्रगटे जोत घनकपुर वासी, सतिजुग बणाए साची बणत। सतिजुग साची बणत बणाए। आप अगणत महिंमा गणी ना जाए। गुरमुख साचे सन्त प्रभ विच मात उपजाए। बेमुख जीव जन्त प्रभ अन्तिम अन्त कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साची बणत बणाए। सतिजुग साचे प्रभ जन्म दवाया। सति पुरखां सति सति सतिवाद रखाया। आत्म मिटाई तृखा जोत सरूपी दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि मस्तूआणे लेख लिखाया। मस्तूआणे प्रभ चरन टिकाए। गुरसिख सुघड़ स्याणे प्रभ पकड़ उठाए। कलिजुग जीव बेमुख प्रभ साचे ख़ाक रुलाए। अन्तकाल कलि भुन्ने जिउँ भठयाले दाणे, कोई सार ना पाए। गुरमुख विरला कोई साचा रंग माणे, निहकलंक जन सरनी आए। निहकलंक जोत सरूपी पहरया बाणे, गुरमुख साचे सच समाए। माण गंवाए सभ राजे राणे, गुर पूरा आपणी सरन लगाए । एका जोत जगे महाने, कलिजुग अन्धेर सर्ब मिटाए । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि मस्तूआणे लेख लिखाए। मस्तूआणे प्रभ लिखावे लेखा। जोत सरूपी पहरया भेखा। सृष्ट सबाई रही वेखी वेखा। प्रभ अबिनाशी जगत भुलाया पाए भरम भुलेखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटावे कलिजुग मिटाए झूठी रेखा। मस्तूआणे भाग लगाए। गुरमुखां साचे सन्त प्रभ साचे आत्म जाग लगाए। सोहँ साचा नाद धुन उपजाए। शब्द चलाए बोध अगाध, अगाध बोध शब्द लिखाए। गुरमुख साचे प्रभ अबिनाशी रसना अराध, वेले अन्त होए सहाए। आत्म मिटावे सर्ब विवाद, एका जोत देह जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणे भाग लगाए। मस्तूआणे प्रभ चरन टिकाणा।

वाह वाह साचा समां सुहाणा। कलिजुग अन्तिम अन्त प्रभ झूठा खेल मिटाणा। गुरमुख साचे सन्त कल, आत्म साचा दीप जगाणा। विच वड्याई जीव जन्त कलि सोहँ साचा राग उपजाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणा साचा धाम उपजाणा। साचा धाम सच्चा दरबारा। धरे चरन निहकलंक अवतारा। आवे सरन चार वरन प्रभ देवे मोख दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग उपजावे साचा धाम न्यारा। एका धाम प्रभ उपजाए। एका नाम जगत रखाए। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ मेट मिटाए। निर्मल नीर्थ प्रभ चरन रखाए। गुरमुख आत्म रस सीर्थ प्रभ मुख चुआए। सतिजुग साचा तीर्थ प्रभ एक कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणे भाग लगाए। मस्तूआणा प्रभ उपाया। साचे सन्त लेख लिखाया। नेत्र पेख मेख लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा धाम आप सुहाया। साचा धाम प्रभ उपाए। एका नाम जगत धराए। पूरन काम प्रभ आप कराए। घनईआ शाम जोत प्रगटाए। रमईआ राम दिस ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाए। जामा पाए अन्त कलि। सृष्ट भुलाई कर वल छल। साचे प्रभ जाईए सद बलि बलि। गुरमुख साचे दया कमाए, चरन आए चल चल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वक्त ल्याए, समां सुहाए जोत प्रगटाए ना लाए घड़ी पल। आया वक्त वक्त अख़ीर। सोहँ शब्द प्रभ चलाया तीर। कलिजुग वेला अन्त, कोई ना देवे धीर । प्रभ अबिनाशी साचा कन्त, सर्ब मिटावे पैगम्बर पीर फ़कीर । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत खिचावे सठ्ठ अठ्ठ अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ नीर। साचा प्रभ जोत जगाए। कलिजुग वेला अन्त कराए। आप आपणी बणत बणाए। साचे सन्त मस्तूआणे जाए जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखाए। जोत सरूपी प्रभ दरस दिखाणा। वड वड सन्त प्रभ माण गंवाणा। आप आपणा प्रभ उपजाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन सद रसना गाणा। चार वरन प्रभ रसना गाए। एका बरन जगत कराए। अवतार नर होए सहाए। करता कर सभ किछ आप कराए। धरता धर सति धर्म चलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणे माण दवाए। मस्तूआणा मोख द्वार। चार वरन होए अधार। साचा उपजे सच दरबार। जोत प्रगटाए निहकलंक अवतार। जीव जन्त रसना गाए, मातलोक आए प्रभ जामा धार। बेमुख जीव रहे बिल्लाए, साचा प्रभ ना पाई सार। अन्तकाल कलि करे हाए हाए, धर्म राए करे ख्वार। गुरमुख साचे प्रभ सरनाए, बांहो पकड़ प्रभ जाए तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी देवे दरस अपार। जोत सरूपी प्रभ दरस दिखाए। कर दरस गुरसिख तर जाए। गुरमुख साचा प्रभ साचा दया कमाए। बेमुख जीव भाण्डा काचा, अन्तकाल प्रभ भन्न वखाए। गुरमुख साचा प्रभ हिरदे वाचे, साचा दीपक प्रभ दे जगाए। बेमुख दर आए नाचे, साचा

प्रभ सार ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कर किरपा गुरसिख तराए। गुरसिख उधरे मस्तूआणे। आत्म जोत जगे महाने। एका देवे वड्याई बिरध बाल अञ्याणे। दर आए प्रभ पति रखाई, गुरसिख होए सुघड़ स्याणे। सोहँ नाम विच वस्त टिकाई, आत्म जोत जगाई महाने। साची बस्ती देह बणाई, बैठा विच आप भगवाने। मस्तूआणे रंग मस्त कराई, प्रभ साचा देवे जगत वड्याई, आपणी महिंमा आप वखाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि खेल वरताए मस्तूआणे। मस्तूआणा मात उपजाया। ज़ात पात प्रभ मेट मिटाया। दिवस रात प्रभ इक्क कराया। साचा नात गुर चरन रखाया। वडा प्रभ वडी दात सोहँ झोली पाया। साची देवे करामात, स्वास स्वास जीव रसना गाया। हिरदे तोड़े भम्बीरी पात, जोत सरूपी प्रभ नज़री आया। कलिजुग जीव अंदर मार झत, जोत सरूपी प्रभ डेरा लाया। अन्तकाल कलि कोई ना पुच्छे वात, साचा प्रभ मनों भुलाया। मानस जन्म प्रभ साचे दी साची दात, लक्ख चुरासी विच्चों दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब मिटाए ज़ात पात, मस्तूआणे जाए चरन टिकाया। सतिजुग साचा मात प्रभ आप लगाए। चार वरन कर एका नात भैण भ्रा बणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साची दात सतिजुग झोली पाए। सोहँ देवे सति ज्ञान। आत्म देवे चरन ध्यान। गुरमुख विरला सुणे जिस प्रभ मेहरवान। साचा वर दर प्रभ घर लेवे, किरपा करे प्रभ महान। साचा नाम अमृत फल आत्म रस मेवे, गुरमुख साचे सद सद गाण। देवे दरस प्रभ अलख अभेवे, गुणवन्त गुणी निधान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणे जगाए जोत। मस्तूआणा प्रभ उपा के। राउ रंकां सरन लगा के। थाइन बंक प्रभ आप सुहा के। एका अंक सोहँ साचा शब्द उपजा के। साचा डंक चार कुन्ट चार वरन वजा के। महाराज शेर सिँघ निहकलंक मस्तूआणे जाए जोत जगा के। जगाए जोत मस्तूआणे। वरते वरताए आपणे भाणे। जीव जन्त वडे वड सन्त प्रभ सर्ब माण गंवाणे। आदि अन्त प्रभ साचा तारे कन्त, जो जन होए निमाणे। आप बणाए साची बणत, तख्तों लाहे राजे राणे। विच मिलाए जीव जन्त, ऊँच नीच प्रभ भेव मिटाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणे साचा माण दवाणे। साचा माण प्रभ दवाए। साचा धाम जगत उपाए। बिरधां बालां प्रभ आप तराए। वड सुघड़ स्याणयां प्रभ सरन लगाए। रंक राजान दर सेव कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा ज्ञान दवाए। राउ रंक प्रभ चरन द्वार। सोहँ शब्द कलि देवे तार। वेले अन्त ना आवे हार। गुरमुख साचे शब्द अधार। आत्म उपजावे साची धुन्कार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी जाणे सार। सर्ब जनां प्रभ आपे जाणे। ऊँच नीच प्रभ आप कराणे। नीचो नीच प्रभ सद समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग एका संग एका मंग एका अंग जगत रखाणे। एका रंग प्रभ रंगाया। साचा

संग गुर चरन बणाया। जायण पार लँघ, गुर चरनी सीस निवाया। सदा सहाई अंग संग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कदे मरे ना जाया। साचा प्रभ सदा अंग संग। भगत जनां प्रभ आत्म रंग। अमृत झिरना प्रभ देह झिराए गंग। गुरमुख विरला कलि शौह दरया जाए लँघ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सहाई अंग संग। साचा प्रभ सदा सहाई। आदि अन्त जिस बणत बणाई। बैठ इकन्त होया रथवाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव भेव ना पाई। कलिजुग जीव भेव ना जाणया। जोत सरूपी ना प्रभ पछाणयां। साचा रंग प्रभ दर ना माणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाए मस्तूआणया। मस्तूआणे प्रभ भउ चुकाणा। जोत सरूपी प्रभ दरस दिखाणा। भुक्खयां दुखियां प्रभ चरन लगाणा। कलिजुग जीव रुल्लया प्रभ अमृत मुख चुआणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राउ रंक एका रंग रंगाणा। एका रंग प्रभ वरतार। सोहँ शब्द प्रभ भरे भण्डार। साध संगत प्रभ जाए तार। आदिन अन्त ना कोई पाए सार। साधन सन्त प्रभ साचा जोत करे अकार। बैठा इकन्त देवे दरस नैण मुँधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग आए जामा धार। मस्तूआणा मुख रखाया। धरती मात सुख उपजाया। साचा पित आप अख्वाया। अनाथां हित प्रभ अमृत मेघ वरसाया। पारब्रह्म अचुत्त जोत सरूपी दीप जगाया। सतिजुग बणाए साचे सुत्त, मस्तूआणे जिस सीस झुकाया। आप सुहाए साची रुत्त, निहकलंक जिस चरन लगाया। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान लिखाए लेख, लिख्या लेख आप मिटाया। लिख्या लेख आप मिटाए। कलिजुग भेख नष्ट कराए । झूठी रेख रहण ना पाए । पीर पैगम्बर औलीए शेख़ प्रभ दे खपाए। सन्त मनी सिँघ लगाई साची मेख निहकलंक दे उपजाए। गुरमुख साचे विच मात वेख, आपणी सरन लगाए। गुरमुख साचे दर साचे लेख, प्रभ साचा धुरों लिखाए। जोत सरूपी प्रभ का भेख, गुरमुख विरला पाए। सृष्ट सबाई रही वेखा वेख, निहकलंक कलि माया पाए। निहकलंक कलि जामा पाया। साचा डंक आप वजाया। एका अंक प्रभ शब्द उपाया। मिटाए शंक जो जन सरनाई आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राउ रंक अन्तकाल इक्क कराया। इक्क कराए राउ रंक। सोहँ साचा शब्द चलाए साचा डंक। गुरमुख उपजाए जिउँ राजा जनक। एका नाउँ धराए एका अंक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी लाए तनक। जोत सरूपी जोत जगाए। आत्म चिन्ता सोग मिटाए। हउमे विच्चों रोग गंवाए। प्रगट जोत दरस अमोघ दिखाए। सोहँ साचा जोग प्रभ चार वरन मुख रखाए। आत्म रस साचा भोग, स्वास स्वास जन रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप आपणी दया कमाए। दया कमाए गुर गोबिन्द। सेव लगाए सुरपति राजा इन्द। सरन लगाए प्रभ साचा वाली हिन्द। वड भूपन भूप अख्वाए, गुरमुखां मिटाए आत्म चिन्द। प्रभ पूरन रूप वटाए वड सूरा

वड मृगिन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बेमुख दर आयण जायण निंद। वडा प्रभ भूपन भूपा। जोत सरूपी वड सरूपा। निहकलंक ना दीसे रंग रूपा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका जोत एक गोत सति सरूपा। एका जोत जगत अकार। तीन लोक प्रभ वरतार। जुगो जुग विच मात आए जामा धार। अन्तकाल कलि धरी जोत आप करतार। एक कराए गोत इक्क जगाए जोत प्रभ साचा विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल करे अपार। एका जोत जगत जगाए। एका जोत जीव जन्त रहाए। एका जोत प्रभ आपणी आप उपजाए। एका जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणे दे टिकाए। मस्तूआणे माण दवाए। राणा संगरूर सरन लगाए। सर्ब कला भरपूर, प्रभ दरस दिखाए। आत्म देवे साचा नूर, प्रभ साचा जोत जगाए। ना दिसे दूर, नेतन नेत इक्क दिसाए। कलिजुग तजाए माया कूड़, होए निमाणा प्रभ सेव कमाए। प्रभ साचा बख्शे चरन धूढ़, गुरसिख होए लै मस्तक लाए। प्रभ आत्म रंग चढ़ाए गूढ़। चढ़े रंग फिर उत्तर ना जाए। कलिजुग जीव होए मूढ़, जोत सरूपी प्रभ नज़र ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सोहँ शब्द बणाया बूड़। राणा संगरूर सेव कमाए। प्रभ चरन धूढ़ आत्म तृप्ताए। वड दाता सूर प्रभ आपणी दया कमाए। धरे जोत कोहतूर, दीपक साचा जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मस्तूआणे मस्त रखाए। मस्तूआण मस्त दिखाया। राणा संगरूर प्रभ सरन लगाया। शब्द उपजांए अनहद, अनहद साचा राग सुणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी विच समाया। जोत सरूपी प्रभ विच समावे। साचा शब्द प्रभ धुन उपजावे। आत्म सुन्न प्रभ आप खुल्लावे। रुण झुण दिवस रैण रखावे। गुरमुख गुर साचा चुण आपणी सरन लगावे। एका देवे सोहँ नाम साचा गुण रसना जप आत्म सुख पावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जगत तृष्ना भुक्ख मिटावे। जगत तृष्ना प्रभ मिटाए। वड ब्रह्मा विष्न आप दिसाए। साँवल कृष्ना जोत प्रगटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान राणा संगरूर माण रखाए। माण रखाया आप प्रभ, किरपा कर। माण रखाया आप प्रभ, सिर हत्थ धर। माण रखाया आप प्रभ, सोहँ देवे साचा वर। माण रखाया आप प्रभ, देवे दरस निहकलंक अवतार नर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दिसावे साचा वर घर। साचा घर सच दर वस्सया। साचा दर विरले गुरमुख प्रभ दस्सया गुरमुख साचा कर दरस जाए तर, होए जोत प्रकाश कोट रवि सस्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचा दर घर साचा प्रभ विच वस्सया। साचा प्रभ सच्चा दरबारी। जोत सरूप प्रभ जोत निरँकारी। वडा भूप सद निरहारी। ना रंग ना रूप प्रभ प्रभ निराधारी। सति सरूप जीव जन्त अधारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि करे खेल अपारी। अपर अपार प्रभ खेल रचाया। गुरमुख विरले कलि विचार, जोत सरूपी मेल मिलाया। अमृत झिरना

झिरे अपार, अमृत मेघ प्रभ आप वरसाया। एका माण रखाए सर्ब संसार, एका दूजा प्रभ भउ चुकाया। एका गोत सर्ब
कराया। धरे जोत निहकलंक अवतार, महाराज शेर सिँघ नाउँ धराया। आपणा नाम जगत धराए। झूठी काया जगत तजाए।
जोत सरूपी जोत समाए । गुरसिख साचे बैठा आसण लाए । नाड़ी बहत्तर बन्द कराए। एका वत्तर आत्म सोहँ बीज बिजाए।
साचा साक सज्जण मित्र सोहँ प्रभ जाए जगत धराए। वड वड आप मात पित होए सहाई जोत प्रगटाए। महाराज शेर
सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया कमाए। आपणी दया आप कमाए। साची मईआ धरत मात बणाए। साची नईया जगत
रखाए। साचा बिया बीज बिजाए। सतिजुग साचा दिया प्रभ आप जगाए। प्रभ मिलण का साचा हिया, मदिरा मास जीव
रसना तजाए। साचा नाम महां रस पीआ, स्वास स्वास सोहँ गाए। निर्मल होया कलिजुग जीआ, जोत सरूपी प्रभ दरस
दिखाए। लहणा देवे पूर्ब जन्म जो बिया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप आपणी दया कमाए। साचा लहणा गुर
दर लैणा। झूठे वहिण जीव नहीं वहिणा। प्रभ का भाणा सिर ते सहिणा। सोहँ देवे प्रभ साचा गहणा। एका जोत धरे
निहकलंक नरायणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरसिख दरस दिखावे तीजे नैणा। एका दूजा भउ चुकाया। तीजा
नैण प्रभ खुल्हाया। अमृत आत्म वहिण गुरसिख वहाया। गुर चरन साध सन्त साचे बहिण, मानस जन्म सुफल कराया। साचा
११ लहणा प्रभ दर लैण, प्रभ अबिनाशी दया कमाया। सृष्ट सबाई झूठे साक सज्जण भाई भैण, वेले अन्त ना कोई सहाया। ११
०२ झूठा मेल झूठा लैण देण, माया ममता जगत बंधाया। झूठे जीव अन्त पा रोवण वैण, सगला संग प्रभ तजाया। बेमुख ०२
जीव दुःख डाहढा सहिण, राए धर्म दे सजाया। गुरमुख साचे प्रभ चरनी पैण, साचे प्रभ चरन लगाया। महाराज शेर सिँघ
विष्नूं भगवान दरगाह साची माण दवाया। दरगाह साची प्रभ दरबारा। जोत सरूपी प्रभ अकारा। बैठा अडोल प्रभ निराधारा।
आप अडोल जगत अधारा। देवे पड़दे खोल्ह गुर चरन जन करन निमस्कारा। प्रभ वसे कोल, मूर्ख मुग्ध ना पाए सारा
। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दया कमाए आप मिटाए अन्ध अन्धयारा। अन्ध अंध्यार प्रभ आप मिटाए। कर जोत
अकार दीपक दे जगाए। देवे शब्द अधार, प्रभ द्वार दस्म खुल्हाए। अनहद धुन उपजे धुन्कार, प्रभ साची धुन उपजाए।
गुरमुख साचा पाए सार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणी दया कमाए। दया कमाए दयावान। साचा प्रभ वड मेहरवान।
आप खुल्हाए कँवल नभ, अमृत झिरना प्रभ झिराण। दरस दिखाए प्रगट झब्ब, जोत सरूपी जोत महान। महाराज शेर
सिँघ सतिगुर साचा, एका बख्शे चरन ध्यान। एका देवे चरन ध्याना। गुरमुख साचे प्रभ सरन लगाणा। गुरमुख साचे प्रभ
हिरदे वाचे सच सच सच रखाणा। सोहँ शब्द जन हिरदे वाचे, देवे दरस आप भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

कलिजुग जीवां तोड़े अभिमाना। सर्ब जनां तोड़े अभिमान। वडा प्रभ बली बलवान। गुरमुख साचे प्रभ साचा देवे माण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुणवन्त गुणी निधान। गुण निधान जन विरला जाणे। चतुर सुजान सति पुरख समाणे। वड विद्वान आत्म रंग माणे। जोत जगत महान धरे आप भगवाने। निहकलंक बली बलवान, सर्ब सृष्ट आप भुलाणे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा खेल आप वरताणे। साचा खेल प्रभ वरताए। दो फाड़ सृष्ट कराए। दाढ़ां हेठ प्रभ आप चबाए। कौड़े रेठ प्रभ आप खपाए। महीने जेठ प्रभ कहर वरताए। वड वड सेठ कोई रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप आपणी बणत बणाए। आप बणाए किरपा कर। धरे जोत अवतार नर। जोत खिचाए अमृत सर। मस्तूआणे जाए भण्डारे भर। चार वरन चल आयण दर। सृष्ट सबाई एक बणाया सच्चा घर। एका जोत जगाए अवतार नर। ब्रह्म समग्री पाई सोहँ दिया साचा वर। सतिजुग मिली वड्याई महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप उपाया साचा घर। साचा प्रभ देवे वड्याई। चार वरन प्रभ दर खुल्हाई। कर दरस गुरमुख साचे हरन फरन खुल्हाई। सोहँ शब्द जन रसना वाचे स्वास स्वास प्रभ स्वास गाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाई। जोत सरूपी दरस दिखा के। सति सति सति वरता के। यति यति यति प्रभ आप रखा के। तत्त तत्त प्रभ सोहँ तत्त चला के। बणत बणत बणत प्रभ आपणी बणत बणा के। गति मित मित गति जन भगतां जाए जणा के। गुरमुख साचे सन्त प्रभ सतिजुग टिका के। आप बणाए साची बणत साची धुन उपजा के। देवे दरस साचा कन्त, जोत सरूपी जोत प्रगटा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जाए तरा के। तारनहार प्रभ समरथ। जन भगतां रक्खे दे कर हत्थ। आत्म देवे सोहँ साची वत्थ। साचा शब्द चलाया गुर संगत चढ़ाए साचे रथ। आत्म देवे सोहँ साची वत्थ। सतिजुग साचा मार्ग लाया, प्रभ की महिंमा बड़ी अकत्थ। चार वरन इक्क कराया, राजयां राणयां प्रभ पाई नत्थ। जोत सरूपी प्रभ समाया, गुरमुख विरला पावे प्रभ साचे दी साची वत्थ। ना कदे मरे ना जाया, जोत सरूपी प्रभ सदा समरथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कर दरस जीव आत्म दुखड़े जायण लत्थ। आत्म दुःख प्रभ मिटाए। एका सुख प्रभ उपजाए। जगत भुक्ख प्रभ तृष्ना जलाए। मात गर्भ उलटा रुक्ख फिर वास ना पाए। कर दरस जन उतरे भुक्ख, निहकलंक कलि जामा पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धार खेल चतुर्भुज कहाए। साचा प्रभ जगत दीवाना। कलिजुग माया जगत भुलाणा। हउमे रोग प्रभ वड लगाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख विरले बूझ बुझाणा। सो जन बूझे जिस आप बुझाए। गुरमुख विरले दर साचा सूझे। जिस जन दया कमाए। गुर चरन प्रीती प्रभ दर लूझे, लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। दे दरस प्रभ भेव खुल्हावे गूझे, आत्म

भरम सर्ब मिटाए। दया करे दर घर साचा सूझे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान नज़री आए। गुरमुख साचे सच ध्याना। साचा प्रभ देवे शब्द ज्ञाना हिरदे वाचे सच सच प्रभ देवे जोत महाना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा भगत देवे वड्याई विष्नूं भगवाना।

* १७ विसाख २००६ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल *

गुरसिख प्रभ आप तराए। गुरमुख साचे गुरसिख बणाए। गुरमुख गुर मुन रिख उपजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरनी लगाए। गुरमुख प्रभ सरन लगाए। आत्म भिक्ख प्रभ नाम पाए। जगत तृष्ना प्रभ दे मिटाए। काहना कृष्ना जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख साचे कलि तराए। गुरमुख गुर दर पाए। कर दरस आत्म तृप्ताए। गुरमुख हउमे ममता रोग गंवाए। गुरमुख गुर पूरा आत्म सोग सर्ब मिटावे। गुरसिख गुर साचा जोत सरूपी सद समावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणी कल आप वरतावे। जोत सरूपी गुरसिख समाया। गुरमुखां प्रभ भउ चुकाया। गुरमुखां जुगो जुग प्रभ सेव लगाया। गुरमुखां सोहँ फल साची चोग चुगाया। गुरमुखां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणा नाम जपाया। गुरमुखां प्रभ बूझ बुझाए। गुरमुखां प्रभ भेव दूज चुकाए। गुरमुखां प्रभ एका सूझ चरन रखाए। गुरमुखां बूझ निहकलंक सरन लगाए। गुरमुखां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूपी मेल मिलाए। गुरमुखां प्रभ मेल मिलाया। मातलोक प्रभ आप वड्आया। गुरमुखां गुर दया कमाया। बांहों पकड़ गुर चरन लगाया। गुरमुखां प्रभ लाही माया। आप आपणे जिहा कराया। गुरमुखां प्रभ रोग चुकाया। सोहँ साचा जोग दवाया। गुरमुखां दरस अमोघ प्रभ आप दिखाया। साचा रस भोग आत्म संसा सर्ब मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख साचे मेल मिलाया। गुरमुखां गुर देवे धीर। जोत प्रगटावे निहकलंक वड पीरन पीर। गुरमुखां प्रभ आत्म कुण्डा खुल्हावे सोहँ लावे तीर। गुरमुखां प्रभ भरे भण्डारे अमृत वंड, जिउँ बालक माता सीर। सृष्ट सबाई होए खण्ड खण्ड, चार कुन्ट पै जाए वहीर। बेमुखां आत्म होई रंड, अन्तकाल कलि लथ्थे चीर। एका जोत जगाए नव खण्ड, प्रभ माण गंवाए गौस औलीए पीर फ़कीर। निहकलंक प्रगटे जोत विच वरभण्ड, होए ना सहाई कोई दस्तगीर। कलिजुग मेट मिटाए सर्ब भेख पखण्ड, सोहँ देवे आत्म धीर। साचा शब्द चण्ड प्रचण्ड, कलिजुग करे अन्त अख़ीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अन्तकाल कलि गुरमुखां कट्टे भीड़। गुरमुख गुर एका रंग। प्रभ दर मंगे साची मंग। साचा प्रभ आत्म चाढ़े साचा रंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल

कलि पार जाए लँघ। साचा प्रभ पार लँघाए। गुरसिखां बेड़ा बन्न्ह वखाए। साचा राग प्रभ कन्न सुणाए। पकड़े वाग सच मार्ग पाए। लागे ना दाग़ निहकलंक सच तेरी सरनाए । गुरमुख विरले कलि गए जाग, बेमुख गूढ़ी नींद सवाए। गुरसिख वड वड भाग, प्रभ आपणी सेवा लाए। शब्द लिखाया पहली माघ, सतिजुग साचे जन्म दवाए। कलिजुग जीव होए हँसों काग, साचा प्रभ गए भुलाए। सेज तजाए बाशक नाग, प्रभ विच मात दे आए। भोग लगाए जिउँ बिदर अलूणे साग, दर्योधन माण गंवाए। निमाणयां निताणयां सोहँ शब्द सुणावे राग, साची धुन उपजाए। कलिजुग जीव माया तृष्ना जलाए आग, कोई ना होए सहाए। अन्त गुरमुख विरले कलि गए जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दया कमाए। गुरमुख गुर उपजाए पूरा। एका मार्ग लाए शब्द चलाए अनहद तूरा। भारत जोत जगाए निहकलंक वड सूरा। राउ रंक सरन लगाए, शब्द लिखाए ना होए अधूरा। प्रभ हरन फरन खुल्हाए, सोहँ देवे सति सरूरा । प्रभ जन्म मरन कटाए, अन्तकाल गुर सतिगुर पूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां जोत जगाए देवे नूरा। गुरमुखां प्रभ जोत जगईआ। सोहँ चढ़ाए साची नईआ। धरत मात जगत मईआ। भैण भ्रा चार वरन करईआ। आत्म शांत प्रभ करईआ। बैठ इकन्त जोत सरूपी जोत जगईआ। कलि साचा नात, निहकलंक सरनईआ। प्रभ वास कटाए गर्भ मात, जोती जोत मिलईआ। सोहँ देवे साची दात, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका दात सर्ब दवईआ। साचा दान गुर दरबारे। साचा प्रभ भरे भण्डारे। जो जन आए गुर चरन दुआरे। सरधा पूर प्रभ आत्म दुःख निवारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पैज संवारे। गुरमुखां हरि काज संवार। देवे वड्याई विच संसार। गुरमुखां प्रभ जोत अधार। होए सहाई भगत वछल आप गिरधार। गुरसिखां प्रभ कर्म विचार। एका दिसाया सच दरबार। धरे जोत निहकलंक नर अवतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे प्रभ जाए तार। गुरमुखां प्रभ तारनहारा। बेमुखां प्रभ करे ख्वारा। सोहँ शब्द चलाए खण्डा दो धारा। विच देह दो फाड़ कराए, साचा शब्द रक्खे सिर आरा। सृष्ट सबाई लए मार, चार कुन्ट चले खून फुहारा। सृष्ट सबाई चबाई दाढ़, प्रभ साचे दी साची कारा। गुरमुख साचे मात उपजाए लाड़, सोहँ देवे साची नारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचे शब्द चलाए साची धारा। साचा शब्द साची धार। साची जोत साचा आकार। एका जोत एका अधार। खोल्हे सोत जन आए चरन द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खाली भरे भण्डार। साचा प्रभ वड भण्डारी। गुरमुख चल आयण द्वारी। आत्म सुख उपजावे निहकलंक नर अवतारी। हउमे रोग गंवाए साचा नाम आत्म दे अधारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुखां जाए पैज संवारी। गुरसिखां गुर उपदेस्सया। जोत सरूपी किया वेस्सया।

सार ना जाणे ना कोई वखाणे भेव ना पाए ब्रह्मा विष्न महेषया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान प्रभ साचे को सदा आदेस्सया। साचा प्रभ सदा आदेस। आवे जावे जगत करावे साचा वेस। भगत जन जोत प्रगटावे, माण दवाए माझा देस। गुरमुख उपजाए सरन लगाए, जोत सरूपी सद प्रवेश। पकड़ उठावे अग्न जोत लगाए, चरन लगावे वड वड मृगेश। कलिजुग जीआं दोष लगावे, जोत सरूपी किया भेस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर साचा घर सच दिसावे साचा देस। साचा प्रभ साचा राह। साचा प्रभ सद सद बेपरवाह। आदि अन्त जीव जाणे कोई ना। साध सन्त बणाए बणत, आत्म साची जोत जगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए निहकलंक धराए नां। निहकलंक कलि नाउँ धराया। एका डंक आप वजाया। द्वार बंक प्रभ सर्ब सुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनकपुरी कलि जामा पाया। घनकपुरी कलि जामा धार। निहकलंक आए सच अवतार। शब्द लिखाए जगत वरताए, आप आपणी पाए सार। वाक भविख्त सति कराए, साचे लेख जगत लिखाए, सोहँ शब्द चलाए कटार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग आए जामा धार। जामा धारे पुरी घनक। आवे जावे जोत प्रगटावे विच मात बार अंक। गुरसिख समावे दरस दिखावे, जोत सरूपी लावे तनक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आत्म भरम चुकावे, संसा रोग मिटावे मनक। मन का रोग प्रभ चुकाए। आत्म सोग कोई रहण ना पाए। साचा रस भोग प्रभ सेव कमाए। होए ना कदे विजोग, सोहँ शब्द जन रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया कमाए। साचा प्रभ दयावान। मेल मिलाए भगत भगवान। साचा प्रभ सोहँ देवे साचा दान। साचा प्रभ एका बख्शे चरन ध्यान। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ वड गुणी निधान। गुण निधान गुण किसे ना जाणयां। गुरमुख चतुर सुजान रंग साचा माणयां। साचा प्रभ सद मेहरवान, आप आपणे चलाए भाणयां। भगत जनां हरि देवे माणयां। जन आए चरन होए निमाणयां। आवण जावण चुकाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान्यां। आवण जावण प्रभ कटाया। अमृत मेघ सावण वरसाया। सोहँ साची देग प्रभ सच भण्डार खुल्हाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सतिजुग सोहँ साचा जाम प्लाया। सोहँ साचा साची जीत। सोहँ उपजावे प्रभ चरन प्रीत। सोहँ तरावे भुल बख्शावे जो गई बीत। गुरमुख विरला रसना गावे, अमृत आत्म तीर्थ नाव्हे, देवे दरस प्रभ साचा मीत। सज्जण सुहेला गुरसिखां कराए साचा मेला, अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग जीव हत्थ ना आवे वेला जो गया बीत। वेला गया हत्थ ना आणा। सृष्ट सबाई अन्त पछताणा। दे मिटाए सभ राजा राणा। भगत सहाई रैण सबाई प्रभ साचा रसना गाणा। वज्जी वधाई मिली वड्याई निहकलंक चरन सीस झुकाणा। साध संगत सद रसना गाई, पूरन मति प्रभ साचे पाई, शब्द

चलाए विच स्वास पवणा। आत्म स्वास पवण झुलार। साचा शब्द सच्ची धुन्कार। पूरा गुर पूरन भरे भण्डार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, शब्द सुरत दे जाए तार। सुरत शब्द प्रभ मेल मिलाया। आत्म धुन प्रभ उपजाया। बजर कपाट प्रभ जंदा आप तुड़ाया। गुरमुख साचे विच ललाट, दीपक जोत जगाया। साचा नाउँ ना विके हाट, प्रभ दर मिले दुण सवाया। साचा शब्द जीव सद रसना राट, देवे दरस आप रघुराया। गुरमुख विरले प्रभ ल्या लाध, निहकलंक वेले अन्त होए सहाया। देवे वड्याई विच सन्तन साध, जो जन आए सरनाया। प्रभ शब्द लिखाए बोध अगाध, अगाध बोध बोध अगाध प्रभ आप अख्वाया। सृष्ट सबाई अन्तिम प्रभ सोध, साचा दीपक मस्तूआणे प्रभ जाए जोत जगाया। वड दाता वड सूर वड जोधन जोध, वड बोध ज्ञानीआं ध्यानीआं प्रभ देवे माण सवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख साचे विच मात माण दवाया। साध संगत प्रभ किरपा कर। गुर संगत देवे प्रभ साचा वर। साध संगत प्रभ जोत धर। गुर संगत तराए अवतार नर। साध संगत प्रभ रोग हर। गुर संगत प्रभ किरपा जाए कर। साध संगत गुर चरन लाग जाए तर। गुर संगत रंगत रंगाए नाम साचे सर। गुर संगत संसा भउ चुकाए डर। गुर संगत दिखावे साचा घर। साध संगत खुल्हावे प्रभ आत्म साचा दर। गुर संगत प्रभ मेल मिलावे दरस दिखावे, जोत सरूपी जोत धर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
१६ ०२ भगवान गुर संगत किरपा जाए कर। साध संगत गुर साचा माण। गुर संगत बख्शे एका चरन ध्यान। साध संगत आत्म गंवाए सर्ब अभिमान। गुर संगत सोहँ देवे गुर साचा दान। साध संगत दर आई मंगत, देवे दरस आप भगवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा सर्ब जनां दा जाणी जाण। साध संगत प्रभ साचा संग। गुर संगत प्रभ रक्खे अंग। साध संगत कलि जाए पार लँघ। गुर संगत मानस जन्म ना होए भंग। साध संगत साचा प्रभ दर घर साचा मंग। गुर संगत दिसावे प्रभ ऊँचा दर, गुरसिख मूल ना संग। गुर संगत अमृत झिरना झिराए गंग। गुर संगत प्रभ होए सहाई कट्टे भुक्ख नंग। गुर संगत चढ़ाए प्रभ सोहँ मजीठी रंग। बेमुख जीव भन्नाए कलि जिउँ झूठी कच्च वंग। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, होए सहाई सदा अंग संग। साध संगत प्रभ सद प्रितपाल। गुर संगत प्रभ सार समाल। साध संगत चरन प्रीती निभे नाल। गुर संगत प्रभ परखी नीती आत्म वेखे साचा लाल । साध संगत सदा जग जीती, मुक्ख रखाया सिँघ पाल । कलिजुग औध अन्त अन्त अन्त कलि बीती, किरपा करे दीन दयाल। साध संगत प्रभ काया सीतल कीती, भगत रच्छक दीन दयाल। गुर संगत सद रहे जग जीती, प्रभ तोड़े जगत जंजाल। साध संगत आत्म रस गुर चरन दर पीती, सोहँ देवे सच्चा धन माल। गुर संगत सदा जग अतीती, आत्म दीपक प्रभ देवे बाल। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आदि अन्त होए आप

रखवाल। साध संगत प्रभ आपे राखे। गुर संगत दर साचा भाखे। साध संगत लेख लिखाए अलक्खणा अलाखे। गुर संगत प्रभ मेल मिलाए, मेट वखाए जो लिखी बिधना माथे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साध संगत तेरा सगला साथे। साध संगत तेरा सगला साथ। गुर संगत तराए त्रैलोकी नाथ। साध संगत रक्खे दे कर हाथ। गुर संगत लेख लिखाए प्रगट विच माथ। साध संगत प्रभ शब्द जणाए, सोहँ साची गाथ। गुर संगत प्रभ शब्द चढ़ाए, चलाया साचा राथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा सगला साथ। साध संगत प्रभ सगला साथी। गुर संगत मिल्या प्रभ नाथ अनाथी। साध संगत कर दरस पाए वस्त सोहँ साची वाथी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सर्ब कला समरथ, महिंमा अकथ्थ अकाथी। आप अकथ्थ ना कथया जाए। सोहँ साचा रथ प्रभ जगत चलाए। जीव जन्त प्रभ साची गथ, स्वास स्वास जन रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सर्ब कला समरथ, गुर संगत आण तराए। गुर संगत प्रभ आण तराई। गुर संगत प्रभ रहे सरनाई। साध संगत प्रभ पूरन मति पाई। गुर संगत मन वज्जी वधाई। गुर पूरे गुर संगत जोत प्रगटाई। साध संगत प्रभ मिल्या सर्ब सुक्खदाई। गुर संगत देवे नाम वड्याई। साध संगत प्रभ बणाए भैणां भाई। गुर संगत प्रभ रिहा समाई। साध संगत प्रभ रचन रचाई। गुर संगत प्रभ लोहा कंचन बणाई। साध संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणी देवे आप सरनाई। साध संगत प्रभ सरनाई। गुर संगत प्रभ चरन लगाई। साध संगत हरि हरि हरि सद रसना गाई। गुर संगत प्रभ अबिनाशी चल घर आई। साध संगत सच धाम सुहाई। गुर संगत रैण सबाई प्रभ रसना गाई। साध संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान स्वच्छ सरूप दरस दिखाई। साध संगत प्रभ साचा जाण। साचा प्रभ चरन धूढ़ देवे इशनान। साध संगत दर साचा प्रभ साचा देवे दान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुणवन्त गुणी निधान। साध संगत गुर सतिगुर पाया। साध संगत साचा लेख धुरों प्रभ लिखाया। साध संगत प्रभ कलिजुग वेख चरन सेव लगाया। साध संगत जोत सरूपी जणावे भेख, दे दरस चिन्ता रोग मिटाया। साध संगत वड्याई वड नरेश, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणी दया कमाया। साध संगत गुर पूरा पाया। गुर संगत प्रभ होए सहाया। साध संगत दुःख रोग मिटाया। गुर संगत विजोग चुकाया। साध संगत हउमे रोग नेड़ ना आया। गुर संगत प्रभ चरन जोड़, दरगाह साची माण दवाया। साध संगत प्रभ साचे दी साची लोड़, वेले अन्त होए सहाया। साध संगत प्रभ होए सहाई। गुर संगत प्रभ दरगाह माण दवाई। साध संगत सच धाम बहाई। गुर संगत बख्शे आप रघुराई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत सचखण्ड निवास रखाई। साध संगत धाम न्यारा। गुर संगत सचखण्ड मुनारा। साध संगत एका जोत अकारा। गुर संगत एका

गोत एका दिसे निरँकारा। साध संगत घर साचे देवे अमृत भण्डारा। गुर संगत प्रभ देवे खोल्ह दस्म दुआरा। गुर संगत प्रभ देवे पवन हुलारा। साध संगत जोत सरूपी सद रक्खे आप पसारा। गुर संगत गुर सद सद सद बलिहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे सचखण्ड दुआरा। एका जोत प्रभ अकारा। बैठा अडोल आप निराधारा। रिहा तोल सर्ब संसारा। प्रभ अनमोल जीव ना पायण सारा। गुर संगत देवे पड़दे खोल्ह, चल आयण सच दरबारा। सोहँ शब्द वजाए ढोल, उपजे धुन्कारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत तरावे रखावे चरन दुआरा। साध संगत गुर चरन बलिहारे। गुर संगत प्रभ पैज संवारे। साध संगत जुगो जुग प्रभ साचा तारे। गुर संगत वड वड्याई देवे आप गिरधारे। महाराज शेर सिँघ रक्खे पति, साध संगत जिउँ राणी तारा हरी चन्द नारे। किरपा करे आप गिरधार। एका जोत जगत करे अकार। मातलोक आए जामा धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान निहकलंक अवतार। मातलोक प्रभ जामा पाए। भगत जनां प्रभ दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जामा मातलोक विच पाए। साचा प्रभ बणत बणाए। साचा सोहँ शब्द चलाए। कलिजुग मदिरा मास अन्त कराए। गुरमुख साचे सन्त सोहँ रसना पिलाए। आप आपणा दरस दिखाए। भगत वछल दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जोत जगाए। भगत वछल गुण निधाना। बेमुखां

१८ प्रभ करे बेहाला। आत्म अग्न लगाए जिउँ जोत ज्वाला। गुरमुखां प्रभ सद रखवाला। साचा प्रभ साचा घर। गुरमुख मंगे १८

०२ साचा वर। कलिजुग मानस जन्म ना जाए हर। प्रभ पुजाए साचा घर। साचा घर सच्चा घर बाहर। साचा जगत करे ०२

अकार। तीन लोक इक्क आधार। मातलोक प्रभ वरतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत आप निरँकार। प्रभ जोत कोई भेव ना पावे। गुरमुख साचे प्रभ दया कमावे। आप आपणा दरस दिखावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, थिर घर वासी थिर घर रहावे। दर घर प्रभ आप बणाया। दु:ख भुक्ख प्रभ सर्ब गंवाया। सच दान प्रभ झोली पाया। रसन स्वास स्वास चलाया। गुरमुख आत्म सद वास रखाया। महाराज शेर सिँघ दया करे एका दरस निहकलंक दरसाया। निहकलंक दरस दिखावे। आत्म साची जोत जगावे। आत्म तृखा सर्ब मिटावे। प्रगट जोत दरस दिखावे। साध संगत सदा संग रहावे। निजानंद अमृत मेघ वरसावे। नाभ कँवल प्रभ मुख खुल्हावे। एका बूंद कँवल टिकावे। दस्म दुआर प्रभ खोल्ह वखावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत जगावे। जोत सरूपी जोत जगाया। आप आपणा भेद खुल्हाया। सोहँ साचा शब्द चलाया। सोहँ साचा नाद वजाया। बोध अगाध प्रभ शब्द लिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कलि मांहि आया। जोत निरँजण विच मात दे आए। दुखी जीव जगत बिल्लाए। प्रभ अबिनाशी नज़र ना आए। आप आपणी

बणत बणाए। लक्ख चुरासी गेड़ लिखाए। अन्तकाल धर्म राए दे सजाए। महाराज शेर सिँघ सद निवास रखाए। गुरसिख प्रभ बणत बणाए। आत्म साची जोत जगाऐ। सोहँ शब्द धुन उपजाए। निज घर वासी निज मांहि समाए। गुरमुख विरले प्रभ सरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जोत जगाए। निहकलंक कलि अवतारे। मातलोक प्रभ जामा धारे। सृष्ट सबाई करे ख्वारे। एका जोत जगे निरँकारे। सोहँ शब्द चले खण्डा दे धारे। कलिजुग जीआं पार उतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कोई ना पावे सारे। साचा प्रभ किरपा धार। जोत निरँजण मात करे अकार। सिँघासण बैठे जोत सरूप निराधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कलिजुग खेल करे अपार। कलिजुग प्रभ खेल खलाउणा। जोत सरूपी जामा पाउणा। कलिजुग जीवां भरम भुलाउणा। गुरमुख साचे मानस जन्म सुफल कराए। निहकलंक चरनीं सीस निवाउणा। कलिजुग जीव रहे वेखा वेख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ बाण लगाउणा। शब्द बाण प्रभ लगाए। चार कुन्ट हाहाकार कराए। कलिजुग जीव सर्ब बिल्लाए। दु:ख भुक्ख सर्ब सताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आप वरताए। साचा प्रभ खेल वरताए। कलिजुग अन्तिम अन्त कराए। गुरमुख विरले सन्त प्रभ चरन लगाए। देवे वड्याई विच जीव जन्त जिस आपणा भेव खुल्हाए। गुरसिख मिल्या साचा कन्त, जोत सरूपी मेल मिलाए। महाराज शेर

१९ सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची माण दवाए। घनकपुरी मिले वड्याई। प्रभ अबिनाशी जोत जगाई। जोत निरँजण प्रभ १९

०२ मात प्रगटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान निहकलंक, कलि जामा पाई। घनकपुर धाम न्यारा। घनकपुर हरि का ०२

दुआरा। घनकपुर चार वरन दिसावे साचा दरबारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाए अगम्म अपारा। घनकपुर प्रभ दे वड्आया। सतिजुग साचा माण दवाया। चार वरन इक्क धाम बहाया। पूरन कर्म प्रभ आप कराया। घनईआ शाम विच मात दे आया। रमईआ राम निहकलंक नाम धराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनकपुरी प्रभ भाग लगाया। आप आपणी जोत प्रगटाए। सन्त मनी सिँघ दरस दिखाए। नेत्र तीजा खोल्ह वखाए। सतिगुर गुर सति इक्क जोत रहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द उपजाए। सोहँ शब्द चले अबिनाशा। सोहँ सर्ब चले स्वासा। प्रभ अबिनाशी किया वासा। चरन प्रीती देवे साची रहरासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां करे बन्द खलासा। सन्त जनां प्रभ धुन उपजाए। सन्त जनां प्रभ सेवा लाए। सन्त जनां प्रभ सरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सेवा लाए। साचा सन्त प्रभ आप उधारे। किरपा करे आप गिरधारे। आत्म देवे शब्द अधारे। करोड़ तेतीस खड़े रहण दुआरे। देवी देव होए चरन पनिहारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सोहँ देवे नाम अधारे। सोहँ शब्द अधार दे, प्रभ

शांत कराया। गुरमुख साचे दरस अपार दे, प्रभ आपणी सरन लगाया। बेमुख दर घर आए नाचे, साचा प्रभ नज़र ना आया। गुरमुख विरला सोहँ रसना वाचे, आत्म प्रभ साची जोत जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाया। अज्ञान अन्धेर प्रभ मिटाया। जोत सरूपी विच समाया। गुरमुख साचे सद प्रभ दया कमाया। होया मेल भगत भगवन्त, सन्त मनी सिँघ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दरस दिखाया। सन्त मनी सिँघ दरस दिखाया। आत्म साची जोत जगाया। भरम भुलेखा सारा लाहया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साची धुन शब्द उपजाया। साचा प्रभ धुन उपजाए। जोत सरूपी शब्द चलाए। कलिजुग जीव लेख लिखाए। कलिजुग झूठा भेख मिटाए। सतिजुग साचा मार्ग लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनकपुरी विच जामा पाए। साचा प्रभ कर्म कमाए। झूठी देह जगत तजाए। जोत सरूपी विच सिख समाए। बेमुखां प्रभ दिस ना आए। गुरमुखां प्रभ दरस दिखाए। मदिरा मास जो जन तजाए। सोहँ स्वास स्वास सद रसना गाए। प्रभ अबिनाश जोत सरूप दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी आस पुजाए। ऊँचा दर ऊँचा दरबारा। एका जोत एकँकारा। निर्मल जोत जगे अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सर्ब जनां दी जाणे सारा। सर्ब जनां प्रभ जाणे सार। प्रभ अबिनाशी रूप अपार। जीव जन्त जोत अधार। एका आप एकँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा आप सच्चा दरबार।

*** ५ जेठ २००६ बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड बुग्घीं ज़िला अमृतसर ***

गुर दर सच दरबार। धरे जोत आप निरँकार। वरन गोत ना कोई पाए सार। एका जोत आदि अन्त एका एकँकार। एका जोत एका करे अकार। एका जोत जुगो जुग मात लए अवतार। एका जोत पारब्रह्म करे खेल अपर अपार। एका जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मूर्ख मुग्ध ना करन विचार। एका जोत प्रभ आप जगाए। एका जोत प्रभ आप बणाए। एका जोत प्रभ एक लिखाए। गुरमुख साचे तेरी आत्म जोत आण जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे बांहों पकड़ आण तराए। एका जोत जगत पित। आवे जावे नित नवित्त। जीव ना जाणे प्रभ गति मितक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जुगत जगत। जोत सरूपी जगत जगईआ। आप आपणी चलाए नईआ। सतिजुग साचा मार्ग लगईआ। चार वरन एका कराए भैणां भईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा नाम विच मात धरईआ। सोहँ नाम जगत टिकाए। वरन गोत प्रभ सर्ब मिटाए। एका जोत चार वरन जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

निहकलंक कलि नाउँ धराए। चार वरन प्रभ जोत जगाए। सतिगुर साचा साचे मार्ग जाए लाए। आप आपणी बणत जाए बणाए। महिंमा अगणत सतिगुर सतिजुग साचे जाए लेख लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जामा मातलोक विच पाए। मातलोक प्रभ जामा धारे। प्रगटावे जोत निहकलंक अवतारे। शब्द लिखावे वरतावे अपर अपारे। कलिजुग जीव सार ना पायण, बेमुख ना आयण दर दरबारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पंचम जेठ जामा मातलोक विच धारे। पंचम रैनड़ीए तैनूं मिले वधाई। प्रभ अबिनाशी दए वड्याई। भिन्नी रैनड़ीए तेरी रुत्त सुहाई। निहकलंक मात जोत प्रगटाई। भिन्नी रैनड़ीए तेरी कलि वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जोत जगाई। भिन्नी रैनड़ीए प्रभ भए दयाला। भिन्नी रैनड़ीए मात आए गुर गोपाला। भिन्नी रैनड़ीए साचे प्रभ साच दीपक रैण अन्धेरी बाला। भिन्नी रैनड़ीए जोत सरूपी जोत प्रभ भए आप कृपाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आया भगत रखवाला। भिन्नी रैनड़ी वक्त सुहाया। जोत सरूपी जोत प्रभ विच मात दीपक जोत जगाया। कलिजुग जीव रहे कलि सोत, दर घर आए गुरसिख प्रभ आए जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भिन्नी रैण सुहाए लोकमात प्रभ भाग लगाया। रैण भिन्नड़ी वक्त विचारे। जोत सरूपी जोत प्रभ साची जोत विच मात अकारे। आवे जावे जोत जगावे प्रभ साचा विच संसारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि अचरज खेल करे अपारे। अचरज खेल आप प्रभ करया। जोत सरूपी जामा धरया। गुरमुख विरले प्रभ साचा कलिजुग वरया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त ना पारावरया । प्रभ का अन्त ना पाए कोए । जीव जन्त सभ रहे सोए। गुरमुख साचे सन्त खोल्हे तीने लोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप भगवन्त वाली जहानां दोए। साचा प्रभ सति वरताए। आपणी बणत आप बणाए। गुणी गणत ना गणया जाए। कोटन कोट कोट कोट साध सन्त दिवस रैण रहे रसना गाए। बैठा आप इकन्त, बेमुखां दिस ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आदि जुगादि जुगादि आदि लोकमात सद आवे जाए। साचा प्रभ आदि जुगादी। साचा प्रभ सदा ब्रह्मादी। एका धुन उपजाए प्रभ नाद अनादी। खोल्हे सुन्न जोत सरूप, जीव जन्त सदा विस्मादी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत कलि विरले गुरमुख लाधी। जोत सरूप प्रभ जामा धार। एका जोत करे जगत अकार। एका गोत कराए सर्ब संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान निहकलंक नरायण नर अवतार। नरायण नर आप अख्वाए। सगली सैण आप तराए। गुरमुख खुल्हाए तीजा नैण, आत्म साची जोत जगाए। विरले गुरमुख कलि साध संगत मिल बहिण, प्रगट जोत निहकलंक दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचे सन्त लए तराए। देवे दरस आप इकन्ता। मिटाए हरस गुरमुख साचे सन्ता। देवे

वड्याई विच मात सर्ब जीव जन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाए मात बेअन्ता। कलिजुग किया खेल अपारा। जोत सरूपी किया पसारा। बेमुखां आत्म अन्ध अन्धयारा। गुरमुख साचे प्रभ आत्म जोत किया उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलंकनिह साचा दर सच्चा दरबारा। साचा दर सच्चा दरबारा। वसे आप प्रभ निरँकारा। मूर्ख मुग्ध ना करन विचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी जाणे सारा। आप प्रभ जोती जोत। गुरमुख जगाए बेमुख रहे दर सोत। गुरमुखां नहाए आत्म तीर्थ बेमुख लगायण नर्की गोत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए एका जोत जोत सरूपी जोत। जोत सरूपी जगत विहारा। प्रभ साचे दी साची कारा। आवे जगत वारो वारा। गुरमुख विरला प्रभ करे विचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बेमुखां चलाए खण्डा दो धारा। सोहँ खण्डा प्रभ हत्थ फड़या। बेमुखां प्रभ विच मात देवे भन्न जो घड़या। गुरमुख साचा निहकलंक सोहँ तेरा पढ़या। साचा नाम रसना जप, विच बैकुण्ठी वड़या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद दर आगे खड़या। सच्चा घर सच्चा दरबारा। जिथ्थे वसे आप निरँकारा। एका जोत होए उज्जयारा। एका शब्द सच्ची धुन्कारा। एका जोत जगत पसारा। एकम एके आप एक किया अकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत आप निरँकारा। एका जोत प्रभ निरँकार। तीन लोक करे अकार। जोत सरूपी जोत प्रभ विच पताल नैण मुँधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाए मात आए वारो वार। एका जोत जगत अकारे। एका जोत प्रभ गिरधारे। एका जोत सर्ब सिक्दारे। एका जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तीन लोक होए पनिहारे। एका जोत जगत जगाए। एका जोत जीव जन्त बणाए। एका जोत मात पताल अकाश रहाए। एका जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त रहाए। एका जोत जगत अकार। एका जोत जगत अधार। एका जोत पसर पसार। एका जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप निरँकार। एका जोत जगत समाना। एका जोत सर्ब का ज्ञाना। एका जोत पुरख सुजाना। एका जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। एका जोत आप गिरधारा। एका जोत जगाए सर्ब संसारा। जोत सरूपी जोत टिकाए मेट वखाए अन्ध अन्धयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूपी सर्ब पसारा। जोत सरूपी जोत महाने। जोत सरूपी जगत रहाने। जोत सरूपी प्रगट जोत, आत्म देवे शब्द महाने। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका जोत जगाए विष्नूं भगवाने। एक जोत आप अकार। एका जोत विच मात प्रभ आए वारो वार। जुगो जुग प्रभ साचे दी साची कार। प्रगट जोत जाए बल द्वार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका जोत आप निरँकार। बल द्वार प्रभ जाए मंगया। बावन रूप धार प्रभ लाए अन्गया। झूठा देख जगत पसार प्रभ चरन निवार

भवजल पार लँघया। जोत सरूपी जोत अकार, अछल अछल्ल करे कराए जीव भुलाए ना कदे सन्गाया। अछल अछल्ल ना छलया जाए। वल छल आप कराए। प्रगटाए जोत ना लाए पल, भगत जनां प्रभ होए सहाए। सृष्ट सबाई जाए हल, आपणी कल आप वरताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जुगो जुग विच मात दे आए। साचा प्रभ साची कारे। जुगो जुग जोत सरूपी जामा विच मात दे धारे। जगत जोत अकार कर भयो राम अवतारे। जन भगत उधार कर, रावण जाए सँघारे। साची जोत जगत अकार कर, जामा विच लोकमात दे धारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका जोत आदि अन्त निरँकारे। साची जोत मात अकार। द्वापर आए कृष्न मुरार। घनईआ काहन आप गिरधार। रमईआ राम जोत अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप जोत निरँकार। जगाए जोत रमईआ रामा। नाउँ धराए घनईआ शामा। जगत आए पूर कराए प्रभ आपणा कामा। एका जोत जोत निरँकार, जुगो जुग जोत सरूपी पहरया बाणा। जोत साची सच अकारा। आया अथर्बण जगत विकारा। अल्ला अलाहू नूर होया उज्जयारा। साचा प्रभ खेल अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत अभेदा। साचा प्रभ सदा अभेदा। प्रभ का भेव ना पायण वेदा। वेदी वेद आप वड वेदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूपी अछल अछेदा। अथर्बण ऐड़ा अलाया। अल्ला अलाहू नूर उपाया। ऐड़ा अक्खर मुक्ख रक्ख, प्रभ कलिजुग लेख लिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी भेख वटाया। ऐड़ा अलाही नूर उपा। ईसा मूसा प्रभ दित्ती जोत जगा। जोत सरूपी भेख धर, सृष्ट सबाई लई भुला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव झूठे धन्दे लए लगा। ईसा मूसा प्रभ उपाया। आप आपणा पूत बणाया। एका सूत पेटा ताणा आप अख्वाया। विच अन्ध कूप प्रभ साचे दीप जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप कलिजुग खेल रचाया। ईसा मूसा प्रभ उपाए। कलिजुग झूठा खेल मिटाए। वड पीर पैगम्बर औलीए प्रभ झूठे धन्दे लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चार बत्ती हज़ार विच अन्धकार रखाए। कलिजुग वेला अन्त बणाई बणत, कलि आपणी जोत प्रगटाए। गुरमुख साचे सन्त जन, प्रभ साचा शब्द जणाए। आपणी बणत आप बणाए। बण मलाह आप चलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्त करन दी झूठी देह रचाए। ईसा मूसा जामा पाया। कलिजुग माया विच भुलाया। गुरमुखां गुर दरस दिखाया। आप आपणा भेद छुपाया। गुरमुखां प्रभ विच समाया। हउमे विच्चों रोग गंवाया। गुरमुखां प्रभ अन्ध अन्धेर गंवाया। आत्म साचा दीपक जोत जगाया। गुरमुखां गुर दर हरि हरि हरि मंगल गाया। जोत सरूपी जोत प्रभ, प्रगट होए दरस दिखाया। गुरसिखां देवे प्रभ वड्याई। गुर दर आए प्रभ साचा रसना गाई। साचा दर साचा घर साचा वर विच मात दे पाई। अवतार नर

जन सरनी पड़, वेले अन्त होए सहाई। आदि अन्त प्रभ सहारा। साचा प्रभ देवे मोख दुआरा। गुरमुख साचे कँवल नभ अमृत झिरना झिरे अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान लोकमात बणाए सचखण्ड दुआरा। खण्ड सच द्वार प्रभ बणाया। कृष्न मुरार जोत सरूपी भेख वटाया। जोत सरूप आप करतार विच मात दे आया। दुत्तर तार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप रघुराया। साचा प्रभ सच वरतंत। जोत निरालम प्रभ भगवन्त। कलिजुग भुलाए सारी आलम, गुरमुख जगाए विरले सन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बैठा अडोल आप इकन्त। आप अतोल जगत तुलाए। आप अभुल्ल सृष्ट भुलाए। वड अमुल ना किसे जणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त कराए। अन्तिम खेल अप प्रभ कराउणा। आपणा भेद आप प्रभ खुलौणा। आपणी सेव गुरसिख लगाउणा। वड वड वड देवी देव, गुरमुख साचा प्रभ उपजाउणा। अलख अभेव मात आप प्रभ अख्वाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रसना गाउणा। साचा प्रभ अलख अभेवा। भेव ना पाए देवी देवा। गुरमुख साचे साचा प्रभ बख्शे चरन सेवा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अमृत देवे साचा फल सोहँ मेवा। साचा नाउँ जगत भण्डारा। खण्ड सच प्रभ साचे का सच दुआरा। कोटन कोट कोट मंगण खड़े दुआरा। कदे ना आवे तोट, साचा प्रभ आदि अन्त सदा जगत वरतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक आप निरँकारा। निरँकार आप निरँकारी। एका जोत तीन लोक करे सिक्दारी। सृष्ट सबाई प्रभ चरन पनिहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्त करे ख्वारी। कलिजुग तेरा अन्त कराया। ईसा मूसा विच मात उपाया। झूठे धन्दे विच जगत लगाया। छुरी कटार प्रभ हत्थ फड़ाया। गऊ गरीब उप्पर सीस टिकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठा खेल मिटाया। अचरज खेल प्रभ आप बणाई। अथर्बण माण जगत दवाई। कलिजुग अन्तिम अन्तकाल प्रभ साची बिध बणाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कलिजुग जीव खेल ना जाणे राई। झूठा मार्ग जगत लगा के। आपणी रचना आप रचा के। झूठे धन्दे जगत लगा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल जाए आप खिला के। झूठा जगत झूठा अडम्बर। आप उपाए पीर पैगम्बर। अन्तिम अन्तकाल झूठा करे सुअम्बर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत सभ भरतम्बर। आपणी बणत आप बणाए। आपणा भेद ना किसे जणाए। जीव जन्त कोई सार ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखे जगत भुलाए। कलिजुग जीव सुरत भुलाई। आपणा बैठे मूल गंवाई। दिवस रैण रैण दिवस कुकर्म रहे कमाई। सति सति यति यति आपणा आप रहे गंवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत अन्त दे सजाई। ऐड़ा अथर्बण अलाही नूर। प्रभ अबिनाशी जोत सरूप। सर्ब जनां प्रभ आसा पूर। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान जोत सरूपी सद हिरदे वसे, बेमुखां दिसे दूर। अमृत वेला वक्त सुहञ्जणा। जोत जगाए प्रभ निरँजणा। वक्त सुहाए प्रभ भय भंजना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरा साचा साक सैण सज्जणा। अमृत वेला अमृत भरया। गुरमुख साचा प्रभ दर खरया। जोत प्रगटाए जगाए अवतार नरया। वक्त सुहाए पैज रखाए गुर सरन आए जन तरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आसा वरया। अमृत वेला अमृत धार। गुरमुखां देवे चरन प्यार। साचा गुर गुरमुख साचा पावे सार। साची देवे नाम भिक्ख, जन मंगण खड़े द्वार। भगत जनां लेख साचे लिख, मानस जन्म जाए सुधार। आत्म मिटाए सारी भुक्ख, अमृत बरखे किरपा धार। गुरमुख मिटाए आत्म तृख, देवे दरस आप करतार। गुरमुख साचे साचे सिख, चल आयण प्रभ दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत बरखे किरपा धार। अमृत वेला अमृत भरया। कर दरस प्रभ गुरमुख विरला कलिजुग हरया। गुरमुख विरले प्रभ अबिनाशी दर घर आए विरले वरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटे थिर घरया। थिर घर वासी थिर घर वास। एका जोत प्रभ अबिनाश। सर्ब घट मातलोक जोत प्रकाश। प्रगट होए प्रभ अबिनाशे। कलिजुग अन्धेर सर्ब विनासे। निहकलंक जोत सरूपी कीए वासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत जनां सद दासन दासे। दासन दास आप भगवान। वासन वास सर्ब जहान। नासन नास करे कलिजुग जीव बेईमान। निरासन निरास करे प्रगट जोत चतुर सुजान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा वड बली बलवान। वडा प्रभ बली बलवाना। जोत प्रगटावे घनईआ काहना। एका जोत जगाए रमईआ रामा शामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक पहरया जामा। साचा प्रभ जामा धारे। जन भगत सुहण प्रभ चरन दुआरे। साचा माण दवाए जिउँ ध्रू दरबारे। प्रहलाद माण रखाया नर सिँघ रूप आप प्रभ धारे। बावन भेख धार, चार वेद मुख पाठ उचारे। चक्र सुदर्शन बाण मार, दुरबासा हँकार निवारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जामा मातलोक विच धारे। साचा प्रभ वक्त सुहाए। मातलोक प्रभ जोत जगाए। जन भगत प्रभ दर ल्याए। अवतार नर दया कमाए। भण्डारे भर प्रभ सेवा लाए। आत्म दर प्रभ दे खुल्हाए। अमृत सर प्रभ झिरना दे झिराए। सरन पर गुरसिख तर जाए। जनक भगत तीन लोक वड्याए। राणी तारा तार, साध संगत प्रभ माण दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान होए आप सहाए। गुरमुखां देवे प्रभ चरन प्यार। जोत जगाए प्रभ अगम्म अपार। वसे विच आप निरँकार। एका जोत आप पसार। जुगो जुग आए वारो वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी कृष्न मुरार। साचा प्रभ कृष्न मुरारी। भगत जनां प्रभ पार उतारी। दर्योधन गंवाए माण, झुग्गी बिदर जाए पैज संवारी। सुदामे देवे माण, चरनी डिगे आप मुरारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत

सरूप प्रभ बनवारी। किरपा करे आप बनवारया। आए चरन प्रभ निमस्कारया। देवे माण जगत अपारया। महाराज शेर सिघ विष्नूं भगवान, माण रखाए विच संसारया। साचा प्रभ सच दुआरा। लेख लिखाए प्रभ अपर अपारा। नामदेव प्रभ साचे तारा। लेख लिखाए लेखे, वरते वरताए कराए साची कारा। एका जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मातलोक आवे जावे वारो वारा। जैदेव प्रभ तराया। साचा लेख प्रभ आप कराया। नाम देव माण दवाया। प्रगट जोत दर घर आए प्रभ भोग लगाया। वड वड वड प्रभ सिर छत्र झुलाया। आप देहुरा फेरया, सर्ब जीआं दा माण गंवाया। जोत सरूपी जोत प्रभ जुगो जुग जगत हित विच मात दे आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि जामा मातलोक विच पाया। मातलोक प्रभ जामा धरया। सरन लाग गुरमुख विरला तरया। दे दरस प्रभ आत्म कीना हरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जामा मातलोक विच धरया। मातलोक प्रभ जामा पाए। ओंकार जोत जगाए। विच संसार होए रुशनाए। अन्ध अंध्यार सर्ब मिट जाए। दर दरबार करोड़ तेतीस रखाए। नर अवतार चौथे जुग जामा विच मात दे पाए। हरिभगत अधार, निहकलंक कलि जामा पाए। सृष्ट ख्वार अन्तिम प्रभ कराए। हाहाकार विच कुन्ट चार मच्च जाए। आप निरँकार सद अडोल, सृष्ट सबाई आप डुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त जोत मात प्रगटाए। मातलोक प्रभ जोत जगा के। जन भगत प्रभ संग उपा के। साची बणत प्रभ जाए बणा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा विच मात दे पा के। लोकमात प्रभ वक्त सुहाया। उन्नीं सौ पंजाह बिक्रमी लेख लिखाया। साचा वक्त वेख, मातलोक प्रभ जोत जगाया। जोत सरूपी कीना भेख, सृष्ट सबाई तांईं भुलाया। कलिजुग जीव रहे वेखा वेख, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। बेमुख जीवां उलटी रेख, प्रभ गूढ़ी नींद सवाया। गुरमुख साचे आत्म वेख, प्रभ दर आए सीस झुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा विच मात दे पाया। मातलोक होए अकारा। जगे जोत अगम्म अपारा। धरे जोत आप प्रभ निरँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा किया पसारा। साचा प्रभ पसर पसारे। आवे जावे वारो वारे। कलिजुग जीव होए मूर्ख मुग्ध गंवारे। गुरमुख विरले आत्म रस पीव, आत्म जोत करे उज्जयारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल करे अपारे। अचरज खेल प्रभ अपार। प्रगटाई जोत विच संसार। बेमुख दर जायण रोत, नज़र ना आवे नैण मुँधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक आए जामा धार। साचा प्रभ जामा धारे। गुर गोबिन्द सच बचन लिखारे। वेले अन्त प्रगटे निहकलंक नरायण नर अवतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जाणे सारे। गुर गोबिन्द सति बचन लिखाया। निहकलंक सर्ब समरथ अन्त जामा पाया। जोत सरूपी जोत धराया। गुरमुख

वेखे बेमुखां प्रभ दिस ना आया। मानस जन्म लगाए लेखे, चरन आए जिस सीस झुकाया। जो जन रहे भरम भुलेखे, प्रभ नर्क निवास रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा विच मात दे पाया। वक्त सुहाया आप प्रभ, कलिजुग जामा पाए। वक्त सुहाया आप प्रभ, आपणी जोत प्रगटाए। वक्त सुहाया आप प्रभ, कलिजुग अन्धेर मिटाए। वक्त सुहाया आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ नाउँ रखाए। वक्त सुहाया आप प्रभ, विच मात प्रभ भाग लगाए। वक्त सुहाया आप प्रभ, गुरमुख साचे आत्म जाग लगाए। वक्त सुहाया आप प्रभ, गुरमुखां हउमे अग्न बुझाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मातलोक विच पाए। मातलोक प्रभ साचा आया। पंचम जेठ मुख रखाया। घनकपुरी प्रभ भाग लगाया। माता ताबो कुक्ख सुफल कराया। सिँघ जवंद नाम वड्आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा नाम धराया। घनकपुरी प्रभ भाग लगाए। आप आपणी जोत प्रगटाए। देवी देव प्रभ सरन ल्याए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा विच मात दे पाए। पुरी घनक धाम न्यारा। सतिजुग उपजावे प्रभ विच संसारा। जोत जगावे प्रभ गिरधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर निहकलंक अवतारा। घनकपुरी प्रभ जोत जगाए। वाक भविख्त प्रभ सति कराए। लिखाई लिख्त प्रभ आप वरताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत मात प्रगटाए। एका ओट निहकलंक रखा के। शब्द जोत गुर डंक वजा के। कोटन कोट प्रभ सरन लगा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल आप वरता के। जामा मातलोक विच पा के। साचे प्रभ जामा पाया। प्रभ अबिनाशी आपणा आप उपाया। आवण जाण इक्क खेल रचाया। कलिजुग जीआं भरम भुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा विच छुपाया। आपणा आप प्रभ छुपाए। बेमुखां प्रभ दिस ना आए। आत्म वस रसना रस, मदिरा मास मुख रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीवां दिस ना आए। कलि जीव अन्ध अंध्यारे। साचा शब्द भुल्ले गंवारे। सुणाया सिद्ध नानक निरँकारे। मंगया दान प्रभ भगत भगवान, एका शब्द अधारे। एका शब्द जगत वरतारे। सतिनाम गुर भरे भण्डारे। चार कुन्ट आप वरतारे। कलिजुग जीव होए गंवारे। साचा प्रभ मनो विसारे। रसना करन सर्ब विकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे अन्त ख्वारे। गुरमुखां प्रभ दया कमाए। साची धुन शब्द उपजाए। शब्द सुरत मेल मिलाए। गुरमुख साचे बूझ बुझाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बांहों पकड़ लए तराए। बांहों पकड़ प्रभ आप उठाए। गुरमुख विरले प्रभ जगाए। एका धुन शब्द सुणाए। आत्म सुन्न खोल्ह वखाए। निहकलंक तेरे कवण गुण गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान घनकपुरी कलि जामा पाए। साचे प्रभ जामा पाया। गुरमुखां प्रभ आप उपाया। आप आपणे जिहा बणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग आप

रंगाया। आपणे रंग आप रंगाए। आत्म साची जोत जगाए। गुणवन्त गुण आप दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। आपणी दया आप प्रभ धारी। धरे जोत कलि वड संसारी। गुरमुख विरले कलि आयण तेरे चरन द्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दी पैज संवारी। सर्ब जीआं दी पैज संवार। गुरमुखां देवे चरन प्यार। आत्म जोत करे उज्जयार। सोहँ शब्द उपजावे साची धुन्कार। गऊ गरीब प्रभ सुणी पुकार। सन्त जन बिल्लायण प्रभ चरन द्वार। कलिजुग जीव रखायण मदिरा मास रसन आहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कलिजुग आए जामा धार। प्रभ दर आए जीव जन्त पुकारे। अन्तिम अन्त काल कलि होए दुख्यारे। गऊ मात दर द्वार करे पुकारे। झल्ली ना जाए छुरी कटारे। बणे ग्वाला द्वापर कृष्न मुरारे। कलिजुग जीव होए दुष्ट दुराचारे। ईसा मूसा उम्मती, प्रभ करे ख्वारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धारे। दुखियां जीआं प्रभ पाए सारे। हँकारीआं प्रभ हँकार निवारे। सोहँ शब्द चलाए खण्डा दो धारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे कलिजुग तारे। साचा मार्ग नानक गुर लाया। मन्त्र नाम सति मुख रखाया। रक्खी आप पति प्रभ दर मंगया प्रभ होए सुहाया। कलिजुग जीआं अन्तकाल कलि आपणा आप गंवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा विच मात दे पाया। गुर दस रहे जणाए। एका राह जगत चलाए। सति सति सति आत्म धीर रखाए। यति यति यति साचा यति नाउँ रखाए। पति पति पति प्रभ आप रखाए। गति मितक मित गत सर्ब जनां दी आप जणाए। कलिजुग जीव भुल्ले तत्त, साचा गुर जो गए बताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि जोत सरूपी जामा पाए। साचा मार्ग जगत चलाया। कलिजुग जीवां आप भुलाया। आपणा बिया आप वढु खाया। अन्तकाल ना कोई चले हिया, प्रभ अबिनाशी दे सजाया। आत्म जोत बुझाई दिया, अन्ध अन्धेर दे कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दे सजाया। कलिजुग जीव दुष्ट दुराचार। भुल्ले राम इक्क करतार। साचा छड्डुया जगत विहार। निमाणयां निताणयां करन दुख्यार। सर्ब समाणयां वेले अन्त पावे सार। राजे राणयां प्रभ साचा करे ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरे जोत आप करतार। साचे पभ जोत जगाई। पंचम जेठ रुत्त सुहाई। कलिजुग जीव कौड़े रेठ प्रभ दर ना पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त दे सजाई। पंचम जेठ जगत वड्याए। प्रभ अबिनाशी जोत प्रगटाए। आप आपणा नाउँ धराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनकपुरी विच जामा पाए। पंचम तेरी वड वड्याई। पंचम तेरी सर्ब सरनाई। पंचम प्रभ मुख रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम विच सद रिहा समाई। पंचम प्रभ लेख लिखाए। पंचम पंचम प्रभ साचा मार्ग लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा दरस दिखाए।

पंचम प्रभ पंचम आया। पंचम साचा मुख रखाया। पंचम मार पंचम उपजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा दरस दिखाया। पंचम प्रभ बणत बणाए। पंचम प्रभ जोत प्रगटाए। पंचम आए गुरसिख तराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ निहकलंक कलि जामा पाए। पंचम जेठ हरि हरि हरि प्रभ आया। पंचम जेठ दर दर प्रभ दर सुहाया। पंचम जेठ नारी नर, दर मंगल गाया। पंचम जेठ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूपी जामा पाया। पंचम जेठ तोड़े जन। हउमे रोग निवारे तन। सोहँ शब्द उपजावे कन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा बेड़ा जाए बन्नृ। साचा गुर सच घर आया। साचा धाम प्रभ आप सुहाया। साचा नाम विच जगत रखाया। साचा काम प्रभ आप कराया। साचा जाम गुर शब्द प्लाया। घनईआ शाम प्रगट जोत दरस दिखाया। रमईआ राम विच मात दे आया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ जाए उठाया। बाल अवस्था खेल अपारा। कलिजुग जीव ना पावे सारा। साचा सन्त सच्ची शब्द उपजे धुन्कारा। जगे जोत झूठी देह महल मुनारा। सुरत, शब्द शब्द सुरत खोलृ देवे दस्म दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका देवे जोत अधारा। जोत सरूपी मेल मिलाया। सन्त मनी सिँघ माण दवाया। आपणा भेव आप खुलृाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणी सरन लगाया। आपणी सरन आप प्रभ लाए। आत्म साची जोत जगाए। अज्ञान अन्ध दे मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, स्वछ सरूप दरस दिखाए। सन्त मनी सिँघ आत्म तृप्तासी। मिल्या प्रभ घनकपुर वासी। आत्म उतरी सर्ब उदासी। मिल्या प्रभ सर्ब घट वासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए नाम जपाए सृष्ट सभ दासी। साचे प्रभ जोत जगाई। आप आपणी बूझ बुझाई। आत्म दूजे दूज मिटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द दे जणाई। साचा शब्द आप जणाया। निहकलंक विच मात दे आया। शाम रूप प्रभ नज़र ना आया। वड वड भूप प्रभ आप अखवाया। ना रंग रूप बेमुखां दिस ना आया। एका सति सरूप प्रभ एका जोत जगाया। गुरमुख साचे तेरी देह विच अन्ध कूप, जोत सरूपी दीप जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ पकड़ उठाया। सन्त मनी सिँघ प्रभ शब्द जणाए। दिवस रैण रैण दिवस बहिण ना पाए। मुखों सके ना कहण जो प्रभ सुणाए। आप जणाए जन गायण गाण, महाराज शेर सिँघ दया कमाए। साचे सन्त प्रभ किरपाधारी। दिसे बाल अवस्था नैण मुँधारी। साचा रस्ता गुर चरन द्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस कृष्न मुरारी। शाम रूप प्रभ दरस दिखाया। साँवल सुंदर प्रभ रूप वटाया। कँवल नैण प्रभ नज़री आया। सुंदर कुण्डल मुकट बैन, सिर हत्थ टिकाया। साचे सन्त दर लहणा लैण, प्रभ अबिनाशी दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणी सरन लगाया । साचे

सन्त प्रभ सति कर मान्नयां। चल्लया आप प्रभ दे भाणयां। आया दर होए निमाणयां। पाया माण विच सुघड़ स्याणयां। जाणी जाण आपणा बिरद आप पछाणयां। भगत भगवान इक्क रंग समाणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा भेव गुरमुख विरले कलि पछाणयां। सन्त मनी सिँघ आए दर। साचा प्रभ लए वर। बाल अवस्था सरनी पर। गुरमुख साचे मिल्या साचा घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणी जोत जगाए अवतार नर। बाल अवस्था खेल अपार। सन्त मनी सिँघ एका जाणे रंग करतार। कलिजुग जीव भुल्ले सर्ब संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान ना दिसावे बुझावे साचा सच द्वार। साचा सन्त सेव कमाए। दिवस रैण प्रभ रसना गाए। दरस पेखे नैण आत्म तृप्ताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी रिहा समाए। सन्त मनी सिँघ सति कर जाणो। आत्म गया सर्ब माणो। एका उपजे शब्द कानो। महाराज शेर सिँघ देवे शब्द वड्याई ना लगे संनो। शब्द धन्न गुर दर पाया। तन मन हरा कराया। सुण कन्न धुन उपजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख साचे सुन्न खुल्हाया। खुल्ले सुन्न उपजे धुंन। प्रभ साचे दी साची रुण झुण। आप सुणाए जगाए गुरमुख विरले चुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कलिजुग जीव ना जानण तेरे गुण। प्रभ गुण जीव क्या जाणे। सो जाणे जिस आप पछाणे। जगत भुलाए राजे राणे। राउ रंक प्रभ आप मिटाणे। मिटाए शंक प्रभ शब्द लिखाणे। वजाए डंक सोहँ शब्द जै जै जैकार कराणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चलाए आपणे भाणे। सन्त मनी सिँघ शब्द जणाया। आप आपणा भेद खुल्हाया। देवीआं देव घनकपुरी चल आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ खण्डा सीस लगाया। मातलोक अवतार धर। करे खेल अपार अपर। साचा प्रभ तारन तर। गुरमुख विरले आयण दर। बेमुख कलिजुग जीव जायण डर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान निहकलंक अवतार नर। साचा गुर सच्चा फ़रमाण। सच्चा कर्म सच्चा वरताण। सच्चा धर्म प्रभ चलाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप आपणी रखाए आण। सन्त मनी सिँघ प्रभ शब्द जणाए। आप आपणा हुक्म सुणाए। एका हुक्म जगत वरताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि सर्ब माण गंवाए। साचे सन्त प्रभ हुक्म सुणाया। अमृतसर दा राह बताया। सन्त मनी सिँघ सति कमाया। गुरमुख साचे प्रभ सीस उठाया। सच घर जाए प्रभ जाए टिकाया। पंचम गुर अर्जन जो शब्द लिखाया। हरि जू हरि मन्दिर प्रभ साचा आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आप वरताया। बाल अवस्था प्रभ खेल कराई। मंजी साहिब चरन टिकाई। लिख्त भविख्त सति वरताई। कलिजुग जीव सार ना पाई। पूरन सन्त प्रभ बूझ बुझाई। निहकलंक कलि जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां अन्त दे सजाई। मंजी साहिब चरन प्रभ धरया। साचा सन्त प्रभ सरनी

परया। सर अमृत वड सर सरया। वेला अन्त अन्तकाल बेमुखां हरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे फल कुकर्म कर्म जीव जो करया। अमृत सर दे उठे पुजारी। कलिजुग जीव दुष्ट दुराचारी। आत्म होई अन्ध अंध्यारी। दिस ना आए जोत निरँकारी। मातलोक आए जामा धारी। बेमुखां आत्म होए हँकारी। सन्त आए करन ख्वारी। बांहों पकड़ दर दुरकारी। सर अमृत होई हाहाकारी। वेखण आए सर्ब नर नारी। प्रभ साचे खेल करी अपारी। कासद मंगाया आप गिरधारी। खोहे पर अपर अपारी। जीव जन्तां माया प्रभ पसारी। आत्म विच करन विचारी। प्रभ साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कलिजुग जीव ना पायण सारी। साचा प्रभ सार ना पाई। आप आपणा रिहा छुपाई। कलिजुग जीव भरम भुलाई। प्रभ साचा सच वड्याई। निहकलंक कलि जामा पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कलि नाउँ धराई। साचा गुर सच घर आया। दर घर साचे चरन टिकाया। आपणा बचन सति कराया। बेमुखां बांहों पकड़ प्रभ बाहर कढाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आप वरताया। सन्त मनी सिँघ हुक्म सुणाया। निहकलंक विच मात दे आया। आपे आप करे कराया। सर अमृत सराफ दे, साचे सन्त प्रभ चरनी सीस झुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि सर अमृत थेह कराया। साचे सन्त कलम उठाई। प्रभ अबिनाशी शब्द जणाई। सर अमृत दी लिख्त लिखाई। प्रेत जून महंत बणाई। सर अमृत थोड़ा थोड़ा ढाही। विच निवास खण्डर रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुष्ट दुराचारां दे सजाई। अमृत सर थोड़ा थोड़ा ढाहया । सन्त मनी सिँघ लेख लिखाया। साचा भेख निहकलंक वटाया। वेखा वेख जगत भुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच पाया। साचा खेल प्रभ वरतंत। पूर कराए बचन पूरन भगवन्त। शब्द जणाए मुख रखाए गुरमुख साचे सन्त । कलिजुग जीव होए अञ्याणे, प्रभ माया पाई बेअन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान भेद ना जाणे कोई जीव जन्त। जीव जन्त होए अञ्याणे। प्रभ अबिनाशी भेव ना पाणे। देवे वड्याई जो जन चले प्रभ के भाणे। साचा प्रभ देवे माणे। बेमुखां भुन्ने जिउँ भठयाले दाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तख्तो लाहे राजे राणे। अमृत सर साचा सर। बेमुख ना बूझ्झया साचा दर। रामदास बचन गए हर। कलिजुग अन्तिम अन्त आपणा किया लैण भर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाणा लैण जर। कलिजुग जीव होए निधान। खायण लग्गे पूजा धान। आप गंवाया प्रभ दा माण। एका छड्डुया चरन ध्यान। आत्म होई सुंञ मसाण। अन्तकाल कलि फिरन जिउँ सुंञे घर काउन। दरगाह साची सच घर कोई ना देवे माण। प्रगटाए जोत अवतार नर, जन भगतां करे आप पछाण। कलिजुग जीव रसन विकारी। साचा गुर दरबार साचा वसे आप दरबारी। बेमुख जीव अन्ध अज्ञान, मदिरा मास, दर घर

करन रसन आहारी। आत्म चल्लया विकार, विषे विकारां विच ख्वारी। गुर अर्जन तेरा दर दरबार, कलिजुग जीवां अन्तकाल कलि गई मति मारी। भुल्ले सर्ब जीव अञ्याण, मूर्ख जीव होए नर नारी। जोत सरूप वेले अन्तकाल करे सर्ब ख्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे गुर शब्द जणाया। लिख्या धुरों आप उपजाया। साची सुर प्रभ राग उपाया। वासी घनकपुर विच मात दे आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलिजुग कराया। साचा प्रभ रंग करतार। वरते वरतावे विच संसार। करे करावे सच विहार। जोत सरूपी प्रगट जोत, निहकलंक अवतार । महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सन्त मनी सिँघ देवे तार। सन्त मनी सिँघ आप तराया। आप आपणे मार्ग लाया। साचा शब्द प्रभ उपजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी अनन्द दा हुक्म सुणाया। सन्त मनी सिँघ सति कर मन्नया । साचा शब्द साचा गुर बेड़ा बन्नया। गुरमुख साचे जाए तर, कलिजुग जीव अन्तकाल कलि होए अन्नया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख विरले मन्नया। साचा प्रभ सच घर आया। सन्त मनी सिँघ संग रलाया पुरी अनन्द आ डेरा लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचा कर्म कमाया। साचा शब्द सति जणाए। आप आपणी जोत प्रगटाए। निहकलंक नाउँ धराए। जगत पित आप अख्वाए। भगतन हित कलि जामा पाए। पुरी अनन्द भाग लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बाल अवस्था दया कमाए। पुरी अनन्द आप प्रभ आए। आपणा धाम आप सुहाए। गुर गोबिन्द वाक भविख्त सति कराए। लिखाई लिख्त निहकलंक भुगताए। साची बणत जगत बणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धराए। आप आपणी जोत प्रगटा के। आपणा बिरद रक्खे आ के। गुर गोबिन्द जिथ्थे गया गवा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा धाम फिर उपजा के। गुर गोबिन्द एह ओट रखाई। निहकलंक प्रभ जामा पाई। पूरन भगवन्त एका जोत आप रघुराई। साचे सन्त प्रभ देवे वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणी खेल आप बणाई। सन्त मनी सिँघ कर्म कमाया। सतिगुर साचा कंध उठाया। पुरी अनन्द विच फिराया। कल्गीधर अवतार कलि आया। कलिजुग जीआं प्रभ पड़दा पाया। बेमुखां दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा आप छुपाया। सन्त मनी सिँघ पल्ला फेर। शब्द जणाए सुणाए तिन्न तिन्न वेर। प्रभ अबिनाशी जोत प्रगटाए वक्त ल्यावे राउ रंक चरन लगाए घेर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए करे रुशनाए ना लाए देर। साचा सन्त हुक्म सुणाए। कलिजुग जीव आए हस्से हस घर जाए। प्रभ अबिनाशी दिस ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माया पड़दा पाए। माया पड़दा प्रभ ने पाया। दूई द्वैत विच भुलाया। झूठी जमाइत विच रुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप आपणा आप छुपाया। सन्त मनी सिँघ ऊँच

पुकारे। कल्गीधर आया अवतारे। एका जोत आप निरँकारे। मातलोक प्रगटे नैण मुँधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत कृष्न मुरारे। सन्त मनी सिँघ दए दुहाई। पुरी अनन्द दी सुणे लोकाई। प्रभ अबिनाशी सार ना पाई। आवे जावे वेखे हस्स हस्स उठ उठ घर तुर जाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलिजुग दे सजाई। साचे प्रभ सति कर्म कमाया। सन्त मनी सिँघ शब्द उपजाया। नीला चोला आप रंगाया। साचे सन्त तन पहनाया। बांहों पकड़ सीस उठाया। कूचो कूच आप फिराया। अमाम मैहन्दी विच मात दे आया। उम्मत मुहम्मदी सार ना पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया। साचा प्रभ दया कमाए। आप आपणी जोत प्रगटाए। दीन मुहम्मदी आप उपाए। वड वड मुहम्मद अहिमद एका नाम रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठा खेल मिटाए। साचा प्रभ सर्ब उपाए। आप आपणा विच टिकाए। आपे विच आपे बाहर रहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत एका रंग रंगाए। अन्तिम पीर मुहम्मद उपाया। दो शम्बा दिवस लिखाया। नौं रबीउल अव्वल नाम धराया। पंज सौ इकत्तर ईसवी जगत उपाया। एका जोत एका अकार विच मात कराया। विच संसार दीन मुहम्मदी प्रभ आप उपाया। दीन मुहम्मदी आप उपाया। जोत सरूपी सीर प्लाया। जोत सरूपी धीर धराया। वड पीरन पीर आप अख्वाया। साचा पीर आत्म रखाए सति। साचे मार्ग लाए प्रभ साचा रक्खे पति। साचा वणज कराए आप बुझाए आपणा तत्त। वाली दो जहान रक्ख वखाए जो जाणे मित गति। सिध्धे मार्ग प्रभ साचे लाया। आप आपणा राह बताया। कलिजुग जीव झूठे धन्दे विच फसाया। आप पुटाए कलिजुग नीव, अन्तिम करन दी बणत बणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत आप रघुराया। नूर मुहम्मदी आप उपा। एका नूर साची जोत प्रभ आत्म दए जगा। उपजे तूर बख्शे, एक धुन वजा। ना दिसे दूर, प्रभ सदा हज़ूर, प्रभ आपणा आप रिहा वखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत रिहा जगा। एका जोत आप जगाए। दीन मुहम्मदी इक्क चलाए। चार यारां संग रलाए। जोत सरूपी जोत प्रभ आप आपणी दया कमाए। चाली बरस दु:ख उठाया। प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। दिवस रैण रैण दिवस सद रसना गाया। छे सौ ग्यारां ईसवी प्रभ दया कमाया। एका शब्द धुन प्रभ साचे आप उपजाया। खोल्ह वखाई आत्म सुन्न, नूरो नूर कराया। जोत सरूपी जोत हरि सभ थांई होए सहाया। चाली बरस दु:ख उठाए। जगत भुक्ख बहुत सताए। जगत मनुक्ख देण सजाए। एका सुख प्रभ साचा रसना गाए। उतरे भुक्ख जोत सरूपी जोत प्रभ दर्शन पाए। होई अवस्था चाली साल। दया कीनी प्रभ कृपाल। आत्म दीपक दिया बाल। जोत सरूपी जोत प्रभ आपणा बिरद संभाल। ऐड़ा अथर्बण अलाहू नूर। सर्ब कला प्रभ किया भरपूर। आत्म जोत जगाई कोहतूर।

एका देवे सति सरूर। होए सर्ब सहाई सर्ब जनां दी आसा पूर। वडी वड वड्याई, प्रभ दर हज़ूर। जिस जन प्रभ पति रखाई, सो जन वड सूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी एका नूर। एका नूर आत्म धरया। सर्ब कला भरपूर, आप आपणे जिहा करया। दीन मुहम्मदी वड जोधा सूर, कर दरस प्रभ साचा तरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अन्त ना पारावरया। अन्तन अन्त होए दुःख भारी। शत्रू करन मुहम्मद ख्वारी। छड्डुया मक्का होए लाचारी। मदीने आया शाह द्वारी। काअबे डेरा लाया, वड होई दुष्वारी। प्रभ साचा दया कमाया। आत्म देवे शब्द ज्ञाना, हउमे लथ्थी तनों बिमारी। साचा साहिब रसना गाया, आत्म जोत होई उज्जयारी। प्रभ अबिनाशी घर में पाया, वडी होई जगत सिक्दारी। विच सृष्टी माण रखाया, रक्खे लाज आप वड मुरारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कलि खेल रचाया, एका जोत आप निरँकारी। साचा मार्ग मुहम्मद चलाया। चार यारां संग रलाया। एका वक्त जगत भुलाया। कलिजुग जीव सर्ब डुलाया। आपणा मूल आप गंवाया। सदी चौधवीं अन्तिम अन्त लिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल आप रचाया। सदी चौधवीं होए अख़ीर। दीन मुहम्मदी पए वहीर। चार कुन्ट ना कोई देवे इस नूं धीर। ना कोई सहाई पीर पैगम्बर औलीआ पीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाया तीर। अन्तकाल अन्त लिखाया। साचा वक्त भगत जणाया। वेला वक्त ना किसे लँघाया। बणाए बणत जिस जगत बणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त दे सजाया। वेले अन्त कौण छुडाए। आप मुहम्मद रिहा लिखाए। जोत सरूपी जोत आपणा नूर उपाए। नूर नूर नूर प्रभ विच मात दे आए। सर्ब कला भरपूर एका जोत जगाए। जोत जगाए जिउँ कोहतूर, बेमुखां दिस ना आए। निहकलंक अवतार नर, आपणा भेख आप वटाए। वेला अन्त अन्त कलि आए। अहिमद मुहम्मद रहे जणाए। पीर पैगम्बर सय्यद कोई रहण ना पाए। जोत सरूपी जोत अलाहू जोत उपाए। अमाम मैहन्दी प्रभ नाम रखाए। एका साचा नूर बेमुखां दे सजाए। आपे अमाम आपे शाम आपे राम आप अख्वाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साची जोत जगाए। मातलोक वक्त विचार। आवे जावे वारो वार। पुरी अनन्द कर खेल अपार। नीला रंग किया करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रंग रंगाए नीला सिर दस्तार। अनन्द पुर भए अनन्दा। प्रगटे जोत गुर गोबिन्दा। दुरमति मैल जाए धोत, जो जन आए सरन लगन्दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पतित पावन सद बख्शिंदा। पतित पापी प्रभ उधारे। चरन आए जो निमस्कारे। गुण अवगुण प्रभ ना चितारे। गुरमुख जन प्रभ पार उतारे। कलिजुग बेमुख जीव ना पायण सारे। वेला अन्त आए हुण, शब्द चलाए खण्डा दो धारे। कवण जाणे निहकलंक तेरे गुण, सृष्ट सबाई होए दो फाड़े। महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, अग्न जोत विच साड़े। बेमुख कलि आए हार। सोहँ खण्डा चले दो धार। जीव जन्त होए ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द मारे मार। साचा शब्द प्रभ चलाया। सोहँ खण्डा हत्थ उठाया। एका डण्डा सिर लगाया। आत्म रंडा जगत कराया। गुरमुख साचे विच नव खण्डा माण दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच ब्रह्मण्डां गुरसिख बहाया। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ उलटाए सच घर वसे। गुरमुख साचे आत्म जोत जगाए कोट रवि सस्से। बेमुख दर आयण जायण डर डर नस्से। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म अन्धेर रखाए जिउँ चन्द मस्से। गुरमुख आत्म उज्जयार। बेमुख कलि होयण ख्वार। गुरमुख शब्द धुन्कार। बेमुख प्रभ दर दुरकार। गुरमुख खोले प्रभ दस्म दुआर। बेमुख आत्म अन्ध अंध्यार। गुरमुख जोत जगे अपर अपार। बेमुख डुब्बे लहिंदी धार। गुरमुख अन्तकाल कलि उतरे पार। जोत सरूपी प्रभ खेल न्यार। आप आपणा किया पसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुखां जाए पैज संवार। आपणी सार आपे जाणे। कलिजुग जीव होए अन्जाणे। गुरमुख साचे सुघड़ स्याणे। प्रभ साचा साचा रंग सदा ही माणे। देवे दरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाने। जोत सरूप प्रभ दरस कर। गुरमुख साचा जाए तर। एका दिसाए साचा घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका देवे साचा वर। गुरमुख सच राह चलाए। आप आपणी सेवा लाए। मानस जन्म सुफल कराए।
३५ ०२ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड सच घर दिसाए। साचा घर सचखण्ड द्वार। जिथ्थे वसे आप करतार। एका एक अकार। बैठा अडोल आप निराधार। कलिजुग जीव ना पायण सार। मातलोक आए प्रभ जामा धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले पकड़ बाहों कलि जाए तार। तारनहार आप समरथ। गुरमुखां रक्खे दे कर हत्थ। बेमुखां प्रभ पाए नत्थ। सोहँ शब्द चलाए साचा रथ। साचा प्रभ महिंमा अकथ्थ। सृष्ट सबाई होई सत्थ। अन्तकाल प्रगट जोत प्रभ सृष्ट सबाई जाए मथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सर्ब कला समरथ। सर्ब कला वड भरपूरा। वडा गुर आप वड सूरा। शब्द लिखाए वरताए ना होए अधूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आत्म जोत जगाए मिटाए सगल वसूरा। साचे सन्त गुर कीनी दया। जोत सरूप सदा दिस रिहा। एका जोत प्रकाश झूठी देह भया। पंचम होए नास प्रभ साचा नाउँ ल्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे विच समाया। आप आपणे विच समाया। आप आपणा प्रभ उपाया। आप आपणा ननाउँ धराया। आप आपणा भेख वटाया। आप आपणा लेख लिखाया। कलिजुग जीव जगत वेख प्रभ दए सजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा विच मात दे पाया। पंचम जेठ शब्द जणाए। वड वड सेठ प्रभ नष्ट कराए। कौड़े रेठ प्रभ पीड़ पिड़ाए। जोत सरूपी दाढ़ा हेठ आप चबाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

३५ ०२

भगवान, कलिजुग उलटी लट्ठ आप गिड़ाए। पंचम जेठ प्रभ साजन साजा। आपणे आप बणे वड राजा। आप आपणे सीस सिर रक्खे ताजा। गऊ गरीब सुण पुकार विच मात आए गरीब निवाजा। वड वड शाहूकार प्रभ खोल्ह्े पाजा। निमाणयां निताणयां प्रभ जाए तार, साचा आपणा रक्खे आप लाजा। गुरमुखां देवे चरन प्यार, अनहद धुन उपजावे साचा रागा। एका देवे शब्द अधार, निहकलंक जोत प्रगटाए विच माझा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप प्रभ साजन साजा। पंचम जेठ वक्त सुहाया। आपणा आप जगत उपाया। जन भगतां साचा लेख लिखाया। प्रभ दा वाक सदा भविख्त, जीव ना जाणे ना प्रभ जणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया। पंचम जेठ जगत प्रभ आए। गुरमुख साचे आप उपजाए। मातलोक प्रभ आप वड्याए। आप आपणे काज रचाए। वड वड राजन राज प्रभ ख़ाक रुलाए। आप साजे सारे साज, ऊँचो नीच प्रभ नीचों ऊँच कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ लिख्त लिखाए। साचा प्रभ साचा लेख जोत सरूपी प्रभ का भेख। सृष्ट सबाई प्रभ हत्थ रेख। बैठा अडोल विच रिहा वेख। पहली माघ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग लगाई साची मेख। साचे प्रभ सतिजुग लाया। निमाणयां निताणयां प्रभ गले लगाया। राउ उमराउ ख़ाक रुलाया। वडे वडे शाहो किते थाउँ ना पाया। साचा प्रभ अगम्म अथाहो, जोत सरूपी विच मात दे आया। जुगो जुग बेपरवाह आप आपणा खेल रचाया। कोई ना लवे उभे साह, सोहँ खण्डा हत्थ उठाया। चार कुन्ट चार वरन करन वाह, वाहवा वाहवा महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाया। पंचम जेठ शब्द जणाए। आपणा भेद आप खुल्ह्ाए। अछल अछेद विच मात दे आए। चार वेद भेद ना पाए। जोत सरूप जोत प्रभ सर्ब रिहा समाए। सृष्ट सबाई होए खेद, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त कराए। पंचम जेठ पंचम वड्आया। पंचम प्रभ मुख रखाया। राजन राज प्रभ पंचम जणाया। साजन साज प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सतिजुग साचे सिर पंचम ताज रखाया। पंचम होए तेरी सिक्दारी। पंचम प्रभ पैज संवारी। पंचम लेख लिखाए आप गिरधारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका देवे सोहँ सतिजुग साची सिक्दारी। सोहँ शब्द जगत प्रकाशे। कलिजुग अन्धेर सर्ब विनासे। एका जोत जगे अबिनाशे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई गाए स्वास स्वासे। स्वास स्वास गाओ प्रभ अबिनाशी, सोहँ धुन उपजावणा। आया प्रभ सर्ब घट वासी, सृष्ट सबाई एका मार्ग लावणा। प्रगट जोत घनकपुर वासी, आपणा नाम जपावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान निहकलंक कलि नाउँ धरावणा। सोहँ शब्द जगत चलाए। वरन चार प्रभ दे सुणाए। एका सरन निहकलंक रखाए। तारन तरन प्रभ आप हो जाए। पंचम जेठ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप भेत खुल्ह्ाए। पंचम

जेठ पंचम जीआ। पंचम नाम पंचम वर दिया। पंचम पंचम सोहँ साचा बिया। पंचम पंचम पंचम आत्म अमृत रस पीआ। गुरमुख साचे अमृत रस पंचम किया निर्मल जीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाया दिया। आत्म जोत होए उज्जयारी। गुरमुख साचे प्रभ पैज संवारी। आप खोल्ले प्रभ दस्म दुआरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत निरहारी। साचा प्रभ सद निराहारा। जोत सरूप आप करतारा। करे मात आप पसारा । देवे दान जीव जन्तां नाम अधारा। वड करामात सोहँ रसन उचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप दिसाए साचा दर दरबारा। साचा दर वड दरबार। चार वरन इक्क अधार। साची सरन निहकलंक अवतार। ज़ात पात प्रभ दए निवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग रवे करतार। साचा प्रभ सरन लगाए। वरन बरन सर्ब हटाए। राउ रंक इक्क कराए। सोहँ साचा डंक प्रभ आप वजाए। एकम एकँकार एका नाम रखाए। आत्म मिटाए सर्ब शंक, जो जन बूझ बुझाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी खेल रचाए। पंचम जेठ पंचम पाया। पंचम विच प्रभ आप वसाया। पंचम ताज प्रभ आप पैहनाया। संवारे काज होए सहाया। रक्खे लाज महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब सुखदाया। साचा प्रभ सर्ब सुखदाई। गुरमुख साचे वज्जी वधाई। दिवस रैण रैण दिवस प्रभ साचा रसना गाई। गुरमुख साचे लहणा लैण, चल आए प्रभ सरनाई। बेमुख आए दर गए मुख भवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सर्ब जनां विच रिहा समाई। गुर का शब्द सर्ब गुण। गुर का शब्द उपजावे साची धुन। गुर का शब्द गुर दर आए सुण। गुर का शब्द मेल मिलाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग गुरमुख चुण। गुर का शब्द गुरसिख तराए। आत्म रंग मजीठ चढ़ाए। गुर शब्द मेल मिलाए। गुर शब्द गुरसिख कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप आपणी सरन लगाए। गुर शब्द गुर दर पाओ। आत्म संसा रोग मिटाओ। एका शब्द निजानंद उपजाओ। परमानंद गुरसिख समाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस आत्म तृप्ताओ। गुर दरस सभ रोग विनासे। गुर दरस गुरमुख होए जिउँ कंचन पासे। गुर दरस गुरमुख साचे आत्म साची जोत प्रकासे। गुर दरस अज्ञान अन्धेर सर्ब देह विनासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान करे बन्द खलासे। गुर शब्द गुरसिख कमावणा। साचा नाम रिदे वसावणा। सोहँ साचा जाम आप पिलावणा। पूरन काम विच मात करावणा। सतिजुग साचा सच सच वरतावणा। राउ रंक प्रभ इक्क करावणा । एका डंक सोहँ शब्द चार कुन्ट वजावणा। चार कुन्ट चार वरन प्रभ बांहों पकड़ उठावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरन लगावणा। अन्तकाल कलिजुग आए। प्रभ अबिनाशी खेल रचाए। पार ब्यासों चरन टिकाए। अन्ध अंध्यार सृष्ट हो जाए। वड जोधे जोध प्रभ पकड़

उठाए। हँकारीआं प्रभ लए सोध, अग्न मेघ वरसाए। आप बणे अगाध बोध, बोध अगाध प्रभ शब्द लिखाए। सृष्ट सबाई लए सोध, सिँघासण डेरा लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल कलि रचाए । पार ब्यासों चरन धर। अन्तिम खेल प्रभ जाए कर। माझा देस जाए हर। चरन लाग दोआब जाए तर। साचे प्रभ सर्ब गुणां भरपूर, मस्तूआणा उपजाए साचा सर। मस्तूआणा मोख द्वार। धरे जोत आप करतार निहकलंक अवतार। जोत जगे अगम्म अपार। राउ रंक प्रभ करे ख्वार। सुहाए बंक जिस जाए द्वार। वजाए डंक शब्द धुन्कार। एका अंक रूप करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्ची सरकार। साचा प्रभ सच्ची सरकारा। आप चलाए जगत विहारा। राजस करे आप वरतारा। आप लेख लिखाए सतिजुग अगम्म अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग चलाए साची कारा। मस्तूआणे चरन टिकाए। साधां सन्तां माण दवाए। हँकारीआं मदिरा मास अहारीआं प्रभ पकड़ उठाए। जगत करे ख्वारीआं, दर मंगण भिक्ख ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल मस्तूआणे जोत जगाए। मस्तूआणे जोत जगा। राणा संगरूर प्रभ लए उठा। जोत सरूपी जोत प्रभ आपणा दरस दए दिखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणी सरन लए लगा। आप आपणी सरन लगाए। आत्म साची जोत जगाए। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए। सञ्झ सवेर प्रभ इक्क कराए। एका जोत दीप जगाए। खोल्हे सोत होए रुशनाए। दुरमति मैल धोत प्रभ निर्मल कराए। अमृत आत्म प्रभ दर रस पीत, आत्म शांत कराए। आपणी भुल बख्शाए जो पिछे कीती, आगे प्रभ मार्ग पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सति सति प्रभ दर्शन पाए। साचा प्रभ सति वरताए। सच सुच्च विच देह वसाए। गुरमुख साचे सरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा सिर हत्थ टिकाए। आप आपणा सिर हत्थ टिकाए। तीन लोक दी बूझ बुझाए। एका दूज सर्ब मिटाए। ज्ञान गूझ भेव चुकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राणा संगरूर दया कमाए। राणा संगरूर दर माण दवाए। सन्त मनी सिँघ जोत जगाए। साचा तिलक विच ललाट लगाए। सतिजुग साचा गुर उपजाए। चार वरन सरन लगाए। आप आपणी दया कमाए। एका जोत प्रभ विच देह जगाए। वरन गोत जगत मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणा साचा धाम उपजाए। सन्त मनी सिँघ मिले वड्याई। सतिजुग साचे प्रभ बणत बणाई। चार वरन आयण सरनाई। हरन फरन प्रभ दे खुल्हाई। चरन आए जो जन बख्शाई। चार कुन्ट तेरे नाम दुहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दे वड्याई। चार कुन्ट पाए आण। कलिजुग चुकाए झूठी काण। एका शब्द सोहँ बाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां दा जाणी जाण। सन्त मनी सिँघ जोत जगाए। राउ उमराउ सरन लगाए। जोत सरूपी विच

समाए। तीन लोक प्रभ वड्याए। सतिजुग साचा सीस छत्र झुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साची दया आप कमाए। साचा कर्म आप कमा। राणा संगरूर संग रला। आपणा बाणा प्रभ लए बदला। साचा भाणा जगत वरता। अन्ना काणा इक्क थां बहा। सुघड़ स्याणा चरन लगा। राजा राणा सभ तख्तों लाह। वड वड महाराणा आप अख्वा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द विच मात दए चला। मस्तूआणे माण दवाए। आप आपणा चरन उठाए। साध संगत संग रलाए। वड वड साचे सन्त प्रभ शब्द सुणाए। बैठे इकन्त जो लिव लाए। प्रभ की महिंमा बड़ी अगणत, नीचो नीच ऊँचो ऊँच आप अख्वाए। आप बणाए सर्ब दी बणत, अंडज जेरज उत्भुज सेतज रिहा समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख साचे मेल मिलाए। साचा वक्त वक्त सुहावणा। जमन किनारे प्रभ चरन टिकावणा। वड वड दरबार प्रभ आप लगावणा। सच सच सिक्दार आप अख्वावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सन्त जन सुरत शब्द प्रभ आप जगावणा। सुरत शब्द प्रभ सन्त जगाए। एका शब्द आप उपजाए । साचा राग साची धुन उपजाए। खुल्ले सुन्न उठे जन जिन प्रभ दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अचरज खेल जमन किनारे आप कराए। जमन किनारे प्रभ जोत अकार। एका शब्द प्रभ रक्खे गुंजार। बेमुख जीव ना पायण सार। मदिरा मासी ना आयण चरन द्वार। राउ रंक ना प्रभ करे विचार। निमाणयां निताणयां प्रभ बांहों पकड़ कलि जाए तार। राजे राणयां प्रभ देवे दर दुरकार। चल आए सरन होए निमाणयां, प्रभ बेड़ा कर जाए पार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान प्रगटे जोत निहकलंक नरायण नर अवतार। निहकलंक जोत जगाए। जमन किनारे साचा धाम उपजाए। साचा प्रभ वड कर्म कमाए। साचा प्रभ दरबार जा लगाए। साध संगत प्रभ संग रलाए। वड वड प्रभ साधन सन्त शब्द जणाए। आप प्रभ भगवन्त साचा मेल मिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी प्रगट जोत गुरमुख साचे दरस दिखाए। साचा प्रभ सच कर्म कमाए। आपणी खेल आप रचाए। जोत सरूपी भेख वटाए। माया सुख आप प्रभ उपाए। वाली हिन्द दरस दिखाए। दरस दिखाए भय रखाए दिस ना आए। रोए घिगआए प्रभ प्रगट होए दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कलिजुग वेला अन्तिम अन्त कराए। वाली हिन्द प्रभ दरस दिखाए। जोत सरूपी जोत जगाए। आप आपणा भेव चुकाए। भुल भुल रुल रुल प्रभ दर पाए। खुल्ल खुल्ल प्रभ शब्द जणाए। अतुल्ल अतुल्ल प्रभ आप तुलाए। पारब्रह्म अचरज खेल कलि आप कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द सरन लगाए। वाली हिन्द सरन लगावणा। आप आपणा प्रभ प्रगटावणा। साचा सच दरबार दिल्ली शहर लगावणा। चार वरन सतिजुग साचा प्रभ राह बतावणा। सोहँ साचा शब्द सुणावणा। चार वरन

प्रभ एका मार्ग लावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान राउ रंक ऊँच नीच इक्क करावणा। साचा मार्ग प्रभ चलाए। जगत लेख प्रभ आप लिखाए। गुरमुख साचे वेख प्रभ सरन लगाए। जोत सरूपी किया भेस, प्रभ दिस ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणी दया आप कमाए। सच सुच्च सच वरताया। साचे मार्ग जगत लगाया। दुःख भुक्ख प्रभ रोग मिटाया। आत्म सुख प्रभ आप उपजाया। सुफल कराए मात कुक्ख, सोहँ शब्द जिन रसना गाया। वास ना होए उलटा रुक्ख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गर्भ वास कटाया। साचा प्रभ वड सिक्दारा। आपणे रंग आप मुरारा। सोहँ दान देवे अधारा। जन भगतां प्रभ भरे भण्डारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बणत बणाए सच्ची सरकारा। साचा प्रभ सच्ची सरकार। कलिजुग झूठा मिटावे प्रभ पसर पसार। बेमुखां प्रभ ठूठा हत्थ फड़ाए, दर दर फिरन भिखार। प्रभ रूठा फिर मनाए, जन होए निमाणा चरन करे निमस्कार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सच करे वरतार। सच सच जगत वरतंत। साची जोत जगाए प्रभ भगवन्त। गुरमुख पकड़ उठाए विच मात साचे सन्त। प्रभ साचा हुक्म सुणाए प्रभ बैठ आप इकन्त। विच जगत दूत भजाए, आप आपणी बणाए बणत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सरन लगाए साचे सन्त। आप आपणा भेव खुल्हा के। साचा माण जगत दवा के। चार कुन्ट आयण धा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द आपे जाए जपा के। चार कुन्ट दूत उठाए। आप आपणा हुक्म सुणाए। साची बूझ आप बुझाए। एका दूजा भउ चुकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लूझ गुरमुख साचा आत्म रस पाए। साचा गुर कर्म लिखाए। धुरों लिख्या मेट वखाए। साचे लेख गुरसिख लिखाए। आप आपणे नेत्र पेख, गुरसिख तर जाए। जो जन आए झूठा वेस कर, नर्क निवास प्रभ कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे लेख रिहा लिखाए। साचा शब्द सच चलाया। साची बणत प्रभ आप बणाया। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ दे उलटाया। विच वरभण्ड हाहाकार मचाया। विच नव खण्ड सोहँ शब्द जै जै जैकार कराया। साचा शब्द जगत प्रभ वंड, आपणा बिरद रखाया। बेमुखां प्रभ लाए डण्ड, अन्त नर्क निवास रखाया। सोहँ साचा नाउँ साध संगत प्रभ जाए वंड, पंचम जेठ कर्म कमाया। खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ उलटाए। विच वरभण्ड प्रभ आप समाए। अन्तिम कलि प्रभ खेल रचाए। वक्त ना जाए टल, प्रभ शब्द लिखाए। सृष्ट सबाई जाए हल, जल थल कराए। प्रगटाए जोत निहकलंक, महीना जेठ कहर वरताए। जेठ महीना वरते कहर। ना कोई गावे ना कोई रावे शाइर। आप आपणा भेद खुल्हावे, सृष्ट खपाए, गुरसिख तरावे करके मेहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्त ल्यावे ना लावे देर। अन्तिम वेला अन्त कर जावणा। सच सच वरताए, प्रभ साचा आपणा भाणा। चार

वरन इक्क थाउँ बहाए, ना कोई दीसे राजा राणा। इक्क कराए राउ रंक, जोत सरूपी विच समाणा। प्रभ सोहँ शब्द चलाए, प्रभ झूठा भेख कलि मिटाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका डंक सोहँ शब्द वजाणा। झूठा भेख जगत मिटाणा। आप आपणा मार्ग लाणा। हुक्म देवे वाली दो जहानां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। गुरमुखां प्रभ लिख्त लिखाई। विच मात देवे वड्याई। साचे धाम प्रभ माण दवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्मलोक ब्रह्मा लए उठाई। ब्रह्मा ब्रह्मलोक तजाए। वेला अन्तिम अन्त कराए। प्रभ साचे दी साची खेल, आप आपणी रिहा वरताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्मलोक दे उलटाए। अन्तिम वेला अन्त कर। ब्रह्मा जाए साचे घर। गुरमुख बहाए साचे दर। माण दवाए जगत, आप दवाए साचा वर। सृष्ट सबाई हत्थ फड़ाए, आपणा सिर हत्थ धर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ पाल बहाया साचे घर। साचा सिख सच घर बहाया। ब्रह्म सरूप ब्रह्म समाया। सच ब्रह्मा आप तराया। सच धर्म प्रभ आप चलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाया। सतिजुग साचा मार्ग ला के। आप आपणी दया कमा के। अन्तिम अन्त ध्रू करा के। दर दरबान प्रभ परे हटा के। जुग चौथे अन्तिम खेल सच करा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खण्ड ब्रह्मण्ड जाए उलटा के। वेला अन्त होई अख़ीर। हटया दर दरबान, प्रभ साचे दीनी धीर।

४१ ०२

विच मिल्या जोत महान, प्रभ साचे सच प्लाया सीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप कराए अन्त अख़ीर। सतिजुग साचा सच वरताया। गुरमुख साचा सच धाम बहाया। प्रभ अबिनाशी दया कमाया। जोत सरूपी जोत प्रभ गुरमुख साचे विच मिलाया। गुर सिख सिख गुर इक्क रंग समाया। जोत सरूपी जोत प्रभ, दर घर साचे माण दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सिँघ सवरन आपणी सेवा लाया। गुरमुख साचा गुर दर बहाए। साचा दर दरबान सचखण्ड बहाए। मिल्या मेल ध्रू भगवान विच जोती मेल मिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे माण दवाए। गुरसिख साचा सच घर आया। प्रभ अबिनाशी दर्शन पाया। अन्तिम अन्त होई बन्द खलासी, ना मरे ना जाया। मानस जन्म होए रहरासी, प्रभ चरनी सीस निवाया। गुरमुख आत्म प्रभ दरस प्यासी, कर दरस आत्म तृप्ताया। देवे दरस घनकपुर वासी, जोत सरूपी गुरसिख समाया। जोत सरूपी गुरसिख समाए। बिन रंग रूप प्रभ दिस ना आए। सति सरूपी रिहा जोत जगाए। विच अन्ध कूपी साची जोत करे रुशनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साची दया आप कमाए। खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्ड समाया। विच नव खण्ड प्रभ जोत जगाया। आप अखण्ड सभ जगत खण्डाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग झूठा भाण्डा भन्न वखाया। कलिजुग झूठा झूठे जीव जन्त। प्रभ जोत महाने सच पछाणे सच वखाणे प्रभ साचा कन्त। गुरमुख

साचे आप बणाए साचे सन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुण निधान आप बणाए आपणी बणत। गुरमुखां रंगे एका रंग। प्रभ दर मंगे साची मंग। सदा सहाई अंग संग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड सूरा सरबंग। वड सूरा वड सिक्दारा। गुरमुखां प्रभ तारनहारा। एका देवे नाम अधारा। साचा प्रभ भरे भण्डारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी पावे सारा। साचा प्रभ सच भण्डारा। साचा प्रभ सच दुआरा। साचा प्रभ साचा देवे नाम अधारा। गुरमुख साचे साचा कर वणज वपारा। झूठी दुनियां जगत पसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूप जोत निरँकारा। गुरसिखां प्रभ बणत बणाए। गुरसिखां प्रभ जोत जगाए। गुरसिखां प्रभ आण तराए। गुरसिखां प्रभ तृखा मिटाए। गुरसिखां प्रभ सरन लगाए। गुरसिखां प्रभ हरन फरन खुल्हाए। गुरसिखां जोत सरूपी प्रभ मेल मिलाए। गुरसिखां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सेवा लाए। एका जोत प्रभ अकार। एका जोत प्रभ निरँकार। एका जोत प्रभ निराहार। एका जोत सद निराधार। एका जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एकँकार। एका जोत प्रभ जगाए। जीव जन्त बणत बणाए। विच विस्मंत रिहा समाए। आप भगवन्त दिस ना आए। गुरमुख साचे तेरी साची बणत प्रभ आप बणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक विच जामा पाए। साची जोत मात अकारे। जगे जोत अगम्म अपारे। जोत सरूप गुरसिख पसारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल कलि करे अपारे। जोत सरूपी गुरसिख समाया। रंग रूप प्रभ दिस ना आया। बेमुखां आत्म दिस ना आया। गुरमुखां साचे नाम दान दर मंगण आया। किरपा कर प्रभ भगवान, साची दात प्रभ झोली पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरन लगाया। गुरमुख साचे आप उपाए। प्रभ अबिनाशी दया कमाए। एका जोत विच टिकाए। एका गोत आप बणाए। मैल धोत सुरपति कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरन लगाए। गुर पूरा चरन बलिहार। गुरमुख साचे प्रभ जाए तार। प्रभ साचे दी साची कार। जुगो जुग विच मात लए अवतार। जोती जोत जोत प्रभ, एका जोत करे अकार। भगत जनां प्रभ पाए सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नर अवतार। एका जोत एका प्रभ एका करे अकारे। साचा देवे नाम अधारे। प्रगट जोत जोत सरूप प्रभ साचा दरस दिखारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत निरँकारे। गुरमुख साचे प्रभ आपणा भेद खुल्हाए। गुरमुख साचे प्रभ तीजा नैण खोल्ह वखाए। गुरमुख साचे लहणा लैण, प्रभ दर ते आए। प्रभ साचा सज्जण साक सैण, जीव झूठे भाई भैण, वेले अन्त ना कोई सहाए। भाणा प्रभ का सभ जन सहण, वेले अन्त ना कोई छुडाए। गुरमुख साचे गुर शरनी पैण, प्रगट जोत प्रभ वेले अन्त दरस दिखाए। कर दरस गुरसिख प्रभ साचे नैण, विच बबाण लए बिठाए। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त जोत धर विच जोती मेल मिलाए। पूरे गुर एह वड्याई। गुरमुखां प्रभ लए तराई। आत्म तृखा प्रभ लए बुझाई। साची भिख्या सोहँ नाम प्रभ झोली पाई। आत्म उतरी तृखा, गुरमुख साचे सोहँ स्वास स्वास गाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे विच मात देवे वड्याई। गुरमुख वड्याए आपे आप। प्रभ अबिनाशी आत्म मारे तीनो ताप। कोटन कोट कोट प्रभ दे दरस उतारे पाप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई माई बाप। सृष्ट सबाई प्रभ आप उपाए। आप अतुल्ल अडुल्ल अछल अछल्ल ना छलया जाए। बेमुख क्या जाणे किस रंग समाए। गुरमुख वखाणे जिस रिहा समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे प्रगट जोत दरस दिखाए। गुरमुखां प्रभ सरन लगाई। मेल मिलाया आप प्रभ, गुरमुख साचे दे वड्याई। गुर बहाई दर साध संगत प्रीत देवे चरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सचखण्ड निवास रखाई। सचखण्ड साचा धाम। जगे जोत एका राम। गुरमुख गाए सोहँ एका नाम। प्रभ पिलाए अमृत साचा जाम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरे पूर कराए काम। पूरन काम आप कर। देवे वड्याई निहकलंक अवतार नर। अमृत झिरना झिराए साचा सर। गुरमुख साचे प्रभ सरनी आए पर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अमृत आत्म झिरना झिराए साचा सर। अमृत सर तीर्थ नहाओ। आत्म साची जोत जगाओ। बुझी दीपक गुर नाउँ जगाओ। चरन लाग निजानंद उपजाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस साध संगत अन्तकाल कलिजुग तर जाओ। साचा गुर तारनहार। मूर्ख मुग्ध ना करन विचार। गुरमुख साचे पायण गुर पूरे की सार। गुरमुख साचे खोल्ह देवे प्रभ दस्म दुआर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए एका एकँकार। एकँकार एका अकार। गुरमुख साचे तेरी देही करे पसार। मेट वखाए प्रभ सारा अन्ध अंध्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस गुरमुख साचे तेरा बेड़ा हो जाए पार। प्रभ दरस गुरसिख पाओ। आत्म संसा डर गंवाओ। शब्द गुण गुण शब्द प्रभ साचे का रसना गाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका दूजा भउ चुकाओ। एका दूजा प्रभ भउ चुकाए। चौथा तीजा कोई रहण ना पाए। चार वेद प्रभ अन्त कराए। छे शास्त्र प्रभ मेट मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग सोहँ साचा शब्द उपजाए। सोहँ शब्द प्रभ उपजावणा। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ मेट मिटावणा। जोत सरूपी जोत प्रभ सर्ब जोत खिचावणा। एका एकम्म आप प्रभ, एका आपणा आप उपावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका नाउँ एका थाउँ सतिजुग साचे लावणा। गोदावरी प्रभ गोद सुलाए। अन्तिम अन्त गुर गोबिन्द चरन टिकाए। वेले अन्त दस्म गुर एह शब्द अलाए। आपणी जोत आपे आप, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान विच माझे देस धराए। गुर गोबिन्द एह शब्द लिखाया।

आपणा अन्तिम अन्त दिसाया। निहकलंक दी ओट रखाया। अन्तकाल कलिजुग प्रगट जोत, फतहि डंक प्रभ आए वजाया। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा होए सहाया। साचे प्रभ कर्म कमाया। अन्तकाल कलि जोत सरूपी जोत प्रगटाया। प्रभ अबिनाशी बेमुखां कलि दिस ना आया। लिख्या लेख प्रभ साचे सति सति सति वरताया। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान जामा घनकपुरी विच पाया। साचा प्रभ सच घर आए। दुखियां जीव दर दर बिल्लाए। आत्म दुःख प्रभ दे गंवाए। तृष्ना भुक्ख दे मिटाए। एका सुख आत्म उपजाए। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान दुःख दलिद्दर दए गंवाए। दुःख दर्द प्रभ निवारे। साचे शब्द प्रभ भरे भण्डारे। हउमे कढ्ढे प्रभ विकारे। एका जोत करे उज्जयारे। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जो जन आए चरन करे निमस्कारे। चिन्ता रोग आत्म सोग प्रभ मिटाए। दे दरस अमोघ, प्रभ आत्म धीर धराए। नेड़ ना आवे चिन्ता रोग, जन साचा शब्द कमाए। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द मुख रखाए। रोगन रोग जीव वड रोगी। प्रभ मिटाए आत्म चिन्ता ना होए सोगी। आप बणाए साची बणत, ना रहे विजोगी। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान साचा देवे नाम, अमृत रस गुरमुख साचे भोगी। अमृत रस आत्म तृप्ताए। प्रभ अबिनाशी होए वस, जो जन रसना गाए। बेमुख दर तों जायण नस्स, साचा प्रभ दिस ना आए। सोहँ बाण प्रभ मारे कस, झूठ जूठ रहण ना पाए। निहकलंक विच मात आपणी जोत जगाए। सतिगुर साचा साचा राह जाए दस्स, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दुःख रोग सर्ब मिटाए। मिटया रोग आया सुख। गया सोग उतरी भुक्ख। मिल्या जोग उज्जल मुख। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, कर दरस जीव सांतक वरताए साचा सुख। सांतक वरते सति वरतार। सांतक रूप आप करतार। सांतक सति सति सति करे विच संसार। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सांतक देवे इक्क अधार। तामस राजस प्रभ मनों तजाया। रजो तमो नेड़ ना आया। सतो गुण प्रभ सति समाया। सांतक साचा रूप बणाया। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान बैठ अडोल गुरमुख साचे विच आपणा आप टिकाया। सांतक तेरा सति वरतार। प्रभ साचा तेरे भरे भण्डार। मातलोक कदे ना आए हार। लोक परलोक गुरमुख साचा आपणा जाए सुधार। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान आत्म देवे साचा सांतक अधार। सांतक साचा सति सरूप। देवे प्रभ साचा भूप। सांतक वरते सति सति ना लागे दूख। कर दरस सति सरूप। देवे प्रभ साचा भूप। कर दरस गुर जीव उतरे तेरी भूख। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आत्म पुचावे साचा सूख। भूख निवारे आप प्रभ, जिस दया कमाए। भूख निवारे आप प्रभ, होए अन्त सहाए। भूख निवारे आप प्रभ, अमृत मुख चुआए। भूख निवारे आप प्रभ, साचा शब्द मन वसाए। भूख निवारे आप प्रभ, नाम दान दर भिच्छया पाए। महाराज शेर सिंघ विष्नूं

भगवान, सूखम सूख सूख सुखदाए। सुखदायक आप प्रितपाला। सर्ब प्रितपालक होए आप रखवाला। वड घाल गुरमुख विच मात दे घाला। वड वड दायक, प्रभ होए आप दयाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त तेरा होए आप रखवाला। साचा प्रभ होए सहाया। साचा प्रभ गुर साचे मेल मिलाया। गुरमुख साचा प्रभ साचे दी सरनाई आया। साचा प्रभ साचा घर सचखण्ड गुर धाम उपाया। गुरमुख साचे साचे घर प्रभ माण दवाया। एका जोत अकार कर, एका दीप जगाया। एका जोत प्रकाश कर, प्रभ साचा थान सुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी मेल मिलाया। जोत सरूपी मेल मिलाए। आवण जावण गेड़ कटाए। लक्ख चुरासी फेर ना आए। मात गर्भ ना वास रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त प्रगट जोत दरस दिखाए। एका जोत एका अकार। जन्म ना पावे दूजी वार। आप उपावे सच्ची सरकार। आवे जावे आप प्रभ मातलोक लए अवतार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जन भगतां जाए तार। भगत जनां प्रभ सदा बलिहारे। दु:ख भुक्ख प्रभ रोग निवारे। आत्म सुख प्रभ आप उपजाए। सुफल कुक्ख मात कराए। मातलोक प्रभ जन्म दवाए। गुरमुख साचे जन भगत प्रभ आपणी सरन लगाए। प्रगट जोत निहकलंक जामे बहत्तर भगत जन जाए आप लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अन्तिम अन्त आपणी बणत बणाए। साचा सन्त मुक्ख रखाया। सन्त मनी सिँघ नाम वड्आया। सतिजुग साचा सतिगुर बणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साची जोत जगाया। मातलोक प्रभ जन भगत उधारे। मातलोक आए प्रभ आप निरँकारे। कोई ना जाणे प्रभ खेल अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पार उतारे। साचा सिख बली बलवान। साचा प्रभ वाली दो जहान। तन मन धन किया कुरबान। देवे वड्याई,, महाराज शेर सिँघ प्रगट जोत विष्नूं भगवान। गुरमुख साचे सेव कमाई। बुध सिँघ मिली वड्याई। बाले चक्क धाम सुहाई। निहकलंक कलि चरन टिकाई। माया पाए जगत भुलाई। साचे लेख वेख गुरसिख चरन लगाई। साची मेख जगत लगाई। तन मन धन प्रभ बल जाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्त लेख प्रभ आप लिखाई। साचा प्रभ लेख लिखाए। जन भगत आप वड्याए। आप अगणत बणत बणाए। जीव जन्त प्रभ मुक्ख रखाए। सतिजुग साचा माण दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चार जुग तेरा नाम रखाए। साचा प्रभ लेख लिखईआ। ना कोई मेटे मेट मिटईआ। आप चढ़ाए साची नईआ। साचा दर द्वार प्रभ आप दवईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सचखण्ड निवास रखईआ। गुरसिख सचखण्ड द्वार, एका देवे जोत अधार, आपे आप प्रभ रघुराया। होए सदा सहार, एका जोत डगमगाया। बैठा रहे आप निराधार, रसना जप जप जीव मानस जन्म ना आवे हार। आप बोले

बोल बुलाए करतार, बिन बोले जीव जन्त समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई पाए सार। गुर संगत पंचम वड्याई। साध संगत प्रभ होए सहाई। गुर संगत प्रभ बणत बणाई। साध संगत प्रभ लाज रखाई। साध संगत तेरी धन्न कमाई। साध संगत प्रभ सेव कमाई। गुर संगत प्रभ बूझ बुझाई। साध संगत मार्ग पाई। गुर संगत नव निध पाई। साध संगत प्रभ आत्म सरूर रखाई। गुर संगत दुध्ध पुत्त फल साचा पाई। गुर संगत मूल आपणा ना कलि गंवाई। साध संगत सोहँ साचा नाउँ सद रसना गाई। गुर संगत मिले साचा थाउँ, प्रभ अबिनाशी सेव कमाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल होए सहाई। साध संगत कलि साचे गुण। गुर संगत प्रभ लए चुण। साध संगत साचा शब्द प्रभ साचे का सुण। गुर संगत उपजावे साची धुन। साध संगत प्रभ मेल मिलाए, गुरमुख साचे चुण। गुर संगत दरस दिखाए, पैज रखाए जोत सरूपी पवण। गुर संगत प्रभ ना विचार अवगुण गुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत मेघ बरसाए जिउँ बरसे सवण। अमृत बरसे साचा सीर। गुरमुखां आत्म कढ्ढे पीर। एका शब्द प्रभ रखाए आत्म धीर। अमृत साचा मुख चुआए जिउँ बालक माता सीर। मात कुक्ख प्रभ सुफल कराए, सोहँ शब्द चलाए प्रभ साचा तीर। बेमुखां प्रभ नष्ट कराए चार कुन्ट पाए वहीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन धराए नीर। साध संगत वक्त अख़ीर। साचा प्रभ होए सहाई देवे धीर। बेमुखां अन्तकाल कलि वेखो लथ्थे चीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप गहर गम्भीर। साचा प्रभ सच दर मंग। प्रभ आत्म चाढ़े साचा रंग। वड दाता वड गुर सूरा सरबंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दरस दान दर मंग। साचा प्रभ दरस सद पाओ। जन्म मरन दा गेड़ चुकाओ। एका जोत जोत मिल जाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग समाओ। साचा सिख गुर विच समाए। आत्म तृख प्रभ आप मिटाए। साची भिक्ख प्रभ अमृत मुख चुआए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आत्म साची जोत जगाए। जोत प्रगटाए काहना साँवल सुंदरा। प्रभ झूठा भेख मिटाए, जो पाए फिरन मुंदरा। प्रभ साची जोत जगाए, चरन लगाए गोरख मच्छन्दरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब पकड़ चरन लगाए करोड़ तेतीस सुरपति राजा इन्द्रा। सर्ब देवे प्रभ इक्क सरनाई। इकीस बीस भेख मिटाई। एका छत्र सीस झुलाई। चार कुन्ट सोहँ तेरे नाम दुहाई। बिरध बाल जवान सभ रसना गाई। एका पूजन भगवान, दूसर कोई रहण ना पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका नाम जगत रखाई। एक चलाए साचा नाउँ। आप उपजाए सभनी थाउँ। प्रभ जाए जोत प्रगटाए माण रखाए जगत गुड़गाउँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सद सद बलि जाओ। सदा सदा प्रभ बलिहार। एका देवे चरन प्यार। हउमे ममता देवे मार। अनूप

रूप देवे दरस आप करतार। सति सरूप जोत अधार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आत्म सूखम निर विकार। आत्म सूख आप उपजईआ। दूखम भूखम प्रभ मिटईआ। वड वड सूखम प्रभ सूख दवईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई चढ़ाए एका नईआ। एका टेका साचा नां। चार वरन अट्ठ सट्ठ तीर्थ मक्का मदीना ना कोई दीसे दूजा थां। एका लेखा प्रभ दर्शन पेखा, बाकी रहे ना नां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद बलि बलि जां। आपणा लेखा आप चुकाए। भेखी भेखा सर्ब भेख मिटाए। वेखी वेखा सभ कुछ वेख, कलिजुग जीव वेख वखाए। गुरमुख साचे नेत्र पेखा। भगत वछल प्रभ घर आण तराए। साची रेखा प्रभ विच मात लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर्म धर्म दोए मात उपाए। साचा कर्म प्रभ कमावणा। एका धर्म जगत चलावणा। एका ब्रह्म ब्रह्म सरूप दिखावणा। एका जन्म जीव जन्त दवावणा। एका चरन प्रभ दर पावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी आपणा आप विच टिकावणा। सर्ब जन्त जीव एका ज़ात। ऊँच नीच ना कोई पात। साचा प्रभ धरे जोत सति सरूप विच मात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई एका देवां सोहँ साची दात। सोहँ दात गुर दर पाओ। दर दर मंगण दी आस मिटाओ। एका नाम स्वास स्वास सर्ब जीव गाओ। साचा प्रभ होए दास, कर दरस आत्म तृप्ताओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे रक्खे वास, कलिजुग जीव भुल ना जाओ। कलिजुग भुल्ले जीव अञ्याणे । गुरमुख विरले सुघड़ स्याणे । वेला अन्त अन्तकाल भुज्जण जिउँ भठयाले दाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चलाए आपणे भाणे। सच भट्ठ प्रभ वडा भठयाल। जोत सरूपी अग्न प्रभ साचा देवे बाल। सृष्ट सबाई होई अन्धेरी रात, गुरमुखां प्रभ रक्खे चरनां नाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे शब्द धन माल। शब्द धुन सच दरबारा। कर कर गुरसिख आत्म होए उज्जयारा। साचा नाम साचा काम साचा जगत अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त ना पारावारा। आदि अन्त अन्त आदि ना किसे जणाया। जाप ताप जुगो जुग प्रभ अपणा आप उपाया। पतित पापी पापण पाप जुगो जुग खपाया। सृष्ट सबाई माई बाप, आप आपणा बिरद रखाया। आप आपणा बिरद रखाए। जिउँ भावे तिउँ जगत चलाए। जो जन रसना गावे आत्म तृप्ताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए पूरन आस कराए। पूरन आस गुर दर होए। पूरा भरवासा भुक्ख रहे ना कोए। जप जीव स्वास स्वासां प्रभ आत्म तृखा मिटाए। कट्टे वासण प्रभ गर्भ वासा, जन्म मरन विच फेर ना आए। महाराज शेर सिँघ सर्ब घट वासा, अन्तकाल अन्तिम अन्त आप सहाए। अन्तकाल प्रभ होए सहाया। हरि जन साचा सन्त प्रभ आण तराया। आप बणाए गुरमुख बणत जोत सरूपी दरस दिखाया। जोती सरूप जोत जगाए। जोत सरूप

जोत जगत धराए। जोत सरूप आपणा खेल आप वरताए। जोत सरूप विछड़यां कलि मेल मिलाए। जोत सरूप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कलिजुग झूठा भेख मिटाए। जोत सरूप जोत अधारी। जोत सरूप वड संसारी। जोत सरूप भगत उधारी। जोत सरूप सृष्ट सबाई करे चरन पनिहारी। जोत सरूप प्रगटे जोत, एका कृष्न मुरारी। जोत सरूप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे नाम अधारी। जोत सरूप जगत पित आया। जोत सरूप एका साचा नाम चलाया। जोत सरूप सच्चो सच सच सच जगत धराया। जोत सरूप आपे वरते। जोत सरूप प्रगटे विच मात धरते। जोत सरूप जोत प्रभ खेल जाणे कोई ना करते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका जोत जगाए वड वड करते। जोत सरूप वडा वड नर। जोत सरूप मातलोक जोत दए धर। जोत सरूप गुरमुख साचे दर दर आए दरस प्रभ कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे वर घर। जोत सरूप सच घर आया। जोत सरूप आपणा आप मात प्रगटाया। जोत सरूप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत नूर उपाया। जोत सरूप सर्ब का ज्ञाता। जोत सरूप सर्ब पित माता। जोत सरूप जन भगतां देवे साची दाता। जोत सरूप गुरमुख विरले कलि पछाता। जोत सरूप चार वरन कराए एका भैण भ्राता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सर्ब जीआं का आपे दाता। जोत सरूप सर्ब गुण जाणे। जोत सरूप आप चलाए आपणे भाणे। जोत सरूप बांहों पकड़ गुरसिख उठाणे। जोत सरूप आप आपणे चरन लगाणे। जोत सरूप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाने। जोत सरूप साचा देवे नाम अधार। जोत सरूप गुरसिख देवे चरन प्यार। गुर चरन हरि का द्वार। गुर चरन गुरसिख तारनहार। गुर चरन दुतर जाए तार। जोत सरूप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन देवे प्यार सर्ब नर नार। जोत सरूप सच प्रीती। जोत सरूप गुरसिख देवे साची नीती। जोत सरूप गुरसिख चरन लागे सरबजीत सदा जग जीती। जोत सरूप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान काया सीतल कीती। जोत सरूप मेल मिलाए भगत भगवाना। जोत सरूप एका शब्द धुन सुणाए काना। गुरमुख साचे प्रभ आत्म दवाए प्रभ ज्ञाना। जोत सरूप संसा रोग मिटाए, दरस दिखाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। गुर चरन दोए जीव जोड़। गुर चरन गुरमुख साचे आदि अन्त लोड़। गुर चरन जो जन परसे प्रभ देही कट्टे रोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान विछड़यां मेल मिलाया साचा जोड़। गुर चरन गुर दर परस। गुर चरन आत्म मिटाए सारी हरस। गुर चरन आत्म मेघ रिहा दर बरस। गुर चरन गुरमुखां लगाए कर तरस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए सर्ब हरस। गुर चरन साचा संग। गुर चरन प्रभ दर मंग। गुरमुख साचे सदा अंग संग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चाढ़े अतम साचा रंग। जोत सरूपी साचा नूर। जोत सरूप गुरसिख आत्म

करे भरपूर। जोत सरूप गुरसिख साचे ना दिसे दूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची देवे चरन धूढ़। गुर चरन साची धूढ़। गुरसिख मस्तक लाए चरन धूढ़। प्रभ आत्म देवे साचा नूर। गुरसिख तराए जोत जगाए जिउँ कोहतूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उपाए साचा नूर। गुर चरन प्रीती साचा दर। गुर चरन प्रीत मिले प्रभ आसा वर। गुर चरन प्रीती मिले अवतार नर। गुर चरन प्रीत सर्ब जग जीत, मानस जन्म जीव ना हर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दिसावे एका घर। गुर चरन सच घर पाओ। गुर चरन लाग आपणा आप कलि तराओ। गुर चरन खोल्ह हरन फरन, गुर चरन धूढ़ मस्तक लाओ। गुर चरन लाग जागण भाग उपजे राग, जोत सरूप दरस नित पाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद रसना गाओ। रागन राग प्रभ आप उपजावे। सोहँ साची अवाज़ प्रभ आत्म धुन उपजावे। वड ताजन ताज आप महाराज सुन्न समाधी खोल्ह वखावे। वड साजन साज गुरमुख साचे तेरी लाज रखावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सरन पड़े दी लाज रखावे। गुर चरन साची सरना। कलिजुग जीव ना होए मरना। साचा प्रभ दर घर आए गुरमुख साचे करना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण दवाए जगत तराए चार वरनां। चार वरन प्रभ चरन लगावणा। सतिजुग साचा मार्ग लावणा। सति सच सुच्च विच देह वसावणा। बेमुख दर दर फिरन, प्रभ अबिनाशी नजर ना आवणा। प्रभ साचे गुरसिख जोत सरूपी दीप जगावणा। बेमुखां प्रभ जोत सरूपी अग्न लगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट दिवस रैण रैण दिवस जै जै जैकार करावणा। सतिजुग तेरा साचा राह। एका राह दिसाए बाकी सर्ब मिटाए दूसर कोई नाह। एका शब्द चलाए जोत जगाए सभनी थां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ जै जै जै कराए, जगत जपाए एका नां। सतिजुग तेरे साचे गुण। प्रभ अबिनाशी गुरमुख उपजाए चुण चुण। आपे आप खोल्ह वखाए आत्म सुन्न। जोत सरूपी जोत दिसाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां जाणे आपे गुण। सतिजुग सति पुरख उपाए। सच सच आप वरताए। दुःख भुक्ख आप मिटाए। एका नाम प्रभ अधार रखाए। मात कुक्ख बाल अञ्याणे प्रभ आत्म ज्ञान दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सोहँ साचे साचे सन्त उपाए। सतिजुग तेरा सति सतिवाद। एका शब्द उपजावे सोहँ वजावे साचा नाद। एका शब्द चलावे लिखावे बोध अगाध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द जणावे माधव माध। मोहण माधव कृष्न मुरार। कलिजुग आया जामा धार। निहकलंक नरायण नर अवतार। गुरमुख साचे साचा प्रभ जाए तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सतिजुग जोत जगाए अपर अपार। प्रभ जोत रूप अनूप। जोत जगाए प्रभ कलि साचा भूप। होए रुशनाए विच अन्ध कूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दूसर कोई रहण ना पाए, एका जोत जगाए सति सरूप। एका

प्रभ एका अकार। सृष्ट सबाई इक्क वरतार। इक्क वड्याई सर्ब संसार। इक्क जणाई शब्द धुन्कार। एक जगाई प्रभ
जोत अधार। जीव जन्त टिकाई गुरमुख विरला पावे सार। बणत बणाई आप नर अवतार। जीव जन्त उपाई सृष्ट चलाई
साची कार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग वरताए सति सति सति करतार। सति सति सति प्रभ करावणा।
सति सति सति गुरमुख विरले कमावणा। सति सति सति प्रभ साचे दान दवावणा। तत्त तत्त तत्त एक तत्त चार वरन रखावणा।
प्रभ आपणा आप उपजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सोहँ साचा नाम चलावणा। सति सति सति वरतंत। सति
सति सति गुरमुख विरला जाणे सन्त। सति सति प्रभ एका साचा कन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान महिंमा बड़ी अगणत।
सति सति सति प्रभ सारंगधर। सति सति सति प्रभ अवतार नर। सति सति सति सतिजुग साचा मात जाए धर। सति
सति होए बचन, चार वरन प्रभ एका जाए कर। सच सति महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एक खुल्हावे साचा दर। साचा
दर प्रभ खुल्हाया। अमृत मेघ प्रभ वरसाया। प्रभ साचे दी साची देग, गुरमुखां मुख चुआया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं
भगवान वड वड दर दरबार इक्क रखाया, वरन चार बहाया। चार वरन एका दर। इक्क दिसाए साचा घर। एका देवे
सर्ब वर। एका माण एका ताण सर्ब नारी नर। झूठी आण जगत कान चुकावे जोत जगावे निहकलंक अवतार नर। सतिजुग
साचा आप लगाए। सोहँ नाम जगत टिकाए। तट्ट तीर्थ कोई रहण ना पाए। भठ भगीरथ प्रभ सर्ब मिटाए। वड वड
वड आत्म सीर प्रभ अमृत मुख चुआए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग तेरी बणत बणाए। बणत बणाए आप
प्रभ, आपणी किरपा धार। बणत बणाए आप प्रभ, जाए काज संवार। बणत बणाए आप प्रभ, देवे ताज राज वडी सिक्दार।
बणत बणाए आप प्रभ, आप आपणी पाए सार। बणत बणाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुणवन्त गुण विचार।
आप आपणी बणत बणाए। जीव जन्त सरन लगाए। महिंमा अगणत गणी ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग
साचा मार्ग लाए। सतिजुग तेरा शब्द अनन्द। प्रभ साचा दु:ख रोग मिटाए बन्द बन्द। एका जोत जगाए एका दवाए
परमानंद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सुख उपजावे गुरमुख साचे निजानंद। निजानंद निज घर माण। कलिजुग
जीव ना भुल अन्जाण। साचा प्रभ गुण निधान। जोत जगाए गुरसिख महान। सोत खुल्हाए जीव होए दर दरबान। कोटन
कोट पाप गंवाए जन चरनी डिगे आण। सोहँ शब्द प्रभ जोत जगाए। आत्म उपजाए ब्रह्म ज्ञान। हउमे विच्चों खोट गंवाए,
गुणवन्त गुणी निधान। आलणे डिगे बोट कलिजुग जीव ना कोई टिकाए, अन्तकाल पछताण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
आपणी सरन लगाए गुरमुख साचे चतुर सुजान। साची सरन साची सरनाया। निहकलंक दर दर्शन पाया। एका अंक विकार

गंवाया। एका डंक प्रभ साचे सोहँ जगत वजाया। राउ रंक निहकलंक चार कुन्ट पकड़ उठाया। सुहाए थान बंक, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत जगाया। राउ रंक प्रभ उठाए। साचा डंक आप वजाए। एका अंक जोत जगाए। जीव जन्त प्रभ बणत बणाए। साधन सन्त प्रभ दरस दिखाए। आदिन अन्त महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी आस पुजाए। आसा मनसा प्रभ साचे पूरी जो जन आए चरन हदूरी। साचा घर साची धुन अनहद तूरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उपजाए उठाए वड वड सूरी। वड वड जोधा प्रभ उठाए। दूरन दूर नेड़ हो जाए। धूढ़ो धूढ़ चार कुन्ट लगाए। जूड़ो जूड़ राजयां महांराणयां जूड़ पवाए। गूढ़ो गूढ़ गुरमुख साचे रंग चढ़ाए। कलिजुग जीव बेमुख मूढ़ प्रभ अबिनाशी सार ना पाए। गुरमुख विरले लाए मस्तक चरन धूढ़, साची जोत विच ललाट जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आप वरताए। साचा प्रभ सर्ब कल वरते। कर दरस गुरसिख साचे कोटन पाप तन ते हरते। एका नाम आत्म धरते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन सरनी परते। गुरसिख साचा प्रभ दर आए। प्रभ वड्याई दर ते गाए। तन मन मन तन हरा कराए। आत्म जन सर्ब कढाए। निर्मल मन प्रभ रखाए। साचा शब्द कन्न सुणाए। साचा प्रभ जो जन रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साची जोत जगाए। एका जोत प्रभ अकार। जोत सरूप निराधार। प्रभ साचे का साचा घर, एका जोत करे अकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत आत्म दे अधार। एका जोत आत्म परवेशया। एका जोत जुगो जुग मात करे भेस्सया। जोत सरूप साचा प्रभ, सद सद आदेस्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर खड़े ब्रह्मा विष्न महेषया। साचा प्रभ सच दरबारा। जगे जोत अगम्म अपारा। कोटन कोट खड़े दुआरा। जोत सरूपी प्रभ जोत अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए रखाए धराए प्रगटाए सर्ब संसारा। एका जोत जगत वरताए। गुरमुख साचे प्रभ जोत जगाए। एका एक प्रभ एका ओट रखाए। गुरमुख साचे दे दरस, प्रभ बजर कपाट खुल्हाए। खुल्ले कपाट मिटे अन्धेर, प्रभ अबिनाशी नज़री आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। एका जोत अधार आत्म उज्जयार। देवे दरस आप करतार। दर आए प्रभ नैण मुँधार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा कर्म विचार। आत्म विचार प्रभ विचारे। किरपा करे आप गिरधारे। देवे दरस जोत निरँकारे। उतरे हरस प्रभ चरन दुआरे। गुरमुख साचे प्रभ पावे सारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे खोल्ह दस्म दुआरे। दस्म दुआर प्रभ खुल्हाए। एका आकार जोत कराए। प्रभ निराहार दरस दिखाए। सर्ब विकार प्रभ दे चुकाए। गुरमुख विचार प्रभ आप तराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी साचा दीपक गुरमुख साची

५१ ०२

देह जगाए। साचा दीपक जोत जगाए। अज्ञान अन्धेर नष्ट कराए। एका ध्यान गुर चरन स्पष्ट रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख साचे तेरी दिब दृष्ट खुल्हाए। खुल्ले दृष्टी आप खुल्हावे। साचा इष्टी सच घर पावे। सर्ब सृष्टी प्रभ आपणी जोत जगावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दर घर आए साचा माण दवावे। प्रभ दर साचा मंगल गाया। आपणा आप आपणा नाउँ अलाया। गुरमुख साचे साचा जाप प्रभ साचे का गाया। गुरसिख साचा प्रभ साची सेवा लाया। एका धरे सोहँ साचा जाप, रसना जप जीव आत्म तृप्ताया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान होए माई बाप, पवण सरूपी विच समाया। गुर कथा रसन बखानी। संसा लथ्था, गुर चरन ध्यानी। उज्जल मथ्था विच दो जहानी। सोहँ साचा रथा गुरमुख चढ़ानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आत्म देवे जोत नूरानी। आत्म जोत एका इकांत। गुरमुख आत्म सीतल शांत। प्रभ कढाए भरम भ्रांत। गुरमुख देवे नाम साची दात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचा बख्शे चरन नात। चरन प्रीती साचा नाता। गुरमुख साचा प्रभ आप पछाता। सोहँ जपावे नाम वड वड दाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सर्ब जीआं का आपे ज्ञाता। गुणवन्त गुण विचारे। जो जन आए चरन निमस्कारे। देवे वड्याई विच संसारे। सोहँ नाम रसना गाए, वज्जी वधाई महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पंचम जेठ कलि जोत प्रगटाए। वज्जी वधाई आत्म अनन्द। प्रभ उपजावे परमानंद। गुरमुख साचे सरन लगा खोल्ह वखाए प्रभ परमानंद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई लखमी नरायण मनोहर मुकंद। गुरमुख रंग प्रभ चढ़ाए। साचा संग साध रखाए। अमृत आत्म मेघ वरसाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान उलटा कँवल फेर खुल्हाए। अमृत बूंद मुख चुआए, खुल्ले कँवल आत्म शांत। आत्म शांत एका देवे बूंद स्वांत। सुन्न समाधी होए इकांत। साचा दर घर प्रभ देवे सच प्रांत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख साचे सुरत शब्द शब्द सुरत आत्म कराए शांत। सुरत शब्द प्रभ दवाए। शब्द सुरत गुरसिख जगाए। सुरत शब्द प्रभ मेल मिलाए। सुरत शब्द शब्द सुरत प्रभ सुन्न खुल्हाए। शब्द सुरत प्रभ रंग रंगाए। सुरत शब्द प्रभ अंग लगाए। सुरत शब्द कँवल खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सुरत गुर दर बूझ बुझाए। साचा शब्द गुर दर पाया। मानस जन्म सुफल कराया। आवण जाण जाण आवण गेड़ कटाया। भगत भगवान गुण निधान मेल मिलाया। चतुर सुजान गुरमुख कराया। जन चरनी डिगे आण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाया। साचा गुर साची रीत। साची देवे चरन प्रीत। कर कर कर दरस गुरमुख प्रभ आत्म कीनी सीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोटन कोट कोट प्रभ साचा परखे नीत। साचा प्रभ वड खज़ीना। साचा प्रभ वड प्रबीना। साचा प्रभ गुरमुख साचे रसना चीना। साचा प्रभ दाना

बीना। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साचा देवे नाम नगीना। साचा नाम नाम गुण दात। सोहँ देवे प्रभ सच करामात। रसना सेवे अलख अभेवे, दर्शन देवे आपे आप। गुरमुख साचे साचे मेवे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे आत्म प्रभ साचा जाप। सोहँ देवे साचा जाप। कोटन कोट उतारे पाप। सोहँ शब्द एका देवे चरन नात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव ना कोई पुच्छे वात। गुर नानक जाए साचे दर। एका मंगया साचा वर। नाम निधान लै आया घर। मातलोक कलि गया धर। एका अंक चलाए सभ नारी नर। सारा शंक मिटाए जो सरनी जायण पर। इक्क सेवा मुख रखाए, गुरसिख साचा तरनी तर। सुक्के रुक्खड़े हरे कराए, रसना रसायण आप कर। चार कुन्ट दुखड़े सर्ब मिटाए, पवण बबाण धुरों धर। कुन्ट चार दहि दिश फिराए, एका देवे राम नाम नाम राम सतिगुर साचा वर। निरँकार गुर हुक्म सुणाया। जोत अधार दर वक्त सुहाया। जगत सुधार नाम सति सतिनाम मुख रखाया। वक्त विचार पाए सार, गुर नानक जाए दर दरबार, साचा दर जगत भण्डार प्रभ साचे आप खुल्हाया। जगत भण्डारा जगत वरताए। सचखण्ड दुआरा नाम सति दवाए। पवण हुलारा शब्द अधारा गुरसिख रखाए। दस्म दुआरा जोत अकारा गुरमुख कराए। मूर्ख मुग्ध ना पायण सारा, मदिरा मास मुख रखाए। गुणवन्त गुरमुख किने विचारा जिस जन दया कमाए। आप आपणी पाए सारा, सर्ब थांईं रिहा समाए। आप आपणी सार समाले। गुरमुख साचे सदा संग नाले। आपणा बिरद जुगो जुग आपे पाले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बेमुखां अन्तकाल कलिजुग करे मात मूंह काले। गुर नानक दर हरि साचा बूज्झया। एका मंगे साची मंग, भउ चुकाए एका दूज्जया। एका नाम पूरन काम गुर साचा बूज्झया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूप विरले बूज्झया। साचा दरस दान प्रभ दर मंगया। प्रभ साचे एका दात दे आत्म रंगया। साचा नाम गुर देवे जगत धर, रसना जप जीव पार लँघया। एका एक आप करतार एका रंग प्रभ रंगया। दूखन भूखन सर्ब निवार, सूखन सूख प्रभ सद अंग सन्गया। सूखन सूख प्रभ आप उपजावे, साचा नाम दान जन दरस दर गुर मंगण जावे, जोत सरूपी जोत प्रभ आपे जावे जोत प्रगटावे मातलोक कदे ना सन्गया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा नव रंगया। जगत सेव गुर कराई। वड वड देवी दैंत प्रभ चरन लगाई। नाम सति सति सति वरताई। प्रभ जगत भण्डारी साची दात जगत वरताई। आप अलख अभेव कलि खेल रचाई। जोत सरूपी जोत प्रभ गुर नानक दे वड्याई। गुर नानक जगत सुधारया। चार कुन्ट विच सति सतिनाम आप वरता रिहा। जीव जन्त साध सन्त प्रभ अबिनाशी दिवस रैण सर्ब गा रिहा। वेला अन्त होए भस्मंत, कलिजुग जीव मनों भुला रिहा। बैठा इकन्त वड्याई दंत, जोत सरूपी जामा विच मात

दे पा ल्या। साचा गुर सच परीख्या। गुरमुख साचे साचा दर घर साचे दीख्या। साचे गुर दी विच मात साची सीख्या। कर कर सेव दर मिले मेव, प्रभ देवे साचा नाम भीख्या। साचा दर भगत भिखारी। साचा दर वड भण्डारी। साचा दर सच दरबारी। अवतार नर जोत अकारी। दुष्ट सँघार प्रभ पार उतारी। दुतर जाए तार, जो जन आए चरन निमस्कारी। साचा मिलावा साचा घर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। अन्तिम अन्त ए आए। झूठी काया जगत रह जाए। झूठा तन झूठा जन झूठा मन जगत दिस आए। साचा शब्द प्रभ कन्न सुणाए। जोत सरूपी जोत प्रभ जुगो जुग एका जोत जगाए। अन्तकाल अन्तिम अन्त आया, गुर नानक वड वड कर्म कमाया। लहणा लैण आया दर, गुर साचा लहणा झोली पाया। साचा लहणा गुर दर पाए, गुर साचे रंग रंगाया। रंग रंगाया आपणे अंगद, सच धाम दे उपजाया। जोत सरूपी जोत प्रभ, साचा दीपक विच देह जगाया। जुगो जुग आदि अन्त प्रभ साचे दी सच सरनाया। एका जोत आप जगाए। जामे दस प्रभ पूर कराए। गुर गुरसिख रवि ससि समाए। साची भिक्ख प्रभ साचा पाए। साचे लिख लेख जगत वड्याए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा विच मात दे पाए। अन्तिम होए गुर गोबिन्द। लेख लिखाया सारी हिन्द। गुरसिख बणाए गुरमुख उपजाए प्रभ साचे की साची बिन्द। बेमुखां मुख रखाए मदिरा मास गन्द। जोत प्रगटाए पकड़ उठाए धर्म राए दे सजाए, दुष्ट दुराचार जो जन करन निंद। जामा धार कर्म प्रभ करया। मातलोक अवतार प्रभ धरया। साचा कर्म आप प्रभ करया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन सरनी परया। वाह वाह गुण साचे गाओ। वाह वाह प्रभ अबिनाशी घर में पाओ। वाह वाह अवतार नर रिदे वसाओ। वाह वाह महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस एका गुण गाओ। वाह वाह आए गुर दरबार। वाह वाह किरपा करे अपार। वाह वाह गुर संगत प्रभ जाए तार। गुर संगत पंचम जेठ जोत अपर अपार। पंचम जेठ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मातलोक लए अवतार। पंचम जेठ किया हित। गुरमुख आपे जाणे तेरी गति मितक। जोत प्रगटाए रखाए विच मात नवित्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सृष्ट सबाई जाए जित। वाह वाह साचा गुण गाया। गुर साचा साचा शब्द सुणाया। वाह वाह गुर दर दरबार, संसा भउ चुकाया। वाह वाह सति करतार, आपणा रूप वटाया। वाह वाह गुर पूरा भरे भण्डार, दर घर जो जन मंगण आया। वाह वाह गुर उज्जल करे मुख संसार, सोहँ साचा नाम जिस रसना गाया। वाह वाह महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस अपार, पंचम जेठ विच मात दे आया। मातलोक प्रभ भाग लगाए। पंचम जेठ लेख लिखाए। वड वड सेठ प्रभ हत्थ ठूठ फड़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पंचम जेठ साचा हुक्म सुणाए। पंचम जेठ

पंचम पंचा। गुरमुख साचे अमृत आत्म सिंचा। बेमुख दर नाचे, प्रभ काम चुकाए कंचन कंचा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दरस दिसाए जिस जन मन गुर चरनी भीन्ना। तन मन गुर आगे धरया। साचा शब्द धन दर वरया। सोहँ साचा सुणया कन्न, प्रभ सुणाए आसा वरया। आत्म गुरमुख जाए मन, प्रभ अबिनाशी सरनी परया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत जगाए पंचम जेठ अन्त ना पारावरया। गुरसिख आए प्रभ दर। वेखे वखाए साचा घर। गुण निधान अवतार नर। पूरन भगवाने मात जोत प्रगटाए अवतार नर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान राउ रंक इक्क जाए कर। राउ रंक इक्क करा के। पंचम जेठ माण दवा के। पुरी घनक साचा धाम फेर प्रगटा के। दीन मुहम्मदी आप उपाए खपाए प्रभ अन्तिम अन्त कराए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेला अन्त जाए सहाए। ईसा मूसा संग मुहम्मदा, प्रभ आप खपाए। एका रूप ब्रह्म दा जगत प्रगटाए। एका झण्डा धर्म दा, प्रभ जगत झुलाए। गुरमुख साचे प्रभ साचा देवे कर्म, जन्म विच मात दवाए। वेला अन्तकाल कलिजुग करन दा, निहकलंक सिर हत्थ टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ चार कुन्ट जै जै जैकार कराए। गुर संगत प्रभ भेव चुकाए। गुर अंगद जिउँ अंग लगाए। गुर संगत गुर दर दरबार बहाए। गुर संगत विच मात सच सरकार बणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया कमाए। गुर संगत प्रभ आप तराया। गुर संगत प्रभ साची नाओ चढ़ाया। गुर संगत प्रभ फूलन बरखा लाया। गुर संगत गण गंधरब सेवा लाया। गुर संगत गुरमुख साचे दर बहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धराए। साचा भउ प्रभ चुकाए। राउ उमराउ प्रभ नष्ट कराए। सोहँ चार कुन्ट प्रभ उपजाए। सुहाए थान प्रभ चरन टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत साचा माण दवाए। साचे प्रभ सदा वड्याई। जुगो जुग जन भगतां होए सहाई। भगतां हित प्रभ जोत प्रगटाई। सृष्ट सबाई जाए जित, गुरमुख एका सुख गुर चरन सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त आप सहाई। जिस तेरी जीव बणत बणाई। गुरसिखां प्रभ बणत बणाए। एका नाम रसन जपाए। साचा धाम विच जगत उपाए। पूरन काम प्रभ आप कराए। चार वरन सरन लगाए। धरनी धरना इक्क वरन कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाए। गुरमुख साचे साचे फूल। मिल्या प्रभ कन्त कन्तूहल । कलिजुग जीव अन्त ना भूल। जोत प्रगटाए प्रभ दूलो दूल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फंद कटाए आप छुडाए धर्म राए दी सूलो सूल। साचा प्रभ बन्दी तोड़। गुरसिख साचे चरन प्रीती प्रभ संग जोड़। बेमुख कलिजुग जीव अमोड़। वेले अन्तकाल कलि प्रभ साचे दी लोड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अन्तकाल बेमुखां प्रभ देवे रोड़। साचा गुर धीर धराए। साचा प्रभ अमृत मुख सीर पिलाए। साचा

गुर मात पित भैण भ्रा अख्वाए। एका लिखावे धुर मेट ना सके कोए। साचा गुर सर्ब जन मुन देवी देव सुर, आए कोल रहण ना पाए। चार वरन प्रभ दर आए तुर, एका साची जोत जगाए। सोहँ शब्द मन्त्र देवे साचा गुर, चार वरन आप जणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान चरन लाग भवजल बेड़ा पार कराए। एका जोत आप जगाई। पंचम जेठ देवे वड्याई। साध संगत प्रभ दर ते आई। प्रभ साचा साचे दर मिली वधाई। गुरमुख साचे प्रभ नव निध घर उपजाई। जोत सरूप पंचम जेठ प्रभ जोत जगाई। आप जाणे बिध गुरमुख साचे रिद्ध सिद्ध वस कराई। जेठ पंचम रुत्त आप सुहाई। पंचम जोत प्रभ प्रगटाई। पंचम प्रभ वक्त सुहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अचरज खेल कलि वरताई। अचरज खेल आप प्रभ खेला। झूठी देह संग तजाया झूठा जगत मेला। जोत सरूपी जोत प्रभ आपणे रंग नवेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पारब्रह्म रूप अगम्म साचा सज्जण सुहेला। रूप अगम्म रंग अपार। जीव ना जाणे प्रभ की सार। साचा प्रभ गुरमुख साचे लोक परलोक जाए सुधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान नरायण नर अवतार। तीन लोक प्रभ जैकारा। एका शब्द उपजे धुन्कारा। चुण चुण मारे करे ख्वारा, प्रभ वडे हँकारा। गुरमुख विरला पावे प्रभ रसना गावे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि प्रगटे निहकलंक अवतारा। निहकलंक अन्त कराणे। आप आपणी करे पछाणे। गुरमुख साचे प्रभ विच बहाए सोहँ सच बबाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वरते आपणे भाणे। वेले अन्त आप तराए। धर्म रखाए आण चुकाए। झूठी देह जगत तजाए। आप आपणा बल रखाए। वड वड जाहर आप हो जाए। गहर गम्भीर कोई भेद ना पाए। वड शाइरी शाइर कोई सके ना गाए। एका शब्द एका लहर प्रभ वरताए। एका कहर सवा पहर सृष्ट हो जाए। महीना जेठ लग्गे दुपहर, सृष्ट सबाई भट्ठ हो जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान उलटी लट्ठ आप गिढ़ाए। जेठ महीना आए जग। कहर अन्धेरी जाए वग। वड वड हँकारीआं प्रभ पकड़े शाह रग। गुरमुख साचे दरस द्वारीआं, प्रभ देवे दरस अभग। वडे वडे संसारीआं प्रभ आप लगाए आपणे पग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्न जोत लगाए बेमुख जीव जायण दग। अग्न जोत लगाए। चार कुन्ट हाहाकार कराए। विच संसार पै जाए दुहाए। ईसा मूसा मुहम्मदी प्रभ मेट वखाए। एका साचा सति दरबार आप रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्तकाल आपणी बणत आप रिहा बणाए। आपणी बणत आप बणाए। जीव जन्त खोटी मति रखाए। वड वड सन्त आप भुलाए। कलिजुग जीवां माया पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त कराए। अन्तकाल कलिजुग प्रभ करना। सृष्ट सबाई हेठ दाढ़े प्रभ आपणी धरना। पीड़ पिड़ाए पीस पिसाए प्रभ आपणी करनी करना। पकड़ उठाए सरन लगाए गोद बहाए

गुरमुख साचे धरनी धरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त कलि एका रखाए चार वरन चल आए प्रभ देवे सची सरना। साचा प्रभ सच कर्म विचारया। गुरमुख साचा प्रभ खिच ल्यावे चरन द्वारया। खोल्ह वखाए कँवल नभ, अमृत देवे मुख फुहारया। जोत प्रगटावे विच आत्म झब्ब, एका देवे जोत अकारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर गुरमुख पार उतारया। गुरमुख साचा प्रभ साचा पाया। आप आपणा भेद खुल्हाया। प्रभ अबिनाशी आपणी सरन लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई लेख लिखाया। साचे सन्त साची कार। प्रभ अबिनाशी पायण सार। सृष्ट सबाई रही वेखा वेख, नज़र ना आए जोत अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल करे करतार। साचे लेख प्रभ लिखाए। राजे राणे टुम्ब उठाए। पूर कराए आपणा वाक, वाक भविख्त जो रिहा लिखाए। गुरसिख आत्म मार झाक, प्रभ साचा खोल्हे ताक, जिस जन दया कमाए। जीव जन्त कलि होए आक, प्रभ अबिनाशी गए भुलाए। वेले अन्त सर्ब गंवाए छुडाए सज्जण साक, आपणे चरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राउ रंक इक्क रंग समाए। साचे सन्त भेजे लेख। राणे महाराणे ना जानण भेख। साचा प्रभ कलि आया जामा पाया नाउँ धराया जगत लिखावे साचे लेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दर आओ दरस पाओ, तृखा मिटाओ हँकार गंवाओ, सरनी सीस झुकाओ, मानस जन्म सुफल कराओ, आपणा मूल ना कलि गंवाओ, राजे होए भुल ना जाओ, जिस का दिया सर्ब तुम खांओ, निहकलंक कलि साचा थांउँ , भुल ना जाणा जगत नरायण वेख वेख। सन्त मनी सिँघ देवे भरवासा। राजे राणे समझण हासा। साचा मन्नया जगत तमासा। रसना लायण मदिरा मासा। अन्तकाल कलिजुग प्रगट जोत निहकलंक किया नासा। सतिगुर पूरा पूरन आसा। गुरमुख विरले पूरन भरवासा। आप आपणा सद रक्खे वासा। धरे जोत प्रभ अबिनाशा। मानस जन्म कराए रहिरासा। वेले अन्त प्रभ करे बन्द खुलासा। जोती जोत जोत मिलावे जोत प्रगटाए निज घर करे वासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ सद रक्खे वासा। सन्त मनी सिँघ आप प्रभ उपजाया। साचे सन्त प्रभ जन्म दवाया। पिता आप पूत उपजाया। आपणा बिरद प्रभ रखाया। साचा लहणा प्रभ साचे झोली पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दीपक विच देह जगाया। आत्म गहणा प्रभ पवाए। पूर्ब लहणा प्रभ झोली पाए। भाणा सहणा प्रभ हुक्म सुणाए। गुर संगत विच गुर रल बहिणा, प्रभ साचा माण दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी खेल रचाए। साचे सन्त फेरा पाया। बणाई बणत जन्म दवाया। आप इकन्त विच समाया। बणावे बणत जिस जीव उपाया। प्रगट जोत प्रभ भगवन्त, पंचम जेठ माण दवाया। साचे सन्त प्रभ माण दवाई। आप आपणी जोत टिकाई। आदिन अन्त होए सहाई। जोत

सरूप रिहा विच समाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ दया कमाई। साचा गुर सति प्रसादि। आवे जावे उपजावे शब्द धुन नाद। जोत सरूपी जोत प्रगटावे सदा ब्रह्माद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत शब्द लिखावे बोध अगाध। साचा प्रभ शब्द लिखाए। सन्त मनी सिँघ बणत बणाए। वड वड धनी गुर नाम दवाए। एका सोहँ साचा जाम मुख चुआए। उपजावे धाम प्रभ रसन लगाए। पूरन कराए काम सिर हत्थ टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नांउँ धराए। साचा प्रभ होए सहाई। सन्त जनां प्रभ बणत बणाई। मातलोक प्रभ देवे वड्याई। पंचम जेठ दर घर संगत आए मंगल गाई। मनी सिँघ प्रभ देवे आप वसाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सतिगुर साचा आप बणाई। सन्त मनी सिँघ प्रभ दया कमाए। साचा सतिगुर आप बणाए। आपणा हत्थ सिर टिकाए। शब्द रथ प्रभ दे चढ़ाए। एका अंक बंक द्वार सुहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए जाए लेख लिखाए। लेख लिखाए आप जगाए वड दाता भूप। प्रभ साचा होए सहाए ना दिसे रंग रूप। प्रभ साची जोत जगाए होए रुशनाए विच अन्ध कूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ देवे वड्याई सति सरूप। सन्त मनी सिँघ सच कर जाण। मिलाया मेल साचे सन्त आप भगवान। बणाए बणत जोत जगाई प्रभ महान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ माण दवाए आण। सृष्ट सबाई प्रभ तजाए। राउ उमराउ दर दुरकाए। वडे वड घाओ प्रभ माया जगत लगाए। वडे वड शाहो प्रभ ख़ाक रुलाए। प्रभ साचे सद बलि बलि जाओ, सन्त मनी सिँघ साची जोत विच ललाट जगाए। जोत विच ललाट जगाए। वडे वडे वड द्वार। कलिजुग जीव भरे हँकार। निमाणयां निताणयां प्रभ रक्खे प्यार। जोत प्रगटावे आवे जावे, नीचो नीच अख्वावे आप गिरधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ साचे दी साची कार। दर्योध्न प्रभ महल्ल तजाए। झूग्गी बिदर प्रभ भाग लगाए। अलूणा साग मुख लगाए। दूख भूख सूख रंग इक्क समाए। जन भगत उज्जल मुख आप कराए। जोत सरूपी प्रगट जोत, आपणी जोत टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त चौथे जुग बुग्घीं भाग लगाए। माझा देस पिण्ड बुग्घा। सतिजुग प्रभ कराए उग्घा। माण रखाए चार जुगां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका दर दरबार बणाए मेट वखाए कलिजुग निशान उपाए जो कलिजुगा। साचा धाम प्रभ सहाए। गुरमुख साचे आण तराए। सिँघ प्रेम प्रभ दया कमाए। पिता पूत एका सूत एका जोत एका गोत प्रभ साचा इक्क हो जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ विच बुग्घीं भाग लगाए। पंचम जेठ आसा वर। गुरमुख साचे प्रभ सुहाया तेरा घर। देवे वड्याई अवतार नर। सन्त मनी सिँघ जोत प्रगटाई आप जगाई साचे दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सति पुरखां देवे साचा वर। साचे

दर गुर पूरा आया। साचा घर प्रभ आण वसाया। सेवक सेवा प्रभ सेवा लाया। साचा मेवा प्रभ आप खवाया। वडा वड देवी देवा गुरसिख उपजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बिरथा जाए ना तेरी सेव, जो जन आए कमाया। साचे सन्त कीनी सेव। प्रभ दर मंगया साचा मेव। जोत जगाए वड देवी देव। इक्क कराए प्रभ साची सेव। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ सतिजुग बणाए साचा गुरदेव। साचा गुर गुर बणाया। लिख्या धुर प्रभ आप प्रगटाया। करोड़ तेतीस सुर प्रभ सरन लगाया। साचा सतिगुर सन्त बणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत साचा लेख आप लिखाया। पंचम जेठ देवे वड्याई। आपणी जोत देवे टिकाई। दिवस रैण होए रुशनाई। साचा दीपक आप जगाई। एका जोत प्रभ मात रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सर्ब घटां गुणतास देवे आप वड्याई। साचा सतिगुर प्रभ आप बणाया। गुर गुर गुर विच समाया। धुर धुर जोत सरूप विच मात दे आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत साचा खेल वरताया। साचा प्रभ सच वरताए। आपणे भाणे आप चलाए। एका गुर आप हो जाए। मात पित भैण भ्रा सज्जण साक सैण आप अख्वाए। प्रभ आपणी सरन लगाए जो जन सेव कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर कोई रहण ना पाए। साचा खेल प्रभ कलि खेला। चतुर्भुज जगत दुहेला। साचे सन्त सति कराया मेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत पंचम जेठ आए सुहाया वेला। थान सुहाए आण प्रभ, गुर संगत जोड़। थान सुहाए आप प्रभ, गुरसिख चढ़ाए तोड़। थान सुहाए आण प्रभ, गुरमुख साचे लए लोड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख चरन प्रीती जोड़। गुर पूरे शब्द जणाया। आपणा भेद आप खुल्हाया। चार वेद माण गंवाया। सोहँ साचा मुख रखाया। निहकलंक सिर हत्थ टिकाया। सन्त मनी सिँघ पंचम जेठ प्रभ साचे माण दवाया। साचा शब्द प्रभ साचा देवे। करे खेल अलख अभेवे। दिवस रैण रैण दिवस प्रभ अबिनाशी रसना सेवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा वड प्रसादी साचा नाम देवे साचे मेवे। साचा शब्द प्रभ सुणाया। पंचम दिवस आप सुहाया। साचे पित सच कर्म कमाया। किया हित पवण पूत आप तराया। बणया साचा पित, सिर हत्थ टिकाया। आप जणाए सर्ब गति मितक साचे भेद आप बुझाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संगत सतिगुर मनी सिँघ सतिजुग बणाया। गुर प्रसाद गुर साचा मन्नया। गुर प्रसाद देवे वड्याई जिस ताणा तणया। साचा प्रभ जोत सरूपी बेड़ा बन्न्हया। विच ब्रह्माद आदि जुगादि आवण जाण जाण आवण प्रभ साचे का खेल साचा मन्नया। आवे जावे जगत रहावे, जुगो जुगो जन भगतां बेड़ा बन्न्हया। एका रूप आप रखावे, सोहँ जोत आत्म जगावे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान विच सतिजुग उपजावे साचा माण दवाए, सतिगुर साचा सति कर मन्नया। साचा शब्द प्रभ साचे का,

कदे ना करनी भन्नया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई सदा अंग संगया, आप आपणे रंगाए रंगया। साचा छत्र सीस झुलाए। साध संगत प्रभ चरन लगाए। एका धुन संगत गुर मेल मिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान देवे वड्याई विच पंचम जेठ जोत प्रगटाए। सतिगुर साचे तेरी साची छाया। आत्म पड़दा प्रभ माया लाहया। एका जोत करे रुशनाया। प्रभ अबिनाशी कदे मरे ना जाया। सच घर सद रक्खे वास, आप होए दासन दास, संगत सिर छत्र झुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत आण तराया। साध संगत मन चाउ घनेरा। जोत प्रगटाए ना लाए देरा। निहकलंक प्रभ अबिनाशी सतिगुर साचा तेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौथे जुग लोकमात पाया फेरा। जोत सरूप सदा वरतंत। एका जोत जगाए पूरन भगवन्त। गुरमुख साचे मेल मिलाए आप उपजाए साचे सन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत पंचम जेठ आप बणाए तेरी बणत। बणत बणाए गुरमुखां आप। कोटन कोट प्रभ उतारे पाप। सोहँ शब्द जपावे साचा जाप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर कोई रहण ना पाए, आप उपाए आपणा आप। गुर उपाए वड वड सूर। सर्ब घटा प्रभ करे भरपूर। गुर प्रसादि प्रसादि गुर दिया, आत्म देवे साचा सति सरूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगावे साचा नूर। गुर प्रसादि गुर दर आए। सति सतिवादी प्रभ घर वसाए। बोध अगाध प्रभ शब्द लिखाए। विच विस्माद प्रभ आप समाए। साध संगत पंचम जेठ दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दिखाए। पंचम जेठ दिवस भागा। बेमुख सोया गुरमुख जागा। प्रभ साचे की सरनी लागा। अन्तिम धोए प्रभ आत्म दाग़ा। एका शब्द उपजाए सोहँ साचा रागा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अनहद वजावे आत्म साचा वाजा। आत्म धुन सच्ची धुन्कार। प्रभ अबिनाशी सुणी पुकार। घनकपुरी आया जामा धार। छड्डी देह आप गिरधार। जोत सरूपी प्रभ अकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग करतार। जोत सरूप गुरसिख समाए। बेमुखां प्रभ दिस ना आए। नाड़ी बहत्तर बन्द कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अंदर बाहर बाहर अंदर ना देखे ना दिस आए। आपणे घर आप प्रभ वस्सया। गुरमुख साचे सन्त जनां साचा घर प्रभ साचे दस्सया। बेमुख दर आए, वेख वेख उठ जाए, प्रभ सार ना पाए, आत्म अन्धेर जिउँ चन्द मस्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन सेव कमाए, चरनी सीस झुकाए, आपणा आप बणाए, जोत जगाए कोट रवि सस्सया। साची जोत सच प्रकाश। साचा प्रभ सदा अबिनाश। साचा प्रभ गुरसिखां सदा रहे दास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ प्रगट जोत साध संगत सद रक्खे विच वास। साध संगत प्रभ सदा वसेरा। गुरमुख साचे मन चाउ घनेरा। वेखे विगसे गुरमुख तराए ना लाए देरा। समाध सुन्न खुल्हाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान आत्म मिटाए सर्ब अन्धेरा। आत्म अन्धेर अन्ध अज्ञान। कलिजुग जीव भुल्ले अञ्याण। साचा प्रभ देवे साचा शब्द ज्ञान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, देवे दरस आप भगवान। देवे दरस दर घर आए। करे तरस गुरमुख प्रभ वड्याए। अमृत मेघ वरस, प्रभ आत्म तृखा मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सच तेरा तरस, जन्म मरन दा गेड़ कटाए। साचा शब्द गुण विचार। गुरमुख साचे सच दरस, रसना सद उचार। पतित पापी प्रभ देवे पुण, अमृत वरखे किरपा धार। गुरमुखां जणाए साचे गुण, चरन लगावे सति करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब देवे शब्द अधार। साचा शब्द प्रभ का रूप। सति सति सति वरतावे प्रभ साचा सति सरूप। तत्त तत्त रखाए आप डराए विच बैठा अन्ध कूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख गुर इक्क बणाए, ताणा पेटा जिउँ एका सूत। एका सूत नाम रखाया। स्वास स्वास प्रभ मणक बणाया। सोहँ धागे गुरसिख परोया। कंठ माल प्रभ गल विच टिकाया। खण्ड ब्रह्मण्ड नव खण्ड विच वरभण्ड माण दवाया। तोड़े घमंड नव खण्ड लाए डण्ड महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द चलाया। सोहँ शब्द साची कार। आप चलाए खण्डा दो धार। गुरमुख कमावे उतरे पार। बेमुख भुलावे डुब्बे नर्क मंझार। गुरसिख साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सरन परे काज सरे आया चरन द्वार। भुल्लयां डुल्लयां जगत रुल्लयां मिल्या प्रभ अबिनाशी वड वड वड मुल्लया। कलिजुग जीव कलि ना डोल, प्रभ अबिनाशी सदा अतोल, कदे जगत ना तुल्लया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दए भण्डारे खोल्ह, देवे साची नाम दात वड वड वड अनमुल्लया। साचा प्रभ वड भण्डारा। देवणहारा इक्क दातारा। मंगण खड़े कोट दुआरा। निखुट्ट ना जाए प्रभ साचे तेरा भण्डारा। जोत सरूप प्रभ साचा सचखण्ड वसे आप निरँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए कर किरपा पार उतारा। पार उतारनहार आप प्रभ आया। सच दर दरबार विच मात प्रभ लगाया। एका एकँकार साची जोत जगाया। प्रगट जोत आप गिरधार, सिँघासण डेरा लाया। जोत सरूपी देवे दरस अपार, गुरमुख साचे प्रभ आत्म भउ चुकाया। खिच ल्याए चरन द्वार, गुरमुख साचे प्रभ साचा दया कमाया। खाली भरे फिर भण्डार, सोहँ शब्द प्रभ झोली पाया। कर दरस प्रभ अपार, कर किरपा पार लँघाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर हत्थ टिकाया। भुल भुल भुल जीव वक्त गंवाया। रुल रुल रुल क्यों जीव आपणा आप रुलाया। आया वक्त दर गया खुल्ल, वड अमुल्ल भण्डार लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत भिखारी आप लिखारी साचा नाम सोहँ दान प्रभ झोली पाया। रसना रस रस जाप। आप उपाए आपणा आप। जोत जगाए कोट गंवाए ताप। मुख रखाए स्वास चलाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप रखाए गुरसिख पति। मंगी प्रीती चरन कँवल। मिले वड्याई उप्पर धवल। जोत सरूपी प्रभ

विच रिहा मवल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख साचे तेरा खोल्ह वखाए नाभ कँवल। कँवल नाभ आप खुल्हाए। सागर सिंध नीर उपाए। नैण मुँधार मुख उलटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत बूंद मुख चुआए। अमृत बूंद मुख चुआए। स्वांतक सांती सति वरताए। पवण सरूपी धूप जगाए। जोत सरूपी रूप प्रगटाए। आपणी जोत गुरमुख जगाए। दूई द्वैत प्रभ पर्दा लाहे। एका आप आपणी जोत आप जगाए। सोहँ साची दात प्रभ झोली पाए। गुरमुखां प्रभ करे बन्द खलास, दरस देवे जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाए। गुरमुख साचे उपजी सच्ची धुन्कार। साची धुन रुण झुण साचा गुण देवे आप करतार। गुरमुख साचे सतिजुग चुण, एका देवे जोत अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे सर्ब गुण, साचा नाम भरे भण्डार। साचा नाम रसना गाओ। आप आपणा दीप जगाओ। अज्ञान अन्धेर विनास कराओ। एका चरन ध्यान रखाओ। उपजे ब्रह्म ज्ञान, नाम निधान प्रभ दर पाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद सदा रिदे वसाओ। रिदे वसाओ आप भगवान। साचा देवे सोहँ दान। आप रखाए आपणा माण। आप जोत जगाए वड गुर बली बलवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति पुरख उपाए वाली दो जहान। सति पुरख साचा सति संग। प्रभ दर मंगी साची मंग। एका माण रखाए लगाए अंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सदा सहाई अंग संग। अंग संग प्रभ सदा सहाई। गुरमुख साचे तेरी पैज रखाई। उज्जल शब्द अटल रसना रसक रसक रसक खाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सद रसना गाई। रसना जप हरि का नाम। पूर कराए प्रभ हर का काम। प्रगट जोत दरस दिखाए एका राम। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ देवे साचा नाम। बेमुखां पर्दा आत्म पाया। साचा दर दरवाजा प्रभ बन्द कराया। कलिजुग जीव जगत माया आप भुलाया। दया कमाए सरन लगाए आप आपणी सेवा लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान ,पर्दा खोल्ह वजाए ढोल, अनहद साचा राग उपजाया। एका राग आप उपाए। एका जाग प्रभ लगाए। चरन लाग गुरसिख तर जाए। प्रभ वाग पकड़ी होए सहाए। ना लागे दाग़ सोहँ स्वास स्वास जीव रसना गाए। कलिजुग तृष्ना जलाए आग, प्रभ सांतक सति वरताए। प्रभ बणाए हँस काग साध संगत मिलाए। मदिरा मास त्याग, भुल भुल जीव हत्थ ना लाए। होए सहाई आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सद रसना गाए। गुर चरन प्रीती साचा जोग। प्रभ अबिनाशी देवे दरस अमोघ। हउमे ममता कटाए रोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सोहँ देवे साची चोग। सोहँ शब्द सति कमावणा। आत्म वत्त सोहँ बीज आप बीजावणा। पाचो तत्त प्रभ साचे नष्ट करावणा। एका यति निहकलंक आप रखावणा। साची देवे प्रभ साचा मति, साचे मार्ग लावणा। आप रक्खे गुरमुख पति, मदिरा मास

मनों तजावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साचा दीपक जोत जगावणा। आत्म दीपक करे उज्जयार। एका जोत जगाए अगम्म अपार। एका मार्ग लाए प्रभ विच संसार। गुरमुख बांहों पकड़ तराए, प्रभ देवे एका शब्द अधार। रिद्ध सिध्ध प्रभ वस कराए, चरन दोए जोड़ करे निमस्कार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सरन पड़े दी रक्खे लाज। लिख्या लेख प्रभ मिटावे। साचे लेख प्रभ आप लिखावे। साचा भेख आप करावे। गुरमुख साचा वेख प्रभ धीर धरावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सिँघ पाल तेरी लाज रखावे। पाल सिँघ प्रभ जोत जगाई। माहणा सिँघ देवे वड्याई। किरपा करे आप रघुराई। जामा धार साँवल सुंदर, गुरसिख दुआरे प्रभ आपे जाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर जाए गुरमुख साचा आप तराई। आपणा जामा आपे धारे। साँवल सुंदर रूप मुरारे। गुरमुख साचा पार उतारे। देवे दरस अवस्था बाल, बांहों पकड़ आप उठारे। आत्म होए लाल, साचा मिल्या प्रभ वसाल, साचा प्रभ खड़ा दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाए अपर अपारे। गुरमुख साचे प्रभ आप वड्या। साची दात प्रभ झोली देवे पा। वड वड हँस गुरसिख प्रभ दए बणा। आप आपणी बणाए अंस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान चरनी लए लगा। आपणी अंस आप बणाए। दुःख रोग प्रभ मिटाए। कर्म विजोग कोई रहण ना पाए। साचा भोग प्रभ दरस पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्या लेख दे मिटाए। सावण लिखाया सतिगुर लेख। पंचम जेठ मिटाया आप आपणा किया देख। एका दूजा भउ चुकाया, आत्म कीनी सद वसेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान झूठी मिटाई लिखाई रेख। लिखाया लेख आप मिटाए। गुरमुख साचा प्रभ बणाए। सरन पड़े दी लाज रखाए। लिख्या लेख प्रभ लेखे जाए लाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची दात झोली पाए। साची दात प्रभ आपे देवे। पिता पूत सपूत जग साचे मेवे। कोई नेड़ ना आवे जम डण्ड भूत, प्रभ साचा भय रखावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया आप कमावे। आपणे आप आप दयाला। भगत जनां पभ सद प्रितपाला। होए सहाई सद रखवाला। लिख्त मिटाई गुर गोपाला। लेख लिखाई भगत वछल आप कृपाला। वज्जी वधाई महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे सच्चा धन माला। गुरसिख प्रभ सुणे पुकार। पंचम जेठ जाए तार। सच सच सच करे आप विहार। देवे दात प्रभ साचा आप दातार। वड करामात साचा नात गुर चरन प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ जीवण बेड़ा कर जाए पार। साचे प्रभ शब्द लिखाया। जीव जन्तां भेद ना पाया। हस्स हस्स कलि वक्त गंवाया। दस्स दस्स दस्स प्रभ आप भुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निपुंसक रूप आप लिखाया। निपुंसक होए जन। चिन्ता रहे तन मन। आपणा आप ना सके बन्नृ। आत्म भुल्ले ना झूठा मन।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दया कमाई होए सहाई आत्म धीरज प्रभ जाए बन्न। आत्म धीर प्रभ धराए। साचा सीर गुरसिख पिलाए। साचा नीर प्रभ बंध वखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सोहँ तीर आप चलाए। आत्म देवे धीरज धन। गुरसिख कराए हरा तन मन। दया कमाए आप बणाए आपणा जन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान झूठा ठूठा देही दुखड़ा आप दए भन्न। गुरमुख आओ गुर दर आओ। आत्म चिन्त सर्ब मिटाओ। आत्म सुख सगल फल पाओ। अमृत आत्म साचा तीर्थ गुरमुख साचे नहाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूपी आत्म साचा दीप जगाओ। गुरसिख साचे सति कर मन्नणा। झूठा ठूठा प्रभ साचे भन्नणा। आप चढ़ाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साची रंगणा। गुरसिख आत्म प्रभ रंगाए। अंग अंग प्रभ अंग समाए। नंग नंग प्रभ भुक्ख नंग कटाए। कांग कांग प्रभ अमृत कांग चढ़ाए। स्वांगी स्वांग सांग सांग आपणा सांग वटाए। अंगीकार कर अंग गुरमुख साचे आप तराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत जगाए। गुरमुख साचे आत्म उज्जयार। साचा देवे नाम अधार। एका बख्शे चरन प्यार। साची धुन आप उपजावे साची धुन्कार। जीव जन्त जोत जगावे अपर अपार। रिख मुन जन प्रभ आप तरावे जो चल आवे द्वार। गुरमुख साचे गुरसिख बण जाओ। आत्म तृखा गुर दर बुझाओ। आप आपणा भरम मिटाओ। हउमे संसा रोग चुकाओ। दुःख द्वैत गलों तजाओ। साचा लेख सच लिखाओ। नेत्र पेख आत्म साचा दीप जगाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसन सद गाओ। आत्म दीप प्रभ जगाए। गुरमुख साचे बणत बणाए। महिंमा अगणत ना कोई गिणाए। जीव जन्त प्रभ रिहा समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बैठ इकन्त जोत जगाए। मंग मंग गुर सरबंग पूर कराए। भुक्ख नंग प्रभ आप कटाए। साचा संग गुर चरन रखाए। लगाए अंग कदे विछड़ ना जाए। प्रभ कराया चढ़ाया आत्म रंग। अन्धेर विनास जोत प्रकाश आप कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दुःख दलिद्दर सर्ब मिटाए। भुक्ख नंग वडा रोग। दिवस रैण रहे सोग। साचा सुख जग साचा जोग। प्रभ अबिनाशी प्रगट जोत देवे दरस अमोघ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दुःख दलिद्र कट्टे रोग। साची बिध प्रभ आप बणाए। रिद्ध सिद्ध प्रभ वस कराए। नव निध गुरसिख उपजाए। कारज कीने सिद्ध प्रभ दया कमाए। आप आपणी बणाए बणत, सर्ब पदार्थ घर उपाए। पूरन आसा, प्रभ कराए दुखड़ा नासा, दर रहण ना पाए। किया वासा प्रभ दया कमाए। जोत प्रकाशा अन्धेर मिटाए। सचखण्ड निवासा प्रभ दिखाए। जगत तमाशा प्रभ वखाए। झूठा करे कराए हासा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव भरम भुलाए। गुरसिख तेरी पूरन घाल। चरन प्रीती निभे नाल। साचा बचन प्रभ सद सदा पाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दीपक

६४
०२

देवे बाल। सति ज्ञान सति ध्यान। सति सति सति कर देवे माण। सति सति सति बली बलवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दीपक देवे बाल, साचा देवे नाम दान, नाम दान गुणी गुणवन्त। चतुर सुजान होए जीव जन्त। गुण निधान बणाए आप साची बणत। मेल मिलावा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप तराए जीव जन्त।

* ६ जेठ २००६ बिक्रमी पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर विहार होया *

प्रभ साचा सच कर्म। प्रभ साचा सच धर्म। प्रभ साचा गुरसिख दवाए साचा जन्म। प्रभ साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा कराए कर्म। प्रभ साचा जीआं दाता। प्रभ साचा पुरख बिधाता। प्रभ साचा पित माता। प्रभ साचा बख्शे चरनी नाता। प्रभ साचा सोहँ देवे साची दाता। प्रभ साचा कलिजुग होए ब्रह्म ज्ञाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा आप पछाता। प्रभ साचा सच सुच्च देवे। प्रभ साचा लेख इक्क लिखेवे। प्रभ साच सच दान देवे। जीव इस हत्थ कर उस हत्थ लेवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना सेवे। प्रभ साचा अगम्म अथाह। कोई ना जाणे प्रभ साचे का साचा राह। प्रभ सच वखाणे, जिस चलाए पकड़े बांह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दिसाए जोत जगाए बेपरवाह। साचा प्रभ साचा बंस। गुरसिख उपजाए साची अंस। उज्जल मुख कराए विच सहँस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख पकड़ पछाड़े जिउँ काहना कंस। प्रभ साचा हँकार निवारे। साचा प्रभ पतित पापीआं जाए तारे। साचा देवे सोहँ नाम अधारे। चार कुन्ट कराए जै जै जैकारे। एका जोत कराए मातलोक चमत्कारे। प्रभ साचा वाह वाह वाह रसना उचारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खाली भरे भण्डारे। प्रभ साचा भण्डार भर। कर दरस गुरमुख साचा जाए तर। प्रभ साचा कलिजुग जीव भाण्डा काचा, रसना जप जप जप आत्म होए सर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जामा पाया अवतार नर। साचा प्रभ साचा देस। साचा प्रभ कोई रहण ना पाए तख्त ताज वड नरेश। प्रभ साचे का भेस, जुगो जुग मात विच आए कर कर जोत सरूपी वेस। चरन लगावे वड वड मृगेश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी कलि साचा वेस। जोत सरूप भेस धार। मातलोक आया गिरधार। तीन लोक आप करतार। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक प्रभ सिक्दार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा देवे नाम अधार। तीन लोक प्रभ जैकारा। एका शब्द उपजाए धुन्कारा। सुंञ मसाण होए संसारा। गुरमुख विरला पाए प्रभ का दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड देवे साची वस्त थारा। साची वस्त थिर घर। गुरमुख साचे वेख कर। चरन लाग

मात तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगटाए जोत अवतार नर। चरन लाग साचे सिख। प्रभ अबिनाशी सोहँ पावे साची भिख। देवे वड्याई साचे लेख प्रभ जाए लिख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वडे वड मुन रिख। सोहँ शब्द डंक लगाई। किंगरे किंगरे मृदंग वजाई। रंग रंग रंग गुरसिख समाई। हाकन डाकन प्रभ सरन लगाई। माई गोरजां नष्ट कराई। गोरख सिद्ध कोई रहण ना पाई। वल छल इन्द्र जाल प्रभ कटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द मुख रखाई। एका शब्द मुख रखाया। रोग सोग प्रभ मिटाया। आत्म सुख सर्ब दवाया। साचा प्रभ होए सहाया। गुर चरन धूढ़ गुरसिख साचे तीर्थ नहाया। सरधा पूर पूरन आस कराया। आत्म देवे साचा नूर, प्रभ जोती जोत समाया। सर्ब कला प्रभ साचा भरपूर, गुरमुख साचे होए सहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान ना दिसे दूर, रसना जप जप जीव रसना सुख पाया। रसना जप स्वास स्वास। मानस जन्म कलि होए रास। आप जपाए सोहँ नास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म पर्दे करे खलास। गुरमुख आत्म निर्मल निर्मला। बेमुख तपे जिउँ बालू बिमला। गुरसिख तारे जिउँ तराया पिंगला। बेमुख खाली हत्थ मुड़े जिउँ रुक्ख सिमंला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत गुर चरन लाग चरन कँवल सद चुम्मला। गुरमुख साचा गुर का किया। आप आपणा किया हिया। आत्म जोत प्रकाश कर साचा जगाया दिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साचा बीज सोहँ आत्म बिया। आत्म बीज आप बिजाया। अमृत आत्म सिंच प्रभ हरा कराया। रसना जप स्वास स्वास प्रभ साचा राह बताया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आवण जावण तेरा सुफल कराया। आवण जावण मेट मिटाए। सोहँ उठाए साची तेग, बेमुखां सीस लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल रिहा वरताए। गुरमुख साचा सदा अनाथ। साचा प्रभ सिर रक्खे दे कर हाथ। लेख लिखाए आप रघुनाथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल रिहा वरताए, गुरमुख साचा सदा अनाथ। आदि अन्त पैज रखाई। साध संगत देवे वड्याई। रसना जप जप जप जीव अमरा पद पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे घर नव निध पाई। नव निध गुर दर। कारज सिद्ध सरन पड़। प्रभ मिलन की साची बिध प्रभ साचा वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगटे जोत अवतार नर। नर नरायण नरायण नर। मातलोक प्रभ आया जामा धर। लोक परलोक गुरसिख साचे जायण तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे एका नाम, जन्म मरन दा मिटे डर। एका सलोक एका वार। एका जपाए एका अकार। एका ध्याए रसन उचार। एका एक प्रभ साचा एका एकँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा नाम अधार। साचा नाम आत्म अधारी। पारब्रह्म रूप अपारी। चतुर्भुज चिट्टे अस्व अस्वारी।

प्रगटे जोत प्रभ बनवारी। कलिजुग आया जामा धारी। गुरमुख साचे प्रभ साचा पार उतारी। कलिजुग जीव भाण्डे काचे, वेले अन्त करे ख्वारी। बेमुख दर आए नाचे, आत्म चले सदा विकारी। अग्न जोत प्रभ लाए तमाचे, मदिरा मास लाहे ख्वारी। गुरमुख साचे ढाले सांचे ढांचे, सोहँ देवे साचा नाम अधारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत कलिजुग कर किरपा पार उतारी। साध संगत उज्जल मुख। सुफल कराए मात कुक्ख। मात गर्भ उलटा रुख। कर दरस तेरी उतरे भुक्ख। आत्म उपजे साचा सुख। कलिजुग भुल्ले सर्ब मनुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरे कराए सुक्कड़े रुक्ख। साचा प्रभ हर हरयावला। कर दरस जीव आत्म होए बावला। सोहँ शब्द प्रभ लिखाए आवला। जोत सरूपी जोत प्रभ, गुरमुख साचे विच सद समावला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेद खुल्हावला। उठ जीव जाग प्रभ दया कमाई। उठ जीव जाग, प्रभ भाग लगाई। उठ जीव जाग, प्रभ आत्म जाग लगाई। उठ जीव जाग, प्रभ साचा राग सुणाई। उठ जीव जाग, भिन्नड़ी रैण प्रभ आप सुहाई। उठ जीव जाग, पंचम जेठ मातलोक प्रभ जामा पाई। उठ जीव जाग, प्रभ खेल रचाई। उठ जीव जाग, खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ उलटाई। उठ जीव जाग, नैण मुँधार विच मात दे आई। उठ जीव जाग, बाशक सेज प्रभ सुंञ कराई। उठ जीव जाग, जोत सरूपी कर अकार विच मात प्रगटाई। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ जोत मात प्रगटाई। उठ जीव जाग, निहकलंक घनकपुरी कलि जामा पाई। उठ जीव जाग, प्रभ वक्त सुहाया। उठ जीव जाग, प्रभ साचे कलि सच कर्म कमाया। उठ जीव जाग, प्रभ सचे दी चरनी लाग, दर घर साचे प्रभ साचा आया। उठ जीव जाग, देही दुखड़े जायण भाग, सोहँ साचा रसना गाया। उठ जीव जाग, प्रभ हँस बणाए कग, चरन धूढ़ मस्तक लाया। उठ जीव जाग, प्रभ अनहद अनाहद उपजावे साचा राग, रसना जप जप जीव आत्म धुन उपजाया। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ मातलोक विच जामा पाया। उठ जीव जाग प्रभ भए दयाला। उठ जीव जाग, प्रभ सर्ब करे प्रितपाला। उठ जीव जाग, देवे दरस गुर गोपाला। उठ जीव जाग, मिटाए तृख पी अमृत भर प्याला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ होए आप रखवाला। उठ जीव जाग, सच कर्म कर। उठ जीव जाग, प्रभ सरन पर। उठ जीव जाग, मात आया प्रभ धरनी धर। उठ जीव जाग, कलिजुग मूल ना डर। उठ जीव जाग, अमृत नहाओ साचा सर। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंजम जेठ जाए भण्डारे भर। उठ जीव जाग, रैण विहाए। उठ जीव जाग, गुर लेख लिखाए। उठ जीव जाग, गुरमुख साचे वेख प्रभ सरन लगाए। उठ जीव जाग, वेख प्रभ साचे का साचा भेख, भुल भुल क्यों

वक्त गंवाए। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ मेख लगाए। उठ जीव जाग, मिटे रोग। उठ जीव जाग, प्रभ चुकाए आत्म सोग। उठ जीव जाग, सोहँ देवे प्रभ साचा जोग। उठ जीव जाग, साचा प्रभ साचा रस भोग। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म देवे साचा जोग। उठे जीव प्रभ आप उठाए। जन्म जन्म दे रुठड़े प्रभ आण मनाए। मात गर्भ विच उलटे रिहा लटकाए। कलिजुग जीव होए झूठे, प्रभ ठूठे हत्थ फड़ाए। गुरमुख साचे रंग अनूठे, प्रभ मुख चुआए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर आपणा हत्थ टिकाए। आपे जागे आप सवाए। आपे रागे आप उपाए। आपे लागे आप लगाए। गुर हत्थ वागे जगत चलाए। कलिजुग जीव अभागे, प्रभ साचा नज़र ना आए। गुरमुख प्रभ साचे दी सरनी लागे, प्रभ लए तराए। एका धुन उपजाए नाभे, आत्म सुन्न प्रभ खुल्हाए। अनहद वज्जण साचे वाजे, रुण झुण मुक्क ना जाए। एका जोत प्रभ ब्रह्मादे, ब्रह्म सरूप सदा समाए। शब्द चलाए बोध अगाधे, कोई भेव ना पाए। गुरमुख आत्म सद विस्मादे, गुरसिख साचे विच समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलंकनिह जोत सरूपी कलि जामा पाए। रैण सबाई वर दर घर प्रभ साचा पाया। पूर्ब लहणा गुर आप दवाया। भाणा सहिणा प्रभ बचन अलाया। साध संगत मिल रल के बहिण, प्रभ होए सहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप मिले सुखदाया। गुर संगत किया मंगलाचार। पूरन ब्रह्म उपजावे चार वरन मानस जन्म जाए सुधार। वड दाता आए वड वड दरबार। पारब्रह्म पूरन परमेश्वर पूर रिहा सर्ब थार, जगत पित सर्ब जगतेश्वर। किरपा करे अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धर्म कर्म देवे आप दातार। दाता गुर वड दातारी। मुन जन सुर गुर खड़े दरबारी। गुरमुख साचे प्रभ चरन निमस्कारी। हउमे कट्टे प्रभ तनों बिमारी। पारब्रह्म जोत अगम्म मिटाए भरम करे खेल अपारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे बणया लेख लिखारी। साचा किया सिख लेख लिखाए। वेख वेख गुरसिख तराए। लेखा लिखे आप ना कोई मेट वखाए। कर कर साचा भेख प्रभ जगत भुलाए। जो जन रहे वेखा वेख, प्रभ दर ना भाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आए तराए। गुरसिखां प्रभ आपे तार। भगत वछल आप गिरधार। आप आपणे रंग रंगाए, हउमे विच्चों देवे मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप जाणे सभना सार। बेमुखां बेड़ा आप रुढ़ाया। भरया बेड़ा विच मात, नाम चप्पू जीव ना लाया। गुरमुख साचे सच प्रभ बेड़ा बन्न्ह वखाया। सवेर सञ्झ सञ्झ सवेर प्रभ इक्क रंग रंगाया। आत्म जोत जगे अपार, अन्धेर अज्ञान सर्ब मिटाया। निर्मल जोत करे उज्जयार, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा सर्ब जीआं दी जाणे सार, गुरमुख साचे हरि हरि रसना गाया। प्रभ अबिनाशी प्रगट जोत, साचा लहणा झोली पाया। प्रभ साचा सच सुख

देवे। प्रभ अबिनाशी अलख अभेवे। करे कराए करनहार। बांहों पकड़ कलि जाए तार। बख्शे आप सति करतार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति पुरखां पावे सार। सति पुरख सति कर मान। प्रभ अबिनाशी जाणी जाण। माण रखावे आपे आण। चतुर सुघड़ सुजान बणावे, एका देवे नाम निधान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वाली दो जहान। दो जहानां आपे वाली। साध संगत तेरा सच पाली। आपे आप एथे उथे करे रखवाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच घर सच दर सद निवास रखा ली। सचखण्ड प्रभ निवास। एका जोत प्रभ अबिनाश। घट घट प्रभ रक्खे वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सद बलि बलि जास। बलि बलि बलि बलिहार। गुरमुखां देवे चरन अधार। नाम दान ज्ञान ध्यान वड दाता गुर दरबार। खान पान सर्ब मिट जाण, सोहँ देवे नाम अपार। मूर्ख मुग्ध जीव अञ्याण। चतुर सुघड़ बणन सुजान। साचा नाम रसना गाण। साचा प्रभ विच बिठाए आप बबाण। धर्म राए ना दए सजाए, वेले अन्त होए सहाई आण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जीआं दा जाणी जाण। आपे जाणे आप जणावे। आपणे भाणे आप रखावे। जन होए निमाणे चरन लगावे। जीव होए निताणे प्रभ पकड़ तराणे, जन सुघड़ स्याणे आप बणावे। वड वड कराने सचखण्ड धराणे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची देवे माणे। दरगाह साची पति पतवन्त। वड्याए मात विच सर्ब जीव जन्त। एका जोत इक्क हो जाए, बैठे अडोल आप इकन्त। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सचखण्ड निवास रखाए गुरमुख साचे सन्त। साचा सन्त सच घर वस्सया। साचा भेद प्रभ साचे दस्सया। साचा घर कोटन कोट प्रकाश रवि सस्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी भेद आप आपणा दस्सया। जोत सरूपी होए अकारा। निर्मल जोत सदा उज्जयारा। साच दीपक जगे अपारा। पारब्रह्म खेल करे अपारा। बैठे अडोल आप निराधारा। सृष्ट सबाई तोल, प्रभ पूर्ब करे विचारा। प्रभ साचा पड़दे देवे खोल्ह, मूर्ख मुग्ध आयण चरन दुआरा। आत्म धुन उपजावे साची धुन्कारा। प्रभ बचन लिखावे मुखों बोल, सच सच करे वरतारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वसे तेरे कोल, गुरमुख साचे आत्म कर विचारा। दर साचा बूझे, गुर चरन कर निमस्कार। दर घर साचा सूझे, गुर साचा सच दरबार। भेव खुल्हावे आत्म गूझे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भउ चुकाए एका दूजे, आप सच्चा करतार। एका दूजा भउ चुकाए। आपणे रंग आप रंगाए। अंग संग संग अंग होए सहाए। विच वरभण्ड माण दवाए। सृष्ट नव खण्ड रसना गाए। आप ब्रह्मण्ड समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी मेल मिलाए। जोत सरूपी मेल कर। दरगाह साची देवे धर। जोती जोत मिलाए, एका देवे जोत अपर। आवण जावण मेट मिटावे, आप बहावे साचे घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

दरगाह साची माण दवाए अवतार नर। साचा वक्त सर्ब सुहाया। साचा प्रभ रसना गाया। आत्म दुःख सर्ब मिटाया। साचा सुख रिदे वसाया। उतरे भुक्ख प्रभ दर्शन पाया। सुक्के रुक्ख जीव प्रभ हरे कराया। उज्जल मुख जगत धराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ साध संगत दया कमाया। दया करे दीन दयाल। सर्ब जनां आपे प्रितपाल। साचा अमृत सोहँ साचा धन माल। निर्मल किया जीआ गुर चरन बहाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती निभे नाल। चरन प्रीत आप दवाए। साची रीत जगत चलाए। बख्शे प्रीत प्रभ सेवा लाए। सदा अतीत गुर सरन जो आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची इक्क प्रीत रखाए। सची प्रीत गुर के चरन। गुरमुख प्रभ खोल्हे हरन फरन। आपे आप प्रभ तारन तरन। सर्ब कला समरथ प्रभ कारज करन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मात दुःख ना भरन। गुरमुख साचे साचा हट्ठ। सोहँ रथ चढ़ाए प्रभ पाए साचे भट्ठ। लालो लाल लाल कराए, अग्न जोत लगाए मट्ठ। प्रभ गुर संगत संग रलाए, साचा किया इक्ठ। पंचम जेठ दिवस मनाए, दरस दिखाए माण गंवाए तीर्थ अट्ठ सट्ठ। महाराज

७० शेर सिँघ विष्नूं भगवान होए सहाए, गुर संगत चरन आए नट्ठ। गुर संगत गुर दर परवान। देवे वड्याई वाली दो जहान। जन भगतां प्रभ आप करे पछाण। विच साचे साधन सन्तां जोत सरूप सद सदा भगवान। बैठा इक्क इकन्ता, जोत जगाए देह महान। महिंमा प्रभ बड़ी अगणत, आपणे रंग सदा इक्क समाण। आप तराए सर्ब जीव जन्त, जन चरनी डिगे आण। ७०

०२ महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, दर आई साध संगत देवे माण। माण मोह जीव विचार। साचा प्यार गुर चरन निमस्कार। एका अधार गुर दातार। देवे जोत प्रभ अपर अपार। खोल्हे सोत होए उज्जयार। आत्म मैल धोत, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जीआं दी सुणे पुकार। साचा प्रभ सुणे पुकारा। आपणा किया आप विचारा। सतिजुग वरताए सच वरतारा। बेमुखां प्रभ करे ख्वारा। चार कुन्ट होए हाहाकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वरते वरतावे विच संसारा। साचा संग प्रभ का जाण। आपणा आप जीव पछाण। साचा संग वाली दो जहान। देवे वड्याई विच मात आण। साचा संग भगत भगवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई आण। साचा संग प्रभ बणाए। गुरमुख साचे आण तराए। साचा संग तोड़ निभाए। टुट्टी गंढे फिर टुट्ट ना जाए। साचा संग गुर अंग लगाए। मानस जन्म ना भंग कराए। साचा संग गुर सतिसंग रलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान होए सहाए। साचा संग घर दर दिखावे। पूरा गुर बूझ बुझावे। साचा संग थिर घर निवास रखावे। साचा संग आवण जावण गेड़ चुकावे। साचा संग मानस जन्म सुफल करावे। मात कुक्ख विच फेर ना आवे। साचा संग थिर घर निवास रखावे। साचा संग आवण जावण गेड़ कटावे। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, सर्ब सुखदाए साचा कर्म कमावे। साचा संग गुर पूरा करे। चरन लाग गुरसिख तरे। साचा संग आत्म वास करे हरे। सोहँ स्वास स्वास जप जीव कलिजुग पार तरे। साचा संग एका नर हरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा मूल ना डरे। साचा संग प्रभ संग संगीत। आत्म देवे चरन प्रीत। साचा संग गुर मानस जन्म जग जीत। साचा संग प्रभ आत्म सदा अतीत। साचा संग साचा प्रभ साचा सति मीत। साचा संग मानस जन्म ना होवे भीत। साचा संग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग लख चुरासी जावे जीत। साचा संग गुर गुरमुख। आत्म उतरे सारी भुक्ख। साचा संग गुर साजण सुख। साचा संग दर घर आए नेत्र पिक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साची देवे सिख। साचा संग सच परीख्या। गुरमुख साचे साचा प्रभ साचा देवे सीख्या। साचा संग कर दरस आत्म मिटे तृीख्या। साचा संग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ दान पावे भीख्या। साचा संग भगत संग। आप निभावे आपणा संग। साचा संग अमृत नीर वहावे गंग। शब्द नाउँ पार जाए लँघ। साचा प्रभ सच दान दर मंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई अंग संग। साचा संग सच कर माण। आपणा आप जीव पछाण। साचा संग साचा माण ताण। सतिगुर साचा जाणी जाण। साचा संग वेख वखाण। होए निमाणा जन चरनी डिगे आण। साचा संग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सति सति कर जाण। साचा संग सतिगुर सति साचा देवे साची मति। साचा संग साचा सति, सतिगुर साचा साची रक्खे पति। साचा संग इक्क रखावे साचा सति। साचा संग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेला गया ना आवे हत्थ। साचा संग वक्त संभाल, चरन प्रीती निभे नाल। साचा संग गुरसिख साचे पाल, देवे वड्याई दीन दयाल। साचा संग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। साचा संग गुरसिख दिया। अमृत नाम महांरस पीआ। आत्म जोत जगाए प्रभ दिया। पूर्ब लहणा प्रभ साचे दिया। गुरमुख साचे प्रभ दर लीआ। सोहँ साचा बीज आगे बिया। प्रभ मिलन का आप बणाया साचा हिया। गुरमुख साचे सचखण्ड रखाई तेरी निया। एका जोत एका आत्म जगाया दिया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा नाम गुर दर पीआ। एक दीप आप जगाए। पिछली कीती भुल बख्शाए। आगे गुर मार्ग पाए। पंचम जेठ दया कमाए। गुरमुख साचे विरले प्रभ डीठला सिँघासण डेरा लाए। कलिजुग जीव बेमुख, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, सति सति सति तेरी वड्याए। साचा संग जिस जन जाणया। प्रभ अबिनाशी मन्ने भाणया। साचा संग गुर आप वखाणया। गुरमुख साचे प्रभ देवे चरन ध्यानया। साचा संग गुर देवे नाम निधाणयां। मूर्ख मुग्ध अन्जाण प्रभ करे सुघड़ स्याणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि विरले गुरमुख पछाणयां।

७१ ०२

साचा संग जिस जन। हरा कराए तन मन। सोहँ देवे सच्चा माल धन। एका मिटावे आत्म जन। एका राग उपजावे कन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख रसना गाए धन्न धन्न धन्न। पंचम जेठ जोत प्रगटाए। अग्न जोत जगत लगाए। पंचम जेठ मींह कहर वरताए। उप्पर हेठ हेठ उप्पर कराए। मात पताल अकाश एक जोत अग्न लगाए। खण्ड ब्रह्मण्ड नव खण्ड थर थराए। विच वरभण्ड चार कुन्ट हाहाकार कराए। सोहँ लाए साचा डण्ड, मूंड मुंडाए रहण ना पाए। बेमुख वखायण सारे कंड, सोहँ खण्डा प्रभ उठाए। नष्ट कराए जेरज अंडज अंड, एका आप अटल रह जाए। एका दात जगत विच वंड, गुरमुख साचे लए तराए। सोहँ साचा दान गुरमुख आपणी आत्म रंग, प्रभ आपणी सरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्त लेख जगत भेख वेखा वेख जगत भुलाए। जेठ महीना कहर वरता। कलिजुग जीवां नष्ट करा। राउ रंक इक्क थां बहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त आप करा। राउ रंक इक्क थां बहा। जो जन चले प्रभ के भा। सो जन आपणे चरनी लए लगा। अग्न जोत लगाए ताअ। गुरमुख साचे फेर लए उपा। एका सुहाए साचा नाउँ, बाकी सर्ब दए मिटा। एका दिखाए ऊँचा थांउँ, निहकलंक जोत प्रगटा। पुत्तर संभाले ना कोई मां। भैणां ताई छड्ड जाण भ्रा। बेमुख जीवां लभ्भे ना कोई थां। निहकलंक कलि दे सज़ा। गुरमुख साचे प्रभ दर आए, महाराज शेर सिँघ होए सहा । महीना जेठ वेख वरतंत । प्रभ भस्म कराए सर्ब जीव जन्त । जोत जगाए अन्तिम अन्त। चौथा जुग करे भस्मंत। गुरमुख विरले प्रभ पकड़ उठाए सन्त। आप आपणी सरन लगाए, होए सहाई साचा कन्त। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, तेरी वड्याई कलिजुग माया बेअन्त। महीना जेठ अन्तिम जग। अग्न जोत लगाए अग्ग। लाल अन्धेरी जाए वग। कलिजुग जीव जायण दग। सृष्ट सँघारे प्रभ पकड़ शाह रग। भगत उधारे आप लगाए आपणे पग। बेमुख जीवां कर ख्वारी, अग्गे धर्म राए लगाए वग। गुरमुख साचे पार उतारे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हँस बणाए कग। गुरमुख हँस आप वड हँसा। प्रभ अबिनाशी साचा बंसा। जन भगत उपाए साची अंसा। उज्जल मुख कराए विच संसा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द लिखाए चुकाए संसा। जेठ महीना होए अख़ीर। गुरमुखां देवे आत्म धीर। बेमुखां पाए जगत वहीर। तड़प तड़पाए दुःख उठाए, मिले नाहीं नीर। गुरमुख साचे आप मुख चुआए अमृत पिलाए साचा सीर। अग्न बाण प्रभ चलाए तन जलाए, बेमुखां लाहे चीर। गुरमुख साचे मुख रखाए, आत्म अमृत बरसे करे शांत सरीर। बेमुख कलिजुग जीव फ़कीर बणाए, कोई ना देवे धीर। गुरमुख साचे प्रभ मिलण मिलाए, चरन लगाए वक्त अखीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन कोई ना देवे धीर। वक्त वेला अन्त ल्याए। सज्जण सुहेला

सन्त तराए। साचा मेला आप कराए। साक सज्जण सुहेला आप बण जाए। झूठे भैण भ्रा छुडाए। आप आपणे राह चलाए। बांहों पकड़ प्रभ अग्गे लाए। हत्थ चँवर सिर गुर छत्र झुलाए। गुर संगत अग्गे गुर पीछे आए। आपणी बणत आप बणाए। गुरमुख साचे सन्त प्रभ लए तराए। सोहँ चप्पू नाम बेड़ी पार ब्यासों आप कराए। धन्न धन्न धन्न गुर पूरा मस्तूआणे चरन टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आप वरताए। आपणा बेड़ा आप बन्ने। गुरमुख साचा सति कर मन्ने। गुरमुख आगे गुर पूरा पाली, जिउँ माल चराए धन्ने। पार ब्यासों चरन टिकाए, सृष्ट सबाई हन्ने बन्ने। आपणी कल आप कराए, कलिजुग जीव पीड़ पिड़ाए जिउँ बेलणा गन्ने। वेला वक्त प्रभ नेड़ ल्याए, उठावण ना देवे थाली छन्ने। आपणा कहर आप वरताए, अग्न मेघ प्रभ आप बरसाए, सृष्ट सबाई करे दो खंने। एका अग्न जोत आप लगाई, कलिजुग जीव कराए अन्ध अज्ञानी अन्ने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल वरताए सति पुरख सति सति कर मन्ने। पार ब्यासों चरन टिकाए। साध संगत प्रभ संग रलाए। दूती दुश्मण प्रभ पकड़ उठाए। ताक ताक फाक फाक अग्न बम्ब बरसाए। वाक वाक वाक भविख्त प्रभ आपणे पूर कराए। लेख लिखाई जो साची लिख्त, सर अमृत प्रभ थेह कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे रिहा समाए। रंक रंक रंक, प्रभ रंक समाए। अंक अंक अंक, प्रभ अंक तराए। रंग रंग रंग, प्रभ बंक द्वार लगाए। रंक रंक रंक, प्रभ विच मात वड्याए। रंक रंक रंक, प्रभ दरस दिखाए। रंक रंक रंक प्रभ हरस मिटाए। रंक रंक रंक, घर प्रभ अमृत आप बरसाए। रंक रंक रंक, प्रभ आप इक्क अंक हो जाए। रंक रंक रंक, प्रभ जोत सरूपी रंक वड्याए। रंक रंक रंक, विच मात प्रभ होए सहाए। रंक रंक रंक, साची गाथा प्रभ आप चलाए। रंक रंक रंक त्रैलोकी नाथ आप अख्वाए। रंक रंक रंक प्रभ अकथ्थ ना कत्थया जाए। रंक रंक रंक प्रभ राजन माण गंवाए। अंक अंक अंक प्रभ एका आण जगत रखाए। रंक रंक रंक प्रभ सोहँ बाण प्रभ शब्द चलाए। रंक रंक रंक प्रभ वड मेहरवान, राउ उमराउ नष्ट कराए। रंक रंक रंक आपणे रंग राता, अन्तकाल सिर आपणे ताज रखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा राज जगत चलाए। रंकां देवे साचा ताज। सतिजुग साचा बख्शे राज। आप संवारे सारे काज। भुक्ख नंग ना आवे लाग। दुध्ध पुत्त दवाए जगत सांझ। औरत कोई ना रहे बांझ। सृष्ट सबाई तोड़ी सांझ। बेमुखां दर दर घर घर पै जाए भाज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाए माझ। रंक रूप रंक भूप रंक दिसे सति सरूप। रंक रंक रंक अनूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई आप विच अन्धकूप। रंक वेख किया भेख। लिखाए लेख वेख वेख साची रेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना जपाए सोहँ करे बुध विसेख। निर्मल

जीआं आपे किया। आत्म जोत जगाया दिया। प्रभ साचे दा साचा अमृत गुरमुख साचे पीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रंक राजान एका किया। इक्क कराए इक्क बणाए इक्क उपजाए इक्क चलाए इक्क वरताए इक्क हो जाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ऊँच नीच कोई रहण ना पाए। इक्क आकार इक्क वरतार इक्क अधार इक्क सरकार इक्क विहार इक्क धुन्कार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप वरताए इक्क बहार। भगत उधार जगत सुधार शब्द उचार, साचा अमृत दिया सोहँ साचा धन माल। निर्मल किया जीआ, प्रभ गुर चरन बहाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती निभे नाल। चरन प्रीत आप दवाए। साची रीत जगत चलाए। बख्शे प्रीत प्रभ सेवा लाए। सदा अतीत गुर सरन जो आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची इक्क प्रीत रखाए। साची प्रीत गुर के चरनां। गुरमुख साचे प्रभ खोले हरना फरना। आपे आप प्रभ तारन तरन। सर्ब कला समरथ प्रभ कारज करन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मात दु:ख ना भरन। गुरमुख साचे साचा हठ। सोहँ रंग चढ़ाए प्रभ पाए साचे भट्ठ। प्रभ लालो लाल लाल कराए, अग्न जोत लगावे भक्ख। प्रभ गुर संगत संग रलाए, साचा किया इक्ठ। पंचम जेठ दिवस मनाए, गुर दरस दिखाए माण गंवाए तीर्थ अट्ठ सट्ठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान होए सहाए, गुर संगत चरन आए नट्ठ। गुर संगत गुर दर परवान।

देवे वड्याई वाली दो जहान। जन भगतां प्रभ आप करे पछाण। विच साचे साधन सन्त, जोत सरूप सद सदा भगवान। बैठा एक इकन्ता जोत जगाए देह महान। महिंमा प्रभ बड़ी अगणत, आपणे रंग सदा समाण। आप तराए सर्ब जीव जन्तां, जन चरनी डिगे आण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, दर आई संगत साचा देवे माण। माण मोह जीव विचार। साचा प्यार गुर चरन निमस्कार। एका उधार गुर दातार। देवे जोत प्रभ अपर अपार। खुल्ले सोत होए उज्जयार। आत्म मैल धोत महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जीआं दी सुणे पुकार। साचा प्रभ सुणे पुकारा। आपणा किया आप विचारा। सतिजुग वरताए सच वरतारा। बेमुखां प्रभ करे ख्वारा। चार कुन्ट होए हाहाकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वरते वरतावे विच संसारा। आपे तारे आपे मारे करे ख्वारे। मानस जन्म बेमुखां हारे। चलाए खण्डा प्रभ दो धारे। सोहँ डण्डा लाए करताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणे सच्चा सिक्दारे। साची सिक्दारे सृष्ट पनिहारे। जगाए जोत अगम्म अपारे। एका ओट जगत निरँकारे। कोटन कोट खड़े प्रभ चरन दुआरे। वोटन वोट सोहँ साचा वोट, महाराज शेर सिँघ तेरा नाम वडारे। आपे आप जपाए जप कराए तप गंवाए करे सति प्रताप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप बणे माई बाप। मात पित जगत हित, एका मित सृष्ट जित, जोत प्रगटाए जुगा जुग नित नवित्त। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती साचा हित। चरन प्रीत साचा पित साची रीत, होए प्रीत मिले साचा मीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग जग जीत। चरन लाग जागण भाग। पकड़े वाग धोवे दाग़। हँस बणाए काग। सेज तजाए बाशक नाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरी पकड़े वाग। आपे जागे आपे रागे आपे माधे आपे साधे, आप उपावे ब्रह्म ब्रह्मादे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आत्म साधे। आत्म साध वजाए नाद आवे साध शब्द उपजावे बोध अगाध, गुरमुख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस सद अराध। गुरमुख साचे रसन अराध। प्रभ मिटाए तेरी ब्याध। एक रखावे आपणी याद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप तराए सन्तन साध। साचा शब्द बणाए बणत। जणाए सन्त वड्याए जन्त चलाए इकन्त। महिंमा अगणत जोत सरूपी विच रहंत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई ना जाणे आदि ना अन्त। आदि अन्त एका कन्त। आप उपाए जीव जन्त। जोत प्रगटाए साधन सन्त। दरस दिखाए बैठ इकन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म पड़दा लाहे आप बणाए साची बणत। बणत बणाए दरस दिखाए। जोत प्रगटाए अज्ञान अन्धेर मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सच मार्ग पाए। सच मार्ग लाया। एका साचा राह चलाया। एका दूजा भउ चुकाया। तीआ चौथा रहण ना पाया। पंचम होए मात रुशनाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ मातलोक विच जामा पाया। जामा धारे आप करतारे। जोत निरँकारे नैण मुँधारे। सर्ब अकारे इक्क वरतारे। चल आयण भगतन दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड वड आप विच संसारे। झूठा संसार झूठा विहार झूठा सिक्दार झूठा आहार झूठा वपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौथा अन्त करे ख्वार। करे ख्वारी जूठ झूठ, पारब्रह्म खेल अपारी। जोत सरूप करे जोत उज्जयारी। वड वड भूप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पकड़ ल्याए चरन द्वारी। चरन द्वार वड सिक्दार, हँकार निवार मारे शब्द मार खण्डा दो धार, कोई ना पावे प्रभ की सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप वरताए आपणा वरतार। वरते वरतावे चले चलावे। डुब्बदे तारे गले लगावे। माण दवावे चरन बहावे, सति संग रलावे प्रगट जोत दरस दिखावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ दया कमावे। दया कमाई देवे वड्याई होए सहाई। बणत बणाई जगत तराई लाज रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त होए सहाई। आप सहाए लाज रखाए आण तराए माण धराए आण रखाए चरन लगाए हरन फरन खुलाए मरन डरन चुकाए तारन तरन आप अख्वाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सरन गुरसिख रखाए। गुर चरन द्वार उतरे पार दुत्तर तार भगत उधार जगत सुधार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द चलाए। शब्द चलाए

लेख लिखाए। गणत गणी ना जाए, बणी ढाहे फेर बणाए। कलिजुग मिटाए सतिजुग लाए। खाणी बाणी सर्ब खपाए। सोहँ साचा नाम चलाए। चार कुन्ट जै जै जैकार कराए। आप अडोल रहे रघुराए। सृष्ट सबाई आप हिलाए। आप अतुल्ल बेमुख तुलाए। आप अभुल्ल सभ सृष्ट भुलाए। बेमुख कलिजुग आपणा आप गए रुलाए। कुंभी नर्क निवास रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन निंद कराए। निन्दक दुष्ट दुराचार। प्रभ साचा करे ख्वार। शब्द मार मारे करतार। धर्म राए करे ख्वार। कोई ना बेड़ा लाए पार। प्रभ डोबे विच मंझधार। एथे ओथे आई हार। गुर पूरे दी पाई ना सार। आपणा आप ना ल्या विचार। बैठा विच सच्चा सरदार। साचा छड्डुया नाम करतार। मदिरा मास किया आहार। प्रभ अबिनाशी पावे सार। विष्टा मुख रखाए जन्म पाए वारो वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग बणया आप लिखार। वड दरबारी, एका माण रखाए सर्ब नर नारी। पारब्रह्म होए वडा सिक्दारी। साची जगत चलाए इक्क सच्ची सरकारी। पंच विच प्रभ आप समाए, पंचम पंच प्रभ वडारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग आप मुरारी। पंचम होए पंच पंचाइत। वडी होए शरअ शराइत। आप बणाए साची काइत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म आप सुणाइत। साचा हुक्म आप लिखावे। सृष्ट सबाई बणत बणावे। एका डन्न जगत लगावे। झूठा ठूठा भन्न वखावे। सतिजुग खेल आप रचावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लावे। वेला अन्त अन्त ल्यावे। प्रभ अबिनाशी दया कमावे। जोत सरूप गुरसिख समावे। पूरन सिँघ नाम वड्यावे। पाल सिँघ दी पैज रखावे। मस्तूआणे डेरा लावे। साचा दर दरबार लगावे। एका करामात साची जोत जगावे। निरँकार निरँकार निरँकार गुर धन्न हो जावे। धुन्कार धुन्कार धुन्कार सर्ब जीव हो जावे। सुण कार सुण कार सुण कार मुन रिख उठ जावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेद आप खुल्हावे। साचा लग्गे गुर दरबारा। जगे जोत अगम्म अपारा। कलिजुग मिटे धुंधूकारा। एका होवे जोत अकारा। एका दिसे प्रभ गिरधारा। जोत सरूढ़प भगत पसारा। अचरज खेल करे अपारा। पारब्रह्म रूप न्यारा। रूप अनूप सरूप समारा। अन्ध कूप वडे वड भूप प्रभ करे उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगावे जोत निरँकारा। जोत निरँजण जगत जगाए। दु:ख भय भंजन होए सहाए। गुरमुख मजन तीर्थ नहाए। चरन धूढ़ गूढ़ अंजन पाए। पारस छोहे लोहा कंचन हो जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगत जगाए। साची जोत होए प्रकाश। कलिजुग अन्धेर जाए विनास। साचे घर साचे दर होए प्रकाश। धरे जोत प्रभ अबिनाश। घट घट घट वसे प्रभ घट वास। खट खट खट करन दरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा करे वास। सिँघासण प्रभ डेरा लाए। आपणा आप मात प्रगटाए। एका जोत डगमगाए।

गुर आसण कोई देख ना पाए। पंज गज़ चौगिर्द प्रभ लकार लगाए। मदिरा मासी आप जलाए। बेमुख जीव दर मंगण ना पाए। दर आए बिल्लाए, हाए हाए करे मेरी माए, वेले अन्त ना कोई छुडाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत मस्तूआणा जाए तराए। आपे बणे जगत विहारा। मातलोक बणाए सचखण्ड दुआरा। जोती जोत प्रगटाए एका एकँकारा। वरन गोत मिटाए सति सति करे वरतारा। चार वरन दिखाए एका ऊँचो ऊँच ऊँच दरबारा। इक्क अवतार इक्क दरबार इक्क घर बाहर इक्क आकार विच संसार जीव जन्त अधार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब पसर पसार। एका आए एका जाए। एका चढ़ाए एका मार्ग लाए। आप आप अख्वाए। एका नाउँ जगत धारए। चार वरन सोहँ रसन जपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाए। सतिजुग तेरा सति वरतारा। होए सहाई कलंकनिह अवतारा। जो जन आए चरन दुआरा। वरते वरतावे सर्ब संसारा। सोहँ शब्द वड भण्डारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग खोल्हे सच दुआरा। साचा प्रभ सच द्वार। ऊँच नीच सभ उतरे पार। सूचो सूच प्रभ साचे घर बाहर। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, निहकलंक नरायण नर अवतार। नरायण नर एका हरि जोत धर। चार वरन जाए इक्क कर। भरम हरि चरन धर। मस्तूआणा बणाए साचा सर। ऊँच नीच जायण तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका अकार जाए कर। सचखण्ड दर प्रभ खुल्हाया। वड वड भण्डार विच मात लगाया। सोहँ शब्द सच वस्त बणाया। सन्त मनी सिँघ वरतावा लाया। मोता सिँघ मगर लगाया। दलीप सिँघ मददगार बणाया। निहकलंक सिर हत्थ टिकाया। रुक्ख्यां भुक्खयां प्रभ नष्ट कराया। एका बरदार एका दरबार वड वड करे सिक्दार, मनी सिँघ सिर ताज रखाया। आप आपणी वरतावे कार, दुःख भुक्ख दा रोग गंवाया। करे करावे करावणहार, जिउँ धन्ने माण रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत साचा दर सच भण्डार बणाया। साचा चले प्रभ भण्डारा। आप बणाए आप चलावे आप वरतावे बण आपे वरतारा। आप लिखावे आप भरावे आपे सेव कमारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सति सति करे वरतारा। सच भण्डार जगत चलाए। सच सुच्च प्रभ आप वरताए। ऊँच नीच कोई रहण ना पाए। ज़ात पात प्रभ सर्ब मिटाए। राउ उमराउ प्रभ नष्ट कराए। साजन साज प्रभ साचा राह चलाए। एका आंचल अग्न प्रभ बेमुखां आप लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां नष्ट कराए। आत्म आंच प्रभ लगाई। बेमुख कलि ठोहर ना पाई। गुरमुख साचे अमृत सिंच काया हरी कराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे आप वड्याई। नाम दान दान नाम गुर दर लीआ। साचा अमृत जाम गुर दर पीआ। पूरन होए काम, प्रभ साचे किया। जोत सरूप घनईआ शाम, आत्म जोत जगाए दिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

गुरमुख साचे किरपा कर गुर आप आपणे जिहा किया। किरपा करे आप कृपाला। देवे दरस दीन दयाला। सर्ब जीआं होए प्रितपाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर गोबिन्द गुर गोपाला। गुर वेखे गुरसिख वखाए। नेत्र पेखे गुरसिख तर जाए। साची लिख्त प्रभ आप कराए। भरम भुलेखे जीव भुल ना जाए। वेखा वेखे कोई रुल ना जाए। कलि जोत प्रगटाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नांउँ धराए। आए शाम निहकलंक। सोहँ शब्द वजाए डंक। राउ उमराउ एका एक करावे एका अंक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आण सुहाए थान बंक। थान जोत जगाए। सुहाए थान भगत तराए। सुहाए थान शब्द वरताए। सुहाए थान गुरमुखां माण दवाए। सुहाए थान सोहँ शब्द चलाए। सुहाए थान गुरमुख साचे मार्ग लाए। थान सुहाए साध संगत दे बन्द कटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाए। थान सुहाए आप गिरधार। थान सुहाए देवे तार। थान सुहाए दर साचे सच दरबार। थान सुहाए जोत जगाए गुरसिख अपार। थान सुहाए हउमे ममता देवे मार। थान सुहाए एका रंग रंगाए करतार। थान सुहाए गुरमुख साचे मोख द्वार। थान सुहाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत देवे अधार। थान सुहाए पारब्रह्म निरँकारी गिरवर गिरधारी। थान सुहाए जगत बनवारी। थान सुहाए चिट्टे होए अस्व अस्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां जाए पैज संवारी। थान सुहाए आपणा आप उपा के। थान सुहाए कलिजुग जोत प्रगटा के। थान सुहाए जा यति।नकपुरी विच पा के। थान सुहाए निहकलंक कलि नाउँ धरा के। थान सुहाए पंचम जेठ मात विच आ के। थान सुहाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत विच जोत प्रगटा के। सुहाए थान जोत प्रगटाई। सुहाए थान साध संगत मन वज्जी वधाई। थान सुहाए दिवस रैण रैण दिवस मिल गुरसिख गाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तारे, कीए साचे मुख जो जन आए सरनाई। सुहाए थान तारनहारा। सुहाए थान आप गिरधारा। सुहाए थान कर जाए परउपकारा। दर आए पार कराए जो जन आए चरन निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी किया अकारा। थान सुहाया सतिगुर आण। थान सुहाए चुक्के काण। थान सुहाए गुर संगत देवे माण। थान सुहाए बणत बणाए सर्ब जीआं दा जाणी जाण। थान सुहाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। थान थनंतर एको एक। प्रभ साचे की साची टेक। गुरमुखां करे बुध बिबेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत रंग अनेक। अनेक अनेक अनेक रंग। एक एक एक अंग। टेक टेक टेक गुर चरन संग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर गुरमुख साचे साची मंग मंग। साची मंग गुरसिख मंगो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा दर सच्चा दरबार दिवस रैण रैण दिवस गुरमुख साचे मंगो। सच सुच्च देवे आप करतार।

एका जोत होए अकार। एका शब्द होए धुन्कार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा सच दरबार। दरबार सच सच्चा दरबारी। गुरमुख साचे हिरदे वस, सोहँ शब्द जीव अधारी। बेमुख दर ते आए नच्च, साचा प्रभ करे ख्वारी। अग्न जोत जाए मच्च, कोई ना होए तेरा सहारी। गुरमुख साचे प्रभ साचे हिरदे जायण रच, आत्म देवे नाम खुमारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत आप निरँकारी। निरँकार निरँकार निरँकार इक्क आकार इक्क संसार इक्क उधार इक्क उज्जयार इक्क आकार इक्क दरबार इक्क घर बाहर एका कन्त सृष्ट सबाई नार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका गोत एका जोत आप निरँकार। जोत निरँजण आप निरँकारी। जोत सरूप जोत अधारी। पवण सरूप सर्ब मझारी। स्वास स्वास करे अकारी। दासन दास दिसे गिरधारी। वासन वास आप छुपारी। नासन नास दुःख दर्द निवारी। रासन रास रसना जप जप जीव, प्रभ करे रास तुमारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे नाम खुमारी। नाम खुमारी दिवस रैण। गुरमुख साचे दर ते बहिण। कलिजुग जीव भुल्ले रहण। अन्त बहिण झूठे वहिण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे लहणा लैण। गुर साचा देवे साचा लहणा। गुरमुख विरले प्रभ दर बहिणा। प्रभ अबिनाशी शब्द सरूपी साचा शब्द कहणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख खुल्हाए तीजे नैणां। तीजा नैण प्रभ आप खुल्हाए। लहणा लैण प्रभ आप दवाए। रैणा रैन आप हो जाए। सज्जण साक सैण सुहेल आप अख्वाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी मेल मिलाए। जोत सरूपी मेल मिला। आत्म साचा दीप जगा। अमृत चुआए प्याए आत्म सच तुला। गुरमुख विरला नहावे कोटन कोट पाप गंवावे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जिस जाए दया कमा। जिस जन दया कमाई। अमृत आत्म तीर्थ नहाई। साचा सीरथ मुख चुआई। कँवल नाभ खोल्ह वखाई। एका अमृत आत्म तीर्थ आप हो जाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अठसठ तीर्थ माण गंवाई। एका तीर्थ आत्म जाण। गुरमुख साचे सच पछाण। अमृत आत्म साचा नहाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे आप निशान। आत्म तीर्थ जो जन नहाता। चार वेद का होए ज्ञाता। वेदन वेद आप विधाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिलाए जोत जगाए इक्क कराए बिधनाता। बिधना बिध बिध बणाए। सिद्धना सिद्ध सिध्ध कराए। रिद्धना रिद्ध रिदे वसाए। आत्म रिद्ध आत्म विध गुरसिख समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिलाए जोत जगाए। कारज सिद्ध जो गुर चरनी आए। दरगाह साची माण दवाए। साची दरगाह साचा धाम। एका जोत जगाए राम। पूर कराए गुरमुख काम। सोहँ पिलाए साचा जाम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूर कराए आपणा काम। साचा नाम जगत धीर। कलिजुग रक्खे प्रभ अख़ीर। मेट मिटाए पीर पैगम्बर औलीए सर्ब फ़कीर। एका शब्द चलाए

सोहँ साचा तीर। ईसा मूसा कोई रहण ना पाए, प्रभ कराए अखीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी जोत प्रगटाए, सच सुच्च वरताए वड पीरन पीर। पीरन पीर आप वड पैगम्बरा। झूठा खेल मिटाए कलिजुग अडम्बरा। सतिजुग सच रचाए सच सवम्बरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी सर्ब भरतम्बरा। सृष्ट सबाई प्रभ भरतम्बरा। बेमुखां सदा सदा प्रभ भंगरा। सोहँ साचा ज़हाज बणाया चलाया साचा नाम लाया लंगरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेट मिटाए अन्त खपाए पीर पैगम्बरां। पीर पैगम्बरां सर्ब मिटाए। कुरान अंज़ील वक्त चुकाए। ईसा मूसा मुहम्मदी प्रभ दे सज़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्तकाल कलि अचरज खेल आप रचाए। रचे रचाए आपणी खेल। कलिजुग अन्त होए अवेर। गुरमुखां मिलाए साचा मेल। प्रभ अग्न जोत जलाए, लगाए बिन बाती बिन तेल। गुरमुख साचे विच समाए, अचरज पारब्रह्म दा खेल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विछड़यां कलिजुग कराया साचा मेल। मिल्या मेल भगत भगवाना। दया धारी सच निशाना। साचा प्रभ गुणी निधाना। आत्म जोत जगाए महाना। जगे जोत मिटे अभिमाना। अनहद साची धुन उपजाणा। पारब्रह्म दरस दिखाए गुरमुख साचे बिधनाना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कलिजुग जोत प्रगटाए विष्नूं भगवाना। दया धारी सच निशान। गुर दरबारी चुक्के कान। चरन निमस्कारी देवे माण। विच संसार जीव तेरे तान। तेरे दर दरबार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा होए सहाए। गुरमुख साचे आसा पूरा। प्रभ अबिनाशी सतिगुर तेरा। आवे जावे बेड़ा कर जाए पारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त, देवे मोख दुआरा। जोत मिलाए किरपा धारी। धर्म राए ना करे ख्वारी। प्रभ साचा रक्खे चरन द्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महिंमा जगत न्यारी अपर अपारी। अपर अपार आप करतार। सतिजुग वरते सति विहार। प्रभ साचा करते कोई ना जाणे सार। उप्पर धरे धरे जोत निहकलंक बली बलकार। गुरमुख आए दर ते बांहों पकड़ देवे तार। माण दवाए साचे दर ते, दोए जोड़ करन निमस्कार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत बेड़ा कर जाए पार। सतिगुर बेड़ा आप बन्न्हाए। गुर संगत प्रभ दया कमाए। सतिजुग साचा चन्न चढ़ाए। गुरमुख साचा सति सति सति कर मन्न जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। गुरमुख पूरा सेव कमाए। प्रभ अबिनाशी चरन लगाए। देवे वड्याई जन्म मरन कटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। दया कीनी दया धार। गुरसिख साचे कीने पार। साचा नाम दिया अधार। झूठा जगत दिसाए विहार। आत्म मारे सर्ब हँकार। सच सुच्च करे वरतार। नर नर नर कलंकनिह अवतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बांहों पकड़ कलि देवे तार। पार उतारे जीव जन्त आप उधारे। साध सन्त

प्रभ चरन दुआरे। आदि अन्त प्रभ किरपा धारे। बैठ इकन्त जोत जगारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव जन्त वेखे सर्ब पसारे। जीव जन्त सर्ब पसार। जोत सरूपी जगत विहार। जामे धारे वारो वार, आवे जावे वक्त विचार। जगत उलटावे दुष्ट सँघार। भुक्ख गंवावे देवे शब्द अधार। सुख उपजावे आपे रोग देवे मार। कुक्ख सुफल करावे जन भगत रक्खे चरन प्यार। उज्जल मुख रखावे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आयण चल दरबार। गुरमुख साचे प्रभ दया कमाए। आप आपणी सेवा लाए। आत्म सुख सर्ब उपजाए। सूखम सूख विच समाए। दूख भूख प्रभ मिटाए। आलस निंदरा प्रभ मगरों लाहे। आत्म जिंदरा प्रभ खोल्ह वखाए। आत्म इन्द्रा प्रभ रूप वखाए। सर्ब वसंदरा नज़री आए। जोत जगन्दरा जोत प्रगटाए। वासी बन बिन्दरा दरस दिखाए। काया कोठी अंदर कंदरा, जोत सरूपी दीप जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दया कमाए। सच कार गुरसिख लगाया। जगत लेख लिखार प्रभ आप बणाया। कर वेख विचार हत्थ कलम फड़ाया। एका बख्शे शब्द अधार, आत्म सुन्न खोल्ह वखाया। आत्म उपजावे सच्ची धुन्कार, सुरत शब्द प्रभ देवे तार, देवे वड्याई विच संसार, सिँघ दर्शन प्रभ माण दवाया। साची देवे भगत वड्याई, प्रभ साचे सच कर्म कमाया। लिखे लेख दे मिटाया। गुरमुख साचा वेख, प्रभ लेख लिखाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साचे होए सहाया। आप आपणी दया धारे। कर किरपा प्रभ पार उतारे। सिर रक्खे हत्थ ना आवे हारे। साची सुन्न प्रभ दर खुल्हारे। उत्तम होए विच रिख मुन, जन भगत प्यारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म भरे शब्द भण्डारे। शब्द भण्डारे आप वरतारे सच दातार। विच दिसाए जोत अधार। इक्क रखाए ओट करतार। शब्द लिखाए आप निरँकार। गुरसिख तराए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धार। गुर सेवा कारज रासे। प्रभ अबिनाशी हिरदे रक्खे वासे। दूती दुष्ट दर तों नासे। कोढ़ी कुष्टी प्रभ रक्खण चरन भरवासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभना दुखड़े आप विनासे। प्रभ अबिनाशी साचा घर। गुरमुख साचा जाए तर। साचा प्रभ देवे साचा वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई अवतार नर। दर द्वार प्रभ दिसाए। सच घर बुद्ध उपजाए। आत्म भेद सर्ब खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन पड़े दी लाज रखाए। साचा प्रभ किरपा धार। दर आया प्रभ जाए तार। घर पाया हरिभगत भण्डार। सर्ब सिक्दार निहकलंक नरायण नर अवतार। वर पाए दुतर जाए तार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, देवे दरस जोत अपार। जोत सरूपी दरस दिखाए। आत्म हरस सर्ब मिटाए। अमृत बरस शांत कराए। बैठ इकांत जोत जगाए। दिवस रैण इक्क रंग रंगाए। साची मंग दर मंगण आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दान गुरसिख

झोली पाए। साच दान गुर साचे दिया। गुरसिख कराया निर्मल जीआ। आप आपणे जेहा किया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाया दिया। साचा प्रभ साची कल। गुरमुख आए दर ते चल। साध संगत दर बैठे मल। दरस दिखाए आप अखल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत सदा सदा अटल। आप अटल अटल रखाए। आप अचल्ल अचल्ल कराए। गुर संग साथ गुरमुख आत्म सुख पाए। आत्म दुखड़े सारे जाण, सुख सूखम प्रभ देह वसाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निज घर वासी प्रगट जोत निज घर दरस दिखाए। निज घर प्रभ वसेरा। आप जणाए तेरा मेरा। देवे दरस ना लाए देरा। ना जाणे दूर गुरमुखां सद वसे नेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पाए विच मात दे फेरा। फेरा पाए विच मात। सोहँ वरतावे साची दात। जगत दिखावे वड करामात। चरन लगावे आप पछाणे जन भगतां सद रक्खे वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगावे मार झात। जगे जोत आत्म जोती। आप जगाए आत्म सोती। दिवस रैण रैण दिवस एका रंग होती। गुरमुख साचे आप बणाए कलिजुग प्रभ माणक मोती। सोहँ साची चोग चुगाए, दुरमति मैल आत्म धोती। महाराज शेर सिँघ देवे दान, सति सति सति सन्तोखी। सति सन्तोख आत्म दवाए, साचा देवे ब्रह्म ज्ञान। चरन धूढ़ साचा इशनान। आत्म गूढ़ जोत महान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपे आप होए मेहरवान। साचा प्रभ सद मेहरवाना। आपणे आप रहे भगवाना। एका जोत एका गोत गुरसिख मिलाणा। गुरमुख साचे आत्म धोत, पाप उतारे कोट कोट, साध संगत प्रभ विच रलाणा। आत्म लाए सोहँ चोट कढ्ढे खोट, शब्द धुन प्रभ उपजाणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका देवे चरन ध्याना। चरन ध्यान जन रखाओ। आप आपणा पार कराओ। जगत सुफना अन्त छड्ड जाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचे दरस दिखाओ। प्रभ चुकाए तेरा मेरा। कोई ना करे हेरा फेरा। जोत जगाए सञ्झ सवेरा। गुरसिखां करे पार बेड़ा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, ना लाए देरा। गुरसिख बेड़ा पार कर, गुर पार उतारा। गुरसिख साची भीख्या गुर दरबारा। आत्म रक्खया करे गिरधारा। साची सिख्या गुर चरन प्यारा। मदिरा मास तजण विकारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा सद दुत्तर तारा। दुतर तारे दो जहानी। गुरमुख साचे प्रभ आप पछाणी। वक्त वखावे गुण निधानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए आवण जाणी। आवण जाण आप चुकाया। आप आपणा माण रखाया। दर घर आए प्रभ माण दवाया। होए निमाणा। निताणा दर प्रभ सीस झुकाया। सावण सावण प्रभ अमृत मेघ वरसाया। पावन पावन पतित्त पावन प्रभ आत्म विच समाया। आवण गवण गवण आवण प्रभ सारा डेरा ढाहया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग रंगाया। रंग रंग गुर एक रंग।

संग संग संग प्रभ साचे का साचा संग। साचा संग साचा अंग प्रभ सहाई अंग संग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख दर घर आए कट्टे भुक्ख नंग। साचा प्रभ सदा सहाई। संसा रोग सर्ब गंवाई। आपणी बणत आप बणाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे आप वड्याई। गुरसिख आत्म वज्जी वधाई, चाउ घनेरा। देवे वड्याई सच्चा सतिगुर तेरा। पंचम जेठ विच मात प्रभ पाया फेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी भेख गुरमुख विरला कलि जाणे तेरा। दर घर सिख साचे पुच्छया। आत्म होई साची इच्छया। सोहँ देवे दान प्रभ साची भिच्छया। करे आप भगवान तेरी रच्छया। वाली दो जहान पूरन करे इच्छया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दात पूर कराए तूर वजाए नूर उपाए गुरसिख तेरी इच्छया। आत्म इच्छया सतिगुर पूरे। शब्द शब्द प्रभ करे भरपूरे। गुरसिख आए गुर चरन हज़ूरे। प्रभ शब्द लिखाए सतिगुर भरपूरे। भुल ना जाए जन बचन करे अधूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आसा मनसा सा यति ूरे। साचा शब्द सिख कमावणा। पूर कराए प्रभ आत्म कामना। आप फड़े अन्त तेरा दामना। दरगाह साची माण दवावणा। साचा घर दर दरगाह बनावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका ओट गुरमुख साचे विच मात रखावणा। गुरसिख रक्ख एका ओट। प्रभ गंवाए आत्म खोट। आप उडाए आलूणिओ डिगे बोट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख रखाए एका ओट। साचा गुर सारंगधर। गुरसिख आए चरनी पर। गुर चरन लाग भवजल तर। प्रभ दवाए साचा घर। जोत सरूपी निहकलंक अवतार नर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म खुलाए तेरा साचा दर। आत्म दर आप खुलाए। अकार कर जोत जगाए। एका नूर अन्धेर मिटाए। कर्म कर दरस दिखाए। गुरमुख साचे धर्म कर, मदिरा मास रसन ना लाए। पूरा बचन जायण हर, कुंभी नर्क दे सजाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, चरन लाग भुल ना जाए। मदिरा मास गुरसिख खाए। साचा प्रभ दर दुरकाए। एथे ओथे थाएँ ना पाए। कुंभी नर्क आप रखाए। गर्भवास आवण जावण गेड़ फिराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अंडज जेरज उत्भुज सेतज विच रखाए। साचे गुर दी साची आण। झूठा खेल जगत विच जाण। जोत प्रगटाए विच मात विष्नूं भगवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए महान। एका जोत करे अकार। साध संगत वरतावे सति वरतार। एका जोत जगावे अपर अपार। झूठा धन्दा सर्ब मिटावे, सति सच सुच्च करे वरतार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी कलि जामा धार।

* ६ जेठ २००६ बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह रात दे समें पिण्ड बुग्घे *

सतिगुर साचा विच वरभण्डे। सतिगुर साचा विच नव खण्डे। सतिगुर साचा विच ब्रह्मण्डे। सतिगुर साचा साचा दान जगत विच वंडे। सतिगुर साचा सोहँ शब्द उठाए खण्डे। सतिगुर साचा गुरमुखां वड्याए विच वरभण्डे। सतिगुर साचा बेमुखां आत्म करे रंडे। सतिगुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत दु:ख रोग सारे खण्डे। सतिगुर साचा सर्ब गुण। सतिगुर साचा मेल मिलाए गुरमुख साचे चुण। सतिगुर साचा आप वखाणे कोई ना जाणे प्रभ साचे दे साचे गुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे सिख उपजावे विच मात चुण। सतिजुग साचे कर्म कमावणा। गुरमुखां प्रभ आप उठावणा। जोत सरूपी दीपक आत्म विच जगावणा। एका जोत एका गोत रंग रंगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा समां सुहावणा। सतिगुर सति सति सति वरताए। आपे सतिगुर चरन लगाए। बेमुखां प्रभ गूढ़ी नींद सवाए। अद्धी नौं खण्ड विहाए। कलिजुग जीव सुंञ मसाण रखाए। गुरमुख साचे प्रभ चरन बहाए। प्रगट जोत जोत सरूपी दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका चरन ध्यान रखाए। सतिगुर साचा चरन ध्याना। सतिगुर देवे ब्रह्म ज्ञाना। आत्म जोत जगे महाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा समां सुहाणा। पंचम जेठ जोत जगाए वड जोधन जोध। सतिगुर साचा आपे बोध। वड वड प्रभ वड जोध। सृष्ट सबाई जाए सोध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग मिटाए अन्तिम औध। सतिगुर साचा साची मति। धरे जोत प्रभ अचुत्त। कलिजुग जीव मिटाए झूठे सुत। गुरमुख साचे प्रभ बणाए साचे पुत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दात दुध्ध पुत्त। सतिगुर साचा वडा वड दानी। सतिगुर साचा जन भगतां देवे नाम निशानी। सतिगुर साचा गुरमुख साचे बूझ बुझाणी। सतिगुर साचा आपे राजा राणी। सतिगुर साचा आपे आप होए वड ज्ञानी। सतिगुर साचा आपे देवे चरन ध्यानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद गुरमुख साचे जाणी। सतिगुर साचा सच कर जाणो। सतिगुर साचा सतिसंग माणो। सतिगुर साचा पूरन ब्रह्म पछाणो। सतिगुर साचा दिवस रैण इक्क समाणो। सतिगुर साचा पूरन देवो माणो। सतिगुर साचा ऊँच नीच सर्ब मिटाणो। सतिगुर साचा बीचो बीच जीव जन्त समाणो। सतिगुर साचा आवण जावण गेड़ चुकाणो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत मलाणो। सतिगुर साचा जोत निरालम। सतिगुर साचा आप भुलाए सारी आलम। सतिगुर साचा गुरमुख साचे हत्थ फड़ाए कालम। सतिगुर साचा वड वड भुलाए औलीए आलम। सतिगुर साचा साची देवे मति। सतिगुर साचा देवे आत्म साचा यति। सतिगुर साचा आत्म बिजाए सोहँ साचे वत्त। सतिगुर साचा एका उपाए रखाए साचा तत्त। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे साची मति। साचे धन्दे आप लगाए। आपणे बन्दे आप बणाए कलिजुग जीव मन्दे, मदिरा मास मुख रखाए। अन्तकाल धर्म राए पाए फंदे, देवे आप सजाए। आप चढ़ाए साचे रंदे, छिल छिल तन मास लुहाए। अन्त उठायण मटायण झूठे धन्दे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दे सजाए। झूठ धन्दा जगत विहारा। एका सच्चा शब्द आपारा। ठूठा कच्चा जीव भण्डारा। एका सच्चा विच जोत अकारा। देही भड्डा जोत अन्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा पार उतारा। सतिगुर साचा पार उतारे। किरपा करे आप बनवारे। सतिगुर सच्चा सच धाम न्यारे। देवे दरस अगम्म अपारे। सतिगुर साचा कृष्न मुरारे। एका राम जामा धारे। सतिगुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा मात लोक विच धारे। सतिगुर साचा जामा धार। जोत सरूपी करे विहार। सतिगुर साचा आप आपणा वरतावे वरतार। सतिगुर साचा साध संगत दिसावे इक्क दरबार। सतिगुर साचा दर आए मंगत भर देवे शब्द भण्डार। सतिगुर साचा चाढ़े रंगत, एका रंग दे अपार। साध संगत प्रगट जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस अपार। देख दरस आत्म अतीता। गुरसिख आत्म होए सीता। एका उपजे चरन प्रीता। सतिगुर मिल्या साचा मीता। मानस जन्म कलिजुग जीता। आपे पाए आपणा कीता। सतिगुर साचे परखी नीता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ आप आपणे जिहा कीता। आप आपणे रंग रंगाए। सोहँ साची नाउँ चढ़ाए। कर किरपा प्रभ पार उतारे। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ साचे मार्ग लाए। मुखों कहे धन्न धन्न, प्रगट जोत दरस दिखाए। साचा शब्द सुणाए कन्न, जन आत्म सर्ब मिटाए। गुरमुख बेड़ा बंध बंधाए। आप बणाए आपणे जन, किरपा करे जगत पित माए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, पंचम जेठ गुर संगत दया कमाए। पंचम जेठ गुर साचा आया। चतुर्भुज आप कहाया। साची धुज शब्द उठाया। मार हुज्झ वड सूरा सूर सिर उठाया। भेव गुज्झ प्रभ सर्ब लिखाया। गुरमुख साचे गुर चरन लुज्झ, वेला अन्त कलिजुग आया। प्रभ अबिनाशी रसना भज्ज, भरम भुलेखा सर्ब मिटाया। वेला वक्त अज्ज खट्ट लै कुझ, वक्त जाए हत्थ ना आया। सतिगुर साचा गुरमुख साचे भज्ज, प्रभ देवे माण दूण सवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नूरो नूर उपाया। साचा नूर आत्म देवे। प्रभ अबिनाशी अलख अभेवे। गुरमुख विरला प्रभ दर वेखे। सोहँ शब्द साचे मेवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद रसना सेवे। रसना सिमर सिमर गुर पूरा। प्रभ अबिनाशी कलि मिल्या सतिगुर पूरा। सर्ब घट वासी आत्म देवे साचा नूरा। घनकपुर वासी प्रगट जोत सद खड़े हज़ूरा। निज घर वासी निज घर देवे जोत सरूपी साचा नूरा। सति सरूप बैकुण्ठ निवासी, वाजा अनहद तूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी आसा मनसा पूरा। आसा मनसा

पूर कर। खाली भण्डारे जाए भर। आप देवे दवावे साचा वर। गुरसिख साचा प्रभ चरन गया तर। अन्तकाल कलिजुग मिल्या साचा हरि। सोहँ शब्द प्रभ साचा सतिजुग जाए धर। दिवस रैण रैण दिवस रसना जप, ऊँच नीच सभ जायण तर। एका रखाए सतिजुग तप, दूसर किसे ना होए डर। आप उपाए आपणा आप, जोत सरूपी जाए ना मर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड बणाए साचा दर। साचा दर आप लिखाया। सच भण्डार आप लगाया। वरतावणहार आप मात विच आया। गुरमुख साचे दर दरबान बहाया। साची रंगण प्रभ आप रंगाया। साची मंगणी आप मंगाए आपणे अञ्जण, गुर पूरे माण दवाया। साचा सच लगाए मुख सगण, अमृत साचा जाम प्लाया। साचे सिख साचे राह लग्गण, मदिरा मास मनों तजाया। बेमुख जीव कलिजुग फिरन नग्न, दर मंगण भिख ना पाया। अन्त कलि अग्न जोत विच दगण, कोई ना होए सहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे साचे दीपक जगण, चार वरन चार कुन्ट होए रुशनाया। चार कुन्ट होए रुशनाई। गुरमुख साचे प्रभ आप जगाई। हिरदे वाचे प्रभ आण तराई। ढाले साचे सांचे प्रभ साची भट्ठी पाई। आप चढ़ाए जोती आंचे, कच्चा कोई रहण ना पाई। बेमुख आए दर ते नाचे, प्रभ साचा दिस ना आई। गुरमुख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे धाम बहाई। धाम सच काम सच नाम सच जाम सच शाम सच महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी राम सच। सच कराए सच वरताए सच चलाए सच जपाए। साचा नाम दान गुरमुख विरला पाए। बणाए सच सच गुर संगत विच मिलाए। करावे सच गुर रंगत आप चढ़ाए। सच सुच्च साध संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी झोली पाए। साचा गुर साचा सुर लिखाए लेख आपे धुर। जोत जगाए घनकपुर। गुरमुख आए चरन जुर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग मिल्या सच्चा सतिगुर। गुर दर आओ प्यास बुझाओ। आत्म तृखा गुरसिख मिटाओ। आत्म विखा सर्ब गवाओ। साची सिख्या हरि नाम ध्याओ। साचे लेख प्रभ दर साचे आप लिखाओ। दर घर आए चुरासी गेड़ कटाओ। सोहँ देवे साची भिख्या, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी झोली पवाओ। प्रभ रंगाए गुरसिख चोली। आप भराओ आपणी झोली। कलिजुग जीव मारन बोली। प्रभ अबिनाशी अन्तकाल आप खिडाए रक्त होली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आपे तोली। आप डुलाए आप भलाए आप रुलाए आप खपाए, झूठे मार्ग बेमुख लगाए। आप वखाए आप जणाए आप तराए दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चरन लगाए। चरन प्यार देवे तार, आए ना हार खाए ना मार, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख बेड़ा कर जाए पार। पार उतारे विच संसारे। जमपुरी सँघारे, सचखण्ड दुआरे गुरसिख निवारे एका देवे जोत अधारे। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, गुर साचे गेड़ निवारे। गेड़ निवारया पार उतारया। गुरसिख तेरा जन्म मरन संवारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बिठाए आपणे द्वारया। साचा द्वार विच संसार। गुरमुख साचे गुर चरन प्यार। प्रभ दुत्तर तार, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच सच दरबार। सच दरबार वसे निरंकारा रूप अपारा। गुरमुख विरला करे निगम विचारा पावे सारा। प्रभ पिलाए अमृत धारा। खोल्ह देवे दस्म दुआरा। जोत उपाए अगम्म अपारा। नज़री आए नैण मुँधारा। अज्ञान अन्धेर सर्ब वसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे करे प्यारा। गुरमुख साचे दर साचे भेटा। लेखे लाए आप बणाए आपणा बेटा। रंग चढ़ाए गुरसिख सहेटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लाल झूठे बाणे विच लपेटा। झूठ बाणा पंज तत्त चतुर सुजाना। एका सति विष्नूं भगवाना। बैठा घट महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा सर्ब समाणा। सर्ब समाणा सर्ब घट जाणा। भगत भगवान करे इक्क समाना। बिरधां बाल जवाना दर आया देवे माणा। मूर्ख मुग्ध अज्याण, प्रभ चतुर सुजाना। साचा मोड़ प्रभ आप मुड़ाना। आप निभाए चरनां नाल, साचा देवे नाम ज्ञाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जाणी जाणा। चौथा जुग साची सेवा। साचा मिले सोहँ मेवा। सतिगुर साचा वड देवी देवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुफल कराए दर दी सेवा। गुरमुख सेवा सुफल कराए। गुरमुख साचे लेखे लाए। गुरमुख साचे वेख वखाए। गुरमुख साचे लेख लिखाए। गुरमुख साचे प्रभ गंढु वखाए। गुरमुख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे लेखे लाए। गुरमुख लाए आपणे अंग। एका देवे साचा संग। कोई ना दिसे भुक्खा नंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म चाढ़े साचा रंग। रंग रंगीला मोहण माधव। सच घर आए गुरमुख सन्त साधव। दर घर पाओ प्रभ रसन अराधव। दर्शन पाओ प्रभ आदि जुगादि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची धुन उपजाओ सोहँ वजाओ साचा नादव। साचा नाद वजाए धुन। गुरमुख साचे साध आप खुल्हाए सुन्न। आत्म मिटे सर्ब ब्याध, सोहँ देवे आत्म धुन। आप उपजाए राग माधो माधव गुरमुख साचे कन्न सुण। साचा प्रभ सच घर लाध, आप जणाए आपणे गुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे देवे वड्याई कलिजुग चुण। वडी वड्याई गुर दर पा। सच सच सच वरताई प्रभ साचा होए सहा। रच रच रच आत्म रच जाई, प्रभ आप आपणा राह। विच विच विच रसन गुण गाई, प्रभ देवे जोत जगा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, हउमे रोग दए मिटा। हउमे रोग आप गंवाए। साचा योग सोहँ दवाए। पूरन भोग प्रभ शब्द कमाए। चिन्ता सोग प्रभ दे मिटाए। दरस अमोघ प्रभ दे दिसाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे उप्पर दया कमाए। प्रभ पूरन सदा समरथ। गुरमुख चढ़ाए साचे रथ। साचा नाम देवे साची वत्थ। रसना जप जप जीव आत्म वसूरे जायण

लथ्थ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे लेख लिखाए अकथ्थ। वक्त सुहाया सतिगुर आण। दिवस मनाया आप भगवान। जामा पाया वाली दो जहान। नाउँ धराया निहकलंक बली बलवान। शब्द चलाया वरताया सोहँ दानी दान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, खेल मेल आप कराण। कराए मेल आप मिलाए। बिन बाती बिन तेल जोत सरूपी दीप जगाए। अचरज पारब्रह्म खेल, प्रभ साचा आप खिलाए। बण जाए साचा सज्जण सुहेल। जो जन आए चरन सीस झुकाए। विछड़यां मिलाया साचा मेल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फिर विछड़ कदे ना जाए । मिल्या मेल अन्तिम आण। प्रभ साचे करी अन्त पछाण। साचा गुर साचे दर दवाए साचा माण। लिख्या धुर देवे वड्याई वाली दो जहान। चरन लगाए करोड़ तेतीस सुर, एका पाए आपणी आण। जोत जगाए घनकपुर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। पुरी घनक धाम उपाए। आप आपणा नाम रखाए। सतिजुग साचा माण दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन इक्क थां बहाए। साचा थां आप उपावणा। दीपक साचा जोत जगावणा। साचा समां फेर सुहावणा। घनकपुरी प्रभ डेरा लावणा। सचखण्ड विच मात बणावणा। नौं खण्ड पृथ्मी राउ रंक सभ दर ल्यावणा। सोहँ डंक प्रभ जगत लगावणा। पूरन काम आप करावणा। लहिंदी धार सर बणावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी सारा खेल रचावणा। जोत सरूपी सच्चा सर आप बणाए। सच्चा घर इक्क खुल्हाए। चार वरन माण रखाए। साचा थान आप सुहाए। पतित पापीआं दुःख कटाए। मुख गुर सावण अमृत वरसाए। फड़े दामन जो दर ते आए। जन भगत गायण होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी बणत बणाए। साचा सर जगत उपा के। आपणा आप विच टिका के। पुरी घनक फेर वसा के। साध संगत विच बहा के। एका रंगत नाम चढ़ा के। सोहँ साची धुन उपजा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साची कल वरता के। चार वरन एक सरन आप रखाए तारन तरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर रक्खे हत्थ टिका के। अमृत वेला वक्त सुहाए। जोत सरूपी खेल रचाए। निर्मल जोत जोत जगाए। वरन गोत इक्क रखाए। साची जोत इक्क टिकाए। अमृत वेला मुख रखाए। सुन्न समाधी आप लगाए। तीन लोक प्रभ रिहा समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेला अमृत आए सुहाए। एका गुण दस्म खुल्हाई। आपणी धुन मस्त बणाई। साचे गुण देवे वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत आप जगाई। अमृत वेले जोत जगाए। गुरमुख साचे चरन बहाए। सचखण्ड आप निवास रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दीपक जोत जगाए। सच दीपक जोत प्रकाश। गुरमुखां जन्म कराया रास। साचा धाम आप आपणा किया वास। कलिजुग माया प्रभ कीनी नास। सतिजुग एका जोत अबिनाश। होए सहाई महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, नाम जपाए स्वास स्वास। अमृत वेला आप सुहाए। आप आपणा बिरद रखाए। गुरमुखां हिरदे शुद्ध कराए। घर घर नव निध उपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवासी सचखण्ड निवास रखाए। गुर संगत गुर दर बहावे। अचरज खेल आप करावे। छड्ड देह सचखण्ड प्रभ जावे। साची जोत इक्क अकाश डगमगाए। होए प्रकाश तीन लोक लो आवे। जोत सरूपी जोत प्रभ साची जोत मात टिकावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दीपक प्रकाश कर गुरमुखां आत्म जोत जगावे। जोत जगाए दीपक बणाए, आप समीप्त विच हो जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत सुन्न खुल्हाए, रुण झुण धुन उपजाए। एका जोत एका दिया। साचा प्रभ गुरमुख साचे निर्मल कराए जीआ। आए आए दर बहाए। सरन लगाए सुन्न समाध खुल्हाए, आपणी आप देह तजाए, जोत सरूपी जोत जगाए, आप आपणा किया हिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सच आत्म जोत धर, आप आपणे जिहा किया। आपे आप जोत जगाए। साचा मार्ग जगत लगाए। मात पताल अकाशे प्रभ एका रंग रंगाए। सर्ब घटां घट वासे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां रंग मिटाए। जोत जगे इक्क अगम्म। प्रभ कमाए साचा कर्म। रास कराए गुरमुख जन्म। इक्क उपाए इक्क समाए इक्क रखाए साचा ब्रह्म। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क चलाए साचा धर्म। साचा धर्म आप चलाए। साचा पित भगतन जामा पाए। आत्म सति प्रभ शांत कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत जोत प्रभ आत्म साची जोत जगाए। साची रचना आप रचाई। साचा बचन भविख्त लिखाई। गुरमुख कंचन प्रभ बणाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अमृत एका जोत आप जगाई। आप आपणी जोत जगाए। साध संगत विच सच प्रकाश कराए। आप आपणा बैठा छुपाए। निज घर वासी निज डेरा लाए। सुन्न समाध प्रभ आप खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म करया विच मात दे आए। मातलोक एह कर्म कमाया। आपणा भेख आप वटाया। साचा दीप जगत जगाया। वड वड वड मीत, प्रभ संग रलाया। एका वक्त एका वेला सत्त दीप करे रुशनाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्त साध संगत तेरी आत्म दीप जगाया। साचा दीपक खिमा दान। एका जोत जगे महान। गुरमुख साचे सति कर मान। साची दरगाह देवे माण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सदा सदा सदा रहे सच समान। सदा सदा सदा प्रभ एका जोत। चार वरन प्रभ एका जोत। जीव जन्त प्रभ एका जोत। साचा कन्त तीन लोक एका जोत। एका जोत सदा अडोल। आप वखाए बैठा कोल। आत्म वेख गुरमुख फोल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी कीते चोहल। एका जोत डगमगाए। एका दीपक करे रुशनाए। विच समीप्त नज़र ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड

निवासी थिर घर निवास रखाए। आपणी बणत आप बणाए। बणाए बणत अचरज खेल। प्रभ साचे दी साची जोत, आप जगाए बिन बाती बिन तेल। सतिजुग कराए साचा मेल। विछड़यां प्रभ ल्या मेल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ आप कराया साचा खेल। आप आपणा खेल रचाए। जीव जन्त कोई भेद ना पाए। वेले अन्त प्रभ दया कमाए। बैठा इकन्त दरस दिखाए। बेअन्त बेअन्त बेअन्त महिंमा गणी ना जाए। आदिन अन्त सर्ब थांई समाए। साचा कन्त एका जोत जगत जगाए। जीव जन्त प्रभ रहया समाए। प्रभ बणाए साची बणत, वेले अमृत जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साचे आत्म साचा दीप जगाए। साची जोत करे अकारे। जोत सरूपी विच संसारे। जोत सरूपी गुरमुख तारे। निर्मल जोत गुरमुख साचे आत्म करे उज्जयारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे काज संवारे। साचा राज सचखण्ड दवा रिहा। साचा ताज सिर पहना रिहा। सोहँ अवाज़ प्रभ लगा रिहा। पकड़ वाग प्रभ पार करा रिहा। हँस काग प्रभ सच बणा रिहा। सोहँ जाप प्रभ आप जपा रिहा। सर्ब सृष्ट माई बाप आप अख्वा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत आत्म दीप जगा रिहा। एका आत्म होए जीव उज्जयारी। देवे दरस आप मुरारी। दासन दास प्रभ होए सहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म देवे जोत अधारी। जोत जगाई दीपक टिकाई खेल वखाई साध संगत प्रभ दे जणाई। पंचम जेठ वड दया कमाई। निहकलंक कलि मात जोत प्रगटाई। साध संगत मन वज्जी वधाई। आत्म होए सर्ब रुशनाई। सीतला रैण प्रभ नज़री आई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर कर दरस गुरमुख साचे सद बख्शाई। साचा प्रभ आप दर आए। जोत सरूपी दरस दिखाए। शब्द सुरत प्रभ मेल मिलाए। आत्म धुन प्रभ धुन उपजाए। सरधा पूरत प्रभ आसा पूर कराए। अकाल मूर्त एका जोत आप रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अमृत दया कमाए। साची जोत मूर्त अकाल। साध संगत प्रभ कट्टे ज़ंजाल। एका जोत जगाए झूठी काया होई लाल। एका होए आप सहाई चरन प्रीती निभे नाल। धन्न धन्न धन्न गुरसिख कमाई, वड सेवा वड घर में घाल। प्रभ साचा शब्द सुणाए आत्म कर लाल गुलाल। आत्म वज्जे सच्ची वधाई, होए सहाई भगत वसाल। नव निध प्रभ घर उपजाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साचा दीपक बाल। जोत जोत जोत प्रभ जोत जगाई। साची जोत प्रभ मात टिकाई। आत्म दीपक बाल प्रभ जोत वखाई। गुरमुख साचा विच जोत मिलाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत करे रुशनाई। जोत सरूप जोत जुगतार। जोत सरूप प्रभ सर्ब मुखतार। जोत सरूप एका जोत अकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत प्रगटाए आपे जोत भुगतार। जीव जन्त की जाणे जोती। गुरसिख बणाए माणक मोती। सृष्ट सबाई रही सोती।

वेले अमृत कारज खेल सच सज्जण सुहेले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख टिकाए आत्म जोती। जोत जोत जोत प्रभ जोत सरूप। जोत जोत जोत प्रभ वड भूप। जोत जोत जोत प्रभ करे प्रकाश विच अन्ध कूप। जोत जोत जोत प्रभ आपणे रंग रवे सच रूप। जोत जोत जोत सति सरूप। जोत जोत जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना छाउँ ना धूप। जोत जोत जोत जगाए। सच विहार आप कराए। भगत उधार दया कमाए। निराहार निरवैर समाए। धार खेल चतुर्भुज कहाए। साँवल सुंदर रूप वटाए। सुंदर कुण्डल सिर मुकट लगाए। कँवल नैण एका जोत विच मात प्रगटाए। गुरमुख साचे लहणा लैण, जोत सरूपी प्रभ रिहा समाए। आप खुल्हाए साचा नाभ, द्वार दस्म दी सोझी पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आत्म ताक दे खुल्हाए। आत्म रक्खे आपे वास। गुरसिख वड्याई प्रभ दे पास। देवे वड्याई जिउँ चन्दन प्रभास। आत्म साची जोत जगाई, अज्ञान अन्धेर किया विनास। साची बणत प्रभ आप बणाई, एका जोत किया प्रकाश। साध संगत प्रभ पैज रखाई, सच कराए आपणा दास। जै जै जैकार गुर संगत गुर संगत कराई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा होया दास। दासन दास प्रभ आपे दासा। गुर सरूपी गुर संगत वासा। दरस दिखावे आण तरावे, गुरसिख बणाए जिउँ कंचन पासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए पुरख अबिनाशा। प्रभ पूरन जोत अबिनाश। प्रभ पूरन सर्ब घट वास। प्रभ पूरन कलिजुग अन्धेर करे विनास। प्रभ पूरन सति सति सति करे प्रकाश। प्रभ पूरन गुरमुख साचे तेरी आप बणाए रहरास। प्रभ पूरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ चलावे जपावे स्वास स्वास। स्वास स्वास आप चलावे। आप आपणे लेखे लावे। वेखे विगसे आण तरावे। कलिजुग जीव भुल्ला प्रभ मार्ग पावे। सारंगधर भगवान बीठला आपणे रंग समावे। आत्म साचा रंग मजीठला, प्रभ आप चढ़ावे। जोत सरूपी साचा अंगीठला प्रभ गुरसिख बलावे। आत्म जोत प्रभ जगावे सोहँ देवे नाम सीतला, रसना जप जप पतित पापी तर जावे। मिल्या प्रभ जगत भय भीतला, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मीत अख्वावे। साचा मीत आप कहाए। आत्म अतीत प्रभ आप कराए। पिछला वक्त जाए बीत, प्रभ जोत प्रगटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग आपणी बणत आप बणाए। क्या कोई जाणे क्या कोई वखाणे। कलिजुग जीव सर्ब अन्जाणे। गुरमुखां चलाए प्रभ आपणे भाणे। बेमुख भुन्ने जिउँ भठयाले दाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां बणाए सुघड़ स्याणे। साचा प्रभ सच दी कार। साचा प्रभ सच दी मार। साचा प्रभ सच विहार। साचा प्रभ सच करतार। साचा प्रभ सिरजणहार। साचा प्रभ रूप अपार। साचा भूप वड सिक्दार। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगाए जोत अपर अपार। साची जोत साचा जीआ। कर

दरस गुरमुख साचे निर्मल किया जीआ। रसना रस अंमित रस पीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा देवे जीआ। साचा दर गुर संगत पाया। दिवस रैण मंगल गाया। लहणा लैण प्रभ घर विच पाया। भाणा सहणा प्रभ हुक्म सुणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा समां आण सुहाया। वक्त सुहाए आप प्रभ, आपणी जोत जगा। गुर संगत तराए आप प्रभ, आपणे चरन लगा। वक्त सुहाए आप प्रभ, आपणी जोत जगा। जन संगत तराए आप प्रभ, आपणी सेवा ला। वक्त सुहाए आप प्रभ, एका अंक इक्क चला। जन भगत तराए आप प्रभ, साची बूझ बुझा। सतिजुग लगाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मार्ग ला। साचा मार्ग जगत लगाया। सतिजुग साचे जन्म दवाया। पहली माघ लेख लिखाया। पंचम जेठ प्रभ वड्आया। सतिजुग साचे मुख रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत विच मात साचा मेल मिलाया। संगत आई गुर दरबार। इक्क कराए चरन प्यार। आप दवाए नाम अधार। जोत जगाए अपर अपार। पार लँघाए विच मंझ धार। पावे सार विच संसार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, दर आए सरन लगाए बेड़ा कर जाए पार। सतिगुर साचा सतिसंग बणाए। सतिगुर साचा गुरमुख साचे अंग अंग समाए। सतिगुर साचे साध संगत तेरी साची मंग दर आए पूर कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि हरि हरि रंग प्रभ आत्म सच चढ़ाए। हरि हरि हरि साचा रंग। हरि हरि हरि दर साचा मंग। हरि हरि हरि मिटाए भुक्ख नंग। हरि हरि हरि वेख साचा घर एक रंगाए आपणे रंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस गुर संगत पार जाए लँघ। गुर संगत गुर देवे माण। आप रखाए आपणा ताण। एक बख्शे नाम निधान। साचा देवे अन्त बबाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाण। रसना गाया पुरख बिधाता। हरि घर आया आप पछाता। नाम तराया जोग कमाता। वर घर पाया प्रभ रघुराता। तारनहार आप प्रभ अपार सर्ब जीआं का दाता। बेड़ा बन्नू आप तराया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सगला संग साथा। साचा प्रभ साचा संगी। साच वर प्रभ दर मंगी। साध संगत प्रभ राखे अंगी। सतिगुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा साचा संगी। गुर संग सो धन्न वेला। सतिगुर साचा सद सुहेला। आप बणाए आपणे चेला। भुल्ले भुलाए प्रभ आप कराए मेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत कराए साचा मेला। साचे प्रभ समां सुहाया। आपणा आप जगत प्रगटाया। साचा जाप गुर संगत सुणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना जप जप रैण दिवस दिवस रैण इक्क रंग समाया। गुर संगत रसना हरि गुण गा। आपणा लेख धुर दरगाह लिखा। वेखा वेख रह ना जा। भरम भुलेखा सर्ब मिटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई वेले अन्तिम आ। अन्तकाल प्रभ सदा सहाई। जोत

सरूप प्रभ लए बचाई। वड वड भूप आप सुखदाई। बिन रंग रूप आप रिहा समाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका ओट रखाई। साचा गुर सच जणावे। गुरमुख साचे सच मार्ग पावे। सतिजुग साचा सति वरतावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिन्ता सोग मिटावे। एका किणका जोत जगाए। मन का मणका आप फिराए। एका तिनका विच रखाए। जिन का जन का रूप कढ़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा रंग चढ़ाए। साचा प्रभ सद रस भीन्ना। सर्ब जीआं का दाना बीना। साचा नाम गुर दर पीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख शांत कराए सीना। सांतक वरते साचे दर। सति सति सति कराए प्रभ साचा सर। पति पति पति प्रभ पति रखाए प्रभ साचे घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगादि आदि जगत सुक्के हरे दए कर। दर मंगल गाया नाम ध्याया तृखा मिटाया दर्शन पाया गुरमुख साचा गुर दर आया। साचा नाम मंगण आया। गुण निधान प्रभ साचे झोली पाया। वाली दो जहान बेड़ा पार कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत सिर हत्थ टिकाया। आपणा हत्थ सिर रखाया। गुरमुख साचा आण तराया। वेले अन्त हो जाए सहाया। साचे सन्त प्रभ साचा नाम दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दे वड्आया। आत्म वज्जी साची वधाई। प्रभ साचे दी सच सरनाई। विच मात दे वड्याई। सच करामात सोहँ झोली पाई। साची दात गुरसिख लै गुर दर जाई। उत्तम ज़ात विच चुरासी आप लिखाई। साचा नात गुर चरन सेव कमाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची देवे सर्ब वड्याई। सर्ब जन आसा पूरे। प्रभ का दरस आत्म भरपूरे। साचा सरबंस प्रभ संग हज़ूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद वसे नेड़ ना जाणो दूरे। निजानंद निज का वास। साचा प्रभ सद है दास। गुरसिख साचे सद रक्खे वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आए पार लँघाए आप तराए जन्म कराए रास। गुरसिख होया जन्म रास। प्रभ साचे का होया वास। निहकलंक करे बन्द खलास। एक लिखाए आपणा अंक सोहँ शब्द जपाए स्वास स्वास। साचा प्रभ दया कमाए। गुर प्रसादी गुर प्रसाद आप वरताए। वड वड नाद अनादी साची धुन नाद वजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आई संगत सप्तम जेठ विदा कराए। सच वस्त सच घर पाई। आत्म वज्जी गुरसिख वधाई। साचा लिख्या गुरसिख कमाई। पूरन इच्छया पूर कराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रैण दिवस दिवस रैण सद रसना गाई। रसना रस आत्म रस पाउणा। प्रभ अबिनाशी ना मनों भुलाउणा। घनकपुर वासी रिदे वसाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सतिगुर सदा ध्याउणा। सप्तम जेठ सति कर माण। साध संगत गुर दर परवान। जोत सरूपी जोत महान। विच अन्ध कूपी करे पछाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुर संगत देवे साचा माण। माण ताण आप दवाए।

जाणी जाण गुरसिख तराए। बाणी बाण हरि नाम ध्याए। भगत जनां हरि दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां पूरन आस कराए। आसा मनसा प्रभ साचे पूरी। जो जन आए प्रभ चरन हज़ूरी। एका सरन रखाए सर्ब गुण भरपूरी। जन्म मरन गेड़ चुकाए प्रभ आप मिलाए साची नूरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत आसा मनसा आपे पूरी। प्रभ साचा देवे नाम अधार। प्रभ साचा देवे चरन प्यार। बेमुखां प्रभ मारे शब्द मार। राह साचा जाए दस्स, सोहँ नाम देवे अधार। गुर आत्म जाए वस, साचा करे चरन प्यार। दुःख दर्द जायण नस्स, कर दरस निहकलंक जोत करतार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कर किरपा जाए तार। शब्द विच प्रभ सर्ब बंधाए। अमका जीआ वस कराए। साचा बाण नाम लगाए। सर्ब मुशकलां हल्ल कराए। मसाण पवण प्रभ परे हटाए। जम का बेटा नेड़ ना आए। कालका माता दर विलकाए। बीर बैताल कोई रहण ना पाए। हाकन डाकन छाकन प्रभ पकड़ उठाए। अंचनी कंचनी निरंचनी कला सोधरी प्रभ बंधाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। साचा गुर ओंकार। गुरमुख साचे सुणे पुकार। मरू देवा करे ख्वार। माल जोगी की असरई पार उतार। बीर मवकल करे ख्वार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सरन पड़े दी पावे सार। वलीए छलीए प्रभ मिटाए। हसन हसून अली सभ नष्ट कराए। आत्म जलीए रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द जणाए। दृष्ट मुशट कोई रहण ना पाए। छल छिद्र आप गंवाए। टूणा जादू कोई रहण ना पाए। सरदी काल बाल प्रभ आप हटाए। उलट वाहू दे सिर पवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। दीनां नाथ जीव अनाथा। आप रखाए साचा साथा। सिर रखाए आपणा हाथा। माण दवाए त्रैलोकी नाथा। संसा रोग चुकाए लेख लिखाए माथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चढ़ाए सोहँ साचे राथा। सोहँ राथ जन चढ़ाया। साचा शब्द आप चलाया। विच नाड़ी आप समाया। पाप पहाड़ां प्रभ रोग मिटाया। दूती दुष्ट प्रभ अग्न साड़ी, गुरमुख लग्गे ना तत्ती वाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए आप सहाया। होए सहाई आपे आप। कोटन कोट उतारे पाप। एका देवे सोहँ साचा जाप। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आप बणे माई बाप। मात पित आप अख्वाए। पिता पूत गुरसिख हो जाए। वड वड दूत प्रभ सेवा लाए। गुरमुख साचे एका सूत आप परोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए माण दवाए। गुरमुख साचे विच समावे, आत्म दिसे प्रभ निरँकार। दर आए हस्स वेखे रंग अपार। जोत सरूपी रसना वसे आप समाए किरपा धार। आत्म जोत करे प्रकाश कोट रवि सस्से, अज्ञान अन्धेर जाए निवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बांहों पकड़ कलि जाए तार। दुःख गंवाए भुक्ख मिटाए सुख उपजाए दूती

दुष्ट खपाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा सिर हत्थ टिकाए। आत्म चलाया डाहडा तीर। दुखियां दुःख रिहा देही पीड़। काया तोड़ी हड्डी रीड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप गंवाए आत्म पीड़। घिरना घिर आत्म घर। सुध बुध ना रहे दर। निरबल होया चरन पर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर आत्म हरा जाए कर। आत्म होए हर हरयावला। किरपा करे घनिया साँवला। साची सुध आप दवाए जीव होया बावला। साचा अमृत मुख चुआए, दुःख रोग सोग मिटावला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब दूख सर्ब भूख नष्ट करावला। दूखन दूख लग्गे तन। आत्म रहे सदा सुन्न। होया अन्धेर साचे चन्न। हेरा फेरा किया कम्म। टूणा जादू दूती कर, भाण्डा गई दलीज़ी भन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खुल्हाए आत्म सुन्न। आत्म लाया वडा रोग। अट्ठे पहर चुका सोग। झूठा रहे भरम विजोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कमाए मुख लगाए भोग लगाए गुर प्रसाद भोग। पंचम आए जोत प्रगटा के। साध संगत प्रभ दर बुला के। पंचम जाए जोत जगा के। गुर संगत गुर चरन लगा के। पंचम मारे प्रभ साचा आ के। पंचम जाए टिका के। पंचम पंचम दिवस सुहा के। सतिजुग साचे मुख रखा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई पंचम आ के। पंचम किया सच दरबार। पंचम तारे गुर करतार। पंचम तारे जोत निरँकार। पंचम पंचम मुख रखाए विच संसार। पंचम पंचम सुख वसाए। आप पाए सार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी पंचम आया जामा धार। पंचम जेठ सति वरताया। पंचम जेठ धीरज यति रखाया। पंचम जेठ सोहँ बीज़ प्रभ जगत बिजाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक सिँघासण डेरा लाया। सिँघ आसण प्रभ डेरा लाए। दुःख विनासन दया कमाए। सर्ब घट वासण जोत जगाए। मानस जन्म कराए रासन। जो जन दर ते आए। आप छुडाए मदिरा मासन, सोहँ साचा शब्द उपजाए। बाणी अकाशन रुण झुण उपजाए। एका पन्थ चलाए बासन, दूसर कोई रहण ना पाए। सोहँ जपाए स्वास स्वासण, बिरथा स्वास कोई ना जाए। आप होया दास दासन, पंचम जेठ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत मात प्रगटाए। मातलोक प्रभ साचा आए। गुरमुख साचे आण तराए। एका अंक नाम दवाए। बैठा अटंक जोत जगाए। सुहाए द्वार बंक जिस घर प्रभ आए। चुकाए शंक जो जन सरनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका नाम साध संगत तेरी झोली पाए। साचा दिया दया दान। प्रगट होए आप भगवान। सतिगुर साचा जाणी जाण। दरगाह साची देवे माण। साचा प्रभ वाली दो जहान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ देवे दानी दान। साचा प्रभ वड दानी दाना। भरे भण्डारे भगत भगवाना। आपे तारे गोपी काहना। जोत सरूपी निहकलंक पहरया जामा। जोत प्रगटाए दलिद्दर गंवाए जिउँ कृष्न

सुदामा। प्रभ सोहँ झोली गुर संगत नामा। आओ दर गुरसिख भिखारी। साचा प्रभ वड भण्डारी देवे नाम आत्म अधारी। बैठा अडोल वड सिक्दारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख्शे साध संगत नाम ख़ुमारी। साचा नाम सदा खुमारी। हउमे दुबिधा प्रभ साचे मारी। हउमे मारी प्रभ शब्द कटारी। प्रगटे जोत साचा गिरधारी। शंक मिटाए सतिजुग साचा रंग चढ़ाए पंचम जेठ साचा प्रभ जोत निरँकारी। निरँकार क्या कोई जाणे। अकार कवण पछाणे। विकार सदा वखाणे। अन्ध अंध्यार गुर पूरे मिटाणे। गुरमुख सच्यार प्रभ आप बणाने। आत्म अमृत कर सिंचार , प्रभ मैल गंवाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे गुर संगत चरन ध्याने। चरन प्यार साचा ताज। चरन ध्यान पूरन काज। चरन ध्यान साचा देवे दरगाह राज। चरन ध्यान प्रभ रक्खे आत्म लाज। चरन ध्यान महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तराए चरन बिठाए सोहँ लगाए साची अवाज़। सोहँ शब्द प्रभ अवाज़ लगाए। गुरमुख साचे सोए जगाए। गुरमुख साचे सच मार्ग लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ आए दया कमाए। पंचम जेठ प्रभ मात मनाया। निहकलंक दिवस सुहाया। एका अंक आप रखाया। सोहँ डंक प्रभ वजाया। साध संगत दर आई, प्रभ साचा माण दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाया। दवाए माण आप प्रभ जन दरस प्यासे। माण दवाए आप प्रभ, साचा गुर सर्ब गुणतासे । माण दवाए आप प्रभ, मानस जन्म कराया रासे। माण दवाया आप प्रभ, वेले अन्त करे बन्द खलासे। माण दवाए आप प्रभ, पूरन देवे जोत भरवासे। माण दवाए आप प्रभ, गुरसिख तेरे कारज आए रासे। माण दवाए आप प्रभ, सोहँ जप जीव स्वास स्वासे। माण दवाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए चरन प्यासे। माण दवाए आप प्रभ, होए आप दयाला। माण दवाए आप प्रभ, जन भगतां होए आप रखवाला। माण दवाए आप प्रभ, सदा सदा प्रितपाला। माण दवाए आप प्रभ, आतम जोत जगे सोहँ जपाए साची माला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत आदि अन्त होए तेरा रखवाला। सर्ब जीआं आपे दातार। सर्ब जीआं आपे भतार। सर्ब जीआं आपे पसार। सर्ब जीआं जोत अधार। सर्ब जीआं कर्म विचार। सर्ब जीआं महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पावे साची सार। साची सार आपे जाणे। जन भगत विच कलि पछाणे। आप चलाए आपणे भाणे। दिस ना आए राजा राणे। निमाणयां निताणयां प्रभ विच समाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पहरया बाणे। गुर पूरा कर्म कमांवदा। कर किरपा पार लँघांवदा। जन चरनी सीस निवांवदा। प्रभ साचा गले लगांवदा। दर आए दोए जोड़ भुल बख्शांवदा। कर किरपा पार करांवदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी फेरा विच मात दे पांवदा। मातलोक विच फेरा पाया। ऐड़ा अथर्बण वेद मिटाया।

अल्ला अलाहू नूर गंवाया। वेद पुरान कुरान अंजील रहण ना पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सोहँ साचा शब्द चलाया। सोहँ साचा शब्द चलाए। सतिजुग साचा मार्ग लाए। पंचम जेठ शब्द लिखाए। साध संगत चरन बहाए। साध संगत उतरे पार, हरि गुण गाए। जोत सरूपी जोत प्रभ विच रक्खे मिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दर घर साचे देवे आप वड्याए। पूरन गुर सद वड्याई। दे दरस तृखा मिटाई। निर्धनां प्रभ होए सहाई। सरधनां प्रभ आस पुजाई। गुरमुख साचे घर तेरे जोत प्रगटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होए वाली दो जहान, गुर प्रसादी गुर प्रसाद भोग लगाई। भोग लगाए सतिगुर मुख। साध संगत उतारे सारी भुक्ख। सुफल कराए मात कुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर प्रसाद प्रभ वरताए साध संगत मिटावे आत्म दुख। मिटे दुःख आत्म अज्ञान। एका उपजे चरन ध्यान। गुर प्रसादी देवे ब्रह्म ज्ञान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुर संगत करे पछाण। गुर संगत देवे वड्याई। दर मंगत भिच्छया पाई। हरि रंगत नाम चढ़ाई। गुर अंगद जिउँ नानक धराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत दर आई देवे आप वधाई। वधाई वधाई वधाई गुर संगत वधाई। पूरन मति गुर दर ते पाई। साचा सति घर लै जाई। दुरमति मैल गुर दर गंवाई। अचरज खेल करे रघुराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अनाथां हेत जोत प्रगटाई। साचा प्रभ नाथ अनाथे। जीव जन्त प्रभ सगला साथे। बणाई बणत लेख लिखाए माथे। प्रभ का भेव कोई ना काथे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गोपी नाथ सगला साथे। साचा संग प्रभ आपे करे। लाग अंग गुरसिख तरे। चाढ़े रंग एका हरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर्शन पाए साध संगत तेरे काज सरे।

* ८ जेठ २००६ बिक्रमी बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल *

गुर सेवा गुर पूरा पाईए। गुरमुख होए गुर सेव कमाईए। गुर सेवा घर साचे जाईए। प्रभ अबिनाशी चरन विगसाईए। गुर सेवा हरि मन्दिर पाईए। प्रभ की जोत अंदर जगाईए। गुर सेवा जन्म मरन गेड़ कटाईए। दरगाह साची थां दवाईए। गुर सेवा अन्त अन्तकाल कर कलिजुग तर जाईए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीत कमाईए। गुरमुख तरना अन्तकाल। गुर चरन प्रीती निभे नाल। आपणा बिरद प्रभ लए संभाल। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साचे सद प्रितपाल। प्रितपाल आप रखवाला। पारब्रह्म गुर दीन दयाला। भगत वछल हरि हरि कृपाला। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साचे संग समाला। सदा संग प्रभ आपे होए। दुरमति मैल गुरसिख धोए। सोहँ धागे आप परोए।

प्रभ साचे दी साची सोए। गुण निधान विरला गुरमुख जाणे कोए। बिन गुर पूरे निथाविआं माण ना देवे कोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख उठाए जगाए सोए। शब्द शब्द प्रभ आप जगाए। आप आपणी दया कमाए। सुरती सुरत प्रभ दरस दिखाए। सरधा पूरत प्रभ रिहा समाए। अनहद तूरत देह वजाए। जोत सरूपी साची मूर्त आप प्रगटाए। एका उपजाए नूरी नूरत, गुरसिख संसा सर्ब चुकाए। सर्ब जनां दी आसा पूरत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दिखाए। देवे दरस गुर घर आए। मिटाए हरस सर्ब सुखदाए। अमृत बरस गुरसिख तराए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, पूरन आस आप कराए। गुर दर ते आसा पूरी। एका जोत जगाए नूरी। आत्म देवे सति सरूरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख हिरदे वसे ना जाणे दूरी। बेमुखां प्रभ दिसे दूर। गुरसिखां प्रभ सदा हज़ूर। बेमुखां घर कूड़ो कूड़। गुरमखां देवे चरन धूढ़। राणयां महांराणयां पाए जूड़। गुरसिख चतुर बणाए आत्म मूढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत गिड़ाए पुट्ठा बूड़। मति अपुठी आपे देवे। आपणे खेल आप करेवे। इस हत्थ लेवे इस हत्थ देवे। जगत भुलावे भरम भरम भुलेखे । गुरसिख उपजावे विच मात साचे मेवे । सोहँ नाम निहकलंक प्रगट जोत साचा देवे। धन्न धन्न धन्न गुरसिख सतिगुर साचा सद रसना सेवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद गाए सेवे। रसना गाए एका हरि। गुरमुख साचा जाए तर। होए सहाई अवतार नर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप दवाए साचा दर। साचा दर गुर दरबारा। प्रगटे जोत आप निरँकारा। सर्ब सृष्ट देवे अधारा। एका इष्ट निहकलंक अवतारा। सर्ब भृष्ट अन्तकाल कलि करे ख्वारा। गुरमुख साचे जिउँ वशिष्ट एका देवे नाम अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नर अवतारा। अवतार आए भगत तराए। मार्ग पाए सरन लगाए। माण दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। बेमुख खपाए गए मुख भवाए, नर्क निवास रखाए। मदिरा मास जन रसना लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विष्टा मुख रखाए। दुष्ट निवारी करे ख्वारी जोत निरँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां कलि पार उतारी। दुष्ट सँघारे आप गिरधारे, आए संसारे जोत अकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मदिरा मासी करे ख्वारे। वड विधाता पुरख विधाता। सर्ब ज्ञाता जोत जगाता। मेल मिलाता चरन ध्यान ध्याता, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख्शे चरनी नाता। साचा नाता गुरसिख पछाता। सोहँ देवे साची दाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं का आपे ज्ञाता। आपे जाणे आप पछाणे। आप चलाए आपणे भाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सुघड़ स्याणे। गुरमुख साचे प्रभ अबिनाशी आए तेरे दर। सोहँ साचा देवे वर। ओअँ होए आप प्रभ नर।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस गुरमुख साचे जाए तर। तारन तारे मारन मारे। ख्वारन ख्वारे उधारन उधारे प्रभ जोत अकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नर अवतारे। आए जाए दिस ना आए। सृष्ट भुलाए गुरसिख तराए। माण गंवाए, निमाणयां प्रभ चरन लगाए। राणयां प्रभ तख्तों लाहे। चतुर सुघड़ स्याणयां प्रभ ख़ाक रुलाए। गुरसिख भुल्ले बाल अञ्याणयां प्रभ गले लगाए। बेमुख कर अन्ध अंध्याणयां प्रभ भठयाले दाणे भुनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत अग्न विच आप जलाए। अग्न जोत आप जलाए। जीव जन्त सर्ब बिल्लाए। साध संगत प्रभ पकड़ उठाए। आदि अन्त होए सहाए। बैठ इकन्त खेल रचाए। बणाए बणत कोई सार ना पाए। कराए भस्मंत जो हँकार रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल आप वरताए। वरताए कल सृष्ट सबाई जाए हल्ल। प्रभ का भाणा ना जाए टल। अन्त ना करन देवे वल छल। किसे ना सूझे अज्ज कल। बेमुख जीव बैठे झूठे घर मल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए जगत खपाए कलिजुग उलटाए सतिजुग सति सति सति लगाए ना घड़ी पल। प्रभ ना लाए देर। ना दिसे संञ्झ सवेर। एका अग्न लगाए चार कुन्ट पै जाए दुहाए, बेमुख मारे कर ढेर। कलिजुग जीव झाड़े जिउँ हलूणे डिग्गण बेर। सृष्ट सबाई अन्तकाल आप कराए मेल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन मेल मिलाए। गुरसिखां कीनां मेल आप मेहरवाना। मेल मिलाए भगत भगवाना। साचा देवे नाम निधाना। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना। सोहँ देवे सच ध्याना। चरन धूढ़ कराए साचा इशनाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग आप समाना। रंग समाणे वक्त पछाणे जोत जगाणे सृष्ट भुलाए जिउँ भठयाले दाणे। गुरमुख साचे प्रभ चरन प्रीती प्रभ साचे का साचा रंग माणे। बेमुख जीव बिल्लाए चार कुन्ट हाहाकार कराए साचा प्रभ दिस ना आणे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वेले अन्त होए आप सहाणे। जीव दुष्ट दुराचारी हँकारी भिवचारी करे ख्वारी नर्क निवारी भगत उधारी, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपे देवे सच्ची सरदारी। गुरमुख उधारे आपे तेरे काज संवारे, जोत अधारे चरन दुआरे, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आप आपणी दया धारे। बेमुख खपाए दिस ना आए नर्क निवास रखाए। लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। आवण जावण सद रखाए। वेले अन्त कोई ना होए सहाए। धर्म राए दे सजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा मुख छुपाए। गुरमुख तरावे सरनी लगावे। सतिजुग साचा नाम जपावे। आप आपणी दया कमावे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, अनहद साचा राग उपजावे। अनहद रागा साचा वाजा गुरसिख जागा। सतिजुग लागा पहली माघा। अन्तिम अन्त कलि फिरे सुहागा। गुरसिख साचा सतिगुर साचे दी सरनी लागा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द चलाए सोहँ जिउँ डंग बाशक नागा। कलिजुग जीव

हँकारी। प्रभ करे खेल अपारी। सहँसर मुख फुंकारी। अग्न जोत लगाए विच संसारी। वड वड भरे माण हँकारी। ना दिसण अन्त महल मुरारी। प्रभ अग्न जोत विच साड़ी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपणी कल वरते वरतारी। अग्न जोत कलिजुग लगाए। कोई ना पायण सार प्रभ जाए जलाए। अन्तकाल करन हाए हाए, कोई ना पाणी मुख चुआए। जीव जन्त सर्ब बिल्लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि दे सजाए। गुरसिख प्रभ दरस प्यासा। प्रभ देवे दरस होए दासन दासा। आपे आप करे सर्ब घट वासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ चलाए धराए जपाए स्वास स्वासा। स्वास स्वास स्वास हरि गुण गा। आस आस आस गुरसिख पूर करा। रास रास रास मानस जन्म रास करा। वास वास वास गुर पूरा विच वास करा। नास नास नास दुःख दर्द नास करा। मास मास मास मदिरा मास मनों तजा। दास दास दास महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख रिहा दास बणा। भगत जन प्रभ सदा दास। आप आपणा विच रक्खे वास। सचखण्ड बणाए गुरसिख हिरदे रिहा निवास। प्रभ अबिनाशी ना कदे विनासी, साची जोत करे प्रकाश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए गुरसिख तराए, चरन लगाए सेव कराए, सोहँ जपाए स्वास स्वास। सोहँ जपाए इक्क वसाए आत्म तृपाए। हरस मिटाए तरस कमाए। गुरसिख पूरन आस कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत राती सुत्तयां दरस दिखाए। गुरसिख सोया प्रभ साचा जागे। गुरसिख दोया प्रभ शब्द चलावे अनरागे। गुरसिख सिख पूरा होया, रात सुत्तयां प्रभ चरनी लागे। मिल्या बीज जो साचा बोया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म जन्म दे लाहे दाग़े। साचा नाम दुरमति धोए। सोहँ सच साचा बोए। गुरमुख जागे बेमुख सोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उधारे तारे दुःख निवारे विच संसारे। गुर दरस जिस जन पाया। गुर दरस कर दुःख रोग मिटाया । गुर दरस आत्म चिन्ता रोग मिटाया। गुर दरस कर गुरसिख प्रभ सोहँ चोग चुगाया। गुर दरस तीन लोक गुरसिख प्रभ वड्आया। गुर दरस गुरमुख साचे साचा जोग जगत कमाया। गुर दरस गुर दर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म तृप्त कराया गुर दरस चिन्ता जाए। गुर दरस मन सिंचा जाए। गुर दरस रोग हँगता जाए। गुर दरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा विच संगतां माण रखाए। दरस दिया गुर साचे आ के। जोत सरूपी जामा पा के। पुरी घनक विच जोत प्रगटा के। निहकलंक कलि नांउँ धरा के। झूठी काया आप तजा के। साचा बाणा आप बणा के। भेख भेख भेख प्रभ साचा भेख वटा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप दरस दिखा के। जोत सरूप बिन रंग रूप, महिंमा अनूप सति सरूप, वड वड भूप विच अन्ध कूप, गुरमुख साचे बैठा जोत जगाए। साची जोत आप जगाए। आप आपणे

मार्ग लाए। साचा राग आप उपजाए। आत्म सारंग धुन सुणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सुन खुल्हाए। साचा गुर गुरमुख पाया। लिख्या धुरों दर घर आया। ना जाए मर, प्रभ दया कमाया। जो जन आए दर, प्रभ दए वधाया। आत्म विच सरद, सोहँ नाम प्रभ झोली पाया। माण दवाए वासी घनकपुर साचा मेल मिलाया। करे बेनन्ती दोए हत्थ जोड़, प्रभ साचा लए बख्शाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाथ अनाथे सगले साथे त्रैलोकी नाथे लेख लिखावे विच माथे, गुरसिखां आण तराया। गुर तारे पार उतारे, पावे सार ना देवे हार कर विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका चरन दिसाए गुरमुख साचे चरन प्यार। प्यार चरन तारन तरन खोल्हे हरन फरन मुकाए जम्म का डण्ड। गेड़ कटाए जम्म का फंद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लगाए आपणी सरन। सरन लगाए पार कराए। दरस दिखाए होए सहाए। बबाण बिठाए दरगाह साची माण दवाए। बैकुण्ठ निवासी विच बैकुण्ठ निवास रखाए। आवण जावण गेड़ कटाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा गुरमुख साचे साची जोत जगाए। जोत मिलाए इक्क कराए। सचखण्ड निवासी सचखण्ड निवास रखाए। बैकुण्ठ निवासी गुरमुखां साचे धाम पुचाए। घनकपुर वासी प्रभ बणत बणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका नाम शब्द चलाए। साचा नाम सच अधार। गुरसिख आत्म करे उज्जयार। अन्तकाल प्रभ बेड़ा करे पार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे सच सहार। सच सहारा आपे दिया। साचा नाम गुर दर पीआ। साचा नाम सोहँ बीज साचा बिया। साचा राम आप रखाए साची नीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप जगाए साचे दिया। जोत सरूप दीपक बाले। गुरमुख साचे दया कमाए। आप आपणी सरन लगाए। जन्म मरन दा गेड़ कटाए। हरन फरन प्रभ खुल्हाए। वरन बरन प्रभ इक्क कराए। राउ रंक कोई रहण ना पाए। सोहँ अवाज़ चार कुन्ट लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा वक्त सुहाए। चार कुन्ट जै जै जैकार। एका जोत होए उज्जयार। एका एक कराए इक्क वरताए विच संसार। एका मार्ग लाए इक्क रखाए सोहँ साचा नाम अधार। आप आपणी दया कमाए। गुरमुख साचे बूझ बुझाए। आप एका दूज मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सच सच आप वरताए। वरताए सच कराए सच धराए सच कमाए सच जोत जलाए सच। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जोत प्रगटाए, दरस दिखाए सच। सुच्च वरताए सच वक्त सुहावणा। सच वरतावणा सच चलावणा। सच नाम जगत दवावणा। साचा सतिगुर आप अख्वावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जोत प्रगटावणा। साची कारा सच विहारा सच दातारा। सच सच वरताए सच निरँकारा। सच सच धरे मिटे अन्ध अन्धयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे जोत उज्जयारा। सच कमावे

१०२ सच खुल्हावे सच दवावे झूठ गवावे। सच कमावे सुच्च करावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप बचावे। साचा पीआ साचा जीआ साचा किया साचा दिया महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप वरतावे आपणा किया। साचा रहणा साचा बहिणा। साचा लहणा साचा कहणा साचा सहिणा। गुरमुख साचा प्रभ साचा देखे नैणां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत गुर चरन लाग सच सच सचखण्ड विच बहिणा। गुरमुख साचा प्रभ साचा वेखे। प्रभ अबिनाशी नेत्र पेखे। आप आपणा लाए लेखे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचा सचखण्ड वेखे। सचखण्ड हरि का द्वार। एका बख्शे गुर संगत गुर चरन प्यार। दर दर दर आए प्रभ चाढ़े साची आत्म रंगत, कोई ना देवे उतार। आप बणाए साची संगत, सतिजुग लगाए साचा दरबार। धन्न धन्न धन्न गुरसिख, निहकलंक चल आए तेरे दरबार। साचा गुर साचे चरन। साचा दरस गुरमुख दर करन। साचे सिख मातलोक विच तरन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आयण तेरी सरन। चार वरन आप तराए। इक्क सरन राह बणाए। कारन करन कार कमाए। सारन सरन प्रभ सार पाए। उधारन धरन प्रभ धर्म कमाए। अकारन करन प्रभ कर्म कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सच सच मार्ग लाए। साचे मार्ग गुरसिख साचे लाए। सच सच सच दी कार कमाए। जोत सरूपी प्रभ नष्ट कराए। गुरसिख गए रुठ प्रभ फेर मनाए। देवे नाम रंग अनुठ, रसक रसक रसना लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल आप आपणी दया कमाए। दया धारे आप निरँकारे। भगत उधारे विच संसारे। पार उतारे जन करे निमस्कारे। गुरमुख विरला पावे सारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धारे। जामा धारया जोत अकारया विच संसारया। गुरमुख विरले किसे विचारया। प्रभ गिरधारया कृष्न मुरारया। राम अवतारया महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धारया। घनकपुरी प्रभ भाग लगाया। शेर सिँघ नाउँ रखाया। विच मात जोत सरूपी जोत प्रगटाया। निहकलंक आप अख्वाया। गुरमुख साचे पार लँघाया। हँकारीआं प्रभ हँकार गंवाया। गुरमुख साचे चरन लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी विच मात बालक खेल गुर संगत संग कराया। गुरसिख गुर पूरे बाल। प्रभ बणे सच्चा आप रखवाल। सद सहाई सदा संग नाल। साचा देवे प्रभ नाम धन माल। आत्म दीपक देवे बाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विंगा होण ना देवे वाल। जोत प्रगटाए नाम धराए निरँकार अख्वाए। इक्क अकार कराए तीन लोक बणाए। मात पताल अकाश सुहाए। ब्रह्मण्ड बणाए खण्ड खण्ड सभ सृष्ट उपाए। नव खण्ड रिहा समाए। विच वरभण्ड कोई अन्त ना पाए। एका जोत गगन जगाए। एका अग्न एका मग्न रंग चन्द सूरज उपजाए। साचा प्रभ साचा कर्म साचा धर्म साची सरन विच मात आप चलाए। जोत सरूपी १०२

१०३ ०२ जोत प्रभ वरते वरताए। आप बणाया आप रचाया। धवल उपजाया नाम धरवाया। ब्रह्मा उपजाया वेद पढ़ाया। जगत सुणाया माण दवाया। हत्थ सृष्ट फड़ाया। ब्रह्मलोक सरनाया। जोत सरूपी जोत प्रभ आपणा खेल रचाया। शिव उपजाए नाम दवाए। भगती लाए आप भुलाए। हँकार धराए माण गंवाए, मोहणी रूप होए आए। आप अछल छल कराए। शिव संभू आप भुलाए। जोत सरूपी जोत प्रभ, कोई भेव ना पाए। आप भुलाया आप डुलाया। मोहणी मोहणा रूप बणाया। आपणा धीरज आप अख्वाया। बेमुख होए सुध भुलाया। काम क्रोध बहुत सताया। अग्नी अग्न अग्न तन लगाया। मग्नी मग्न हत्थ ना आया। जोत सरूपी जोत प्रभ हँकार निवारी आप अख्वाया। खेल रचाया भेख धराया। दर मंगाया दान दवाया। हँकार गंवाया भस्मन्त्र कर आप तराया। आए भन्ना हत्थ ना आया। जाए पहाड़ां सिर छुपाया। पूछों खिच बाहर कढाया। भैंसा रूप शिव बणाया। आप आपणा फिर वटाया। होए प्रतक्ख दरस दिखाया। ल्या रक्ख कर्म कमाया। होया कक्ख प्रभ सरन लगाया। जोत सरूपी जोत प्रभ, शिव भुलाए आण तराया। आप तराए माण दवाए। जगत रखाए नाम जपाए। सेवा लाए दे वड्याए। जोत सरूपी जोत प्रभ कोई भेव ना पाए। देवे वड्याई बणत बणाई। खेल रचाई माया रूपी सन्तान उपाई। पार्बती दी गोद सुहाई। सुरती सुरत शिव लगाई। चौवी बरस घर तजाई। ब्रह्मचारी यति रखाई। बारां बरस सति रखाई। आत्म धीरज पार्बती आप रखाई। दूजी ताड़ी फिर लगाई। आत्म पार्बती बिल्लाई। भगवान आप एह बणत बणाई। देवे दान दर मंगण आई। एका ध्यान सरन लगाई। विष्नूं भगवान दया कमाई। सेतज पूत आप उपजाई। पार्बती पकड़ उठाई। मोहण मुम्मे ल्या पाई। साचा सीर आप प्याई। आपणी पति आप रखाई। अचरज खेल आप कराई। बिन माता बिन पित जोत उपजाई। जोत सरूपी जोत प्रभ, जीव जन्त कोई भेव ना पाई। जोत उपाया गोद सुलाया सीर प्लाया। बारां बरस वक्त सुहाया। शिव जी उठ घर नूं आया। वेख पूत आत्म घबराया। साचा सुत किस उपजाया। बोल्लया पार्बती दा जाया। भुलाई सुरत हँकार रखाया। तेग उठाया तुरत सीस उडाया। वढ्ढया सीस दिस ना आया। जोत सरूपी जोत प्रभ अचरज खेल करे कराया। उडया सीस ना दिसे दीस। खेल करे आप जगदीस। जीव जन्त ना करे रीस। हँकारीआं प्रभ जाए पीस। जोत सरूपी जोत प्रभ छत्र झुलाए एका आपणे सीस। शिव आया चरन लगाया। घर बाहर सुहाया। पार्बती सीस झुकाया। धन्न भाग प्रभ घर में पाया। होया सुहाग आई जाग चौवी बरस विहाया। चरन लाग आत्म रस पाया। जोत सरूपी जोत प्रभ आपणा भेद ना किसे जणाया। साचे घर मंगलचार साचा प्रभ घर में पाया। आपणा आप आप सुणाया। साचा पूतम प्रभ दर ते पाया। साचा सूत ताणा पेटा इक्क रखाया। बूझत बूझ एह ध्यान लगाया। पति परमेश्वर एह कर्म १०३ ०२

कमाया। गोद मेरी विच पुत्त सुलाया। वेख असचरज शिव करे दुहाया। एह की कहर मैं वरताया। प्रभ साचे दी सार ना पाया। तेरा पूत जम लोक सिधाया। पार्बती नूं आख सुणाया। लोक परलोक उह हत्थ ना आया। वडा सोग पार्बती मनाया। जोत सरूपी जोत प्रभ भरम भुलेखे सर्ब भुलाया। पार्बती करे पुकार। सुण मेरे गुर दातार। मैं हां तेरी चरन पनिहार। पूत मात सद प्यार। मेरा पूत पार उतार। मानस जन्म ना जाए हार। दर दर होवां मैं ख्वार। कोई ना पावे मेरी सार। किरपा कर आप करतार। दुतर देवे तार। सत्त संग मेरा प्यार। जोत सरूपी जोत प्रभ कोई ना पावे सार। शिव जी एह सुणी पुकारा। पार्बती करे हाहाकारा। आत्म करे गहर विचारा। प्रभ का खेल अपर अपारा। जीव जन्त क्या करे विचारा। साध सन्त ना पारवारा। अनन्त अनन्त अनन्त मुरारा। अकन्त अकन्त अकन्त निराधारा। जोत सरूपी जोत प्रभ गुरमुख विरला करे विचारा। साची बूझ आप बुझाए। एका दूज आप चुकाए। आपणा गूझ आप खुल्हाए। जोत सरूपी जोत प्रभ आपणी बणत आप बणाए। पवण अहारी लई उडारी। चार कुन्ट वेखे सारी । हत्थ ना आवे लथ्था सीस कटारी। रैण सबाई होए ख्वारी । तोड़े प्रभ इक्क हँकारी। इक्क बेनन्ती प्रभ दर गुजारी। दिसे प्रभ इक्क गिरधारी। देवे ध्यान आप मुरारी। होया ज्ञान पाए शुमारी। जोत सरूपी जोत प्रभ आप कराए आपणी कारी। आया ध्यान उपज्या ज्ञान। किया इशनान विच बियाबान। वेखे निशान गजनी सुत्ती कर पिठान। पूत पाया नैण मुंधान। कटया सीस होए बली बलवान। घर लै आया साचा धान। पार्बती नूं मिल्या आण। जोत सरूपी जोत प्रभ गंवाए सभ दा माण। पार्बती शिव हुक्म सुणावे। आपणा किया आप बतावे। मोया जीआ फेर जवावे। एका दूआ दूआ तीआ हो जावे। मेरां किया किश ना होवे। साचा किया प्रभ रघुरावे। आपणी भुल आप बख्शावे। करे बेनन्ती जो जीव करावे। आदिन अन्ती दरस दिखावे। साधन सन्ती लाज रखावे। बैठ इकन्ती जोत जगावे। कर बेनन्ती जो जन चरनी सीस निवावे। जोत सरूपी जोत प्रभ आपणी दया कमावे। शिव आत्म भाखे अलख ना लाखे साचे वसाखे। गजनी सुत राज सीस धड़ उप्पर राखे। बीस इकीस एक अलाखे। जोत सरूपी जोत प्रभ आपे वेखे आपे भाखे। उप्पर सीस धड़ टिकाया। बांहों फड़ प्रभ फेर जगाया। हँकार गया शिव प्रभ सरनी सीस झुकाया। जोत सरूपी विच बैठ बुझा दीपक फेर जगाया। आप चलाए नाड़ी नड़ आपणा आप विच समाया। शब्द शब्द प्रभ देवे गुण, लोकमात विच नाम वड्आया। प्रभ साचे दे जन लगे सरन, प्रभ बेड़ा पार कराया। सच दर आए जाए ना मर, प्रभ साचे सिर हत्थ टिकाया। कोई ना जाए आगे अड़, एक शब्द प्रभ चलाया। बेमुखां होयण भाग माढ़, प्रभ साचे मुख भवाया। वहन्दे जाण कलि बहिंदे हड़, ना कोई होए सहाया। बेमुख जीव डिग्गण धड़ धड़, अग्न मेघ आप

बरसाया। चार कुन्ट होए तड़ तड़, बीर बेताली प्रभ टुम्ब उठाया। वड वड इन्द रजायण वड, सोहँ बाण प्रभ चलाया। सृष्ट सबाई हो जाए दो धड़, अचरज खेल प्रभ आप कराया। जोत सरूपी जोत प्रभ आदि अन्त करे भस्मंत, हँकार निवार आप अख्वाया। शिव जी देवे प्रभ अदेसा। साचा प्रभ हिरदे प्रवेशा। जोत सरूपी सुरत शब्द शब्द सुरत देवे सच संदेसा। मातलोक पूत पब्बी नाउँ धराए गनेशा। चार जुग पूज कराए विच मात हमेसा। अन्तकल चौथे जुग प्रभ मिटाए अंदेसा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत माण गंवाए ब्रह्मा विष्न महेषा। आप उपाया आप उपजाया। आप तराया आप गंवाया। महाराज शेर सिँघ आपे आप करे कराया। जोत जगाए गगन मण्डल रहाए। भवखण्डन कोई सार ना पाए। वड वडण प्रभ आप अख्वाए। जोत सरूपी जोत प्रभ एका जोत अकार विच अकाश रखाए। विच आकाश जोत निराली। एका जोत प्रभ पतालण पताली। बाशक सेज आप संभाली। नैण मुँधारी सुख आसण थाएँ समाली। किरपा निध किरपा कर लछमी चरन झस्सण ला ली। झस्से चरन लग्गे सरन मन हँकार रखा ली। करे प्यार आत्म विचार जोत सरूपी जोत प्रभ गूढ़ी नींद सुला ली। प्रभ गिरधारे जोत निरँकारे ना कोई पावे सारे, आलस निंदरा प्रभ नेड़ ना आए। पसर पसार विच संसार मातलोक प्रभ जोत प्रगटाए। जोत जगाए आपणा आप उपाए। पंज तत्तां विच समाए। मच्छ कच्छ रूप हो जाए। आपणी बणत आप बणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जामा विच मात दे पाए। जोत सरूपी जामा पाया। आवण जावण खेल रचाया। पतित पावन आप अख्वाया। होए मेहरवान दया कमाए। हँसा हँस भगवान आप अख्वाए। रूप धार बावन दर मंगण आए, कोई ना पावे सारा। आवे जावे वारो वारा। क्या कोई जन करे विचारा। क्या कोई जाणे जन प्रभ सारा। क्या कोई जाणे प्रभ दरस अपारा। क्या कोई बन्दा दाअवा करे करावे जीव प्रभ पाए सारा। प्रभ साचे का सच वरतारा। चले चलावे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा करे आप वरतारा। आप वरतावे जोत जगाए। नाम रखाए जीव जन्त तराए। देव दंत मिटाए। साध सन्त सुहाए आप बणत बणाए। जोत सरूपी जोत प्रभ, जुगो जुग विच मात दे आए। आए जाए खेल रचाए। जन भगत उपाए सेवा लाए। कर्म करवाए माण दवाए। साची दरगाह पाई थाएँ। जोत सरूपी जोत प्रगटाए। आप आपणा मेल मिलाए। आप मिलाया आप तराया, आप उपाया नाउँ रखाया, भउ वखाया खउ चुकाया घाउ लगाया, सोहँ रिदे वसाया, जोत सरूपी जोत प्रभ जुगो जुग विच मात दे आया। साचा आए जोत जगाए, हँसा अख्वाए सरबंसा बण जाए, जोत सरूपी जोत प्रभ आप आपणा रिहा प्रगटाए। जोत प्रगटाया प्रभ उपाया तराया अख्वाया गंवाया माण, रावण आण चुकाए कान, सुंञ मसाण राम राम राम अख्वाया। राम अख्वाए भगत तराए त्रेता सुहाए। वड

वड देवी देव अख्वाए। निताणयां सिर हत्थ टिकाए। निमाणया गले लगाए। जाए भीलनी बेर खाए। चरन कँवल उप्पर धवल विच जल दे पाए। पूरन प्रभ सरन सर्ब लगाए। आप आपणी दया कमाए। अग्गे चरन फिर उठाए। नदी किनारे डेरा लाए। सतो सती प्रभ आप तराए। बैठी अहल्या चरन छुहाए। किरपा कर पार कराए। जोत सरूपी जोत धर, विच बबाण लए बिठाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल विच जोती मेल मिलाए। सती अहल्या डेरा लाए। सती अहल्या आपे तारे। किरपा करे आप गिरधारे। चल के आए गंगा किनारे। रक्खे चरन प्रभ मुरारे। एका जोत होए अकारे। देवे वड्याई विच संसारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर पार उतारे। माण दवाए वक्त सुहाए जगत रखाए। जुगो जुग जोत सरूप जामा विच मात दे पाए। जामा पाया जुग उलटाया। आप उपाया नाउँ धराया। कृष्न अख्वाया रूप वटाया। साँवल सुंदर सिर मुकट टिकाया। कवन नैण आप अख्वाया। गुरसिख वेखे नैण जिस दया कमाया। वहन्दे वहिण जगत वहाया। जोत सरूपी जोत प्रभ जुगो जुग विच मात दे आया। साचा प्रभ जोत प्रगटाए। गुरमुख साचे गले लगाए। मानस जन्म लेखे लाए। जोत सरूपी जोत प्रभ जुगो जुग विच मात दे आए। जन भगत पैज रखाए। जामा धारया सुदामा अधारया बिदर निवारया। दर्योधन हंकारया करे ख्वारया। प्रभ पांडो पैज संवारया। रक्खे लाज द्रोपत सुत विच सभा आप मुरारया। जोत सरूप जुगो जुग जामा विच मात दे धारया। जामा धारे खेल रचाए। बणत बणाए सप्त रिख आप उपाए। संग परासर आप रलाए। उप्पर नदी चल के आए। उप्पर तट चरन टिकाए। एका नौका पार कराए। झीवर सपुत्री कर्म कमाए। साचा किया सच फल पाए। जुगो जुग जोत सरूप जामा विच मात दे पाए। परासर आया वेख ख्याल। करे प्यार अञ्याण। कन्या बाल देवे वर सति समान। कुंवारी जन्मे एका बाल। किया विहार आप कमाल। कोई ना जाणे जगत ख्याल। जोत सरूपी जोत धर आप चलाए आपणी चाल। बाल कन्या करे विचारा। होए पूत जगत ख्वारा। कोई ना देवे मैं सहारा। परासर रिख चरन निमस्कारा। किरपा कर आप गिरधारा। मुख वाक किया विचारा। कुंआर कन्यां दुःख लग्गा भारा। मेट मिटाए चरन कर निमस्कारा। जोत सरूपी जोत प्रभ करे खेल अपर अपारा। रिख परासर आख सुणाए। आपणी दया आप कमाए। कुंआर कन्यां जोत जगाए। बालक जन्मे कोई वेख ना पाए। आपे जाए आपे आए। मात पूत आप अख्वाए। जीव जन्त कोई भेख ना पाए। ब्यास रूप होए रघुराए। वेले अन्त तेरा होए सहाए। वेद विदांत वखाण प्रभ विच मात चलाए। जोत सरूपी जोत प्रभ जामा विच मात दे पाए। आपणा खेल आप प्रभ करया। जोत सरूपी जामा धरया। विच भरवास रक्ख वास, साचा कर्म आप प्रभ करया। जोत सरूपी जोत प्रभ ना कदे जाए ना कदे मरया। जोत निरँकारे

भगत अधारे वारो वारे। जामा मातलोक विच धारे। जामा धार भगत उधारे विच संसारे प्रभ गिरधारे, जोत सरूपी जोत प्रभ सर्ब जीआं दी पावे सारे। धू तारे प्रभ गिरधारे। प्रहलाद तराया हरनाक्ष नष्ट कराया। बावन रूप बणाया बल दर मंगण आया। दुरबाशा माण गंवाया। चक्र सुदर्शन बाण लगाया। जनक माण दवाया। कुण्ड अठारां आण तराया। तारा राणी लाज रखाया। साध संगत इक्क मन ध्याया। घर बिदर भोग लगाया। अलूणा साग आप प्रभ खाया। भगत सुदामा द्वार प्रभ आया। छड्ड सिँघासण हरि जी चरनी सीस निवाया। द्रोपती प्रभ आप तराया। कोटन कोट चीर पहनाया। नामदेव सिर हत्थ टिकाया। प्रगट जोत दरस दिखाया। होए परतक्ख भोग लगाया। जै दिओ जगत वड्आया। प्रगट होए विच ललाट लेख लिखाया। चम्यार रविदास आप तराया। इक्क कसीरा लहणे पाया। भगत कबीर टुम्ब उठाया। एका नाम राम तराया। सैण नाई आप तराया। सैण रूप होए घर राणे दे आपे आया। सदने प्रभ दया कमाया। अन्तकाल होए सहाया। गुरमुख बेणी आप तराया। सिर निमाणे हत्थ टिकाया। जोत सरूपी जोत प्रभ, जुगो जुग जामा विच मात दे पाया। मातलोक प्रभ जामा पाए। गनका पापण आण तराए। सन्त जनां प्रभ दे वड्याए। आप त्रलोचन नाम दवाए। पापण पूतना मोहण मुम्मे पाए। साचा प्रभ अन्तिम अन्त आप कराए। प्रभ साचे दी साची कार, जुगो जुग विच मात लए अवतारे। साचे प्रभ दया कमाई। धन्ने जट्ट दित्ती वड्याई। पूरन सार तरलोचण पाई। साची भगती प्रभ मिलाई। साचा प्रभ होए आप सहाई। देवे नाम दान दर भिच्छया पाई। विष्नूं भगवान एह दया कमाई। जोत सरूपी जोत प्रभ जुगो जुग विच मात दे आई। पतित पापी चरन लगाए। जिउँ अजामल बैकुण्ठ सिद्धाए। साचा प्रभ आप आपणी सेवा लाए। जोत सरूपी जोत धर जुगो जुग विच मात दे आए। आवण जावण खेल रचाया। पतित पावन आप अख्वाया। बधक बाण चरन लगाया। होए मेहरवान गले लगाया। कृष्न भगवान पार कराया। आपणा किया आपणा दिया आपणा हिया लेख चुकाया। जोत सरूपी जोत प्रभ जुगो जुग जामा विच मात दे पाया। जामा पाए कृष्न मुरार। पांडो बांहो पकड़ जाए तार। हँकारीआं जाए हँकार निवार। जन भगतां देवे शब्द अधार। साचा शब्द प्रभ दए अपार। अर्जन आत्म दए सुधार। करे करावे आप विचार। हउमे विच्चों दित्ती मार। एका बख्शया चरन प्यार। जोत सरूपी जोत प्रभ, जन भगतां पावे सार। आपणा खेल आप कराया। द्वापर जुग अन्त कराया। साची बणत आप बणाया। होए रथवन्त महांसार्थी आप अख्वाया। जोत सरूपी प्रगट जोत, जुगो जुग विच मात दे आया। द्वापर जुग अन्त कराए। कौरो पांडो आप खपाए। आपणा आप नाउँ रखाए। गीता ज्ञान आप उपजाए। कृष्न घनईआ नाम जपाए। भगत भगवान मेल मिलाए। अन्तिम अन्त सर्ब कराए। जादव खेल आप मिटाए। आप आपणे

खेल रचाए। जोत सरूपी जोत प्रभ अन्त मिल्या जोत विच जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माया रूपी पर्दा लाहे। द्वापर अन्त आप कराया। कलिजुग नाम जगत धराया। वेद अथर्बण तख्त बहाया। अल्ला अल्लाहू नूर उपाया। ईसा मूसा प्रभ जोत जगाया। नाम ख़ुदाई आप अख्वाया। नाम दुहाई मात कराया। गऊ बधाए कर्म कमाए होए तबाहे अन्त लेख लिखाया। देवे गवाही सर्ब लोकाया। मुख ते शाही, प्रभ सर्ब भुलाया। अन्तकाल कलिजुग कोई दीसे नाही, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धराया जामा पाया। ईसा मूसा होए कृस्ती। आप भुलाए सर्ब सृष्टी। नई चलाए जगत इष्टी। आत्म सभ दी गई भृष्टी। रक्खण मुख मदिरा मास विष्टी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्तकाल कलिजुग सभ कराए नष्टी। जोत सरूप प्रभ गिरधार। उप्पर गरुड़ होए सवार। गरुड़ जाए प्रभ चरन द्वार। रोए मात एका संग बड़ा प्यार। दूजा होए सदा ख्वार। आपणा आप ना सके उचार। बणत बणाए करे विचार। बत्ती धार दिया दुध्ध धार। किरपा कर देवे तार। बचन मेरा ना जाए हार। आप आपणी करे विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत प्रभ एका जोत जुगो जुग वरतार। भेख वटाया आप प्रभ, आप आपणा धरया ना। भेख वटाए आप प्रभ, बेमुख पछाड़े पकड़ बांह। भेख वटाए आप प्रभ, माण गंवाए रंक राजान। भेख मिटाए आप प्रभ, एका नाम करे प्रधान।
१०८ ०२ भेख मिटाए आप प्रभ, भरम भुलेखे जीव भुलाण। भेख मिटाए आप प्रभ, जूठ झूठ नष्ट हो जाण। भरम भुलाए आप प्रभ, १०८ ०२
कलिजुग जीव होए निधान। भेख मिटाए आप प्रभ, सतिजुग लाया आण। भेख मिटाए आप प्रभ, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान। भेख मिटाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। भेख मिटाया आप प्रभ, आपणी कल वरताए। भेख मिटाए आप प्रभ, बेमुखां दे सजाए। भेख मिटाए आप प्रभ, गेरूदार चीर पहनाए। भेख मिटाए आप प्रभ, शेख़ मुसायक जो रहे अख्वाए। भेख मिटाए आप प्रभ, चेटक नाटक कोई रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा नाम जगत धराए। भेख मिटाए आप प्रभ, जगत नाउँ धर। भेख मिटाए आप प्रभ, गुरमुख साचे इक्क कर। भेख मिटाए जगत प्रभ, एका जपाए नाम हरि। भेख मिटाए आप प्रभ, सन्त होए ना मंगे दर। भेख मिटाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग देवे साचा वर। भेख मिटाए आप प्रभ, एका मार्ग ला। भेख मिटाए आप प्रभ, एका राग उपजा। भेख मिटाए आप प्रभ, सोहँ जाग लगा। भेख मिटाए आप प्रभ, ओअँ दरस दिखा। भेख मिटाए आप प्रभ, दोइंग इक्क जणा। भेख मिटाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम जगत चला। भेख मिटाए आप प्रभ, कूड़ कुड़यारे। भेख मिटाए आप प्रभ, जो वरते विच संसारे। भेख मिटाए आप प्रभ, कोई ना दिसे जगत जुआरी। भेख मिटाए आप प्रभ,

गंगा मिले ना कोई नर नारी। भेख मिटाए आप प्रभ, गुरसिख गुरमुख ना करन झक्ख मारी। भेख मिटाए आप प्रभ, सर्ब जीआं करे आपे कारी। भेख मिटाए आप प्रभ, सतिजुग देवे सच्ची सिक्दारी। भेख मिटाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा निमस्कारी। भेख मिटाए आप प्रभ, देवे ब्रह्म ज्ञाना। भेख मिटाए आप प्रभ, एका देवे चरन ध्याना। भेख मिटाए आप प्रभ, सोहँ पहनाए साचा बाणा। भेख मिटाए आप प्रभ, जगत पखण्ड नष्ट कराणा। भेख मिटाए आप प्रभ, रंड सुहागण इक्क रंग माणा। भेख मिटाए आप प्रभ, रोग सोग प्रभ जगत मिटाणा। भेख मिटाए आप प्रभ, साचा डंग बेमुखां लगाणा। भेख मिटाए आप प्रभ, सर्ब वरभण्ड इक्क मार्ग लाणा। भेख मिटाए आप प्रभ, नवखण्ड प्रभ परे कराणा। भेख मिटाए आप प्रभ, चण्ड प्रचण्ड कोई रहण ना पाणा। भेख मिटाए आप प्रभ, एका जोत वरभण्ड जगाणा। भेख मिटाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा नाम चलाणा। भेख मिटाए आप प्रभ, आत्म देवे सोहँ दाती। भेख मिटाए आप प्रभ, एका जोत जगाए आत्म बाती। भेख मिटाए आप प्रभ, देवे दरस गुरमुख सुत्तयां राती। भेख मिटाए आप प्रभ, सोहँ देवे दान वडा वड दाती। भेख मिटाए आप प्रभ, सच्चो सच वरते विच माती। भेख मिटाए आप प्रभ, चार वरन सतिजुग बणाए भैण भ्राती। भेख मिटाए आप प्रभ, ऊँच नीच प्रभ नष्ट कराती। भेख मिटाए आप प्रभ, अमृत देवे बूंद स्वांती। भेख मिटाए आप प्रभ, बैठा अडोल रहे इकांती। भेख मिटाए आप प्रभ, गुरमुख साचे प्रभ साचे बणत बणाती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दिखाए भांतन भांती। भेख मिटाए वेख वखाए देख जगाए मेख हिलाए रेख मिटाए गुरमुख तराए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका साचे मार्ग लाए। मार्ग लाया भरम चुकाया। कर्म कराया धर्म धराया पार कराया अधार रखाया विकार गंवाया सोहँ जै जैकार कराया। निराधार विच समाया। एका हार जोत रखाया। विच संसार आप वड्आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे होए सहाया। होए सहाए लए तराए। सरन लगाए माण दवाए। सिर हत्थ टिकाए लेखे लाए। दरस दिखाए जोत प्रगटाए। लेखे लाए दर ते आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे अन्तकाल लए तराए। तारनहारा हरिभगत प्यारा। देवे मोख दुआरा। गुरसिख उतरे पारा। एका देवे शब्द अधारा। लक्ख चुरासी गेड़ निवारा। एका जोत किया कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पार उतारनहारा। पार उतारया जन्म मरन संवारया। भुलेखा भरम निवारया। जन आए गुर दरबारया। मानस जन्म कलि संवारया। प्रभ साचे कर निमस्कारया। दु:ख रोग सर्ब गवा ल्या। आत्म चिन्ता सोग सर्ब मिटा ल्या। प्रभ आत्म साचा भोग, कर दरस गुरमुख लगा ल्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे लेखे ला ल्या। रसना गावणा

रोग मिटावणा जोग कमावणा। दरस अमोघ प्रभ दिखावणा। हउमे रोग विच्चों चुकावणा। प्रगट जोत गुरमुख साचे भोग लगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान धीर धराए, साचा वक्त आप सुहावणा। लेखे लाए आप तराए चढ़ाए साची नाए। बहाए साची थांए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे लए तराए। वक्त सुहाए जोत प्रगटाए भगत तराए दरस दिखाए धीर धराए अमृत सीर पिलाए। कलिजुग साचे बीर बणाए। वड पीरन पीर आप अख्वाए। हीरन हीर गुरसिख बणाए। चीरन चीर सर्ब लुहाए। वहीरन वहीर जगत कराए। अखीरन अखीर अन्तकाल कराए। नेड़न नेड़ बेमुखां हत्थ ना आए। वड धीरन धीर गुरमुखां धीर धराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरन लगाए। सरन लगा गुरसिख जगा दरस दिखा हरस मिटा तरस कमा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बेड़ा बन्ने ला। बेड़ा बंधे होए सहाई जिउँ मूर्ख धन्ने सति कर मन्ने। भोग लगाए खाली छन्ने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत जनां सद सद सद मन्ने। भगतन माण भगतन ताण भगतन जाण भगत पछाण वड वड वड मेहरवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। विष्नूं भगवाना वड मेहरवाना। वड मेहरवान गुरसिख तराणा। दुःख रोग मिटाणा। आत्म जोत जगाणा। अनहद धुन उपजाणा। आत्म सुन्न खुल्ाणा। कलिजुग चुण चुण चुण पछाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सोहँ दिया साचा दाना। देवे रखाए माणा। तोड़े अभिमाना जोड़े ध्याना। वाली दो जहानां गुण निधाना। सर्ब थाांएँ सुहाना। जोत सरूपी पहरया बाणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वाली दो जहानां। हरि गाओ जन्म सुहेला। हरि गाओ प्रभ साचे का साचा मेला। हरि गाओ मेल मिलाए रंग नवेला। हरि गाओ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पाओ सज्जण सुहेला। हरि गाओ घर साचा पाओ। हरि पाओ दर दरबार प्रभ के भाओ। हरि गाओ नर अवतार जोत मिल जाओ। हरि गाओ निज घर वासी घर में पाओ। हरि पाओ मिटे अभिमाना। हरि गाओ दरस भगवाना। हरि गाओ साचा शब्द उपजाए काना। हरि गाओ देवे दरस जोत सरूपी पहरया बाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग समाणा। हरि गाया हरि हरि हरि निज घर में पाया। हरि गाया आत्म दर आप खुल्ाया। हरि गाया साचे घर प्रभ सच वसाया। हरि गाया हिरदे वाचे, गुरमुख गुर पूरा पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान होए सहाया। हरि हरि हरि गुण गाओ। दर दर दर प्रभ आत्म धुन उपजाओ। कर कर कर दरस, गुर आत्म तृखा मिटाओ। सर सर सर अमृतसर, गुर चरन धूढ़ सद गुर बणाओ। वर वर वर गुर दर गुरमुख साचे सद पाओ। तर तर तर गुर चरन लाग तर, दोए जोड़ सीस झुकाओ। ठर ठर ठर कर दरस गुर ठर आत्म तृप्त कराओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खुल्ा भण्डार गुरमुख साचे झोली भर घर लै जाओ। साचा खोल्े नाम भण्डारा।

आपे बणे भगत वरतारा। आपे भन्ने रणे जो करे हँकारा। सुफल कराया सीर मात दो थणे जो जन करन निमस्कारा । धन्न धन्न धन्न मात गुरमुख साचे जाणे, चल आयण प्रभ चरन दुआरा। कदे ना होवे अन्धेरी रात, खोल्ह देवे प्रभ दस्म दुआरा। गुरमुख साचे दर मार झात, प्रगटे जोत निहकलंक अवतारा। बिन गुर पूरे कोई ना पुच्छे वात, अन्तकाल होयण सर्ब आरा। आप बणे पित मात, गुरमुख देवे गोद हुलारा। होए सहाई आप बहु भांत, जन भगतां होए आप सहारा। बैठा रहे विच इकांत, जोत सरूप विच देह मुनारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अन्त ना पारावारा। अन्त ना जाणे कवण पछाणे। प्रभ भगवाने गुण निधाने। चतुर सुजान मात जोत प्रगटाणे। सृष्ट सबाई आप भुलाणे। अन्त भुन्नाए जिउँ भठयाले दाणे। मदिरा मासीआं गई खाने। भगत जनां प्रभ आपे जाणे। आप चलाए आपणे भाणे। जो जन होए गुर दर निमाणे। आत्म रक्खे हँकार महाने। तख्तों लाहे राजे राणे। अन्तकाल विच खाक मिलाणे। घर घर फिरन मंगण दाणे। प्रभ साचा ना कोई पछाणे। एका देखे वेख वखाणे। लेखा लिखे लेख लिखाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाने। सच भगवान झूठा जहान। वड बली बलवान जीव जन्त सर्ब निधान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका जोत जगाए वाली दो जहान। आपणे गुण आप वखाणे। आपणे रंग प्रभ आप समाणे। आपणे संग प्रभ आप निभाणे। गुरमुख रंग प्रभ हिरदे

१११ माणे। बेमुख जीव काची वंग प्रभ भन्न वखाणे। एका रंगाए आपणे रंग, दर निमाणयां देवे माणे। वड दाता सूरा सरबंग, १११

०२ कलिजुग जोत धरे महाने। मानस जन्म ना होए भंग, गुरमुख साचे दर परवाने। कलिजुग पार जायण लँघ, सोहँ चप्पू ०२

वंञ महाणे। पवण जोत लगाए खम्ब, गुरमुख साचा गुर शब्द उडाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाणे। सच तुरंग आप चढ़ाया। सच रंग आप लगाया। साचा दान मंग गुरमुख साचे दर ते पाया। दर घर साचा मूल ना संग, प्रभ देवे माण सवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया। जामा धार करे पार काज संवार। रक्खे लाज आप मुरार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे नाम अधार। भगत सहारा जगत दुआरा । कोई पावे गुरमुख विरला प्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सोहँ खोल्हे सच भण्डारा। भगत भण्डारे सच वरतारे, प्रभ गिरधारे गुरमुख विरला पावे सारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग कोई विचारे। गुरसिख विचारे पावे सारे उतरे पारे, किरपा धारे आप गिरधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान निहकलंक नर अवतारे। आप तराए चरन लगाए। दर ल्याए माण दवाए। ताण रखाए काण चुकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धराए। नाउँ रखाया जोत प्रगटाया। बेमुख कलिजुग जीव गूढ़ी नींद सवाया। जोत सरूपी जोत प्रभ, बेमुखां दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान

गुरमुख साचे विच समाया। सदा सदा सद विच समाए। निज घर वासी निज घर वास रखाए। जन भगतां करे बन्द खलासी बन्दी तोड़ आप बण जाए। हउमे रोग होए विनासी, चरन प्रीती तोड़ निभाए। मानस जन्म कलि रहिरासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख नीती जोड़ जुड़ाए। जुड़या जोड़ निभे तोड़। बेमुख रोढ़ देवे बोड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां चलाए देही कोढ़। बेमुख खपाए दुःख पुचाए सुख गंवाए भुक्ख वरताए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात गर्भ उलटे रुक्ख लगाए। भगत तराए सरन लगाए हरन फरन खुल्हाए वरन बरन मिटाए। एका साचा नाम दवाए। सोहँ साचा जाम पिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे विच वास आप रखाए। वास देव निरँजण दाता, सर्ब जीआ का आपे ज्ञाता। मुकंद मनोहर भगत जनां साचा साक सज्जण सैण मोहण माधव कृष्न मुरारी जन भगतां जाए पैज संवारी। जोत सरूप रंग रूप ना रेख, कलिजुग जामा पाया अछल कराया भेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे दर आए नेत्र पेख। नेत्र पेख्या जाए भुलेख्या, प्रभ साचा जिस जन जोत सरूपी वेख्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लिखाए साचे लेख्या। लेख लिखाए दया कमाए, वेख वेख वेख गुरसिख जगाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द विशेष जपाए। नाम जपाए आप प्रभ आपणा। नाम जपाए आप प्रभ, सोहँ देवे साचा जप जपणा। नाम
११२ जपाए आप प्रभ, कोट उतारे पाप पपणा। नाम जपाए आप प्रभ, आत्म देवे साची मति मतिना। नाम जपाए आप प्रभ, साचा ११२
०२ शब्द देवे यति जतना। धीर धराए, सोहँ शब्द सच बीज बिजाए वत वतना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सीर ०२
पिलाए सति सतना। सति सति सति अमृत देवे। प्रभ अबिनाशी अलख अभेवे। देवे अमृत जीआ दाता। आप बणे पुरख बिधाता। बेमुखां दिसाए अन्तकाल अन्धेरी राता। गुरमुख साचे जोत जगाए, आत्म वेख मार झाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दया कमाए, ब्रह्म ब्रह्म का ज्ञाता। ब्रह्म सरूप ब्रह्म समाए। रंग अनूप आप बणाए। वड वड रूप आप अखवाए। विच अन्धकूप होए सहाए। बिन रंग रूप सद विच समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप कलिजुग जीआं दिस ना आए। साचा प्रभ कलि ना दीसे। गुरमुख विरले प्रभ चरन झुकावण सीसे। बेमुख कलिजुग जीव अन्तकाल कलि पीसे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव चुकाए बीस इकीसे। भेव चुकाउणा भेव खुल्हाउणा सेव लगाउणा, गुरमुख साचे प्रगट जोत आपणा दरस दिखाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस गुरमुख साचे गाउणा। साचा प्रभ गुरसिख तराए। साचा प्रभ दुःख रोग मिटाए। साचा प्रभ सुख भोग उपजाए। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म संसा रोग मिटाए। मिटया रोग विनासी चिन्ता। चुक्या सोग गया संसा। कोटन कोट कोट विच उपाए गुरसिख हँसा।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बणाए साची अंसा। अंस हँस आप बणाए। विच संसा आप उपजाए। साचा बंस जगत जलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। किरपा करे भगत उधारे। किरपा करे जन्म मरन संवारे। किरपा करे देवे प्यार चरन दुआरे। किरपा करे भगत वछल आप गिरधारे। किरपा करे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्ची सरकारे। किरपा करे मेल मिलाए। किरपा करे कलि खेल कराए। किरपा करे गुरसिख तराए। किरपा करे नाम भिक्ख दवाए। किरपा करे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ रसना जै जै जैकार कराए। आप कराए जै जैकारा। वरन बरन सद रहे बाहरा। तारन तरन जीव जन्त उधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी देवे दरस गुरमुख दुआरा।

* १८ जेठ २००६ बिक्रमी लछमण सिँघ दे गृह दिल्ली *

गुर पूरा कर्म विचारदा। कर किरपा पार उतारदा। जन्म मरन दा काज संवारदा। जो जन आए चरन निमस्कारदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग साचे करतार दा। एका रंग सच्चे करतारा। एका रंग जोत निरँकारा। एका वरते वरतावे विच संसारा। एका आप एका जाप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप करे वरतारा। आप आपणा आप उपाए। आप आपणी जोत जगाए। गुरमुख साचे प्रभ सोग मिटाए। दरस अमोघ आप दिखाए। हउमे रोग देही गंवाए। एका जोत माण दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखाए। जोत सरूपी दरस दिखाया। आप आपणा कर्म कमाया। गुरमुख साचा सच सेवा लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड देवी देवा आप अख्वाया। वड वड देवी देव। करोड़ तेतीस लगाए सेव। गुरमुख साचे आप मेल मिलाए पाए भेव। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए जोत जगाए गुरमुख साचे आप तराए, किरपा करे सुख देव। किरपा करे करतार। गुरसिख साचे जाए तार। एका देवे शब्द अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा बिरद संभार। आपणा बिरद आप संभारया। कलिजुग अन्तिम अन्त करा रिहा। महिंमा अगणत जन विरला भेव प्रभ पा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आपणी सेव लगा रिहा। गुर सूरा गुर दर परवान। गुर सूरा गुरसिख होए चतुर सुजान। गुर पूरा गुणी गुण निधान। गुर पूरा आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाए आप महान। आपणी बूझ बुझाए आप। आपणी

११३
०२

सूझ रखाए आप। गुरमुख साचे तेरे विच समाए आप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोटन कोट उतारे पाप। कोटन कोट पाप उतारे। एका जोत करे अकारे। पवण उनन्जा छत्र झुलारे। गुरमुख साचे तीन लोक तेरे नाम जै जै जैकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात तेरे काज संवारे। आप संवारे गुरसिख काज। सोहँ देवे साचा ताज। गुरमुख साचे प्रभ रखाए तेरी लाज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाए विच माझ। आपणी जोत आप जगाए। जुगो जुग सच कर्म कमाए। जगत अज्ञान आप मिटाए। एका धाम गुर चरन टिकाए। चतुर सुजान गुरसिख बणाए। मूर्ख मुग्ध अञ्याण प्रभ आण तराए। साची दरगाह देवे माण जो जन सरनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि मेल मिलाए। गुर साचा आप जगावणा। बांहों पकड़ चरन लगावणा। सोहँ साचा ज्ञान दवावणा। एका माण मात रखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत धर निहकलंक कलि नाउँ रखावणा। निहकलंक कलि प्रभ आए। जोत सरूपी जामा पाए। बेमुखां प्रभ लए भुलाए । गुरसिखां प्रभ दरस दिखाए । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्तकाल गुरमुख साचे मेल मिलाए। कलिजुग अन्तिम होए अखीर। सोहँ देवे प्रभ साचा धीर। चार कुन्ट पै जाए वहीर। थल जल जलों थल कराए नीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आत्म देवे धीर। गुरमुख साचे धीर धराए। अमृत साचा सीर पिलाए। वेला अन्त अखीर कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां कलि चीर लुहाए। आपणे रंग आप रंगाणयां। होए सहाई जगत निमाणयां। तख्तों लाहे राजे राणयां। दर दर भवाए सेठ सिठाणयां। माण गंवाए वेद पुराणयां। आप खपाए खाणी बाणीआं। दिस ना आए अञ्जील कुरान्यां। हरस मिटाए गुरमुख साचे प्रभ दरस दिखाणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप विष्नूं भगवानयां। अन्तकाल अन्त हो जाणा। प्रभ साचे का साचा भाणा। गुरमुख साचे सच कर जाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्तकाल कलि आप कराणा। अन्तिम कलिजुग आप कराए। बेमुख प्रभ जगत खपाए। गुरसिख प्रभ आप तराए। वड वड मुन रिख प्रभ शब्द जगाए। आत्म तृख प्रभ गुरसिख मिटाए। बेमुख प्रभ जगत खपाए। गुरसिख प्रभ आप तराए। एका भिक्ख सोहँ नाम प्रभ झोली पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्तकाल कलि आप कराए। कलिजुग अन्तिम होए अन्ता। जोत जगाए प्रभ भगवन्ता। दरस दिखाए होए सहाए गुरमुख साचे सन्ता। कलिजुग माया पाए बेअन्ता। आए वक्त जोत जगाए प्रभ भगवन्ता। दरस दिखाए गुरमुख साचे सन्ता। जीव जन्त भुलाए, ना दिसे साचा कन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई ना जाणे एका जोत आदिन अन्ता। आदिन अन्त आप प्रभ होए। साधन सन्त प्रभ दीने लोए। बैठ अचुत वेखे सभ सोए। बणाए बणत ना जाणे कोए। महाराज शेर

११४
०२

सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल मात प्रगट होए मातलोक प्रभ जोत जगाए। आप आपणा भेद खुलाए। पार ब्यासों चरन टिकाए। शब्द अकासों एक चलाए। सोहँ सुवासों सुन्न खुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। पार ब्यासों आए चल। सृष्ट सबाई जाए हल्ल। थलों जल जलों कराए थल। जोत सरूपी जोत प्रगटाए ना लाए घड़ी पल। आपणा भाणा जगत वरताए ना देखे अज्ज कल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा दर बैठे मल्ल। चरन ब्यासों पार धर। सृष्ट सबाई ख्वार कर। एका जोत अकार कर। गुर संगत प्यार कर। निहकलंक अवतार नर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणे आवे साचे सर। साचा सर जगत बणाए। अवतार नर दया कमाए। एका घर चार वरन रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत प्रगटाए। मस्तूआणा मोख द्वारी। धरे जोत निहकलंक नरायण नर अवतारी। चार वरन होए पनिहारी। साध संगत प्रभ पार उतारी। दुखियां दु:ख भुक्खयां भुक्ख प्रभ सर्ब उतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वडा आप वड संसारी। वडा प्रभ आप संसारा। जीव जन्त प्रभ जोत अधारा। साध सन्त पार उतारा। आदि अन्त एका अकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी करे जोत अकारा। मस्तूआणे जोत जगाए। आपणा आप कलि प्रगटाए। राणा संगरूर पकड़ उठाए। जोत सरूपी दरस दिखाए। आपणे चरन आप लगाए। साचा माण जगत दवाए। एका अकार विच देह कराए। जोत अधार प्रभ रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। आप आपणी दया कमाए। दया कमाए सरन लगाए। सरन लगाए माण दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धराए। निहकलंक कलि नाउँ धराए। साचा शब्द आप उपजाए। अग्न मींह आप बरसाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई भस्म कराए। एका जोत अग्न लगाए। सृष्ट सबाई चार कुन्ट बिल्लाए। जीव जन्त प्रभ खपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त होए सहाए। साचे सन्तां पावे सार। एका देवे नाम अधार। बेमुखां प्रभ करे ख्वार। मानस जन्म अन्त कलि गए हार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साचा करे चरन प्यार। चरन द्वार गुर का घर। नर नरायण आए अवतार नर। कर दरस गुरमुख तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणा बणावे साचा सर। साचा सर सदा भरपूर। जोत सरूपी प्रभ दिया नूर। आसा मनसा सर्ब भरपूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द जणाए उपजाए सुणाए गुरमुख साचे साचा तूर। साचा प्रभ शब्द भण्डारा। गुरमुख साचा पाए सारा। मंगण आए चल दुआरा। देवे नाम प्रभ अधारा। एका बणे आप वरतारा। सृष्ट सबाई ना पावे सारा। निहकलंक कलि ल्या अवतारा। जोत सरूपी प्रभ खेल न्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

गुरमुख साचे एका बख्शे चरन प्यारा। गुरमुखां देवे चरन प्यार। प्रभ साचे दी साची कार। गुरमुख साचा प्रभ साचे दी पावे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुतर जाए तार। मस्तूआणे माण दवा के। राणा संगरूर संग रला के। आपणा चरन प्रभ आप उठा के। साध संगत सिर हत्थ टिका के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए सो जगाए जमन किनारे डेरा ला के। जमन किनारे चरन टिकावणा। साचा कर्म प्रभ आप कमावणा । वेला अन्त कलि आप करावणा। गुरमुख साचे सन्त शब्द शब्द रूप आप जगावणा। प्रगट जोत आप भगवन्त, कलिजुग जीआं भरम चुकावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप प्रगट जोत जमन किनारे चरन टिकावणा। जमन किनारे चरन टिकाए। लिख्त भविख्त सति वरताए। सन्त मनी सिँघ गया लिखाए। वड वड धनी धन्न दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जमन किनारे भाग लगाए। जमन किनारा साचा धामा। जोत जगाए रमईआ रामा। आप प्रगटाए घनईआ शामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पहरया बाणा। जोत जगाए साचे घर। आप दिसाए वखाए प्रगटाए अवतार नर। चार वरन चल आयण दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सति जाए कर। किनारे जमन जोत प्रगटा के। साचा कर्म प्रभ कमा के। एका वरन जगत बणा के। एका धर्म मात रखा के। एका भरम सर्ब मिटा के। एका वरन आपणा आप उपा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सच सच सच दरबार लगा के। साचा प्रभ सच दरबारा। सति सति सति कराए सति वरतारा। एका जोत जगाए एका एकँकारा। एका दर दिसाए चर कुन्ट सर्ब संसारा। एका घर वसाए साध संगत सोहे गुर चरन दुआरा। एका नाम जपाए सोहँ कराए जै जै जैकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पाए सभ दी सारा। साचे गुरमुख सन्त। प्रभ जगाए वड वड सन्त। पकड़ उठाए बैठ इकन्त। जो रहे गाए माया पाए बेअन्त। कलिजुग जीव भुलाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल वरतंत। जमन किनारा धाम न्यारा। जोत जगाए अगम्म अपारा। चरन टिकाए कृष्न मुरारा। पकड़ उठाए नैण मुँधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अन्त ना पारावारा। अन्तन अन्त प्रभ बेअन्त। कन्तन कन्त गुरमुख साचे प्रभ मिल्या साचा कन्त। जन्तन जन्त प्रभ वड्याए साधन सन्त। बणतण बणत बणाए गुरसिख तेरी साची बणत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए टिकाए रखाए दिसाए साचे साधन सन्त। सन्त जनां प्रभ आप उठावणा। सन्त जनां प्रभ भरम चुकावणा। सन्त जनां प्रभ सरन लगावणा। सन्त जनां प्रभ पूरन घाल करावणा। सन्त जनां सोहँ सच्चा धन माल झोली पावणा। सन्त जनां एका आत्म लाल रखावणा। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस सद रसना गावणा। सन्त जनां देवे वड्याई। सन्त

जनां प्रभ होए सहाई। सन्त जनां मन वज्जे वधाई। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत जमन किनारे होए सहाई। जमन किनारे आप प्रभ आए। सोहँ साचा जाप जपाए। कोटन कोट प्रभ पाप गंवाए। सर्ब सृष्ट माई बाप आप अख्वाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए। जमन किनारे जोत जगईआ। भगत उधारे सोहँ चलावे साची नईआ। वड संसारे चार वरन कराए एका भैणां भईआ। प्रभ गिरधारे सोहँ साचा नाम दवईआ। कर्म विचारे एका मार्ग जगत रखईआ। जोत अधारे ऊँच नीच प्रभ भेख मिटईआ। आप निरँकारे सतिजुग साचा राह दिसईआ। वड सिक्दारे प्रभ आपणे हत्थ रखईआ। सृष्ट पनिहारे राउ उमराउ प्रभ माण गवईआ। जोत अधारे आपणा कर्म धर्म वरम जगत वरतईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत प्रगटईआ। जोत सरूप प्रगटाए जोत। वरन चार कराए एका गोत। गुरमुख जगाए बेमुख कलि रहे सोत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दुरमति मैल तेरी जाए धोत। गुरमुख साचा गुर दर आए। साचा माण प्रभ आप रखाए। एका दान प्रभ झोली पाए। गुण निधान प्रभ दया कमाए। चतुर सुजान विच मात दे बणाए। ब्रह्म ज्ञान प्रभ बूझ बुझाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जोत जगाए। जोत प्रगटाए जमन किनार। सृष्ट सबाई आर पार। बेमुखां अन्तकाल कलिजुग आई हार। गुरमुखां दिसे निहकलंक तेरा सच दरबार। एका वज्जे सोहँ साचा डंक, चार कुन्ट होए धुन्कार। एका रखाए एक अंक, सोहँ शब्द जै जै जैकार। सुहाए थान बंक, प्रभ करे जोत अकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। नरायण नर अवतार कलि आए, पारब्रह्म खेल रचाए, कलिजुग जीव ना पावे सारा। आप सहाए भगत तराए, साध सन्त आप रखाए सच दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए जगत हिलाए गुरमुख उपजाए पूरन कर्म विचारा। पूरन कर्म प्रभ विचारे। गुरमुख साचे पार उतारे। देवे दरस प्रभ गिरधारे। मिटाए हरस आप करतारे। जन रहे तरस प्रभ आए चल दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि चरन लगाए टिकाए जमन किनारे। जमन किनारे प्रभ साचे आवणा। साचा समां आप सुहावणा। जोत सरूपी दीपक विच मात जगावणा। प्रभ साचा सर्ब समीपत, एका रंग वरतावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड वड वड हँकारीआं आप माण गंवावणा। आए प्रभ जमन किनार। जोत प्रगटाए प्रभ, जोत सरूप तोड़े सर्ब हँकार। साध सन्त अमृत झिरना झिराए नभ, एका जोत करे अकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी देवे दरस गुरसिख साचे तेरे दरबार। जमन किनारा साचा तट्ट। प्रभ अबिनाशी लाए साचा हट्ट। सोहँ साचा गुरमुख विरला जाए खट्ट। प्रभ अबिनाशी लाग भउ, होए सहाई वसे घट घट। अवर ना दीसे

११८ ०२

दूजा थाउँ, प्रभ जोत जगाए दरस दिखाए हरस मिटाए गुरमुख झट्ट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे माण जमन किनारे फट। गुरमुख साचे प्रभ साचा तारे। जोत जगाए प्रगटाए वसाए गुरमुख साचे अगम्म अपारे। बेमुख तड़फाए अग्न जोत लगाए, करन हाए हाए ना कोई पावे सारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलंकनिह नरायण नर अवतारे। नरायण नरायण नरायण नर। मातलोक आया जामा धर। चार वरन इक्क जाए कर। एका शब्द सोहँ विच मात जाए धर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान महिंमा जगत अपर। अपर अपार जावे तार। आवे द्वार, पावे सार, कर्म विचार, लेख लिखार, भगत उधार, आप करतार विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख्शे चरन प्यार। चरन नाता भगत पछाता। सोहँ देवे साची दाता। पारब्रह्म पुरख बिधाता। जन भगत प्रभ आप पछाता। गुणी गुण वड गुण दाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे देवे दरस सुत्तयां राता। गुरमुख सोया प्रभ साचा जागा। प्रभ उपजाए सुणाए अनहद साचा रागा। दरस दिखाए चरन लगाए आत्म धोए वड दाग़न दाग़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि जो जन तेरी सरन लागा। सरन लाग सिख साची पाए। सरन लाग आत्म अग्न गुरसिख बुझाए। सरन लाग दीपक जगण, प्रभ साचा जोत जगाए। सरन लाग होए मग्न, प्रभ एका भेव खुल्हाए। सरन लाग रंगे रंगण, रंग उत्तर ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा सगन गुरमुख तेरे मुख लगाए। सोहँ मुख प्रभ रखाया। आत्म सुख प्रभ उपजाया। उतरी भुक्ख रसना गाया। मिटया दुःख प्रभ दर्शन पाया। सुफल कुक्ख प्रभ सरन लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली दो जहान जोत सरूपी कलि जामा पाया। जोत सरूपी जामा धारे। आपणी जोत आप निरँकारे। भेद अभेद अभेव करतारे। देवी देव ना पायण सारे। गुरमुख साचे कर साची सेव, प्रभ आए चल दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए भाग लगाए दरस दिखाए जमन किनारे। जमन किनारा धाम सुहाए राम अवतार। जोत प्रगटाए कृष्न मुरार। दरस दिखाए कलंकनिह अवतार। नांउँ तरावे आप बुझावे आप जणावे गुरमुख साचा पावे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किनारा जमन मातलोक बणाए सचखण्ड द्वार सचखण्ड द्वार बणाए एका अकार। जोत प्रगटाए कराए जै जै जैकार। सोहँ वरताए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत प्रगटाए विच संसार। जोत सरूपी जोत प्रगटाए। आपणा भेव आप चुकाए वड वड देवी देव आप अख्वाए। घनकपुर वासी आपणा भेव आप खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त अन्तकाल साची जोत जगाए। साचे प्रभ कर्म कमावण। जोत सरूपी खेल रचावणा। वड वड भूपी मेल मिलावणा। विच अन्ध कूपी दीपक जोत जगावणा। सति सरूपी दरस दिखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द सरन

लगावणा। वाली हिन्द दया कमाए। आप आपणी बणत बणाए भुल्ले डुल्ले प्रभ चरन लगाए। कलिजुग रुले प्रभ आप तराए। वड वड अनमुल्ले गुरसिख बणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल रचाए। जोत सरूपी खेल रचाए। आपणी बणत आप बणाए। कृष्ना साँवला भेख वटाए। सर्ब सृष्ट मवला आपणा आप जणाए। उप्पर धवला एका मार्ग लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द बांहों पकड़ उठाए। आत्म पकड़ सर्ब गंवाए। शब्द जकड़ चरन लगाए। रसना मक्का सर्ब गंवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दिखाए जोत सरूपी रंग अपारा। गुरमुख विरला पावे सारा। एका देवे दरस अपारा। नज़री आवे कृष्न मुरारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द आए चरन दुआरा। कृष्न घनईआ दरस दिखाए। राम रमईआ नज़री आए। सोहँ जाम पलईआ जोत प्रगटाए। निहकलंक कलिजुग मिटईआ आप अख्वाए। सतिजुग साचे लेख ल्याए। साचा प्रभ दया कमाए। गुरमुखां प्रभ सरन लगाए। वेखा वेख बेमुख भुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे मार्ग लाए। वाली हिन्द सरनी आए। धरनी धर वड दया कमाए। करनी कर होए सहाए। चरन लाग भुल बख्शाए। आत्म अग्न सर्ब बुझाए। हँसों काग जीव कलि बणाए। कागों हँस गुरसिख उपजाए। वड सरबंस आप चलाए। एका अंस गुरसिख धराए। जिउँ कृष्ना कंस बेमुख खपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी कलि जामा पाए। जोत जगाए, दरस दिखाए, भरम मिटाए, सरन लगाए, कर्म कमाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द तीन जन्म दी बूझ बुझाए। साचे प्रभ कर्म कमावणा। जोत सरूपी दरस दिखावणा। आत्म भरम सर्ब मिटावणा। तीन जन्म दी बूझ बुझावणा। आत्म भेद गूझ खुल्ह्‍ावणा। एका दूज भउ चुकावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धरावणा। वाली हिन्द सरन लगावणा। तीन जन्म दी बूझ बुझाए। एका भउ शब्द रखाए। आत्म गोझ प्रभ आप कढाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखाए। वाली हिन्द होए बवला। अमृत झिरे मुख कँवला। सरनी पड़े दिसे कृष्न सँवला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी रव रवला। साँवल सुंदर नज़री आए। कँवल नैण सिर मुकट टिकाए। साजन साक सैण कोई दिस ना आए। एका सज्जण सुहेल आप बण जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखाए। वेख दरस आत्म तृप्तासे। साचा प्रभ हिरदे वासे। हउमे रोग होए विनासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कराए रासे। साचा प्रभ दरस दिखाए। प्रगट जोत भरम चुकाए। कँवल नभ आप खुल्ह्‍ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखाए। जोत सरूपी जोत जगाए। वाली हिन्द सुरत रखाए। वड मृगिन्द सच मूर्त पाए। गुणी गहिंद सोहँ शब्द देह उपजाए। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना दिसे दूरत, आप चल सरनी आए। आए सरन प्रभ निमस्कारया। तारन तरन गुण कर्म विचारया। हरन फरन प्रभ आप खुल्ा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे चरन प्यारया। वाली हिन्द चरन प्यार। साचा देवे दर दरबार। एका कराए जगत वरतार। सोहँ कराए जै जै जैकार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका देवे शब्द अधार। साचा प्रभ नाम अधारा। साचा प्रभ जगत वरतारा। साचा प्रभ वरते वरताए विच संसारा। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द आप ल्याए चरन दुआरा। साचा प्रभ दया कमाए। साचा प्रभ सेवा लाए। साचा प्रभ आपणा भेद आप चुकाए। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव उठ जाग प्रभ आप जगाए। जन क्यों सोए भाग वेला अन्तकाल आए। इक्क उपजाए राग प्रभ साची दया कमाए। पहली माघ प्रभ साचा सतिजुग लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन लिख्त लिखाए। आप लिखाए जगत लेख। जोत सरूपी किया भेख। सृष्ट सबाई रही वेखा वेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां लिखाए साचे लेख। गुरमुखां प्रभ मेल मिलाया। गुरसिखां प्रभ आण तराया। गुरमुखां प्रभ भय चुकाया। गुरमुखां प्रभ दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त होए सहाया । अन्तिम अन्त आप रखवाला। भगत वछल आप कृपाला। सोहँ देवे साची माला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत करे उजाला। जोत निरँजण सर्ब पसर पसार। जोत निरँजण महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी किया आकार। जोत निरँजण मात अकारे। जोत निरँजण प्रभ विच संसारे। जोत निरँजण आवे वारो वारे। जोत निरँजण एका रंग प्रभ करतारे। जोत निरँजण गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लए अवतारे। जोत निरँजण आपणे रंग। जोत निरँजण गुरमुख साचे संग। जोत निरँजण कर दरस गुरमुख साचे पार लँघ। जोत निरँजण महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साचा दरस दान दर मंग। जोत निरँजण आप अकारया। जोत निरँजण प्रभ वड संसारया। जोत निरँजण जोत सरूप जामा विच मात दे धारया। जोत सरूप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारया। निहकलंक विच मात दे आए। जोत निरँजण निहकलंक कलि नाउँ धराए। निहकलंक साचा थाउँ आप सुहाए। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होए दरस दिखाए। जोत निरँजण निराहार। जोत निरँजण नर अवतार। जोत निरँजण सर्ब अकार। जोत निरँजण जीव जन्त अधार। जोत निरँजण महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रिहा पसर पसार। जोत निरँजण साचा गुण। जोत निरँजण साची धुन। जोत निरँजण जोत जगाए गुरमुख साचे चुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सुणाए जणाए गुरमुख साचे सुण। जोत निरंजण साचा कन्त। जोत निंरजण मेल मिलाए साचे सन्त।

जोत निरंजण जोत टिकाए विच बैठ इकन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई ना जाणे आदिन अन्त। आदि अन्त ना कोई जाणे। जीव जन्त ना कोए पछाणे। वरते वरतावे प्रभ आपणे भाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे बूझ बुझाणे। गुरमुख बूझे घर सूझे। बेमुख कलिजुग जीव दर दर लूझे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे भेव खुल्हावे गूझे। आत्म भेव प्रभ खुल्हाए। जोत सरूपी दीप जगाए। वड रहीम दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाए। जामा पाया, नाम धराया, दिस ना आया, देह तजाया, जोत सरूपी गुरसिख समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धराया। लीआ अवतारा, किया अकारा, जगत वरतारा, संसार ख्वारा, गुरमुख उधारा, सोहँ जै जै जैकारा, आपणा वरते आप वरतारा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका वरते आप चार वरन इक्क दर दरबारा। चार वरन लाग सरन, कलि तरन, मिटाए डरन, खुल्हाए हरन फरन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए सरन। साची सरना होए ना मरना, मिले प्रभ धरनी धरना, गुरमुख विरले कलिजुग वरना, कर दरस निहकलंक कलि तरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरला आए सरना। चरन प्रीती साची नीती। आत्म जीती सदा अतीती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाए गुरमुख साचे काया सीतल कीती। शांत सरीर आवे धीर मिटे पीड़। अमृत पिलाए साचा सीर। झिरना झिराए चुआए मुख कँवल नीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे शांत कराए सरीर। रसना गाओ सर्ब सुख पाओ। दुःख मिटाओ भरम चुकाओ। प्रभ अबिनाशी घर में पाओ। गुण निधान चतुर सुजान वड लेख लिखाओ। वड बलवान वड मेहरवान ओट रखाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग मानस जन्म सुफल कराओ। जन्म संवारे पार उतारे, आप निरँकारे शब्द अधारे देवे दरस अपारे। गुरमुख आए दर दरबारे काज संवारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे नाम अधारे। नाम अधारा विच संसारा, जोत उज्जयारा विच देह अन्ध अन्धेरा। पावे सारा प्रभ किरपा धारा। देवे दरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। दरस करन प्रभ अबिनाशी वरन। अमृत झिराए झिरना झिरन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए, खुल्हाए हरन फरन। जोत जगाए अन्धेर मिटाए। सञ्झ सवेर इक्क कराए। हेर फेर रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए। दया कमाई जोत जगाई। आप रघुराई दरस दिखाई। मिले वड्याई महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा दर घर साचे बूझ बुझाई। दर घर साचा पाए। अवतार नर दया कमाए। भण्डारे भर प्रभ होए सहाए। ना जाए हर निहकलंक सिर हत्थ टिकाए। चार वरन इक्क कर प्रभ, इक्क दर दरबार बहाए। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाए। सतिजुग साचा मार्ग लाया। पहली माघ लेख लिखाया। कलिजुग भेख सर्ब मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे विच मात जन्म दवाया। सतिजुग साचे जन्म दवाया। साचा कर्म प्रभ लिखाया। एका धर्म झोली पाया। एका वरन आप अख्वाया। एका सरन निहकलंक रघुराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाया। सतिजुग लाया, कर्म कमाया, शब्द धराया। सोहँ जै जै जैकार कराया। खाणी बाणी मेट मिटाया। कुरान अंज़ील रहण ना पाया। जगत लेख प्रभ लिखाया। झूठा भेख सर्ब मिटाया। वेखा वेख जगत भुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साचा मेल मिलाया। सतिजुग साचा घर। इक्क बणाया साचा दर। जोत जगाए एका नर। चार वरन जाए तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक सृष्ट सबाई जाए कर। एका एक एकँकारा। एक कराए जगत विहारा। कलिजुग लेख अन्त आई हारा। निहकलंक प्रभ लए अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे नाम अधारा। सतिजुग लेख लिखाया। कलिजुग झूठा भेख मिटाया। सोहँ साचा जगत धराया। जन हिरदे वाचा प्रभ होए सहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन चार कुंट होए सहाया, जै जै जैकार कराया। चार कुन्ट जै जै जैकारा। सतिजुग तेरा सति वरतारा। सोहँ शब्द भरे भण्डारा। चार वरन आए एका दर दरबारा। एका जोत जगे निरँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ऊँचो ऊँच अगम्म अपारा। ऊँचो ऊँच आप दातार। चार वरन प्रभ जाए पैज संवार। कारन करन आप करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोए ना पावे तेरी सार। सतिजुग साचा मार्ग लाया। सारंगधर आप अख्वाया। अवतार नर इक्क नाम जपाया। किरपा कर सोहँ जाम प्लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर पहली माघ सतिजुग साचे मात जन्म दवाया। जन्म दवाए विच मात। सोहँ देवे साची दात। सतिजुग वरते वड करामात। चार वरन एका नात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब बणाए भैण भ्रात। एका चरन एका वरन एका धर्म एका बरन एका सरन एका कर्म एका एक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग जीव जन्त सर्ब तरन। एका आप एका जाप एका मात एका बाप एका नाम एका दात महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे बूंद स्वांत। इक्क कराए इक्क वरताए इक्क रहाए इक्क थां बहाए। ऊँच नीच नीच ऊँच कोई रहण ना पाए। सूचो सूच प्रभ अख्वाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वरन बरन सभ मेट मिटाए। नीच ऊँच इक्क करावणा। साचा मार्ग सतिजुग लगावणा। राजा राणा तख्तों लाहवणा। राउ रंक इक्क करावणा । सोहँ डंक जगत वजावणा। द्वार बंक प्रभ सुहावणा। गुरमुख साचे अन्तिम शंक प्रभ मिटावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत जोत सरूपी दरस दिखावणा। सतिजुग

दया धार। प्रभ जाए पैज संवार। सतिजुग कर्म विचार। प्रभ साचा सोहँ देवे नाम अधार। सतिजुग प्रभ पावे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन इक्क वरते वरतार। वरन चार एका गुण एका शब्द एका उपजावे साची धुंन। सोहँ साचा सृष्ट सबाई लए सुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे कवण जाणे गुण। जीव जन्त ना गुण विचारे। आदि अन्त ना पसर पसारे। साधन सन्त करे विचारे। माया बेअन्त विच संसारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव डुब्बे अन्ध अंध्यारे। अन्ध अन्धयारा आप रखाया। जोत सरूपी जामा पाया। बेमुखां प्रभ दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखे जगत भुलाया। आप भुलाए, आप रुलाए, आप गुआए, अप खपाए, आप उपाए, आप मिटाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप तराए दरस दिखाए। दरस दिखावणा, वक्त सुहावणा, जोत जगावणा, सति वरतावणा, चले चलाए आपणे भाणणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले रंग तेरा मानणा। रंग माणे जन वखाणे चलाए भाणे जोत जगाए महाने, जन होए सुघड़ स्याणे, बेमुख जीव कलि भुन्ने जिउँ भठयाले दाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल आप वरताणे। कल वरते उप्पर धरते। बेमुख मानस जन्म कलि हरते। जोत जगाई अवतार नर कादर करते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले अन्तकाल कलिजुग आयण दर ते। सो जन आए जिस दया कमाए। सो जन आए पाए जिस दरस दिखाए। सो जन गाए जिस रिदे वसाए। सो जन पाए जिस सरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे लए तराए। तारनहार आप दातारा। सोहँ देवे नाम भण्डारा। भगत वछल आप गिरधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल अपारा। अचरज खेल आप किया। गुरमुख मिल कर साचा हिया। बिन बाती बिन तेल, आत्म जोत जगाया दिया। बेमुख बेड़ा शौह दरया ठेल, आप डुबाई झूठी नईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल आप कलि किया। आपे खेले, आपे मेले, सज्जण सुहेले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए बिन बाती बिन तेले। जोत जगाए करे रुशनाए। अन्धेर मिटाए सवेर वखाए। हेर फेर चुकाए ना देर लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत जोत सरूपी दरस दिखाए। दरस दिखाया भरम गंवाया। कर्म कमाया धर्म चलाया। वरन उपाया जन्म दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा जगत रखाया। सतिजुग तेरी साची आण। सोहँ देवे प्रभ साची बाण। गुरमुख होए प्रभ दर परवान। दर घर आए गुणी निधान। वर घर पाए गुरमुख चतुर सुजान। अवतार नर दया कमाए, कलिजुग जी भुल ना जाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत आप होए मेहरवान। जोत सरूप प्रभ मेहरवाना। सोहँ देवे दानी दाना। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना। जगे जोत

देह महाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिलाए विष्नूं भगवाना। भगत भगवान इक्क जन जाण, सति कर मान। देवे दरस वाली दो जहान। मिटाए हरस दर घर आण। दरस परस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। विष्नूं विष्नूं विष्नूं भगवाना। कृष्ना कृष्ना कृष्न गुण निधाना। दसना दिसना देवे दरस महाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगादि आदि एका जोत जगाणा। एका जोत जगत वरतंत। जुगो जुग प्रभ भगवन्त। मेल मिलाए गुरमुख साचे सन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए दर घर आए गुरमुख साचे सन्त। साचे सिख दया कमाए। नाम भिक्ख झोली पाए। लेख लिख मात वड्याए। आत्म भुक्ख दे दरस मिटाए। मिटे तृख प्रभ चरनी आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाए। गुरसिख प्रभ दरस दिखाया। गुरसिख प्रभ आप वड्आया। गुरसिख प्रभ होए सहाया। गुरसिख प्रभ साचे दी साची छाया। गुरसिख सोहँ देवे प्रभ साची माया। गुरसिख गुर चरन धूढ़ गुर दर नुहाया। गुरसिख रंग गूढ़ प्रभ दर चढ़ाया। गुरसिख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बांहों पकड़ आण तराया। गुरसिख आप तारे। गुरसिख आप काज संवारे। गुरसिख प्रभ पार उतारे। गुरसिख सोहे गुर चरन दुआरे। गुरसिख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरे तेरे भण्डारे। गुरसिख साची मति। गुरसिख देवे प्रभ सोहँ साचा यति। गुरसिख आत्म विच एका देवे शब्द तत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क रखावे तेरी पति। गुरसिख प्रभ धीर धराई। गुरसिख अमृत आत्म सीर पिलाई। गुरसिख अखीरन अख़ीर प्रभ मिल जाई। गुरसिख वेले अन्त प्रभ जोत समाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाई। गुरसिख प्रभ जोत मिलाया। गुरसिख प्रभ पार कराया। गुरसिख प्रभ तारन आया। बेमुख प्रभ दर दुरकाया। गुरसिख प्रभ चरन लगाया। गुरमुख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण दवाया। गुरसिख दर परवाना। गुरसिख गुर घर साचा जाणा। गुरसिख अवतार नर वाली दो जहानां। गुरसिख सरन पर आप मुकाए आवण जाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख जोती जोत मिलाना। गुरसिख मेल मिलाया। गुरसिख अचरज खेल प्रभ दिखाया। गुरसिख सज्जण सुहेल तेरा होए सहाया। गुरसिख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर तेरे हत्थ टिकाया। गुरसिखां सिर हत्थ टिकाए। कलिजुग ना लाए तत्ती वाए। प्रभ साचे दी सच सरनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। आपे आप आप वरतंता। आपे आप भगत भगवन्ता। आपे आप विच साधन सन्ता। आपे आप विच जीव जन्तां। आपे आप बैठा अडोल विच प्रभ साचा कन्ता। आपे आप गुरमुख साचे तेरी बणाए बणता। आपे आप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप आदिन अन्ता। आपे आप आप रखवाला। आपे आप गुरसिख प्रितपाला।

आपे आप प्रभ दीन दयाला। आपे आप सोहँ देवे प्रभ नाम सुखाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दीन दयाला। आपे आप सोहँ दिया। आपे आप गुरमुख आपणे जिहा किया। आपे आप सतिजुग रखाई साची निया। आपे आप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आत्म जोत जगाया दिया। आपे आप आप उपाए। आपे आप गुरसिख तराए। आपे आप विच रिहा समाए। आपे आप प्रभ दिस ना आए। आपे आप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी हरस मिटाए। आपणा आप आपे वेख। जोत सरूपी प्रभ किया भेख। आप आपणे लिखाए लेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ लगाए सतिजुग साची मेख। सोहँ लाया जगत धराया। प्रभ साचे दी साची छाया। कलिजुग पाई झूठी माया। आवण जावण आण प्रभ खेल रचाया। जुगो जुग जोत सरूप जामा पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धराया। कलिजुग आए जामा पाए। जोत प्रगटाए देह तजाए। गुरसिख समाए दिस ना आए। भेख वटाए दुःख गंवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दरस दिखाए। दरस देखे नेत्र पेखे प्रभ वसेखे। लेख लिखाए प्रभ साचे लेखे। सृष्ट सबाई भुल भुलेखे। आप अडोल बैठा विच वेखे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरला दर आए दरस नेत्र पेखे। दरस पेख आत्म तृपाए। मिले प्रभ सर्ब सुखदाए। कर दरस आत्म दुःख मिटाए। मिटे हरस प्रभ सरनी लाए। कर दरस प्रभ सोहँ नाम जपाए। अमृत बरस प्रभ आत्म तृखा मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस गुरमुख साचा मानस जन्म कलि सुफल कराए। मानस जन्म होए रासा। सोहँ जपे स्वास स्वासा। जोत सरूपी विच रखे वासा। एका जोत जगे अबिनाशा। गुरमुख साचे प्रभ साचा होए दासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कराए रासा। मानस जन्म होए रासा। प्रभ अबिनाशी हिरदे वासा। एका जोत होए प्रकाशा। अज्ञान अन्धेर सर्ब विनासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरा दासन दासा। दासन दास आपे होया। वासन वास विच देह वसोया। स्वासन स्वास गुरमुख विरले विच स्वास परोया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, थिर घर वासी थिर घर वास रखोया। थिर घर प्रभ का वासा। जोत सरूप प्रभ अबिनाशा। एका जोत होए प्रकाशा। अज्ञान अन्धेर दर तों नासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए मात पताल अकाशा। एका जोत प्रभ अकारे। जोत सरूपी विच संसारे। मात पताल अकाश प्रभ साचा सच वरतारे। जोत सरूपी सदा अबिनाश, सदा सदा निरहारे। लक्ख चुरासी रक्खे वास, बैठा अडोल रहे गिरधारे। झूठी काया होवे नास, आप अडोल अडोल रहे मुरारे। सर्ब घटां घट रक्खे वास, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूप जोत पसारे। जोत सरूपी जगत भुलाए। जोत सरूपी जीव जन्त डुलाए। जोत सरूपी माया अगणत

कलि वरताए। जोत सरूपी साध सन्त झूठा भेख मिटाए। जोत सरूपी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साची बणत बणाए। धरत मात दर पुकारे। सुणे पुकार प्रभ गिरधारे। कलिजुग जीव वड हँकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी पावे सारे। धरत मात देवे दुहाई। प्रभ साचे तेरे दर ते आई। कलिजुग जीव रहे मेरी पति गंवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्तकाल होए सहाई। धरत मात दर बिल्लाए। कलिजुग जीव रहे सताए। बुझी दीपक ना कोई जगाए। मदिरा मास खाण पीण अज्ञान अन्धेर देह हो जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलिजुग दए खपाए। धरत मात सति सतिवन्ती। साचा प्रभ सुणे बेनन्ती। सतिजुग लगाए आप उपाए मात धराए रुत्त बसन्ती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिलाए कलिजुग गुरसिख उपजाए भगत भगवन्ती। भगत भगवन्त दया कर। साध सन्त इक्क दर। आदि अन्त देवे वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा दान धरत मात देवे धर। प्रभ दर दर पुकारे। सुणी पुकार आप गिरधारे। जोत सरूपी लए अवतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी पावे सारे। सुणी पुकार आप दातार। मातलोक आया जामा धार। जोत सरूपी जोत अपार। कोई ना पावे प्रभ दी सार। जोती जोत जोत प्रभ एका जोत करे अकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। नरायण नर आया जग। उप्पर धरत प्रभ धरया पग। बेमुख जीव तन लगाए अग्ग। बेमुखा प्रभ अन्त खपाए पकड़ शाह रग। गुरसिख प्रभ चरन लगाए, अमृत बरख आत्म मिटाए तृष्ना अग्ग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाए जणाए गुरमुख साचे चरन जायण लग्ग। सो जन लागे जिस आप लगाए। बेमुख भागे दर ढोहर ना पाए। शब्द अनरागे प्रभ आप उपजाए। पहली माघे जीव लेख लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका धुंन आप उपजाए। आप उपजाए एका धुन। आप खुल्हाए आत्म सुन। आप वड्याए गुरसिख चुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए सोहँ शब्द सुणाए गुरमुख साचे सदा कन्न सुण। सोहँ शब्द सच्ची धुन्कार। उपजे उपजावे विच संसार। सुणे सुणावे आप करतार। गुरमुख विरला करे विचार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जिस बख्शे किरपा धार। नाम धुन आप उपजाए। आत्म सुन्न आप खुल्हाए। गुरमुख चुण प्रभ जोत जगाए। कौण जाणे गुण निहकलंक होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव खुल्हाए। साचा प्रभ भरम मिटाए। एका कर्म आ कमाए। एका सुन्न गुरसिख खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप प्रगट जोत दरस दिखाए। दर घर दरस दिखाए आ। गुरमुख साचे साची बूझ बुझा। सोहँ साचा हिरदे वाचे, एका दूज प्रभ जाए मिटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म जन्म दी मैल गंवा। जन्म जन्म प्रभ मैल गंवाए। भरम

भरम प्रभ भरम चुकाए। आपणा कर्म प्रभ आप कमाए। आपणे चरन आप लगाए। एका सरन निहकलंक रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे माण दवाए। गुरमुख साचा दर वड्आया। गुरमुख साचा प्रभ दर भाया। गुरमुख साचा सच घर पुचाया। गुरमुख साचे प्रभ साचे दी सेवा लाया। गुरमुख साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुरत शब्द शब्द सुरत मेल मिलाया। सुरत शब्द मेल मिलाए। सुरत शब्द प्रभ शब्द जणाए। सुरत शब्द प्रभ भेव खुल्हाए। सुरत शब्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मेल मिलाए। सुरती सुरत सुरत ज्ञान। साचा देवे चरन ध्यान। गुरमुख साचा प्रभ साचे का सच रंग माण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए महान। जगे जोत आत्म उज्जयारा। गुरमुख साचा प्रभ साचा पाए सारा। जन हिरदे वाचा प्रभ चल आए दरबारा। बेमुख दर आए नाचा प्रभ साचा ना पाए सारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जाए तारा। सदा सदा सदा प्रभ तारे। सदा सदा सदा प्रभ चरन बलिहारे। सदा सदा सदा प्रभ आए गुरसिख दुआरे। सदा सदा सदा प्रभ कर किरपा पार उतारे। सदा सदा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खाली भरे भण्डारे। गुरसिखां गुर सुणे पुकारा। गुरसिखां प्रभ सद सद रक्खे प्यारा। गुरसिखां देवे साचा नाम अधारा। गुरसिखां प्रभ साचा सच करे विहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप निहकलंक नरायण नर अवतारा। गुरसिख माण दवाए। गुरसिख तारनहार अख्वावे। गुरसिख बेड़े बन्न्ह वखावे। गुरसिख जाणी जाण प्रभ दरस दिखावे। गुरसिख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरनी लगावे। सरन लागे भाग जागे। प्रभ साचा कलि पकड़े वागे। मानस जन्म ना लागे दाग़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख सुवाए गुरमुख साचे प्रभ दर जागे। गुरसिखां प्रभ जगाया। बेमुखां प्रभ सुलाया। गुरसिखां प्रभ वड्आया। बेमुखां प्रभ भुलाया। गुरमुखां प्रभ दया कमाया। बेमुखां प्रभ नष्ट कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत तीजी वार विच दिल्ली शब्द लिखाया। तीजी वार करे ख्वार। वासी दिल्ली ना करन विचार। अन्तकाल कलि आए हार। सोहँ मारे प्रभ शब्द कटार। बेमुख जीव आर ना पार। बेड़ा डुब्बे विच मँझधार। जोत प्रगटाए विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पाए तेरी सार। जीव जन्त सर्ब भुलाया। प्रभ इकन्त जोत प्रगटाया। दूती दंत प्रभ दिस ना आया। कलिजुग माया पाई बेअन्त, भरम भुलेखे विच भुलाया। गुरसिख बणाया साचा सन्त, दर घर आए प्रभ डेरा लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम साचा काम साचा धाम आपणा आप उपाया। प्रभ साचे पाया साचा फेरा। बेमुखां होए शहर अन्धेरा। गुरसिखां होए निज सवेरा। कलिजुग अन्त अन्तकाल प्रभ कराए हेरा फेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए अग्न

लगाए बेमुख खपाए ना लाए देरा। साचा प्रभ सर्ब भुलाया। लब लोभ हँकार वसाया। काम क्रोध विच जीव फसाया। गुरमुख साचे प्रभ आत्म सोध सरन लगाया। ज्ञान बोध बोध ज्ञान प्रभ शब्द लिखाया। चरन ध्यान गुरसिख रखाया। वड देवे दानी दान, जन सोहँ झोली पाया। तोड़े सर्ब अभिमान निहकलंक कलि जोत प्रगटाया। सर्ब जनां प्रभ जाणी जाण, आप अभुल्ल जगत भुलाया। भगत चुकाए कान, प्रभ साचे दी साची माया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेख जोत सरूपी भेख, विच दिल्ली आए लिखाया। प्रभ चरन टिकाए दिल्ली। चार कुन्ट सृष्टी हिली। कलिजुग जीव जिउँ आविउँ निकली इट्ट पिली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल आप वरताए, वाली हिन्द पकड़ उठाए, जमन किनारे चरन टिकाए, जोत प्रगटाए आए आए दिल्ली। सन्त मनी सिँघ सतिवाद। साचा शब्द प्रभ वजाया नाद। साचे सन्त प्रभ अबिनाशी कलिजुग ल्या लाध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका हुक्म सुणाया, सेवा लाया, शब्द उपाया बोध अगाध। साचे सन्त शब्द सुणाए। आपणी कारे आपे लाए। आपणे विहारे आप चलाए। कोई ना पावे सारे जोत सरूपी खेल रचाए। आदि अन्त ना पारावारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा पित आप बनवारे। साची बणत आप बणाया। सन्त मनी सिँघ शब्द उपाया। सन्त मनी सिँघ हुक्म सुणाया। सन्त मनी सिँघ प्रभ सेवा लाया। सन्त मनी सिँघ धन्न धन्न धन्न हरि रसना गाया। सन्त मनी सिँघ प्रभ साचा साचे दा पूर काम कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे धन्दे साचा सन्त लगाया। साचे सन्त शब्द उपा के। प्रभ अबिनाशी जोत जगा के। सच घर सच दर दी बूझ बुझा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची सेवा साचे सन्त लगा के। साचे सन्त प्रभ सेवा लाई। साचे सन्त एह बणत बणाई। साचे सन्त प्रभ दया कमाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बैठ इकन्त पुरी घनक एका जोत दे जगाई। एका जोत आत्म उज्जयारे। एका शब्द एका धुन्कारे। सन्त मनी सिँघ साचे प्रभ दर दरबारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस करे निमस्कारे। साचा सन्त करे पुकार। प्रभ अबिनाशी पावे सार। देवे हुक्म आप गिरधार। लेख लिखाए विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द उपजावे साची धुन्कार। साचे सन्त डेरा लाया। दिवस रैण प्रभ सेव कमाया। साल तिन्न बहिण ना पाया। आत्म बन्नू प्रभ शब्द चलाया। वड वड जन प्रभ साचे सन्त सेवा लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द धुन दे उपजाया। शब्द सुरत हुक्म सुणाए। आत्म साची बूझ बुझाए। लिख्या लेख ना कोई मिटाए। जगत भेख प्रभ रिहा दिखाए। साचा धाम साचा नाम साचा काम वेख प्रभ निशान लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी हुक्म सुणाए। साचे सन्त सच निशाना। उपजे धाम जगत महाना। पूरन काम करे भगवाना।

जगाए जोत वाली दो जहानां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा धाम अन्तकाल कलि आप सुहाना। साचे सन्त हुक्म कमाया। प्रभ अबिनाशी जो सुणाया। दिवस रैण प्रभ सेवा लाया। ना मिले बहण शब्द धुन प्रभ उपजाया। साचा लहणा लैण जिस जन सेव कमाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा गहणा तन पहनाया। गुर धाम सन्त तजाए। विच प्रभास बैठे आए। प्रभ अबिनाश शब्द जणाए। हिरदे वास रिहा सुणाए। होया दास सीस झुकाए। कारज रास निशान लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द विच कान सुणाए। सच धाम सच निशाना। पूर कराए प्रभ साचे कामा। चरन टिकाए घनईआ शामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उपजाए आपणा धामा। साचा धाम आप उपजाए। साचा काम आप कराए। साचा राम जोत प्रगटाए। घनईआ शाम नाम रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ पूरन आस कराए। राजन राज आप वड राजा। साजन साज आप वड साजा। ताजन ताज आप वड ताजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रक्खे लाज गुर गरीब निवाज़ा। साचे सन्त मेख लगाई। धर्म वेख लेख लिखाई। जोत सरूप करे भेख आप रघुराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलिजुग आपणा चरन आए टिकाई। आपणे चरन आप टिका के। साचा दर दरबार लगा के। झूठा राज नष्ट करा के। एका ताज निहकलंक सीस रखा के। सोहँ अवाज़ चार कुन्ट लगा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द सरन लगा के। वाली हिन्द झूठा माण। आपणा आप आप पछाण। कलिजुग भुल ना हो निधान। प्रभ साचा तोड़े सर्ब अभिमान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड बली बलवान। साचे सन्त धाम उपजाया। बणाई बणत प्रभ कर्म कमाया। वड राजे राजवन्त प्रभ सेवा लाया। महिंमा अगणत किसे भेद ना पाया। होए अन्त प्रभ जोत जगाया। बैठे इकन्त साचा धाम सुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द सरन लगाया। वाली हिन्द प्रभ सरन लगाए। वड मृगिन्द आप अख्वाए। सुरपति राजा इन्द सिर छत्र झुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जोत प्रगटाए। जोत प्रगटाए प्रभ जगदीस। एका छत्र झुलाए साचे सीस। भेख मिटाए बीस इकीस। झूठा ताज झूठा राज कोई ना करे प्रभ साचे की रीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई जाए पीस। साचे धाम जोत प्रगटा। साचा दीपक मात जगा। आप आपणा प्रभ उपा। साचा कर्म जगत कमा। झूठा भरम सर्ब गवा। एका धर्म जगत वरता। एका वरन आप अख्वा। एका सरन निहकलंक तेरा नाम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए माण रखाए वाली हिन्द सरन लगा। वाली हिन्द प्रभ सरन लगाए। आपणी सेवा आप कराए। साचा मेवा नाम दवाए। अलख अभेवा दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छत्र सीस आपणे आप झुलाए। साचा

छत्र सीस झुलार। वाली हिन्द प्रभ चरन द्वार। दोए जोड़ करे निमस्कार। सृष्ट सबाई होए पनिहार। सोहँ शब्द कराए जै जै जैकार । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलिजुग जोत सरूपी लए अवतार। वेले अन्त सभ पछतावणा। गया वक्त हत्थ ना आवणा। सोहँ रथ प्रभ चलावणा। महिंमा अकथ्थ ना भेव किसे कलि पावणा। साची वथ गुरसिख गुर दर सद झोली पावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ अन्तकाल कलि वक्त सुहावणा। सर्ब कल सर्ब समरथ्था। बेमुखां प्रभ पाए नत्था। गुरसिखां प्रभ रक्खे दे कर हत्था। साचे लेख लिखाए माथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ चलावे साची गाथा। सोहँ चले साची गाथा। आप चलाए त्रैलोकी नाथ। होए सहाई सगला साथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेख लिखाए साचे माथ। लिख्या लेख ना मेटे कोए। आप लिखाए वाली जहानां दोए। गुरसिख गुर दर जागे बेमुख सोए। कलिजुग जीव होए अभागे, आलस निंद्रा रिदे परोए। निहकलंक जन सरनी लागे मैल आत्म प्रभ देवे धोए। एका शब्द उपजाए अनरागे, गुरमुख विरला सुणे कोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली जहानां दोए। वाह वाह गुर आया सूरा। वाह वाह गुर पाया पूरा। वाह वाह दुःख मिटे वसूरा। वाह वाह आत्म सुख उपजाए प्रभ वड गुण भरपूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अनहद वजाए साची तूरा। वाह वाह दर मंगल गाया। वाह वाह हरि वर घर पाया। वाह वाह जन्म मरन गेड़ कटाया। वाह वाह गुरमुख साचे गुर पूरे हरन फरन खुल्ह्या। वाह वाह महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सिर तेरे हत्थ टिकाया। गुरसिख तेरी वड्याई। प्रभ साचे तेरी बणत बणाई। साचा नाम जगत रखाई। साचा थाउँ आप सुहाई। जोती जोत प्रभ जोत प्रगटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरा होए सहाई। गुरमुख साचे सच कर मन। प्रभ साचा आत्म जोत जगावे तन। सोहँ शब्द प्रभ सुणावे कन्न। आप कढाए गुरमुख साचे तेरा आत्म जन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलंकनिह जोत सरूप सति कर मन्न। साचा प्रभ सति कर मन्नणा। बेड़ा अन्त प्रभ साचे बन्नणा। चरन लाग कलिजुग पार लँघणा। सोहँ चाढ़े प्रभ साची रंगणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम साचा दान साचा दरस प्रभ दर मंगणा। दरस दान प्रभ आप देवे। चतुर सुजान जन रसना सेवे। रस महान प्रभ आत्म लेवे। कोट भान प्रभ जोत जगेवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस दान अलख अभेवे। आप अलख गुरमुख साचे कीने वक्ख। सृष्ट सबाई होए भक्ख। गुरमुख साचे प्रभ साचा लए रक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव जलाए जिउँ बसन्तर कक्ख। गुरसिख गुर दर साचा वर। अवतार नर सरन पर। मात तर कर्म कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोए जोड़ चरन निमस्कार कर। गुर चरन गुरसिख निमस्कारे। साचा

प्रभ सद बलिहारे। आवे जावे वारो वारे। जोत प्रगटाए विच संसारे। भगत उधारे पावे सारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी प्रगट जोत निहकलंक कलि नाम धरारे। साचा प्रभ भगत उधारन। आप कराए पूरन कारन। सर्ब जनां दी पावे सारन। दुःख दर्द प्रभ निवारन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दर घर आया, प्रभ साचा काज सुवारन। गुरमुख साचे काज संवारया। कर किरपा प्रभ पार उतारया। सोहँ साचा नाम रिदे विचारया। प्रभ साचा आए चल दर दरबारया। गुरमुख नाम अटल विच संसारया। सृष्ट सबाई जाए हल्ल, गुरमुख सोहे प्रभ चरन द्वारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद सद सद चरन बलिहारया। चरन लाग मिले वड्याई। चरन लाग भगत तर जाई। चरन लाग जगत नाम रह जाई। चरन लाग दुरमति मैल गंवाई। चरन लाग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए आप सहाई। साचा प्रभ सदा सहाया। गुरमुख साचे सिर हत्थ टिकाया। साची नाम वथ प्रभ झोली पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत जोत सरूपी मेल मिलाया। माण मोह जगत त्यागे। प्रभ साचे दी सरनी लागे। सतिजुग लगाया प्रभ पहली माघो। सति सति सति वरताया साध संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाया अनरागे। अनराग शब्द चलाया। सोहँ नाद आप वजाया। बोध अगाध भेद खुल्हाया। गुरमुख साचे प्रभ आत्म साध दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया कमाया। वेखे दरस गुर दर आए। पूरन आस प्रभ कराए। आत्म हरस सर्ब मिटाए। आत्म शब्द प्रभ बरस बरस कर प्रभ तृखा मिटाए। गुर चरन परस परस कर, गुरसिख मानस जन्म सुफल कराए। बेमुख कलि रहे तरस, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस सिँघ लछमण दर तेरे घर आए। साचे दर जोत जगाई। साचा दर आप दवाई। धरनी धर दया कमाई। जोत निरँजण प्रभ प्रगटाई। दुःख भय भंजन बणत बणाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे साचे दर मिले वड्याई। सांतक सति सति वरतावे। सांतक आपणा रंग चढ़ावे। सांतक साचा नाम रखावे। सांतक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी झोली पावे। सांतक तेरा सच वरतारा। सांतक वरते विच संसार। सांतक देवे सोहँ नाम अधार। सांतक सति सति सति सरूप, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत निरँकार। सांतक साचा साचा रूप। सांतक देवे सतिजुग प्रभ साचा भूप। सांतक वरते उप्पर धरते जोत जगाई प्रभ साचे करते विच सृष्ट अन्ध कूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सांतक वरतावे सति सरूप। सांतक तेरा साचा ताण। सांतक वरते विच जहान। सांतक सांत देवे वड गुणी निशान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा सति सति सति करे वरतान। सति सति सति होए वरतारा। सतिजुग लाए प्रभ गिरधारा। एका नाम धराए विच संसारा। जगत भेख मेट मिटाए, एका

रंग चढ़ाए जोत जगाए तीन लोक करे अकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेट मिटाए कलिजुग धुंदूकारा। कलिजुग मिटे अन्ध अन्धयारा। जोत जगावे प्रभ अपारा। निहकलंक कलि ल्या अवतारा। सतिजुग लगाए विच संसारा। एका दर दरबार रखाए चार वरन आए गुर दर दरबारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम धराए जोत सरूपी निहकलंक अवतारा। सतिजुग साचा मार्ग लाया। विच मात प्रभ जन्म दवाया। राउ उमराउ सर्ब मिटाया। वरन बरन प्रभ इक्क कराया। साचा धर्म जगत चलाया। एका सरन निहकलंक रखाया। सोहँ साचा डंक प्रभ वजाया। राउ रंक रंक राउ प्रभ इक्क कराया। सुहाए थान बंक जिथ्थे प्रभ चरन टिकाया। इक्क रखाए एका अंक, एकँकार एका नाम धराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाया। सतिजुग प्रभ माण दवाए। सोहँ साचा दान प्रभ झोली पाए। वड गुणी निधान एह दया कमाए। तोड़े सर्ब अभिमान, सिर हत्थ टिकाए। राउ रंक रंक राजान प्रभ इक्क कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा बाण लगाए। सोहँ साचा बाण लगाया। एका आण जगत लिखाया। सच निशान निहकलंक सोहँ साचा नाम चलाया। भगत भगवान प्रगट आप, प्रभ साचे दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत निहकलंक आपणा भेव चुकाया। आप आपणा भेव चुकाए। गुरमुख साचे बूझ बुझाए। बेमुख वेखे प्रभ दिस ना आए। आत्म विच हँकार रखाए। मदिरा मास रसन आहार बणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत अन्तकाल कलिजुग दे सज़ाए। गुरमुख साचे प्रभ चरन प्यारा। सोहँ देवे नाम अधारा। बेमुख दर होए ख्वारा। मदिरा मास रसन अहारा। गुरमुख साचे प्रभ भरे भण्डारा। एका जोत करे उज्जयारा। बेमुख दर आए गए झक्ख मारा। आत्म तृख सद हँकारा। गुरमुख प्रभ दर आए चरन करे निमस्कारा। सोहँ देवे नाम अधारा। कर किरपा प्रभ पार उतारा। बेमुख आत्म सद विकारा। सोहँ मारे प्रभ खण्डा दो धारा। बेमुख होए दुष्ट दुराचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दी पावे सारा। गुरमुख साचे लए तार। बेमुखां प्रभ करे ख्वार। बेड़ा डोबे विच मँझधार। ना दिसे आर ना पार। गुरमुख साचे सुहण निहकलंक तेरे चरन द्वार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा अमृत आत्म बरखे किरपा धार। अमृत आत्म प्रभ चुआया। सोहँ साचा जाम प्लाया। जोत सरूपी प्रगट जोत दरस घनईए शाम दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धराया। निहकलंक नाउँ धराए। निहकलंक जोत जगाए। निहकलंक जगत भुलाए। निहकलंक आपणा भेव आप छुपाए। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ रिहा डंक वजाए। निहकलंक नाम निरबान। निहकलंक मुशकलां करे सभ आसान। निहकलंक गुणी गुण निधान। निहकलंक वड बलवान। निहकलंक मेल मिलाए भगत भगवान। निहकलंक

जोत जगाए विच देह महान। निहकलंक एका शब्द उपजाए सुणाए कान। निहकलंक गुरमुख साचे जोत सरूपी साचा जाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क कराए रंक राजान। निहकलंक नेत्र पेख। निहकलंक प्रभ साचा वेख। निहकलंक जोत सरूपी किया भेख। निहकलंक जगत लिखाए साचे लेख। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई रिहा वेख। आपे वेखे वेख वखाए। बेमुखां प्रभ दिस ना आए। गुरसिखां प्रभ बूझ जोत सरूपी दरस दिखाए। अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए। एका ध्यान चरन लगाए। ब्रह्म ज्ञान बूझ बुझाए। गुण निधान दया कमाए। आत्म सुन्न खोल्ह वखाए। साची रुण झुण आप उपजाए। गुरमुख विरले चुण प्रभ सरन लगाए। सोहँ साची धुन प्रभ नाद वजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चरन लाग द्वार दस्म खोल्ह वखाए। दस्म दुआर प्रभ खुल्हाए। एका आकार जोत कराए। प्रभ निराहार नज़री आए। जन्म सुधार गुरसिख तर जाए। भगत अधार विच रिहा समाए। नदरी नदर कर जाए पार जो जन आए सरनी सीस झुकाए। अन्तकाल ना होए ख्वार, प्रभ साचा मेल मिलाए। मानस जन्म ना आए हार, बांहों पकड़ लए तराए। धर्म राए ना मारे मार, जोत सरूपी प्रभ मेल मिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सिर तेरे हत्थ टिकाए। गुरमुख साचा प्रभ साचा तारे। अन्तकाल कलि प्रभ आए खड़ा दुआरे। गुर गोपाल भगत विछाल गुरमुख साचा पार उतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन चरन निमस्कारे। गुर चरन निमस्कार। प्रभ साचा साची पाए सार। आप आपणी जोत प्रगटाए चल आए भगत द्वार। गुरमुख साचे होए सहाए, देवे वड्याई विच संसार। एथे ओथे दोए थांएँ रक्खे पति आप मुरार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दुत्तर जाए तार। आपे तारे तारनहारा। पैज संवारे प्रभ गिरधारा। गुरमुख बूझे कर विचारा। दर घर सूझे पावे सारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दिसावे साचा दर साचा घर सचखण्ड दुआरा। सचखण्ड प्रभ द्वार। जोत जगे अगम्म अपार। एका होए जोत अकार। दिवस रैण सच्ची धुन्कार। गुरमुख साचे प्रभ दर बहिण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप सदा निरहार। जोत सरूप सदा निरहारा। महिंमा अनूप सदा निराहारा। बिन रंग रूप रवे करतारा। विच अन्ध कूप एका जोत करे उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि देवे मेट झूठा पसर पसारा। कलिजुग झूठा पसर पसार। झूठी सृष्ट झूठा विहार। झूठी सृष्ट प्रभ करे ख्वार। आत्म भृष्ट मदिरा मास करन आहार। एका साची दृष्ट इष्ट एका एकँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप निहकलंक नरायण नर अवतार। एका जीआ एका पीआ। एका जोत एका दिया। एका गोत एका बिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जीव जन्त जन्त जीव सर्ब विच वसईआ। जीव जन्त आपे

वसे। साचे गुरमुख सन्त राह साचा दस्से। बेमुखां अन्धेर जिउँ चन्द मस्से। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आत्म जोत जगाए कोट रवि सस्से। आत्म जोत होए उज्जयार। गुरमुख पाए प्रभ दी सार। आपणा आप प्रभ आप लए विचार। हउमे पाप उतरे ताप प्रभ दर लए उतार। सोहँ साचा जाप देवे आप करतार। सर्ब सृष्ट माई बाप होए आप सहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जुगो जुग प्रगट जोत जोत सरूप विच मात बेड़ा कर जाए पार। मातलोक जोत प्रगटाए। जन भगत आण तराए। साध सन्त लाज रखाए। पूरन काज आप कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत प्रभ निहकलंक कलि नाउँ रखाए। निहकलंक जिस जन जाणयां। प्रभ पूरन देवे ब्रह्म ज्ञानयां। निहकलंक जिस जन पछाणयां। प्रभ देवे माण बिरधां बाल अञ्याणयां। निहकलंक जो जन चले भाणयां। जोत सरूपी प्रगट जोत गुरमुख साचे सद खड़ा तेरे सरहाणयां। निहकलंक जिस जन वखाणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेड़ा बन्ने सोहँ देवे वञ्झ मुहाणयां। गुरमुख तेरा बेड़ा बन्नू। आत्म मिटावे साचा जन। झूठा भाण्डा प्रभ जाए भन्न। सोहँ साचा प्रभ सुणाए कन्न। जिस जन हिरदे वाचा आत्म जाए मन। प्रभ अबिनाशी हिरदे राचा, होए धन्न धन्न धन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा दान ना लग्गे कदे संनू। साचा नाम रिदे वसाओ। रिद्ध सिद्ध नव निध सच

१३४ घर में पाओ। प्रभ मिलण दी साची बिध, स्वास स्वास हरि गुण गाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव १३४

०२ भुल ना जाओ। आप अभुल जगत भुलावे। झूठे मार्ग आप लगावे। आप अतुल्ल जगत तुलावे। आप अडुल्ल जगत डुलावे। ०२

जीव जन्त कोई सार ना पावे। आप अरुल सभ जगत रुलावे। अग्न जोत प्रभ जलावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी प्रगट जोत घनकपुरी कलि जामा पावे। घनकपुरी प्रभ जामा पाया। शेर सिँघ कलि नाउँ धराया। आप आपणा आप छुपाया। छड्ड देह अपार, जोत सरूपी जोत समाया। किया जोत अकार, विच मात प्रभ जोत जगाया। वरते वरतावे विच संसार, कलिजुग जीवां भेद ना पाया। गुरमुख साचे प्रभ देवे तार, प्रगट होए दरस दिखाया। एका दिसे एका एकँकार, जोत सरूपी प्रभ आत्म जोत जगाया। झूठी दिसे जगत बहार, प्रभ साचा नज़री आया। पारब्रह्म रूप अपार, जोती जोत जोत जगाया। झूठी काया जोत अकार, आत्म दीप जोत जगाया। साचा नाम पाया अधार, दिवस रैण दूण सवाया। मानस जन्म ना जाए हार, सोहँ नाम जिन रसनी गाया। प्रभ साचा भरे भण्डार, अखुट्ट अतुट्ट आप अख्वाया। पारब्रह्म रूप अपार, बिन रंग रूप विच गुरसिख समाया। विरला गुरमुख पावे सार, जोत सरूप विच मात दे आया। बेमुखां ना करे विचार, आपणा भेद प्रभ आप छुपाया। महाराज शेर सिँघ निहकलंक नरायण नर अवतार, जोत सरूपी जामा पाया। घर भगत गुण

१३५
०२

निधान। आया जगत विष्नूं भगवान। दिल्ली सारे सुंञ मसाण। कलिजुग जीव सोए बेप्राण। अन्तकाल कलिजुग आई हान। प्रभ अबिनाशी ना करे पछाण। सर्ब घट वासी सर्ब जीआं दा जाणी जाण। वेले अन्त करे बन्द खलासी, जो जन चरनी डिगे आन। हउमे ममता दर तों नासी, सोहँ रसना जो जन गाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, निहकलंक बली बलवान। गुरमुख साचे प्रभ चरन दुआरे। बेमुख सुत्ते पैर पसारे। गुरमुख सोहँ रसना जै जै जैकारे। बेमुख आत्म हाहाकारे। गुरमुख साचा प्रभ साचे दी पावे सारे। बेमुख कलिजुग जीव मदिरा मास करन आहारे। जोत सरूपी जोत प्रभ, जुगो जुग जन भगतां खड़ा दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जामा घनकपुरी विच धारे। घनकपुरी पाया जामा। जोत जगाई रमईआ रामा। मिली वधाई घनईआ शामा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, निहकलंक विष्नूं भगवाना। भगवान भगवान भगवान। सोहँ देवे दानी दान प्रभ दान। गुरमुख बोवे सोहँ साचा नाम विच जहान। बेमुख पति आपणी खोवे, मदिरा मास रसन लगान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साचे साची दरगाह देवे माण। साची दरगाह देवे माणे। आप आपणे रंग समाणे। गुरमुख साचा सच दीबाणे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा सचखण्ड निवास रखाणे। साची दरगाह सच दरबारा। वसे आप एकँकारा। जगे जोत इक्क निरँकारा। होए इक्क सर्ब अकारा। एका एक प्रभ भगत गिरधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत साची जोत अगम्म अपारा। साची जोत अगम्म अपार। एका करे तीन लोक आकार। जीव जन्त विच पसार। गुरमुख विरले करन विचार। बेमुख जीव रहे झख मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप आप निरँकार। जोत सरूप जोत जगाई। आपणा नाउँ आप धराई। भरम भुलेखे सृष्ट भुलाई। गुरसिख लाए लेखे प्रभ भेव चुकाई। दिवस रैण प्रभ दर्शन पेखे, नज़री आए आप रघुराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात देवे वड्याई। विच मात आप वड्याए। आपणा हत्थ सिर टिकाए। सर्ब कला समरथ होए सहाए। एका देवे साची वत्थ, सोहँ नाम झोली पाए। सृष्ट सबाई जाए मथ्था जिउँ मक्खण दुध्ध मधाण ल्याए। बेमुख प्रभ पाए नत्थ, दर दर फिराए। महिंमा जगत प्रभ अकथ्थ, आपणी खेल आप रचाए। वेला गया ना आवे हत्थ, अन्तकाल जायण पछताए। गुरमुखां देवे सोहँ साचा रथ, प्रभ पार लँघाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जन भगतां होए सहाए। सोहँ साचा रथ चलाए। जन भगतां प्रभ लए चढ़ाए। कर किरपा पार लँघाए। अवतार नर दया कमाए। बेमुख कोई थाएँ ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे लए तराए। आप तराए आप भुलाए, आप रुलाए, आप डुलाए, प्रभ अबिनाशी जन गए भुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर शाही पाए। भुल्ले वाक सिर ख़ाक,

कट्टे नाक छुट्टे साक, ना मिले पाकी पाक, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी हिरदे वसे कलिजुग जीव आत्म वेख खोल्ह ताक।

*** पहली सावण २००६ बिक्रमी मेरठ छाउणी ***

गुरमुख वेख गुर विचारे। गुर साचे दी साची कारे। एका जोत आप निरँकारे। जुगो जुग विच मात लए अवतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच धारे। जामा धारे घनकपुर। प्रभ अबिनाशी साचा गुर। गुरमुख साचे दर आयण तुर। बेमुख खाली हत्थ जायण मुर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लगाए करोड़ तेतीस सुर। करोड़ तेतीस चरन लगाए। एका जोत आप जगाए। तीन लोक प्रभ रिहा समाए। मात पताल अकाश प्रभ आप उपाए। किया सर्ब घट वास, जोत सरूपी दिस ना आए। अन्तकाल कलिजुग कर जाए नास, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि जामा पाए। साचा प्रभ जामा पाए। जुगो जुग जन भगत उपाए। आपणी खेल आप रचाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलिजुग घनकपुरी विच भाग लगाए। घनकपुरी प्रभ भाग लगाणा। जोत सरूपी दीप जगाणा। चार वरन प्रभ सरन लगाणा। साचा धाम निहकलंक विच मात उपजाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा डंक चार कुन्ट वजाणा। एकँकार एका अंक कराणा। आप आपणा नाम जपाणा। सोहँ विच संसार रखाणा। चार वरन रसना गाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट जै जै जैकार प्रभ कराणा। जै जै जैकार प्रभ कराए। तीन लोक जोत जगाए। सुरपति राजा इन्द प्रभ उठाए। देवे शब्द ज्ञान वाली हिन्द प्रभ सरन लगाए। एका देवे चरन ध्यान, एका दूजा भउ चुकाए। एका दूजा भउ चुकाए, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान घनईआ शाम नज़री आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा सिर हत्थ टिकाए। आपणा हत्थ सिर आप टिकाए। जोत सरूपी दरस दिखाए। अन्ध अंध्यार सर्ब मिटाए। आत्म साचा ज्ञान दवाए। जोत सरूपी विच समाए। आप आपणी बूझ बुझाए। साचे मार्ग वाली हिन्द लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साची बणत बणाए। सतिजुग साचा प्रभ साचे लावणा। एका मार्ग जगत चलावणा। वरन बरन सर्ब मिटावणा। राउ रंक इक्क करावणा। राजा राणा तख्तों लाहवणा। आपणा हुक्म आप वरतावणा। वड प्रताप आप धरावणा। सोहँ शब्द जगत चलावणा। साचा हुक्म शब्द सुणावणा। वाली दो जहान निहकलंक अख्वावणा। जोत सरूपी कर्म कमावणा। सर्ब भरम आप मिटावणा। साचा कर्म जगत करावणा। एका धर्म मात रखावणा। साचा बरन निहकलंक

सरन धरावणा। ना होए मरन, प्रभ दया कमावणा। खुल्ले हरन फरन, जिस दर्शन पावणा। कलिजुग जीव दुःख अन्त भरन, मदिरा मास जिस मुख रखावणा। गुरमुख प्रभ चरन लाग तरन, जन्म मरन गेड़ कटावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नाउँ धरावणा। निहकलंक नाउँ धराए। जोत सरूपी जामा पाए। साची जोत जगत जगाए। गुरमुख साचे प्रभ उपजाए। साधां सन्तां प्रभ नज़री आए। एका कन्ता दया कमाए। दिवस रैण जो रहे गाए। आपणे भाणे आप रहाए। सुघड़ स्याणे आप बणाए। कलिजुग जीव अन्जाणे आप भुलाए। भुल्ले डुल्ले दर ना आए। प्रभ अबिनाशी नज़र ना आए। साचा प्रभ कोई सार ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए। मातलोक आए कलि धार। निहकलंक ल्या अवतार। बेमुख सुत्ते पैर पसार। गुरमुखां देवे चरन प्यार। आपे आप करे विचार। बेमुखां डोबे विच मँझधार। गुरसिखां बेड़ा कर जाए पार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, निहकलंक नरायण नर अवतार। निहकलंक अवतार नर। चरन लाग गुर संगत जाए तर। खाली भण्डारे प्रभ जाए भर। बेमुखां दर आए डर। गुरसिखां आत्म उपजे हरि हरि हरि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए बणाए साचा दर। साचा दर सच्चा दरबार। धरे जोत आप करतार। गुरसिखां प्रभ पावे सार। बेमुख दर आए जाए झक्ख मार। जोत सरूप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा लाए, कलिजुग आया जामा धार। जामा धारे पार उतारे। जन आए चरन दुआरे। किरपा करे आप गिरधारे। देवे दरस गुरसिख प्यारे। जगाए जोत विच झूठे देह मुनारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारे। जामा धारया काज संवारया। भगत उधारया शब्द लिखारया। जोत सरूपी खेल वरतारया। आपणा आप छुपा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा वक्त आप सुहा रिहा। आपणा वक्त आप सुहाया। भगत जनां प्रभ सरन लगाया। तारन तरन आप अख्वाया। मरन डरन भउ चुकाया। जोत सरूपी प्रगट जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दिखाया। साचा प्रभ अचरज खेल, साचा मेल भगत भगवान। रसना गायण गुण गुणी निधान। देवे वड्याई वाली दो जहान। दिवस रैण गुरमुख साचे प्रभ साचे चरन ध्यान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जीआं करे पछाण। आप पछाणे भगत अञ्याणे। दर प्रभ आयण होए निमाणे। देवे माण चतुर सुजाने। साचे दर दरबान प्रभ सरन लगाणे। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा जो जन चरनी डिगे आणे। चरन आए सीस झुकाए। हँकार गंवाए भुल बख्शाए। मदिरा मास तजाए आगे प्रभ मार्ग पाए। सोहँ नाम झोली पाए। स्वास स्वास रसन जपाए। होए दास दरस दिखाए। पुरख अबिनाश महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दया कमाए। आत्म सुख प्रभ साचे धरया। प्रभ साचे दी सरनी परया। सुक्का काष्ट प्रभ करे हरया। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, जो जन सरनी परया। जगत तृष्ना बहुत तरसाया। चरन आए बहुत घिगराया। आपणी भुल आप बख्शाया। लिख्या लेख प्रभ मोड़ मुड़ाया। गया ना हुल्ल प्रभ फल फुल्ल लगाया। कीनी सेव अतुल्ल प्रभ दया कमाया। डाल्ही टुट्टा फल प्रभ फेर लगाया। सिँघ दलबीर जन्म दवाया। पिता पूत सच्चा सपूत मात प्रगटाया। सिँघ भजन सुत सुखदाया। दुःख भुक्ख रोग मिटाया। भगत भगवन्त दया कमाया। नाम कुलवन्त सिँघ आप रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली सावण प्रगट जोत गुरमुख साचे तेरा नाउँ जगत रखाया। गुरमुख गुरसिख कदे ना भुल्ल। प्रभ अबिनाशी सदा अतुल्ल। कलिजुग अन्त ना जाणा रुल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख सतिजुग उपजावे कँवल फुल्ल। गुरमुख साचा, आप जगा रिहा। किरपा कर आप गिरधारया। कलि बेड़ा प्रभ साचे पार उतारया। पहली सावण प्रगट जोत, प्रभ साचा शब्द लिखा रिहा। आप उपजाए साची जोत, प्रभ अज्ञान अन्धेर मिटा रिहा। दुरमति मैल आत्म धोत, अमृत साचा जाम पिला रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे, जोती मेल मिला रिहा। दरस दिखाए आप प्रभ, गुरसिख किरपा धार। हरस मिटाए आप प्रभ, जोत जगाए अपर अपार। तरस कमाए आप प्रभ, गुरमुखां देवे शब्द अधार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका बख्शे चरन प्यार। चरन प्यार साची रीती। गुरमुख बख्शे सच प्रीती। देवे दरस मिटाए हरस, काया सीतल कीती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भुल बख्शाए चरन लगाए दया कमाए गुरमुख तराए पिछे जो जन कीती। जीव अन्जाणा प्रभ सतिगुर स्याणा। आपे देवे चरन ध्याना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे आत्म ब्रह्म ज्ञाना। सोहँ शब्द साची धारा। गुरमुख विरला पावे सारा। आत्म जोत जगे अपारा। एका धुन एका धुन्कारा। एका सुन्न खोल्हे दुआरा। गुरमुख साचे जन प्रभ देवे दरस अगम्म अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे खोल्ह देवे दस्म दुआरा। दस्म दुआर आप खुल्हाए। निज घर वासी निज घर जोत जगाए। नाड़ी बहत्तर होए रुशनाए। गुरसिख साचा प्रभ दर्शन पाए। बेमुख जीव रहे बिल्लाए। प्रभ अबिनाशी नज़री ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी विच समाए। जोत सरूपी जोत समईआ। बेमुखां डुबाए कलिजुग नईआ। गुरसिखां सिर आप प्रभ विच मात हत्थ रखईआ। साची दरगाह प्रभ साचा माण दवईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग प्रगट दरस दिखाए साँवल सुंदर काहन घनईआ। साँवल सुंदर रूप बणा के। जोत सरूपी गुरसिख समा के। बेमुखां प्रभ दिस ना आए, गुरमुख सिर रक्खे हत्थ टिका के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जामा विच मात दे पा के। एका जोत आप अकारे। एका जोत आप निरँकारे। एका जोत पसर पसारे। एका जोत विच संसारे। एका जोत प्रभ वरतारे। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, जुगो जुग जामा विच मात दे धारे। एका जोत आदि अन्त। एक जोत भगत भगवन्त। एका जोत गुरमुख साचे सन्त। एका जोत प्रभ जगाए लक्ख चुरासी विच रखाए साचो साच प्रभ इकन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बणाए साची बणत। साची बणत आप बणाए। जोत सरूपी जोत जगाए। एका जोत अधार रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, थिर घर वासी थिर घर निवास रखाए। थिर घर प्रभ का वास। जगे जोत प्रभ अबिनाश। सृष्ट सबाई रक्खे वास। जन भगतां प्रभ होए दास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन जपे स्वास स्वास। स्वास स्वास रसना जप। प्रभ उतारे तीनो तप। कोट उतारे प्रभ साचा पप। सोहँ देवे प्रभ साचा जप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए दरस दिखाए आपणा अप। आपणा आप आप उपाए। आप आपणी बणत बणाए। जीव जन्त कोई भेव ना पाए। प्रभ इकन्त सच घर रहाए। गुरसिख साचे सन्त प्रभ पकड़ उठाए। बेमुखां पाए माया बेअन्त, कलि गहरी नींद सुवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग वेले अन्त बेमुखां दे सजाए। वेला अन्त अन्त कलि आया। निहकलंक कलि जामा पाया। जोत सरूपी भेख वटाया। गुरसिख वेख प्रभ साचा दया कमाया। जगत लिखाए लेख, सृष्ट सबाई रही वेखा वेख, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। जोत सरूपी प्रभ का भेख, गुरमुख साचे विच समाया। अन्तकाल कलिजुग आया जोत सरूप विच मात दे आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आप वरताया। आपणा भाणा आप वरताए। राजे राणे तख्तों लाहे। सुघड़ स्याणा आप अख्वाए। गुण निधान कोई सार ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव सर्ब भुलाए। अलख अलक्खणा ना लख्या जाए। दु:ख सुख आप वखाए। गुरमुख साचे प्रभ आप तराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि मात जोत प्रगटाए। मातलोक प्रभ दीप जगाणा ।एका जोत एका रंग चार कुन्ट प्रभ लगाणा। एका गोत सृष्ट सबाई प्रभ कराणा। दुरमति मैल धोत, सोहँ साचा नाम जपाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाणा। आपणा आप आप उपाए। आपणा शब्द आप लिखाए। सतिजुग साचा मार्ग लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि कर आपणी खेल दिखाए। साचा खेल आप वरताए। साचा मेल आप कराए। बिन बाती बिन तेल गुर साचा जोत जगाए। बेमुखां बेड़ा शौह दरया ठेल, नर्क निवास रखाए। पारब्रह्म अचरज खेल, कलिजुग जीव भेव ना पाए। भगत भगवान हो जाए मेल, सोहँ साचा जन रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा सिर हत्थ टिकाए। सोहँ गाया प्रभ उपाया। सोहँ गाया प्रभ साचा पाया। सोहँ गाया दर द्वार प्रभ आया। सोहँ गाया गुरमुख साचे प्रभ साचा कर्म कमाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका काम एका नाम

एका जाम सतिजुग साचे मुख चुआया। सोहँ साचा सच कर जाण। सोहँ साचा गुण निधान। सोहँ गावे दर परवान। सोहँ देवे आप वड बली बलवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वाली दो जहान। सोहँ साचा गुरसिख उपजा के। स्वास स्वास रसन जपा के। नास नास नास दुःख दर्द नास करा के। वास वास वास निज घर वासी निज घर वास रखा के। रास रास रास गुरमुख साचे मानस जन्म प्रभ रास करा के। वास वास वास प्रभ आपणा आप विच वास करा के। महाराज शेर सिँघ होए सहाई देवे वड्याई, उधरे पार जन रसना गा के। सोहँ गावणा सर्ब सुख पावणा। आत्म वसावणा। जोत सरूपी आत्म साचा दीप जगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए छत्र झुलाए गुरसिख उप्पर सीस उनन्जा पवणा। सोहँ तेरा सच वरतार। कलिजुग कूड़ होए ख्वार। निहकलंक लए अवतार। सतिजुग वरतावे विच संसार। सति पुरख उपजावे सभ नर नार। एका जोत जगावे साची देवे शब्द धुन्कार। एका मार्ग लावे दरस दिखावे दूसर कोई नज़र ना आवे बिन साचे करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगटे जोत विच मात कृष्न मुरार। कृष्न मुरारी भगत उधारी। जाए दर आए पैज संवारी। प्रभ साचे दी साची कारी। एका जोत एका गोत विच मात वरतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। आया जग पित मात। सोहँ देवे जन भगतां साची दात। सतिजुग उपजावे रखावे प्रगटावे धरावे साची करामात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां दिसावे साच चरन नात। साचा नात गुर चरन रखाए। गुरसिख साचा प्रभ दर आए। हरन फरन प्रभ आप खुल्हाए। तीजा लोयण खोल्ह वखाए। खोल्हे सुन्न शब्द जणाए। बेमुख तरसण प्रभ दिस ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां सोहँ साचा नाम जपाए। सोहँ साचा नाम धरईआ। सतिजुग चलाई साची नईआ। चार वरन कराए एका भैणां भईआ। प्रभ चरन लगाए आत्म मैल सर्ब धवईआ। दर दरबान रखाए एका राग कन्न सुणईआ। भगत भगवान मेल कराए, शब्द सुरत साची धुन उपजईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लवईआ। सतिजुग साचा मार्ग लाए। सोहँ शब्द मुख रखाए। मात कुक्ख प्रभ बाल जणाए। उलटा रुक्ख दुःख ना पाए। साचा सुख आप वखाए। तृष्ना भुक्ख जीव गंवाए। उज्जल मुख विच जगत कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए। सतिजुग साचा जगत चला के। साचा शब्द आप टिका के। चार वरन प्रभ दर बहा के। सोहँ शब्द जै जै जैकार करा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धरा के। निहकलंक तेरी वड्याई। कलिजुग अन्तिम अन्त कराई। जीव जन्त कोई वेख ना पाई। आप आपणी बणत बणाई। साधन सन्त प्रभ रिहा जणाई। आदिन अन्त गुरसिख समाई। साचा कन्त आप रघुराई। माया बेअन्त सृष्ट

प्रभ पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल आप कलि वरताई। आपे खेले आपे मेले। आप बणाए आपणे चेले। जोत प्रगटाए आप आपणे अन्त वेले। गुरमुख साचे सति पुरख बणाए, साचे सज्जण सुहेले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल आप प्रभ खेले। साचा खेल आप खिलाया। गुरमुख साचे मेल मिलाया। बेमुखां गया वेला हत्थ ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप प्रगट जोत निहकलंक सोहँ साचा डंक वजाया। प्रभ साचा साचा डंक। सोहँ सुणाए प्रभ राउ रंक। गुरमुख वड्याए जिउँ राजा जनक। आप लगाए जोत सरूपी साची तनक। एका जोत जगाए आप आपणा विच टिकाए सोहँ रखाए आत्म साचा मनक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जामा पाए विच मात बार अनक। अनक बार बार अनक। कलिजुग जोत प्रगटाए विच पुरी घनक। गुरमुख साचे मेल मिलाए। आप लगाए साची तनक। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई गुरमुखां बणाए साची बणत। सच घर दीपक प्रगास्सया। प्रभ पाया पुरख अबिनाशया। सर्ब घट घट किया वास्सया। सोहँ जपावे स्वास स्वास्सया। मानस जन्म करावे रहिरास्सया। गुरसिख होए चरन दास्सया। बेमुख दर तों जाए नास्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरे हिरदे वास्सया। साचा प्रभ हिरदे वास। साचा प्रभ सद रहे पास। साचा प्रभ होए दास। साचा प्रभ ना जाए विनास। साचा प्रभ सदा अबिनाश। साचा प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जप स्वास स्वास। साचा प्रभ सच घर आया। साचा प्रभ बूझ बुझाया। साचा प्रभ आत्म भेव गूझ खुल्हाया। साचा प्रभ एका दूज मिटाया। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लूझ गुरसिख सुख पाया। साचा प्रभ सदा अतीता। साचा प्रभ परखे नीता। साचा प्रभ गुरमुख साचे एका देवे चरन प्रीता। साचा प्रभ कर दरस गुरसिख आत्म होए सीता। साचा गुर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग मानस जन्म गुरसिख साचे कलिजुग जीता। साचा प्रभ दया नंद। साचा प्रभ आत्म उपजावे परमानंद। साचा प्रभ दुःख कटाए बन्द बन्द। साचा प्रभ गुरसिख उपजावे सतिजुग साचे चन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां दिस ना आए कलिजुग होए भाग मन्द। साचा प्रभ साचा रूप। साचा प्रभ जोत सरूप। साचा प्रभ महिंमा अनूप। साचा प्रभ कलि जोत प्रगटावे, सतिजुग साचा मार्ग लावे वड भूपन भूप । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए करे रुशनाए विच मात अन्ध कूप। साचा प्रभ जोत जगाए। साचा प्रभ करे रुशनाए। साचा प्रभ होए सहाए। साचा प्रभ दुःख रोग मिटाए। साचा प्रभ आत्म चिन्ता सोग मिटाए। साचा प्रभ गुरमुख साचे दरस अमोघ वखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। साचा प्रभ सति दातारा। साचा प्रभ आप निरँकारा। साचा प्रभ जोत अधारा। साचा प्रभ सद निराहारा। साचा

प्रभ आप गिरधारा। साचा प्रभ राम अवतारा। साचा प्रभ कृष्न मुरारा। साचा प्रभ निहकलंक नरायण नर अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलिजुग एका जोत जगाए प्रगटाए विच संसारा। साचा प्रभ वड संसारी। साचा प्रभ वड भण्डारी। साचा प्रभ भगत उधारी। साचा प्रभ बेमुखां करे ख्वारी। साचा प्रभ कलिजुग जोत जगाए एका एक एकँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग आया जामा धारी। साचा प्रभ दीन दयाल। साचा प्रभ भगत वछल रच्छक आप कृपाल। साचा प्रभ आत्म जोत गुरसिख देवे बाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दी सार समाल। साचा प्रभ पाए सार। साचा प्रभ जाए तार। साचा प्रभ देवे नाम अधार। साचा प्रभ गुरमुख बख्शे चरन प्यार। साचा प्रभ आत्म जोत करे उज्जयार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग रंगाए एका नाम जपाए एका मार्ग लाए सर्ब संसार। साचा प्रभ सच घर आया। मातलोक गुर धाम बहाया। आप आपणा प्रभ प्रगटाया। जोत सरूप प्रगट जोत सिँघासण डेरा लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि तेरा बेड़ा बन्नू वखाया। गुरसिख तेरा बेड़ा बन्नू। सोहँ देवे माल धन्न। गुरमुख साचे ना लग्गे कदे संनू। साचा प्रभ एका राग सुणावे कन्न। गुरमुख साचे तेरी आत्म जाए मन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप वड भूपन भूप विच अन्ध कूप देवे दरस प्रगट जोत गुरसिख बणाए साचे जन। साचा प्रभ साचा दर। साचा प्रभ साचा देवे वर। साचा प्रभ गुरसिख पुचावे साचे घर। साचा प्रभ निहकलंक अवतार नर। साचा प्रभ मातलोक आया जामा धर। साचा प्रभ कलिजुग जीव मानस जन्म गए हर। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे चरन लाग जायण तर। साचा प्रभ तारनहार। साचा प्रभ इक्क करतार। साचा प्रभ जीव जन्त अधार। साचा प्रभ वड पसर पसार। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त अन्त आदि एका एकँकारा। एका रंग आप रंगाए। साचा प्रभ सच कर्म कमाए। सच सुच्च दी जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाए। सतिजुग तेरा जन्म दवाया। प्रभ साचे सच कर्म कमाया। सर्ब जनां दा भरम मिटाया। एका ब्रह्म आप उपाया। साचा कर्म आप लिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा दान तेरी झोली पाया। सतिजुग देवे साचा दान। विच मात प्रभ देवे साचा माण। गुरमुख साचे सन्त उपाए, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप जोत प्रगटाए खेल करे बिधनान। आपणी जोत आप जगाए। वेला वक्त आप सुहाए। साची लिख्त रिहा लिखाए। वाक भविख्त सति वरताए। लिखी लिख्त मिट ना जाए। निहकलंक नाम धराए। जोत सरूपी जामा पाए। छड्ड देह गुरसिख समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल कलि आप वरताए। कलिजुग तेरी होए अख़ीर। सोहँ शब्द चलाया

तीर। माण गंवाए अठसठ तीर्थ नीर। रहण ना पाए फ़कीर पैगम्बर औलीआ पीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट पवाए वहीर। सोहँ शब्द प्रभ चलाया। एका डंक आप वजाया। राउ रंक प्रभ सुणाया। द्वार बंक कोई रहण ना पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलिजुग आपणा खेल आप रचाया। कलिजुग अन्तिम अन्त कराए। गुरमुख साचे सन्त जगाए। बेमुख जीव रहे बिल्लाए। चार कुन्ट पै जाए दुहाए। ईसा मूसा मुहम्मदी प्रभ दे खपाए। कोई ना रहे अहमदी प्रभ दे मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त कराए। कलिजुग अन्तिम अन्त कराणा। प्रभ साचे दा साचा भाणा। जोत जगाए वाली दो जहानां। वेला अन्तिम अन्त कराए वेद पुरानां। कलिजुग कोई रहण ना पाए प्रभ मिटाए अंज़ील कुरानां। एका शब्द प्रभ चलाए, जोत सरूपी पहरया बाणा। एका नाम जगत चलाए, सोहँ देवे गुण निधाना। ऊँच नीच इक्क थां बहाए, कोई ना दिसे रंक राजाना। एका छत्र सीस झुलाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। एका छत्र झुल्ले सीस। प्रगटे जोत निहकलंक जगदीस। जगत मिटाए भेस बीस इकीस। प्रभ साचा जीव जन्त ना कोई करे रीस। अन्तकाल कलिजुग प्रगट जोत निहकलंक सृष्ट सबाई जाए पीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द उपाए जगत सुणाए, मात तराए दे वड्याए दूसर ना कोई दीस। ना कोई दूसर ना कोई दोआ। एका प्रभ जगत जोत बलोआ। जोत प्रगटाए करे रुशनाए निहकलंक तीन लोआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, डंक वजाए रिहा सुणाए, गुरसिख जगाए, आत्म तृखा मिटाए, जगत दुःख गंवाए, साचे लेख लिखाए, बेमुख कलि रिहा सोया। बेमुख जीव दर दुरकारी। प्रभ साचा अन्तिम करे ख्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पावे नर्क मँझारी। बेमुख जीव आपणा आप पछाण। सोहँ शब्द प्रभ मारे बाण। झूठा चुकावे जगत माण। अन्तकाल कलि जायण पछताण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जीआं दा जाणी जाण। आपे जाणे आप वखाणे। आप चलाए आपणे भाणे। माण गंवाए राजे राणे। पकड़ लगाए चरन अञ्याणे। जो जन होए चरन निमाणे। दरगाह साची दर परवाने। मानस जन्म सुफल कराने। साचा प्रभ आत्म साची जोत जगाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई भेव ना जाणे। कलिजुग भेव ना पाया। वड देवी देव नज़र ना आया। साची सेव ना चरन कमाया। काम क्रोध मोह रसन हलकाया। मदिरा मास मुख रखाया। मात कुक्ख कलंक लगाया। साचा प्रभ मनों भुलाया। आपणा आप दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दरगाह दर दुरकाया। साची दरगाह सच दरबारा। चले चलावे आप निरँकारा। एका जोत अगम्म अपारा। प्रभ साचे दा सच दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एकम एक एक अनेक एका इक्क आप करतारा। एका एक एक करतार। एका जोत

आप अपर अपार। एका जोत प्रभ गिरधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जोत सरूप विच मात आए जामा धार। जामा धारे प्रभ निरँकारे। विच संसारे भगत उधारे सृष्ट सँघारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद सद सद चरन बलिहारे। चरन बलिहारी प्रभ गिरधारी। इक्क निरँकारी जोत न्यारी। वड संसारी गुरमुख आत्म करे उज्जयारी। बेमुखां कलिजुग होए ख्वारी। गुरसिखां देवे शब्द भण्डारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा चरन बलिहारी। चरन बलिहार जाए तार पैज संवार। देवे नाम अधार उपजे धुन्कार शब्द गुण विचार विच अन्ध अंध्यार करे जोत अकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सदा बलिहार। जोत उज्जयारे विच झूठे महल्ल मुनारे। खोल्हे दस्म दुआरे। जगे जोत अगम्म अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सदा चरन बलिहारे। जोत जगाए करे रुशनाए। अन्धेर मिटाए हरन फरन खुल्हाए। दरस दिखाए देर ना लाए। सञ्झ सवेर इक्क कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा चरन बलिहारे। गुर चरन साचा धाम। गुर चरन पूरन काम। गुर चरन साचा जाम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा नाम। साचा नाम गुर दर पाया। आत्म साचा दीप जगाया। साचा प्रभ साचा घर आया। बजर कपाट खोल्ह वखाया। साचा नाम ना हट्ट विकाया। तट्ट तीर्थ कोई हत्थ ना आया। साचा सीरथ गुर पूरा रसना गाया। आत्म तीर्थ गुरमुख विरला नहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन दया कमाया। आत्म तीर्थ आप नुहाए। साचा सीरथ अमृत पिलाए। नाभ कँवल देवे उलटाए। जोत सरूपी विच रिहा मवल, आपणी जोत जगाए। गुरमुख साचा होवे बवल, एका बूंद कँवल मुख विच पावे। नज़री आवे कृष्ना सँवल, जोत सरूप गुरसिख समावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पावे। साचा खेल आप प्रभ करना। आपणा नाम जगत प्रभ धरना। आप मिटाए वरना बरना। राउ रंक इक्क प्रभ करना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए धरनी धरना। साचा प्रभ जोत जगाए। आप आपणी पति रखाए। झूठा नात जगत तजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाए। जोत सरूपी जामा धार। निहकलंक आया अवतार। वरते वरतावे विच संसार। साचा प्रभ करे आप विहार। कोई ना पावे प्रभ की सार। जुग चौथा अन्त अन्तकाल करे ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्त लेख लेख लिख्त आप करतार। आप लिखारी आप भण्डारी आप दरबारी आप सिक्दारी जोत निरँकारी । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम करे ख्वारी। कलिजुग अन्तिम आप कराए । प्रभ साचा बणत बणाए । बैठ इकन्त जीव जन्त खपाए। गुरमुख साचे सन्त प्रभ शब्द जणाए। आप बणाए साची बणत, जोत सरूपी रिहा समाए। प्रभ की महिंमा बड़ी अगणत, जीव जन्त कोई भेव

ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी बणत बणाए। साचा प्रभ बणत बणा के। जोत सरूपी खेल रचा के। एका जोत अग्न लगा के। हाहाकार चार कुन्ट मचा के। वक्त अख़ीर आप करा के। वड पीरन पीर आप अख्वा के। वड चीरन चीर बेमुखां जाए चीर लुहा के। वड सीरन सीर गुरमुखां जाए सीर पिला के। वड नीरम नीर बेमुख जीव नीर तरसा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त जाए आप करा के। कलिजुग अन्तिम आप करावे। सृष्ट सबाई झूठे दाअवे। प्रभ अबिनाशी कोई विरला गावे। जगत उदासी माया हावे। नर्क निवासी जीव बिल्लावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि आप करावे। अन्तिम अन्त आप करावणा। आपणा वक्त आप सुहावणा। झूठा खेल कलि मिटावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा समां आप सुहावणा। वेला अन्त आप कर। आपणी जोत जाए धर। जोत जगाए अवतार नर। सृष्ट सबाई आपणा किया लए भर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल सृष्ट सबाई जाए कर। सृष्ट सबाई होए दो फाड़। आप चबाए आपणी दाढ़ । कलिजुग जीव होए भाग माढ़ । अग्न जोत प्रभ लगाए, चार कुन्ट देवे साड़। बेमुख जीव ठोहर ना पाए, शब्द सरूपी पए साड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख उपजाए सतिजुग साचे लाड़। साचे सिख आप उपाए। निहकलंक कलि जामा पाए। आपणा आप आप उपाए। साध संगत प्रभ रिहा सुणाए। एका रंगत नाम चढ़ाए। जीव मंगत कोई रहण ना पाए। साची संगत विच रलाए। माण हँगत सर्ब गंवाए। बेमुख जीव विच अग्न जलाए। कोई ना होए अन्त सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए। अन्तकाल कलिजुग कलि आया। महीना जेठ प्रभ आप लिखाया। वड वड सेठ नष्ट कराया। राउ उमराउ दर दुरकाया। कलिजुग जीव कौड़े रेठ प्रभ भन्न वखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त कराया। महीना जेठ आए जग। अग्न जोत जाए लग्ग। सृष्ट सबाई जाए दग्ग। पकड़ पछाड़े प्रभ शाह रग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव अगे धर्म राए लगाए वग। धर्म राज प्रभ साचे का साचा साज। झूठे जीवां खोल्हे पाज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि गुरमुख तेरी रक्खे लाज। गुरसिख साचे प्रभ तेरी लाज रखावे। सोहँ साची अवाज़ प्रभ आप लगावे। अन्तकाल साचा दाज प्रभ झोली पावे। विच माझ प्रभ जोत प्रगटावे। बेमुखां भाज प्रभ शब्द लिखावे। छुडाए जगत सांझ, भैण भ्रा कोई दिस ना आवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महीना जेठ कहर वरतावे। महीना जेठ होए अख़ीर। कलिजुग जीव ना देवे कोई धीर । बिरधां बाल अञ्याणे नज़र ना आवे भैण भाई वीर। चार कुन्ट पै जाए दुहारी, पै जाए सर्ब वहीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाया इक्क तीर। वड सूरा आप

सरबंग। गुरसिख चाढ़े आत्म साचे रंग। बेमुख कलिजुग जीव अन्तकाल कलि होए नंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई करे भंग। साचे प्रभ सच वरताणा। इक्क चलाए आपणा भाणा। कोई ना दीसे राजा राणा। सर अमृत प्रभ थेह कराणा। लिख्या लेख ना किसे मिटाणा। सन्त मनी सिँघ सतिगुर बनाणा। सतिजुग साचा सतिगुर उपजाणा। साध संगत प्रभ सरन लगाणा। चार वरन प्रभ माण दवाणा। शब्द सुरत प्रभ मेल मिलाणा। तुरत फुरत हरन फरन खुल्हाणा। गुरमुख विरले चरन जुड़। दिवस रैण दरस दिखाणा। एका जोत अकार कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि पहरया बाणा। जोत सरूपी गुरमुख साचे विच समाणा। जोत सरूपी जोत गुरसिख समाए। जोत निरँजण विच मात दे आए। जोत सरूपी जामा पाए। बेमुखां प्रभ रिहा भुलाए। गुरसिखां प्रभ आप जगाए। आप आपणी बूझ बुझाए। राती सुत्तयां दरस दिखाए। आत्म हउमे तृखा मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी आस पुजाए। साचा प्रभ शब्द भरपूरा। देवे शब्द अनहद तूरा। झूठी काया होए नूरी नूरा। दिवस रैण एका दिसे सति सरूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला भरपूरा। सर्ब कला प्रभ भरपूर। गुरसिखां प्रभ सदा हज़ूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खाली भाण्डे करे भरपूर। वड वड वड आप वड दाना। वड वड वड आप ज्ञाना। वड वड वड आप प्रभ पुरख सुजाना। वड वड वड आप सर्ब जीआं कमाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे आप वड ब्रह्म ज्ञाना। साचा प्रभ ब्रह्म ज्ञाता। ऊँचो ऊँच पुरख बिधाता। सूचो सूच जगत पित माता। कूचो कूच कलिजुग कराता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी गोद सवाता। आप आपणी गोद सवाए। कलिजुग अन्तिम अन्त कराए। जुग चौथा मात रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत निहकलंक कलि नाउँ धराए। कलिजुग अन्तिम अन्त प्रभ किया। पूर्ब लहणा प्रभ दर लीआ। मिल्या फल बीज जो बिया। आप लगाए, आप गंवाए, आप धराए, आप तराए, आप रहाए, आप मिटाए कलिजुग जिस रखाई निया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलिजुग प्रगट जोत अन्त कलि किया। अन्तकाल कलिजुग कराया। प्रभ साचे सच शब्द लिखाया। भरम भुलेखा सर्ब मिटाया। वेखी वेखा जीव भुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेखा आप लिखाया। लेख लिखावे आप जग। सोहँ पहनावे आत्म साचा तग। साचा शब्द जणावे गुरमुख साचे प्रभ चरनी जायण लग्ग। आत्म भरम चुकावे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मुख लगावे साचा सग। सोहँ शब्द साचा सगणा। गुरमुख साचे आत्म रंगणा। आप कटावे भुक्ख नंगणा। पाप पहाड़ां गुरमुख लँघणा। विच उजाड़ां दरस प्रभ मंगणा। बहत्तर नाड़ी प्रभ साचा चाढ़े साची रंगणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दीप जोत सरूपी सतिजुग

साचे जगणा। एका दीप होए प्रकाश। कलिजुग अन्धेर जाए विनास। सोहँ सतिजुग देवे सति पुरखा प्रभ सति धरवास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग माया कीनी नास। कलिजुग माया आप जलाई। पूरे गुर एह वड्याई। गुरमुख साचे बूझ बुझाई। आत्म साचा दीप जगाई। एका धुन शब्द धुन उपजाई। साची सुन्न आप खुल्हाई। रुण झुण दिवस रैण रखाई। निहकलंक तेरे गुण जीव जन्त ना पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे रिहा लेख लिखाई। सतिजुग तेरा सच वरतारा। साचा प्रभ सच भण्डारा। वरते वरतावे विच संसारा। जन भगत आयण निहकलंक तेरे चरन दुआरा। एका शब्द सोहँ सच सच सच करे वरतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग जोत जगाए अपर अपारा। रजो राज आप तजाए। तजो ताज कोई रहण ना पाए। अस्व अस्वार प्रभ जोत प्रगटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव दिस ना आए। चिट्टे अस्व करे अस्वारी। निहकलंक जोत निरँकारी। मातलोक आए जामा धारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा गुर सच्चा दरबारी। साचा प्रभ सच दरबार। जोत जगाए आप निरँकार। भेव खुल्हाए नैण मुँधार। देवी देव ना पायण सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे आप आप जाणे करतार। आपणा रंग आप दिखानयां। जोत सरूपी पहरया बानयां। साचा धाम आप उपजानयां। कलिजुग अन्तिम अन्त निशानयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द लिखाए आप भगवानयां। कलिजुग अन्तिम अन्त निशानी। कलिजुग प्रगटे वाली दो जहानी। आप मिटाए खाणी बाणी। माण गंवाए वेद पुरानी। रहण ना देवे अञ्जील कुरानी। एका जोत अग्न लगाणी। सृष्ट सबाई होए वैरानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुणवन्त गुण निधानी। साचा प्रभ चण्ड प्रचण्डा। सोहँ लगावे बेमुखां सिर डण्डा। कलिजुग जीव तोले सोहँ साचे कंडा। सृष्ट सबाई होई रंडा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ उठाए दो धारा खण्डा। सोहँ शब्द खण्डा दो धार। गुरमुखां जाए तार। बेमुखां मारे डाहढी मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई ना पावे तेरी सार। आप चलावे खण्डा दो धारा। वरते वरतावे विच संसारा। बेमुख जीव नां दीसे कोई किनारा। गुरसिखां देवे सोहँ शब्द अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। नरायण नर जामा धारया। आप आपणा बिरद आप संभारया। कलिजुग जीवां भरम भुला रिहा। झूठा काम विच जला रिहा। आपणा नाम आप भुला ल्या। झूठे धन्दे आप लगा ल्या। कलिजुग अन्तिम अन्त करा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल आप रचा ल्या। कलिजुग आप भुलाए। झूठी काया अग्न लगाए। मदिरा मास मुख सगन लगाए। प्रभ साचे का साचा राह, गुरमुख साचे दया कमाए। गुरमुख साचा साचा घर, प्रभ आत्म तृखा बुझाए। एका देवे साचा वर, सोहँ झोली पाए। दर आयण जायण तर, महाराज

शेर सिँघ जिस जन दया कमाए। दया कमाए दयानंद। साचा प्रभ सदा बख्शंद। जो जन रसन लायण मदिरा मास गन्द। नज़र ना आवे लखमी नरायण मनोहर मुकंद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त फड़ाए धर्म राए दे सजाए कटाए बन्द बन्द। साचा प्रभ साचे कर्मा। साचा प्रभ सच लिखाए गुरसिख तेरे कर्मा। अन्तिम अन्तकाल कलिजुग चौथे जुग प्रभ माण गंवाए ब्रह्मा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्मलोक मिटाए विच जोती मेल मिलाए सर्ब मिटाए भरमा। चौथे जुग प्रभ कर्म कमाया। ब्रह्मलोक दे उलटाया। ब्रह्म सरूप ब्रह्म समाया। जोत सरूपी मेल कर, आप आपणे विच रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचे माया जगत भुलाया। सतिजुग साचा आप लगाए। गुरमुख साचे सच माण दवाए। सिँघ पाल ब्रह्मलोक बहाए। सृष्ट सबाई हत्थ फड़ाए। आप आपणा सिर हत्थ टिकाए। जोत सरूपी जोत प्रभ, गुरसिख साचे विच समाए। मातलोक प्रभ भेख मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त आपणी खेल आप वरताए। आपणा भाणा आप वरताया। ब्रह्मा ब्रह्म सरूप समाया। जोत सरूपी विच जोत मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा साचे धाम बहाया। साचे धाम गुरसिख बहा के। पूरन काम आप करा के। सतिजुग साची बणत बणा के। आप आपणी जोत प्रगटा के। वेले अन्तिम अन्त करा के। साध सन्त प्रभ चरन बहा के। साचा शब्द आप सुणा के। गुरमुख साचे संग रला के । एका रंग नाम चढ़ा के। अंग संग प्रभ आप रहा के । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्तकाल जाए आपणी खेल वरता के। साध संगत होए इक्ठ। प्रभ चरन आए नठ्ठ। सृष्ट सबाई होए भठ्ठ। अग्न जोत लगाए मठ्ठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख ना छोड़े तेरा हठ्ठ। गुरसिख एका आत्म धीरा। गुर दर आए घत्त वहीरा। प्रभ साचा अमृत मुख चुआए साचा सीरा। हउमे रोग गंवाए विच्चों कढ्ढे पीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन तेरे चरन लगाए जीअड़ा। साचा जीआ प्रभ का हिया। अमृत रस प्रभ दर पीआ। आत्म जोत जगाया दिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा आप आपणे जिहा किया। आप आपणे रंग रंगाणा। साचा संग गुरसिख निभाणा। सिँघासण आपणा प्रभ उठाणा। अन्तिम अन्त जुग प्रभ आप कराणा। साचा भाणा वरताए कलसीं, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव खुल्हाणा। आप आपणा भेव खुल्हाए। सृष्ट सबाई लेख लिखाए। देख देख देख कोई भुल ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अतुल्ल अभुल्ल अडुल्ल अरुल्ल रुल ना जाए। साचा हुक्म आप सुणाया। प्रभ साचे सच कर्म कमाया। साध संगत हरिजन हरि दरस कमाया। अन्तिम अन्तकाल कलिजुग तेरा आया। सन्त मनी सिँघ प्रगट जोत निहकलंक तिलक लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा गुर उपजाया। सन्त

मनी सिँघ तिलक लगाए। आत्म साची जोत जगाए। विच ललाट लेख लिखाए। आपणा भेख रिहा वटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धराए। साचा प्रभ सच प्रधाना। देवे शब्द गुण निधाणा। बणत बणाए आप बिधनाना। कोई ना जाणे प्रभ का भाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि कराणा। लिखाए लेख शब्द लिखारी। सृष्ट सबाई होई दुख्यारी। प्रगटे जोत निहकलंक अवतारी। चार कुन्ट होए हाहाकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाए अपर अपारी। अपर अपार जोत जगा। साचा भाणा आप वरता। राजा राणा तख्तों लाह। जोत सरूपी बाणा विच मात दे पा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघासण आपणा लए उठा। सिँघासण प्रभ उठाए। स्वासन स्वासन प्रभ नाम जपाए। आस आस आस प्रभ पूरन आस कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ लिखाई लिख्त वाक भविख्त सति पूरन आप कराए। गुर संगत प्रभ किरपा धारे। देवे शब्द अगम्म अपारे। सृष्ट सबाई सुत्ती पैर पसारे। कलिजुग जीव होए अन्ध अंध्यारे। आतम बुझी दीव झूठे महल्ल मुनारे। गुरसिख चल आयण प्रभ दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे शब्द आप निरँकारे। देवे दरस आप निरँकारा। साचा वरते जगत विहारा। ऊपर धरते जोत अकारा। एकँकार करे खेल अपारा। बेमुख दर ते जायण झक्ख मारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
१४६
०२
आप आपणी जाणे सारा। आप आपणा आपे जाणे। वेला वक्त आप पछाणे। साध संगत संग रलाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वरते वरतावे चले चलावे आपणे भाणे। साध संगत दर बुलाए। प्रभ साचा देवे आप वड्याए। एका शब्द हुक्म सुणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका ओट आप रखाए। जिस जन जाणयां आप पछाणयां होए निमाणयां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त अन्तकाल कलिजुग पार लँघाए, सोहँ देवे वञ्झ मुहाणयां। गुर संगत प्रभ हुक्म सुणाए। आपणी बणत प्रभ आप बणाए। साध संगत संग रलाए। दिवस रैण रहे रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बैठ इकन्त जोत जगाए। सन्त जनां प्रभ सुणे पुकारा। मातलोक लए अवतारा। बेमुखां दुःख लग्गे भारा। गुरसिख आत्म होए उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रूप अनूप दरस अपारा। दर्शन अपार जोत करतार। आप निरँकार विच संसार ल्या अवतार। छड्डी देह अपार। किया जोत अकार। गुरसिख साचे सिँघ पूरन रिहा पसार। सृष्ट सबाई करे ख्वार। गुरसिखां प्रभ जाए तार। वेला वक्त जगत सुधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस गुरसिख तेरा बेड़ा कर जाए पार। अन्तकाल अन्त प्रभ करना। साचे सन्त प्रभ साचा वरना। बेमुख जीवां अन्तकाल कलिजुग दुःख डाहढा भरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पार ब्यासों चरन जा धरना। पार ब्यासों चरन टिकाए। सृष्ट सबाई

प्रभ उलटाए। थल जल जल थल कराए। दल मल प्रभ सर्ब कराए। इक्क अटल आप रह जाए। ना लाए घड़ी पल, प्रभ अग्न मेघ बरसाए। भाणा जाए ना टल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रिहा शब्द लिखाए। सृष्ट सबाई जाए हल्ल, एका बाण शब्द चलाए। जोत सरूपी किया छल्ल, कलिजुग जीआं दिस ना आए। जोत सरूप आप अचल्ल, आपणे भाणे सर्ब चलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्त भविख्त रिहा लिखाए। पार ब्यासों चरन धर। सर अमृत प्रभ थेह कर। मस्तूआणा उपजावे साचा सर। जोत जगावे अप्पर अपर। चार वरन दिसाए एका वर। जोत प्रगटावे निहकलंक अवतार नर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे साचा वर। साचा दर इक्क दिसावे। जोत सरूपी जोत जगावे। दिवस चाली प्रभ लिख्त लिखावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राउ उमराउ सभ सरन लगावे। दिवस चाली शब्द लिखाए। सृष्ट पाली आप रखवाली साचा माली आप बण जाए। दो जहानां वाली निहकलंक कलि जोत प्रगटाए। मस्तूआणा सांतक सति। प्रभ साचा रक्खे साची पति। चार वरन रखावे एका तत्त। एका सच बिजाए सोहँ साचे वत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन देवे साची मति। चार वरन आप उपदेशे। जोत सरूप सर्ब प्रवेशे। भेव ना जाणे ब्रह्मा विष्न महेषे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद अदेसे। चार वरन सच दरबारा। इक्क दिसाए प्रभ निरँकारा। मस्तूआणा धाम अपारा। निहकलंक लए अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत अगम्म अपारा। एका जोत आप जगा के। सृष्ट सबाई लेख लिखा के। जोत सरूपी जोत प्रगटा के। राणा संगरूर पकड़ उठा के। देवे दरस सुत्तयां जा के। जगाए जोत आपणा आप टिका के। चरनी डिगे आप भुल बख्शा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी सरन लगाए दया कमा के। राणा संगरूर प्रभ चरन लगा के। आत्म भरपूर प्रभ आप करा के। साचा नूर प्रभ जोत दवा के। आत्म सुरत प्रभ शब्द खुल्हा के। ना दिसे दूर प्रभ बैठा विच आपणा आप समा के। सर्ब कला भरपूर प्रभ नज़री आ के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जाए धीर धरा के। सिँघासण प्रभ आप बणाए। गुरमुखां प्रभ पकड़ उठाए। साचा हुक्म आप सुणाए। पंज गज़ चौगिर्द लकीर लगाए। अमृत साचा नीर प्रभ छिड़काए। वड राजन राज वड पीरन पीर कोई नेड़ ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल आपणी आप वरताए। सिँघासण प्रभ सच रचाया। आप आपणा उप्पर टिकाया। साचा सुखन आप अलाया। भुक्खयां भुक्ख प्रभ दे गंवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणा साचा लेख लिखाया। साचा लेख आप लिखाए। साचा भेख आप वटाए। गुरमुख साचा वेख प्रभ विच समाए। आप लिखाए साचे लेख, कोई जीव भेव ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सच दरबार मस्तूआणे

आप लगाए। साचा प्रभ वड दरबारी। आपे आप आप निरँकारी। वरते वरतावे वड संसारी। सृष्ट सबाई करे पनिहारी। एका जोत जगाए अपारी। चार वरन आए द्वारी। वरन बरन प्रभ सर्ब निवारी। एका सरन निहकलंक अवतारी। तारन तरन प्रभ बनवारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त ना पारावारी। मस्तूआणा प्रभ सुहाणा। राजा राणा सरन लगाणा। नीचों ऊँच ऊँचों नीच प्रभ कराणा। राउ रंक इक्क थां बहाणा। साचा दर दरबार लगाणा। एका शब्द प्रभ सुनाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राउ रंक इक्क कराणा। मस्तूआणा मस्त कराए। आप आपणी वस्त टिकाए। सोहँ नाम दस्त फड़ाए। साचा असत आप चलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी बणत आप बणाए। मस्तूआणे माण दवाया। मातलोक प्रभ वड्आया। चार वरन इक्क धाम बणाया। अट्ठ सट्ठ तीर्थ रहण ना पाया। एका सीरथ प्रभ उपजाया। वड नीरन नीरथ प्रभ चरन छुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा धाम सतिजुग उपजाया। मस्तूआणा धाम उपजाए। पूरन काम आप कराए। रमईआ राम चरन छुहाए। निमाणयां निताणयां प्रभ गले लगाए। राउ उमराउ प्रभ नष्ट कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत एका इष्ट आप रखाए। एका इष्ट आप करतारा। करे भृष्ट कलि विकारा। खुल्हावे दृष्ट गुरसिख प्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म भरे शब्द भण्डारा। शब्द भण्डारी आप प्रभ, वड

१५१ गुण दाता। शब्द भण्डारी आप प्रभ, मुख देवे बूंद स्वांता। शब्द भण्डारी आप प्रभ, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाता। महाराज शेर १५१

०२ सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा आप पछाता। गुरसिख साचा आप पछाणयां। राणा संगरूर विच राणयां महांराणयां। प्रभ ०२

भाण्डा करे भरपूर होवे सुघड़ स्याणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे नाम निधाणयां। सोहँ साचा देवे दान। आत्म कढ्ढे सर्ब अभिमान। एका देवे चरन ध्यान। सोहँ शब्द सुणाए कान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, इक्क रखाए आपणी आण। आप आपणी आण रखाए। सोहँ साचा बाण लगाए। होए निमाणा जन चरनी सीस झुकाए। पकड़ भगवान आपणे गले लगाए। जगत रखाए माण, प्रभ साचा संग निभाए। धुरों होए फ़रमाण, प्रभ साचा लिख्त लिखाए। ना कोई ऊँच नीचान, निहकलंक कलि जामा पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड बली बलवान, रंक राजान सभ सरन लगाए। राउ रंक सरन लगा के। सोहँ साचा नाउँ जपा के। मस्तूआणा साचा धाम उपजा के। सतिजुग साचा माण दवा के। साध संगत प्रभ संग रला के। राणा संगरूर पकड़ उठा के। जगत भुलेखा सर्ब कढा के। जोती जोत जोत प्रगटा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप जाए भेव खुल्हा के। राणा संगरूर संग रलाया। साचा प्रभ होए सहाया। मंगी मंग, सोहँ दान प्रभ झोली पाया। अंगी अंग अंग संग प्रभ सद रहाया। अमृत आत्म साचा नीर प्रभ गंग वहाया।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जमन किनारे डेरा लाया। जमन किनारे चरन टिकाए। राणा संगरूर संग रलाए। चरन धूढ़ प्रभ मस्तक लाए। आत्म गूढ़ प्रभ रंग चढ़ाए। पाए जूड़ जन आत्म सुन्न खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जमन किनारे साचा दीप जगाए। जमन किनारा धाम उपजाणा। साधां सन्तां प्रभ शब्द जनाणा। कलिजुग जीवां प्रभ आप भुलाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आप वरताणा। साचा प्रभ सच कल वरते। करे खेल उप्पर धरते। लए मेल जो जन आयण दर ते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो जन उधारे जो जन सरनी पड़ते। जमन किनारा धाम न्यारा। प्रभ लगावे सच दरबारा। जोत जगावे अगम्म अपारा। वरते वरतावे विच संसारा। निहकलंक अन्त ना पारावारा। बणाए बणत जगाए साध सन्त देवे शब्द हुलारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आप लगाए सच दरबारा। साचा प्रभ सच दरबार लगाए। साचा प्रभ इक्क घर बाहर आप उपजाए। साचा प्रभ अवतार नर आप अख्वाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जमन किनारा धाम सुहाए। धाम सुहावणा दरबार लगावणा शब्द चलावणा भेव खुल्हावणा। लेख लिखाया वाली हिन्द पकड़ उठावणा। जमन किनारे दरस दिखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव आप खुल्हावणा।

१५२ साचा भेख भेखाधारी। साचा प्रभ निहकलंक अवतारी। साचा प्रभ जोत निरँकारी। साचा प्रभ जगत विहारी। साचा प्रभ सृष्ट सबाई रही झक्ख मारी। साचा प्रभ गुरसिख वेख आए चरन द्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत निरँकारी। साचा भेख आप वटाया। वेखा वेख जगत भुलाया। साचा भेख प्रभ धराया। जिउँ बल द्वार मंगण आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप भुलाया। साचा भेख प्रभ साचे करना। देवे दरस वड धरनी धरना। वाली हिन्द प्रभ लाए सरना। चरन धूढ़ लाए चरनां। आत्म खुल्हाए हरना फरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका माण रखाए चार वरनां। वाली हिन्द सरन प्रभ आए। वड वड मृगिन्द प्रभ सरनी आए सीस झुकाए। सुरपति राजा इन्द प्रभ दर आए सेव कमाए। प्रभ साचा वाली हिन्द आपणी सरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा दरस दिखाए। वाली हिन्द प्रभ दर भिखारी। एका मंगे नाम अधारी। देवे दरस कृष्न मुरारी। मिटाए हरस प्रभ गिरधारी। आत्म रही तरस होई दुख्यारी। अमृत मेघ बरस, साचा देवे जोत सरूप जोत निरँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग सद सद सद बलिहारी। वाली हिन्द करे पुकारा। आए दर प्रभ निमस्कारा। होए दास चरन पनिहारा। करे वास साचा देवे नाम अधारा। साचा प्रभ सच दरबारा। जोत सरूपी जोत प्रभ, एका जोत करे अकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ आत्म भरे भण्डारा। साचा दान प्रभ दर मंगे। वाली हिन्द मूल ना संगे। होए सहाई अंग संगे। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर दरबार गुरमुख साचा साची मंग प्रभ दर मंगे। मंगी मंग आत्म रंग। साचा प्रभ साचा संग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लगावे आपणे अंग। आपणे अंग आप लगाया। आपणा संग आप रखाया। मंगी मंग, प्रभ साचा दान झोली पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सच ध्यान अन्तकाल कलि विच दिल्ली शहर टिकाया। साचा प्रभ सच वरताए। दर द्वार इक्क रखाए। जगत लिखार आप बण जाए। सृष्ट भिखार प्रभ दर मंगण आए। भगत उधार इक्क अख्वाए। अतुट्ट भण्डार तोट कदे ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सच भण्डार अन्तिम अन्तकाल विच दिल्ली आप कराए। साचा प्रभ शब्द भण्डारी। साचा प्रभ वड सिक्दारी। साचा प्रभ चरन लगाए वड वड हँकारी। साचा प्रभ माण गंवाए अगाध बोध बोध अगाध निहकलंक नरायण नर अवतारी। सच दरबारा सच वरतंत। एका जोत जगाए आप भगवन्त। अन्तिम अन्त रहाए आप इकन्त। गुरसिख साचे आप उपजाए। प्रभ बणाए साचे सन्त। साचा हुक्म आप सुणाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग बणाए साची बणत। राजस राज आप वड राजा। सृष्ट सबाई संवारे काजा। सर्ब जनां दी रक्खे लाजा। प्रभ अबिनाशी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द धुन उपजाए वजाए साचा वाजा। साचा शब्द साची धुन। गुरमुखां खुल्हावे आत्म सुन्न। पकड़ उठावे प्रभ साचा चुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे जाणे कवण गुण। गुणवन्त गुण निधाना। प्रभ अबिनाशी आप भगवाना। जोत सरूप सद मेहरवाना। बिन रंग रूप गुरसिख समाना। वड भूपन भूप आप अख्वाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पहरया बाणा। साचा प्रभ जोत सरूपा। जोत सरूपी रंग अनूपा। जोत जगाए विच अन्ध कूपा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड भूपन भूपा। अमृत आत्म साचा सीर। गुरमुखां प्रभ कढ्ढे पीड़। आत्म देवे अमृत धीर। गुरसिखां प्लाया साचा अमृत नीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत मुख चुआए सुख उपजाए दुःख मिटाए भुक्ख गंवाए शांत करे सरीर। साचा अमृत गुर दर पीआ। निर्मल कराया साचा जीआ। आत्म जोत जगाया दिया। प्रभ साचे का साचा हिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत उपाए बणाए पुत्तर धीआ। अमृत प्रभ साचा देवे। प्रभ साचे दर साचे मेवे। साचा रस गुरसिख विरला प्रभ दर आए लेवे। प्रभ अबिनाशी जो जन रसना सेवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत प्रगटावे, दरस दिखाए हरस मिटाए, गुरसिख प्रभ तरस कमाए वड अलख अभेवे। अमृत आत्म गुर साचा देवे। वड वड कर्म प्रभ आप करेवे। गुरमुख साचा साचा लहणा प्रभ दर लेवे। सोहँ साचा गहणा गुरमुख साचे प्रभ साचा तन पहनावे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना सेवे। अमृत पी आत्म रस। प्रगटे जोत निज घर वस। जोत

सरूपी सर्ब घट रिहा वस। नाम जपाए स्वास सवस। अन्तकाल कलिजुग गुरमुख साचे तेरी करे बन्द खुलस। मानस जन्म विच मात आप कराए रस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे होए तेरा दासन दस। अमृत आत्म साची जाग। गुरमुख सोया गया जाग। रसना अमृत लाए लाग। आत्म धोए प्रभ साचा दाग़। वेले अन्त गुरमुख साचे निहकलंक तेरी पकड़े वाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द लिखाया कर्म कमाया सच दवाया मात उपजाया नाउँ धराया सतिजुग लाया पहली माघ। अमृत पी आत्म तृप्ताओ। आत्म संसा रोग मिटाओ। प्रभ अबिनाशी घर में पाओ। सर्ब घट वासी रिदे वसाओ। घनकपुर वासी चरन लग जाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आवण जावण गेड़ कटाओ। अमृत देवे अमृत धारा। गुरमुख करे प्रभ प्यारा। गुण अवगुण ना किसे विचारा। जो जन आए चरन निमस्कारा। साचा प्रभ सद सद सद वड संसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दी पाए सारा। अमृत प्रभ आप वरताए। बिन गुर साचे हत्थ ना आवे। कलिजुग जीव होए काचे, सच दर फिरन हलकाए। आयण जायण दर दर नाचे, आत्म तृखा ना कोई बुझाए। प्रभ साचा गुरमुख ढाले सांचे ढांचे, आत्म साची जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन हिरदे वाचे, स्वच्छ सरूप प्रभ दरस दिखाए। अमृत साचा मुख चुआया। जन्म जन्म दा रोग गंवाया। प्रभ साचे रसना भोग आप लगाया। कर्म वियोग प्रभ आप गंवाया। साचा अमृत रस भोग रसन रसन प्रभ रसना लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाया। अमृत देवे अमृत धरवासा। साचा प्रभ पूरन भरवासा। अमृत मुख चुआए खुल्हाए कँवल सोहँ जपे जन स्वास स्वासा। दरस दिखाए प्रगट जोत झब्ब, जो जन तजाए मदिरा मासा। प्रभ साचा आत्म धीर धराए, अमृत साचा सीर पिलाए आप आपणा करे वासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलिजुग जन भगतां करे बन्द खलासा। गुर अमृत साची धारा। गुर अमृत साची आत्म कटारा। गुर अमृत कढ्ढे सर्ब विकारा। गुर अमृत खाली तेरा भरे भण्डारा। गुर पीवे चल आए प्रभ दर दरबारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे शब्द अधारा। गुर अमृत गुर मुख चुआया। गुर अमृत सिंच आत्म हरा कराया। गुर अमृत भिंच प्रभ आत्म जोत जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे अमृत मुख चुआया। अमृत देवे साची धारा। अमृत प्याए गंवाए मिटाए धुंधूकारा। अमृत चुआए जगाए उपाए जोत अपारा। अमृत वरसाए कँवल उलटाए बूंद मुख पाए खोल्ह देवे प्रभ साचा दस्म दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे निगम कर विचारा। अमृत देवे आप अपार। अमृत मुख चुआए, प्रभ साचा जाए तार। आत्म दुःख गंवाए, दुःख भुक्ख ना करे ख्वार। आत्म साचा सुख उपजाए, अमृत बरसे किरपा धार। उज्जल मुख आप कराए, प्रभ साचा

विच संसार। मात कुक्ख सुफल कराए, जन्म ना पाए दूजी वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन चरन करन निमस्कार। अमृत देवे वड गुरदेवा। प्रभ अबिनाशी अलख अभेवा। गुरमुख विरले लाए सेवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड वड आप वड देवी देवा । अमृत प्रभ आप बणाए । जीव जन्त प्रभ मुख चुआए। साध सन्त प्रभ दरस सद रहे बिल्लाए। बूंद स्वांती प्रभ मुख चुआए। बैठा इकांती खेल कराए। मार झाती प्रभ विच समाए। दिवस राती रहे रसना गाए। सृष्ट नाती सर्ब तजाए। वड करामाती लिख्त लिखाए। बहु बहु भांती दुःख उठाए। पुरख विधांती दिस ना आए। बूंद स्वांती ना कोई पिलाए । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलिजुग प्रगट जोत दया कमाए। अमृत देवे आत्म जीता। जोत सरूप प्रभ अतीता। गुरमुख विरले प्रभ दर पीता। कलिजुग मिल्या प्रभ साचा मीता। मानस जन्म कलिजुग जीता। जो जन करे निहकलंक चरन प्रीता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए भेव खुल्हाए, वेला हत्थ ना कलिजुग जीव आए, जाए अन्तकाल जुग बीता। वेला अन्त जाए बीत। प्रभ साचा गुरमुख साचे अमृत बरख काया कीनी सीत। मिटाए हरस दिखाए दरस साची बख्शे चरन प्रीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग पूरन भाग, मानस जन्म जाए जग जीत। मानस जन्म जीव जग जित। प्रभ साचे का साचा हित। गुरमुख साचे प्रभ साचा
१५५ जाणे गति मितक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए जुगो जुग नित नवित्त। जोत सरूप नित रहाए। १५५
०२ भगत हेत जोत उपाए। साचा पित आप अख्वाए। मानस जन्म जाए जित, जो जन चरनी आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं ०२
भगवान, प्रगट जोत जोत सरूपी दरस दिखाए। दरस देवे आप दयाला। गुरसिख पूरन होए घाला। आत्म देवे सोहँ साची माला। होए सहाई आप रखवाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सद सद रखवाला। भगत जनां आप उधारे। जिउँ हरनाक्ष दुष्ट सँघारे। धू बाल पार उतारे। मंगण आए बल दुआरे। माण रखाए अमरीक अपारे। भगत जनक आप वड्यारे। राणी तारा पार उतारे। बिदर झुग्गी पैर पसारे। भगत सुदामे चरन निमस्कारे। द्रोपत रक्खे पति मुरारे। जैदेव लेख लिखे अपारे। भगत जनां जुगो जुग प्रभ साचा जाए तारे। जोत सरूपी जोत प्रभ जुगो जुग विच मात लए अवतारे। नामदेव आण तराया। रवीदास कसीरा अंग लगाया। निर्धन बैणी माण रखाया। सज्जण साक सैण आप अख्वाया। जुगो जुग प्रगट जोत, जन भगतां होए आप सहाया। तारनहार आप समरथ। जन भगतां रक्खे दे कर हत्थ। सोहँ देवे साचा रथ। प्रभ महिंमा बड़ी अकथ्थ। बेमुखां प्रभ पाए नत्थ। सृष्ट सबाई होवे सत्थ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस गुरमुख साचे आत्म वसूरे जायण लथ्थ। आपे तारे भगत उधारे। जोत निरँकारे पार उतारे प्रभ बनवारे।

कोटन कोट पाप उतारे। जो जन आए चरन निमस्कारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म जन्म दी मैल उतारे। साचा वक्त जगत सुहेला। प्रभ साचे का साचा मेला। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे बण जाए सज्जण सुहेला। सज्जण सुहेला आपे आप। भगत जनां प्रभ माई बाप। सोहँ देवे साचा जाप। कोटन कोट उतारे पाप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उपाए आपणा आप। आपणा आप आप उपाया। जोत सरूपी जोत जगाया। माया रूपी पर्दा पाया। वड वड भूपी प्रभ भुलाया। कलि अन्ध कूपी अन्ध अन्धेर रखाया। सति सरूपी प्रभ दिस ना आया। बिन रंग रूपी गुरसिख समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप निहकलंक कलि जामा पाया। निहकलंक साचा डंक। निहकलंक एका अंक। निहकलंक सुहाए थान बंक। निहकलंक इक्क कराए राउ रंक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत प्रगटाए बैठा रहे सदा अटंक। निहकलंक धीरज धर। निहकलंक साचा दर। निहकलंक अवतार नर। निहकलंक जन सरनी पर। निहकलंक पुचाए साचे घर। निहकलंक जोत जगाए आत्म अपर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे देवे साचा वर। निहकलंक जन साचे वरया। निहकलंक आप प्रभ हरया। निहकलंक जोत सरूपी जामा विच मात दे धरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप ना जम्मे ना मरया। निहकलंक जोत निरँकार। निहकलंक आप करतार। निहकलंक चिट्टे अस्व अस्वार। निहकलंक भगत अधार। निहकलंक वड सिक्दार। निहकलंक तेरा साचा सच दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोटन कोट मंगण खड़े द्वार। निहकलंक ऊँचा दरबारा। निहकलंक ऊँचा घर बाहरा। निहकलंक ऊँच संसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत निरँकारा। निहकलंक महिंमा अनूप। निहकलंक सति सरूप। निहकलंक बिन रंग रूप। निहकलंक जोत सरूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक प्रगट जोत सर्ब माण गंवाए, एका छत्र झुलाए आप वड भूपन भूप। निहकलंक सच तेरी गाथा। निहकलंक त्रैलोकी नाथा। निहकलंक सगला साथा। निहकलंक मिटाए शंक चरन धूढ़ जन लाए माथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे आप टिकाए, चरन लगाए माण दवाए, विच लोकमात वड्याए, सतिजुग साचे तेरी पति रखाए, रक्खे दे कर हाथा। निहकलंक सिर हत्थ टिकाया। निहकलंक गुरसिख तराया। निहकलंक उज्जल मुख विच मात रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया। निहकलंक किया भेखा। सृष्ट सबाई रही भरम भुलेखा। गुरमुख साचे आए दर, साचा प्रभ विच मात नेत्र पेखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कढाए हउमे गंवाए, रिदे ध्याए भउ चुकाए, संसा मिटाए अंस बणाए, आप लिखाए साचा लेखा। निहकलंक लेख लिखंता। निहकलंक

पूरन भगवन्ता। निहकलंक साचे उपजाए विच मात गुरमुख साचे सन्ता। निहकलंक साचे सिख तेरी आप बणाए बणता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप वड चेतन्न चंनता। आपे चेतन्न आपे मन। आपे धीर धरावे जन। आपे शब्द सुणाए कन्न। गुरमुख रसना गाए धन्न धन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस तेरी आत्म जाए मन्न। मिटाए जन सीतल तन प्रभ बेड़ा बन्नृ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा साचे धाम बहाया। निहकलंक नर अवतार जोत अकार। निहकलंक वरते वरतावे विच संसार। निहकलंक जोत सरूप कलिजुग जीव ना पायण सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जगत वरतार। निहकलंक निहकलंक निहकलंक एका अंक। निहकलंक निहकलंक निहकलंक इक्क कराए राउ रंक। निहकलंक निहकलंक निहकलंक सुहाए थान बंक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क चलाए इक्क वरताए इक्क सरनाए इक्क रखाए एका अंक। एका अंक इक्क अकारा। एका वरते विच संसारा। एका दूजा भरम बिरथा, प्रभ साचा वरते सच वरतारा। निहकलंक किया पसारा। कलिजुग मिटया अन्ध अन्धयारा। सतिजुग वरते सति सति सति वरतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी पाए सारा। सच वरताए वरते सच। सच चलाए उप्पर धरते सच। सच रहाए करे कराए सच। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग बीज बिजाए आप उगाए अमृत सिंच आत्म उपजाए सच्चो सच। सच सच सच वरतार। सच सच सच विहार। सच सच सच रंग करतार। सच सच सच मंगण जन गुर द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा, साचा देवे शब्द अधार। साचा दान प्रभ साचा देवे। गुरमुख साचे प्रभ दर साचे मेवे। मिल्या प्रभ अलख अभेवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई होए सहाई पैज रखाई जो जन रसना सेवे। साचा प्रभ रसना गाया। साचा प्रभ हिरदे वसाया। साचा प्रभ होए सहाया। साचा प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां देवे सद सद सज़ाया। साचा प्रभ दया धार। साचा प्रभ आप दातार। साचा प्रभ सच दी कार। साचा प्रभ दुतर बेड़ा जाए तार। साचा प्रभ गुरमुख साचा मंगे सच द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा जाए तार। गुरसिखां प्रभ दया कमाए। लिख्या लेख आप मिटाए। गुरमुख वेख चरन लगाए। बुध वसेख आप कराए। जगत भेख नेड़ ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन दया कमाए। लिखी लिख्त आप मिटा के। साची लिख्त प्रभ करा के। बेड़ा बन्नृया रेख मिटा के। जीवण सिँघ तेरी धीर धरा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन आस जाए तेरी करा के। साची सेव प्रभ दर कमाई। भुल्लयां रुल्लयां प्रभ गले लगाई। वड वड अनमुलया गुरसिख बणाई। जगत अन्धेर अन्त कलिजुग झुल्लया, कोई रहण ना पाई। गुरमुख साचा प्रभ फुलवाड़ी

फुलया, कदे टुट्टे ना जाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद अडोल कदे ना डोल जाई। गुरसिख तेरा धरया नाउँ। धन्न धन्न गुरसिख धन्न जणेंदी माउँ। सुहाए थान प्रभ अबिनाशी जिथ्थे टिकाए पाउँ। तन मन प्रभ साचा सद रसना गाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे माण जगत ताण गुण निधान भगत दान सोहँ साचा नांउँ। साचे प्रभ माण दवाया। पूर्ब लहणा आप दवाया। भाणा सहणा हुक्म सुणाया। गुर चरन बहणा भरम चुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा आण तराया। साचे लेख गुरसिख लिखाए। गुरमुख साचा वेख प्रभ चरन लगाए। आप मिटाए बिधना लिखी रेख, प्रभ साचा लेख लिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे मस्तक मेख लगाए। मस्तक देवे साचा नूर। आत्म करे प्रभ भरपूर। कीती भुल होई दूर। सद रह प्रभ चरन हज़ूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नेड़न नेड़ ना दिसे दूर। साचा प्रभ चरन लाग। आप आपणी जगाए जाग। प्रभ सुणाए साचा राग। आत्म बुझाए तृष्ना आग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए होए सहाए घर लगाए तेरे भाग। गुरसिख तेरे पूरन भागा। प्रभ साचे दी सरनी लागा। साचे प्रभ हँस बणाया कागा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए शब्द जणाए दरस दिखाए रैण दिवस दिवस रैण अनरागा। अनुराग शब्द धुन। गुरमुख साचे कन्न सुण। सदा रहे रुण झुण। प्रभ साचे दे साचे गुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पकड़ उठाए दर ल्याए सेव लगाए कलिजुग चुण चुण। गुरसिखां प्रभ आप उपाया। जोत सरूपी दरस दिखाया। बेमुखां प्रभ दर दुरकाया। आप आपणा मुख छुपाया। गुरसिखां प्रभ नाम दवाया। आप आपणा माण रखाया। बेमुखां मदिरा मास मुख रखाया। आपणा नास कलिजुग जीवां आप कराया। गुरसिखां वास आप दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे रिहा लेख लिखाया। कर्म वेख लिखाए लेख। प्रभ साचा सच कराया भेख। अर्ज़ गुजारे गुर दर दरबारे, बख्श दे प्रभ बख्शणहारे, आया गुरसिख दर दरवेस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप विचारे गुरसिख उधारे जन्म कर्म दोए जग वेख। अर्ज़ गुजारी गुर दरबार। साचा प्रभ सुणे पुकार। दर आयण जो नर नार। प्रभ पूरन काज दे संवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पाए सार। आपे जाणे आपे बूझे। आप वखाणे आप सूझे। आपे भेव खुल्हाए गूझे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख उपजाए तराए भेव चुकाए दूजे। एका दूजा आप मिटाए। साची बूझ आप बुझाए। चरन लूझ गुरसिख बख्शाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन दया कमाए। भिन्नड़ी रैण वक्त सुहञ्जणा। जोत जगाए प्रभ निरँजणा। चरन धूढ़ प्रभ दर साचा मजना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे साक सैण सज्जणा। साचा प्रभ गुरसिख उधारे। किरपा कर पार उतारे।

मंगण आया प्रभ दर, दुध्ध पुत्त प्रभ भरे भण्डारे। होए सुत प्रभ शब्द लिखारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहण सिँघ लेख लिखारे। साची दात दया कर। प्रभ अबिनाशी दिया साचा वर। खाली भण्डारे प्रभ दए भर। चरन लाग गुरमुख साचा जाए तर। देवे वड्याई निहकलंक अवतार नर। होए सहाई जन सरनी जाए पर। वज्जे वधाई प्रभ साचा साचे घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन मंगण तेरा दर। वड दर अखुट्ट अतोल। प्रभ अबिनाशी सद अमोल। गुरमुख वेख मुखों कढ्ढे साचा बोल। गुरमुख आत्म रंगे प्रभ साचा रंग, सोहँ कंडे तोल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौं निध उपजाए वज्जे वधाए दर घर सोहँ शब्द साचा ढोल। साचे घर वज्जे वधाई। पूरन आसा प्रभ कराई। दासन दास गुरसिख होए सेव कमाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दात झोली पाई। साची दात सचा सुत्त। देवे दरस प्रभ अबिनाशी अचुत्त। आए वक्त सुहाए रुत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो दर मंगे गुरमुख ना संगे आपणे रंग रंगे सोहँ देवे दात अतुट्ट। जगत पित मात आप बणाए। साचा नात जगत रह जाए। साचा सति आप रखाए। साचा प्रभ दया कमाए। पिता पूत मेल मिलाए। साचा सूत ताणा पेटा इक्क कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन बूझ बुझाए। साची वस्त प्रभ साचे दर। प्रभ अबिनाशी देवे साचा वर। आप सुहाए गुरमुख तेरा घर। सुक्का काष्ट हरा कराए अवतार नर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साचा देवे वर। बेमुख जीव आप हो जाए। साचा प्रभ सार ना पाए। होए कुकर्मी कुकर्म कमाए। वड अधर्मी धर्म गंवाए। गुरसिख गुरमुख जो मुख भवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल दुखियां दुःख दे सजाए। गुरसिख होए मुख भुआवणा। निहकलंक कलिंक नाउँ लगावणा। प्रभ अबिनाशी एका डंक आपणा जगत वजावणा। राउ रंक नीच ऊँच ऊँच नीच इक्क करावणा। जोत सरूपी जोत प्रभ, चार वरन सरन लगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका नाम जगत चलावणा। एका नाम जगत चला के। एका धाम आप उपा के। एका राम आप अख्वा के। सोहँ जाम सृष्ट पिला के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म जाए करा के। साचा गुर साची सीख्या। साची देवे गुरमुख भीख्या। वेले अन्तकाल कलि करे सच परीख्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले दीख्या। गुरसिख होए ना मन डुलाए। गुरसिख होए ना काम क्रोध तन जलाए। गुरमुख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रसना गाए। गुरसिख गुर एका रंग। गुरसिख प्रभ कट्टे भुक्ख नंग। गुरसिख प्रभ साचे दा साचा संग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे सदा सहाई अंग संग। एका संग सदा प्रभ तेरा। प्रभ अबिनाशी विच सद वसेरा। दूरन दूर प्रभ नेरन नेरा। गुरसिख मिटाए हेरा फेरा। प्रगट जोत दरस दिखाए

ना लाए देरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल आप कराए सर्ब नबेड़ा। आपणा काम प्रभ आप कराए। जोत सरूपी दरस दिखाए। जोत सरूपी मेल मिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची माण दवाए। दरगाह साची साचा धाम। एका जोत रमईआ राम। गुरसिख पूरन कराए काम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड बणाया साचा धाम। धाम सुहाया जोत जगाया। गुरसिख बहाया आप आपणा नाम जपाया। साचे धाम गुरसिख बहाया। आवण जावण गेड़ चुकाया। पतित पावन आप अख्वाया। अमृत मेघ सावण बरसाया। साचे प्रभ सतिजुग सोहँ शब्द चलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगाध बोध बोध अगाध साचा शब्द प्रगट जोत विच मात लिखाया। सुरत शब्द प्रभ मेल मिलाए। सुरत शब्द गुरसिख तराए। सुरत शब्द प्रभ वेख वखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव चुकाए। सुरत शब्द चरन ध्याना। सुरत शब्द जोत महाना। सुरत शब्द अनहद उपजाए सुणाए राग साचा काना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिलाए सुरत शब्द विष्नूं भगवाना। सुरत शब्द जिस जन दवाए। सुरत शब्द गुर आप उपाए। सुरत शब्द प्रभ बूझ बुझाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरी लाज रखाए दूज मिटाए। दूज मिटाई बूझ बुझाई। सच घर दी सोझी पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दया कमाई। साचा प्रभ दीन दयाला। सदा सदा सदा प्रितपाला। एका रंग सदा समाए बिरध जवान बाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ जपाए आत्म चढ़ाए रंग गुलाला। साचे रंग आत्म रंग। गुरमुख साचे प्रभ चरन तेरा साचा संग। बेमुख जीव अन्तकाल टुट्ट जायण जिउँ काची वंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाए सदा अंग संग। इक्क घर इक्क वरतार। इक्क घर इक्क दरबार। इक्क दर इक्क दातार। इक्क घर दो विहार। इक्क घर दो गंवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दर एका घर एका वर एका अवतार नर देवे सर्ब संसार। एका घर दो धड़। प्रभ अबिनाशी छड्डुया लड़। कलिजुग माया गए हड़। हँगता रोग विच गए सड़। अन्तकाल कलिजुग जाए छड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द लिखाए सति वरताए जो जन फड़े प्रभ साचे दा साचा लड़। साचा प्रभ सच हुक्म लिखंता। देवे वड्याई मनी सिँघ साचे सन्ता। क्या कोए करे कलिजुग जीव जन्ता। आप बणाए साची बणता। सिर रक्खे हत्थ प्रभ साचा कन्ता। प्रभ वक्त सुहाए जोत प्रगटाए, साध संगत प्रभ चरन लगाए, आप उठाए माण दवाए पूरन भगवन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई भेव ना पाए, एका जोत आदिन अन्ता। सन्त मनी सिँघ तेरा दुख। जन ना पाए कोई सुख। दर घर वरते मारे भुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द लिखाए सच वरताए जो उपजाए साचे मुख। गुरसिख भुल्ले होए अज्याण। प्रभ साचे दी साची

बाण। एका शब्द रखाया आण। सन्त मनी सिँघ किया प्रधान। देवे वड्याई वाली दो जहान। सरन तकाई निहकलंक बली बलवान। चरन लगाए दरस दिखाए जोत जगाए विच ललाट महान। साचे सन्त दया कमाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। सन्त मनी सिँघ सति कर मन्नया। साचा बेड़ा प्रभ साचे बन्न्या। जो जन भुल्ले जगत डुल्ले जगत पीड़े जिउँ वेलणे गन्नयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो जन उतरे पार जिस जन सति सति कर मन्नया। मनी सिँघ जोत अधार। जोती जोत आप निरँकार। सतिजुग बणे सच्ची सरकार। धरे हत्थ सिर आप करतार। जगे जोत विच संसार। चार वरन आयण दरबार। सोहँ रंग होयण पनिहार। साधन सन्तन दरस अपार। ऊँचो ऊँच आप निहकलंक नरायण नर अवतार। सन्त मनी सिँघ सति पुरख मनाया। प्रभ अबिनाशी दया कमाया। मस्तक लेख आप लिखाया। साचा सन्त वेख प्रभ सेवा लाया। जोत सरूपी भेव प्रभ आप खुल्हाया। मस्तूआणे लगाई मेख, साचा कर्म सन्त कमाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सेवा लाया। सन्त मनी सिँघ सेवा लग्ग। प्रभ अबिनाशी सोहे पग्ग। लेख लिखावे सारे जग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत जगाए करे रुशनाए आत्म जोत बुझाए अग्ग। सन्त मनी सिँघ सच कर मन्न। आपणा बेड़ा ल्या बन्न्ह। आत्म कढाया सारा जन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द उपजाया सुणाया साचा कन्न। साचे सन्त शब्द जणाया। निहकलंक दरस दिखाया। साची अंस गुरसिख उपजाया। विच सहँस मुख रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाल अवस्था अचरज खेल आप कराया। सन्त मनी सिँघ शब्द जणाए। प्रभ अबिनाशी हुक्म सुणाए। गुरमुख सिँघ संग रलाए। निहकलंक सीस उठाए। सर अमृत पहुंचे जाए। दर दरबार बूझ बुझाए। आपणा घर बाहर आप सुहाए। हरि हरि हरि प्रभ हरिमन्दिर आए। सन्त मनी सिँघ साचा सन्त साचा कर्म कमाए। बांहों पकड़ साचा सन्त निहकलंक मंजी साहिब उप्पर बिठाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा धाम सुहाए। अमृतसर दे उठे पुजारी। कलिजुग जीव दुष्ट दुराचारी। मदिरा मास करन आहारी। दर गुर भोगण सर्ब नर नारी। बेमुखां मति कलि गई मारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि करे ख्वारी। अचरज खेल आप खिलंता। साचा प्रभ सच वरतंता। कोई ना जाणे जीव जन्ता। प्रभ साचा सच थाएँ रहंता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत जोत सरूप पूरन भगवन्ता। आपणा भेव आप छुपाया। सर अमृत एह खेल रचाया। दर दरबारी। दर दरबारी धक्के लाया। संग सन्त मनी सिँघ बाहर कढाया। साचे प्रभ सच शब्द उपजाया। सन्त मनी सिँघ कलम उठाया। लिखाया लेख मिट ना जाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर अमृत एह सराफ दवाया। अन्तकाल कलि प्रगटी जोत बेमुखां दे सजाया।

सन्त वाक भविख्त सति कराई। लिख्या लेख ना कोई मिटाई। सर अमृत जो लिख्त कराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वक्त कलिजुग लए जोत प्रगटाई। अमृतसर साचा सर। राम दास तेरा साचा घर। कलिजुग जीव आपणा बचन गए हर। वेले अन्त अन्तकाल आपणा किया लैण भर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सम कमाया शब्द शब्द लिखाया आण भुगताया अवतार नर। गुर अर्जन एह लिख्त लिखाई। हरि जू हरिमन्दिर विच आई। निहकलंक एह कल वरताई। बेमुखां कलि सार ना पाई। कलिजुग जीव होए दुःख दाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त दे सजाई। अमृतसर सराफ दवा के। घनकपुरी बैठे आ के। साचे सन्त शब्द जणा के। पुरी अनन्द दा हुक्म सुणा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाल अवस्था साचा कर्म कमा के। पुरी अनन्द डेरा लाया। आप आपणा खेल रचाया। सन्त मनी सिँघ सर्ब सुणाया। निहकलंक कलि जामा पाया। कूचो कूच आप सुणाया। वाली दो जहान विच मात दे आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि नाउँ धराया। पुरी अनन्द प्रभ साचा जाए। गुर गोबिन्द जिथ्थे गया गंवाए । एका ओट निहकलंक रखाए। कलिजुग अन्तिम प्रगट जोत होए जोत सरूप खेल रचाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी अनन्द चतुर्भुज आप अख्वाए। साचे सन्त पाई दुहाई। पुरी अनन्द दी सुणे लोकाई। अवतार नर जोत प्रगटाई। कल्गीधर आप अख्वाई। सरन आओ सर्ब माई भाई। वेला गया फिर हत्थ ना आई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची खेल आप रचाई। साचे सन्त शब्द जणाया। आपणा भाणा आप सुणाया। नीला बाणा सन्त बणाया। प्रभ साचे दे गल पहनाया। आपणे सीस सन्त उठाया। अमाम मैहन्दी नाउँ रखाया। गली गली विच फिराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन काम बाल अवस्था आप कराया। बाल अवस्था खेल करा के। कलिजुग जीवां माया पा के। भरम भुलेखे जगत भुला के। झूठी देह आप तजा के। जोत सरूपी जोत मिला के। एका जोत जोती जोत प्रगटा के। जोत सरूपी जोत प्रभ गुरमुख साचे रक्खे विच मिला के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नांउँ धरा के। देह तजाए जोत प्रगटाए निहकलंक अख्वाए। जोत सरूपी जामा पाए। साची जोत विच मात टिकाए। दिवस रात प्रभ इक्क कराए। साचा नात सोहँ जगत रखाए। उठ प्रभात जो जन रसना गाए। विच कुक्ख मात फेर ना आए। प्रभ साचा बख्शे साची दात, जन्म मरन दा गेड़ कटाए। नपुंसक होए जो जन। झूठा दिसे जगत धन। आत्म बुझी जोत अन्धेर मन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म बन्ने साचा बंन। आत्म सति धीरज धर। आत्म सति जोत कर। साचा वत्त बीज हरि। पूरन मति प्रभ देवे कर। साचा सति प्रभ सरन तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि हरयावला देवे कर। प्रभ साचा, राह। साचा प्रभ बेपरवाह। साचा प्रभ अगम्म

अथाह। साचा प्रभ जन कोई बूझे ना। साचा प्रभ निमाणयां निताणयां पकड़े बांह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन भुल्ले नाह। सच दर द्वार पुकारा। आत्म दुःख जीव दुख्यारा। उपजे सुख प्रभ देवे जोत अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा सच दरबारा। सच द्वार सच दरबार। सच दातार सच करतार सच वरतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सच करे विहार। आत्म सच्ची ना होए कच्ची। गुरमुख साचे प्रभ साचा शब्द लिखाए सच सच्ची प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म धीर धराए, दीर्घ रोग गंवाए, चिन्ता सोग मिटाए दिवस रैण रहे जो लगी । आत्म चिन्ता आप मिटाए। सुणे बेनन्ती आप रघुराए। एका तिनका जोत टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दया कमाए। दया कमाई वेख वेख कर। लेख लिखाए वेख वेख कर। कलिजुग जीव भुल ना जाए। कलिजुग माया वेख वेख कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए बुध बिबेक एक कर। एका बुद्धि होए बिबेक। एका राखो चरन टेक। कलिजुग अग्न लगाए सेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दुःख मिटाए, नाड़ी बहत्तर सुफल कराए, हुक्म सुणाए साचा एक। सच्चा हुक्म सच्चा फ़रमाण। देवे आप वाली दो जहान। भगत भगवान इक्क रंग समाण। एका आण एका ताण विच जहान। एका ताण एका माण पिता पूत समान। देवे वड्याई दुःख मिटाई देही रोग गंवाई प्रभ बली बलवान। दुःख दर्द मिटाए सुख उपजाए मुख रखाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। साचा दरस आप दिखाए। साचा मार्ग जगत लगाए। साचा मार्ग सति कर मन्नणा। आत्म साची धीरज बंनणा। प्रभ अबिनाशी सति कर मन्नणा। आप रंगाए आपणी रंगणा। आपणे रंग आप रंग। साचा दरस गुर दर मंग। मदिरा मास झूठा संग। अन्तकाल धर्म राए कराए नंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे सजाए थाएँ ना पाए, मानस जन्म हो जाए भंग। साचा प्रभ सांतक सीतला। गुरमुख साचे तेरा साचा मीतला। प्रभ साचे दी साची रीतला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग मानस जन्म कलिजुग जीतला। मन वैरागी, जगत त्यागी, होए वैरागी, प्रभ सेवा लागी दूज भागी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ जपाए आत्म धोए पापां दाग़ी। आत्म रस जिस जन जाणयां, पूरन ब्रह्म आप पछाणयां। आत्म रस जिस जन वखाणयां, रसना रस आत्म रस माणयां। आत्म रस जिस जन जाणयां, प्रभ अबिनाशी होए वस, देवे दरस प्रभ भगवानयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले कलि पछाणयां। प्रभ साचा कलिजुग भेख। साचा प्रभ सच कर वेख। चरन ना लाग वेखा वेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जगत भेख। साचा प्रभ सच वरतारा। जूठ झूठ प्रभ दर निवारा। हत्थ ठूठ जगत भिखारा। रंग अनूठ प्रभ चरन दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन जाणे

सच सच निरँकारा। निरँकार निरँकार निरँकार। करे करावे आप करतार। जोत जगाए विच मात सद गिरधार। भगत प्रगटावे दरस दिखावे सिध्ध मार्ग पावे नाम जपावे आपणी किरपा धार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साचे पूर्ब कर विचार। पूर्ब विचार गुरसिख कर। साचा प्रभ फेर वर। आपणा आत्म सुहाए साचा घर। सोहँ उपजे खुल्ले दर। प्रभ अबिनाशी आवे तेरे आत्म साचे घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाए दरस दिखाए हरस मिटाए अवतार नर। आत्म घर आप वसावणा। भरम भुलेखा सर्ब मिटावणा। वेखा वेख ना सीस झुकावणा। अछल्ल छल प्रभ आप करावणा। वल छल विच ना आवणा। आपणा आप जीव समझावणा। मदिरा मास ना रसन लगावणा। साचा वास जिस विच रखावणा। दुखड़ा नास तन करावणा। विच प्रभास चन्दन बिरख गुरसिख लगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा राग गुरमुख साचे तेरी आत्म विच उपजावणा। साचा प्रभ सच लिखाए। वक्ख वक्ख वक्ख कराए। कक्ख कक्ख कक्ख बणाए। भक्ख भक्ख सृष्ट सबाई भक्ख हो जाए। गुरमुख साचे वेख प्रभ आपणी सरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन दया कमाए। जिस जन प्रभ दया धारे। आपे जाए काज संवारे। साचा देवे शब्द अधारे। भुल जायण जो जन गंवारे। प्रभ साचा करे आप ख्वारे। सोहँ शब्द मार मारे। वेले अन्तकाल अन्त कलि दर दुरकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन मनों विसारे। मन तन सति कर मन्न। आप मिटाए आपणा जन। प्रभ अबिनाशी बेड़ा जाए बन्नृ। साचा शब्द सुणाया कन्न। कलिजुग जीव ना होए अन्नृ। जगत तृष्ना जलाए तन। आत्म होई रहे सदा दुरगण। झूठा ठूठा प्रभ जाए भन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सति सति कर मन्न। वक्त सुहाए आप प्रभ, आपणी जोत प्रगटाए। वक्त सुहाए आप प्रभ, आपणी बणत बणाए। वक्त सुहाए आप प्रभ, गुरसिख साचे चरन बहाए। वक्त सुहाए आप प्रभ, दर घर आए भिच्छया पाए। वक्त सुहाए आप प्रभ, पूरन इच्छया आप कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन चरनी सीस झुकाए। बणत बणाए आप प्रभ, रमईआ रामा। बणत बणाए आप प्रभ, घनईआ शामा। बणत बणाए आप प्रभ, निहकलंक कलि पहरया जामा। बणत बणाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना, बणत बणाए आप प्रभ, दर्द दु:ख भय भंजन। बणत बणाए आप प्रभ, चरन धूढ़ देवे साचा अंजण। बणत बणाए आप प्रभ, आप बणाए गुरसिख साचे सज्जण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन दर दरबार आए हरि हरि गाए प्रभ साचा भय भंजन। बणत बणाए गणत गिणाए। जीव जन्त उपाए जोत जगाए। आप उपाए आप मिटाए। आपणी खेल आप रचाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन देवे सो जन प्रभ दर पाए। आसा मनसा प्रभ साचा पूरे। जो जन आए चरन

हज़ूरे। खाली भरे भण्डार, करे आप भरपूरे। दुःख ना पाए दूजी वार, दर आया सतिगुर पूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच द्वार सर्ब जनां दी आसा पूरे। जीव जन्त आप उधारी। साचा कन्त जोत निरँकारी। एका जोत जगत पसारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे दुखीआ आपे भुखीआ आपे करे कारी। खट्ट रोग प्रभ गंवाया। हाकन डाकन सिर मुंडवाया। निर्मल तन आप कराया। साचा धन प्रभ झोली पाया। मिटाया जन जन सरनी आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुःख कुक्ख सर्ब गंवाया। दुःख रोग प्रभ मिटाए। साचा सुख आप उपजाए। आत्म भुक्ख सर्ब गंवाए। दुखीए जीव जो रहे बिल्लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। जीआ दान प्रभ साचे दिया। आप रखाए जगत निया। साचा अमृत प्रभ दर पीआ। निर्मल कराए प्रभ साचा सीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुःख मिटाए सुख वखाए सच घर सच दर आत्म जोत जगाया दिया। प्रभ साचा सच वखाणदा। वाली दो जहान दा। हुण वेला भुल बख्शाण दा। रुल रुल नहीं वक्त लँघाण दा। वेला अन्तकाल कलिजुग आया जगत मिटाण दा। एका मंग दरस प्रभ साचे भगवान दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेला दरसन पाण दा। साचा प्रभ अखुट्ट भण्डारा। साचा प्रभ आप वरतारा। साचा प्रभ जगत दातारा। कोटन कोट खड़े दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर वसे राह साचा दस्से जोत सरूपी जोत निरँकारा। साचा दर जन पछाण। आत्म विच मार ध्यान। बैठा प्रभ गुणी निधान। कलिजुग जीव होए निधान। प्रभ अबिनाशी ना करन पछाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां दा जाणी जाण। साचा जन सच दर परवान। जो जन जाणे गुण निधान। एका रंग जाणे चतुर सुजान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा दर साचा घर करे सर्ब पछाण। साचा घर उच्च दरबार। एका जोत आप निरँकार। पूरन कर्म रिहा विचार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां दी पावे सार। कर्म विचार आप कर। भगत उधार साचा हरि। चरन लाग जीव जाए तर। बेमुख जायण भाग प्रभ दर आए साचा डर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत निरँजण अवतार नर। आपणा आप जीव सुधार। पूरन ब्रह्म कर विचार। साचा धर्म विच संसार। मानस जन्म ना आए दूजी वार। मदिरा मास तज अहार, मिले आप सच करतार। दर दर घर घर ना होए ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर जाए तार। आपणी आत्म आप सोध। प्रभ अबिनाशी वड वड बोध। गुरमुख साचे सन्त प्रभ साचा जाए सोध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द लिखाए अगाध बोध। साचा शब्द जो जन मन्ने। प्रभ अबिनाशी बेड़ा बन्ने। जोत जगाए दरस दिखाए माण रखाए जिउँ माल चराए धन्ने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द सुणाए कन्ने। कन्न सुण आत्म पुन लगाए

धुन जीव चुण महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सच वरताए लिखाए भुगताए जीव जन्त ना जाणे तेरे गुण। गुणवन्त गुण निधाना। पूरन प्रभ आप भगवाना। वेख विचारा चतुर सुजाना। जगत सुधारे काज संवारे जिस जन साचा माना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी पहरया बाणा। पूरन सुख आत्म रास। रसना तजाओ मदिरा मास। प्रभ दर मंगण दरस अबिनाश। घट घट घट वसे सर्ब घट रक्खे वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुखियां दुःख मिटाए साचा सुख उपजाए जन्म कराए रास। सोहँ साचा बाण लगाए। आप आपणी आण रखाए। गुरमुख साचा जाण प्रभ दया कमाए। भगत भगवान प्रभ मेल मिलाए। चतुर सुजान प्रभ दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन पड़े दी लाज रखाए। साचा प्रभ सच घर आया। दर घर साचा गुरमुख पाया। हिरदे वाचा प्रभ दया कमाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सेवा लाया। आप आपणी सेवा लाए। एका ओट चरन रखाए। कोटन कोट प्रभ पाप गंवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साची चोट प्रभ शब्द लगाए। साचा प्रभ सच सुणाया। आप आपणा भरम चुकाया। साचा कर्म गुरसिख कमाया। एका वरम शब्द कराया। बजर कपाट खोल्ह वखाया। झूठा आन बाट प्रभ मेट मिटाया। झूठा तन प्रभ आत्म साची जोत जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस आप रघुराया। दरस देवे दया कर। गुरमुख साचे साचे वर। जोत प्रगटाए अवतार नर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खुल्हाए दस्म दर। दस्म दर आप खुल्हाया। आत्म जिंदा तोड़ वखाया। अमृत बूंद मुख चुआया। कँवल नाभ आप उलटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म गुरसिख लिखाया। मुख कँवल बूंद चुआए। स्वांतक सांत आप वरताए। भांती भांत जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म बुझी दीप गुरसिख साचे प्रभ करे रुशनाए। आत्म दीप प्रभ जगाया। सच समीप विच समाया। वड महीप दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत एको एक एक कर, आप आपणा बिरद रखाया। जीव जन्त प्रभ उपाए। जोत सरूपी विच समाए। आदिन अन्त दिस ना आए। साधन सन्त रिहा दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा जगत छुपाए। आपणा आप प्रभ छुपाया। कलिजुग जीवां भरम भुलाया। ना कोई वेखे वेख वखाया। लाए लेखे जिस जन दया कमाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे मार्ग गुरसिख साचा लाया। साचे मार्ग आप लगाए। आप आपणी दया कमाए। आत्म साचा ज्ञान दवाए। चरन ध्यान आप रखाए। गुण निधान सद विच समाए। वड वड मेहरवान दया कमाए। जो जन सरनी डिगे आण, प्रभ पकड़ उठाए। गुणवन्त गुण निधान, जोत सरूप विच समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा जिस जन दया कमाए। गुरसिख गुर आप सहारा।

आपे देवे नाम अधारा। आपे पावे आत्म सारा। आप जगाए जोत अपारा। आप रहाए विच टिकाए देही महल्ल मुनारा। कलिजुग जीव भेव ना पाए, जोत सरूपी प्रभ अकारा। गुरमुख साचे प्रभ दर आए, सोहँ शब्द भरे भण्डारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे शब्द अधारा। शब्द आधार गुरसिख रखाया। विच संसार आप वड्आया। जन्म संवार गर्भवास कटाया। किया पार नां देर लगाया। साची सार जिस जन सरनी सीस झुकाया। आत्म होए अधार प्रभ साचा रसनी गाया। कलिजुग ना होए ख्वार, निहकलंक सच तेरी सरनाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर सिर हत्थ धुर साचा दिया प्रभ साचे वर, आप आपणा नाम जपाया। साचा नाम जो जन गाए। जगत माण प्रभ रखाए। देवी देव विच वड्याए। साची सेव चरन कमाए। अलक्ख अभेव दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सिर तेरे हत्थ टिकाए। सुरती सुरत सुरत ज्ञाना। आत्म सुरत शब्द उपजाणा। साची मूर्त इक्क भगवाना। नूरो नूरत विच जहाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा पहरया बाणा। रसना गाए माण रखाए। पुरख अबिनाशी प्रभ अबिनाशी देखे देख भरम भरम भुलाए। गुरमुख साचे प्रभ साचा लेखे लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए। रसना जप स्वास स्वासा। पूरन प्रभ पुरख अबिनाशा। जोत जगाए आत्म रासा। देवे दरस सर्ब घट वासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म भरे भण्डार, सदा सदा हिरदे रक्खे वासा। हिरदे वास प्रभ रखाया। सच निवास प्रभ सच घर दवाया। पुरख अबिनाश विच समाया। पूरन आस गुरसिख कराया। बलि बलि बलि जास जिस जन हरि हरि हरि रिदे वसाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाया। दरस देवे गुरसिख गुरमुख दोए। प्रभ साचा सोहँ धागे लए परोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप जगाए गुरमुख सोए। साचे प्रभ सच पुरख उपाए। सति पुरखां विच आप समाए। आप आपणा विच छुपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव जन्त जोत सरूपी दिस ना आए। ना दिसे ना वेख वखाणे। कलिजुग जीव भुल्ले अञ्याणे। गुरमुख विरले सुघड़ स्याणे। सद ही चल्लण प्रभ के भाणे। साचा रंग प्रभ दर माणे। आप रखाए आपणी आणे। जगत जगाए बाल अञ्याणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस मिटाए हरस गुणवन्त गुणी निधाने। ऊँच अगम्म अपर अपार। पूरन ब्रह्म करे विचार। साचा धर्म आप करतार। खोटे कर्म कलिजुग कल होयण ख्वार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ मारे मार। दुष्टी दुष्ट दुराचार। जगत करन कुकर्म विहार। साचा धर्म गए विसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खपाए दुष्ट दुराचार। दुष्ट दुराचारां करे ख्वारा खण्डा दो धारा। खण्डा दो धारा प्रभ साचे मारा। साचा शब्द आप उचारा। दुखियां दुःख सर्ब निवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, जो जन मंगण आए दुआरा। शदौण माई पौण खाण पीण किस की चाटी किस का मधाण आपे होए आप प्रधान। माई गौरज़ां वड बली बलवान। सोहँ रखाए प्रभ एका आन। दुःख मिटाए वाली दो जहान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब चुकाए झूठी कान। किंगरे किंगरे मृदंग वजाया। इक्क आपणा रंग आप वखाया। माई गौरज़ां दुध्ध गंवाया। मक्खण मधाण बन्नृ वखाया। भगत भगवान दया कमाया। दुष्ट दुराचारां दे सजाया। साचा दर फेर वसाया। एका शब्द मुख रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर गोरख तेरा माण गंवाया। मूंड मुंडाए कन्न पड़वाए। जलंधर मच्छन्दर आप अख्वाए। जोत कलंदर जीव बन्दर प्रभ आप नचाए। साचे मन्दिर प्रभ साची जोत जगाए। कलिजुग काया झूठी कंदर अन्ध अन्धेर फेर रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। गुर प्रसादि गुर दर आए। गुर प्रसादि प्रभ दया कमाए। गुर प्रसादि अनाद अनादी वड ब्रह्मादी दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत भोग लगाए। भोग लगाए आप प्रभ, आपणी जोत जगा। भोग लगाए आप प्रभ, मात जोत प्रगटा। भोग लगाए आप प्रभ, साची दया कमा। भोग लगाए आप प्रभ, साध संगत दए वरता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ थांईं होए सहा। गुर संगत गुर दर परवान साध संगत चतुर सुजान। गुर संगत प्रभ देवे माण। साध संगत प्रभ सच पछाण। गुर संगत होए दरबान। साध संगत प्रभ साचा पाया, आत्म दुःख गंवाया, सर्ब सुख प्रभ दर ते पाया, देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। साध संगत तेरी बन्द खलासी। मिल्या प्रभ घनकपुर वासी। दरस परस मिटाई हरस प्रभ साचा सद बलि बलि जासी। साध संगत प्रभ उतारी सर्ब उदासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म कराए रासी। साध संगत तेरी आत्म रास। गुर संगत प्रभ रक्खे वास। गुर संगत प्रभ वसे पास। साध संगत मिल्या प्रभ अबिनाश। गुर संगत तजाए रसन ना लाए मदिरा मास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कराए रास। मानस जन्म जगत सुधार। गुर चरन प्रीती सच प्यार। सरबजीत सदा जग जीती, मिल्या मोख द्वार। प्रभ साचे दी सच प्रीती, सद सद सद जाओ चरन बलिहार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा साध संगत कलि जाए तार। साचे घर प्रभ साचा आया। साचा दर आप सुहाया। अवतार नर जोत सरूपी जामा पाया। एका हरि गुरमुख साचे विच सद समाया। आप खुल्हाए दस्म दर, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाया। कर दरस तन मन जाए ठर, प्रभ सांतक सति वरताया। झिरना झिरे अपर अपर, प्रभ निझरों दे झिराया। चरन लाग गुर संगत जाए तर, निहकलंक कलि दरस दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सीतल सति सति सति प्रसादि आप वरताया।

* १५ सावण २००६ बिक्रमी मेरठ छाउणी *

सचखण्ड सच अकारा। एका जोत आप निरँकारा। सचखण्ड रूप अपारा। जोत सरूपी दिसे गिरधारा। जोत सरूप आप निराहारा। एका इक्क एका इक्क ओंकारा। एका एकँकारा। जोत सरूपी लोक तीन पसारा। अलख अगोचर अगम्म अपारा। आप आपणा रक्खे अधारा। मात जोत प्रगटाए आए वारो वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। सचखण्ड सच दुआरा। गुर साचे का सच पसारा। एका आप एका करे अकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत निरँजण नरायण नर अवतारा। सचखण्ड सच वरतंत। एका जोत जगे प्रभ भगवन्त। गुरमुख विरले मात वसाए प्रभ साचा सन्त। बैठे आप अडोल सद सदा इकन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत निरँजण भेव ना जाणे कोई जीव जन्त। जोत निरँजण मात अकारे। निहकलंक कलि जामा धारे। घनकपुरी करे उज्जयारे। लिखावे शब्द अगम्म अपारे। अचरज खेल पारब्रह्म न्यारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि खेल रचावे, सुरत शब्द दवावे, गुरसिख जगावे देवे शब्द हुलारे। शब्द हुलारा आपे दिया। गुरसिख आत्म जोत प्रभ जगाया दिया। प्रभ साचे का साचा हिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सच उपजाए जगत वरताए सोहँ नाम झोली पाए सतिजुग रखाई साची निया। सतिजुग साचा सति लगावणा। आपणा कर्म प्रभ आप करावणा। साचा धर्म मात चलावणा। कलिजुग कूड़ा अन्त मिटावणा। बेमुख कलिजुग जीव मूढ़ां, प्रभ गूढ़ी नींद सुलावणा। गुरसिखां देवे प्रभ चरन धूढ़, दरस अमोघ प्रभ आप दिखावणा। आत्म रंग चढ़ाए गूढ़ो गूढ़, निहकलंक प्रभ साचा पावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत विच मात जोत सरूपी अचरज खेल आप वरतावणा। अचरज खेल आप वरताए। जोत सरूपी जामा पाए। सृष्ट सबाई प्रभ भुलाए। गुरमुख साचे कँवल नभ अमृत बूंद मुख चुआए। देवे दरस प्रगट जोत साचा कर्म अन्तकाल प्रभ आप कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप विच मात दे आए। जोत सरूप प्रभ जामा धरया। गुरमुख विरले कलिजुग वरया। बेमुख दर ते आए डरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पार उतारे जन्म संवारे जो जन सरनी परया। साचे प्रभ साची सरन। गुरमुख साचे कलिजुग तरन। बेमुख कलिजुग अन्तिम अन्त मानस जन्म हरन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि जोत प्रगटाई सृष्ट भुलाई गुरसिख वधाई देवे वड्याई दर दर दर प्रभ माण रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त प्रगट जोत गुरमुख साचे तेरा होए आप सहाई। साचा प्रभ सदा सहाया। आवण जावण खेल रचाया। पतित पावन आप अख्वाया। बावन रूप जिउँ भेख वटाया। गुरमुख साचे तेरे आत्म अमृत मेघ प्रभ सावण आप वरसाया। महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी प्रगट जोत निहकलंक कलि जामा पाया। जोत सरूपी जामा धर। अचरज खेल करे अवतार नर। गुरमुखां भउ चुकाए ना आए डर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन कलिजुग ल्या वर। साचा प्रभ जिस जन वरया। मानस जन्म कलिजुग हरया। पूरन कर्म प्रभ सरनी परया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दिखाए तरस मिटाए तरस कमाए गुरमुख साचे तेरे दर दरबान प्रभ साचा खड़या। आए चल दर द्वार। धरे जोत इक्क करतार। गुरमुख साचे पूर्ब कर्म विचार। निहकलंक घर आया, मूर्ख मुग्ध ना करन विचार। भरम भुलेखे आप भुलाया, बेमुखां दर दे दुरकार। कलिजुग जीवां प्रभ रुलाया, आपणा आप आप भुलाया, गूढ़ी नींद आप सुलाया, मदिरा मास करन अहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत अन्तिम अन्तकाल कलिजुग करे सर्ब ख्वार। कलिजुग अन्तिम होए ख्वारी। आया कलि प्रभ निरँकारी। जामा धारे भगत अधारी दुष्ट सँघारी । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द चलाए बेमुख खपाए आप उठाए खण्डा दो धारी। सोहँ खण्डा साची धारा। कलिजुग जीआं करे ख्वारा। बेमुखां आत्म लाया आरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त मिटाए कोई रहण ना पाए विच मात दुष्ट दुराचारा। दुष्ट दुराचार प्रभ दर ख्वार। दर दर बिल्लायण होयण ख्वार। आपणा आप जीव ना पायण, भुल्लया प्रभ साचा करतार। अन्तकाल कलि खाली हत्थ जायण, कोई ना होए अन्त सहार। गुरमुख साचे साचे दर आयण, देवे दरस प्रगट जोत जोत सरूप आप निरँकार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साचे तेरा बेड़ा कर जाए पार। सतिगुर साचा बेड़ा बन्न्। सोहँ शब्द सुणावे कन्न। गुरमुख साचे आप तराए चरन लगाए जगत वड्याए, सोहँ शब्द सुणाए कन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड वड दया कमाए, गुरसिख साचे तेरी आत्म जाए मन्न। गुरमुख साचा आप बणाए। गुरमुख साचा आप तराए। गुरमुख साचा आप वड्याए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी विच समाए। गुरमुख साचे सच घर पाया। गुरमुख साचे प्रभ डेरा लाया। गुरमुख साचे दर दरबान बहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत चौथे जुग सवरन माण दवाया। गुरसिख तेरी धन्न कमाई, दर साचे प्रभ सेव कमाई। गुरसिख तेरी धन्न कमाई, साची धुन आप उपजाई। गुरसिख तेरी धन्न कमाई, जोत सरूप प्रगट जोत आत्म जोत करे रुशनाई। गुरसिख तेरी धन्न कमाई, एका धुन साची अनहद आप उपजाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात देवे वड्याई। मातलोक प्रभ वड्याए। आप आपणी दया कमाए। गुरमुख साचे चरन लगाए। हरन फरन प्रभ आप खुल्हाए। तारन तरन आप अख्वाए। मरन डरन भउ चुकाए। एका चरन जन ओट रखाए। सोहँ शब्द चोट प्रभ आप लगाए। हउमे कढ्ढे आत्म खोट, जो जन चरनी आए। कलिजुग जीव आलणिओं

डिगे बोट, कलिजुग ना कोई फेर टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत निहकलंक जोत सरूपी जामा पाए। जोत सरूपी जामा पाया। कलिजुग जीआं भरम भुलाया। बेमुखां प्रभ दिस ना आया। गुरसिखां उतारे आत्म भुक्ख, प्रगट होए दरस दिखाया। सुफल कराई मात कुक्ख, निहकलंक जिस चरनी सीस झुकाया। निहकलंक कलि जामा धारया। जोत सरूपी भेख वटा रिहा। वड वड वड आप अख्वा रिहा। बिन रंग रूप गुरसिख समा रिहा। विच अन्ध कूप जोत जगा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी प्रगट जोत गुरमुख साचे स्वच्छ सरूप प्रभ दरस दिखा रिहा। गुर पूरा रंग अनूपा। गुर पूरा सति सरूपा। गुर पूरा ना दिसे रंग रूपा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा जाणे रूपा। आपणा आप आपे जाणे। कलिजुग जीव ना कोई पछाणे। मदिरा मासी होए अज्याणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि प्रगट जोत सोहँ शब्द चलाए बाणे। सोहँ शब्द बाण चलाए। जगत माण सर्ब गंवाए। एका आण आप रखाए। कलिजुग झूठी काण सर्ब चुकाए। एका बख्शे चरन ध्यान, काहन घनईआ जोत प्रगटाए। गुरमुख विरले चरनी डिगे आण, जिस आत्म जोत प्रभ जगाए। बेमुखां कलि आई हाण, प्रभ साचा नज़र ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अछल अछल्ल छल कर सर्ब भुलाए। आप भुलाया आप डुलाया। आप तुलाया आपणा आप, कलिजुग जीवां अन्तिम अन्त आपणा आप गंवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत निहकलंक अन्तिम दे सज़ाया। अन्तिम अन्त आप प्रभ आए। साचा कन्त जोत प्रगटाए। माया बेअन्त जगत विच पाए। झूठे जीव जन्त प्रभ सर्ब भुलाए। गुरमुख साचे सन्त सुरत शब्द प्रभ आप जगाए। बैठे अडोल आप इकन्त, निहकलंक कलि जामा पाए। प्रभ की माया बड़ी बेअन्त, जोत सरूपी कलि खेल वरताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप इकन्त महिंमा गणी ना जाए। सुरत शब्द मेल मिलाए। सुरत शब्द प्रभ आप जगाए। सुरत शब्द गुरसिख उठाए। सुरत शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। सुरत शब्द देवे ज्ञाना। सुरत शब्द उपजावे प्रभ भगवाना। सुरत शब्द देवे गुणवन्त गुण निधाना, सुरत शब्द गुरमुख जाणे। प्रभ दर माणे होए सुघड़ स्याणे। आत्म जोत जगावे प्रभ महाना, कलिजुग जीव होए अज्याणे। मदिरा मास रसन लुभाणे। अन्तकाल कलिजुग भुन्ने जिउँ भठयाले दाणे। गुरसिखां उपजाए एका शब्द धुन, बांहों पकड़ प्रभ आप उठाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जोत प्रगटाए तख्तों लाहे राजे राणे। राजा राणा तख्तों लाहे। जोत सरूपी शब्द लिखाए। लिख्या लेख मिट ना जाए। एका ओट आप रह जाए। सृष्ट सबाई जुगो जुग प्रभ साचा दे खपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत निहकलंक कलि नाउँ धराए। साचे प्रभ सच कर्म कमाणा। जोत सरूपी भेख वटाणा।

आपणा आप जगत छुपाणा। तख्तों लाहे राजा राणा। एका आण आप रखाणा। सोहँ चलाए साचा बाणा। वरन चार प्रभ सरन लगाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कलिजुग अन्तिम आप कराणा। चार वरन सरन लगाए। वरन बरन मेट मिटाए। एका सरन निहकलंक आपणी आप रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त प्रगट जोत कलिजुग निहकलंक कलि नाउँ धराए। चार वरन इक्क कराणा। ऊँच नीच प्रभ मेट मिटाणा। वेखा वेख जगत भुलाणा। गुरमुख साचे प्रभ लिखे लेख, सतिजुग साचा दीपक आप जगाणा। प्रभ अबिनाशी नेत्र पेख, आत्म संसा रोग मिटाणा। जोत सरूपी किया भेख, निहकलंक कलि पहरया बाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा नाम धराणा। इक्क आपणा नांउँ धराए। देह तजाए जोत सरूपी जोत समाए। जोतो जोत जोत आप प्रगटाए। एका जोत एका गोत आप हो जाए। गुरमुख साचे खोल्हे सोत, जोत सरूपी दरस दिखाए। आत्म मैल दुरमति धोत, प्रभ साचे दा दर्शन पाए। आत्म जगे निर्मल जोत, जिस जन दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे हिरदे विच समाए। जोत सरूपी विच समाया। आप आपणा विच टिकाया। कलिजुग जीआं भरम भुलेखे आप भुलाया। जो जन रहे वेखा वेखे, प्रभ अबिनाशी दिस ना आया। मानस जन्म लगाए लेखे, जो जन सरनाई आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेख वटाया। भेख वटाए भेखा धारी। जगत डुलाए आप गिरधारी। जगत वड्याए शब्द अधारी। गुरमुख जगाए सोहँ शब्द दे भण्डारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए अन्ध अंध्यार मिटाए निहकलंक नरायण नर अवतारी। अन्ध अन्धेर गुरसिख मिटावणा। सञ्झ सवेर इक्क करावणा। इक्क दीपक जोत जगावणा। वड वड समीप प्रभ विच समावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म आप करावणा। साचा प्रभ साचा कर्मा। प्रभ साचे का साचा धरमा। गुरमुख साचे चरन लाग, आप संवारे आपणा जन्मा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत प्रगटाए लेख लिखाए गुरमुख साचे कर्मा। साचा कर्म आप कराए। लिख्या लेख प्रभ मिटाए। बिधना लेख जो रही लिखाए। अलख अलेख ना लिख्या जाए। वेखा वेख जगत भुलाए। देखे आप ना देख्या जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कृष्ना कलि मातलोक कलि जामा पाए। कलिजुग तेरा होए अन्त। जोत प्रगटाए प्रभ भगवन्त। चार कुन्ट बिल्लायण सर्ब जीव जन्त। नीर तरसाए कोई थां ना पाए, पै जाए दुहाए ना कोई धीर धराए चीर लुहाए बैठे अडोल आप इकन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए देवे वड्याए, पंचम जेठ मिले वधाए, रसना गाण विरले साध सन्त। पहली माघ सतिजुग साचे नींह रखाई। सृष्ट सबाई आप भुलाई । कलिजुग तेरी मिटी वड्याई। धुन्कार अन्ध अंध्यार जीव जन्त ख्वार करे

गिरधारा आप मुरारा सद निराहार करे अकार विच संसार, गुरमुख साचे प्रभ जाए तारी। प्रगट जोत खिच ल्याए दर दरबार, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, नरायण नर अवतारी। कलिजुग तेरा अन्त अख़ीर। प्रभ अबिनाशी लाहे चीर। एका शब्द चलाए तीर। चार कुन्ट पै जाए वहीर। कोई ना देवे कलिजुग जीवां धीर। बिरधां बाल अञ्याणयां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत माण गंवाए आप मिटाए जगत भुलाए रहण ना पाए कोई पीर दस्तगीर पैगम्बर औलीआ फ़कीर। आपणा शब्द आप चलाया। अन्तिम अन्त जुग चौथा आण कराया। माण अथर्बण वेद प्रभ साचे आप मिटाया। कुरान अञ्जील कोई रहण ना पाया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक विच मात जोत सरूपी जामा पाया। अन्तिम अन्त आप करावणा। आप आपणा भेख मिटावणा। निहकलंक प्रभ नाम रखावणा। जोत सरूपी विच मात कर्म कमावणा। मेट मिटाए आप खपाए अंजील कुरान अन्तिम जुग रहण ना पाए, माण गंवाए वेद पुराना। सतिजुग साचा मार्ग लाए, बेमुख खपाए गुरसिख उपजाए, सोहँ साचा शब्द वरतावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म विच मात आप करावणा। आपणा कर्म आप कराए। जुगो जुग प्रभ जोत प्रगटाए। मात पताल अकाश सद रहाए। जोत सरूपी सर्ब समाए। वड वड भूपी प्रभ आप अख्वाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाए। निहकलंक जोत निरँकार। निहकलंक इक्क करतार। निहकलंक आप अधार। निहकलंक जोत सरूप जुगो जुग विच मात लए अवतार। निहकलंक जोत निरँकारा। निहकलंक रूप अपारा। निहकलंक राम अवतारा। निहकलंक जोत गिरधारा। निहकलंक सर्ब अधारा। निहकलंक जुगो जुग प्रगट जोत विच मात लए अवतारा। निहकलंक जोत अकारे। निहकलंक सद निराहारे। निहकलंक आप मुरारे। निहकलंक कृष्न मुरारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग अन्तिम जुग जामा विच मात दे धारे। निहकलंक एका अंक। निहकलंक एका डंक। निहकलंक जोत अटंक। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाए हरस मिटाए आप कढाए आत्म शंक। आत्म संसा आप निवारे। जो जन आए चल दरबारे। प्रभ अबिनाशी जोत अपारे। जुगो जुग प्रभ साचे दी साची कारे। जन भगतां प्रभ पार उतारे। दोए जोड़ चरन करन निमस्कार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे दरस दुतर पार उतारे। गुरसिख दुतर तरना। प्रभ अबिनाशी लागे सरना। अन्तिम अन्त ना होए मरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दिखाए दया कमाए विच जोती मेल मिलाए, आप बहाए साचे दरना। साचा दर सच दरबारा। दिसे आप एकँकारा। गुरमुख विरला पावे सारा। जिस जन देवे अमृत आत्म साची धारा। देवे धार होए उज्जयार, मिटे अंध्यार देवे खोल्ह दस्म दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप गुरमुख साचे पूरन करे विचारा। आप विचारे

गुरसिख तारे। आप विचारे गुरसिख उधारे। आप विचारे देवे दरस जोत सरूप अपारे। आप विचारे मिटाए हरस गुरमुख आए चरन दुआरे। आप विचारे गुरमुख आत्म धुन देवे साची धुन्कारे। आप विचारे गुरमुख साचे तेरी खुल्ले सुन्न, आए प्रभ दुआरे। कलिजुग पकड़ उठाए प्रभ साचा सरन लगाए, निहकलंक दया कमाए, कलिजुग विरले चुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी कोई ना जाणे तेरे गुण। प्रभ गुण कवण विचारे। कलिजुग जीव अन्ध अंध्यारे। आपणी आप ना पायण सारे। प्रभ अबिनाशी मनों विसारे। आत्म उदासी सदा पुकारे। सचखण्ड निवासी सदा गिरधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप प्रगटाए जोत विच मात एका आप करतारे। एका आप जोत जगाई। चार कुन्ट होए रुशनाई। सोहँ प्रभ धुन वजाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका अंक एका डंक चार वरन चार कुन्ट देवे आप वजाई। एका डंक आप वजाया। राउ रंक इक्क कराया। रंकां पकड़ प्रभ आप उठाया। जोत सरूपी लाए तनक, आप आपणा लए प्रगटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त महीना जेठ विच मात लिखाया। महीना जेठ कलिजुग जीव कौड़े रेठ। प्रभ मिटाए वड वड सेठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए विच मात टिकाए सोहँ शब्द आप उपजाए। साची धुन धुर दरगाह प्रभ साचे आप उपजाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे नाउँ पै

१७४ ०२

जाए दुहाई। महीना जेठ आए जग। शब्द अन्धेरी जाए वग। अग्न जोत लगाए अग्ग। वड वड बली बलवान, प्रभ मिटाए पकड़ शाह रग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल वरताए जोत प्रगटाए, आपे देखे देख दिखाए, गुरमुख साचे चरन लगाए हँस बणाए कग। महीना जेठ मात लिखाया। महीना जेठ प्रभ वड्आया। महीना जेठ निहकलंक कलि जामा पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त देवे अन्त कराया। चौथा जुग आए बग। प्रभ अबिनाशी सदा अभग्ग। सर्ब घट वासी आप अलग्ग। घनकपुर वासी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई कराए सग्ग। सृष्ट सबाई होए सोग। आत्म लग्गा हउमे रोग। सोहँ छड्डुया साचा जोग। आत्म वस्सया झूठा भोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए आप खपाए आप उपाए आप बणाए आप तराए गुरमुख साचे देवे दरस अमोघ। जेठ महीना जगत जित। प्रभ साचे दा साचा हित। एका प्रभ साचा मित। जोत प्रगटाए विच मात आए भगत हित नित नवित्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई सार ना पाए, आपणा आप गए जीव भुलाए, गुरमुख प्रभ आप तराए साचा किया हित। सन्त जनां प्रभ दया कमाए। सन्त जनां प्रभ विच समाए। सन्त जनां प्रभ आप उठाए । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे दर वड्याए। सन्त जनां देवे वड्याई। सन्त जनां आप सहाई। सन्त जनां प्रभ शब्द जणाई। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरन लगाई। सन्त जनां सद बलिहारा। सन्त जनां दिसे आप निरँकारा। सन्त जनां एका देवे शब्द अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप दवाए मोख दुआरा। सन्त जन साचे सुत्त। आप उपजाए प्रभ अचुत। सन्त जनां संग साचा हित। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए, बजर कपाट खुल्हाए, अज्ञान अन्धेर सर्ब मिटाए, आप सुहाए साची रुत्त। साचा दर जन कोई वखाणे। साचा घर गुरमुख पछाणे। अवतार नर जिस दरस दिखाणे। देवे सोहँ साचा दान जीव जाए तर, मिल्या प्रभ भगवाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे चरन ध्याने। एका देवे चरन ध्याना। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना। सोहँ देवे वड दानी दाना। रसना जपे पुरख सुजाना। आत्म जोत जगे महाना। एका दिसे विष्नूं भगवाना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जनां दी आपे जाना। आपे जाणे आप पछाणे। आप चलाए आपणे भाणे। गुरसिख साचे सुघड़ स्याणे। देवे वड्याई दर दरबार बहाई, होए सहाई वड बली बलवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन साचा जाणे। साचा माण आप पछाण। देवे माण दर परवाण। अन्तिम अन्त जोती जोत मिल जाण। सचखण्ड सच दर प्रभ माण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे अन्तिम अन्त आत्म देवे शब्द बबाण। गुरमुख साचे रसना गाणा। होए सहाई आप भगवाना। देवे वड्याई गुरमुख साचे धाम प्रभ बहाणा। पूरन काम आप कराणा। एका जाम प्रभ सोहँ पिलाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक साचा कर्म कमाणा। साचा कर्म आप कमाए। साचा धर्म आप चलाए। साचा ब्रह्म आप अख्वाए। झूठा भरम आप गंवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि नाउँ धराए। झूठा भरम आप गवा के। निहकलंक जोत प्रगटा के। पुरी घनक प्रभ भाग लगा के। माझा देस किया भेस साचा वेस जोती जोत प्रगटा के। निहकलंक अन्तिम अन्त खेल आपणी आप जाए वरता के। आपणी जोत जगाए महाना। जोत सरूपी पहरया बाणा। करे कराए आप, प्रभ का खेल ना किसे पछाणा। सर्ब सृष्ट माई बाप, एका एक आप भगवाना। एक चलाए सोहँ जाप, कलिजुग भेख सर्ब मिटाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द लिखाए जगत वरताए, झूठयां ठूठयां हत्थ फड़ाए विचारे गुण गुणवन्त गुण निधाना। गुणवन्त गुण निधान। आपे आप चतुर सुजान। जीव जन्त सर्ब अञ्याण। अन्तिम अन्त करे सम्मत प्रभ साचे दी साची बाण। कलिजुग खेल वरताए, लिखाए लिख्त सर अमृत थेह कराए, सत्तर लक्ख चढ़े पठान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, लिखाए लेख आप महान। कक्ख कक्ख कक्ख लक्ख लक्ख लक्ख इक्क हो जाए। रक्ख रक्ख रक्ख गुरमुख साचे प्रभ आप रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त अचरज खेल विच मात वरताए। अन्तिम अन्त आपे कर। सृष्ट सबाई करे

दो धड़। एका जोत जगाई अवतार नर। आपणा किया कलिजुग जीव लैण भर। मानस जन्म विच मात जायण हर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सच सच वरताए भुगताए निहकलंक अवतार नर। साचा कर्म आपे करना। आप देवे आपणी सरना। जो जन सेवे प्रभ खोल्हे हरना फरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक वड धरनी धरना। निहकलंक नर अवतारा। जोत सरूपी जगत पसारा। सति सरूपी किया अकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग कर्म धर्म जरम आप विचारा। कलिजुग कर्म आप विचारया। साचा धर्म अन्तिम अन्त हारया। झूठा जरम प्रभ आप निवारया। साचा ब्रह्म आप अपारया। साचा धर्म जगत चला रिहा। साचा कर्म निहकलंक कमा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा नाम विच मात आप टिका रिहा। सोहँ नाम साचा जाम। पूरन काम करे राम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क जपाए इक्क कराए इक्क धराए इक्क वरताए एका एक एक हो जाए। दूसर कोई रहण ना पाए। राउ रंक इक्क थां बहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलंकनिह कलि नाउँ रखाए। निहकलंक निहकलंक निहकलंक अग्न मेंह। सृष्ट सृष्ट सृष्ट सर्ब थेह। कलिजुग जीव होए खेह। इस हत्थ दे इस हत्थ ले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन काम आप करे। आपे करे पूरन काजा। सृष्ट सबाई जिस साजन साजा। वडा आप वड वड राजन राजा। कलिजुग जोत प्रगटाए निहकलंक विच देस माझा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाउँ रखाई, पावे दुहाई सुणे लोकाई, रिहा शब्द लिखाई वाक भविख्त ना बिरथा जाई, लिखाई लिख्त ना मेट मिटाई, जोत जगाई वड लाजन लाजा। वड बली आप बलवाना। प्रभ अबिनाशी वाली दो जहानां। सभ सृष्ट विनासी, एका मारे सोहँ बाणा। जन भगत आत्म दरस सदा उदासी, देवे दरस आप भगवाना। जो जन होए मदिरा मासी, नर्क निवास प्रभ रखाणा। दर आयण कर कर जायण हासी, साचा प्रभ करे पछाणा। जो जन जपे रसन स्वास स्वासी, साचा रंग प्रभ आत्म आप रंगाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राउ रंक रंक राउ इक्क रंग समाणा। राउ रंक इक्क वरतार। राउ रंक इक्क दरबार। राउ रंक इक्क करतार। राउ रंक इक्क सिक्दार। राउ रंक इक्क वरतार। राउ रंक इक्क दातार। राउ रंक इक्क आधार। राउ रंक इक्क द्वार। इक्क शब्द देवे जन विरला लेवे, प्रभ अबिनाशी रसना सेवे, प्रभ साचे दर साचे मेवे, सोहँ शब्द सच्ची धुन्कार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख पूर्ब कर्म तेरे लए विचार। पूर्ब लहणा दर साचे लैणा। सोहँ देवे प्रभ आत्म गहणा। रसना जप जप जीव आत्म रस पीव देवे दरस प्रभ तीजे नैणां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप रहाई, झूठे वहिण आप वहाई, गुरमुख साचे प्रभ दर लैण लहणा। कलिजुग जीव भाण्डे काचे, दर आए नाचे, भेव ना जाणे प्रभ साचो

१७७ ०२

साचे, शब्द ना हिरदे वासे, अग्न जोत प्रभ लाए तमाचे, झूठी रसना झूठा कहण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चतुर सुजान गुण निधान भगत भगवान आप दवाए भिख्या पाए, तृप्त कराए जो जन आए सोहँ साचा लहणा लैण। सोहँ साचा प्रभ साचे दिया। पूर्ब जन्म बीज जो बिया। रसना रस आत्म वस, राह साचा प्रभ जाए दस्स, जप जीव सद होए वस, निर्मल कराए जीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए, कपाट बजर खुल्लाए, आत्म जोत आप जगाए, विच ललाट करे रुशनाए आन बाट विच फेर ना आए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाया दिया। आत्म जोत करे प्रकाश, अज्ञान अन्धेर विनास। आत्म होए गुरमुख रास। प्रभ साचे विच किया वास। भगत जनां सद होए दास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म गुरमुख कराए रास। मानस जन्म आप विचार। प्रभ साचे दी साची सार। वेला अन्त ना भुल गंवार । कलि जोत प्रगटाई प्रभ भगवन्त, वेला हत्थ ना आए दूजी वार। गुरमुख जगाए प्रभ साचे सन्त, एका देवे शब्द धुन्कार। आप बणाए साची बणत, जो जन करे चरन निमस्कार। देवे वड्याई विच जीव जन्त, रसना तजाए मदिरा मास अहार। होए सहाई प्रभ साचा कन्त, बांहों पकड़ कलि जाए तार। आप बणाए गुरमुख तेरी बणत, जोत सरूप विच दिसे आप गिरधार। महाराज शेर सिँघ वरते वरतावे चले चलावे करे करावे विच आप संसार। साचा प्रभ वड संसारी। साचा प्रभ वड गिरधारी। साचा प्रभ जोत निरहारी। साचा प्रभ एका एकँकारी। साचा प्रभ जोत सरूप जोत निरँकारी। साचा प्रभ मात जोत प्रगटाए, निहकलंक नाउँ धराए, जोत सरूपी जामा पाए वड वड वड आप दरबारी। साचा प्रभ वड दरबारी। साचा प्रभ वड भण्डारी। साचा प्रभ कोटन कोट खड़े द्वारी। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत एका एकँकारी। साचा प्रभ वड सिक्दारा। साचा प्रभ सच विहारा। साचा प्रभ सच जगत अधारा। साचा प्रभ सृष्ट सबाई करे पसारा। साचा प्रभ एका एक एका एकँकारा। साचा प्रभ आप अडोल। साचा प्रभ अखुट्ट अतोल। साचा प्रभ अतुल अतोल। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द लिखाए जगत वरताए, सृष्ट सबाई खपाए सोहँ आप वजाए ढोल। उठ जीव जाग प्रभ जोत जगाए। उठ जीव जाग प्रभ विच मात दे आए। उठ जीव जाग, साचा नात प्रभ चरन रखाए। उठ जीव जाग प्रभ चरन लाग ना लाए दाग़, अन्तिम अन्त पकड़े तेरी वाग, निहकलंक होए सहाए। उठ जीव जाग, वेला सच। उठ जीव जाग, प्रभ भगत सुहेला सच। उठ जीव जाग, प्रभ मिलण दा वेला सच। उठ जीव जाग, अचरज खेल पारब्रह्म खेला सच। उठ जीव जाग, प्रभ साचे दी सरनी लाग, निहकलंक आपणा आप कराए मेला सच। उठ जीव जाग, प्रभ सच मिलावा। उठ जीव जाग, प्रभ दर आए जोत प्रगटाए निहकलंक नाउँ रखाए, साचा

रक्ख प्रभ मिलण दा दाअवा। उठ जीव जाग, प्रभ सोहँ लाए जाग, साचा नाउँ सद रसना गावा। उठ जीव जाग, निहकलंक जोत प्रगटाई। भेख वटाई रेख कलि मिटाई। सतिजुग लेख रिहा लिखाई। सोहँ साची नईआ विच मात चलाई। चार वरन कराए भैणां भाई। निहकलंक तेरी सच वड्याई। सतिजुग साची नींह रखाई। सोहँ सच प्रभ आप बिजाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक विच मात देवे साची दात, सोहँ वड करामात, आत्म मार झात, जोत सरूपी जोत प्रभ गुरमुख तेरे हिरदे रिहा समाई। उठ जीव जाग, कलि जन्म गंवाया। उठ जीव जाग, क्यों भरम भुलाया। उठ जीव जाग, आपणा आप क्यों माया ममता विच रुलाया। उठ जीव जाग, हउमे हँगता रोग लगाया। उठ जीव जाग, प्रभ साचा सच लगाए अंगता, आत्म रंग मजीठ चढ़ाए, बेमुख दर फिरे मंगता, साचा नाम झोली किसे ना पाया। उठ जीव जाग, कलिजुग जागण तेरे भाग, रल साची संगता, निहकलंक होए सहाया। कर दरस गुरसिख साचा पार लँघाए, जिस जन प्रभ साचा दया कमाया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त साध सन्त बणाए बणत साचा कन्त होए आप सहाया। उठ जीव जाग, मंग सच्ची मंग। उठ जीव जाग, प्रभ साचे दे लाग अंग। उठ जीव जाग, आत्म धो दाग़, प्रभ गंवाए भुक्ख नंग। उठ जीव जाग, अनहद सुण साचा राग, प्रभ दर आए मूल ना संग। सोहँ लगाए प्रभ आत्म अवाज़, आपणे रंग प्रभ जाए रंग। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख साचे सदा सहाई अंग संग। साचा प्रभ सदा अंग संगा। साचा प्रभ वड सूरा सरबंगा। साचा प्रभ आत्म वजाए सोहँ साचा मृदंगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख रंगाए आपणे रंगा। आपणे रंग आप रंगाए। साचा संग गुर संगत बणाए। दर दर मंगत नष्ट कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म आपणा आप जाए कराए। साचा कर्म आपे कर। पार ब्यासों चरन धर। शब्द अकाशों देवे धर। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई अवतार नर। पार ब्यासों चरन धरा के। मस्तूआणा साचा धाम उपा के। राणा संगरूर संग रला के। जमन किनारे प्रभ साचा आ के। शब्द सुरत वड सन्त जगा के। अकाल मूर्त आपणी बणत आप बणा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द आपणी सरन आप लगा के। वाली हिन्द सरन लगा के। जोत सरूपी मेल मिला के। बिन बाती बिन तेल, आत्म साचा दीप जगा के। अचरज किया खेल, जोत सरूपी भेख वटा के। प्रभ साचे दर साचा मेल, गुरसिखां मिलाए आप मिला के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द माण दवाए, आपणी सरन आप लगा के। आपणी सरन आप लगावणा। निहकलंक कलि जोत प्रगटावणा। साचा कर्म प्रभ आप करावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा आप उपावणा। आपणा आप आप उपा के। वाली

हिन्द सरन लगा के। वड वड मृगिन्द माण गवा के। गुणी गहिंद आप अख्वा के। आपणी जोत आप प्रगटा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाए, शब्द लिखाए दर दरबार खुल्हा के। साचा दर दरबार लगाणा। साचा कर्म प्रभ आप कराणा। सतिजुग साचा शब्द लिखाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म आप कमाणा। साचा शब्द आप लिखावे। साचा शब्द आप खुल्हावे। साचा शब्द आप वरतावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई देवे आप वड्याए। साचा लग्गे वड दरबारा। धरे जोत आप करतारा। निहकलंक लए अवतारा। वाली हिन्द खड़ा दुआरा। सुणे शब्द अगम्म अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राजस राज आप राज धारा। राजस राज आप वड राजा। सृष्ट सबाई आपे साजा। एका शब्द उपजाए सतिजुग सोहँ अवाज़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द आप रखाए लाजा। साचा प्रभ वड सिक्दारा। गुरमुख साचे सन्त आयण चल दुआरा। आप बणाए आपणी बणत सच्ची सरकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वरते वरतावे विच संसारा। सोहँ तेरी साची धारा। एका वरते विच संसारा। आप वरताए चलाए खण्डा दो धारा। गुरमुख उपाए सोहँ देवे नाम अधारा। बेमुख खपाए सोहँ मारे शब्द कटारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। नरायण नर नर नरायण। साचा घर साचा दर गुरमुख विरले प्रभ दर बहण। प्रभ अबिनाशी देवे साचा वर, जो जन प्रभ दर आए पैण। कलिजुग जीव जायण तर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जो जन पेखे नैण। नेत्र पेख आत्म वेख। जोत सरूपी प्रभ दा भेख। प्रगट जोत साचा प्रभ विच मात गुरमुख तेरी फेर लगाए मेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप तराए पार लँघाए, सोहँ साची नईआ आप चढ़ाए गुरमुख साचे कलिजुग वेख वेख। गुरसिख प्रभ आपे तारे। बेमुख प्रभ आप सँघारे। गुरमुख सोहन प्रभ दर दुआरे। बेमुख प्रभ दर दुरकारे। गुरमुख सोहँ रसना जै जै जैकारे। बेमुख मदिरा मास रसन अहारे। गुरमुख आत्म जोत जगाए आप निरँकारे। बेमुख आत्म अन्ध अंध्यारे। गुरमुख जगाए उठाए किरपा कर आप गिरधारे। बेमुख रुलाए आप सवाए सुत्ते पैर पसारे। गुरमुखां देवे एका जाम एक नाम आप करतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए चरन निमस्कारे। चरन द्वार साचा धामा। पूर कराए प्रभ साचा कामा। एका जोत जगाए रमईआ रामा। आपणा आप प्रगटाए घनिया शामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि पहरया जामा। गुरमुख घर साचा पाया गुरमुख प्रभ आप बुझाया। गुरमुख दर द्वार प्रभ आप खुल्हाया। गुरमुख अधार प्रभ जोत रखाया। गुरमुख अकार प्रभ आप कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप वड्आया। गुरमुख गुर एका रंग। गुरमुख गुर एका संग। गुरमुख प्रभ दर मंगे साची मंग। गुरमुख

कर दरस निहकलंक पार जाए लँघ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद अंग संग। साचा प्रभ सगला साथा। आपे रक्खे दे कर हाथा। साचे लेख लिखावे माथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, त्रैलोकी नाथा। अनाथन अनाथ आप अखवईआ। साथन साथ गुरसिख रखईआ। राथन राथ सोहँ साचे राथ प्रभ आप चढ़ईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, त्रैलोकी नाथ आप अखवईआ। तीन लोक प्रभ आपे वरते। साचा प्रभ सच कल वरताए उप्पर धरते। कलिजुग गुरमुख आयण दर ते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पार उतारे विच संसारे जो जन सरनी परते। तीन लोक प्रभ अकारा। एका जोत एकँकारा। विच अकाश रूप अपारा। प्रभ अबिनाश जोत अधारा। विच मात होए देह धारा। छड्डे देह आप अपारा। जोत सरूपी रंग करतारा। जीव जन्त ना पावे सारा। साचा प्रभ सर्ब पसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन चरन करन निमस्कारा, एका देवे नाम अधारा। विच पाताली सेज सुखाली, नैण मुधाली बाशक संघाली लछमी पाली। जोत सरूप जोत प्रभ आपणा आप आप उपाए। आलस निंदरा मगरों लाहे। जोती जोत सद डगमगाए। प्रभ की खेल सद निराली, एका जोत डगमगाए। एका जोत अग्ग लगाए। एका जोत जगत जगाए। एका जोत जीव जन्त रहाए। एका जोत साध सन्त आप टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत प्रभ, जामा विच मात दे पाए। जोत जोत जोत प्रभ जोत इकागर। जोत जोत जोत प्रभ जोत वड सागर। जोत जोत जोत प्रभ वड जोत रत्नागर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए गुरमुख तराए निर्मल कर्म करे उजागर। जोत जोत जोत वरतंत। जोत जोत जोत सर्ब जीव जन्त। जोत जोत जोत एका जोत प्रभ भगवन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी आप उपाए गुरमुख साचे सन्त। जोत जोत जोत प्रभ जोत जगाए। जोत जोत जोत प्रभ साध सन्त उठाए। जोत जोत जोत प्रभ साचे कन्त मिलाए । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध सन्त अन्तिम अन्त एका जोत एका गोत आप हो जाए। साध सन्त एका जोती। प्रभ उपाए गुरमुख साचे कलिजुग माणक मोती। सृष्ट सबाई अन्तकाल कलि रही सोती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वक्त ल्याए कहर वरताए, वेला गया हत्थ ना आए, उठावण ना देवे टोपी धोती। वेला वक्त आपे करना। आपणा कर्म कलिजुग जीआं आपे हरना। गुरमुख साचे आयण चल प्रभ साचे तेरे सरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए माण रखाए आपे आप चार वरनां। चार वरन आयण सरनाई। साचे दर मिली वड्याई। साचा घर प्रभ लए बहाई। अवतार नर वडी वड्याई। कल्गी धर आप अख्वाई। साचा छत्र सीस झुलाई। वाली हिन्द दर दरबान रखाई। एका आण निहकलंक चार कुन्ट हो जाई। गुर गोबिन्द तेरी पति अन्तिम अन्त कलंकनिह आप रखाई।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा धारे विच संसारे, वड गिरधारे वड सिक्दारे कृष्न मुरारे एका रक्खे आपणी आप सरनाई। दस दस दस गुर अवतरा। एका जोत नर हरि हरा। एका मंगण साचा दर दरा। साचा प्रभ पूरन भण्डारे भर भरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप निरँजण जोत निहकलंक नरायण नर नर हरा। नर हरि हरि नर। मातलोक आए जामा धर। सृष्ट सबाई कर जाए सर। चार वरन एका एक कर। सोहँ साचा नाम रसना आप उचर। सतिजुग साचे देवे वड्याई, साची दात प्रभ झोली पाई, सोहँ दिया साचा वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई निहकलंक अवतार नर। अवतार नर जोत धर। आप बणाया विच मात साचा दर। एका नात चरन रखाया, चार वरन दिखाया साचा घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए, राजा राणा सरन लगाए, मस्तूआणा धाम न्यार। चार वरन एका दुआरा। तारन तरन भगत भण्डारा। छुहाए चरन कलंकनिह नरायण नर अवतारा। मिटाए डरन जो जन आए प्रभ चरन दुआरा। कारन करन आप गिरधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग उपजाए मस्तूआणा साचा सच दुआरा। सच दर वड दरबारा। धरे चरन आप निरँकारा। पूरन कर्म सतिजुग विचारा। साचा धर्म जगत अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाए। सृष्ट सबाई लेख लिखाए। कलिजुग झूठा भेख मिटाए। सतिजुग साची मेख लगाए। मस्तूआणा आप उपजाए। राणा संगरूर प्रभ सरन लगाए। चरन धूढ़ मस्तक छुहाए। आत्म गरूर सर्ब मिटाए। आए हज़ूर सीस झुकाए। नूरो नूर प्रभ जोत जगाए। दूरो दूर प्रभ आप हो जाए। वड सूरन सूर सिर हत्थ टिकाए। सर्ब कला भरपूर आत्म भरपूर कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म विच मात प्रगट जोत निहकलंक आप कराए। मस्तूआणा धाम अटल। प्रभ अबिनाशी आए चल। जगत भुलाए कर कर वल छल। गुरमुख उठाए दर घर जाए जिउँ राजा बल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त आपणी खेल वरताए कलि। मस्तूआणे आपे प्रभ आ। साध संगत संग रला। साची रंगत नाम चढ़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बहाए साचे थां। साचा धाम जगत न्यारा। धरे जोत आप करतारा। सच सच सच करे वरतारा। रच रच रच गुरमुख हिरदे रच, आत्म जोत करे उज्जयारा। वाच वाच वाच गुरमुख साचे रसना वाच, प्रभ मिटाए अन्ध अन्धयारा। बेमुख दर आए नच्च नच्च नच्च, मूर्ख मुग्ध ना जाणे प्रभ दी सारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचो सच्च, निहकलंक नरायण नर अवतारा। निहकलंक तेरा दर। निहकलंक साचा घर। निहकलंक जोत हरि। निहकलंक गुरमुख मंगण तेरा दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणा उपजावे साचा सर। साचा धाम आप उपावणा। दिवस चाली प्रभ शब्द लिखावणा। रैण दिवस दिवस रैण प्रभ इक्क करावणा। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हँकारीआं आत्म विकारीआं सर्ब माण गंवावणा। दिवस चाली शब्द लिखाए। निहकलंक खेल वरताए। साचा डंक आप वजाए। राउ रंक आप उठाए। दिसावे बंक जोत सरूपी शब्द जणाए। एका अंक सोहँ साचा जगत धराए। सर्ब मिटाए आपे शंक, सुख आसण बैठे डेरा लाए। गुरमुख तराए जिउँ जगत जनक, निहकलंक कलि दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल मस्तूआणे अन्तिम अन्त कलिजुग आपणी आप कराए। मस्तूआणा साचा नूर। चार वरन आए दूरो दूर। अठसठ तीर्थ मेट मिटाए कलिजुग गंवाए कूड़ो कूड़। गंगा गोदावरी नीर खिचाए, एका सरन रखाए निहकलंक चरन धूढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणा साचा धाम उपजाए, अमृत साचा जाम प्याए, चतुर सुजान आप बणाए जो जन आत्म मूढ़। कलिजुग जीव आत्म अन्ध। एका मनक आत्म कंध। आप गंवाया निजानंद। रसना ना गाया प्रभ अबिनाशी जीव भुलाया आप गंवाया परमानंद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि लए छुडाया, जो जन आए सरनाया। भुल बख्शाए रसना बोले विच्चों बत्ती धार। माता सीर अमृत अपार। एका अमृत आत्म साचा तीर प्रभ चरन द्वार। आत्म देवे साची धीर, सोहँ देवे प्रभ शब्द अधार। हउमे विच्चों कढ्ढे पीड़ जो जन रसना लए उचार। आत्म वज्जे शब्द तीर झूठा बजर देवे पाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत निहकलंक अन्तिम कलि गुरमुख साचे जाए तार। तारनहार आप दयाला। भगत जनां सद सद रखवाला। आत्म देवे सोहँ साची माला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद सदा गुरमुख साचे तेरा सद रखवाला। प्रभ साचे दी साची सरना। चरन लाग गुरमुख कलिजुग तरना। बेमुख कलिजुग जीव आपणा किया आपे भरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म झिराए साचा झिरना। अमृत झिरना झिरे अपारा। एका बूंद जीव अधारा। देवे खोल्ह सच दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन रसन उचारा। आप आपणी सरन रखाए। लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। सचखण्ड निवासी सचखण्ड निवास रखाए। सर्ब घट वासी आप आपणी दया कमाए। घनकपुर वासी निहकलंक कलि नांउँ धराए। सृष्ट सबाई कराए दासी, चार वरन आए सरनाए। जो जन होए मदिरा मासी, गुर साचा दे सजाए। गुरमुख साचे आत्म रहिरासी, गुर साचा दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत प्रकाशी, कलिजुग अन्धेर सर्ब मिट जाए। साची सरन प्रभ सरनागत। गुरमुख साचे आपे जाणे तेरी गति मितक। प्रभ साचे का साचा हित। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन लाग मानस जन्म कलि जाए जित। सरन लाग सर्ब सुख। कर दरस उतरे भुक्ख। प्रभ उतारे आत्म दुख। कलिजुग जीव होए बेमुख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत निरँजण वड वड सूखम सूख। सूखम सूख आप वड सुखिया। भूखम भूख भूख आप

वड भुखिया। दूखम दूख दूख आप वड दुखिया। सूखम सूख उपजाए साध सन्त तेरी आत्म कराए सुखिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत निरँजण गुरसिख उधारे आप निरँकारे पूर्ब करे विचारे सुफल कराए मात कुखिया। मात कुक्ख सुफल कराओ। निहकलंक कलि दर्शन पाओ। आत्म संसा रोग मिटाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत धर आत्म साचा दीप जोत जगाओ। दीपक जोत आप जगाए। गुरमुख साचे प्रभ साचा दया कमाए। आपे ढाले साचे ढांचे जो जन सोहँ रसना गाए। कलिजुग जीव भाण्डे काचे, अन्तिम अन्त कलि प्रभ साचा भन्न वखाए। गुरमुख साचे धन्न धन्न धन्न जिन आत्म गया मन्न, प्रभ साचा सेव कमाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे, गुरमुख गुरसिख साचे सन्त उपजाए। साची धुन गुर दरबारे। मंगण मंग दिल उमंग, रसन ना मूल उचारे। प्रभ अबिनाशी सद आत्म संग, आत्म जीव सदा विचारे। सोहँ देवे साचा रंग, प्रभ साचा खाली भरे भण्डारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए मंगण तेरे दुआरे। साचा धन प्रभ साचे घर। साचा जन बणाए हरि। एका जोत टिकाए जगाए करे रुशनाए, हरया होवे मन तन। एका शब्द उपजाए एका राग सुणाए कन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। आत्म दुःख मिटाए। एका सुख उपजाए। तृष्ना भुक्ख रहण ना पाए। काहना कृष्ना दया कमाए। ब्रह्मा विष्न जिस रहे ध्याए। प्रगट जोत जोत सरूप विच मात दे आए। प्रभ साचा रंग ना रूप महिंमा अनूप गुरमुख साचे विच समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक साचा डंक एका अंक चार वरन एका सरन आपणी आप रखाए। साचा दर पाए वड भागा। प्रभ साचे दी सरनी लागा। बेमुख कलि सोया, गुरमुख साचा प्रभ दर जागा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द सुणाए धुन उपजाए आप आपणी अनहद अनरागा। अनहद राग आप उपाए। गुरमुख साचे जो जन रसना गाए। हिरदे वसणा प्रभ दरस दिखाए। कोटन कोट कोट रवि ससिणा प्रभ जोत जगाए। बेमुख आत्म अन्धेर जिउँ चन्द मस्सणा, प्रभ अबिनाशी दिस ना आए। गुरमुख साचे रसना जप आत्म रस रसना, अमृत आत्म प्रभ मुख कँवल नाभ चुआए। बेमुख कलिजुग जीव निहकलंक तेरे दर तों रुशना, सोहँ शब्द प्रभ तीर चलाए। गुरमुख साचे प्रभ अबिनाशी तेरे आत्म दीप जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनकपुर वासी निहकलंक कलि जामा पाए। साचा प्रभ वड वड दाता। साचा प्रभ सर्ब का ज्ञाता। साचा प्रभ गुरमुख साचे साचा बख्शे चरनी नाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले कलि पछाता। साचा प्रभ वड वड ख़ज़ीना। साचा प्रभ वड प्रबीना। साचा प्रभ दाना बीना। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए आप मिटाए मुहम्मदी दीना। दीन मुहम्मदी आप मिटाए। सच ब्रह्म दी जोत जगाए। सच धर्म दी नींह रखाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे

विच मात जन्म दवाए। अल्ला अलाहू नूर मिटाए। पीर दस्तगीर कोई रहण ना पाए। चार यारां वक्त चुकाए। पंच प्यारां विच समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे तेरी साची बणत बणाए। पंचम होए आप प्रधाना। पंचम होए जगत वडाना। पंचम देवे वड वड्याई प्रभ गुण निधाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम पंचम पंचम वड्याए, विच मात समाए होए जगत वक्त सुहाना। साचा प्रभ सर्ब पित माता। साचा प्रभ आत्म जोत जगाता। साचा प्रभ सृष्ट सबाई एका दाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा सतिजुग बख्शे साचा नाता। साचे प्रभ साची कार। साचे प्रभ सच विहार। साचा प्रभ सच सरकार। साचा प्रभ सच वरतार। साचा प्रभ सोहँ चार कुन्ट कराए जै जै जैकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सच करे जगत वरतार। सच सुच्च करे वरतारा। सच सुच्च भरे भण्डारा। सच सुच्च जीव जन्त विच पसारा। सच सुच्च देवे आप गिरधारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच करे वरतारा। सतिजुग होए सांतक सति। सतिजुग कराए आपे सति। मति मति मति गुरमुख साचे देवे साची मति। यति यति यति रहाए एका देवे सोहँ तत्त। एका सति आप रखाए आत्म देवे साची मति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे सोहँ चलाए तराए सति सति सति। सतिजुग चले धीरन धीरा। सतिजुग पले प्रभ अमृत पिलाए वड सीरन सीरा। सतिजुग चले प्रभ साचा दर गुरमुख साचे प्रभ आत्म देवे शांत नीरन नीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत प्रगटाए, एका ओट रखाए, सोहँ जोत जगत जगाए वड वड शाह पीरन पीरा। दीन दुनी दा आपे राखा। गुरमुख साचे सच शब्द प्रभ दर भाखा। लिखाए लेख अलक्खणा अलाखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव जन्त सच साची साखा। आपे आप आप वड दाता। आवे आप जीव जन्त सर्ब पित माता। आपे आप प्रभ पुरख बिधाता। आपे आप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव जन्त सद विच समाता। विच समाए, दया कमाए, सरन लगाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची मति आत्म पाए। साची आत्म करे विचारा। प्रभ दर आए करे निमस्कारा। मंगे दान आण भण्डारा। देवे माण विच संसारा। भगत भगवान सदा अधारा। जो जन आए चरन निमस्कारा। सच सच आप उपजाए, सच सच आत्म समाए, पूरन आस आप कराए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। आप आपणी दया कर। प्रभ अबिनाशी देवे वर। गुरमुख साचा जाए तर। खाली भण्डारे जाए भर। जो जन चल आया दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग लगाए तेरे घर। साचे दर भाग लगाए। साचे घर सुख उपजाए। अवतार नर दया कमाए। मंगया दान दानी दान आण भगवान प्रभ झोली पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चतुर सुजान आप अख्वाए। प्रभ साचा सच सुहेला। प्रभ साचा घर

साचा मेला। प्रभ साचा देवे दान वड गुणी गुहेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निमाणयां निताणयां सदा संग सुहेला। साचा प्रभ सुख उपजाए। दुःख भुक्ख नेड़ ना आए। आत्म सुख सदा दिसाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन पड़े दी लाज रखाए। साचा प्रभ कर्म विचारे। दुखियां दुःख सुणे मुरारे। आत्म सुणे सच पुकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए चरन निमस्कारे। चिन्ता फिकर उदासी झोरा। दिवस रैण रहे थोड़ा थोड़ा। ना मिले बहण सदा सदा घनघोरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए तोरा मोरा। आत्म जीव सदा दुखदाई। अद्ध विच सदा घिगआई। अग्गा पिच्छा दीसे नाही। पूरन इच्छा ना कोई कराई। चारे दिसां रहे फिराई। पूरन भिच्छा प्रभ साचे पाई। मदिरा मास रसन तजाई। साचे घर वज्जे वधाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द देवे उपजाई। बाल जवानी गई बीत। ना कोई मिल्या कलिजुग साचा मीत। आत्म होई ना अज अतीत। कलिजुग झूठी देखी सृष्ट सबाई प्रीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन दर आए संसा चुकाए प्रभ साचा परखे साची नीत। साचे प्रभ पुरख बिधाते। जीव जन्त दर तेरे मंग मंगाते। देवे घर वसा, दर आवे डर सुंञे रहे अकल्ल इकांते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा साचा दर, पतित पापी जायण तर, जो जन आए भुल बख्शाते। साचे प्रभ सच वड्याई। साचा दर इक्क रघुराई। वसाए घर जन होए सहाई। खोल्ले दर जो बन्द रखाई। किशना सुखला पक्ख अन्धेर गंवाई। नाड़ी बहत्तर प्रभ रोग मिटाई। आत्म इकत्तर प्रभ चरन लगाई। सत्तर बहत्तर प्रभ दे वड्याई। साचा पितर जग नाउँ रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द लिखाए, हुक्म सुणाए, आप समझाए, जीव भुल ना जाए, मदिरा मास रसना मूल ना लाई। साचा प्रभ हरि हरि हरि हरा, आप अभुल्ल जीव भुलाए। आप अडुल जीव डुलाए। आप अभुल्ल जीव भुलाए। आप अरुल जीव रुलाए। जो जन बख्शावे प्रभ दर भुल्ल, प्रभ साचा दया कमाए। सुक्के रुक्खड़े आप लगावे फुल्ल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन मदिरा मास तजाए। पूरन कर्म आप विचारे। प्रभ साचे दी साची कारे। साचा थान प्रभ सुहाए जाए जिस दुआरे। विच मात माण दवाए, देवे वड्याई आप गिरधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान किरपा करे, कर किरपा पार उतारे। साचे प्रभ सच दी कार। गुरमुख गुर एका धार। एका शब्द एका धुन एका धुन्कार। एका सुन एका मुन एका एक आप करतार। गुरमुख उठाए शब्द जणाए आप आपणी किरपा धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए चरन लगाए साचा राग कन्न सुणाए, आत्म आग आप बुझाए। सांतक सुवांत मेघ बरसाए। इकांतक इकांत आपणा आप रखाए। आत्म मार जीव झात, प्रभ साचा तेरे विच समाए। झूठी सृष्ट झूठा नात, अन्तकाल ना कोई सहाए। बिन

प्रभ साचे कोई ना पुच्छे वात, झूठे दिसण मां पिउँ भैण भ्राए। सोहँ देवे प्रभ साची दात, जो जन आए सरनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा दरस दिखाए जो जन मदिरा मास रसन तजाए। मदिरा मास रसन विकारा। अन्तिम करे अन्ध अन्धयारा। जोत सरूपी होए उज्जयारा। कूड़ो कूड़ होए पसारा। मूढ़ो मूढ़ जीव गंवारा। साचा प्रभ मनों विसारा। रसना रस लोभ हँकारा। आत्म रस ना जीव विचारा। प्रभ हिरदे जाए वस, सोहँ जप शब्द अपारा। दर घर आए प्रभ साचा नस्स, आदि अन्त जन भगत उधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लगाए भाग गुरमुख साचे तेरे दर दुआरा। बाल अवस्था काया कच्च। जीव अञ्याणा रिहा मच्च। भेव खुल्हाए आत्म सच। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर्म कमाया भेव खुल्हाया जुल्म कमाया माता होई जच्च। आत्म रोग सभ परवारा। चिन्ता सोग होए ख्वारा। रोगण रोग रोग ना कोई पाए सारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए आप खपाए दुष्ट दुराचारा। दुष्ट दुराचार विभचार झूठा कर्म किया वक्ख, आत्म दु:ख गया लथ्थ, प्रभ साचा मारे मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दु:ख जाए निवार। वल छल जिस कमाया। इन्द्र जाल पाई माया। महांकाल इक्क हलकाया। रिद्धी दाल विच खवाया। दित्ता गाल सरबंस सभा, अंसो अंस दु:ख रखाया। प्रभ अबिनाशी आप विच सहँस, बालक बाल दु:ख मिटाया। दुबिधा रोग जगत लगाया। ताणा पेटा आप उलझाया। गुर चरन छोहया प्रभ दर बख्शाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म सर्ब लिपटाया। आत्म ताणा, आप सुलझावे। आपे आप आप समझावे। साचे मार्ग आपे पावे। मूर्ख मुग्ध अञ्याण कलि प्रभ आपे आप भुलावे। प्रभ गुरमुख गुरसिख चतुर सुजान कर, मति दे आपे समझावे। गुणवन्त दया गुण निधान कर, साचा कर्म कमावे। सर्ब सरबंस साची अंसा, भैणां भईआ मेल कर, प्रभ एका धाम बहावे। ओटं आप एकँकार। ओअँ आप इक्क निरँकारा। ओअँ आप इक, एक एका जोत अधारा। ओअँ आप सोहँ जपावे जाप, गुरमुख आपे आप खुल्हावे तेरा दस्म दुआरा। ओअँ आप सोहँ जपावे दोअँ मिटावे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एकँकार इक्क अकार जोत अधार आत्म विच रखावे। आत्म झाती प्रभ इकांती। जोत जगावे बिन तेल बाती। अमृत झिरना झिरावे बूंद स्वांती। कँवल मुख उलटावे बैठा वेखे आप इकांती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी आत्म त्रैकुटी खुल्हावे सुत्तयां राती। आत्म रक्ख इक्क ध्याना। आत्म रक्ख विष्नूं भगवाना। आत्म वेख वसे गुण निधाना। आत्म रक्ख प्रभ जोत, जोत जोत जगाए महाना। सृष्ट दृष्ट इष्ट एका निहकलंक बली बलवाना। अन्धेर अज्ञान कराए भृष्ट, दया कमाए दर खुल्हाए बजर तुड़ाए जोत जगाए प्रभ बिधनाना। जप जीव सोहँ जाप, पावे प्रभ विष्नूं भगवाना। जप जीव सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरी जै।

जप जीव सति सच प्रभ धराए आत्म जोतै। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरी जै। साची मति प्रभ अबिनाशी गुरमुख साचे दै। सोहँ जप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरी जै। एका तत्त एका सति आत्म सद सद सद रहै। एका जप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरी जै। प्रभ अबिनाशी तेरी आत्म प्रगट जोत दर द्वार अग्गे बहै। एका जप गुरसिख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरी जै। साचा प्रभ साचे दर साचे घर गुरसिख घर आपे आप सद बैठा रहै। ओअँ गुरू जी का, प्रभ बणाए साची मेका। मरू देवा छेआ देवी बाल मेका। गऊ चरदी चरदी बन में आई, माल जोग की अधराई, सत्त काले सत्त सफेद, उत्तर बिछड़ डंक समीता। एका डंक इक्क करीता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रोग सोग सर्ब मटीता। घर घर दर दर हाहाकारी। जीव जीव जीव कलि दुष्ट दुराचारी। एका दूआ करन ख्वारी। पापां मति जीआं मारी। मात गऊ हत्या अत्याचारी। मास बणाया आए द्वारी। होए घर सदा ख्वारी। लग्गी दर इक्क बिमारी। कारा करे सुत्ती नारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खपाए दुष्ट दुराचारी। दर साचे आए आस कर। दुखीआ जीव ना कोई बिल्लाए, सोहँ जपे रसन स्वास स्वास कर। प्रभ आत्म चिन्ता सोग रोग मिटए, साचा शब्द अनुराग धर। एका साची चोग चुगाए, वड वड हँस गुरसिख काग कर। प्रभ साचा बंस बणाए, गुरमुख साचे साज साज साज कर। प्रभ एका अंस चलाए, आप आपणी लाज कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच सहँसा आप वड्याए, आप आपणा काज कर। आत्म अधूरी रसन वसूरी। प्रभ दिसे दूरी वड गरूरी। आत्म दिसे सद भरपूरी। रक्खे जोत नूरो नूरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए गुरमुख आत्म जिउँ कोहतूरी । आत्म घिरना सद दो फाड़। जीआं जन्त भाग माढ़। कलिजुग पापी आप चबाए आपणी दाढ़। आत्म अग्न वड वड तापी, दिवस रैण रैण दिवस सद रही साड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड वड वड प्रतापी, एका अग्न मिटाए बहत्तर नाड़। जन सेव कमाए रसना गाए, प्रभ दुःख मिटाए सुख दिखाए, होए सहाए दरस दिखाए भय भउ चुकाए, एका नाउँ सर्ब चढ़ाए, थाउँ थांई आप बहाए, वाहो दाही ना किसे फिराए। राहो राही न किसे रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सतिजुग उपजाए। दुःख दुख दुःख प्रभ दुःख मिटाणा। दुःख दुख दुःख प्रभ दुःख गंवाणा। दुःख दुख दुःख प्रभ दर रहण ना पाणा। सुख सुख सुख प्रभ सुख उपजाणा। मुख मुख मुख प्रभ साचा सद ही गाणा। जिउँ चन्दन प्रभास गुरमुख साचे प्रभ साचे आप उपजाणा। आप आपणा करे दास, जोत सरूपी दीप जगाणा। काम क्रोध हो जाए विनास, प्रभ साचा करे सच टिकाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूखम दूख सर्ब मिटाणा। निर्धन होए प्रभ दर आ। दुखीआ जीव साची दर दरगाह। साचे दर मारे धाह। माया ममता

दु:ख रोग मिटाए, कोई जाणे नांह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लगाए आप मिटाए आप बणाए ढाहे जीव जन्त सर्ब बणत रिहा बणा। एका दु:ख आत्म घेर। झिरना झिर हेर फेर। नेत्रां अग्गे होए अन्धेर। ना कोई दिसे सञ्झ सवेर। आया आप भुलाए ना जाणे तेर मेर। कुष्टी कुशट उठाए दु:ख लग्गा अपेर। प्रभ साचा दृष्ट कराए ना लगाए देर। सुणे पुकार आप दातार, जन आए दर दरबार। साची करे प्रभ आपे कार। काया दु:ख दे निवार। ऊपजे सुख दीपक उज्जयार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर देवे तार। जीव आया दर। सरनी गया पर। बचन ना जाए हर। काया सीतल प्रभ जाए कर। निहकलंक नरायण नर अवतार। प्रभ साचा सिर रक्खे हत्थ। सर्ब कला सद ही समरथ। आत्म मंगी देवे साची वत्थ। जुगो जुग प्रभ साचे दी महिंमा अकथ्थ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन आस कराए, दासन दास दास होए जन सीस झुकाए, आप रखाए गुरमुख साचे सिर तेरे हत्थ। गुरसिखां देवे प्रभ पूरा भरवासा। अप तेज वाए आप बणाए पृथ्मी आकाशा। इक्क लक्ख अस्सी हज़ार भूत प्रेत कलि प्रभ रक्खे वासा। एका आप जाणे प्रभ अबिनाशा। जीव जन्त ना कोई दुखाए, लिखाए गुर गोबिन्द होए लिखासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव खुल्हाए सर्ब लिखाए कलिजुग जीव जो करन हासा। तीन लोक आप बणाए। सुरत चित मन लगाए। नाम निरबाण प्रभ बाण लगाए। जेतीआं मुशकलां तेतीआं असान कराए। साचा नाउँ प्रधान रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। मसाण मसाण पवण रूप। आप बन्न्हाए प्रभ साचा भूप। जम का बेटा कालका माता आप परोए एका सूत। प्रभ माण गंवाए वड वड अवधूत। एका शब्द आप उठाए, सोहँ सिर लगाए जूत। उहनी माता पतला बीर हँसता बीर बटका बीर। बटका बीर विनोदिया बीर। सौ सन्तर विनोदिआ बीर। कालीआ बीर दुनियां बीर भौर। पताल बीर भैरों बीर। नरसिँघ बीर नाहर सिँघ बीर। हनुवन्त बीर दया वन्त बीर। अहिमद बीर। मुहम्मद बीर। सलसला बीर सलाबीर। निरंदी नेसरी केसरी इजीआ बिज़ीआ बसोधरी काखमी कमखमी ललमी पलमी जगगनी जुगती भुगती इतनीआं भैणां जोर ना मिले मुक्ती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दर फिराए साचे दर दुरकाए जिस जन दया कमाए। नाम जपाए प्रभ मिलण दी साची जुगती। आप धारे आप संवारे पार उतारे। पसू प्रेत जिस सगले बन्द पाए। लोहे का संगल पायो गले लटकाए। सार की मुगली सिर लगाए। सोहँ शब्द माण रखाए। सच सच सच रिहा लिखाए। किया जोत अकार आप निरँकार। बचन ते बाहर, खाए सिर मार। प्रभ साचा करे ख्वार। सन्त का दोखी दुष्ट दुराचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कलिजुग करे ख्वार। शब्द साचा जीउ पिण्ड काचा सो साचा काचा, जिस हिरदे वाचा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच

सच सच कलि सच पछाता । हाकनी डाकनी छाकनी छार खुरी निरँकार बंधाए भण्डारी दृष्ट करे। मुशट करे, छल करे, छिद्र करे, टूणा करे, जादू करे, काल के बाल करे, सोहँ साचा शब्द प्रभ सिर धरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द मात चलए किरपा आप करे। राजा का तेज चोर का घोर रड़ा डूगर प्रभ साचा रच्छया आप करे। दीन दुनी दे पातशाह दर ते आए सीस झुकाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन काज आप करे। गुर पूरे भोग लगाया। साचा कर्म आप कमाया। गुर पूरे कर्म कमाया, सति सति प्रसादि आप वरताया। गुर पूरे भोग लगाया, अनादी अनाद साध संगत सद सरनाया। गुर पूरे भोग लगाया, जुगो जुग जन भगतां दर घर प्रभ साचा आया। गुर पूरे भोग लगाया, बिदर अलूणे साग जिउँ रसन छुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दर दरबार आए प्रभ पूरन आस कराया। भोग लगाए पूरा गुर। मातलोक आया तुर। गुर संगत बैठी चरन जुर। प्रभ दर्शन को लोचन सुर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए निहकलंक साचा गुर। भोग लगाए आप भगवाना। गुर संगत प्रभ आप वरताना। साध संगत प्रभ मुख रखाना। गुर संगत प्रभ दुःख मिटाना। साध संगत प्रभ सुख उपजाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए भोग लगाए साध संगत वरताए वड दानी दाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर प्रसाद गुर भोग लगाया। गुर संगत प्रभ रसन लगाया। आत्म दुबदा सर्ब मिटाया। एका नाद धुन उपजाया। साचा साध गुर दर पाया। वड माधव माध वक्त सुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर अवतार नर, सीतल सीत सीत प्रसाद वरताया। गुर संगत कलि तेरा माण। प्रभ अबिनाशी साचा जाण। अन्तिम अन्त प्रभ मिले गुण निधान। गुरमुख साचे सन्त प्रभ विच बिठाए बबाण। आप बहाए आप बणाए साचे सन्त, दरगाह साची देवे माण। माण। आवण जावण जावण आण कलि पछाण । गेड़ कटाए मात गर्भ विच फिर ना आण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साचे सचखण्ड निवास रखाए, आप आपणे विच समाए, जन्म मरन दा गेड़ कटाए वाली दो जहान। साचा प्रभ सच वरतंता। आपणा आप प्रगटाए प्रभ साचा कलि भगवन्ता। प्रगट जोत दरस दिखाए भोग, दुःख मिटाए सर्ब जीव जन्तां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड वड तेरी सरनाए, गुरसिखां मिल्या प्रभ साचा कन्ता। सच शब्द साची धारा। साची धुन साची धुन्कारा। खुल्हाए सुन्न होए उज्जयारा। विरला जाणे रिख मुन, प्रभ शब्द हुलारा। कलि गुरमुख साचे चुण, प्रभ देवे नाम अधारा। बेमुखां प्रभ जाए पुण, अन्तिम अन्तिम कलि करे ख्वारा। सोहँ शब्द उपजाए साची धुन निहकलंक नरायण नर अवतारा। चार कुन्ट जै जैकार। चार वरन प्रभ दर भिखार। देवणहार इक्क दातार। अखुट्ट अतुल्ल भरे भण्डार। वड अनमुल्ल ना कोई पाए

सार। कलिजुग जीव भुल मानस जन्म गए हार। आई बसन्त गए हुल्लू फिर ना लगण डार। गुरमुख साचे साचे फुल्ल प्रभ साचा जाए तार । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी सार। आपे किया जगत पसारा। आपे दिया जोत अधारा। जीव जन्त की करे विचारा। विच विस्मंत ना देवे दरस अपारा। दर दर फिरंत ना देवे कोई अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त आप बहाए आपणे चरन दुआरा। चरन द्वार गुरसिख बहाए। अस्व अस्वार दया कमाए। सच घर बाहर आप दिखाए। सर्ब नर नार इक्क माण रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची कार लिख्त चलाए। नारी नर एका माणा। नारी नर एका बाणा। नारी नर एका ताणा। नारी नर सतिजुग एका रंग रंगाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पहरया बाणा। जोत सरूपी जोत जगईआ। गुरमुख साचे मेल मिलईआ। सोहँ चढ़ाए साची नईआ। बेमुख डुबाए मँझधार रखईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आर पार विच संसार सच विहार एका आप करईआ। एक चलाए जगत विहारा। इक्क रखाए नाम अधारा। इक्क टिकाए शब्द अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे सच सच करे वरतारा । सतिजुग तेरा बेड़ा बन्नू । प्रभ उठाए आपणे कन्न। सोहँ जै जै जैकार कराए चार वरन जाए मन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नीचों ऊँच ऊँचों नीच आप कराए, आपे घड़े आपे देवे भन्न। प्रभ साचा सांतक सीतला । गुर संगत तेरा मीतला। जुगो जुग प्रभ साचे दी साची रीतला। चरन लाग गुरमुख मानस जन्म जग जीतला । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सांतक सति सति वरताए, सति सरूप गुरसिख समाए, गुरमुख साचे साची परखे तेरी नीतला। जीव जागो चरन लागो वड वड भागो। घर आया कन्त हो जाओ सुहागो। एका शब्द उपजाए प्रभ अनरागो। कलिजुग जोत प्रगटाई पुरी घनक होई रुशनाई, पंचम जेठ प्रभ जोत जगाई, गुरमुख साचे गुर पूरा हँस बणाए कागों। आपे हँसा आपे बंसा। आपे आप गुरमुख तेरी पूर कराए मनसा। संसा भउ प्रभ चुकाए, मात वड्याए विच सहँसा । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तराए दुष्ट खपाए जिउँ काहना कंसा। साची सारा साची धारा। साची कारा सच दसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर सच्चा दरबारा। वडा आप वडा दरबारी। आया कलि निहकलंक आप अवतारी। साध संगत प्रभ सरन पड़, मात गर्भ ना आए दूजी वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म सुफल जाए कर, लोकमात आया चल वड वड दरबारी।

* २१ सावण २००६ बिक्रमी माता बिशन कौर नवित्त पिण्ड जेठूवाल *

जीउ पिण्ड जिस जन दिया। साचो साच सोहँ प्रभ साचे बिया। सतिजुग तेरी सच सच विच मात रखाई निया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत प्रगटाई, एका जोत सर्ब सृष्ट आत्म जोत जगाया दिया। एका जोत आत्म देवे। प्रभ अबिनाशी अलख अभेवे। गुरमुख साचा रसना सेवे। साचा लहणा प्रभ दर लेवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिरथा ना जाए तेरी सेवे। गुरमुख सेवा प्रभ दर घाल। प्रभ अबिनाशी सद सद तेरे नाल। बोध अगाध अकथ्थ कथा, आपे अकथ्थ सभ सृष्ट संभाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी पैज रखावे जिउँ माता बाल। मात पित आपे जन। आपणा आप वसाए तन। सोहँ शब्द सुणाए कन्न। गुरमुख आत्म जाए मन्न। भाण्डा भउ भरम प्रभ देवे भन्न। एका देवे साचा नाउँ कदे ना लागे संन्ह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप तराए बेड़ा देवे बन्न्ह। आपे आवे काज संवारे। दूती दुष्ट दर दुरकारे। गुरसिख साचे सोहण साचे तेरे दरबारे। कलिजुग जीव भाण्डे काचे दर दर होयण ख्वारे। सोहँ शब्द जन हिरदे वाच, देवे दरस अगम्म अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा घर साचा दर अवतार नर, सरन पर मूल ना डर, साचा प्रभ भरे आप भण्डारे। आप आप आप भरपूरा। गुरमुखां आसा मनसा पूरा। गुरमुखां आत्म संसा उतारे सगल वसूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नेरन नेर, बेमुखां सद दूरन दूरा। बेमुख जीव कलि बेताले। अग्न कुठाली प्रभ साचा गाले। अग्न जोत प्रभ साचा बाले। गुरमुख साचे बण जाए आप रखवाले। आदि अन्त भगत भगवन्त साध सन्त प्रभ अगणत चरन लाग जागण भाग, उपजे राग धोए दाग, बुझाए आग सोहँ लगाए साची जाग, चरन प्रीती निभे नाले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप माई बाप, उतारे पाप देवे जाप, सदा सदा सद रखवाले। गुरसिखां राखा आपे आप। गुरसिखां भाखा आपे आप। गुरसिखां साखा आपे आप। गुरसिखां लाखा आपे आप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई वज्जी वधाई, सुणे लोकाई सोहँ जै जै जैकार कराई। सर्ब सृष्ट प्रभ भुलाई। गुरमुख साचे साचा इष्ट निहकलंक रखाई। कलिजुग जीआं आत्म होई भृष्ट, मदिरा मास मुख चोग रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आपे आप देवे वड्याई। वडा आप वड वड दाता। वडा आप पुरख बिधाता। वडा आप जोती जोत समाता। वडा आप जोती जोत प्रगटाता। वडा आप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां देवे सच सच चरन प्रीती साचा नाता। वडा आप वड बली बलवान। वडा आप वड दाता चतुर सुजान। वडा आप साचा प्रभ गुणवन्त गुण निधान। वडा आप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। वडा आप वडी वड्याई। वडा आप जिस सृष्ट उपाई। वडा

आप मात पताल अकाश रहाई। वडा आप एका जोत तीन लोक प्रकाश कराई। वडा आप आप आपणा आप जगाई। वडा आप आप आपणा नाउँ रखाई । वडा आप जुगो जुग विच मात आपे जोत प्रगटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त चौथे जुग सोहँ मात टिकाई। सोहँ शब्द तीर चलाया। हसन हुसैन नष्ट कराया। दसन दसैन कोई रहण ना पाया। वसन वसैन थेह कराया। नसण नसैण खेह रुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्न मेघ आप वरसाया। आप बरसाए अग्नी अग्ग। आप तरसाए सर्ब जग। आप वगाए कहर अन्धेरी जाए वग। आप मिटाए राउ उमराउ पकड़ शाहरग। आप लिखाए सच वरताए दूसर कोई नाहे, प्रभ अबिनाशी वड सूरा सरबग। वड सूरा इक्क दातार। सर्ब कला भरपूरा इक्क दातार। जीव जन्तां देवे नूर इक्क दातार। हँकारीआं करे ख्वार इक्क दातार। आत्म कढ्ढे सर्ब गरूर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड वड जोधन जोध वड सूरबीर इक्क दातार। जोत सरूप वड सूरबीरा। प्रभ वड भूप सोहँ शब्द चलाए तीरा। सृष्ट सबाई होए अन्धेर हत्थ ना आए नीरा। एका जोत प्रगटाए सति सरूप, राजे राणे महांराणे फिरन वांग फ़कीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा प्रभ बिन कोए ना देवे धीरा। आत्म धीर आप धराए। कलिजुग लथ्थे चीर, सोहँ जामा प्रभ आप पहनाए। आप उपजाए गुरमुख साचे सूरबीर, अमृत साचा मुख चुआए। चार कुन्ट कराए वहीर, एका अटल आप रह जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जोत प्रगटाए। वेख वखाए, जुगत बणाए, गुरसिख जगाए, प्रभ शब्द जणाए, एका रखाए निहकलंक चरन ध्यान बलि बलि बलि जाओ। प्रभ अबिनाशी गुरसिख तराए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जोत प्रगटाए । सृष्ट सबाई भरम भुलेवा। कलिजुग झूठी साध सन्त दी सेवा। जोत खिचाए जोत प्रगटाए करोड़ तेतीस देवी देवा। एका सेव चरन रखाए, आपे देवे साचा मेवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अलख अभेवा। रसना जप आत्म चला हल। सोहँ शब्द साचा मेवा, आत्म लग्गे फल। कोट उतारे आत्म तप, आप उगावे गुरमुख कलिजुग दो फाड़ दाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत प्रगटाए, दर घर साचे आए, गुरमुखां माण दवाए ना लाए घड़ी पल। केस चँवर चरन झुलार। प्रभ अबिनाशी एका देवे चरन प्यार। दर घर आए घनकपुर वासी, झूठे ठूठे देवे तार। संसा रोग दर तों नासी, देवे शब्द अपार। आत्म जीव होए रहरासी, प्रभ साचा सद रसन उचार। एका जोत आप प्रकाशी, प्रभ साचा सुरत शब्द शब्द सुरत दे जाए तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर धरनी धर, लाहे डर आए घर देवे वर, बांहों पकड़ बेड़ा कर जाए पार। पार उतारे आप समरथ। आए चरन दुआरे रक्खे दे कर हत्थ। ना होए ख्वारे सगल वसूरे जायण लथ्थ। एका मंग गुर दर दरबारे, सोहँ देवे प्रभ सचा साची

वत्थ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत निरँकारे महिंमा जगत अकथ्थ। अकथ्थन अकथ्थ ना कथया जाए। सर्ब कला समरथ सोहँ साचे रथ चढ़ाए। मानस जन्म सुफल कराए। आत्म देवे साची वथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन भुल ना जाण लेख लिखाए मथ। प्रभ भुलावे डुलावे रुलावे खपावे तरावे धरावे जगावे, आपे आप दुःख मिटावे, आत्म उपजावे उज्जल विच मात रखावे, सुफल कुक्ख आप करावे जो जन रसन गावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग जागण भाग जिस जन दया कमावे। दया धारी आप गिरधारी। आत्म देवे शब्द अधारी। एका जोत जगावे अगम्म अपारी। गुरमुख साचे तेरी आत्म ब्रह्म विचारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सदा चरन निमस्कारी। निमस्कार चरन धूढ़। गुरमुख बणाए मस्तक लाए जन मूढ़। बंधन बंध कटाए जिउँ आत्म जूड़। एका रंग आप चढ़ाए सोहँ साचा गूढ़ो गूढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा धार आप विचार, एका देवे चरन धूढ़। चरन धूढ़ साचा नाता। आपे देवे पुरख बिधाता। गुरमुख विरला प्रभ पछाता। सोहँ देवे साची दाता। अन्तकाल होए सहाई छड्ड जायण मात पित भैण भ्राता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच प्रीती साची रीती। परखे नीती कर दरस मिटे हरस प्रभ काया सीतल कीती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप तराए चरन लगाए शब्द लिखाए पिछली भुल जो जन कीती। भुल भुलाया जीव हलकाया। प्रभ अबिनाशी भेव ना पाया। सर्ब घट वासी सर्ब विच समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रुल्लयां रुलाया, डुल्लयां डुलाया गले लगाया। आप लगाए आपणे अंग। आप रखाए आपणे संग। प्रभ दर मंगे जन साची मंग। मानस जन्म ना होए भंग। कलिजुग अन्तिम अन्त पार जायण लँघ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे वड सूरा सरबंग। प्रभ जीव जन्त उधार कर। रुढ़दा बेड़ा पार कर। किरपा गिरवर गिरधार कर। निर्धन होए सुधार कर। दुखियां दुःख नास कर। आपणा आप विश्वास कर। एका जोत प्रकाश कर। गुरमुख आपणा दास कर। सोहँ रसन स्वास स्वास कर। प्रभ साचे आत्म घर सच धीर धरवास धर। कलिजुग अन्धेरी रात आवे डर, सदा सदा रक्ख पास हरि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दिसे तेरा साचा घर, आत्म दुखड़े नास कर। साचा घर सच दरबारा। वसे आप आप करतारा। दस्से जाप सोहँ साची धारा। कद्वे पाप रसन रसन रसन जिस जन उचारा। जगत होए वड प्रताप गुरसिख गुर चरन करे निमस्कारा। होए सहाई आपे आप, जो जन आयण चल दुआरा। होए सहाई देवे वड्याई। पति रखाई गुर मति प्रभ सर्ब जणाई। आत्म वत्त सोहँ साचा बीज बिजाई। रसना चरखा साचा नाम सोहँ कत्त, ताणा पेटा प्रभ आप रखाई। एका देवे साची मति, पिता मात जिउँ पूत समझाई । जीव जन्त बाल अञ्याणा प्रभ साचा कन्त, सुघड़ स्याणा आप बणाई। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति तेरी वड्याई। आप बणाए सर्ब बणत, ना किसे पछाणा। बैठा रहे विच इकन्त, सर्ब चलाए आपणा भाणा। माण गंवाए सभ राजा राणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पहरया बाणा। जोत सरूपी बाणा धार। आपणा रंग किया करतार। कलिजुग जीव भुलावे कर गंवार। गुरमुखां प्रभ पावे आपे सार। आत्म उतारे तृष्ना, भुक्खयां देवे दरस अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त ना पारावार। सच कर्म प्रभ साचा करता। सच धर्म प्रभ साचा धरता। सच ब्रह्म प्रभ आत्म वरता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप अख्वाए, जीव जन्त उपाए, जोत सरूपी विच समाए वड धरनी धरता। धीरज देवे साची मति। आपे रक्खे गुरसिख पति। सोहँ साचा आत्म यति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी आपे जाणे मित गत। आपे जाणे आप पछाणत। गुरमुख साचे प्रभ चरन ध्यानत। एका देवे आत्म ब्रह्म ज्ञानत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख बणाए चतुर सुजानत। सच घर तेरा दरबारा। सच घर तेरा पसारा। सच घर वसे आपे आप आप निरँकारा। राह साचा दस्से, एका देवे शब्द हुलारा। गुरमुख साचे हिरदे वसे, आत्म जोत करे उज्जयारा। होए प्रकाश कोट रवि सस्से, आत्म मिटे धुंधूकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप खुल्हावे तेरा दस्म दुआरा। दस्म निगम कर विचार, जोती जोत करे उज्जयार। सोहँ शब्द चलावे आर पार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन देवे मन रखाए तन मिटाए जन सुणावे कन्न जो आवे अन्न कर किरपा जाए तार। अन्धेर मिटाए, सवेर वखाए, हेर फेर गंवाए ना देर लगाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राजे राणे सुघड़ स्याणे, वड बली बलवाने, जोधबीर वड सुल्ताने, चरन लै आए घेर। सोहँ शब्द तीर चौगिर्द चलाया। आपणा बिरद प्रभ मात रखाया। कारज सिध्ध निहकलंक कराया। गुर गोबिन्द अन्त सृष्ट आपणी दाढ़ प्रभ लै चबाया। गुरसिख उपजाए नौं निध, प्रगट होए दरस दिखाया। कारज होयण सिद्ध, प्रभ साचे दर्शन पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मिलण दी साची बिध, मदिरा मास रसन तजाया। निहकलंक दर सीस झुकाणा। एका अंक इक्क जगदीस सतिजुग अख्वाणा। सृष्ट सबाई जाए पीस, जीव जन्त चार कुन्ट बिल्लाना। गुरमुख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा होए सहाई लाजपत्त आप रखाई, आपणे नाम देवे दुहाई, चार कुन्ट सुणे लोकाई, गुरमुख साचे सोहँ शब्द धुन उपजाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप सच्चे जगदीस। सोहँ शब्द धुन उपजाए। गुरमुख चुण चरन लगाए। बेमुख पुण दर दुरकाए। निहकलंक कवण जाणे तेरे गुण, सो जाणे जिस आप जणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे सद समाए। दोए जीआ एका हिया वर घर पाया साचा पीआ। आप रखाई आपणी निया। सोहँ सच्चा सच आत्म बिया । महाराज

१६५ ०२

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाया दिया । आत्म जोत होए प्रकाश। अन्ध अन्धेर हो जाए विनास। घट घट वसे सर्ब घट वास। गुरमुख साचे साचा होया वास। पाप पहाड़ां कीना नास। सोहँ शब्द जप स्वास स्वास। आपे देवे स्वास ग्रास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सद सद सद वसे पास। गुरसिख गुर दर दुआरा। आपे भरे प्रभ भण्डारा। आपे बणे प्रभ वरतारा। जोती जोत जोत निरँकारा। साचा घर साचा दर साचा देवे वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप होए भगत अधारा। भगत उधारया जन्म संवारया। दु:ख दर्द निवारया। दु:ख रोग गवा रिहा। सहिसा सोग चुका रिहा। आत्म भुक्ख सर्ब गंवा रिहा। लग्गे दु:ख सर्ब मिटा रिहा। सुक्के रुक्ख प्रभ हरे करा रिहा। उज्जल मुख विच संसार करा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन तेरे चरन कलि निमस्कारया। निमस्कार गुर दरबार प्रभ साचा पावे सार। गुरमुख लभ्भ अमृत देवे नीर कँवल नभ। झिरना झिरे अमृत अपार, दु:ख दर्द निवारे सभ। प्रभ किरपा धार, दूती दुष्ट आप सँघारे सभ। सोहँ शब्द चले खण्डा दो धार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झब्ब। सोहँ चले खण्डा दो धारा। दूती दुष्ट करे ख्वारा। साचे प्रभ सिर रखाया आरा। आपे चीर लगावे करे दो फारा। दु:ख रोग मिटावे विच बहत्तर नाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई विच जंगल जूह पहाड़ा। साचा प्रभ सद सुहेला। प्रभ साचे दा साचा मेला। गुरसिख बणाए सज्जण सुहेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग रवे सद रंग नवेला। आपणे रंग वरतण जोग। देवे दरस आप अमोघ। मिटाए हरस चुक्के सोग। जो जन रहे तरस, प्रभ चुगावे सोहँ साची चोग। अमृत मेघ आत्म बरस, हउमे गंवाए विच्चों रोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती साचा योग। साचा योग जटा जूट धार। मूड मुंडाए विच संसार। रिद्ध सिद्ध नव निध प्रभ चरन पनिहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप जपावे पावे सर्ब सार। सारंग धर प्रभ भगवान बीठला। प्रभ साचे दा साचा दर गुरमुखां लग्गे मीठला। सोहँ देवे साचा वर, आत्म रंग चढ़ाए मजीठला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप तराए जिउँ नानक कौड़ा रीठला।

* २२ सावण २००६ बिक्रमी रणजीत कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल *

मिल हरि आत्म रंगया। गुरमुख साचा दरस दान दर मंगया। प्रभ सदा सहाई अन्गाया सन्गाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि होए सहाई भुख्या नम्गाया। गऊ ग़रीब सुणे पुकारा। आपे आप आप गिरधारा। पूर्ब

करे सर्ब विचारा। आपणा खेल आप कर, जगत मिटाए अन्ध अन्धयारा। गुरमुख साचे मेल कर, सोहँ देवे शब्द अधारा। बेमुखां बेड़ा ठेल कर, ना दिसे कोई किनारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज कलि खेल कर, सृष्ट सबाई करे ख्वारा। गंवार गंवार गंवार प्रभ सृष्ट कर। ख्वार ख्वार आत्म कलिजुग जीव कर। गुरमुख साचे चरन लगाए आपणी किरपा अपार कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कर। एका देवे साचा जीअ। आप रखाए सतिजुग साची नीह। गुरसिख बणाए उत्तम सोहँ आत्म साचा बीज बी। सतिजुग साचे फल लगाए, आप आपणे कीने जी। प्रभ का भाणा जाए ना टल, अग्न मेघ बरसाए मींह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जामा धर, अवतार नर खेल कर, दुष्ट सँघार भगत उधारे आप बणाए पुत्तर धी। भगत उधारे एका गुर। जीव सुधाए एका गुर। भेख वटाए एका गुर। आत्म वेख चरन लगाए एका गुर। साची जोत जगाए एका गुर। जो जन होए चरन पनिहारे, दर घर आए तारे एका गुर। दर घर आए काज संवारे, मेल मिलावे एका गुर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पार उतारे, चरन आए जो बैठे जुर। चरन लगाया मरन चुकाया। चरन लगाया डरन चुकाया। चरन लगाया प्रभ दया कमाया। चरन लगाया जीव जन्त प्रभ इकन्त अन्तिम सभ मेल मिलाया साध सन्त जोत जगंत, आत्म साचा दीप जगाया। चरन लगाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आण तराया। बणत बणाए आपे जग। गुरमुख गुरसिख चरन लग्ग। प्रभ साचा हँस बणाए कलिजुग कग। आप आपणी अंस बणाए सोहँ शब्द लगाए रसन सग। विच सहँस गुरसिख उपजाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन सरनी जायण लग्ग। गुर चरन जन्त उधारे। गुर चरन मिले कन्त प्यारे। चरन लाग देवे शब्द अधारे। गुर चरन विरले आयण सन्त दुआरे। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग पापी पार उतारे। पाप खण्डे सोहँ वंडे विच ब्रह्मण्डे। जोत प्रगटाए विच नव खण्डे। झूठी सृष्ट कराए रंडे। आपे भन्न वखाए काया काची भाण्डे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलंकनिह सृष्ट सबाई आप कराए खण्डे । सृष्ट सबाई आपे खण्ड। चार कुन्ट दिसे रंड। साचा लाया सोहँ डण्ड। बेमुखां आई अन्त कंड। साचा शब्द प्रभ चलाया चण्ड परखण्ड। एका हुक्म सुणाया। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक वरभण्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि जामा पाया। जोत जगाए आपे आप नवखण्ड। एका जोत आप धराए। आप आपणी दात टिकाए। आप आपणा मात प्रगटाए। सच गुर सतिजुग सति सति सति लगाए। सोहँ वड करामात विच सृष्ट धराए। चरन प्रीती निहकलंक साचा नाउँ रखाए। अन्तकाल ना कोई पुच्छे बात, झूठे दिसण भैण भ्राए। ना कोई अन्त छुडाए ना होए सहाए। पित मात आपणी गोद रहे उठाए। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे सोहँ साची दात, वेले अन्त होए आप सहाए। सोहँ सो ईश्वर जाण। सोहँ शब्द जप जीव आपणा आप पछाण। सोहँ एका जीव ईश्वर एका, एका एक एक पछाण। सोहँ साचा सतिजुग साचे दिया, किरपा करे प्रभ महान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा विष्नूं भगवान। अचरज भेख्या कलिजुग भुलाए भरम भुलेख्या। गुरसिख विरले नेत्र पेख्या। प्रभ साचे जन धुरों लिखाई रेख्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम लक्ख चुरासी आप मुकाए तेरा लेख्या। लक्ख चुरासी आप गंवाए। आप उधारे आपे तारे। आपे आप पाए सारे। जीव जन्त की करन विचारे। साध सन्त बैठे होए अन्ध अंध्यारे। आत्म अन्धेर रसना होए हलकारे। ना दिसे सञ्झ सवेर, मंगण खड़े दर दर दुआरे। गुरमुखां देवे साची धीर, प्रगट जोत आप निरँकारे। खिच्चे जोत अठसठ तीर्थ नीर, एका ओट निहकलंक चरन दुआरे। कलिजुग लथ्थे अन्तिम चीर, नग्न फिरन राउ राजान होए ख्वारे। गुरमुखां देवे साचा सीर, प्रभ साचे दे वड भण्डारे। विच्चों कढ्ढे हउमे पीड़, आत्म रहे ना लोभ हँकारे। आप बणाए सच सच सूरबीर, साची देवे जोत अधारे। एका शब्द लगाए तीर, सृष्ट सबाई होए दो फाड़े। चार कुन्ट रहे वहीर, प्रभ साचे दे खेल न्यारे। कलिजुग होए अन्तिम भीड़, दुखी जीव करन हाहाकारे। प्रभ साचे तोड़ी हड्डी रीड़, कोई ना देवे साची धीर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आप अख्वाए, एका आप तराए, एका आप जपाए, एका आप भुलाए, आपे आप पिलाए, गुरमुखां देवे सोहँ साचा सीर। साचा सीर मुख लगाए। साचा सीर सुख उपजाए। साचा सीर दुःख गंवाए। साचा सीर भुक्ख मिटाए। साचा सीर सुकड़े रुखड़े हरे कराए। साचा सीर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे मुख चुआए। अमृत आत्म सर। आत्म देवे प्रभ जोत धर। एक दिसावा साचा घर। द्वार दस्म खोल्ह वखाए ना आए डर। कोट कोटन पाप गंवाए प्रभ भस्म कराए, सीस झुकाए जीव साचे दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए सतिजुग खुल्हाए साचा दर। सतिजुग तेरा दर दरवाज़ा। प्रगटे जोत ग़रीब निवाज़ा। सृष्ट सबाई जिस साजन साजा। भाग लगाया प्रभ देस माझा। आपणा आप उपाया, जोत जगाई वड राजन राजा। एक आप आपणा डंक वजाया, झूठा ठूठा सर्ब का बाजा। सोहँ साचा रसन चलाया, गुरमखां मारे आप अवाजा। आपणा भाणा आप वरताया, आप रखावे आपणी लाजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया, सतिजुग संवारे आपे काजा। माझा देस तेरा साचा घर। जोत प्रगटाए आपे हरि। वड वड वड प्रतापे प्रभ तेरा साचा सर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई माई बापे, सर्ब उधारे जो जन सरनी जायण पर। माझा देस लागे भाग। माझा देस सोया जाग। माझा देस प्रभ उपजाया साचा राग। माझा देस जोत

प्रगटावे। निहकलंक आप अख्वावे। गुरमुख साचे आप मिलावे। बेमुख जीव आप भुलावे। मदिरा मास मुख रखावे। आत्म लाई आग, राम दास तेरा साचा सर, सर अमृत गए पति गंवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलिजुग आपे दे सजाए। राम दास तेरी साची नगरी। अर्जन गुर बणाई सच समग्री। ज्ञान बोध शब्द लिखाई। आत्म रहे सद इकग्री। साचा शब्द प्रभ रिहा लिखवाए, एका प्रीत प्रभ चरन संग लगरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम खेल आप मिटाए, सदा सदा आदि अन्त छिन भंगरी। आया हरि आप निरँकार। आया हरि जोत अधार। आया हरिभगत उधार। आया हरि कलिजुग जीव वक्त सुधार। आया हरि मानस जन्म मूल ना हार। आया हरि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कलि जामा धार। आया हरि हरि, घर आया हरि। आप भुलाया साचा दर। आया हरि मुख रखाया सोहँ साचा वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कलि जामा पाया, चरन लाग जीव जन्त जायण तर। जामा पाया खेल वरताया। भेव छुपाया देवी देवता सेव लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव ना आप खुल्हाया। जामा पा के कर्म करा के नाउँ धरा के सृष्ट भुला के गुरसिख जगा के दया कमा के सरन लगा के चरन धूढ़ प्रभ आप दुवा के। आत्म नूर रंग चढ़ा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेख कलिजुग आया वटा के। भेख वटाया वेख वखाया। वड वड सेठ दिस ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप सर्ब भुलाया। आप भुलाया आप डुलाया। आप रुलाया आप तुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप आप छुपाया। आपणा आप आप छुपा के। भरम भुलेखे सृष्ट भुला के। साचे लेखे गुरसिख लगा के। दर्शन पेखे प्रभ दर आ के। मानस जन्म लगाए लेखे, जो जन चरनी डिगे आ के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी किरपा जाए आप कमा के। आपे आया आपे जाया। आपे दाई आपे दाया। आपे पाई सर्ब माया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप छुपाया। आपणी माया आपे पा के। कलिजुग जीव सर्ब भुला के। आपणी माया आपे पाए, आपणा भेव आप छुपाए। आपणी माया आपे पाए, देवी देव किसे दिस ना आए। कलिजुग माया परे हटाए, गुरसिख सेव लगाए। आप रखाए आपणी साया, अन्तकाल ना कोई पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन दया कमाए। दया कमाई जोत जगाई। वज्जी वधाई सुणे लोकाई। होए रुशनाई धुन उपजाई सुन्न खुल्हाई। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ आपणे चरन लगाई। निहकलंक कवण जाणे तेरे गुण, महाराज शेर सिँघ नाउँ रखाई। नाउँ रखाया जामा पाया, पिता मात घर पूत अख्वाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा दूत संग लै आया। जामा पाया कर्म कमाया, धर्म धराया, ब्रह्म मिलाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप जगत तजाया। आपणा आप

जगत तजाए। एका आपणा नाउँ जगत धराए। झूठी काया खेल रचाए। महाराज शेर सिँघ निहकलंक कलि जामा पाए। आपणी देह आप तजा के। आपणा आप जगत प्रगटा के। जोत सरूपी जोत प्रभ एका जोत नाउँ धरा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल किया विच मात दे आ के। जीव जाए फिर ना आए। लक्ख चुरासी गेड़ फिराए। गुर जाए फेर ना आए। एका नाउँ जगत रह जाए। ईश्र भाए करे कराए। आपे आए आपे जाए। ना कोई वेखे ना वेख वखाए। जोत सरूपी भुलेखे पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम लेखे लाए। प्रभ भगवाना प्रभ जोत महाना, प्रभ बीना दाना, प्रभ चतुर सुजाना। प्रभ आवण जावण खेल रचाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी कलि पहरया जामा। बाणा धारया, पसर पसारया, भेव छुपा रिहा, वेखा वेख जगत भुला रिहा, भेखा भेख जोत सरूपी भेख वटा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सरूपी गुरमुख साचे साचे दीप जगा रिहा। भेख धरया, आसा वरया, गुरमुख साचे सद सदा तेरे दर खड़्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त ना पारा वरया। प्रभ का अन्त ना पारावार। प्रभ साचा सच विहार। जुगो जुग जन भगतां पावे सार। आवे दर बांहों पकड़ कलि जावे तार। धन्न धन्न धन्न गुरसिख जिन मिल्या प्रभ साचा करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त दुत्तर जाए तार। दुत्तर तारे सद बलिहारे। वारो वार काज संवारे, निहकलंक अवतारे। अचरज खेल अपर अपारे। माझा देस होए उज्जयारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द कराए जै जै जैकारे। जै जै जैकार आप कराणा। सोहँ साचा डंक वजाणा। एका साचा अंक रखाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बंक द्वार सुहाणा। बंक द्वार आप सुहाए। प्रभ साचा जिस थांए चरन छुहाए। सतिजुग साच नाउँ रह जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा माण दवाए। वेला अन्त अन्त अन्त आप बणाए आपणी बणत। आप बणाए साचे सन्त। बैठा रहे आप इकन्त। माया पाए जगत बेअन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई ना जाणे आदि अन्त। आदि आदि आपे आदि। जुगादि जुगादि आपे जुगादि। नाद नाद सोहँ साचा नाद। साध साध प्रभ साचा आत्म देवे साध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द लिखाए बोध अगाध। साचा प्रभ आप लिखाए। जो वरताउणा कलि भेव खुल्हाए। गुरमुख सोहँ गावणा जिस दया कमाए। चार कुन्ट जीव बिल्लावणा, पै जाए सर्ब दुहाए। कलिजुग जीआं नीर हत्थ ना आवणा, अन्तकाल कलि आप वरताए। दिवस रैण ना मिले सवणा, भज्जे फिरन प्रभ अग्न जोत लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी आाप तड़फाए। जोत सरूपी भेख धरया जिउँ बावना, गुरमुख विरले आण तराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी जोत आप प्रगटाए। जोत प्रगटाए

ਪੰਚਮ ਜੇਠ। ਗੁਰਸਿਖ ਰਖਾਏ ਸਾਯਾ ਹੇਠ।

पंचम जेठ। गुरसिख रखाए साया हेठ। बेमुख पिसाए कौड़े रेठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए वड वड सेठ। पंचम जेठ जगत उज्जयार। पंचम जेठ निहकलंक अवतार। पंचम जेठ करे विचार। पंचम जेठ करे जगत ख्वार। पंचम जेठ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुष्टां दए सँघार। पंचम जेठ होए वडभागा। गुरसिख आए चरन लागा। बेमुख सवाए गुरमुख जागा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कलि वरताए, पहली छेड़ छिड़ाए, ना कोई मोड़ मुड़ाए उठे दल कोल वाहगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल वरताए आप जुआए चौबलद सुहागा। प्रभ के भाणे जो कोई आए। प्रभ का भाणा सति वरताए। प्रभ सुघड़ स्याणा आप अख्वाए। प्रभ राजा राणा माण गंवाए। प्रभ ताणा पेटा आप उलझाए। प्रभ वड किरसाना कलिजुग जीव वांग खेत कटाए। आपे वरते आपणा भाणा ना कोई अन्त छुडाए। ना कोई दीसे राजा राणा, एका निहकलंक जोत प्रगटाए। सोहँ प्रभ मुहाणा वंञ लगाए। आप पार कराणा, गुरमुख साचे रक्ख चरन ध्याना, प्रभ आपणी सरनी लगाए। प्रभ साचे दा साचा भाणा, प्रभ साचे दा साचा बाणा, जिउँ बाल पिता रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त गुरमुखां आपे मेल मिलाए। आपे मेले मेल मिलावे। आप चलावे जो मन भावे। आपे आप करे करावे। झूठी सृष्ट झूठे दाअवे। प्रभ अबिनाशी विरला गुरमुख रसना गावे। गुरमुख साचा दर घर साचे प्रभ साचा बहावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ दाढ़ां हेठ सृष्ट सबाई आप चबावे। पंचम जेठ जोत जगा। पंचम जेठ सृष्ट खपा। पंचम जेठ गुरसिख तरा। पंचम जेठ बेमुख रुला। पंचम जेठ प्रभ खेल वरता। पंचम जेठ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई हिल हिला देवे पा। पंचम जेठ दिवस सुहाए। सतिगुर साचा जोत प्रगटाए। जन पूरन भाग जिस सरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त कराए। चौथा जुग अन्त कर। पिण्ड बुग्घे जोत धर। साध संगत देवे साचा वर। आप खुल्हावे एका साचा दर। सोहँ रसना जप गुरमुख विरला जाए तर। बेमुख कोई नेड़ ना आए, दर घर साचे आए डर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई अवतार नर। अवतार नर नर अवतार। साध संगत आए द्वार। साचे मंगत दर भिखार। चाढ़े रंगत नाम करतार। जिउँ अंगद दित्ता नानक तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम होए तेरा सिक्दार। साध संगत तेरा सिक्दारा। आपे आप होए गिरधारा। आपे भुलावे आपणा दुआरा। सोहँ खण्डा आप उठाए दो धारा। चौगिर्द नैण ना आवे दुष्ट दुराचारा। मेर तेर सर्ब मिटाए, सतिगुर मनी सिँघ देवे आप सहारा। नेड़न नेड़न आप अख्वाए, निहकलंक नरायण नर अवतारा। अवतार नर साचा गुर। गुर संगत सच आवे दर। प्रभ अमृत आत्म वरखे आप खुल्हावे साचा सर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

चरन लाग कलिजुग जाओ तर। कलिजुग अन्त होए अख़ीर। चार कुन्ट हो जाए वहीर। गुर संगत प्रभ दर आओ कोट पहाड़ां चीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप गुर संगत प्रभ कट्टे तेरी भीड़। साध संगत तेरा रखवाला। आपे आप गुर गोपाला। सदा सदा सदा तेरा प्रितपाला। आत्म देवे साचा धन माल सोहँ, बेमुखां होए अन्तकाल कलिजुग मूंह काला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद सदा तेरा रखवाला। सदा सदा आपे रखवाली। भगत जनां आपे प्रितपाली। गुरमुख साचे फुल्ल बणाए आप बणे प्रभ साचा माली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलिजुग दीन दुनी दा वाली। आपे होए पवण समाना। आप उपाए आपणा बाना। आप रखाए आपणी आणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत पवण पवण जोत एका रंग समाना। गुर पूरे तेरी माया, गुरसिख पले तेरी छत्र छाया। गुर पूरे तेरी माया, गुर पूरे विच समाया। गुर पूरे तेरी माया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा भेव किसे ना पाया। गुर पूरा आपे बन्न्हे। गुर पूरा आप कराए आत्म अन्न्हे । गुर पूरा आपे घड़े आपे भन्ने । गुर पूरा आप लगाए आपणे बन्न्हे। गुर पूरा कर किरपा जाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सति सति कर मन्ने। सति कर मन्नया बेड़ा बन्न्हया। भाण्डा भरम भउ भन्नया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाउ सद रसना गाओ, पाओ कदे ना भंगणा। आत्म रस शब्द अधार। प्रभ हिरदे वस देवे तार। राह साचा दस्स लावे पार। गुर चरन आए नस्स प्रभ पाए सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां हिरदे जाए वस आपे पावे सार। आपणी सार आपे जाणे। गुरसिख मिले जीव अञ्याणे बाले। बाल अञ्याणे सद भुलाने। किरपा करे आप महाने। गुरमुख साचा प्रभ साचे दा रंग साचा माणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग जुगो जुग इक्क समाणे। गुरमुख साचे किरपा कर। आत्म जोत देवे धर। एका दिसे साचा हरि। आप भुलावे साचा दर। प्रभ साचे दा साचा घर। अवतार नर बेमुखां आवे डर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे अमृत आत्म झिरना झिराए साचा सर। आत्म झिरना साची धारा। उलटावे कँवल पावे सारा। मुख चुआवे करे उज्जयारा। मिटावे दुःख सर्ब संसारा। आए सुख निहकलंक तेरे चरन दुआरा। भुल्ले फिरन कलि मूर्ख मुग्ध गंवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस जीव तेरी उतरे भुक्ख, पारब्रह्म रूप अपारा। रूप अपार जोत करतार। विच संसार शब्द अधार। भगत सुधार अमृत मुख चुआए किरपा करे अपार। दुखियां दुःख मिटाए जो चल आए दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया कमाए अमृत वरखे किरपा धार। निर्मल करे निर्मल निर्मला। सीतल सीतल शांत करे बालू बिमला। फल फुल लगाए आपे हरे कराए कलिजुग जिउँ रुक्ख सिमला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान चरन लाग, कलिजुग जीव भुल ना। आत्म

चिन्ता घिरना घुण। साचे प्रभ पुकार सुण। निरगुण जीव विचार गुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उधारे पार उतारे गुरसिख प्यारे कलिजुग चुण चुण। आत्म दु:ख जिस जन लग्गे। दिवस रैण तपे विच अग्गे। साक सैण ना कोई दिसे सगे। भैण भाई कोई नेड़ ना लग्गे। एका दर साचा घर साचा अवतार नर किरपा कर जीआ दान अन्न भगवान रक्खया माण दर परवान गुण निधान जीव जन्तां प्रभ साचा चोग चुगाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, दुखियां भुखीआं सदा सदा आत्म चिन्त मिटाण। सदा सदा होए सहाई। प्रभ साचे जिस बणत बणाई। राजक रिजक आप अख्वाई। मंगया दान सच वस्त झोली पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाई। आप सुहाया थान गुर गोबिन्द। गुरसिख साचे माण रखाए, वड वड वड सुरपति राजा इन्द। सोहँ शब्द आत्म बाण लगाए, आप खुल्हावे आत्म जिंद। जो जन चरनी सीस झुकाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा बख्शिंदा गुर गोबिन्द। कर्म विचारे दया कमाए। गुर गोबिन्द कर्म विचारे। गुर गोबिन्द जन्म संवारे। गुर गोबिन्द एका बैठे दर दरबारे। गुर गोबिन्द एका जोत आप निरँकारे । गुर गोबिन्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ जोत चमत्कारे। गुर गोबिन्द एका जोती। दर आपणे बणाए गुरसिख माणक मोती। प्रभ साचा दया कमाए, गुरसिखां उठाए आत्म सोती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर मनी सिँघ संग रलाए, पापां आत्म सभ दी धोती। गुर गोबिन्द गुण निधान। गुर गोबिन्द जोत महान। गुर गोबिन्द आपे बैठे थान सुहाए एका थान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सतिगुर मनी सिँघ सिर तेरे हत्थ टिकाए बली बलवान। गुर गोबिन्द साची रीता। गुर गोबिन्द एका साचा साजण मीता। गुर गोबिन्द गुणी गहिंद वड वड मृगिन्द, अमृत मुख चुआए विरले दर आए प्रभ पीता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर मनी सिँघ देवे वड्याई, आपे परखे साची नीता। गुर गोबिन्द गहर गम्भीरा । गुर गोबिन्द दोए मिल गुर सिखन कट्टन भीड़ा। गुर गोबिन्द आप लगाए शब्द सरूपी आत्म तीरा । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर मनी सिँघ देवे वड्याई, होए सहाई वड वड पीरन पीरा। गुर गोबिन्द एका घाट। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द जोत जगाए गुर ललाट। सतिजुग साचा दर खुल्हाए सन्त मनी सिँघ तेरा हाट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाई आप खुल्हाए बजर कपाट। गुर गोबिन्द गुणी गुणवन्ता। गुर गोबिन्द वड वड साधन सन्ता। गुर गोबिन्द जोत अधारी सर्ब जीव जन्ता। गुर गोबिन्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बैठा रहे सद अडोल इकन्ता। गुर का शब्द सच कमाणा। आत्म विच ना हँकार रखाणा। गुर पीर ना आप अख्वाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले भीड़ आप छुडाणा। गुर चरन रक्ख उरधार। प्रभ साचे दा सच प्यार। दर दर ना हो ख्वार। कलिजुग जीव झूठे झक्ख

मार। एका प्रभ साचे दा सच दरबार। देवणहार आपे आप इक्क करतार। भरे भराए खाली कराए, खाली भरे प्रभ सच भण्डार। चरन आए गुरसिख तरे प्रभ साचा सच द्वार। आपणा किया आपे भरे मदिरा मास करे अहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचो साच शब्द लिखाए आत्म वेख जीव विचार। सोहँ सिख रसन उचार। रसन उचार मंग भिख देवे करतार। सच लेख देवे लिख, आपे बणे लेख लिखार। देवे वड्याई विच मुन रिख, सोहँ सच्ची धुन्कार। साचा दरस निहकलंक नेत्र पेख कोट उतारे पाप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आपे होए माई बाप। मात पित भगत जन बाला। साचा हित होए रखवाला। आवे जावे जुगो जुग नित, प्रभ साचे खेल निराला। चरन लाग मानस जन्म जीव जित, घर आए दीन दयाला। आपे आप कलिजुग जोत धरे करतार साचा वक्त कलिजुग भया, सोहँ देवे सच्चा धन माल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए साची जोत रखाए आपे उपजावे साचे राग। धीरज धीरज आत्म यति। सोहँ राग साचा तत्त। आप बंधाए आत्म यति। आप समझावे देवे मति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे सद बिठावे आपे राखे साची पति। माण तेरा ताण तेरा चरन ध्यान तेरा भगत भगवान तेरा। महाराज शेर सिँघ किरपा भगवान कर, घर भुल्लया सिख आया तेरा। भुल्लयां भुलाया माण रखाया। प्रभ का भाणा दिलों गंवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान लथ्था रोग फिर लगाया। रोग लगाया गया लग्ग। दिवस रैण आत्म रही दग। प्रभ पकड़ पछाड़े वड सूरबीर शाहरग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारे आप लगाए आपणे पग। रोग गया सोग गया विजोग गया दरस अमोघ भया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा शब्द रसन जोग दिया। सोहँ जोत आप जगावे। रोग सोग आप मिटावे। गुरमुख साचा रसना गावे। काहना कृष्ना दरस दिखावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दया कमावे। भेव चुकाए बीर बेताला। आपे होए रखवाला। सोहँ जपाए साची माला। गुरमुख साचे तन पहनाए कट्टे सर्ब जंजाला। जो जन आप आपणे मन वसाए, प्रभ देवे सास सुखाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्ध अंध्यार होए आप रखवाला। भय भूत होए नास। आप आपणा विच किया वास। आत्म होए जीव रास। सोहँ जप स्वास स्वास। प्रभ साचा घर साचे वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद सद सद वसे पास। दिया बाती छोड़े तेल। जोत सरूपी प्रभ साचे दा साचा मेल। अचरज पारब्रह्म दा खेल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए सज्जण सुहेल। साचा प्रभ विच ना रागां। साचा प्रभ विच ना चरागां। साचा प्रभ कदे ना मिले बिन पूरन भागां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म धोए खट रोग गंवाए दाग़ां। दुष्ट दुराचार नारी नार बत्ती धारा। करे ख्वार बालक सीर होए पसारा। महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप पावे सारा। अमृत सीर होया नीर पाए सीर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत बरस शांत कराए सरीर। आत्म कढ्ढे इक्क विकार। प्रभ साचे दा सच दरबार। सच सच सच वरतार। साचा करे आप विहार। सर्ब जीआं आपे पाए सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सदा बख्शणहार। गुर चरन आत्म रासा। आत्म रंग दुखड़ा नासा। काया वंग सद सद विनासा। दान साचा मंग सोहँ स्वास स्वासा। आप संभाले आपणा अंग, प्रभ का बचन ना जाणो हासा। आत्म विकारीआं प्रभ देवे टंग, झूठा भन्ने देही कासा। कर हरि चरन प्रीती चाढ़े साचा रंग, प्रभ साचा पुरख अबिनाशा। जीव जन्तां परखे नीती, आपे आप सद रक्खे विच वासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती सोहँ शब्द सच्चा भरवासा। साचा प्रभ जिस जन मन्नया। प्रभ भाग लगावे आत्म अन्नया। साचा संग बणावे कन्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कढावे आत्म जन्नया। गुर पूरा सद अराधणा। जीव आत्म आपणा साधणा। प्रभ पूरा माधव माधना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप खुल्हावे अन्ध अन्धेर, सोहँ धुन वजाए नादना। साचा प्रभ भोग लगाए। गुरसिख गुरमुख चोग चुगाए। दुखियां भुखीआं संसा रोग मिटाए। सुफल कराए प्रभ मात कुक्ख, किशना सुखला पक्ख प्रभ इक्क कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए। प्रगट जोत भोग लगाया। दरस अमोघ आप दिखाया। गुर संगत रोग मिटाया। दर आई संगत साचा नाम प्रभ झोली पाया। इक्क चढ़ाए नाउँ रंगत, आपणे रंग आप रंगाया। कोई ना दीसे भुक्खा नंगत, प्रभ साचा दया कमाया। आप गंवाए रोग हँगत, सोहँ साचा बीज बिजाया। रसना जप जीव पार लँघत, साचे रथ प्रभ आप चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत गुर दर आए प्रभ साचे माण रखाया। आया दर दर परवान। प्रभ साचा दर घर साचे देवे माण। आप बिठाए विच बबाण। नेड़ ना आए पवण सरूपी जम मसाण। लक्ख चुरासी गेड़ कटाए, किरपा करे आप भगवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, प्रगट जोत भोग लगाए गुर संगत रखाए माण।

* २३ सावण २००६ बिक्रमी जेठूवाल *

साचा नाम भगत उधारी। साचा नाम जप, देवे जोत प्रभ निरँकारी। साचा नाम साचा जाम, दिवस रैण रहे ख़ुमारी। साचा नाम पूरन काम, गुरमुख साचे रसन उचारी। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दर दरबारी। साचा नाम सच घर पाओ। साचा नाम सच वणज कराओ। साचा नाम गुरमुख साचे आत्म सच वसाओ। साचा नाम देवे

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भुल कदे ना जाओ। साचा नाम साची सूरत। साचा नाम गुरमुख मिलाए अकाल मूर्त। साचा नाम आत्म उपजाए साची तूरत। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जन भगतां आसा पूरत। साचा नाम साचा गुण। साचा नाम साची धुन। साचा नाम गुरमुख साचे दर घर सुण। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चुण। साचा नाम रंग रंगाए। साचा नाम संग रखाए। साचा नाम पार लँघाए। साचा नाम रसना जप जीव अंगीकार आप हो जाए। साचा नाम साचा तप गुरमुख साचे आप कराए। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग वेला अन्त नेड़ ना आए। साचा नाम आत्म सर। साचा नाम खोल्हे दर। साचा नाम रसन जप जीव, प्रभ साचे आए आत्म साचे घर। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर। साचा नाम साची सार। साचा नाम सच वपार। साचा नाम इक्क सिक्दार। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान वेले अन्त पावे सार। साचा नाम साची सीख्या। साचा नाम प्रभ देवे साची भीख्या। साचा नाम साचे प्रभ धुर दरगाहों लीख्या। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख कर आप परीख्या। साचा नाम जीआ दाना। साचा नाम आत्म ज्ञाना। साचा नाम आत्म रस रस रस उपजाना। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम दान गुरसिख जगाना। साचा नाम रसना चीन। साचा नाम देवे वड प्रबीन। साचा नाम मुख रखाए गुरसिख तृप्ताए जिउँ जल मीन। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली दुनी दीन। साचा नाम साचा राखा। साचा नाम प्रभ साचे भाखा। साचा नाम प्रभ देवे अलख अलाखा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान होए सहाई आपे राखा। साचा नाम साची सुर। साचा नाम सोहँ गुर। साचा नाम रसना जप जीव दर घर साचे जाए तुर। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई घनकपुर। साचा नाम रसना गाओ। साचा नाम प्रभ साचा पाओ। साचा नाउँ रसना पूरन ब्रह्म समाओ। साचा नाम जपाए आपणा आप, जीव कर्म जन लेख लिखाओ। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई घनकपुर साचा नाम रसना गाओ। साचा नाउँ सच समाए। साच नाम गुर दर ते पाए। साचा नाउँ हरि हरि ते गाए। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जो जन दर ते आए। साचा नाम सोहँ राग। साचा नाम आप लगाए आत्म जाग। साचा नाम मेल मिलाए पूरन होए जीव भाग। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अनहद अनाहत आत्म उपजे साचा राग। साचा नाम साचा रस। साच नाम रसना जप जीव, प्रभ साचा होए वस। साचा नाम प्रभ दर पीव, आत्म दुखड़े जायण नस्स। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ तीर चलाया कस।

साचा नाम साचा सोहँ। साचा नाम भेख मिटाए दोअँ। साचा नाम एका एक मिलाए ओअँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द मात चलाए। आप वड्याए रसना गाए पवण सरूपी विच समाए। तीन भवन रिहा फिराए। आपणे गुण आप जणाए। साची धुन विच रखाए। साचा शब्द आप लिखाए। सोहँ साचा शब्द साची धुन। साचा शब्द खोल्हे सुन्न। साचा शब्द प्रभ साचे दर जीव आए सुण। साचा शब्द नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, क्या कोई जाणे साचे दे साचे गुण। साचा नाम सीतल शांत। साचा नाम आप मिलावे एका इकांत। साचा नाम रसना गाए आत्म होए शांत। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठा पिण्ड जीव भ्रांत। साचा नाम शब्द अधार। साचा नाम आत्म सार। साचा नाम रसना जप जीव जन्म सुधार। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पावे मोख द्वार। साचा नाम सूखम सूखा। साचा नाम रसना जप जीव आत्म उतरे भूखा। साचा नाम रसना आत्म सुख देवे सुखीआ सुख साचा सूखा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जीव जन्तां उतारे सर्ब भूखा। साचा नाम गुरसिख गाए। साचा नाम रिदे वसाए। साचा नाम नौं निध घर उपजाए। साचा नाम देवे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ मिलण दी बिध बणाए। साचा नाम रसना गावणा। साचा नाम रिदे वसावणा। साचा नाम रसना जप जीव प्रभ अबिनाशी विच्चों पावणा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल जिस पार लँघावणा। साचा नाम सच सूरबीरा। साचा नाम सोहँ तीरा। साचा नाम जगत चलाए आप खिचाए जोत नीरा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण गंवाए पीर फ़कीरा। साचा नाम आपे वंडे। साचा नाम प्रभ साचा आप धरे वरभण्डे। साचा नाम गुरसिख रसना जप, गुरसिख प्रभ साचा लाए कन्ढे। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चढ़ाए साचे दर साचे डण्डे। साचा नाम गुर का रंग। साचा नाम सदा संग। साचा नाम अजूनी स्वै भंग। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना दिसाए रूप रंग। साचा नाम साचा रूपा। साचा नाम सति सरूपा। साचा नाम जोत जगाए विच अन्ध कूपा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जन वड भूपन भूपा। साचा नाम सीतल सन्तोख। साचा नाम अन्तिम मोख। साचा नाम मिटाए आत्म दोख। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा मोख। साचा नाम साचा धाम। साचा नाम रंग करतार। साचा नाम महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धार। साचा नाम कारज सिध्ध। साचा नाम आत्म विध। साचा नाम गुरसिख सिख उपजाए कलि नव निध। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खुल्हाए आपणा तिध। साचा नाम देवे अखल। साचा नाम एक जगत अटल। साचा नाम गुरमुख साचे आप दवाए जोत प्रगटाए कलि।

साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जल। साचा नाम बलि बलिवन्ता। साचा नाम मेल मिलावे साचा कन्ता। साचा नाम कन्न सुणावे प्रभ साचे सन्ता। साचा नाम देवे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साची बणता। साचा नाम गुर साचे दिया। साचा नाम गुरमुख साचे निर्मल जीआ। साचा नाम सोहँ आत्म बीज साचा बिया। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाया दिया। साचा नाम थिर घर वास। साचा नाम मेल मिलाए एका जोत प्रकाश। साचा नाम भेव खुल्हाए दरस दिखाए प्रभ अबिनाश। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे रसना जप स्वास स्वास। साचा नाम हिरदे वास। साचा नाम आप कराए दासन दास। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सद वसे पास। साचा नाम साचा मीत। साचा नाम आत्म उपजावे गुर चरन प्रीत। साचा नाम रसना जप जीव आत्म रहे सदा अतीत। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना जप मानस जन्म जग जीत। साचा नाम करे उज्जयार। साचा नाम मिटाए अन्ध अंध्यार। साचा नाम देवे आप निरँकार। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख होए भवजल पार। साचा नाम आप जणाए। साचा नाम आप सुणाए। साचा नाम माण ताण रखाए। साचा नाम गुरमुख साचे विच बबाण बिठाए। साचा नाम भगत भगवान आप मेल मिलाए। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दया कमाए। साचा नाम एका ओट। साचा नाम एका चोट। साचा नाम आत्म कढ्ढे खोट। साचा नाम आप उतारे पाप कोट। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अतुल्ल भण्डार ना आवे कदे तोट। साचा नाम अतुल भण्डारा। साचा नाम वड संसारा। साचा नाम गुर दर लेवे गुरमुख प्यारा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रागन राग राग मझारा। साचा नाम राग मांझ। साचा नाम आत्म सांझ। साचा नाम गुरमुख साचे भाग लगाए, जो नर नारी रहे बांझ। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत रखाए साची सांझ। साचा नाम गुरमुख सच। साचा नाम गुरमुख हिरदे वच। साचा नाम प्रभ साचा देवे आत्म जाए रच। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बणा कंचन कच। साचा नाम गुरसिख उधार। साचा नाम प्रभ साचा देवे सच दरबार। साचा नाम प्रभ साचे दा सच वरतार। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां भरे आप भण्डार। साचा नाम सच ख़ज़ीना। साचा नाम देवे प्रबीना। साचा नाम गुरमुख विरले रसना जपीना। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना जप जप जीव शांत कराए सीना। साचा नाम तृखा मिटाए। साचा नाम साची सिख्या गुर दर दवाए। साचा नाम जिस धुरों लिख्या, प्रगट जोत आप जपाए। साचा नाम देवे महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, साची सिख्या, गुरमुख भुल ना जाए। साचा नाम धुर दा लेख। साचा नाम आप जपाए, गुरमुख साचे वेख। साचा नाम आप जपाए, जोत सरूपी धारे भेख। साचा नाम रसना गाए, सोहँ शब्द वड वड वसेख। साचा नाम जन विरला पाए, जिन मिटाए विधना लेख। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण गंवाए पीर पैगम्बर औलीए शेख। साचा नाम साची बणत। साचा नाम सर्ब तराए जीव जन्त। साचा नाम लिखाए जोत सरूपी बैठ इकन्त। साचा नाम मात धराए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन भगवन्त। साचा नाम पूरन आसा। साचा नाम प्रभ देवे आत्म भरवासा। साचा नाम रसना जप जीव, प्रभ आत्म करे रासा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे एका किनका एका तिनका ना तोला ना मासा। साचा नाम सद अतोल। साचा नाम सद अडोल। साचा नाम आप सुणाए प्रभ अबिनाशी रसना बोल। साचा नाम जन रसना गाए, प्रभ साचा मेल मिलाए जीव सद रहे कोल। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरे आत्म पड़दे खोल्ह। साचा नाम मिटे द्वैत। साचा नाम सच शराइत। साचा नाम सच हदैत। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए एक सोहँ साची आइत। साचा नाम इक्क अलाह। साचा नाम प्रभ जगत धराए सर्ब दा तला। साचा नाम साचा प्रभ गुरसिख तेरे अग्गे लै खड़ा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई शब्द लिखाई गुर संगत मिलाई ना लावे घड़ी पला। साचा नाम कोटन कोटी। साचा नाम प्रभ साचे दी साची सोटी। साचा नाम गुरमुखां आप रखाए उप्पर चोटी। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां जिउँ बालक माता रोटी। साचा नाम दया दान। साचा नाम गुरमुख साचे प्रभ दर ते पाण। साचा नाम मेट मिटाए आवण जाण। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगटाए जोत सुणाए कान। साचा नाम प्रभ साचा बोले। साचा नाम जन पड़दे खोल्हे। साचा नाम मेल मिलाए, गुरमुख साचे प्रभ साचा विच बैठा तेरे ओहले। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख गुर आपणा भेव आपे खोल्हे। साचा नाम भउ चुकाए। साचा नाम साचे दाउ जीआ लगाए। साचा नाम साचे थाउँ गुरसिख बहाए। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म मरन भउ चुकाए। साचा नाम मिटे रोग। साचा नाम चुक्के सोग। साचा नाम रसना जप जीव प्रभ देवे दरस अमोघ। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आत्म रस साचा भोग। साचा नाम आत्म रस्सया। साचा नाम प्रभ साचे दस्सया। साचा नाम गुरमुख साचे तेरे हिरदे वस्सया। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए कोट रवि सस्सया। साचा नाम साची कार। साचा नाम गुरसिख प्यार। साचा नाम सद रसन उचार। साचा

नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग ना आवे हार। साचा नाम अन्त कलि। साचा नाम गुरसिख जप ना वेला जाए टल। साचा नाम गुरमुख हिरदे सच समाए अमृत मेघ बरसाए जायण पप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग खेल रचाए आप कराए जल थल। साचा कर्म प्रभ कमावणा। जल थल महीअल आप अख्वावणा। वहन्दे वहण जगत वहावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल आप करावणा। आपणा खेल आप कराए। सृष्ट सबाई फेल हो जाए। गुरमुख साचे प्रभ चरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम खेल आप कराए। साची खेल आप करा के। जोत सरूपी जामा पा के। सृष्ट सबाई भरम भुला के। कलिजुग धर्म नष्ट करा के। जीव कुकर्म भृष्ट करा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त जाए करा के। सृष्ट सबाई अन्त करावणा। रूसीआं मूसीआं आप उठावणा। शाह अबनूसीआं नष्ट करावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल आप वरतावणा। एका जोत अग्न चौफेर। दुष्ट सँघारे घेर घेर। जो प्रगटाए ना लाए देर। वड वड सूरा सूरबीर वड वड गहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तराए कर कर आपणी मेहर। चौगिर्द लगाए एका अग्ग। सृष्ट सबाई जाए दग। कलिजुग जीव बिल्लायण कलि दीसण नंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप उपाए जोत प्रगटाए करे रुशनाए अन्धेर मिटाए बेमुख खपाए गुरसिख उठाए चरन लगाए विच माझे दूजी वेर। माझा रास आया अबिनाश, होया दास अन्तकाल छोडया वास, निहकलंक जोत प्रगटाई, लिख्त भविख्त सति कराई माझा देस ना होया पास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए महीना जेठ लिखाए, गुरसिख रलाए अंगीकार अंगद हो जाए, साची रंगत नाम चढ़ाए, गुरमुख साची संगत आप बणाए, आपणा बेड़ा आप उठाए, चरन धरे पार ब्यास। पार ब्यास चरन धर। अचरज खेल आपे कर। माझा देस आवे डर। मदिरा मास जो खायण रामदास तेरे साचे घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे सजाए जोत प्रगटाई अवतार नर। प्रभ साचा जोत जगत जगाए। प्रभ साचा सोहँ मोख मुक्त रखाए। प्रभ साचा दोख दुःख मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन धूढ़ जन मस्तक लाए। आत्म जीव सद है जोगी। आत्म जीव सद है भोगी। आत्म रस जीव प्रभ साचा वस ना होए विजोगी। महाराज शेर सिँघ दुःख दर्द मिटाए जो दर आए रोगी। आत्म रस जीव प्रभ वस होए विजोगी। आत्म जोग साची जुगत। आप संवारे तेरी भुगत। प्रभ दुआरे तेरी मुक्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए दरस दिखाए, भुक्खयां उतारे भुक्ख आत्म जोगी। नाम विजोगी झूठी छड्डे दुनिया रोल विरोली। प्रभ साचे दा साचा दर, साची भिख्या पावे झोली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती आत्म घोली। आत्म जोग चरन

ध्यान। प्रभ चुकाए मिटाए दुःख महान। आत्म सुख उपजाए ना रहे पीड़ प्रान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया करे आप भगवान। उठ सिख सोया जाग। हँस बणयो होयो काग। अन्तिम क्यों होए माढ़े भाग। आपणे घर आपे क्यों लगाई आग। कलिजुग माया डसणी नाग। बिन प्रभ साचे तेरी कोई ना पकड़े वाग। उठ सिख जाग, क्यों होया बाल। उठ सिख जाग, आपणा आप संभाल। उठ सिख जाग, साचा बचन सति कर पाल। उठ सिख जाग, पाप कुठाली विच आपणी देह ना गाल। उठ सिख जाग, क्यों आत्म गंवाया साचा धन माल। उठ सिख जाग, विषे विकारां क्यों होया बेहाल। उठ सिख जाग, मूर्ख मुग्ध गंवारां संगत निभे ना नाल। महाराज शेर सिँघ पकड़ पछाड़े विच उजाड़े होए दो फाड़े आपणा वेला आप संभाल। उठ सिख जाग, काया कच्च। उठ सिख जाग, अग्न जोत विच जाए मच्च। उठ सिख जाग, वेला अन्त जाए बच। उठ सिख जाग, धीआं पुत्तर पाप ना जाए पच। उठ सिख जाग, आपणा किया आप बख्शाए प्रभ फेर वसाए सच। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठा ठूठा आप भन्नाए देही काया कच्च। उठ जीव जाग, प्रभ दर आ। उठ सिख जाग, बुझा आग प्रभ दर्शन पा। उठ सिख धो दाग, क्यों रिहों कलंक लगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे देही छुडा। आओ दर ना जाओ डर, वसाओ घर आपणी भुल बख्शा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पतित पापीआं आपे मति दे लए समझा। पारब्रह्म सच कर्म। पारब्रह्म सच धर्म। पारब्रह्म सच ब्रह्म। पारब्रह्म जोत अगम्म। पारब्रह्म महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए सभ भरम। पारब्रह्म भूपत भूपा। पारब्रह्म जोत सरूपा। पारब्रह्म रंग अनूपा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि जोत प्रगटाए करे रुशनाए सृष्ट सबाई होया अंध्यार। धरी जोत आप अनाद। कलिजुग आयण माधव माध। निहकलंक नरायण नर अगाध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे मेल मिलाए सन्तन साध। आपणी आप जाणे सारा। सृष्ट सबाई खेल न्यारा। जोत जगाई शब्द हुलारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल अपर अपारा। अपर अपार आपे आप। सृष्ट सबाई माई बाप। एका देवे सोहँ जाप। जन रसना गायण कोटन कोट उतारे पाप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगावे आप दसावे आपणा आप। आप आपणा आप वखाए। आत्म सर्ब पाप गंवाए। तीनो ताप मार वखाए। सोहँ जाप जन रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच ब्रह्म दी जोत जगाए। जोत ब्रह्म ब्रह्म समान। पवण जोत जोत पछाण। गुरमुख साचे सच पछाण। तीन भवण अवण गवण खेल महान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि जोत प्रगटाई वाली दो जहान। आपे जोत जगाए जग। आपे आप टिकाए आपणे पग। आपे आप आप अख्वाए, वड सूरा सरबग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

आपणी कल आप वरताए, एका इक्क कराए, ना दिसे धोती टिक्का तग। अन्तिम अन्त बरसाए अग्न मेघ। सोहँ उठाए प्रभ तेग। एका शब्द चलाए सोहँ सतिजुग साची देग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां मुख चुआए अमृत साचा मेघ। कलिजुग अन्तिम किरपा कर। सतिजुग साचा मात दे प्रभ धर। कलिजुग जीव अन्तकाल मानस जन्म गए हर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए करी लिखाई दस्म अवतर। दस्म गुर गुर गोबिन्दा । प्रभ साचे दी साची बिन्दा। वड जोधा सूरबीर वड मृगिन्दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड गुणी गहिंदा। माण गंवाए वाली हिन्दा। आप बणाए आपणी बिन्दा। आत्म मिटाए सर्ब चिन्दा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सीस छत्र झुलाए बेमुख खपाए करन जो निंदा। वाली हिन्द वक्त वहाए। गया वक्त फिर हत्थ ना आए। वाक भविख्त प्रभ पूर कराए। लिखाई लिख्त ना कोई मेट मिटाए। निहकलंक सच कर्म कमाए। सोहँ साचा डंक वजाए। एक कराए राउ रंक, ऊँच नीच कोई रहण ना पाए। आप सुहाए थाउँ बंक, जोत सरूपी जोत प्रगटाए। बैठा रहे सद अटंक, सृष्ट सबाई आप हिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाए। जोत सरूपी जामा धार। साच रंग करे करतार। साचा रंग गुरमुख साचे प्रीत सच साचे दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई वज्जे वधाई चार कुन्ट होए धुन्कार। चार कुन्ट होए धुन्कारा। एका चले शब्द अपारा। सोहँ चले विच संसारा। द्वार बंक इक्क कराए करतारा। ओंकार कर प्यार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक अवतारा। जोत प्रगटाए जामा पाए। निहकलंक आप अख्वाए। सृष्ट सबाई आप सुलाए। गुरमुख साचे सोहँ नाउँ प्रभ साचा आप जपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म जगत कमाए। वाहवा खेल अपर अपार। वाहवा मेल प्रभ गिरधार। वाहवा मेल बिन बाती तेल आत्म दीप होए उज्जयार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी किया मात पसार। जोत सरूपी मात पसारया। जोत सरूपी जामा धारया। जोत सरूपी निहकलंक अवतारया। जोत सरूपी सोहँ साचा डंक वजा रिहा। जोत सरूपी एका अंक आपणा आप रखा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माझा देस भाग लगा रिहा। माझा देस किया वेस। प्रभ साचे दा साचा वेस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देह तजाई जोत प्रगटाई निहकलंक अख्वाई कलिजुग किया साचा वेस। वेस भेस आप कर। माझा देख खुल्हाया दर। मातलोक चल आया हरि। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम रखाया अवतार नर। भरम भुलेखे जगत भुलाया, एक भुलाए साचा घर। गुरमुख साचा चरन लगाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर। किरपा करे आप गिरधारा। गुरसिखां पावे आपे सारा। बेमुखां देवे दर दुरकारा। आत्म कढ्ढे सर्ब हँकारा। दर दर करे सर्ब ख्वारा। निहकलंक लए

अवतारा। जोत सरूपी अगम्म अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अन्त ना पारावारा। आदि अन्त ना कोई जाणे। पारब्रह्म ना कोई पछाणे। सो पछाणे जिस चलाए आपणे भाणे। निहकलंक प्रगट जोत आप रुलाए राजे राणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप आप पछाणे। राजे राणे रुलाए। झूठे बाणे तन पहनाए। आत्म माणे सर्ब गंवाए। प्रभ अबिनाशी मनों भुलाए। थाएँ ना कोई पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे आप रहाए। आपणा भाणा आप चलाया। आपणा बाणा आप वटाया। जाणी जाण आप अख्वाया। कलिजुग जीआं तांईं ताणा ताण आप उलझाया। गुरसिख कराए सुघड़ स्याणा, सोहँ नाम आप जपाया। साचा माण प्रभ दर पाया। कर दरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा राउ रंक इक्क कराया। राउ रंक इक्क करा के। सोहँ साचा शब्द डंक वजा के। जोत सरूपी खेल करा के। गुरमुख साचे मेल मिला के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि जाए आप करा के। कलिजुग अन्तिम आप करावणा। गुरमुख विरला प्रभ चरन लगावणा। कलिजुग जीआं माया पाए बेअन्त प्रभ आप भुलावणा। एका बैठा विच सद इकन्त, बेमुखां दिस ना आवणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि आपे आप करावणा। अन्त वरते साची धारा। सृष्ट सबाई होई ख्वारा। राउ उमराउ होए भिखारा। कोई ना देवे थाउँ दुष्ट दुराचारा। ना कोई पकड़े बांहों ना कोई दीसे किनारा। प्रभ साचा अगम्म अथाह बेमुखां करे ख्वारा। गुरसिखां जपाए प्याए सोहँ साचा नाउँ, आप बहाए चरन दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ चलाए साची नाओ गुरमुखां पार उतारा। गुरमुख साचा उतरे पार। बेमुख डुब्बे विच मंझधार। गुरमुख साचे आए सच दरबार। बेमुखां धर्म राए करे ख्वार। गुरमुखां देवे शब्द अधार। बेमुखां रखाए मदिरा मास मुख आहार। गुरमुखां आत्म जोत करे उज्जयार। बेमुखां आत्म होए अन्ध अंध्यार। गुरमुखां पावे आपे साची सार। बेमुखां अन्तिम आपे करे ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धार। जामा धारे निहकलंक सृष्ट सँघारे। निहकलंक दूती दुष्ट सँघारे। निहकलंक गुरमुख आए चरन दुआरे। देवे दरस आप अपारे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी निहकलंक अवतारे। निहकलंक सच तेरा राथ। निहकलंक सभ तेरा साथ। निहकलंक सच तेरी गाथ। निहकलंक दया कमाए गुरमुख साचे जोत जगाए विच माथ। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए त्रैलोकी नाथ। त्रैलोकी नाथा सगला साथा। आपे रक्खे दे कर हाथा। आप चलाए आपणी गाथा। महिंमा अकथ अकथना अकाथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोलां कला समराथा। सोलां कला आप समरथ। आप आपणी देवे वथ। गुरसिखां चढ़ाए सोहँ साचे रथ। बेमुखां पुआए कलिजुग नत्थ। सृष्ट सबाई जाए मथ्थ। वेला

गया ना आवे हत्थ। बिनां पूत जिउँ पछताए दसरथ। कलिजुग जीव करन हाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई जाए मथ। सृष्ट सबाई करे ख्वारा। जोत सरूप आप निरँकारा। आप मिटाए दुष्ट दुराचारा। ना कोई दीसे मदिरा मास आहारा। सृष्ट सबाई आप उठाए करे दो फाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चबाए आपणी दाढ़ा। सृष्ट सबाई होए दो धड़। एका दूआ छड्डुया लड़। कलिजुग जीआं होए भाग मड़। प्रभ साचा भाण्डा भन्नया जो ल्या घड़। पीड़ पिड़ाए गन्नयां, बेमुखां ना भाणा मन्नया, प्रभ सीस कटाए धड़। शब्द सरूपी जग बन्नया, आप उखाड़े कलिजुग जड़। बेमुखां प्रभ आपे डन्नया, जोत सरूपी जाए ना हड़। गुरमुख, साचे धन्न धन्न धन्न कर मन्नया, वेले अन्त कलिजुग पकड़े लड़। कलिजुग जीव होए आत्म अन्नया, कच्चे फल शब्द अन्धेरी देवे झड़। गुरमुखां देवे सोहँ साचा नाउँ लागे ना सन्नया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दर ते खड़। सच दर प्रभ का द्वार। साचा वर जोत निरँकार। साचा दर सृष्ट सबाई दे अपार। साचा घर आप वसाए साचा घर बाहर। एका जोत मात धरावे, आवे जावे वारो वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत आप निरँकार। एका जोत सच निरँकारा। आवे जावे विच संसारा। जामा पावे अपर अपारा। जुगो जुग प्रभ साचे दी साची कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत आप निरँकारा। एका जोत जोत अपारा।

२१३

०२

गुर दस आपे आप लए अवतारा। गुर नानक मंगया एका सच दुआरा। नाम सति मिल्या शब्द भण्डारा। सृष्ट सबाई आत्म वत्त आपे बीज बिजारा। आपे सूत्र देवे कत्त, आपे आप बणे वणजारा। सति नाम देवे साची मति, पवण सरूपी लै हुलारा। सृष्ट सबाई रखाए जति, एका देवे शब्द अधारा। साची मति आप दिसाए धुर दरबारा। आप जणाए साची मित गति, जोत सरूपी जोत निरँकारा। एका जोत आप बिलोए। दोए तीए चौथे होए। पंजवें आत्म करे रसोए। छेवें बीज साचा बोए। सत्तवें हरया आपे होए। अठवें लग्गे फल ना कोए। नावें रक्खे पति वाली जहानां दोए। दसवें देवे साची मति आपणे चरन परोए। आप देवे धीरज सति, जोत सरूपी गुर गोबिन्द गोबिन्द गुर एका जोत होए। दसवां जामा मात टिकाया। भगत लेख प्रभ आप लिखाया। साचा गुरमुख वेख जगत पठाया। प्रभ सच कराया भेख आपणा शब्द जणाया। जोत सरूपी गुर गोबिन्द गुर एका रेख, ना कोई मेटे मेट मिटाया। गुर गोबिन्द ल्या अवतार। दिया हुक्म आप करतार। मातलोक देवे वड वड सिक्दार। आप निवाए वड वड वड हँकार। आप मिटाए दुष्ट दुराचार। आप गावे आपे पावे आपे जावे आपे आवे आप भावे आप रावे आपे हसावे आप रवावे आपे सोए आप जगावे आपे होए आप अख्वाए सृष्ट सबाई माई बाप। हो जावे इक्क जोत इक्क अकार सच विहार जुगो जुग विच मात आवे जावे वारो वार। दस्म गुर जामा धारया। प्रभ दर चरन

निमस्कारया। प्रभ साचे भरे भण्डारया। आत्म देवे जोत अधारया। साचा शब्द राग सुणा रिहा। बैठे रहे सीतल धारया। बाहों पकड़ आप उठा ल्या। पूर्ब किया जन्म विचार, मातलोक जन्म दवा रिहा। किरपा करी अपर अपार, माता गुजरी कुक्ख सुफल करा रिहा। जोत धरी आप करतार, चण्ड प्रचण्ड साचा खण्ड आप उठा रिहा। जोत सरूपी जोत प्रभ जुगो जुग जामा विच मात दे पा रिहा। दस्म गुर जामा पाए। लिख्या धुर आप कमाए। वड वड सुर सरन लगाए। साचा गुर कर्म कमाए। अनन्दपुर जोत जगाए। जोत सरूपी जोत प्रभ जामा विच मात दे पाए। पुरी अनन्द वेला अन्त। प्रभ साचे आप बणाई साची बणत। आप परखे झूठे जीव जन्त। गुरमुख साचे दिसण अडोल साचे सन्त। रसना हारी कढुण मुखों बोल, माया पाई प्रभ बेअन्त। वेला अन्त ना बैठण कोल, आपे छड्डुण साचा कन्त। आप गंवाया आपणा मूल, आए दर, बचन हर जायण डर, गुर आप होए अनभोल वेला अन्त। गुरसिख जर साचा सन्त चरनी गुर चरनां। बणाए बणत धरनी धरना। आया कन्त करनी करना। साचा सन्त विरला सरनी सरना। भुल्ले जीव जन्त बेमुख दुःख भरना। जोत सरूपी जोत हरि बेमुखां बचन साचा हरना। गुर गोबिन्द शब्द अलाया। साध संगत हुक्म सुणाया। हुक्म अंदर मैं जामा पाया। प्रभ कलिंदर जिउँ चाहे नचाया। कलिजुग जीव ना होयो बन्दर, वेला गया हत्थ ना आया। आत्म साचा मारो जंदर, सति सरूप विच सति समाया। आपे वसे सभ दे अंदर, भय भयानक विच होए सहाया। किला कोट अनन्द पुर, पुर अनन्द साचा दर गुर गोबिन्द जोत प्रगटाया। आपणा आप वेख मार झात अंदर, साची मति दे आप समझाया। कलिजुग जीव वेला छिन भंगर, प्रभ अबिनाशी हुक्म सुणाया। जोत सरूपी जोत गुर जामा विच मात दे पाया। गुर का हुक्म अमोड़। चरन प्रीती चले तोड़। माता गुजरी करे पुकार, सच्चे सपूत टुट्टी जोड़। अन्त ना पाए गुरसिखां हार, प्रभ साचे दी साची लोड़। जोत सरूपी जोत प्रभ, प्रभ का शब्द सद अमोड़। मोड़ मुड़ाया प्रभ का भाणा। आत्म रखाया आपणा माणा। गुरमुखां बणाया गुर अञ्याणा। गुर वरताया आपणा भाणा। वेला अन्त अन्त वक्त शब्द लिखाणा। निहकलंक साचा कन्त आपे आए फिर भगवाना। जोत सरूपी जोत धर, आप लिखाए सिखां मलेछ बाणा। कलिजुग तेरी अन्त हार, दसवें गुर आप लिखाणा। निहकलंक आए जामा धार। जगाए जोत आप करतार। मिटाए गोत आप सर्ब संसार। गुरमुख जगाए सोत देवे शब्द हुलार। जोत सरूपी जोत प्रभ निहकलंक लै अवतार। कलिजुग लै अवतार सिखां वरतावे साचा भाणा। सिँघ मलेछ एका खाणा। आपे भुल्लण साचा बाणा। आपणा किया आपे पाणा। मदिरा मास रसन लगाणा। आत्म सुख सर्ब गंवाणा। ना उतरे भुक्ख दुःख महाना। कलि जोत प्रगटाए निहकलंक नाम रखाए जोत सरूपी जामा पाए आपे आप आप भगवाना। मलेछ धार

होयण ख्वार, रामदास तेरे सच घर दर दरबार। मदिरा मास करन आहार। धीआं भैणां करन वपार। दुष्ट दुराचारां कूड़ा होया विहार। जोत प्रगटाए आप प्रभ बेमुखां करे ख्वार। जोत सरूपी जोत प्रभ, अन्तिम अन्त कलि आए जामा धार। राम दास तेरा साचा घर। कलिजुग जीआं बणाया वेसवा घर। सर अमृत साचा सर। कलिजुग जीव होए दुष्ट दुराचार नारी नर। आयण चल दर विच पापां आपणा आप जायण हर। प्रगट जोत निहकलंक एक दिसावे आपणा डर। राम दास तेरा दरबारा। रामदास तेरा घर बाहरा। राम दास तेरा पसारा। पंचम गुर जोत अकारा। प्रभ अबिनाशी बैठा चरन जुड़, शब्द लिखाए लेख लिखारा। आप लिखाए साचा गुर, निहकलंक अन्तकाल लै अवतारा। साची लिख्त आप कराए। वाक भविख्त सति वरताए। लेख लिख्त ना कोई मिटाए। निहकलंक कलि जामा पाए। रामा शामा आप अख्वाए। सोहँ नाम आप जपाए। पूरन घाल जगत कराए। शब्द दमामा आप वजाए। कलिजुग झूठा जामा अन्त खपाए। सतिजुग तेरा रक्खे माणा, विच मात कलि जन्म दवाए। एका रक्खे सोहँ आणा, चार कुन्ट जै जै जैकार कराए। जोत प्रगटाए विष्नूं भगवाना, निहकलंक कलि नाउँ धराए। निहकलंक कलि जामा पाया। पुरी घनक भाग लगाया। पूरन काम अन्तिम अन्तकाल प्रभ साचे आण कराया। वेला अन्त ना जाए टल, प्रभ साचे लेख लिखाया। सृष्ट सबाई जाए हल, जोत सरूपी अग्न लगाया। आप उतारे बेमुखां खल्ल, वड वड वड कसाई आप अख्वाया। आप कराए वल छल, छल वल कर जगत भुलाया। आप कराए थल जल, जल थल आप उलटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक पुरी घनक कलि जामा पाया। पुरी घनक जामा पा के। जोत सरूपी जोत प्रगटा के। माझा देस आग लगा के। साचा वेस प्रभ आप करा के। वड वड वड नरेश प्रभ हुक्म सुणा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त करा के। राउ रंक सर्ब भुला के। सर्ब भुलाए आप रुलाए कवण छुडाए पति गंवाए यति तुड़ाए मति गंवाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां पाए नत्थ दर दर फिराए। प्रभ साचा रक्खे लाजा। सृष्ट सबाई जिस साजन साजा। देवे वड्याई वड राजन राजा। जोत जगाई पुरी घनक विच देस माझा। माझा देस गया भुल्ल। वेला अन्त गया हुल्ल। पाणी हत्थ ना आवे चुल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप वरताए दुष्ट दुराचारां आप खपाए आपणा आप जीव गए भुल्ल। साचा वक्त आप सुहाए। जगत रक्त आप वहाए। सक्त भुगत कोई रहण ना पाए। एका जुगत निहकलंक सरनाए। साची मुक्त सोहँ रसना गाए। जीव आत्म जुगत प्रभ साचा विच समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे विच आप रहाए। माझे देस होए भीड़। जीव जन्तां पाए पीड़। आपे तोड़े हड्डी रीड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप बेमुखां जाए पीड़। बेमुखां

आपे पीड़ पिड़ाए। बेमुखां आपे चीर लुहाए। बेमुखां आपे तीर चलाए। बेमुखां आपे नीर तरसाए। बेमुखां आपे वहीर कराए। बेमुखां सीर हत्थ ना आए। बेमुखां ना कोई सीर चुआए । बेमुखां फ़कीर जगत फिराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलिजुग प्रगट गुरसिखां धीर धराए। धीर धराए धरनी धर। धरत अकाश एका जोत हरि। एका हरि तीन लोक साचा दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप टिकाए लिखाए वसाए एका साचा घर। एका घर एका दर एका वर एक हरि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस गुरमुख साचा जाए तर। गुरसिख तरया सरनी परया। आत्म हरया प्रभ दर खरया। ना कदे जम्मे ना कदे मरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सदा सदा दर तेरे खड़या। सदा सदा प्रभ तेरे दर। सदा सदा प्रभ तेरे घर। सदा सदा प्रभ तेरे वर। सदा सदा कर दरस गुरमुख साचे जायण तर। सदा सदा प्रभ अबिनाशी जोत प्रगटाए अवतार नर। सदा सदा प्रभ अबिनाशी गुरमुख साचे सन्त जगाए आत्म देवे भण्डारे भर। सदा सदा प्रभ बणत बणाए जो जन आए प्रभ साचे दे साचे दर। सदा सदा प्रभ भेव खुल्हाए, साची सेवा आप लगाए, वड देवी देव आप बणाए, सोहँ साचा मेव मुख चुगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती साची सेव कलि ना बिरथी जाए। गुर चरन प्रीती सच कमाओ। गुर चरन प्रीती, प्रभ अबिनाशी साचा पाओ। गुर चरन प्रीती साची रीती, पिछली भुल दर बख्शाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पतित पुनीती काया सीतल कीती, अमृत आत्म मेघ बूंद स्वांती मुख चुआओ। बूंद स्वांती लाए मुख। गुरसिख तेरी उतरे भुक्ख। एका उपजे साचा सुख। हउमे विच्चों जाए दुख। सुफल कराए मात कुक्ख। गुरसिख फिर मात गर्भ ना होए उलटा रुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात कराए तेरा उज्जल मुख। उज्जल मुखीआ आत्म सुखीआ, मिटे दुखीआ उतरी भुखीआ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म होए सूखम सुखीआ। दर्शन वेला प्रभ सुहेला। साचा मेला भगत दुहेला। जोत जगाए बिन बाती बिन तेला। अचरज खेल प्रभ कलि खेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए चरन लगाए, प्रभ मिलण दा साचा वेला। मिल प्रभ जीव आत्म उतरे तेरी संग। मिल प्रभ साचा दरस दान दर मंग। मिल प्रभ आत्म चाढ़ इक्क मजीठी रंग। मिल प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म गंवाए गुरसिख तेरी भुक्ख नग्ग। भुख्या नन्गयां सद है सन्गाया। कर दरस गुरमुख साचा पाप पहाड़ां लँघया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर जिस जन आए मंगया। मांगो मांगो मांगो जीव, नाम दान। मांगो मांगो मांगो जीव, दरस भगवान। मांगो मांगो मांगो जीव, प्रभ जोत गुण निधान। मांगो मांगो मांगो जीव निहकलंक चरन धूढ़ इशनान। मांगो मांगो मांगो जीव, एक दरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान।

दरस दिखाए हरस मिटाए तरस कमाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म बरस आत्म शांत कराए। आत्म शांत जीव इकांत। एका दिसे पिण्ड परात। ना कोई दिसे दिवस रात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत एका गोत बैठा रहे सदा इकांत। जीव इकांती बूंद स्वांती मुख चुवांती कँवल भुवांती द्वार खुल्लांती धुन उपजाति सुन्न खुल्लांती महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साची बणत। बणत बणाए आप प्रभ, गुरसिख लए जगा। बणत बणाए आप प्रभ, सोहँ राग जगत उपा। बणत बणाए आप प्रभ, एका नाम जगत धरा। बणत बणाए आप प्रभ दोअँ नाम जगत मिटा। बणत बणाए आप प्रभ, सभ थाईं होए आप सहा। बणत बणाए आप प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर कोई नांह। ना कोई दूसर नां कोई दूज। सतिजुग दिसे ना कोई पूज। एक बुझाए प्रभ आपणी बूझ। आपणा भेव खुल्हाए गूझ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाए एका एक रहाए आप गंवाए एका दूज। लेख लिखाए आप प्रभ। रेख मिटाए आप प्रभ। वेखा वेख चरन लगाए आप प्रभ। भेख भेख भेख जगत मिटाए आप प्रभ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक प्रगट जोत दरस दिखाए आप प्रभ। जोत जगा के दरस दिखा के। सतिजुग साचा अमृत मेघ बरसा के। कलिजुग झूठा अन्त खपा के। बेमुखां हत्थ ठूठा आप फड़ा के। गुरमुख रूठा आप मना के। रंग अनूठा आप चढ़ा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जूठ झूठ सभ जाए नष्ट करा के। नष्ट कराए कलिजुग जूठ। आप खपाए कलिजुग मूठ। गुरमुख वड्याए दर भिख्या पाए नाम दुवाए सुख उपजाए एका रंग चढ़ाए बसूठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए कलिजुग झूठ। मेट मिटाए आप। तेज वखाए आप। भेव खुल्हाए आप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए आप। प्रगटे जोत वरते भाणा। निहकलंक कलि पहरे बाणा। तख्तों लाहे राजा राणा। आप उठाए मुगल पठाणां। धूढ़ धूढ़ होए जहाना। तुड़ो तुड़ पिंज पिंजाना। कूड़ो कूड़ कूड़ मिटाना। कलिजुग जीव शब्द बूड़ विच पिड़ाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप वरताए आपणा भाणा। उठे लशकर वड दुरानी। आत्म होए सर्ब अभिमानी। तोड़े ना कोई जीव गुमानी। मातलोक ना कोई दिसे सांनी। आवण वाहो दाही चण्डी चमकानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई सोहँ शब्द उठाई खण्डी भवानी। आवण आए जिउँ सावण मेघ बरसाए। एका कांग आप चढ़ाए। स्वांगी स्वांग सांग रचाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अपणी कल आप वरताए। आवण जावण वाहो दाही। फिरदी जाए भगत दुहाई। भज्जे फिरन राहो राही। कोई ना दीसे भैण भाई। त्रीया छड्डुया साचा माही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत अग्न लगाई। अग्न जोत आपे लाए। आपे आप कुठाली आपणी ताए। सृष्ट सबाई आप खपाए। गुरमुख विरले

आत्म लाली आप चढ़ाए। साध संगत प्रभ साचा वाली, अन्तिम मेल आप मिलाए। कलिजुग जीव चले दोए हत्थ खाली, धर्म राए दे सजाए। गुरसिख आत्म मालो माली, सोहँ साचा रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा सिर हत्थ टिकाए। उठण मुगल संग मुगलाणीआं। दुध्धां विच पईआ रहण मधाणीआं। उठ उठ भज्जण घर घर सवाणीआं। सुंञे घर आवे डर, लेखा मंगे बाणीआं। प्रभ साचे दी सरनी पर, बेमुखां पीड़ पिड़ाए जिउँ कोहलू घाणीआं। प्रभ साचा कलिजुग वेला हत्थ ना आए प्राणीआं। प्रभ साचे दा साचा दर, ना कोई दिसे ना कोई छुडाए निधानीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाई, सोहँ साची नाओ चलाई, आपे बणे वंञ मुहाणीआं। उठाए उठण मुगल पठाण। आपे कुट्टण वड वड बलवान। आपे मुट्टण जिउँ रसना चूपे पान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाई जगत महान। मुगल पठाणां आप उठाणा। बल दिवाणा आप चलाणा। सत्तर लक्ख संग रलाणा। वक्ख वक्ख राह बताणा। लक्ख लक्ख होए प्रधाना। कक्ख कक्ख कक्ख उडाणा। भक्ख भक्ख भक्ख विच सृष्ट कराणा। रक्ख रक्ख रक्ख गुरसिख विष्नूं भगवाना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचे जोत सरूपी पहरया बाणा। सत्तर लक्ख आए चढ़। वहन्दी धार जिउँ सावण हढ़। तोड़ तुड़ाए किल्ह्रा गढ़। आप उखाड़े सभ दी जड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप पछाड़े फड़ फड़। आप पछाड़े आप चबाए आपणी दाढ़े। अग्न जोत प्रभ आपे साड़े। बेमुखां दिन होए माढ़े। गुरसिख बणाए सतिजुग साचे लाड़े। सोहँ साची नईआ प्रभ साचा चाढ़े। एक कहाए भैणां भईआ, कोई ना दीसे जीव दो फाड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई पावे दुहाई, जीव जन्त रुलाई, साध सन्त तराई, आपणी सरन आप लगाई, बेमुखां प्रभ अग्न जोत विच साड़े। माझा हद्द घविंड रखाई। आप आपणी मेख लगाई। वेले अन्त कलिजुग साची लिख्त लिखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा थाउँ साचा गाउँ आपे फेर सुहाई। आप सुहाए आपणे थाना। आप बन्न्हाए साचा गाना। आप धराए धर्म निशाना। आप उपजाए ब्रह्म ज्ञाना। आपे आप जीव पावे, एका रक्खे चरन ध्याना। चरन धूढ़ मस्तक लावे, जोत ललाट जगे महाना। सोहँ साचा रसना गावे, बजर कपाट आप खुल्हाणा। प्रभ अबिनाशी घर में पावे, द्वार दसम भेव चुकाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लगाए आपणी सेव, गुरमुख साचे आवण जावण गेड़ मिटाना। आवण जावण गेड़ कटाए। सच निशान नाम जपाए। भगत भगवान मेल मिलाए। गुण निधान दर दया कमाए। चतुर सुजान आप अख्वाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाए। आपे होए चतुर सुजाना। आपे गोपी आपे काहना। आपे घनईआ आपे शामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि पहरया जामा। जामा धार

जगत प्रभ आए। सृष्ट ख्वार आप कराए। एका द्वार चरन रखाए। शब्द अधार गुरसिख तराए। पावे सार आत्म तृखा मिटाए। ना आवे हार जो जन गुरसिख कहाए। प्रभ देवे तार, सोहँ साची भिक्ख दर पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे लेख आप लिखाए। लेख लिखाया प्रभ साचे कलि। भेख वटाया प्रभ साचे कलि। मेख लगाया प्रभ साचे कलि। साचा धाम आप उपजाया प्रभ साचे कलि। भेख वटाया प्रभ साचे कलि। जोत सरूपी जोत जगाया प्रभ साचे कलि। जोत सरूपी दरस अमोघ दिखाया प्रभ साचे कलि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म चिन्ता सोग मिटाया, प्रगट होए दरस दिखाया कलि। दरस दास दसवां मास। आत्म रास मिले स्वास। छुट्टे गर्भवास, मानस जन्म होए रास। मम्मां होया मास ग्रास। साचा सीर आपे वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द जपाए स्वास स्वास। स्वास स्वास रसन स्वासा। रास रास रास मानस जन्म होए रासा। वास वास वास प्रभ साचा रक्खे वासा। दास दास दास भगत जनां प्रभ रक्खे दासा। विनास विनास विनास सभ कलिजुग जीव अन्तिम होयण सर्ब विनासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई पुरख अबिनाशा। प्रभ साचा सद अबिनाश। सृष्ट सबाई जाए विनास। गुरमुख विरला रसना गाए सोहँ स्वास स्वास। प्रभ आपणा आप उपाए, एका जोत करे प्रकाश। प्रभ सोए आप जगाए हिरदे किया वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, थाउँ साचा पाए, मानस जन्म कराए रास। सचखण्ड गुर दरबारा। विच वरभण्ड जोत निरँकारा। विच नव खण्ड कराए जै जै जैकारा। साचा नाम जगत प्रभ वंड, आपे बणे सर्ब सहारा। अन्तकाल ना आवे कंड, प्रभ देवे दरस अगम्म अपारा। गुरसिख आत्म ना होए रंड, सदा सुहागण विच संसारा। आप वड्याए विच खण्ड ब्रह्मण्ड विच वरभण्ड जो जन निहकलंक चरन निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा धाम एक आप रखाए आपणे चरन दुआरा। सचखण्ड चरन द्वार। चरन द्वार सच्चा घर बाहर। सच्चा दरबार सच्चा घर बाहर। प्रभ दरबार जन देवे तार। जन देवे तार, ना आवे हार। ना आवे हार, प्रभ पावे सार। प्रभ पावे सार, जुगो जुग प्रभ साचे दी साची कार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोई थान सुहाए जित चल आए दरबार। वड दरबारी वड संसारी। वड भण्डारी आप गिरधारी। जोत निरँकारी वड सिक्दारी। सृष्ट सबाई करे चरन पनिहारी। मात जोत प्रगटाए, निहकलंक नरायण नर अवतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप वजाए सोहँ डंक चिट्टे अस्व अस्वारी। चिट्टा अस्व सच अस्वारा। जोत सरूप जोत निरँकारा। सत्त सफेद आप उधारा। सत सत सत काले खड़े दुआरा। वड रथबाण जगत मुरारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त ना पारावारा। आपे राथा आपे साथा आपे नाथा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सदा तेरे संग साथा।

प्रभ का संग आत्म संगीत। प्रभ अबिनाशी साचा मीत। एका बख्शे चरन प्रीत। दिवस रैण सद रसना चीत। मानस जन्म कलिजुग जीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मिल्या साचा मीत। मित्र प्यारा जोत निरँकारा। शब्द अधारा सबाई सृष्ट पसारा। एका देवे सच दुआरा। साची भिख्या आप सोहँ देवे नाम अधारा। पूरन इच्छया आप करावे आत्म देवे दरस अपारा। गुरसिख रक्खया आप करावे, सोहँ उठावे खण्डा दो धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप शब्द अधारा। सोहँ खण्डा आप उठाया। वरभण्डी वरभण्ड समाया। खण्ड ब्रह्मण्ड देवे उलटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेख वटाया। वडा प्रभ भेख धार। कलिजुग जीवां करे विचार। साढे तिन्न हत्थ सीआं रक्खे विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां मारे कर ख्वार। करे ख्वारी दुष्ट दुराचारी। हाहाकारी करे नर नारी। आत्म दुःख लग्गा भारी। सोहँ करे प्रभ साची कारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप सदा सदा जोत अधारी। जोत अधार आपे रक्ख। जोत अकार आपे रक्ख। भगत उधार आपे रक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान देवे तार, गुरमुख साचे पति तेरी रक्ख। गुरसिख साचे राखे पति। आपे देवे साची मति। सोहँ देवे आत्म यति। साचा बीज बिजावे साचे वत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया कमावे, चरन प्रीती देवे साचा नत्त। चरन प्रीती साचा नाता। आपे देवे साची दाता। सोहँ सतिजुग वडी करामाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप पछाता। आप पछाणे आपे जाणे। आत्म होई सुंञ मसाणे। कलिजुग जीव बाल अञ्याणे। माया ममता विच भुलाणे। साधां सन्तां संग ना भाणे। आदिन अन्ता ना कोई पछाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं जन्तां एका रंग समाणे। एका रंग आप समाया। जोत सरूपी लाहे माया। कलिजुग माया पोहे ना राया। आपे आप बणे गुरसिखां दाया। धन्न धन्न धन्न गुरसिख तेरी वड्आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निज घर वासी निज घर में पाया। गुर संगत आसा पूर कर। संसा रोग दुखड़े दूर कर। गुरमुख साचे आपणी चरन धूढ़ कर। सुघड़ स्याणे बाल अञ्याणे मूढ़ कर। आप चलाए आपणे भाणे, आत्म रंग गूढ़ कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख आपणी धूढ़ कर। चरन धूढ़ सच भबूत। चरन धूढ़ आत्म सूत। चरन धूढ़ दुरमति मैल सभ धोत। चरन धूढ़ देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खुल्हाए सर्ब सोत। चरन धूढ़ मस्तक लाओ। साचे लेख प्रभ दर लिखाओ। झूठा भेख जगत तजाओ। वेखा वेख ना प्रभ भुलाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखे भुल ना जाओ। गुरसिखां सुणे आप पुकारा। दुक्खां भुक्खां सभ निवारा। आत्म जोत करे उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस अपारा। साचा दर सच्ची अरदास। साचा सुख भया प्रभ साचा रक्खे वास। सोहँ साचा नाउँ

जप, आत्म वसूरे होण विनास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां गुरसिखां सद रक्खे पास। आपे जीव आप प्राना। आपे देवे चरन ध्याना। आप उपजावे आत्म ब्रह्म ज्ञाना। आप नुहावे साचे सर, अमृत आत्म वड महाना। आप खुल्हावे साचा दर, जिथ्थे वसे आप भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा जोत सरूपी मेल मिलाना। जोत सरूपी मेल मिला के। गुरमुख साचा साक सज्जण सुहेल बणा के। प्रभ अबिनाशी आप आपणी दया कमा के। घनकपुर वासी साचा संग अंग निभा के। आत्म उतारे सर्ब उदासी, जोत सरूपी दीप जगा के। आप तजाए मदिरा मासी, उधरे सिँघ पाल सोहँ रसना गा के। सच प्रीती चरन रहरासी, मानस जन्म जाए सुफल करा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म कीनी दासी आपणी दया कमा के। दया कमाए हिरदे वस। साचा राह प्रभ जाए दस्स। गुरसिख प्रभ चरन आए नस्स। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए कोट रवि ससि। आत्म जोत जगे महाना। मिल्या प्रभ भगत भगवाना। आपे देवे सोहँ साचा दाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बणाए दे वड्याए चरन सुजाना। गुरसिख तेरी वड वड्याई। उच्च पदवी प्रभ दर ते पाई। साचा दर घर प्रभ आप वखाई। अवतार नर सच रघुराई। किरपा कर बूझ बुझाई। जोत धर भेव गूझ खुल्हाई। अन्तकाल ना आवे डर प्रभ साचा होए सहाई। धन्न धन्न धन्न गुरसिख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे आप वड्याई। वडा दाता वडा माण। पूरन ब्रह्म करे पछाण। गुर गुरसिख गुर इक्क रंग समाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप गुरसिखां करे पछाण। चरन प्रीती किरपा कर। आप रखावे साचा घर। आप खुल्हाया आपणा दर। जिथ्थे वसे आपे हरि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करन करावणहार आपे सभ किछ रिहा कर। आप खुल्हाए दर दरवाजा। आप वजाए अनहद वाजा। प्रभ साचे सच साजण साजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां दया कमाए गरीब निवाजा। आत्म इच्छया कूड़ी रास। साची भिच्छया ना होए पास। ना करे रच्छया जिस होया दास। लागे पिच्छया होए जम घर वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द लिखाए सन्तन करे अन्तिम दास। सन्तन लेखा आप चुकाया। अन्तिम शब्द आप लिखाया। अन्तन अन्त दुःख मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत मिलाया। होए सन्त आत्म अधूरी। आत्म तृष्ना सदा वसूरी। दिवस रैण रैण दिवस आत्म रक्खे गरूरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कराए, झूठे सन्तां खेल मिटाए, आप उठाए खूंडी भूरी। सन्त सन्त साध छड्ड झूठा माण। सन्त सन्त साध ना बण बाल अञ्याण। सन्त सन्त सन्त साचा कन्त पछाण । सन्त सन्त सन्त जीव जन्त देवे दुःख महान । सन्त सन्त सन्त अन्तिम अन्त कराए आपणा आप पछाण। साधन संग झूठा रंग आत्म

नंग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए आप खपाए प्रेत सरूपी जून कटाए। दर मन्दिर जो विच रहाए। विच कंदर जो दिस ना आए। वांग बन्दर आप नचाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर, बंधे आप बंधाए। आपे पांधे रस्ते पाए। थक्के मांदे प्रभ गले लगाए। आत्म अन्धे प्रभ दे सजाए। सोहँ गांउदे जीव क्यों दुःख उठाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा सिर हत्थ टिकाए। आसा मनसा पूर कर। सन्ता खिडावा दूर कर। आपे चकना चूर कर। गुरसिख आत्म भरपूर कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी नूरो नूर कर। गुण अवगुण ना प्रभ विचारे। जो जन आए चरन निमस्कारे। डुब्बदे पात्थर कलिजुग तारे। सोहँ देवे नाम जपावे आप खुल्ावे। सच दुआरे, जिथ्थे वसे आप निरँकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत अकारे। आत्म जोत होए प्रकाश। अज्ञान अन्धेर हो जाए विनास। गुरमुख साचा होया दास। रसना जपे स्वास स्वास। आप तजाए मदिरा मास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए आपणा आप दिखाए सद सद सद वसे पास। आत्म वास आप रखाए। गुरसिख हरस आप मिटाए। अमृत मेघ बरस प्रभ तृखा मिटाए। आप दिखाए आपणा दरस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन दया कमाए। दरस देख आत्म अतीता। प्रभ आत्म शांत कराए सीतल सीता । प्रभ सति सति वरताए साचा मीता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ बीज बिजाए गुरमुख साचा आप आपणे जिहा कीता। आप आपणी सरन लगाया। तारन तरन आप अख्वाया। हरन फरन प्रभ आप खुल्ाया। एका वरम सोहँ आप लगाया। साचा कर्म निहकलंक सरनाया। मानस जन्म प्रभ साचे सुफल कराया। आप मिटाए भरम, जोत सरूपी जामा पाया। एका एक रखावे साचा ब्रह्म आपणा भेव प्रभ आप खुल्ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जिंदा आप तुड़ाया। आत्म मारे सोहँ बाण। गुरमुख साचे दर पछाण। दर घर देवे साचे माण। रसना गावे सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। सोहँ गाया सर्ब सुख पाया। आत्म तीर्थ नहाया। साचा सीरथ मुख चुआया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर जोत धर कँवल नाभ आप उलटाया । कँवल नाभ उलटा फुल्ल। जीव जन्त रहे भुल्ल। साचा अमृत रिहा डुल्ल। हत्थ ना आवे वड वड अनमुल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन दया कमाए अमृत मुख चुआए, एका जोत करे रुशनाए ना कोई रहे भरम। आत्म जोत आप जगईआ। सोहँ साचा राग सुणईआ। आत्म साची जाग लगईआ। पूरन भाग प्रभ दरस दिखईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चढ़ाए सोहँ साची नईआ।

* २४ सावण २००६ बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल *

पाया गुर पूरा भगवन्त। पाया गुर पूरा गुणवन्त। पाया गुर पूरा, वड साधन सन्त। पाया गुर पूरा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदिन अन्त। पाया गुर पूरा, पाया सच दरबारा। पाया गुर पूरा, कलि आया निहकलंक अवतारा। पाया गुर पूरा, जन भगतां करे अधारा। पाया गुर पूरा, गुरसिखां करे प्यारा। पाया गुर पूरा, जोत सरूपी जोत निरँकारा। पाया गुर पूरा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। पाया गुर पूरा, शब्द अधार। पाया गुर पूरा, जोत निरँकार। पाया गुर पूरा, रूप अनूप अगम्म अपार। पाया गुर पूरा, जोत सरूपी किया अकार। पाया गुर पूरा, वरते वरतावे विच संसार। पाया गुर पूरा, मातलोक आया जामा धार। पाया गुर पूरा जीव आत्म करे ब्रह्म विचार। पाया गुर पूरा, सच दिसाया जिस घर बाहर। पाया गुर पूरा, एका एक एकँकार। पाया गुर पूरा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। पाया गुर पूरा, मोख द्वारी। पाया गुर पूरा, वड वड वड संसारी। पाया गुर पूरा, वड वड भण्डारी। पाया गुर पूरा, वड वड वड दरबारी। पाया गुर पूरा, तीन लोक सच्ची सिक्दारी। पाया गुर पूरा, जोत सरूपी पवण आहारी। पाया गुर पूरा, पवण उनन्जा सिर छत्र झुलारी। पाया गुर पूरा एका जोत निहकलंक नरायण नर अवतारी। पाया गुर पूरा, होए प्रकाश। पाया गुर पूरा, अन्ध अन्धेर जाए विनास। पाया गुर पूरा दर घर आए अबिनाश। पाया गुर पूरा जन भगतां होए दास। पाया गुर पूरा, छड्ड आया पताल अकाश। पाया गुर पूरा, सोहँ शब्द जपाए स्वास स्वास। पाया गुर पूरा गुरसिखां आत्म करे रास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर सद बलि बलि जास। पाया गुर पूरा भिख्या धारी। पाया गुर पूरा निहकलंक नर अवतारी। पाया गुर पूरा, जुग चौथे राम अवतारी। पाया गुर पूरा, प्रगटाई जोत कृष्न मुरारी। पाया गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। पाया गुर पूरा, शब्द अमोला। पाया गुर पूरा, गुरसिखां बणाए सोहँ विचोला। पाया गुर पूरा, गुरसिखां सुणाए सोहँ साचा बोला। पाया गुर पूरा, आप अतुल सृष्ट सबाई बणया आपे तोला। पाया गुर पूरा, कलिजुग अन्तिम अन्त भेव जिस खोल्हा। पाया गुर पूरा, राजे राणयां करे चरन प्रभ गोला। पाया गुर पूरा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार साचा शब्द गुर साचे बोला। पाया गुर पूरा, वड राजन राजा। पाया गुर पूरा, ग़रीब निवाजा। पाया गुर पूरा, वड ताजन ताजा। पाया गुर पूरा, सृष्ट सबाई जिस साजन साजा। पाया गुर पूरा, सोहँ शब्द वजाए अनहद वाजा। पाया गुर पूरा, सरन पड़े दी रक्खे लाजा। पाया गुर पूरा, जोत प्रगटाई विच देस माझा। पाया गुर

पूरा, सृष्ट सबाई कराए भाजा। पाया गुर पूरा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द उडावे साचा बाजा। पाया गुर पूरा, वड प्रबीना। पाया गुर पूरा, वड दाना बीना। पाया गुर पूरा, आप मिटाए मुहम्मदी दीना। पाया गुर पूरा, एका चोट लगावे चीना। पाया गुर पूरा, आप कराए आप तराए गुरमुख साचे जिउँ जल मीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार आपे जाणे आपणा कीना। पाया गुर पूरा वड गहर गम्भीर। पाया गुर पूरा, वड धीरन धीर। पाया गुर पूरा, वड पीरन पीर। पाया गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां मुख चुआए आत्म साचा सीरन सीर। पाया गुर पूरा, जोत निरँजण। पाया गुर पूरा, साचा साक सैण सज्जण। पाया गुर पूरा, चरन धूढ़ देवे साचा मजन। पाया गुर पूरा, बेमुख दर ते आए जाए भज्जण। पाया गुर पूरा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दर तेरे ते गज्जण। आया कलिजुग करन अख़ीर। सोहँ शब्द चलाया तीर। मेट मिटाए पीर फ़कीर। सृष्ट सबाई लथ्थे चीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वक्त चुकाए जगत मिटाए भगत तराए शक्त वखाए वक्त सुहाए आपे देवे साची धीर। पाया गुर पूरा, वड बली बलवाना। पाया गुर पूरा, वड वड मेहरवाना। पाया गुर पूरा, वड वड चतुर सुजाना। पाया गुर पूरा, एक जोत जगाए। पाया गुर पूरा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। पाया गुर पूरा, विष्नूं भगवान। पाया गुर पूरा, सोहँ देवे साचा दान। पाया गुर पूरा, रसना जप जीव आत्म जोत जगे महान। पाया गुर पूरा, झूठा तोड़े जगत अभिमान। पाया गुर पूरा, एका देवे सोहँ वड गुणी निधान। पाया गुर पूरा, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा सर्ब जीआं दा जाणी जाण। पाया गुर पूरा भगत रखवाला। पाया गुर पूरा, वड दीन दयाला। पाया गुर पूरा, जीव जन्त सर्ब प्रितपाला। पाया गुर पूरा, एक जोत जगाए बिरध बाल जवानां। पाया गुर पूरा, आत्म देवे सोहँ साची काना। पाया गुर पूरा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त साध सन्त जीव जन्त पूरन भगवन्त साचा कन्त जिस बणाई बणत होए आप रखवाला। पाया गुर पूरा, पूरन सच उपदेसा। पाया गुर पूरा दर खड़े ब्रह्मा विष्न महेषा। पाया गुर पूरा, देवे जोत सभ देवी देव गनेशा। पाया गुर पूरा, एका जोत जुगो जुग जोत सरूपी जगत प्रवेशा। पाया गुर पूरा कलि साचा भूपा। पाया गुर पूरा, जोत निरँजण सति सरूपा। पाया गुर पूरा, ना दीसे कोई रंग रूपा। पाया गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत करे प्रकाश सृष्ट सबाई होए अन्ध कूपा। पाया गुर पूरा, होए उज्जयारा। पाया गुर पूरा मिटे अन्ध अन्धयारा। पाया गुर पूरा खोल्हे दस्म दुआरा। पाया गुर पूरा आत्म झिरना झिरे अपारा। पाया गुर पूरा, एका शब्द उपजावे साची धुन्कारा। पाया गुर पूरा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगावे जोत निरँकारा।

पाया गुर पूरा जोत निरँकारी। पाया गुर पूरा, जोत सरूप सद निराहारी। पाया गुर पूरा प्रभ साचा सदा निराधारी। पाया गुर पूरा, जोती जोत अकारी। पाया गुर पूरा, सृष्ट सबाई पसर पसारी। पाया गुर पूरा, जीव जन्त देवे जोत अधारी। पाया गुर पूरा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर दरबारी। पाया गुर पूरा, साचा दर। पाया गुर पूरा, आया साचे घर। पाया गुर पूरा, दरस दिखाए अवतार नर। पाया गुर पूरा, कर दरस गुरसिख साचा जाए तर। पाया गुर पूरा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म मेघ बरसाए साचा सर। पाया गुर पूरा, अनहद तूर। पाया गुर पूरा, सर्ब कला भरपूर। पाया गुर पूरा, आत्म देवे साचा नूर। पाया गुर पूरा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप वड सूरबीर। पाया गुर पूरा, वड सूरबीरा। पाया गुर पूरा, सोहँ शब्द चलाए तीरा। पाया गुर पूरा, चार कुन्ट कराए वहीरा। पाया गुर पूरा राणयां महांराणयां लाहे चीरा। पाया गुर पूरा, चार कुन्ट कराए वहीरा। पाया गुर पूरा, बेमुखां मुग्ध अन्जाणयां रुलाए वांग फ़कीरां। गुरमुख साचे सुघड़ स्याणयां सोहँ देवे आत्म धीरा। सिख साचे बाल अञ्याणयां मुख चुआए अमृत सीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानयां गुरमुख शांत कराए सरीरा। पाया गुर पूरा, वडभागा। पाया गुर पूरा, गुरसिख कलिजुग सोया जागा। पाया गुर पूरा, प्रभ साचे दी सरनी लागा। पाया गुर पूरा आत्म मैल धोए दागा। पाया गुर पूरा अनहद शब्द उपजाए साचा रागा। पाया गुर पूरा, भरम भउ जगत खउ गुरमुख साचे तेरे दर तों भागा। पाया गुर पूरा, सतिजुग लगाया जिस पहली माघा। पाया गुर पूरा, छेड़ छिड़ाए आप उठाए सोए जगाए थेह कराए पहले वाघा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द लिखाए सति वरताए, ना कोई मेट मिटाए, जो जन वेखे प्रभ वेख वखाए, भरम भुलेखे सर्ब कढ्ढाए, जो जन प्रभ दर आए चरन लागा। जोत सरूपी भरम चुकाए। आप लगाए आपणे लेखे। हँकारी दुष्ट दुराचारी विभचारी कोई रहण ना पाए। भगत उधारी जगत सुधारी जोत निरँकारी आपणा आप विच मात प्रगटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिखाए भुगताए लिखाए वरताए लिखाए कराए लिखाए खपाए लिखाए मिटाए लिखाए उलटाए लिखाए भवाए लिखाए उठाए लिखाए भजाए लिखाए अन्ध अंध्यार आप कराए। लिखाए सञ्झ सवेर इक्क कराए। लिखाए जगत अन्धेर आप करवाए। लिखाए भेड़ भेड़ आप मरवाए। लिखाए गेड़ गेड़ विच आप ल्याए। लिखाए पीड़ पीड़ जीव पिड़ाए। लिखाए बीड़ बीड़ बीड़ आप उठाए। लिखाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कल आप वरताए। आप लिखाया भरम चुकाया। कर्म कमाया कलिजुग जीआं धर्म गंवाया। राम दास तेरा साचा घर, कलिजुग जीवां बेशरमी दा दर बणाया। आवण जावण पाप कमावण, नर नारी प्रभ साचा मनों भुलाया। पतित पावन जोत सरूपी रूप बावन कलि आया। कलि

अन्धेर मिटावण, गुर गोबिन्द लिख्त भविख्त सति वरतावण, सिँघ मलेश आप बणाया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि आपणा खेल आप रचाया। सर अमृत सच्चा दरबारा। कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त वरतारा। कूडो कूड़ जीव अन्ध अन्धयारा। मूढ़ो मूढ़ होए गंवारा। तेरे दर साचे घर, धीआं भैणां करन पति ख्वारा। आवे डर मानस जन्म गए हर, झूठा करन वणज वपारा। आपणा किया लैण भर, निहकलंक ल्या अवतारा। आप मिटाए साचा सर, लेख लिखाए अपर अपारा। दर पुजारी होयण ख्वारा। दुष्ट दुराचार मदिरा मास करन आहारा। साचा प्रभ सर्ब भुलाया, माया रूपी वणज वपारा। आपणा आप सर्ब वड्आया, पंचम भुल्लया गुर अवतारा। आपणा आप सर्ब रुलाया, आत्म होई सर्ब हँकारा। भरम भुलेखे आप भुलाया, निहकलंक कलि लै अवतारा। आपणा आप भेव छुपाया, उलटी कारे लाया दुष्ट दुराचारा। करे कराए जो मन भाया, प्रभ साचे दा सच विहारा। सोहँ शब्द प्रभ आप उठाया खण्डा दो धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब मिटाए सर्ब खपाए रामदास तेरे दुष्ट दुराचारां। जगे जोत जगत निराली। प्रगटाए जोत दो जहान वाली। गुरमुख साचे प्रभ दर आयण देवे दरस आप बनवाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निर्मल जोत जोत सरूप जोती जोत निराली। कलिजुग जियां किस्मत खोटी। आप कटाए बोटी बोटी। मंगयां हत्थ ना आवे रोटी। उठावण ना देवे धोती टोपी। सृष्ट सबाई रहे सोती। जोत सरूपी खेल रचाए एका अग्न लगाए जोती। गुरमुख साचे आप तराए, कलिजुग माणक मोती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द जपाए गुरसिख आत्म धोती। कलिजुग जीव भाग मन्द। कलिजुग जीव आत्म होए अन्ध। आत्म अन्ध अन्धेर विच रखाई माया कंध। प्रगटाए जोत ना लाए देर, जोत सरूपी लाए फंद। प्रभ साचा करे ना हेर फेर, मदिरा मास जो जन लायण गन्द। अग्न जोत लगाए एका वेर, मुख छुपाए दु:ख दवाए, गुरसिख तराए सुख उपजाए, भुक्ख मिटाए सतिजुग चढ़ाए साचे चन्द। कलिजुग जीव झूठ पसारा। एका सच्चा प्रभ साचे दा सच दुआरा। सृष्ट सबाई झूठा कच्च, घड़े भन्ने भन्नणहारा। अग्न जोत जायण मच्च, कलिजुग जीव दुष्ट दुराचारा। गुरसिख सोहँ नाम आत्म जाए रच, देवे दरस आप गिरधारा। जोत प्रगटाए सच्चो सच्च, आपे देवे मुक्त दुआरा। गुरमुख साचे जायण बच, चल आयण निहकलंक दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वरते वरतावे विच संसारा। कलिजुग जीव बूझ विचार। आपणा आप ना कलिजुग हार। साचा जाप ना मनों विसार। साचा तप रसन नाम करतार। कोटन कोट उतारे पाप, जन आए निहकलंक दरबार। सृष्ट सबाई माई बाप, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पावे सार। कलिजुग जीव चल चल चल प्रभ द्वार। कलिजुग जीव मल मल साचा घर बाहर। कलिजुग जीव थल थल जल जल वसे आप करतार।

कलिजुग जीव घड़ी घड़ी पल पल प्रभ साचा लए विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बलि बलि बलि जो जन करे चरन निमस्कार। कलिजुग जीव आत्म रास। कलिजुग जीव प्रभ साचे दा होए वास। कलिजुग जीव आप कटाए गर्भवास। कलिजुग जीव अन्तकाल कलि ना होए नास। कलिजुग जीव सोहँ जप स्वास स्वास। कलिजुग जीव प्रभ साचा सद वसे तेरे पास। कलिजुग जीव महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आपे होए दास। कलिजुग जीव बूझ विचार। कलिजुग जीव प्रभ साचा सच दरबार। कलिजुग जीव प्रभ साचा दर घर खाली भरे भण्डार। कलिजुग जीव प्रभ साचा माली, जीव जन्तां होए रख्वार। कलिजुग जीव महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म देवे शब्द अपार। कलिजुग जीव अन्तकाल कलि क्यों रूठा। कलिजुग जीव आपणे चढ़ा अनूठा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद मूठा। कलिजुग जीव आपे जाग। कलिजुग जीव आप बुझा आपणी आग। कलिजुग जीव प्रभ साचा चरन लाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए हँसों काग। हँसों काग आप बणाया। मानस जन्म दे जीव भुलाया। मदिरा मास मुख रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल प्रगट जोत बेमुखां दे सज़ाया। बेमुखां प्रभ दे सजाए। अग्न कुठाली जोत तपाए। वड भठयाली सोहँ भट्ठी प्रभ आप चढ़ाए। सच कुठाली सोहँ सुहागा साचा नाम गुरमुख आत्म आप लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचो साच साचे हाट विकाए। गुरमुख साचे साचा हाट। सोहँ साचा नाम प्रभ दर खाट। हउमे रोग आत्म काट। प्रभ अबिनाशी सद वसे घट घट। सोहँ देवे साचा नाउँ गुरमुख साचे रसना रट। आप बहाए साचे थाउँ, साची जोत जगाए काया झूठे मट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगम्म अथाह, कर दरस गुरमुख साचे साचा लहणा, आत्म गहणा तीजे नैणां प्रभ दर साचे तों लैणां, जोत प्रगटाए अन्धेर मिटाए दरस दिखाए गुरमुख साचे तरस कमाए झट्ट। गुरमुख साचे तेरी उज्जल मति। प्रभ साचा तेरी आपे जाणे मित गत। सोहँ देवे आत्म साचा सति। आप बुझावे आप समझावे आप सवावे आप जगावे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे हिरदे वच। हिरदे वाचे आत्म राचे। आपे ढाले साचे ढांचे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा घर साचा वर अवतार नर गुरमुख साचे सरनी पर बेमुख दर आयण जायण नच्च। सुरत शब्द प्रभ मेल मिलाए। सुरत शब्द दे प्रभ आप जगाए। सुरत शब्द प्रभ भेव खुल्हाए। सुरत शब्द दे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी सेव लगाए। सुरत शब्द देवे सुर। सुरत शब्द मिलावे प्रभ साचे का दर धुर। सुरत शब्द देवे वाली घनकपुर। सुरत शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द उपजावे साची सुर। सुरत शब्द प्रभ जोत अधारा। सुरत शब्द प्रभ खोल्हे सच दुआरा। सुरत शब्द प्रभ साचा भरे भण्डारा। सुरत शब्द आप मिटाए गुरसिखां अन्ध

अन्धयारा। सुरत शब्द एका एक दिखाए ब्रह्म सरूप ब्रह्म अपारा। सुरत शब्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खुल्ाए दिखाए आपणा दुआरा। सुरत शब्द गुरसिख जगाया। सुरत शब्द प्रभ मेल मिलाया। सुरत शब्द प्रभ खेल रचाया। सुरत शब्द शब्द सुरत सज्जण सुहेल आप अख्वाया। सुरत शब्द मेल कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा दरस दिखाया। सुरत शब्द साची धुन। सुरत शब्द देवे वड वड रिख मुन। सुरत शब्द गुरमुख साचे आत्म खोल्े सुन्न। सुरत शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे कलिजुग चुण। सुरत शब्द साचा रंग। सुरत शब्द साचा संग। सुरत शब्द आप दवाए दया कमाए गुरमुख साची मंग। सुरत शब्द आप चढ़ाए साचा रंग। सुरत शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई अंग संग। सुरत शब्द जोत जगा। सुरत शब्द दरस अमोघ दिखा। सुरत शब्द आत्म चिन्ता सोग मिटा। सुरत शब्द सोहँ शब्द आत्म देवे भोग लगा। सुरत शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दिवस रैण रैण दिवस सद सद रसना गा। सुरत शब्द खुल्ले कँवल। सुरत शब्द आत्म बवल। सुरत शब्द दरस दिखाए काहना सँवल। सुरत शब्द मेल मिलाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई रिहा मवल। सुरत शब्द आप जगाता। सुरत शब्द सोहँ देवे साची दाता। सुरत शब्द आप दिखावे चरन प्रीती साचा नाता। सुरत शब्द गुरसिख

२२८ तराए आपे आप बण जाए प्रभ साचा पित माता। सुरत शब्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मेल मिलाए २२८

०२ बिधनाता। सुरत शब्द प्रभ मेल मिला के। सुरत शब्द प्रभ खेल वरता के। सुरत शब्द साचा प्रभ गुरमुख साचे दया कमा ०२

के। सुरत शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे चरन लगा के। सुरत शब्द चरन ध्याना। सुरत शब्द आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना। सुरत शब्द आत्म जोत जगाए कोटन भाना। सुरत शब्द मेल मिलाए गुरमुख साचा आप पछाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द आप सुणाए काना। सुरत शब्द जीव जगाए। सुरत शब्द दीव जलाए। सुरत शब्द नींव रखाए। सुरत शब्द सीव रखाए। सुरत शब्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म तृष्ना सर्ब मिटाए। सुरत शब्द सच भण्डारा। सुरत शब्द गुरमुख साचा पावे गुर दरबारा। सुरत शब्द आप दिखाए रंग करतारा। सुरत शब्द शब्द सुरत एका धुन एका धुन्कारा। सुरत शब्द शब्द सुरत आप जगाए सर्ब संसारा। सुरत शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिलाए गुरमुख साचे कर प्यारा। चरन प्यार दुःख निवार, भूक्ख विचार सूखम सूख आप गिरधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा शब्द, गुरमुख साचे कर साचा वणज वपारा। सोहँ साचा वणज वपारा। सोहँ देवे ओअँ आप निरँकारा। ओअँ दोअँ एक सोहँ शब्द हुलारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप टिकाए सतिजुग साचे

विच मात संसारा। सोहँ वरते विच संसार। सोहँ दिया करते, कर्म विचार। सोहँ दिया धरते, धर्म सुधार। सोहँ मिलाए हरते, रसना जीव सद उचार। बेमुख जीव रहण दुःख भरते, अन्तकाल कलि होयण ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आयण दर ते, प्रभ साचा देवे तार। सोहँ दिया साचा रस, आत्म जाए प्रभ साचा वस। सोहँ दिया साचा रस, साचा राह प्रभ जाए दस्स, धरत मात प्रभ साचा हस्स हस्स। सोहँ दिया साचा रस, वड करामात कलि अन्धेर मिटाए शब्द तीर चलाए कस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे हिरदे जाए वस। सन्त जनां प्रभ आप हलूणयां। आप मिटाए ताईआं धूणीआं। आप गवावे दुःख मिटावे आंदरां लूहणीआं। आप चुकावे मुकावे खवावे सुक्कीआं अलूणीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत प्रगटावे सन्त जनां जोत जगाए कराए सवाईआं दूणीआं । सन्त जनां जोत जगा । सन्त जनां दुःख मिटा । सन्त जनां दरस अमोघ दिखा। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पावे साचा राह। सन्त जणाए उठाए आप। सन्त जन जगाए आप। सन्त जन उपजाए आप। सन्त जन सोहँ शब्द सुणाए आप। सन्त जन आपे आप विच समाए आप। सन्त जन माई बाप अख्वाए आप । सन्त जन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाए आप । सन्त जनां साची सारा। सन्त जनां देवे शब्द हुलारा। सन्त जनां खोल्ह़े आपे आप दस्म दुआरा। सन्त जनां आपे आप उतारे पाप पहाड़ां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां सद रक्खे प्यारा। सन्त जनां साचा प्यार। सन्त जनां प्रभ देवे तार। सन्त जनां एका एक दर एका घर बाहर। सन्त जनां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साची सरकार। जन सन्त दूत पठईआ। जन सन्त साचा नाम रसना सूत कतईआ। सन्त जन जन सन्त एका रूप आप रखईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई आप चढ़ाए साची नईआ। सन्त जनां साचा नाउँ। आप बहाए साचे थाउँ। आप दिसाए प्रभ साचा रूप अगम्म अथाहो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनकपुर वासी बैकुण्ठ निवासी सद सद सद रसना गाओ। सन्त जनां प्रभ सारंगधर। सन्त जनां प्रभ आया घर अवतार नर। सन्त जनां प्रभ अबिनाशी दरस कर कलिजुग तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच वरताए सच भण्डार लगाए आपे आप दवाए सच दातार। दया कमाए सृष्ट सबाई आए द्वार। एका साचा नाउँ भिच्छया पाए। आप खुल्हाया साचा दर, रुक्खे सुक्के रुक्खड़े प्रभ हरे कराए। बाल अञ्याणे भुक्खड़े, प्रभ तृप्त कराए। सुक्के होए मुखड़े, प्रभ अमृत मुख चुआए। आप उतारे दुखड़े, जो जन सरनाई आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म उपजाए सुक्खड़े आपे होए सहाए। रोग गया सोग गया। सोहँ साचा जोग प्रभ दर ल्या। अमृत रस साचा भोग प्रभ दर देवे करता कादर किरपा भया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, आप आपणी कीनी दया। रूख दूख भूख निवार। एका देवे जीव प्रभ साचा मोख द्वार। आप वसाए साचे घर बाहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा देवे तार। किरपा कर अवतार नर। आत्म हरया कर। आप चुकाया सर्ब डर। भरम गंवाया आया साचे घर। कर्म कमाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर। किरपा धारी पैज संवारी। आए द्वारी चरन निमस्कारी। सद सद बलि बलि हारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दुक्खां आपे करे कारी। आपे कारा आपे विहारा। आपे तारे तारनहारा। आपे देवे नाम अधारा। गुरमुख साचा रसना सेवे, प्रभ देवे दरस अपारा। प्रभ साचे दर साचे मेवे, सोहँ भरे भण्डारा। गुरमुख विरला कोई लेवे, प्रभ बणे आप वरतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं का इक्क दातारा। इक्क दातार इक्क दाता। इक्क भतार इक्क भ्राता। एक पित एक माता। एक चित एका नाता। एक हित एका साता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक पुरख बिधाता। पुरख बिधाता एक। सर्ब ज्ञाता एक। भगत जनां आप पछाता एक। प्रभ साचा देवे दाता, सोहँ शब्द एक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि विरले गुरमुख पछाता, जिस रखाए चरन टेक। चरन टेक आप रखाए। एका एक आप दिसाए। वेखा वेख जगत भुलाए। लेखा लेख लिख लिख आप चुकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग वेख आपणी सरन लगाए। गुरमुख साचे आपे वेखे। आप लगाए आपणे लेखे। साची लिखाए आपे रेखे । सोहँ लगाए आत्म मेखे। खोल्ह लोयण गुरमुख साचा प्रभ अबिनाशी पेखे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विरला गुरमुख दर तेरा पेखे। गुरमुख सो जिस दया कमाए। गुरमुख सो जिस चरन लगाए। गुरसिख सो जिस भरम चुकाए। गुरमुख सो जिस कर्म कमाए। गुरमुख सो जिस हरन फरन खुल्हाए। गुरसिख सो जिस तारन तरन दरस दिखाए। गुरमुख सो जिस मरन डरन भउ चुकाए। गुरसिख सो एका सरन निहकलंक रखाए। गुरसिख सो जिस आत्म द्वार बंक सुहाए। गुरसिख सो जिस आत्म सोहँ डंक आप वजाए। गुरमुख सो जिस जोत सरूप आत्म तनक लगाए। गुरसिख सो जिस आत्म मणक आप फिराए। गुरमुख सो एका जोत किणक टिकाए। गुरसिख सो चरन लाग इक्क जाए हो जिउँ राजा जनक तराए। गुरमुख सो महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन तन मन साचा धन सोहँ आत्म दे टिकाए। साचा प्रभ सच दरबारा। साचा प्रभ सच वरतारा। साचा प्रभ सच विहारा। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत भरे भण्डारा। साचा प्रभ वड भण्डारी। साचा प्रभ वड संसारी। साचा प्रभ जीव जन्त अधारी। साचा प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत मेघ वरसाए, मुख चुवाए आत्म करे कारी। गुर पूरा अमृत बरसदा। गुरमुख साचा बूंद स्वांती आत्म तरसदा। आपे आप मुख चुआए

शांत कराए अमृत मेघ प्रभ साचा बरसदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारे जो जन चरन परसदा। गुर दरस आत्म तृप्तावे। गुर दरस आत्म सुख उपजावे। गुर दरस कँवल मुख खुल्हावे। गुर दरस गुर दर गुर किरपा कर अमृत बूंद मुख चुआवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत चाढ़े रंगत दर आए मंगत आत्म तृखा बुझावे। आत्म तृखा होए दूर। अमृत आत्म जीव करे भरपूर। दिवस रैण रैण दिवस एका रहे सरूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमावे जोत जगावे एका देवे साचा नूर। अमृत पिया निर्मल जीआ। आए दर किया हिया। प्रभ रखाए साची निया। आपे आप वरसाए अमृत मियां। गुरमुख साचे आत्म जोत जगाया दिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पूर्ब लहणा गुरसिख दिया। आत्म दीपक देवे बाल। आपणा आप आप संभाल। आप दिसावे आत्म लाल। गुरमुख साचे विच्चों भाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप सदा सदा विच रिहा समाल। आपे आप समाए विच। आपे आप लगाए खिच। आपे आप आत्म देवे सिंच। आपे आप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा बीज गुरसिख साचे बिजाए आत्म विच। सोहँ बीज आत्म बीजा। अमृत दे दे आपे सीजा। गुरमुख साचे मन तन भीजा। पूर कराए प्रभ तेरीआं रीझां। जोत प्रगटाए दर द्वार तेरे नित्त, खड़ा रहे तेरे आत्म दर दलीजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए गुरसिख समाए, अमृत बूंद मुख चुवाए, आप आपणे रंग समाए, इक्क कराए एका दूआ तीजा। एका दूआ तीआ एक कर। फेर दिखाए चौथा घर। आप खुल्हाए आत्म दर। जिथ्थे बैठा आपे वड़। अन्ध अन्धेर मुकाए डर। एका जोत जगाए हरि। एका जोत एका गोत गुरमुख गुरसिख इक्क जाए कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए अवतार नर। गुर महिंमा अपर अपारी। जीव जन्त ना किसे विचारी। पारब्रह्म खेल न्यारी। कलिजुग होया भेखा धारी। छड्डी देह आप गिरधारी। जोत सरूप पवण सवारी। एका एकँकार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। पवण अस्वारा, शब्द अधारा, जोत अकारा, आप निरँकारा, सृष्ट पसारा, रूप अपारा, भूप सिक्दारा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचो साच लिखाए दिसाए सच दुआरा। गुर संगत पूरन आस कर। साध संगत सच धरवास धर। गुर संगत दुखड़े नास कर। साध संगत आत्म रास कर। साध संगत जाप रसन स्वास स्वास कर। गुर संगत आपणा दास कर। साध संगत जोत प्रकाश कर। गुर संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म पास कर। गुर संगत सुणे पुकार। जन मंगत खड़े द्वार। लाए अंगत भरे भण्डार। आप तराए साची संगत निहकलंक अवतार। सोहँ चढ़ाए साची रंगत, आत्म देवे शब्द अधार। मानस जन्म ना होए भंगत, गुर संगत आई चरन द्वार। आत्म मिटाए रोग हँगत, सोहँ शब्द कराए जै जैकार।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा जाए तार। गुर संगत देवे पूरन फल। प्रभ अबिनाशी आए चल। जोत प्रगटाए ना लाए घड़ी पल। जो जन प्रभ दरस तिसाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दर तेरा बैठे मल। आत्म आस पूर कर। साचा गुरमुख साचे दर तेरा बैठा मल। साचा वास जोत सरूप धर। विच प्रभास चन्दन सरूर कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा अवतार नर कर। किरपा करे नर अवतार। गुरमुखां पावे आपे सार। आपे देवे नाम अधार। दीपक जोत करे उज्जयार। साचा खेल सच पसार। साचा मेल निहकलंक नरायण नर अवतार । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जन भगत उधार। जन भगत उधार कर। आपे जाए साचे घर। जोत सरूप अवतार नर। दु:ख दर्द दूर कर। गुर संगत आत्म भरपूर कर। जोती जोत नूरो नूर कर। आत्म शब्द सरूर धर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत मिलाए बेमुख दर तों दूर कर।

* २४ सावण २००६ बिक्रमी रणजीत कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल *

२३२ वक्त चुकाए चार यारा। आपे आप करे ख्वारा। सोहँ धरे आप सिर आरा। उम्मत नबी रसूल दी, प्रभ करे दो २३२
०२ फाड़ा। वेला अन्तिम अन्त कलि आ गया, बेमुखां कलि आई हारा। निहकलंक कलिजुग जोत प्रगटा ल्या, एक दिसावे ०२
साचा सच दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप नाउँ धरा ल्या, सोहँ शब्द चार कुन्ट कराए जै जै जैकारा। चार कुन्ट जै जै जैकार। झूठी सृष्ट आर ना पार। अन्तिम अन्त कलि बेमुखां डोबे प्रभ साचा अध विचकार। सोहँ शब्द मारे मार। खण्डा आप उठाए दो धार। कलिजुग जीव खपाए मुग्ध गुवार। गुरमुख साचे आण तराए, जिन बख्शे चरन प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए, चार कुन्ट मिटाए अन्ध अंध्यार। अन्ध अन्धेर आप मिटाए। जोत अधार जगत रखाए। इक्क अकार जोत कराए। विच संसार साचा नाउँ धराए। बेमुखां छुडाए घर बाहर, दर दर फिरन करन हाए हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि आपणी जोत प्रगटाए। चार यार मुहम्मद संग। अन्तकाल प्रभ साचे कीने नंग। सदी चौधवीं होई भंग। अहिमद मुहम्मद दर साचे मंगी मंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए आप खपाए रसना लायण जो गन्द। चार यार वड सिक्दार। कलिजुग कूड़ कूड़ सिक्दार। कलिजुग कूड़ कूड़ कूड़ दरबार। कूड़ मुहम्मद होया, कूड़ मुहम्मद बोया, प्रभ साचा मारे शब्द मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि बेमुखां जाए सँघार। आप सँघारे दुष्ट दुराचारे। मात जोत धरे गिरधारे। ज़ात पात प्रभ सर्ब निवारे।

एका नात गुर चरन दुआरे। एका दात सोहँ चार वरन प्रभ वरतारे। भेव मिटाए दोआ दोआँ, एका रंग रंगे करतारे। शब्द चलाए एका सोहँ, आप कराए जै जै जैकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल आप वरतारे। कलिजुग आया कल धार। कलि कल वरते, कलि कल धरते कलि कल सरते, अन्तकाल कलि कल आपे ढाहया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीआं भरम भुलाया, झूठी पाए माया। मायाधारी करे ख्वारी। मायाधारी आत्म हँकारी। मायाधारी विषे विकारी। मायाधारी आत्म अन्ध अंध्यारी। मायाधारी दुष्ट दुराचारी। मायाधारी नित भोगे वेसवा नारी। मायाधारी प्रभ साचा दर दुरकारी। मायाधारी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए दर दर भिखारी। माया माण छड्डुया भगवान। आत्म अभिमान भुल्लया गुण निधान। अन्तकाल कलि आई हान। प्रभ अबिनाशी जाणी जाण। आत्म हँकारीआं माया धारीआं प्रभ आपे करे पछाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए आप खपाए वड बली बलवान। मायाधारी माया मोह। मायाधारी आत्म ध्रोह। मायाधारी निमाणयां निताणयां कलि रिहा कोह। मायाधारी बिरधां बाल अञ्याणयां पीवे आत्म धोह। मायाधारी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए, लक्खो कक्ख बणाए, दर दर फिराए ना कोई देवे थाउँ। मायाधारी वड ज़ंजाला। मायाधारी आत्म कंगाला। मायाधारी दुःख उपजाए सुख गंवाए गरीब निमाणयां बाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी जोत प्रगटाए, आपणी सार समाला। मायाधारी झूठा भेख। मायाधारी माया मोह झूठा वेख। मायाधारी करे ख्वारी आप मिटाए झूठी रेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि प्रगट जोत आप पछाड़े वेख वेख। मायाधारी आत्म अन्ध। मायाधारी दर दरवाजे होयण बन्द। मायाधारी आप कटाए बन्द बन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उठाए सोहँ साचा संद। सोहँ आप उठाया। प्रभ साचे खेल रचाया। कलिजुग भेख मिटाया। निमाणयां निताणयां प्रभ साचे गले लगाया। वड वड सेठ सिठाणयां, प्रभ विच खाक रलाया। ना कोई दीसे बाणीआं, लहणा देणा सर्ब चुकाया। ना कोई मंगे किसे तों पाणीआं, देवणहार आप अख्वाया। सोहँ शब्द चलाए साची बाणीआं, सतिजुग साचा मार्ग लाया। राजे छड्डन राणीआं, सोहँ तीर प्रभ आप चलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड वड जोधा सूरबीर आप अख्वाया। सतिजुग साचा मार्ग लाई। आप आपणी बणत बणाई। साध सन्त प्रभ सति उपजाई। आपे आप साचा कन्त अख्वाई। सतिजुग साची बणत बणाई। चार वरन अन्त कराई। इक्क बरन जगत टिकाई। झीवर छीबा नाई प्रभ इक्क कराई। ऊँच नीच ज़ात पात कोई रहण ना पाई। एका ब्रह्म जोत सरूप, एका ब्रह्म जीव रखाई। एका धर्म एका कर्म प्रभ साचा आप चलाई। गुरमुखां देवे साचा जन्म, बेमुखां दे खपाई। आप दिखाए आप रखाए आपणी सरन, सिर

आपणा हत्थ टिकाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे साची बणत बणाई। सतिजुग साचा जगत धर। आपे देवे साचा वर। आप खुल्हावे साचा दर। सोहँ वस्त पावे अवतार नर। गुरमुख साचा आवे जावे प्रभ दए भण्डारे भर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन धूढ़ नहावे मानस जन्म सुफल दए कर। सतिजुग साचा मात धराया। आप आपणा कर्म कमाया। सच धर्म दी नींह रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा मार्ग लाया। आपणा मार्ग आपे लाए। सोहँ साचा नाम चलाए। अमृत आत्म साचा जाम पिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। सतिजुग देवे साची धीर। सोहँ मुख रखाए अमृत साचा सीर। अमृत मेघ आप बरसाए बजर कपाटी देवे चीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे आप कटावे तेरी आत्म भीड़। सतिजुग साचा जगत रक्ख। गुरमुख साचे कीने वक्ख। सृष्ट सबाई होई भक्ख। गुरमुख साचे प्रभ साचे लए रक्ख। आपे बणे साचा सक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई अलक्खणा अलक्ख। बेमुख जीव होए भक्ख। आप कराए लक्खों कक्ख। घर घर दिसण लाउँदे भक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए दर तों सक्ख। कलिजुग जीव जाग प्रभ आप जगाए। कलिजुग जीव जाग प्रभ चरन लगाए। कलिजुग जीव जाग प्रभ आत्म पाप धवाए। कलिजुग जीव जाग प्रभ साचा राग सुणाए। कलिजुग जीव जाग प्रभ आत्म आग बुझाए। कलिजुग जीव जाग प्रभ साचा दर ते आए। कलिजुग जीव जाग निहकलंक कलि जामा पाए। कलिजुग जीव जाग, प्रभ साचा डंक वजाए। कलिजुग जीव जाग, प्रभ राउ रंक इक्क कराए। कलिजुग जीव जाग, प्रभ आत्म शंक मिटाए। कलिजुग जीव जाग, प्रभ चरन लाग पूरन भाग, प्रभ साचा दरस दिखाए। उठ जीव जाग, प्रभ दरस दिखाए। जो जन रहे तरस, प्रभ आत्म तृखा मिटाए। उठ जीव जाग, प्रभ आत्म भुक्ख गंवाए। उठ जीव जाग, प्रभ सुक्के रुक्खड़े हरे कराए। उठ जीव जाग बाल अञ्याणे कुक्खड़े, प्रभ सोहँ शब्द जणाए। उज्जल कराए मुखड़े, जो जन सरनाई आए। उठ जीव जाग प्रभ मिटाए दुखड़े, जो जन सोहँ रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाए। उठ जीव जाग साचा सुण राग, आत्म धो दाग़, तृखा तृष्ना बुझा आग, प्रभ हँस बणाए काग, आप पकड़े तेरी वाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस सदा सदा सद रिहा जाग। उठ जीव जाग, प्रभ आ दर। उठ जीव जाग मल साचा घर। उठ जीव जाग, देवे नाम साचा वर। उठ जीव जाग, देवे थां थिर घर। उठ जीव जाग, चरन लाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी साचा हरि। उठ जीव जाग आत्म रंग। उठ जीव जाग प्रभ साचे दा साचा संग। उठ जीव जाग अमृत झिरना झिराए प्रभ आत्म गंग। उठ

जीव जाग, अन्तकाल कलि दर आए, मूल ना संग। उठ जीव जाग अमृत झिरना झिराए साचा दरस दान दर मंग। उठ जीव जाग वेला अन्त बण साचा सन्त देवे वड्याई विच जीव जन्त। जिन बणाई तेरी बणत साचा दरस दान दर मंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई सदा अंग संग। कलिजुग जीव उठ उठ उठ क्यों सोया। कलिजुग जीव रुठ रुठ रुठ क्यों प्रभ अबिनाशी खोया। कलिजुग जीव प्रभ साचा तुठ तुठ तुठ दर द्वार आण खलोया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत निरँजण भय भञ्जण आदि अन्त सदा नवां नरोया। कलिजुग जीव उठ जाग प्रभ दया धारी। कलिजुग जीव उठ जाग, ना होए ख्वारी। कलिजुग जीव उठ जाग, साचा सुण कन्न राग, दिवस रैण रहे खुमारी। कलिजुग जीव उठ जाग साचा बण वणज वपारी। कलिजुग जीव उठ जाग, सोहँ खट आत्म लाल, ना पासा दिसे हारी। कलिजुग जीव उठ जाग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत प्रगटाई। वज्जी वधाई सुणे लोकाई। दिस ना आई, जोत सरूप गुरसिख समाई। आवण जावण खेल रचाई, पतित पावन आप अख्वाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब थांई होए आप सहाई। उठ जीव जाग ,कलजग मूढ़। उठ जीव जाग, प्रभ देवे चरन धूढ़। उठ जीव जाग, प्रभ आत्म चढ़ाए रंग गूढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे आपणी चरन धूढ़। चरन धूढ़ मस्तक लाओ। पूर्ब लहणा प्रभ दर पाओ। सोहँ गहणा आत्म कंठ चढ़ाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे विच्चों पाओ। सोहँ कहणा साचा गहणा। सोहँ कहणा प्रभ खुल्हावे तीजे नैणां। गुरमुख साचे अन्तकाल कलि, निहकलंक तेरे दर ते बहणा। बेमुख कलिजुग जीवां भाणा प्रभ साचे दा सिर ते सहणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वहाए वहन्दे वहणा। उठ जीव जाग कलि, प्रभ लाज रखाए। उठ जीव जाग कलि, प्रभ साजन साज आप अख्वाए। उठ जीव जाग कलि, प्रभ राजन राज अख्वाए। उठ जीव जाग कलि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे रंग रंगाए। जीव जगंता प्रभ भगवन्ता। जोत जगाए साधन सन्ता। कलिजुग जीवां माया पाए बेअन्ता। ना होए मिलावा साचे कन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति तेरी वड्याई, भेव कोई ना पाई प्रभ साचा आदिन अन्ता। आदि अन्त प्रभ साचा एक। साधन सन्तां प्रभ एका टेक। जीव जन्तां दर आया, प्रभ करे बुध बिबेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक। एकँकार एका जोत जगाए। जुगो जुग विच मात दे आए। नित नवित्त जामा पाए। भगतन हित भेख वटाए। साचा मित आप अख्वाए। सृष्ट सबाई जित, एका नाउँ डंक वजाए। सर्ब सृष्ट मात पित, राउ रंक रंक राउ इक्क कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अंग अंग संग संग संग गुरमुख साचा संग रखाए। साचा अंगी साचा संगी। साचा जंगी साचा रंग आप कराए बहु रंगी।

साची दात गुरमुख साचे साचा दरस दान दर मंगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रखाए आपणे अंगी। गुर संगत प्रभ साचा गाया। दर घर साचे सेव कमाया। गुर संगत गुर दया कमाया। आप आपणी कारे लाया। गुर संगत कलि नाउँ वड्आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे दर बहाया। आए दर चरन हज़ूरे। आसा मनसा प्रभ साचा पूरे। आत्म संसा होए दूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां आप उतारे सगल वसूरे। गुर संगत गुर दर सेवा। गुर संगत पाया प्रभ अलख अभेवा। गुर संगत प्रभ साचा देवे साचा मेवा। गुर संगत प्रभ आप वड्याए वड देवी देवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन रसना सेवा। गुर संगत गुर धाम न्यारा। गुर संगत देवे प्रभ साचा घर बाहरा। गुर संगत लेवे सोहँ अधारा। गुर संगत प्रभ आत्म कढे विकारा। गुर संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे सहारा। गुर संगत प्रभ रक्खे माण। गुरसिख गुर संगत राह साचा जाण। गुर संगत प्रभ करे पछाण। गुर संगत प्रभ वड मेहरबान। गुर संगत प्रभ पाए सोहँ साची आण। गुर संगत प्रगट जोत शब्द सुणाए कान। गुर संगत बख्शे एका चरन ध्यान। गुर संगत देवे आत्म ब्रह्म ज्ञान। गुर संगत गुर पूरा पाया, गुणवन्त गुणी निधान। गुर संगत आत्म तृप्ताया सोहँ मिल्या साचा नाम मेघ सावण। गुर संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उपजाए आप चलाए जोत

सरूपी स्वास पवण। गुर संगत आए सच दुआरा। गुर संगत देवे प्रभ साचा नाम अधारा। गुर संगत हरि दर घर पाए साचा कन्त प्यारा। गुर संगत गुरमुख विरला रल जाए सन्त प्यारा। गुर संगत प्रभ माण रखाए जोत सरूप जोत निरँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। गुर संगत गुण आप विचारे। गुर संगत प्रभ आपे तारे। गुर संगत प्रभ एका देवे शब्द अधारे। गुर संगत सोहँ लगाए जै जै जैकारे। गुर संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे खड़ा दुआरे। आपे आए चल द्वार। प्रभ साचा सद बलि बलि हार। दर घर आए पाए सार। गुर संगत प्रभ जाए तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पाए सर्ब सार। गुर संगत गुर साचा पाया। गुर संगत प्रभ भउ चुकाया। गुर संगत सोहँ साचा दाओ लगाया। गुर संगत सार पासा आप जणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा मेल मिलाया। गुर संगत गुर दरबारे। गुर संगत प्रभ काज संवारे। गुर संगत प्रभ साचा रसन उचारे। गुर संगत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप बणे वरतारे। गुर संगत प्रभ माण रखाया। गुर संगत प्रभ आण रखाया। गुर संगत निताणयां ताण होए सहाया। गुर संगत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप बणे दाई दाया। गुर संगत देवे साचा वर। दुःख दर्द प्रभ जाए हर। एका एक जाए कर। निहकलंक जोत धर। गुरमुखां मन वज्जी वधाई, प्रभ साचा

जाए सच घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भिनंड़ी रैण सुहाई, गुरसिखां दिया साचा वर। भिन्नी रैनड़ीए प्रभ दया कर। भिन्नी रैनड़ीए प्रभ जाए साचे घर। भिन्नी रैनड़ीए आप सुहाया साचा दर। भिन्नी रैनड़ीए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अन्त ना पारावर। भिन्नी रैनड़ीए प्रभ वक्त सुहाए। भिन्नी रैनड़ीए प्रभ जगत सवाए। भिन्नी रैनड़ीए गुरसिखां प्रभ भगत बणाए। भिन्नी रैनड़ीए गुरसिखां सोहँ साची जुगत बताए। भिन्नी रैनड़ीए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मुक्त कराए। भिन्नी रैनड़ीए तेरा वक्त सुहेला। भिन्नी रैनड़ीए प्रभ साचे कराया मेला। भिन्नी रैनड़ीए आप सुहाया साचा वेला। भिन्नी रैनड़ीए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूपी जोत धर, अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। भिन्नी रैनड़ीए तेरे साचे गुण। भिन्नी रैनड़ीए साचा शब्द कन्न सुण। भिन्नी रैनड़ीए प्रभ उपजाए साची धुन। भिन्नी रैनड़ीए गुरमुख साचे सन्त उठाए आपणी सेवा लाए चुण। भिन्नी रैनड़ीए सर्ब रहे गाए प्रभ साचे दे साचे गुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई गुरमुख आत्म पुन। पतित पुनीता परखे नीता साचा मीता आत्म जीता चरन प्रीता, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख साचा सीतल सांतक सीता। सांतक सीतल आप कर। सांतक सांतक मात धर। राजस तामस मिटाए हरि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सति बणाए सर। किरपा कर किरपा कर किरपा कर। आत्म बुध साची धर। भरम भउ सर्ब हर। जन्म कर्म सुफल कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जो जन भुल बख्शाए तेरे दर। दया कमा, मार्ग ला, राग उपजा, रोग मिटा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाड़ी बहत्तर लग्गी आग, अमृत मुख चुआ बुझा। नाड़ी बहत्तर किशना पक्ख। कर किरपा प्रभ साचे रक्ख। एका धर सिर हत्थ। साची दे शब्द वत्थ। सोहँ चढ़ा साचे रथ। आत्म दुःख सारे मथ्था। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महिंमा जगत अकथ्थ। आत्म अग्न जिउँ भान गगन। सोहँ लग्गा मुख साचा सगण। जोत सरूपी दीपक गुरसिख आत्म जगण। दिवस रैण रैण दिवस तेरे चरन रहे लगण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दे अमृत साचा सर, आप बुझाई लगाई अग्न। अग्न आग प्रभ साचे धो आत्म दाग़। एका बख्श चरन वैराग। पूरे गुर ला दर मेरे भाग। सोया जीव गया जाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे तोड़े दुक्खां ताग। साचा शब्द आप लिखाया। आप आपणा धर्म कमाया। आत्म वरम सर्ब मिटाया। मानस जन्म सुफल कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा मुख चुआया।

* १४ भाद्रों २००६ बिक्रमी मेरठ छाउणी *

रैण सुहाए भिन्नड़ी, प्रभ जोत जगाए। रैण सुहाए भिन्नड़ी, प्रभ मात विच आए। रैण सुहाए भिन्नड़ी, गुरमुख साचे प्रभ आण तराए। रैण सुहाए भिन्नड़ी रुढ़दा बेड़ा प्रभ बन्ने लाए। रैण सुहाए भिन्नड़ी, सोहँ तेज आप रखाए। रैण सुहाए भिन्नड़ी, निमाणयां माण आप हो जाए। भिन्नड़ी रैण सुहाई महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत गुरमुख साचे कलिजुग आण तराए। आप तराया, आप रखाया, आप लगाया, आप बसाया, आप सवाया, आप अपणा खेल रचाया। प्रगट जोत निहकलंक वेले अन्त आपे आप होए सहाया। वेला अन्त गुरसिख पछाण। धरे जोत आप भगवान। जीव जन्त सभ जाणी जाण। आदिन अन्त इक्क रंग समाण। साधन सन्त करे पछाण । सर्ब जीव जन्त प्रभ विच सद समाण । बैठ इकन्त लोक तीन एका धरे चरन ध्यान। बणाए जीव जन्त, वेले अन्त पूरन भगवन्त सहाई साधन सन्त, आपे देवे चरन ध्यान। वेला अन्त आया जग। प्रभ अबिनाशी लाया पग। गुरसिख तराया हँस बणाया कग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा कर्म कमाया, दूती दुष्ट सँघारे पकड़ शाह रग। दूत दुष्ट कोई नेड़ ना आए। सोहँ सीर गुरसिख पिलाए। धर्म राए ना दए सजाए। सच दीबाण नाम लगाए। एका आण निहकलंक आपणी आप रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत जोत सरूप गुरमुख साचे तेरा होए सहाए। गुरसिख तारे आप गिरधारे। वेले अन्त पावे सारे। प्रगट जोत निहकलंक अवतारे। कलिजुग अन्तिम अन्त बांहों पकड़ गुरसिख लगाए प्रभ आप किनारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत निरँजणा धरे मात आप निरँकारे। गुरसिख तेरा आप सहारा। प्रभ अबिनाशी अन्त ना पारावारा। एका देवे गुरसिख चरन सहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सच सच दरबारा। साचा घर सच्चा दरबारा। साचा घर सच्चा गिरधारा। साचा घर सच घर वसे आपे आप अपर अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त ना पारावारा। साचे घर आपे वस्सया। साचा घर गुरमुख साचे प्रभ साचे दस्सया। साचा घर जोत प्रकाश कोट रवि सस्सया। साचा घर साचा दर साचा वर देवे हरि अवतार नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सद सद तेरे हिरदे वस्सया। गुरमुख पूरे आत्म विचारया। सोहँ साचा नाम रसन उचारया। धरे जोत मात निहकलंक अवतारया। कलिजुग जीव बेमुखां दिसे अन्धेरी रात, गुरसिखां प्रभ साचा खड़ा द्वारया। जोत प्रगटाई प्रभ साचे मात, एका एकँकार इक्क अकारया। जन भगतां देवे साची दात, आप कर किरपा गिरधारया। साचा बख्शे चरन नात, वेले अन्त होए आप सहारया। बिन प्रभ साचे कोई ना पुच्छे वात, कलिजुग जीव वेले अन्त दुष्ट दुराचार होए सभ ख्वारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत

धर किरपा कर अवतार नर गुरमुख साचा पार उतारया। गुरमुख साचे आत्म धारा। साचा प्रभ रसन उचारा, पूरन ब्रह्म प्रभ पावे सारा। साचा कर्म प्रभ जोत निरँकारा। साचा धर्म प्रगट जोत गुरसिख साचे सदा खड़ा तेरे दर दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप आदिन अन्त जुगां जुगन्त गुरमुखां होए सद पनिहारा। गुरमुख साचे तेरी सति वड्याई। गुरमुख साचे प्रभ साचे तेरी पति रखाई। गुरमुख साचे एका तत्त हिरदे सोहँ वसाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत वेले अन्त देवे आप वड्याई । धन्न सो वेला गुरसिख धन्न । प्रभ अबिनाशी बेड़ा देवे बन्नृ। सर्ब घट वासी आप उठावे आपणे कन्नृ। निज घर वासी आप रखावे आपणी सरन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा सच सच कर मन्न। साचा मन्नया बेड़ा बन्नृया। भाण्डा भरम भउ भंनया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई होए सहाई आप रघुराई, जिस जन सति सति कर मन्नया। सति कर जाणया आपणा आप जीव पछाणयां। प्रभ अबिनाशी चले भाणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई देवे वड्याई वड वड वड विच सुघड़ स्याणयां। गुरमुख साचा वड प्रतापा। गुरमुख साचा सोहँ साचा जापा। गुरमुख साचा प्रभ अबिनाशी आपे होए माई बापा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप आपणा आप पछाता। आप पछाणयां जिस जन जाणयां। भगत अञ्याणयां आप बणाए सुघड़ स्याणयां। साची दरगाह देवे माणयां। जिथ्थे वसे आप भगवानयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा चले भाणयां। आपणे भाणे आपे चल। जोत प्रगटाए ना लाए घड़ी पल। जन भगतां तराया दर दुआरे खल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई ना जाए वेला टल। वेला अन्त अन्त अख़ीर। प्रभ साचा कट्टे गुरमुख भीड़। प्रगट जोत तोड़े धर्म राए ज़ंजीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचा हरि आया दर, अमृत पिलाए गुरमुख साचे प्रभ साचा सीर। अमृत प्याया आप चुआया। सच दिखाया पृथ्मी आकाश रहाया। पवण सरूपी स्वास चलाया। तोड़ तोड़ मोड़ मोड़ जोड़ जोड़ प्रभ साचे फेर जुड़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हाहाकार घर बाहर भाईचार सभ दा आप गंवाया। हाहाकार चार चौफेर। घर मापया होए अन्धेर। करे बेनन्ती गुरमुख साचा प्रभ दर आए तीजी वेर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत ना करे हेर फेर। जोत प्रगटाई चिन्त मिटाई। झूठी माटी काया चाटी प्रभ साचे जोत सरूपी जोत धर विच मात फेर जगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर साचे दर फेर वज्जी वधाई। वज्जे वधाई होए रुशनाई। दु:ख रोग सोग प्रभ दे मिटाई। एका साचा जोग सोहँ झोली पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल आप वरताई। आपणी वरताए आपे कल। प्रभ का भाणा ना जाए टल। जीव भुलाए कर वल छल। गुरसिख तराए जिउँ राजा बल। आपणी

दया कमाए टुट्टे डाले फेर लगाए फल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी विच मात आए चल। गुरसिखां प्रभ सुणे पुकारा। गुरसिखां प्रभ पावे सारा। गुरसिखां प्रभ साचा आपे मोड़े फेर मुहारां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत प्रगटाए दुखियां दुःख मिटाया कोट पहाड़ां। दुःख रोग आप गंवा के। चिन्ता सोग आप मिटा के। हउमे रोग आप मिटा के। दरस अमोघ आप दिखा के। हाहाकार सर्ब विभचार जीव दुखियार सांत करा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतन भगवन्त भगत अधार आपे आप अख्वा के। भगत अधारे आप गिरधारी मुकंद मनोहर लखमी नरायण जोत प्रगटाए कृष्न मुरारी। गुरसिखां देवे जोत अपारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस चिट्टे अस्व अस्वारी। तीन लोक तीन पवण तीन गवण विच पवण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख अमृत चुआए मुख जिउँ मेघ सवण। गुरसिख जगाया जोत सरूपी विच समाया। जम जंदार प्रभ हटाया। विच संसार अचरज खेल पारब्रह्म रचाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे वेले अन्त बांहों पकड़ आपणे चरन लगाया। आप आपणे चरन लगाए। आप आपणी सरन रखाए। हरन फरन गुरसिख खुल्हाए। मरन डरन भउ चुकाए। तारन तरन आप अख्वाए। कारन करन कोई सार ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत गुरमुख साचा बांहों पकड़ आप तराए। गुरमुख प्रभ तारनहारा। गुरसिखां प्रभ करे प्यारा। गुरमुखां देवे शब्द अधारा। गुरमुखां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप पावे सारा। गुरमुखां देवे नाम निधान। गुरमुखां देवे ब्रह्म ज्ञान। गुरमखां देवे आत्म ध्यान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। गुरमुखां तारे प्रभ समरथ। गुरसिखां रक्खे दे कर हत्थ। गुरमुखां चढ़ाए सोहँ साचे रथ। गुरमुखां लेख लिखाए प्रगट जोत निहकलंक आपे आप विच मथ्था। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महिंमा जुगो जुग अकथ्थ। गुरमुख साचे जोत जगाए। गुरमुख आत्म दुरमति मैल धो वखाए। गुर गुर गुरसिख गुर एका जोत रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त गुरमुख साचे तेरे दर द्वार आए। दर द्वारया विच गिरधारया। जोत निरँजण पावे सारया। गुरमुख साचा चरन निमस्कारया। गुरमुख साचे सद सद बलिहारया। जुगो जुग विच मात लए अवतारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आपे आप होए सहारया। गुर साचा कर्म विचारदा। गुर साचा जन्म संवारदा। गुर साचा पार उतारदा। गुर साचा रंग करतार दा। गुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग ना पासा आवे हार दा। गुर साचा जोत निरँकारा। गुर साचा जोत अकारा। गुर साचा कोटन कोट खड़े दुआरा। गुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सृष्ट सबाई आपे पावे सारा। गुर साचा गुर गोबिन्दा। गुर साचा वड गुणी गहिंदा। गुर साचा वड वड सुरपति राजा इन्दा। गुर साचा

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख साचे तेरा आत्म तोड़े जिंदा। गुर साचा पूरन आसा। गुर साचा गुरमुख साचे तेरी आत्म सद निवासा। गुर साचा चरन प्रीती देवे सच भरवासा। गुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जुगो जुग जन भगतां होए दासन दासा। गुर साचा गहर गम्भीर। गुर साचा गुरमुख साचे तेरी आत्म देवे धीर। गुर साचा अमृत मुख चुआए शांत कराए सरीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए एका शब्द वसाए दूई द्वैत मिटाए अख़ीर। एक मिटाए दोअँ दोआ। एक वसाए सोहँ सोआ। एक दिसाए ओअँ ओआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत निरँजण दूसर नाही कोआ। गुर साचा चतुर सुजाना। गुर साचा भगत भगवाना। गुर साचा गुण निधाना। गुर साचा जोत जगाए जगत महाना। गुर साचा जोत सरूपी पहरया बाणा। गुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां करे आप पछाणा। गुर साचा रूप करतार। गुर साचा सच विहार। गुर साचा शब्द अपार। गुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त एका एकँकार। गुर साचा आदि अन्त। गुर साचा भेद खुल्हाए साध सन्त। गुर साचा भेव ना पाए कोई जीव जन्त। गुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी मात बणाए आपे बणत। गुरमुख सचे तेरी बणत बणा। सतिगुर साचा आपणा आप दए जणा। सोहँ साचा शब्द तेरे कन्न दए सुणा। आत्म माया झूठा नाग, प्रभ देवे नष्ट करा। प्रभ साचा गुरमुख साचे चरन लाग, वेले अन्त होए सहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत गुरमुख साचे तेरी आपे पकड़े बांह। चरन लाग होए उधार। चरन लाग गुरसिख पार। चरन लाग प्रभ साचा देवे तार। चरन लाग मानस जन्म ना आवे दूजी वार। चरन लाग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रखावे आपणे द्वार। सच दुआरा आप दिसाया। सच घर बाहरा आप वसाया। जोत निरँकारा करे रुशनाया। सुरत शब्द कर उज्जयार, एका दीपक जोत जगाया। गुरमुख साचे मिटे अन्ध अंध्यार, प्रभ अबिनाशी तेरे विच समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोटन कोट रवि ससि जोत रखाया। गुर साचा साची धार। गुर साचा साची कार। गुर साचा साची सार। गुर साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे सच विहार। जगत विहारा आपे कर। गुरमुख साचे आवे दर। मां पिउ भैण भ्रा साक सज्जण सैण सभ आवे डर। गुरमुख साचे बांह पकड़ प्रभ बहावे साचे घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए गुरमुख साचे निहकलंक अवतार नर। गुरमुख साचे दया कमाई। सच घर सच दर प्रभ साचा दे टिकाई । पूरन आस अन्त कर घर साचे वज्जे वधाई। काया दुखड़े नास कर, जोती जोत प्रभ आप मिलाई। सर्ब घटा घट वास कर, आप आपणी पति रखाई। सोहँ शब्द गुरमुख आत्म रसन स्वास कर, प्रभ साचा मेल मिलाई। जन भगतां प्रभ अबिनाशी

आपणा दास कर, वेले अन्त लए छुडाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवासी थिर घर वासी सच निवास रखाई। साचा घर साचा दर ना आवे डर। गुरमुख साचा गया तर। चरन लगाए अवतार नर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सरन रखाए आपणी किरपा कर। साचा घर धाम न्यारा। साचा वसे इक्क निरँकारा। आपे रोए आपे हस्से आपे करे प्यारा। आपे आप राह साचा दस्से, जन भगतां देवे शब्द अधारा। बेमुखां करे अन्धेर जिउँ चन्द मस्से, ना दीसे कोई किनारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत निरँजण जोती जोत जोत उज्जयारा। जोत जोत जोत प्रभ जोत अकारा। जोत जोत जोत प्रभ जोत अपारा। जोत जोत जोत प्रभ, जोत सरूप सद निराहारा। जोत जोत जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जुगो जुग विच मात लए अवतारा। जोत जोत जोत जामा धार। जोत जोत जोत प्रभ, जोत अवतार। जोत जोत जोत, गुरमुख साचे कर विचार। जोत जोत जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खुल्हावे आप रखावे आप लै जावे आप सुहावे द्वार। गुरमुख साचा सच दरबारा। साचा प्रभ सच दरबारा। साचा प्रभ साचा विहारा। साचा प्रभ जोत निरँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक साचा दर दुआरा। साचा घर गुरसिख पछाण। साचा दर इक्क भगवान। जोत सरूप वड बली बलवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग भुलाए मूर्ख मुग्ध अन्जाण। कलिजुग जीव आप भुलाए। कलिजुग जीव आप डुलाए। कलिजुग जीव आप रुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उलटे वहण आप वहाए। कलिजुग जीव आप तराए। गुरमुख साचे नाउँ कराए। सोहँ साचा नाउँ चलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा नाम जपाए। पुरख विधाता देवे साची दाता। आपे आप वड वड ज्ञाता। पवण जोत जोत पवण एका रंग समाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक चरन प्रीती साचा नाता। चरन प्रीती साचा नात। आपे बख्शे साची दात। सोहँ देवे वड करामात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जामा धरे विच मात। जोत सरूपी जामा धार। आपणा रंग करे करतार। सृष्ट सबाई करे ख्वार। गुरमुख विरला पावे सार। जिस जन किरपा करे अपार। कर किरपा लै आवे दर द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे नाम अधार। आपे आप किरपा कर। आत्म साचा नाम धर। गुरमुख पूरन काम आपे कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम देवे वर। साचा वर आपे दिया। आत्म जोत जगाया दिया। गुरमुख साचे तेरी आप रखाए निया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा बीज तेरी आत्म बिया। सोहँ साचा बीज बिजाया। आत्म सीज गुरमुख रखाया। विच विच विच दर दहलीज प्रभ आप बहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी विच समाया। जिया दान आपे दे। आपणे खेल

आपे करे। आपणा मेल आपे धरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी आत्म जोत एक हरे। एका हरि एका दर एका घर एका वर गुरमुख साचे किरपा आप करे। प्रभ आप तरए दया कमाए, बांहों पकड़ नुहाए आत्म साचे सरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गर्भवास आप कटाए किरपा आपणी करे। गर्भवास कटाया, धरवास रखाया, स्वास चलाया, वास कराया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका नाम विच मात टिकाया । मात पिता घर पूत प्यारा। दिवस रैण करे प्यारा। आपे भुल्लया सच दुआरा। आपे रुल्लया होए गंवारा। आपे डुल्लया होए ख्वारा। अन्त चढ़े काठ दे चुलया, ख़ाकी ख़ाक ना देवे कोई सहारा । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक तेरा दर दरबारा । गुरमुख साचे प्रभ जन्म दवाए। गुरमुख साचे प्रभ कर्म लिखाए। गुरमुख साचे प्रभ धर्म रखाए। गुरमुख साचे प्रभ भरम गंवाए। गुरमुख साचे प्रभ आत्म ध्रोह वरम लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आपणी सरन रखाए। गुरमुख साचे एका ओट। गुरमुख सचे इक्क जगाए आत्म साची जोत। गुरमुख साचे प्रभ साचा तेरे कढ्ढे आत्म खोट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलिजुग प्रगट जोत आप उठाए आपणी गोद। आप आपणी गोद उठाए दया कमाए कलिजुग जीव अल्लणयो डिगे बोट। गुरसिख तराया अमृत साचा सीर प्लाया। एका नीर देह वहाया। साचा तीर सोहँ चलाया। पीर फ़कीर प्रभ दर द्वार दिवस रैण रैण दिवस सद मंगत, प्रभ देवे दूण सवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगाध बोध अटल अखल अछल भेव किसे ना पाया। क्या कोई जाणे हरि का भेवा। खड़े द्वार करोड़ तेतीस देवी देवा। गुरमुख साचा पावे सार, जिस प्रभ साचा सोहँ देवे आत्म साचा मेवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए, निहकलंक नाउँ रखाए, जोत सरूपी खेल वरताए, सृष्ट सबाई रक्खे भरम भुलेवा। गुरमुख साचा गुण गुणवन्त। देवे वड्याई आप भगवन्त। विच मात सर्ब जीव जन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जिस बणाई तेरी बणत। बणत बणाए आपे आप। आप जपावे सोहँ जाप। आपे हो जाए माई बाप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे साची दात। साची दात गुर दर पाओ। आत्म चिन्ता सर्ब मिटाओ। महिंमा अगणत प्रभ दर आओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस मिटा हरस, ना कलि तरस, भरम भुलेवा सर्ब गवाओ। भरम निवारे आप करतारे। जन आए दुआरे चरन निमस्कारे। तोड़े हँकारे निहकलंक अवतारे। तीन लोक सोहँ शब्द जै जै जैकारे । एका शब्द एका धुन, आप खुल्लावे गुरमुख साचे तेरी आत्म सुन्न साची जोत करे उज्जयारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धारे। गुरमुख साचे सच दर आवणा। सोहँ साचा नाम दिवस रैण सद रसना गावणा। प्रभ अबिनाशी जोत सरूप आपे आपणे विच्चों पावणा। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, स्वच्छ सरूप दरस दिखावणा। स्वच्छ सरूप दरस कर। एका मेल साचे हरि। आपे मेल अवतार नर। आत्म जोत देवे साची धर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे किरपा कर। गुरमुख साचा आया दर द्वार प्रभ साचा खड़या। खाली भण्डार प्रभ साचे भरया। ना आई हार प्रभ रसन उचरया। धर्म राए ना खावे मार, कर दरस तन मन हरया। दे दरस प्रभ जाए तार, गुरमुख साचा सरनी पड़या। मूर्ख मुग्ध ना करन विचार, प्रभ का खेल अपर अपरया। गुरमुख साचे पूर्ब विचार, देवे दरस प्रभ धरनी धरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन आस गुरसिख करया। गुरसिखां प्रभ पूरन आसा। गुरसिखां प्रभ दे भरवासा। गुरसिखां जन्म कराए आपे रासा। गुरसिख रखाए आपणे दासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप अख्वाए जन भगतां दासन दासा। भगत जनां होए दासन दास। मानस जन्म कराए रास। चल दुआरे आए प्रभ अबिनाश। सोहँ खण्डा मारे दूतां दुष्टां करे नास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सद सदा तेरे वसे पास। साचा प्रभ सद वसेरा। बेमुख भुलाए कर हेरा फेरा। गुरसिख तराए ना लाए देरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए गुरसिख निबेड़ा। गुरमुख साचे साची आण। सोहँ साचा सच कर माण। गुरमुख साचे साचा घर अन्त पछाण। गुरमुख साचे सृष्ट सबाई सुंञ मसाण। गुरमुख साचे बेमुख अन्तिम अन्त सर्ब मिट जाण। गुरमुख साचे आदि अन्त साचा कन्त एका रहे भगवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सदा सदा कर चरन ध्यान। चरन ध्याना दरस भगवाना। जोत महाना तोड़े अभिमाना। सोहँ शब्द सुणावे काना। आप रखावे आपणी आणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा विष्नूं भगवाना। विष्नूं भगवान तेरा भाणा। विष्नूं भगवान एका दीसे राउ रंक राजा राणा। विष्नूं भगवान एका सोहँ साचा डंक चार कुन्ट विच मात वजाणा। विष्नूं भगवान एका एक सृष्ट सबाई सोहँ सति रखाणा। विष्नूं भगवान झूठे द्वार बंक, अन्तिम अन्त कलि सर्ब मेट मिटाणा। विष्नूं भगवान गुरमुख साचे तारे जिउँ भगत जनक, आपे आप खण्ड सच बहाणा। आपणा घर आपे दस्से। गुरमुख साचे राह साचा दस्से। जोत सरूपी पवण सरूपी तीन लोक प्रभ सद ही वसे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सच दरबार कलिजुग जीव जायण नस्से। सच दरबार मात लगाया। कलि अन्धेरी रात करे रुशनाया। गुरमुख साचे एका नात गुर चरन रखाया। सोहँ शब्द साची दात प्रभ तेरी झोली पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त तेरा आपे होए सहाया। भिन्नी रैनड़ीए तेरी रुत्त सुहाई। दर घर साचे वज्जी वधाई। भिन्नी रैनड़ीए प्रभ अबिनाश मात जोत प्रगटाई। भिन्नी रैनड़ीए निहकलंक प्रगट जोत, जोत सरूपी पवण चलाई। भिन्नी रैनड़ीए तीन भवन उनन्जा पवण एक सुगंध रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जामा धार आप आपणी

जोत जगाई। भिन्नी रैनड़ीए तेरा वक्त सुहेला। भिन्नी रैनड़ीए गुरमुख साचे प्रभ साचे दा साचा मेला। भिन्नी रैनड़ीए आप उपाया आपे रंग लाया। आपे मन भुलाया करे कराया सृष्ट सबाई दाई दाया। आपे घड़े आपे भन्न वखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रैण सुहाई जोत सरूपी मात दीप जगाया। जोत सरूपी जोत धर आप आपणी करे रुशनाए। गुरमुख साचे गुर एका जोत एका गोत, गुरमुख साचे सच सच सच हो जाए। एका जोत आप जगाए। भूत प्रेतों देव बणाए। सिख गुरसिख प्रभ दया कमाए। माता तेजो तेरा दुःख मिटा के। जन्म दवाया प्रगट जोत निहकलंक चौदां भाद्रों विच मात दे आ के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाया, जोत सरूपी शब्द लिखाया, सिँघ गुरमुख नाउँ जगदीश सिँघ रखा के। प्रेत प्रेत प्रेत जन्म गया। देव देव देव दैंत जन्म गया। सोहँ साचा बैंत प्रभ साचे दा सिर पिआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौदां भाद्रों दया कमाए, इक्क पहर रैण वेला अमृत सुहाए, जोत मात टिकाए, मात पित हित प्रभ साचा फेर मिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर वीह सौ अठ्ठ बिक्रमी फेर स्वास चलाए। पवण सरूपी शब्द हुलारा। आपे दिया जोत अधारा। माटी काया किया अकारा। वस्सया विच आप गिरधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त ना पारावारा। मात पुकारे सच दरबारे। सुणे पुकारे आप गिरधारे। धरे जोत कर खेल अपारे। निहकलंक तेरा भेद ना कोई विचारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर गुरसिख तेरा बेड़ा पार उतारे। गुरसिख तेरा बेड़ा बन्नू। साचा देवे प्रभ शब्द माल धन । बेमुख दर आए प्रभ साचा देवे डन्न । धर्म राए पास लै जाए, कर के आत्म अन्नू। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे बेड़ा बन्नू। बेड़ा आपणा बन्नूणहारा । घड़े भन्ने भन्नणहारा । फड़े डन्ने दुष्ट दुराचारा। पीड़े वांग गन्ने जीव हँकारा। सति सति सति कर मन्ने, निहकलंक प्रगट जोत गुरमुख खड़ा तेरे दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी शब्द लिखारा। शब्द लिखाए दया कमाए। टुट्टी गंढुणहार प्रभ गंढु वखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म होई रंड सुहागण फेर कराए। आत्म रंडी विच वरभण्डी ना दीसे कन्ढी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर आत्म साची जोत धर, आपे दुष्टां देवे खण्डी। खण्ड खण्ड खण्ड दुष्ट कर। गए आए आए गए आए दर आए डर। निहकलंक तेरा साचा घर। एका शब्द गुरमुख साचे रसना धर। आप खुल्ावे प्रभ साचा तेरा आत्म दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत झिरना झिराए आत्म साचा सर। साचा सर अमृत रस। प्रभ साचा हिरदे जाए वस। सोहँ शब्द प्रभ साचा जाए दस्स। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे जोत जगाई विच मात धराई आपे आए दर ते नस्स। दर ते आण वक्त सुहाया। दर ते आण भगत तराया। दर ते आण मरन

२४६
०२

रखाया। दर ते आण आण बाण गुण निधान आपणा साचा नाम जपाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर महान जीउ जीव उपाया। जीआ दान आपे दे। भगत भगवान इक्क करे। गुण निधान जोत धरे। बली बलवान इक्क हरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे फेर करे। किरपा करे आप कृपाला। प्रभ अबिनाशी दीन दयाला। सर्ब घट वासी सर्ब रखवाला। घनकपुर वासी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद आपणे रंग समाला। किरपा कर आपे हरि दिया वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जन्म दवाया आप वसाया साचा घर। साचे घर जन्म दवा के। पिता पूत संग मेल मिला के। पूर्ब लहणा आप चुका के। भाणा सहणा शब्द लिखा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा गहणा आत्म जाए आप पहना के। आत्म गहणा आप पहनाया। साचा लहणा हुक्म सुणाया। चरनी बहणा प्रभ दर भाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिता पूत एका धागा एका सूत आपे आप परोया। आपे ताणा आपे पेटा। आपे होए भगत सुहेटा। आपे आप मां प्यो बेटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड वड खेवट खेटा। वड खेवट आप अख्वाए। वड खेवट आप रखाए। वड खेवट आपे आप होए सहाए। गुरमुख साचे ना लग्गे तत्ती वाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चढ़ाए सोहँ साची नाए। साची नईआ आप चढ़ाया। साचा दिया आप जगाया। साचा पीआ आप अख्वाया। साचा बिया आप बिजाया। गुरमुख साचे पुत्तर धीआं आप अख्वाया। सतिजुग रखाए साची नीहा, गुरमुख साचे साचा माण दवाया। गुरमुख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात आप उपाया। गुरमुख साचे आप उपाए। आप आपणी दया कमाए। अप तेज़ वाए पृथ्मी अकाश इक्क अकार कराए। आन बाट विच काया पाट आप अन्धेर घाट, प्रभ साचा बणत बणाए। गुरमुख साचा साचा शब्द रसना सद राट, प्रभ साचा होए सहाए। एका जोत करे प्रकाश विच ललाट, तीन लोक होए रुशनाए। आपे खोल्हे तेरा बजर कपाट, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए दूई दोए। आप खुल्हाए बजर कपाट। आप जगाए जोत ललाट। आप लगाए शब्द सरूपी साचा हाट। आप चढ़ाए गुरमुख साचे विच कलिजुग औखे घाट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद सद रसना राट। रसना गाणा हिरदे वसाणा। जोत जगाणा भरम चुकाणा अन्धेर गंवाणा। सञ्झ सवेर इक्क कराणा। मेर तेर रहण ना पाणा। नेरन नेर प्रभ आप अख्वाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सद सद रसना गाणा, सर्ब सुख पाणा। आत्म चिन्ता रोग मिटाणा। प्रभ अबिनाशी घर में पाणा। आत्म साचा दीप जगाणा। अज्ञान अन्धेर नष्ट कराणा। एक दरस स्पष्ट प्रभ साचे दा सच घर पाणा। एक रखाओ आत्म इष्ट, सोहँ साचा रसना गाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निज घर वासी निज घर में पाणा। निज

घर वसे आप निरँकारा। कलिजुग जीव बेमुख आत्म अन्धेर जिउँ चन्द मस्से ना दिसे प्रभ गिरधारा। हँकार विकार दुष्ट दुराचारां हिरदे वसे, आत्म होए अन्ध अन्धयारा। गुरमुख साचा प्रभ साचा सद हिरदे वसे, एका जोत करे उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप दिसाए आपणा सच दुआरा। सच द्वार जो जन आए। आत्म अंध्यार प्रभ मिटाए। जीव हँकार जो रखाए। विच संसार रहण ना पाए। चरन प्यार जन सेव कमाए। सद उधार प्रभ आप रखाए। हउमे मार दुतर तराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूर्ब कर्म विचार पूर्ब लहणा आप चुकाए। पूर्ब लहणा आपे दिया। आपणा कर्म आपे किया। कलिजुग जीव की जाणे जीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आपणे आप आत्म जोत जगाया दिया। आत्म जोत करे प्रकाश। अज्ञान अन्धेर जाए विनास। सोहँ जपावे रसन स्वास स्वास। बेमुख लिखाए जो जन मुख लगाए मदिरा मास। वेले अन्त निहकलंक दए सजाए, विच देवे नर्क निवास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका विष्टा मुख रखाए सास ग्रास। मदिरा मास जो जन खावे। प्रभ साचे मूल ना भावे। आपणा किया आपे पावे। आवे जावे जावे आवे ना कोई अन्त छुडाए। जन्मे मरे मर मर जन्मे, धर्म राए दे सजाए। कलिजुग जीव होए कुकर्म, मदिरा मास रसन लगाए। आप गंवाया आपणा धरमे, प्रभ अबिनाशी लए भुलाए। जोत सरूप आत्म जोत ब्रह्मे, ब्रह्म सरूप सद समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत निहकलंक दुष्ट दुराचारां कलि आपे अन्त खपाए। आत्म काले आप खपाए। जोत सरूपी जामा पाए। घनईआ शामा जोत प्रगटाए। रमईआ रामा नाम धराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव चुकाए। आपणा भेव आपे खोले। जोत सरूपी जोत बोले। भेख धार जिउँ बावन खड़ा बल द्वार ओहले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द वजाए ढोले। सोहँ शब्द सच पुकारा। निहकलंक ल्या अवतारा। वेद पुरानां करे ख्वारा। खाणी बाणी ना रहे संसारा। कुरान अंजील ना रहे अधारा। एका शब्द सोहँ चार कुन्ट कराए जै जै जैकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए निहकलंक नरायण नर अवतारा। चार कुन्ट होए जै जै जैकार। सोहँ शब्द तेरी धुन्कार। सृष्ट सबाई होए सुनार। पवण सरूपी शब्द हुलार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत धरे निरँकार। जोत सरूपी शब्द हुलारा। सृष्ट सबाई रंग करतारा। एका जोत करे उज्जयारा। खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्ड प्रभ साचे दा सच पसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द प्रचण्ड, सोहँ उठाए खण्डा दो धारा। सोहँ खण्डा कलि दो धारा। सृष्ट सबाई करे दो फाड़ा। करे रंग आप करतारा। मंगी मंग कलि दुष्ट दुराचारा। करे नंग होयण ख्वारा। दर दर फिरन कंग दुष्ट झक्ख मारा। बेमुखां प्रभ देवे टंग, सोहँ चलावे तीर न्यारा। आपे होए अंग संग, निहकलंक नरायण

नर अवतारा। गुरमुखां प्रभ साचा संग, आपे देवे शब्द हुलारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा वरते विच संसारा। भाणा वरते साचा जग। चार कुन्ट लग्गे अग्ग। सृष्ट सबाई जाए दग। भज्जे फिरन नंगे पग। आपे आप पछाड़े पकड़ शाह रग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव अग्गे धर्म राए लगाए वग। सृष्ट सबाई दो फाड़ा। सोहँ धरया प्रभ साचे सिर आरा। नारी नर रहे झक्ख मारा। ना आवे डर विसरया करतारा। छड्डया साचा घर, भुल्ले जीव कलि गंवारा। जोत प्रगटाए अवतार नर, आत्म कलि करे ख्वारा। आपणा किया लैण भर, चार कुन्ट होए हाहाकारा। सृष्ट सबाई आवे डर, एका होए धुन धुन्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग करे करतारा। सृष्ट सबाई रंग करतार। आपणा वरते आप विहार। उप्पर धरते जीव जन्त निवार। कादर करते तेरी महिंमा अपर अपार। नारी नर ते दुष्ट दुराचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई ना पावे तेरी सार। अन्तिम अन्त आया कलि। प्रभ का भाणा ना जाए टल। सृष्ट सबाई जाए हल्ल। आप कराए जल थल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए ना लाए घड़ी पल। जोत जगा के लिख्त लिखा के। वाक भविख्त सति करा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा जाए लगा के। सतिजुग साचा आप लगाणा। आप आपणा नाउँ धराणा। सोहँ साचा नाउँ जपाणा। राउ रंक इक्क कराणा। सच सच भेव खुल्हाणा। राजा राणा तख्तों लाहुणा। वड वड महांराणा निहकलंक आप अख्वाणा। आपे आप बणे चतुर सुघड़ स्याणा। प्रभ साचा सच विहारी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग झूठा अन्तिम अन्त मिटाणा। कलिजुग झूठा खेल मिटा के। सृष्ट सबाई नष्ट करा के। गुरमुख साचे फेर जगा के। आत्म साची जोत टिका के। जोत सरूपी विच समा के। पवण सरूपी शब्द चला के। शब्द सरूपी मेल मिला के। मेल मिला के भेव खुल्हा के। वड देवी देव दरस दिखा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे तारे आपे मारे आपे गुरसिखां काज संवारे आपणी सरन लगा के। गुरमुख साचा वड वड भागा। प्रभ साचे दी सरनी लागा। अन्तकाल कलिजुग ना लागे दाग़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव आपे फेरे जगत सुहागा। साचा भाणा प्रभ वरतावणा। राउ रंक प्रभ उठावणा। जोत सरूपी कर्म कमावणा। पवण सरूपी हुक्म सुणावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड वड सूरबीर आपे आप पकड़ उठावणा। प्रभ साचा सद दाना बीना। प्रभ साचा आपे खेल कराए चीना। प्रभ साचा कलिजुग जीव तड़फाए जिउँ जल मीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत अग्न लगाए, कलिजुग जलाए सीना। एका जोत अग्न लगा के। जोत सरूपी गगन हिला के। एका लग्न दो बिध रखा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग मेवा मुख सगण घोड़ी मौत चढ़ा के। आप उठाए

वड वड वड सूरबीरा। आप उठाए आप चलाए सोहँ साचा तीरा। आप तड़फाए कलिजुग जीव बिन नीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल वरताए चार कुंट कराए वहीरा। चार कुन्ट होए वहीर। निहकलंक सोहँ शब्द चलाए तीर। कलिजुग जीव कोए ना देवे धीर। प्रभ आप मिटाए औलीए ईसा मूसा मुहम्मदी ना कोई दीसे पीर पैगम्बर फ़कीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक विच मात जोत धर गुरसिखां पिलावे अमृत साचा सीर। आपे आप उठावे रूस्सया। नष्ट कराए ईसा मूस्सया। ना कोई दीसे शाह अबनूसीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका कफ्न पहनाए सृष्ट सबाई काला सूसीआ। निहकलंक तेरी वड्याई। निहकलंक जोत प्रगटाई। निहकलंक लिख्त भविख्त सति वरताई। निहकलंक साची लिख्त फेर लिखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि नाउँ धराई। निहकलंक कलि जामा पाए। शेर सिँघ प्रभ नांउँ धराए। घेर घेर दुष्ट खपाए। सञ्झ सवेर किसे दिस ना आए। सृष्ट सबाई एका ढेर आप कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक फेर मात अख्वाए। जोत सरूपी पहरया बाणा। धरे जोत आप भगवाना। ना कोई दीसे राजा राणा। नेत्र पेखे विरला गुरमुख सुघड़ स्याणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल वरताए आप चलाए आपणा भाणा। आपणे भाणे आप चलाए। राजे राणे माण गंवाए। माण निमाणयां होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच धर्म दी जोत जगाए। सच जोत अकार कर। सच जोत संसार धर। सच जोत विहार कर। सच जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दी सार कर। साची जोत पावे सार। सृष्ट सबाई दब्बी भार। मात धरत करे पुकार। प्रभ दर अग्गे सच दरबार। कलिजुग जीव दुष्ट दुराचार। धीआं भैणां करन पति ख्वार। राम दास तेरा साचा घर सर अमृत दुष्ट दुराचार मदिरा मास किया अहार। प्रगट जोत निहकलंक अन्तिम अन्त कलि सर्ब करे ख्वार। राम दास तेरा साचा घर। कलिजुग जीआं बणाया वेसवा घर। गुर अर्जन तेरा साचा सर। कलिजुग जीआं आप भुलाया तेरा दर। प्रगट जोत निहकलंक ल्या अवतर । माझा देस जाए हर । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एक अग्न लगाए घर घर। माझे देस आई हार। अन्तिम कलिजुग होए ख्वार। बाहों दाही औण ब्यासों पार। भज्जे जाण सर्ब नर नार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मारे आण सोहँ शब्द धार। सोहँ तेरी साची धारा। साचा वरते जगत विहारा। बेमुखां करे आप ख्वारा। गुरसिखां देवे चरन प्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द जगत दो धारा। गुर गोबिन्द तेरी पुकार। सुणे आप सच दातार। पुरी अनन्द आई हार। बेमुख होए जीव कलि विभचार। आपणा किया गए हार। एका हिया किया, साचा प्रभ साचे दिया एका शब्द अपार। आप वजाया आप उठाया आप दिखाया आप रसाया आपे आप सच

टिकाया सच दरबार। एका ओट आप रखाई, निहकलंक नर अवतार। निहकलंक नरायण नर। जोत प्रगटाए एका हरि। अन्तकाल कलिजुग प्रभ अबिनाशी खुल्ावे साचा दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात जोत धर। गुर गोबिन्द तेरी आस। विच मात प्रभ किया वास। धरे जोत प्रभ अबिनाश। सृष्ट सबाई कराए नास। गुरसिख विरला होए पास। मानस जन्म कराए रास। सोहँ जपे स्वास स्वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण सद वसे पास। दिवस रैण सदा सुहेला। गुरमुख साचे साचा मेला। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। कलिजुग जीव होए वक्त दुहेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग नवेला। एका रंग एक संग एका अंग। एका मंग पार लँघ, मानस जन्म ना होए भंग। काया झूठी काची वंग। कलिजुग जीव अन्त कलिजुग होयण नंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग गुरमुख साचे पार जायण लँघ। गुरमुख साचा पार लँघया। घर साचा मंगया प्रभ चाढ़े आत्म रंगया। दर आए मूल ना सन्गाया। सोहँ शब्द आत्म साचा सन्गाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दर आए साचा दरस दान दर मंगया। दरस दान प्रभ दर मंग। आत्म चाढ़े प्रभ साचा रंग। अमृत आत्म वहाए नीर गंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई सदा अंग संग। साचा प्रभ सगला साथ। होए सहाई आप रघुनाथ। पति रखाई त्रैलोकी नाथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख उधारे दे कर हाथ। गुरमुख उधारया काज संवारया। पार उतारया जन्म दवा रिहा। वक्त सुहा रिहा, लेख लिखा रिहा, बणत बणा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त आप उपा रिहा । गुरमुख साचे आप उपाए । साचे सन्त आप बणाए। साचे सन्त विच समाए । साचे सन्त महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जोत जगाए। साचा सन्त सदा अनादी। साचा सन्त सदा विस्मादी। साचा सन्त सदा ब्रह्मादी। साचा सन्त देवे शब्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बोध अगाधी। साचा शब्द साची धुन। साचा शब्द खोल्े सुन्न। साचा शब्द मेल मिलावे रिख मुन। साचा शब्द गुरमुख साचे कन्न सुण। सच घर प्रभ आप वसाया। सच दर गुरसिख बहाया। अवतार नर दया कमाया । कलिजुग अन्तिम अन्त चौथा जुग आण कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खण्ड ब्रह्मण्ड दे उलटाया। चौथा जुग जाए बीत। प्रभ साचा परखे साची नीत। जुगो जुग प्रभ साचे दी साची रीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुखां सद साचा मीत। ब्रह्मलोक आप उलटाए। साचा प्रभ अन्तिम सोग आप कराए। कलिजुग जीव भुल्ले लोग प्रभ दे सज़ाए। एका दे शब्द सलोक, प्रभ संग रलाए। देवे दरस अमोघ, जो जन रसना गाए। सोहँ साची चोग गुरसिख चुगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका साचा जोग चार वरन रखाए। ब्रह्मा ब्रह्म लोक समाया । आप

आपणा कर्म कमाया । वेला अन्तिम अन्त ल्याया। जोत सरूपी ब्रह्म मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म आप कमाया। ब्रह्मा ब्रह्मलोक तजाए। जोत सरूपी विच जोत समाए। शब्द सरूपी शब्द लिखाए। बिन रंग रूपी किसे दिस ना आए। वड वड वड भूपन भूपी, आप वड वड सिक्दार हो जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तीन लोक दे उलटाए। ब्रह्मलोक ब्रह्मा तजाया। अन्तिम अन्त प्रभ कराया। विच विस्मंत सद विच समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त आण तराया। साचा माण आप दवा के। सृष्ट सबाई हत्थ फड़ा के। सतिजुग साचा दीप जगा के। निहकलंक सिर हत्थ टिका के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साची जाए बणत बणा के। गुरमुख साचे माण दवाया। साचे धाम गुरसिख बहाया। साचा काम पूर कराया। साचा राम ना मरे ना जाया। जोत सरूपी जोत प्रभ, ब्रह्मा जोती जोत मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत निहकलंक गुरमुख साचे पाल सिँघ ब्रह्मलोक बहाया। गुरमुख साचे साजन साजा। करे कराए गरीब निवाजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे माण दवाए आप संवारे आपणे काजा। ब्रह्मलोक गुरसिख बहाया। पाल सिँघ नाम लिखाया। साचा छत्र सीस झुलाया। सहजू शम्भू संग रलाया। सृष्ट सबाई हत्थ फड़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा सिर हत्थ टिकाया। आपे करे कर्म विचारा। आपे पावे गुरमुख सारा। आपे बख्शे बत्ती धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन दया कमाए, आपे बहाए साचे दर दरबारा। गुरमुख साचे जोत धर। किरपा कीनी आपे हरि। एका दिया साचा वर। आप बहाया साचे घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द लिखाया नरायण हरि। झूठा माण जगत तजाया। माता पिता भैण भ्रा सगल छुडाया। सोहँ साची दात प्रभ झोली पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्धेरी राता गुरमुख साचा साचा दीप जगाया। साचा दीपक आप जगाया। बिन बाती बिन तेल रखाया। सोहँ साचा मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा खेल रचाया। आपणा खेल आपे खेला। आप कराया गुरमुख मेला। आपे बणया सज्जण सुहेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल पंचम जेठ खेला। सप्तम जेठ सति सति सतिवाद। प्रभ शब्द लिखाए बोध अगाध। साचा भेव खुल्हाए प्रभ माधव माध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका धुन उपजाए सुन्न खुल्हाए सोहँ साचा नाद । नाद धुन आप वजा के । आत्म सुन्न गुरसिख खुल्हा के। कलिजुग जन चरन लगा के। बेमुख प्रभ दर दुरका के। वक्त आया अन्तकाल कलिजुग हुण आपणी जाए भुल बख्शा के। प्रभ अबिनाशी जीव ना जाणे गुण, जोत सरूपी बैठा जामा पा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ रखा के। निहकलंक कलि

जामा पा के। घनकपुरी प्रभ भाग लगा के। बेमुखां दिस ना आया गुरसिखां प्रभ विच समाया। जोत सरूपी रुण झुण लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया। घनकपुरी धाम न्यारा। धरे जोत निहकलंक नरायण नर अवतारा। भुल्ला फिरे सर्ब संसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरला पाए तेरा सच दुआरा। सच द्वार जीव विचार, जोत गिरधार विच संसार, पावे सार रंग करतार, कर विचार भरम निवार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग रंग करतार। निहकलंक कर्म कमाउणा। साचा लेख लिख्त लिखाउणा। झूठा भेख जगत मिटाउणा। वेख वेख गुरसिख जगाउणा। लेख लेख साचे लेख प्रभ आप लिखाउणा। नेत्र पेख गुरमुख सचे प्रभ आपणा दर्द मिटाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी साचा दीप जगाउणा। गुरमुख साचे आप जगाए। आप आपणी सरन लगाए। बेमुख जीव कलि भुलाए। आपणा दर ना किसे दसाए। मानस जन्म गए हर, निहकलंक दे सजाए। गुरमुख साचे गए तर, जिस जन दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि आपणी कल वरताए। अन्तकाल कलि अन्त प्रभ करना। धरे जोत वड धरनी धरना। आप मिटाए ज़ात पात चार वरनां। एका एक कराए प्रभ एका वरना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका ओट रखाए निहकलंक साची सरना। निहकलंक सच दुआरा निहकलंक सच घर बाहरा। निहकलंक सच वरतारा। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन एका देवे शब्द हुलारा। चार वरन इक्क ध्यान। चार वरन इक्क ज्ञान। चार वरन इक्क आण। चार वरन इक्क बाण। चार वरन देवे वड्याई महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। चार वरन इक्क सिक्दारा। चार वरन इक्क घर बाहरा। चार वरन इक्क गिरधारा। चार वरन इक्क विहारा। चार वरन निहकलंक तेरे चरन निमस्कारा। चार वरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका पावे सर्ब सारा। चार वरन एका जोती। चार वरन एका गोती। चार वरन प्रभ आप बणाए माणक मोती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप उठाए आत्म जोत जगाए जोती। साचा शब्द सच संदेश। सच शब्द प्रभ देवे ब्रह्मा विश्न महेष। सच शब्द विच मात धरे कोई ना होवे वड मृगेश। साचा शब्द गुरमुख विरला जपे सोहँ विच माझे देस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई कलिजुग किया जोत सरूपी वेस। जोत सरूपी किया वेस्सया। प्रभ अबिनाशी किया भेस्सया। आप वसाए साचा देस्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप भुलाए वड मरगेस्सया। आपे आप सर्ब भुलाए। आपे आप सर्ब डुलाए। आपे आप सर्ब रुलाए। आपे आप सर्ब खपाए। आपे आप सर्ब मिटाए। आपे आप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप आपणी जोत जगाए। आपे आप आप भगवन्ता। आपे आप प्रभ जोत जगाए साधन सन्ता। आपे आप मेल मिलाए गुरमुख साचे

कन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए आदिन अन्ता। अन्तिम अन्त खेल कराए। साची लिख्त आप लिखाए। पिण्ड बुग्घे भाग लगाए। साध संगत संग रलाए। साचा हुक्म आप सुणाए। गुर संगत दर मंगल गाए। बेमुख गल संगल घत्त चार कुन्ट जमदूतां दे हत्थ फड़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त खेल कर चरन ब्यासों पार टिकाए। चरन धरे ब्यासों पार। माझा देस होए ख्वार। दर दर बिल्लायण सर्ब नारी नार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पावे सर्ब सार। माझा देस गया हर। घर घर दर दर आवे डर। ना कोई दीसे नारी नर। आपणा किया लैण भर। मेट मिटाए राम दास तेरा साचा सर। अन्तिम खेल कराए अवतार नर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए चरन ब्यासों पार धर। पार ब्यासों चरन टिकाए। जोत सरूपी शब्द जणाए। सत्तर लक्ख पठाण उठाए। वाहो दाही आवण धाए। कोई ना मोड़े मोड़ मुड़ाए। प्रभ का भाणा सति वरताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त आपणी कल आप वरताए। पार ब्यासों होए वास। गुर संगत प्रभ होए दास। एका जोत करे प्रकाश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी रास। आपणी रास आपे जाणे। आपणा वक्त आप पछाणे। आपे होए माण निमाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सिर हत्थ टिकाए। साध संगत संग रलाए। साची रंगत नाम चढ़ाए। अंगद अंगीकार आप हो जाए। गुरमुख साचे प्रभ साचा मंग दरस दान, सोहँ भिच्छया साची पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणे चरन टिकाए। मस्तूआणे प्रभ साचा आ के। जोत सरूपी जोत जगा के। आपणा भेव आप खुल्ला के। सिँघासण बैठे डेरा ला के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पा के। सिँघासण सिँघ रूप सुहावणा। बैकुण्ठ निवासण विच मात दे आवणा। पुरख अबिनाशण जोत सरूपी जामा पावणा। सर्ब घट वासण साचा दासण विच मात अख्वावणा। सृष्ट सबाई सद बिनासण प्रभ आपणा हुक्म वरतावणा। धुंधूकार विच संसार मात पताल अकाशण अग्न मेघ प्रभ आप वरसावणा। जो जन जपे सोहँ स्वास स्वासण निहकलंक चरन लगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा भेव मस्तूआणे जा खुल्लावणा। मस्तूआणे जोत जगाए। दिवस रैण इक्क रंग समाए। वड सूरा सरबंग आप अख्वाए। शब्द सरूपी किया जंग, सृष्ट सबाई भेड़ भिड़ाए। आपे वेखे आपणे रंग, जीव जन्त कोई भेव ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल कलि वरताए। सिँघासण प्रभ जोत धर। जगाए जोत अवतार नर। आत्म हँकारीआं दुष्ट दुराचारीआं दर आवे डर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक मस्तूआणा चार वरन खुल्लावे साचा दर। मस्तूआणा सच दुआरा। निहकलंक लए अवतारा। चार वरन आए दुआरा। सोहँ देवे नाम अधारा। दुरमति मिटाए जगत सुधारा। प्रभ अबिनाशी पावे सारा। ओअँ ओअँ ओअँ

आप अख्वाए, जोत सरूप निहकलंक नरायण नर अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त ना पारावारा। सिँघासण प्रभ डेरा ला। विच मात प्रभ आपणी जोत जगा। पंज पंज गज़ चौगिर्द लीक लए लगा। कोई विरला सन्त फ़कीर चरनी डिगे आ। जो जन आत्म गहर गम्भीर प्रभ देवे दर दुरका। एका जोत अग्न लगाए तीर अन्तिम भस्म देवे करा। गुरमुख साचे अमृत साचा सीर देवे ठंड वरता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणे आपणा खेल दए वरता। मस्तूआणे कर्म कमावणा। चाली दिवस शब्द लिखावणा। दिवस रैण इक्क करावणा। एकस रंग आप करावणा। गुरमुख साचे सति सति सति विच समावणा। एका सच यति शब्द रखावणा। एका साचा सति सोहँ रसना गावणा। एका साची मति चार वरन रखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका तत्त चार वरन प्रभ चरन लगावणा। एका रसना सोहँ साचा कत्त, जिस बेड़ा बन्नृ पार लगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणे जोत सरूपी साचा दीप जगावणा। साचा शब्द लेख लिखारी। भगत वछल प्रभ गिरधारी। अछल अछल्ल ना कोई पावे सारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि अचरज खेल अपारी। अचरज खेल पारब्रह्म अपार। आपणा रंग किया करतार। जोत सरूपी ल्या अवतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर इक्क सच दरबार। साचा दर दरबार लगावणा। मस्तूआणा धाम सुहावणा। गुरमुख साचे विच प्रभ साचे सद समावणा। दिवस रैण रैण दिवस चाली इक्क करावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राजा राणा बांहों पकड़ उठावणा। साचा प्रभ वड भरपूरा। देवे शब्द अनहद तूरा। आत्म रहे सति सरूरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला भरपूरा। सर्ब कला आपे भरपूर। आप वजाए शब्द तूर। पकड़ उठाए राजा संगरूर। दरस दिखाए दया कमाए आप बणाए चतुर बेमुख मूढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया कमावे जोत सरूपी आत्म पावे जूड़। जोत सरूपी आत्म खिच। पकड़ ल्यावे चरन विच। अमृत आत्म देवे सिंच महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख हिरदे विच। हिरदे रच्चया साचा सच्चया, बेमुख मच्चया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चढ़ाए सोहँ भट्ठी भाण्डे कच्चया। राणा संगरूर आए हज़ूर। टुट्टे गरूर किरपा कर सरूर। शब्द सरूपी जोत जगा। आपणी सरन लए लगा। आत्म दुःख दए गंवा। एका सुख दए उपजा। सुकड़े रुक्ख हरे दए करा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग उज्जल मुखड़ा लए रखा। राणा संगरूर प्रभ दर आए। आपणी भुल जाए बख्शाए। शब्द सार साची पाए। वड अडोल प्रभ दर्शन पाए। प्रभ साचा सद अतोल सृष्ट सबाई जाए तुला के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी ना कलिजुग भुल प्रभ दर आ के। राणा संगरूर साचा साची। आप बणाए साचा राथी। सिँघ अस्वारी वड गिर हाथी। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, साचा खेल कराए, करे कराए आपे देखे देख दिखाए, भरम भुलेखे सृष्ट सबाई आप भुलाए, गुरमुख साचे लेखे आप लगाए त्रैलोकी नाथी। राणा संगरूर संग रल। साध संगत नाल चल। जमन किनारा लैण मल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए जुगो जुग अटल। जमन किनारे प्रभ साचा आ के। जोत जगाए दया कमा के। शब्द सुणाए जन भगत उठा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची धुन उपजाए सोहँ नाद वजा के। सोहँ नाद साची धुन्कारा। चार कुन्ट कराए जै जै जैकारा। साधां सन्तां जीवां जन्तां प्रभ साचा सुणे पुकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा धाम सुहाए जमन किनारा। जमन किनारे जोत गिरधारे लए अवतारे, गुरमुख साचा पावे सारे। आवण चल निहकलंक दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप भरे सर्ब भण्डारे। सर्ब गुणां भरपूर हरि। आत्म सहिंसे दूर कर। गुरमुख साचे आत्म नूरो नूर कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी सोहँ आत्म सरूर धर। साध सन्त दर्शन पाए। आप आपणी अलख जगाए। कलिजुग सोए जीव आप उठाए। सोहँ नाअरा देवे ला। जीव जन्त दए सुणा। साधां सन्तां संग रला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्ता आए जोत प्रगटा। साध सन्त शब्द धुन्कार। साध सन्त रंग करतार। साध सन्त साचा करन चरन प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर देवे तार। साध सन्त वड्याई दे। आप रखावे आपणा नेंह। आत्म बख्शे साचा मेंह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान किरपा आप करे। जमन किनारे डेरा ला के। जोत सरूपी खेल वरता के। वाली हिन्द पकड़ उठा के। सिँघ रूप प्रभ दरस दिखा के । साँवल सुंदर काहना कृष्ना निहकलंक अख्वा के । बन बिन्दरा वक्त सुहाणा, सुरपति राजा इन्द सरन लगा के। वाली हिन्द प्रभ साचा तोड़े आत्म जिंदा, जोत सरूपी दरस दिखा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव खुल्हा के। वाली हिन्द दरस दिखावणा। बांहों पकड़ प्रभ आप उठावणा। आप आपणा जोत सरूपी भेव खुल्हावणा। वड वड भूपी सति सरूपी बिन रंग रूपी आपणा तेज वखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरन लगावणा। वाली हिन्द सरन प्रभ आए। आप आपणी भुल बख्शाए। निहकलंक चरन सीस झुकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साची जोत जगाए। वाली हिन्द चरन प्यार। आत्म जोत होए उज्जयार। प्रभ मिटाए अन्ध अंध्यार। आपे ढाहे जीव कंध आप विच घर आपणा दरस दिखाए जोत सरूपी आप मुरार। आत्म तृष्ना हरस मिटाए, निहकलंक नर अवतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धार। वाली हिन्द चरन लग्ग। आपणी आप बुझावे अग्ग। प्रभ अबिनाशी साचा दिसे जग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत सृष्ट सबाई जाए जग। वाली हिन्द चरन दुआरे। वाली

हिन्द चरन भिखारे। वाली हिन्द शब्द अधारे। वाली हिन्द देवे दरस आप मुरारे। वाली हिन्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए करे रुशनाए अन्धेर मिटाए बहत्तर नाड़े। वाली हिन्द दर्शन पा के। आपणा भरम सर्ब मिटा के। एका ओट चरन रखा के। सोहँ चोट आत्म ला के। आत्म खोट सर्ब गंवा के। कोटन कोट पाप लहा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया कमा के आपणी सरन लगा के। चरन लगाए होए अधीना। बख्शे प्रभ वड प्रबीना। करे शांत गुरमुख सीना । सर्ब सहाई दाना बीना । वाली हिन्द कर्म कमाए। प्रभ अबिनाशी सरनी आए। आपणी करनी आपणी भरनी आपणी धरनी आपणी चरनी आप बख्शाए। साची सरन निहकलंक दिसाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा मार्ग लाए। करे बेनन्ती होए निमाणा। आपे बख्शे बाल अञ्याणा। साचा वरते आपणा भाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तख्तों लाहे राजा राणा। साचा कर्म आप कराए। दर दरबार इक्क लगाए। वड सिक्दार आप अख्वाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म साचा ब्रह्म आप चलाए। साचा दर सच दुआरा। साचा करे आप विहारा। साचा नाम करे वरतारा। चार वरन प्रभ भरम निवारा। एका सरन निहकलंक अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ तीन लोक कराए जै जै जैकारा। सच दरबार आप लगावणा। सचखण्ड निवासी विच मात कर्म कमावणा। सिँघासण बैठ जोत सरूपी साचा दीप जगावणा। सीस साचे छत्र झुलावणा। बिन रंग रूपी निहकलंक गुरमुख साचे विच समावणा। वड वड भूपन भूपी प्रभ आपणे चरन लगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा फ़ुरमाण सतिजुग साचे आपे आप सुणावणा। साचा दर दरबार लगा के। साचा हुक्म करतार चला के। साचा विहार जगत धरा के। सर्ब नर नार इक्क करा के। इक्क उधार निहकलंक चरन रखा के। राउ रंक रंक राउ इक्क धाम बहा के। राजा राणा राणा राजा तख्तों लाह के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक एक जगदीस, सृष्ट सबाई जाए पीस, कोई ना करे प्रभ दी रीस, साचा छत्र आपणे सीस जाए झुला के। एका छत्र झुल्ले सीस। धरे जोत मात जगदीस। भेव मिटाए बीस इकीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक सृष्ट सबाई दीस। सतिजुग साचा मात धरावणा। दर दरबार प्रभ दिल्ली शहर लगावणा। साची सरकार प्रभ साचे आप अख्वावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन एका रंग रंगावणा। सतिजुग तेरा साचा दर। चार वरन तेरे इक्क सुहाए साचे घर। नीच ऊँच ऊँच नीच सभ गए हर। एका एक एक जोत अबिनाश, जोत प्रगटाए अवतार नर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द जपाए सृष्ट सबाई घर घर। सोहँ शब्द तेरा प्रकाश। कलिजुग माया हो जाए विनास। सतिजुग होवे तेरा धरवास। आत्म मैल पापां धोवे प्रभ अबिनाश। गुरमुख साचा कदे ना

सोवे, प्रभ हिरदे रक्खे वास। गुरमुख साचा कदे ना रोवे, रसना जपे स्वास स्वास। गुरमुख साचा सच साचा बीज बोवे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप कराए आत्म रास। दर दरबारी आपे आप। पैज संवारी आपे आप। सतिजुग तेरी सिक्दारी प्रभ साचा रक्खे आपे आप। सृष्ट सबाई होए पनिहारी, सोहँ शब्द तेरा चले साचा जाप। जन भगतां होए उधारी आपे आप। आप उतारे कोटन पाप। दिवस रैण गुरमुख साचे नाम खुमारी सोहँ देवे साचा जाप। साचा शब्द साचा अधारी मेल मिलावे आपे आप। सृष्ट सबाई रही झक्ख मारी, सर्ब भुलाए आपे आप। गुरमुख विरला जगत वपारी जिस जन दया कमाए आपे आप। गुरसिखां करे जोत अकारी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा आपे आप। सतिजुग साचे जन्म दवाया। मातलोक प्रभ आप टिकाया। एका ओट निहकलंक सरनाया। सोहँ चोट शब्द लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा कर्म कमाया। सतिजुग साचा मात धर। किरपा आप गिरधार कर। निहकलंक ल्या अवतार इक्क खुल्ाया साचा दर। इक्क रखाया साचा घर। आपे आप चल आया प्रभ साचा हरि। कलिजुग जीवां पाई माया ना दीसे साचा दर। गुरमुख साचे प्रभ साचे दी छत्र छाया चरन आए पायण वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत धर, गुरमुख साचे साचा देवे वर। वर घर प्रभ साचे दिया। आत्म जोत जगाई, आप रखाई साची निया। साचे घर वज्जे वधाई, आप बिजाए सोहँ साचा बिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे जेहा किया। कलिजुग जीव वेला अन्त। कलिजुग जीव आप पछाण साचा कन्त। कलिजुग जीव माया पाए जगत बेअन्त। कलिजुग जीव महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए एका आदिन अन्त। कलिजुग जीव वेला वेख। कलिजुग जीव जोत सरूपी किया भेख। कलिजुग जीव आप लिखाए आपणे साचे लेख। कलिजुग जीव प्रभ अबिनाशी आप मिटाए बिधना लिखी रेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि जोत प्रगटाए नेत्र पेख। कलिजुग जीव अन्ध अंध्याने। कलिजुग जीव आत्म अभिमाने। कलिजुग जीव ना भुल निधाने। महाराज शेर सिँघ जोत प्रगटाई विष्नूं भगवाने। कलिजुग जीव उठ जाग। कलिजुग जीव सुण राग। कलिजुग जीव चरन लाग। कलिजुग जीव क्यों माढ़े होए भाग। कलिजुग जीव प्रभ अबिनाशी आपे आपणा किया सांग। कलिजुग जीव महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कर दरस आत्म बुझा आग। कलिजुग जीव प्रभ चरन द्वार। कलिजुग जीव प्रभ पावे सार। कलिजुग जीव ना भुल गंवार। कलिजुग जीव मदिरा मास छड्ड आहार। कलिजुग जीव सोहँ देवे प्रभ शब्द आधार। कलिजुग जीव आत्म करे जोत उज्जयार। कलिजुग जीव एका दिसे रंग करतार। कलिजुग जीव हिरदे वसे प्रभ अपार। कलिजुग जीव राह साचा दस्से, आपणी किरपा धार। कलिजुग जीव एका एक निहकलंक चरन प्यार। कलिजुग

जीव प्रभ साचा देवे मोख द्वार। कलिजुग जीव प्रभ साचा देवे दुःख निवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त पतित पापीआं जाए तार। पतित पापी आयण दर। प्रभ अबिनाशी सरन जायण पड़। कोटन कोट प्रभ साचा पाप जाए हर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर दरबार एका एक साचा हरि। साचा हरि हरयावला। सृष्ट सबाई होई बावला। गुरमुख विरला प्रभ साचे रंग मावला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जोत प्रगटाई विच मात उप्पर धावला। उप्पर धवल जोत धर। मातलोक आए अवतार नर। सचखण्ड बणाया साचा दर। विच वरभण्ड समाया जोत सरूपी भेख कर। सृष्ट सबाई रंड कराया भरम भुलेखा इक्क रखाया सृष्ट सबाई रंड कर। खण्ड खण्ड कर सोहँ डण्डा सिर लगाया, आप आपणी वंड कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ डण्डा आप उठाया जोत वरभण्ड धर। आप उठाया लगाया सोहँ खण्डा। सृष्ट सबाई आप तुलाया आप लगाया साचा कंडा। सृष्ट सबाई आप भुलाया मदिरा मास मुख लगाया आत्म होई घमंडा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलिजुग प्रगट जोत आपे चण्ड प्रचण्डा । चण्ड प्रचण्ड विच वरभण्ड सर्ब नवखण्ड। मारे डण्ड चार कुन्ट दीसे रंड। बेमुखां अन्त आई कंड। आत्म पीची झूठी गंढु। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए खण्ड खण्ड। पारब्रह्म तेरी अचरज माया, जोत सरूपी जामा पाया। पारब्रह्म तेरी अचरज माया, आपणे भाणे विच समाया। पारब्रह्म तेरी अचरज माया, बिन वञ्झ मुहाणे जगत तराया। पारब्रह्म तेरी अचरज माया, वड वड सुघड़ स्याणे आप भुलाया। पारब्रह्म तेरी अचरज माया, आप आपणे विच समाया। पारब्रह्म तेरी अचरज माया, खाणीआं बाणीआं भेव ना पाया। पारब्रह्म तेरी अचरज माया, तत्त पंचम तेरा भेव ना पाया। पारब्रह्म तेरी अचरज माया, गुरमुख साचे सेवना सोहँ स्वास चलाया। पारब्रह्म तेरी अचरज माया, गुरमुख विरला पेखे तीजे नैणां बेमुखां दिस ना आया। पारब्रह्म तेरी अचरज माया, कलिजुग जीव रुढ़ाए वहन्दे वहिणा ना कोई छुडाया। पारब्रह्म तेरी अचरज माया, आपे लवे लहणा देणा, विच विचोला आप अखवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी कलि जामा पाया। पारब्रह्म तेरी अचरज माया, झूठे धन्दे सर्ब भुलाया। पारब्रह्म तेरी अचरज माया, अन्धे जीव कराया। पारब्रह्म तेरी अचरज माया, रसना गन्दे मदिरा मास मुख रखाया। पारब्रह्म तेरी अचरज माया, कलिजुग जीव होए भाग मन्दे, प्रभ अबिनाशी दिस ना आया। पारब्रह्म तेरी अचरज माया, गुरमुख रंदाए सोहँ साचे रंदे, पापण पाप आप लुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा जाम आप प्लाया। सोहँ बीओ, जुगो जुग जगत विच जीओ, आपणा आप गुरमुख साचे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचो सच रस मुख पीओ। साचा प्रभ सच द्वार। प्रभ साचे दे भरे भण्डार। कोटन कोट खड़े द्वार। अखुट्ट

अतुल निहकलंक तेरा दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खाली भरे भण्डार। पारब्रह्म तेरी अचरज माया, गुरमुख साचे विच समाया। पारब्रह्म तेरी अचरज माया, आप आपणा विच छुपाया। पारब्रह्म तेरी अचरज माया, अंग संग संग अंग रंग रंग गुरसिख चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई भंग कराया। आपे रंग सदा इक्क रंगा। आपे संग सदा इक्क संगा। साचा दरस दान प्रभ दर मंगा। प्रभ देवे वड सूरा सरबंगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सदा सदा तेरे अंग संगा। अंग संग सदा सहाई। साची दात प्रभ दर मंग, प्रभ देवे जगत वड्याई। आत्म कट्टे भुक्ख नंग, सोहँ वस्त झोली पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे रथ दे चढ़ाई। आत्म रथ सच सन्तोख। आपे देवे गुरमुख मोख। कर दरस उतरे भूख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म चिन्त मिटाए इक्क उपजाए साचा सूख। दरस कर प्रभ दरबार। प्रभ अबिनाशी देवे तार। आत्म उदासी देवे निवार। सर्ब घट वासी आपणी किरपा धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म अभिमानीआं अन्ध अज्ञानीआं आपे पावे सार। आपे आप पावे सारा। आपे देवे नाम अधारा। आपे लेवे जीव जन्त सर्ब सारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन किरपा कर खोल्हे दस्म दुआरा। आत्म द्वार आप खुल्हाए। अमृत फुहार मुख कँवल चुआए। जोत अकार इक्क हो जाए। किरपा कर करतार, कँवल नाभ उलटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी साचा दीप जगाए। साचा दीपक आप जगईआ। आप चढ़ाए साची नईआ। चार वरन कराए एका भैणां भईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा नाम जपईआ। सोहँ साचा साची धारा। सोहँ चले विच संसारा। गुरमुख साचा रसना जप, आत्म रस पीव विच मात दे पले, आत्म जोत जगावे दीव गिरधारा। प्रभ अबिनाशी आदि अन्त बेड़ा बन्न्हे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा धारे, दर घर आए काज संवारे, जिउँ माल चराए धन्ने जोत निरँकारा। रैण सुहाई भिन्नड़ी प्रभ दया धारी। रैण सुहाई भिन्नड़ी घर आए गिरधारी। रैण सुहाई भिन्नड़ी दरस भए कृष्न मुरारी। रैण सुहाए भिन्नड़ी निहकलंक लए अवतारी। रैण सुहाए भिन्नड़ी विच मातलोक होए उज्जयारी। रैण सुहाई भिन्नड़ी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए आपे आप निरँकारी। रैण सुहाए भिन्नड़ी प्रभ किरपा निध। रैण सुहाए भिन्नड़ी प्रभ कारज कीने सिध्ध। रैण सुहाए भिन्नड़ी प्रभ आप लिखावे प्रभ मिलण दी साची बिध। रैण सुहाए भिन्नड़ी सोहँ शब्द गुरमुख साचे आत्म जाए विध। रैण सुहाए भिन्नड़ी, सोहँ गाओ घर साचे प्रभ उपजाए नौं निध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं आपणे आप रखावे साची सिध्ध। साचा नाम रस प्रभ दर पीव। आत्म बुझी फेर जगाए दीव। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लिखाए साची बिध। भिन्नड़ी रैनड़ीए तेरा

वक्त निराला। भिन्नी रैनड़ीए मात जोत जगाए गुर गोपाला। भिन्नड़ी रैनड़ीए गुरमुख साचे होए प्रभ आप रखवाला। भिन्नी रैनड़ीए सोहँ साचा आत्म देवे प्रभ साची माला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द देवे चार वरन सुखाला। भिन्नी रैनड़ीए तेरा वक्त मजीठला। भिन्नी रैनड़ीए प्रभ आया घर बीठला। भिन्नी रैनड़ीए प्रभ साचा गुरमुख साचे डीठड़ा। भिन्नी रैनड़ीए प्रभ साचा रंग रंगाए गुरमुख साचे आत्म मजीठड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना सद सद गाए, आपणी चिन्त मिटाए प्रभ साचा सद भय भीतला। भिन्नी रैनड़ीए तेरा वक्त सुहञ्जणा। भिन्नी रैनड़ीए जोत जगाए जगत निरँजणा। भिन्नी रैनड़ीए गुरमुखां देवे चरन धूढ़ प्रभ साचा सच मज्जना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप अख्वाए साचा साक सैण सज्जणा। भिन्नी रैनड़ीए तेरा एका नूर। भिन्नी रैनड़ीए प्रभ साचा किरपा कर गुरसिखां देवे चरन धूढ़। भिन्नी रैनड़ीए गुरमुख साचे प्रभ एका देवे सति सरूर। भिन्नी रैनड़ीए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निज घर वासी निज घर वसे बेमुखां दिसे दूर। भिन्नी रैनड़ीए तेरी उत्तम ज़ाता। भिन्नी रैनड़ीए प्रभ सच पछाता। भिन्नी रैनड़ीए तेरा जगत साचा नाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा भगत वड्याए नाउँ रखाए, ना कोई मेटे मेट मिटाए, आपणे रंग सच रंगाए पुरख बिधाता। आप किया, पार किया, जगत विहार किया, भगत उधार किया, आप रखाई साची निया, सतिजुग साचा साचा बिया। गुरमुख जोत जगाया दिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म मात विच किया। गुरमुख सिँघ प्रभ दया कमाए। जन्म मरन गेड़ चुकाए। पसू प्रेतों देव बणाए आप आपणी सेव लगाए। मानस जन्म विच मात दवाए। मात गर्भ तों बाहर कढाए। सति सन्तोखी जीव प्रभ आप उपजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी विच जोत टिकाए। आपणी जोत जीव धराए। साचा प्रभ विच निवास मात रखाए। गुरमुख साचे कीने वस एका नाम जपाए। आत्म रक्खे सद ही वास, आप आपणी सरन लगाए। सोहँ चले रसन स्वास स्वास, गुणवन्त गुण कहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे बन्द खुलास, पिछला लेखा दे चुकाए। लहणा देणा आप चुकाया। पेख नैणां प्रभ साचा धर्म धराया। सजण साक सैणां सर्ब छुडाया। धीआं पुतर भाई भैणां कोई नेड़ ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा गेड़ चलाया। आप आपणा गेड़ चलाए। लक्ख चुरासी विच फिराए। मानस जन्म फिर हत्थ ना आए। वेला अन्त जीव पछताए। प्रभ साचा परखे नीत वेले अन्त दे सजाए। जो जन रक्खे चरन प्रीत, प्रभ साचा साचे धाम दए बहाए। प्रभ साचे गुरमुख काया कीनी सीत, आत्म तृखा प्रभ आप मिटाए। सरबजीत सदा जग जीत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा दरस दिखाए। देवे दरस थिर घर वासा। गुरमुख साचे प्रभ साचा देवे आत्म भरवासा।

कर दरस मिटाए हरस आत्म दुखड़ा सर्ब नासा। कर तरस अमृत मेघ बरस आत्म हरि हरयावला पुरख अबिनाशा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ जपावे स्वास स्वासा। सोहँ साचा रसना जाप। आप उतारे कोटन पाप। विच्चों मारे तीनो ताप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई आपे आप। साचा प्रभ आपे राखा। सदा सहाई अलखणा अलाखा। देवे वड्याई आप बणाए कक्खों लाखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप उपजाए साचे साथा। गुरमुख साचा आप उपाया। विच मात प्रभ जन्म दवाया। पूर्ब लहणा आप लिखाया। साचा नाउँ जगत धराया। साचे थाउँ जोत जगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच गुड़गाऊं करे रुशनाया। गुरमुख साचे आत्म रस। प्रभ अबिनाशी हिरदे जाए वस। आपे आप आप चल आया दर, घर साचे नस्स। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा आण तराया सर्ब घट घट वस। सर्ब घटां प्रभ आपे जाण। आपे करे भगत पछाण। देवे जोत जगत महान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वाली दो जहान। मात पिता घर लागे भाग। सोए भाग जायण जाग। प्रभ सुणाए साचा राग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर आप बुझाए आत्म आग। अमृत वेला होया अज्ज। प्रभ साचा पड़दे लवे कज्ज। अमृत मुख चुआए, नाभ कुंढ खुल्हाए, गुरमुख साचा पीवे रज्ज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जन्म दवाए। आपणी सरन रखाए जोत सरूपी दरस दिखाए, अंडज ज़ेरज उत्भुज सेतज आन बाट आप तुड़ाया। बजर कपाट आप खुल्हाया। साचे घाट आप चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात जन्म दवाया। मातलोक जन्म दवा के। तीन लोक बूझ बुझा के। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक प्रभ सर्ब वखा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बाल अञाणे सुघड़ स्याणे आपे आप जाए जगत बणा के। साचा वक्त साची रास। किरपा करे प्रभ अबिनाश। बालक जन्मे थिर घर वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत करे प्रकाश। अमृत वेला अमृत होवे। दुरमति मैल प्रभ साचा धोवे। आपे वेखे ना कोई दूजा जाणे सोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप वखाणे तीन लोए। वेला वक्त घड़ी विचार। साचा जन्म देवे करतार। बालक जन्मे अपर अपार। धरे जगत करे विहार। जोत ब्रह्मे ब्रह्म पसार। जगाए जोत कर्म विचार। पंदरां मिन्ट उप्पर चार, बालक जन्मे विच संसार। किरपा करे आप करतार। चौदां भाद्रों दिवस विचार। सृष्ट सबाई करे उज्जयार। गुरसिखां जाए तार। बेमुखां कलि करे ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जन्म चरन लगाए विच मात दूजी वार। दूजी वार जन्म दवाया। पिछला लहणा देण चुकाया। साचा सच पहनाया गहणा, प्रभ साचे कर्म कमाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा नाम आपणा आप जगत जगदीश सिँघ रखाया। साचा शब्द साचा जोग। साचा रस प्रभ

दर भोग। आत्म चिन्त मिटाए सोग। प्रभ अबिनाशी कीने आत्म जोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दरस दिखाए अमोघ। दरस अमोघ आत्म धीरा। अमृत मुख चुआए प्रभ आत्म साचा सीरा। तृखा आप मिटाए जिउँ बालक माता नीरा। प्रभ सुक्के रुक्खड़े हरे फेर कराए, सोहँ लगाए सुखला किशना विच तीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आपे कट्टे तेरी भीड़ा। रसना गावणा हिरदे वसावणा। ना कदे भुलावणा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी घर में पावणा। गुरसिखां देवे शब्द अधार। कर किरपा प्रभ जाए तार। बेमुखां प्रभ करे ख्वार। धर्म राए मारे डाहढी मार। गुरसिखां देवे एका जोत करतार। सोहँ साचा वणज वपार। अखुट्ट अतुल्ल भरे भण्डार। आपे होए भगत वरतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां बख्शे चरन प्यार। चरन प्रीती साची रीती। प्रभ साचा परखे गुरमुख साची नीती। आपे आप किरपा कर काया सीतल कीती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना जप जीव आत्म रहे सदा अतीती। आत्म रस साचा रस। प्रभ अबिनाशी होए वस। दरस दिखाए हस्स हस्स। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए गुरमुख साचे कोट रवि ससि। साचा नाम आत्म अधारा, गुरमुख साचे लावे पारा। साचा नाम सच सिक्दारा, आपे करे पार उतारा। साचा नाम देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर दुआरा। साचा नाम प्रभ दर लहणा। औखा जीव भाणा सहणा। हुक्मे अंदर सद ही रहणा। झूठे वहण विच ना वहणा । कलिजुग जीव झूठे साक भैण भ्रा मां पिउ साक सैण सज्जण सैणां। अन्तिम अन्तकाल साचा नाम तेरे पल्ले रहणा। आत्म दुखीआ दरस भुक्खीआ। प्रभ देवे दरस कराए सुक्खीआ। उज्जल कराए जगत मुखीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म चिन्त मिटाए भूख गंवाए भूखन भुखीआ। आत्म दूख मिटे भूख साचा सूख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे दर घर उपजावे वड सूखन सुखीआ। दर घर साचे भाग लगाए। अनहद वाजे आप वजाए। सोहँ साचा राग कन्न सुणाए। पहली माघे दया कमाए। प्रगट जोत दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी आत्म चिन्त मिटाए। पहली माघ दया कर। सोहँ राग आत्म धर। कागों हँस आपे कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खुल्हाए आत्म सर। आत्म सर साचा इशनाना। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना। जोत जगाए आप जहाना। देवे दरस आप भगवाना। मिलाए मेल कर खेल प्रभ बिधनाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा सर्ब जीआं दा जाणी जाणा। पहली माघ आत्म रासे। प्रभ अबिनाशी हिरदे वासे। गुरमुख साचा रसना जपे सोहँ स्वास स्वासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका किणका जोत जगाए ना तोले ना मासे। प्रभ अबिनाशी पावे सार। वेखे विगसे कर विचार। वरते वरतावे विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे

रंग रंगाए तन अपार। आपणा रंग आप दिखाया। इन्द्र जाल पाई माया। वल छल जिस कराया। छल छदौण विच पवण ना देवे सौण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन दुःख मिटावे कौण। अंजाणा बाला दुखड़ा घाला। आत्म आग घिरन जंजाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मास दसवें आपे आप होए रखवाला। एका मंग मिटे सोग। एका मंग मिटे विजोग। एका मंग ना होए रोग। एका मंग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर आप मिटाए चिन्ता सोग। एका रोग लग्गा खट्ट। मातलोक साचा हट्ट। देखण दोए बिट बिट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक कढाए दर द्वार दबाए दहलीजों कढ्ढे पहली इट्ट। किंगरे किंगरे वजाया मृदंग। गोरख गुर लाया संग। माई गौरजा होई संग। आप रखाया आपणा अंग। साचा सिर आप मुंडवाया, बेड़ी दा लोहा आप मंगवाया। काल बाल आपे कर। सरद माल आवे डर। उलट वाहू जाए सर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए लाया डर। लगाया दुःख गया लग्ग। पैरां हेठ रखाई अग्ग। झूठा विहार दिसे जग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे फेर दिसाए साचा मग। किया कराया करया घर। सो घर होया साचा होया काचा, जिस घर आए डर। आप नुहाया घोल प्याया दर दहलीज बणाया आपणा किया लैण भर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दुःख दर्द जाए हरि। प्रभ साचा शब्द प्यार कर। गुरमुख साचा जगत विहार कर। सोहँ साचा नाम पहला वणज वपार कर। दरगाह साची मिले थाउँ मानस जन्म अधार कर। कलिजुग जीव फिरन जिउँ सुंञे घर काउँ, आपणा आप बेड़ा पार कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप तराए पकड़ बांहों किरपा गिरवर गिरधार कर। साचा प्रभ आत्म जीत। आपे बख्शे चरन प्रीत। आपे देवे साची जीत। वणज वपार होवे जीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई सदा सदा जग जीत। साचा राह गुरसिख जाणा। साचा नाम प्रभ पछाणा। सचा थाउँ धुर दी बाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म खेत वड किरसाणा। आत्म खेत उत्तम फल। साचे हेत फले फुल्ले डल। पेख नेत्र दर घर प्रभ साचा आए चल। चिन्ता चीत प्रभ भीड़ कटाए फेर हार ना आए घड़ी पल। शेख सादी वड बगदादी, प्रभ तोड़े गाधी, आत्म साधी विच विस्मादी, अनाद अनादी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द लिखाए बोध अगाधी। दरोही पाए चार यार। आपे आप करे ख्वार। नबी रसूल ना ल्या विचार। अहमद मुहम्मद होया लाचार। हठ भठ करे संसार। आत्म गठ ना करे विचार। चढ़ गई नठ्ठ दुःख लग्गा भार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ उठाए आप चलाए खण्डा दो धार। साचा राह पीर दस्तगीरां। साचा राह सुल्तानां शाह फ़कीरां। साचा राह बी मेहरबान महबान बीदो विच वसाए नीरां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे खिच खिचाए

सोहँ चलाए तीरा। जीव लोक अलनेक कमच खेल बेड़ा दित्ता ठेल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दर दरगाहों आपे दए धकेल। एका जन्म ख़ुदाए दूजा कोई नाहे नबी रसूल रहे लिखाए। पीर दस्तगीर ना कोई होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द सोहँ सीस लगाए। सोहँ धरया सीस आरा। आपे करे दुष्टां दो फारा। साचा प्रभ गुरमुखां साची बख्शे दात बत्ती धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दुःख दर्द आत्म सर्ब निवारा। मसाण आए पवण जाए। पवण सरूप विच समाए। ना कोई देखे ना देख दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर शब्द सरूपी दे जलाए। शब्द सरूपी शब्द लिखा। राती सुत्तयां दए दिखा। भरम भुलेखा दए कढ्ढा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक दिसाए साचा राह। सच घर आवणा, दर्शन पावणा, रोग गंवावणा, सोग मिटावणा, जोग कमावणा। सोहँ साची चोग प्रभ साचे मुख रखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर कर किरपा गुरसिख साचा कागों हँस बणावणा। हँस काग काग हँस। आप बणाए साचा बंस। गुरमुख साचे प्रभ साचे दी साची अंस। विच मात वड्याए जीव जन्त विच सहँस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूती दुष्ट आप सँघारे जिउँ काहना कंस। घर भुलाया आत्म अग्ग। प्रभ मिटाया लागू जग। दया कमाया होए सहाया विच जग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रोग सोग आप मिटाया भरम चुकाया सोहँ मुख लगाया सग। सुण पुकार प्रभ गिरधार। किरपा कर अपर अपार। एका बख्श चरन प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कलि सुधार। मानस जन्म आवे लेखे। आत्म कढ्ढे सर्ब भुलेखे। सृष्ट सबाई रही वेखा वेखे। साची मेख लगाए लेखे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा तीजे लोयण पेखे। नेत्र पेखणा प्रभ रघुनाथा। सद सद वेखणा प्रभ सगला साथा। साचा प्रभ अंग अंग संग संग आपे राखे दे कर हाथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत उधारे, मानस जन्म सुधारे, जो जन चरन निमस्कारे, एका देवे शब्द हुलारे, रसना जप जप जप पावे मोख दुआरे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे त्रैलोकी नाथा। साचा हरि साचा दर सच दर दरबाणा। साचा घर साचा प्रभ आपे रखाए आवण जाणा। किरपा कर आत्म गुरमुख खुल्हाए आप भगवाना। खुल्ले दर दीसे हरि, साची जोत जगे महाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस आप गुण निधाना। दर्शन दे आप गुर पूरया। आसा मनसा तेरी साची पूरीआ। उतरे संसा लथ्थे दुःख वसूरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई सर्ब कला भरपूरया। देही रथ आप चलाए। महांसाथीं आप अख्वाए। एका आरती नाम कराए। गुरमुख साचे तेरी साची जोत, तेरे हिरदे डगमगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत विछड़यां कलि मेल मिलाए। आत्म दुखियां तरस

कर। प्रभ अमृत मेघ बरस कर। दुःख दर्द सभ जाए हर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर। आप गंवाए दुःख रोग। आप मिटाए चिन्ता सोग। मुख चुगाए सोहँ चोग। अमृत बरसाए कट्टे देही रोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस मिटाए हरस कर तरस, गुरमुख साचा जाए कर साचे जोग। आत्म घिरन चिन्ता घर। एका अग्ग चार चुफेर रही लग्ग। सृष्ट सबाई रही दग। दुक्खां रही घेर प्रभ आप लगाए आपणे पग, करे आपणी मेहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रोग सोग मिटाए ना कराए हेर फेर। साचा बचन सति कर पाल। चरन प्रीती निभे नाल। प्रभ अबिनाश होए दयाल। प्रभ आपणा बिरद लए संभाल। पूरन होए तेरी घाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे जोत धर, आपे तोड़े आत्म जंजाल। आत्म तोड़े आप जंजाला। सोहँ देवे सच्चा धन माला। गुरसिख ना होए जगत कंगाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप होए रखवाला। साचा प्रभ सुण पुकार। आपे खोल्हे दस्म दुआर। जाए मिट अन्ध अंध्यार। एका एक होए जोत उजिअर। साचा शब्द साची धुन्कार। खुल्ले सुन्न एका रुण झुण साचे दर साचे घर सच दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा आप वखाए आपणी किरपा धार। स्वच्छ सरूप प्रभ का रूप। जोत सरूप महिंमा अनूप। बिन रंग रूप गुरसिख बणाए एका ताणा एका पेटा एका सूत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द बेमुखां दिसाए पकड़ हिलाए आप उपाया साचा दूत। साचा दूत संग रलाया। वड अवधूत आप अख्वाया। सृष्ट सबाई कच्चा सूत, ताणा पेटा आप उराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पतित पावन आप अख्वाया। जीव कुकर्मी कुकर्म कमाए। जीव अधर्मी अधर्म कमाए। भरमी जीव भरम भुलावे। ब्रह्मी जीव ब्रह्म सरूप समावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन दया कमाए। किया काज छुट्टा साज, आई लाज, दर भाज, कीनी गाज, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रखाए गुरमुख लाज। धरत मात मात धरत। डरत डरत जीव जन्त डरत। पड़त पड़त सर्ब जीव जन्त सरन पड़त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए तेरा अरत। अरत अनीत जाओ जीत, होणा सीत मिल्या प्रभ साचा मीत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे दुखड़े हरे साचा सीर अमृत भरे, आपे परखे नीत। गुर पूरा पूरन काजा। आप रखाए गुरसिख लाजा। सोहँ सच लगाए अवाजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान राजन राजा। साचे गुर सद बलिहारी। साचे गुर सद सद चरन निमस्कारी। आदिन अन्ता साधन सन्ता देवे शब्द अधारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलंकनिह अवतारी। निहकलंक आसा पूर। निहकलंक सद हज़ूर। निहकलंक वड सूरन सूर। निहकलंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां दी आसा पूर। पूरी आस सच भरवासा। आत्म रासा दुखड़ा

२६५ ०२

नासा। प्रभ साचे किया सच घर वासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए दासन दासा। दासन दास आप वड दाता। वासन वास सर्ब का ज्ञाता। पूरन ब्रह्म जिस आप पछाता। सच धर्म जगत चलाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति पुरखां देवे साची दाता। गुरमुख साचे दया दान। किरपा करे जियां भगवान, साचा हिया मेल मिलान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका जोत एका रंग समान। गुर प्रसाद भोग लगाया। गुर प्रसाद साध संगत आप वरताया। गुर प्रसाद गुर पूरे गुरमुख साचे मुख रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर मात कुक्ख सुफल कराया। भोग लगाए आप भगवान। गुरमुखां देवे आत्म दान। चरन धूढ़ साचा इशनान। आत्म धूढ़ होए चतुर सुजान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा आप रखाए आपणी आण। गुरमुख साचे प्रभ दर जाग। सच सुणाया प्रभ साचे राग। कलिजुग माया डस्सणी नाग। प्रभ साचा सच दर आया आपे पकड़े तेरी वाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस कलिजुग पूरन तेरे भाग। भोग लगाए आप भगवन्ता। मुख रखाए साधन सन्तां। देवे वड्याई सर्ब जीव जन्तां। जिन प्रभ मिल्या साचा कन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए आपणी बणता। तीन लोक इक्क अकारा। एका जोत जोत निरँकारा। मात पताल अकाश जोत सरूपी शब्द हुलारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत करे प्रकाश, कलिजुग मिटे अन्ध अन्धयारा। विच पताल जोत जगाए। बाशक सेज प्रभ आसण लाए। नैण मूंध नैण मुँधारी आप अख्वाए। आप अख्वाए भगत अधारी दया कमाए। मुकंद मनोहर लखमी नरायण लछमी चरनां विच बहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जुग जुग विच मात दे आए। बाशक सेज पैर पसारे। आप सुत्ता नैण मुँधारे। खड़ी लछमी चरन दुआरे। चरन झस्से रूप अपारे। सहँस मुख बाशक नाम उचारे। उपजे सुख जोत सरूपी प्रभ सुत्ता आप गिरधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी तीन लोक एका रंग रक्खे सद करतारे। साचा प्रभ विच अकाश। एका जोत करे प्रकाश। घट घट वसे आप अबिनाश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा जाणे वास। साचा धाम आप सुहाए। एका जोत डगमगाए। बिन बाती बिन तेल, साचा दीप आप जगाए। गुरमुख साचे साचा मेल, प्रभ अबिनाशी आप कराए। सचखण्ड निवासी पारब्रह्म अचरज खेल, जीव जन्त निवासी कोई भेव ना पाए। जोत सरूपी जोती मेल, विच जोती जोत समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत तीन लोक रुशनाए। एका जोत आप अकारा। एका रंग इक्क गिरधारा। रूप रंग अपर अपारा। अंग अंग जोत चमत्कारा। संग संग शब्द धुन्कारा। गंग गंग अमृत झिरना झिरे अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत आप निरँकारा। साचा धाम सचखण्ड। आप रखाए उप्पर ब्रह्मण्ड। हेठ टिकाए सर्ब नवखण्ड।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए सर्ब वरभण्ड। वरभण्ड प्रभ खेल न्यारा। आवे जावे वारो वारा। जोत जगाए कलि दीप अपारा। जुगो जुग प्रभ साचा खेल अपर अपारा। मच्छ कच्छ रूप धर, साचा रछ नाम कर, गुरमुख साचे साची दश पूर्ब गिरधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप पावे तेरी सारा। मातलोक जोत जगाए। जुगो जुग जामा पाए। भगतन हित नाउँ रखाए। नित नवित्त रहे रहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां होए आप सहाए। जन भगतां देवे साचा राज। जन भगतां देवे साचा ताज। जन भगतां रक्खे आपे आप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप संवारे काज। गुरसिख तेरा कर्म विचारया। कर किरपा प्रभ पार उतारया। निहकलंक कलि जामा धारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन बलहारया। गिरवर गिरधारा। आपे पावे गुरमुख सारा। आपे खोल्हे दस्म दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक अवतारा। दस्म दुआर आप खुल्हा के। आत्म पड़दा आपे लाह के। आप आपणा विच टिका के। जोती जोत दीप जगा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया जाए कमा के। जोती जोत आप मिलईआ। साचा राह जगत चलईआ। आपे चलाए साची नईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अन्त ना पारावार, ना कोई पावे, साचा राग जगत सुणईआ। साचा मार्ग जगत चला के। गुरमुख साचे साचा राग प्रभ सुणा के। सोहँ साचा विच टिका के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव खुल्हा के। आपणा भेव आप खुल्हाया। आसण लाया हिरदे विच समाया। किरपा कर आत्म जिंदा आप खुल्हाया। अमृत आत्म साचे सर, गुरसिख आप नुहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी किरपा कर कँवल मुख आप खुल्हाया। आत्म सुख आप उपजाए। उलटा रुक्ख मात गर्भ छुडाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए। मानस जन्म सुफल करा के। लक्ख चुरासी गेड़ कटा के। जोत सरूपी जोती जोत मिला के। एका गोती गोत प्रभ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन जाए इक्क करा के। जोत मिलाए पुरख अबिनाशा। आपे रक्खे घट घट वासा। एका दर एका घर साचा सचखण्ड निवासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप बणाए आप तराए आप बहाए आप रखाए थिर घर वासा।

२६७ ०२

* १७ भाद्रों २००६ बिक्रमी मेरठ छाउणी विहार होया *

सुरत शब्द प्रभ मेल कर। अचरज पारब्रह्म कलि खेल कर। सुरत शब्द प्रभ मेल कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत प्रकाश धर। आत्म जोत करे प्रकाश। आत्म अन्धेर होए विनास। गुरमुख आत्म होए रास। प्रभ साचा करे

बन्द खलास। जोत सरूपी सद रक्खे वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए दासन दास। आपे रक्खे गुरमुख वास। सोहँ जपावे स्वास स्वास। अचुत पारब्रह्म पुरख अबिनाश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद सद सद बलि बलि जास। सुरत शब्द साची धारा। सुरत शब्द करे विचारा। सुरत शब्द पावे सारा। सुरत शब्द देवे हुलारा। सुरत शब्द खोल्हे दुआरा। सुरत शब्द एका एक दिसावे सच्चा घर बाहरा। सुरत शब्द एका रंग कराए आपे आप करतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत निरँजण नरायण नर अवतारा। सुरत शब्द आत्म जोड़। सुरत शब्द जल्दी लए दौड़। सुरत शब्द प्रभ मेल मिलाए, गुरमुख साचे प्रभ साचे प्रभ दी साची लोड़। सुरत शब्द चरन ध्यान। सुरत शब्द ब्रह्म ज्ञान। सुरत शब्द होए हरिभगत भगवान। सुरत शब्द आत्म मेल मिलाए जोत जगाए प्रभ महान। सुरत शब्द एक रंग आप दिसाए एका जोत जगे कोटन कोट भान। सुरत शब्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप मिले भगवान। सुरत शब्द साची धुन। सुरत शब्द गुरमुख साचे सुण। सुरत शब्द आपे आप उपजाए रखाए सुणाए गुरमुख विरले चुण। सुरत शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव पुण। सुरत शब्द आत्म उज्जयारी। सुरत शब्द मिले मुरारी। सुरत शब्द आपे देवे जोत निरँकारी। सुरत शब्द एका रंग दिसाए एका रंग चढ़ाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। सुरत शब्द आत्म रास। सुरत शब्द दुखड़ा नास। सुरत शब्द गुरमुख साचे प्रभ रक्खे वास। सुरत शब्द एका जोत जगे अबिनाश। सुरत शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म करावे रास। सुरत शब्द साची मति। सुरत शब्द आत्म तत्त। सुरत शब्द साचा यति। सुरत शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आपे रक्खे कलिजुग तेरी पति। सुरत शब्द हरि का द्वार। सुरत शब्द शब्द सुरत भगत उधार। सुरत शब्द आत्म जोत जगे अपार। सुरत शब्द मेट मिटाए अन्ध अंध्यार। सुरत शब्द साचा घर दिसाए एका एकँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे देवे किरपा धार। सुरत शब्द जीव जवाया। सुरत शब्द दीप जगाया। सुरत शब्द नींव रखाया। सुरत शब्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा दरस दिखाया। सुरत शब्द सच दर। सुरत शब्द साचा वर। सुरत शब्द आप खुल्हाए आपणा घर। सुरत शब्द मेल मिलावे अवतार नर। सुरत शब्द दरस दिखावे एका हरि। सुरत शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे एका ध्यान चरन धर। सुरत शब्द आत्म नात। सुरत शब्द आपे देवे साची दात। सुरत शब्द गुरमुख साचे सोहँ देवे वड करामात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे वड्याई जोत जगाई होए सहाई, पति रखाई ना होए अन्धेरी रात। जोत जगाए अपर अपार। सुरत शब्द दे जाए तार। सुरत

शब्द एका उपजे चरन प्यार। प्रभ साचे दी साची कार। आवे जावे जगत रहावे वारो वार। गुरमुख साचे दरस दिखावे, प्रगट जोत जुगो जुग लँघावे पार। जोत सरूपी जोत निरँजण एका एकँकार। साध संगत सदा दुःख भय भंजन आदि जुगादी किरपा धार। एका देवे चरन धूढ़ साचा मजन, गुरमुख साचे चरन कर निमस्कार। गुरमुख साचे साचे दीपक विच मात जगण, बेमुखां करे ख्वार। पोह ना सके कलिजुग माया अग्न, एका जोत धरे करतार। कलिजुग जीव दर दर फिरन नग्न, निहकलंक एका मारे शब्द मार। गुरमुख साचे नाउँ प्रभ रंगण, एका उपजे रंग अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं सतिगुर साचा, सति पुरखां पावे सार। सति पुरख सति सरूप। सति पुरख रंग अनूप। सति पुरखां सति समाए प्रभ साचा वड भूप। सति पुरखां इक्क रंग हो जाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत अनूप। जोत सरूपी जोत धर। मातलोक आया अवतार नर। भेद खुल्हाए प्रभ वड देवी देव सरन लगाए, एका जोत मात टिकाए, साचा दर आप खुल्हाए, चार वरन आए दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सोहँ साचा शब्द चलावे, दुतर जायण तर। एका शब्द रखाया आप। सृष्ट सबाई आपे होया माई बाप। निहकलंक कलि जोत प्रगटाई गुरसिखां मारे तीनो ताप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आपे आप उतारे कोटन पाप। पाप उतारे कोटन कोटी। सोहँ शब्द उठावे सोटी। सृष्ट सबाई होई खोटी। आप कराए बोटी बोटी। बेमुख जीव अन्तकाल खाली हत्थ जावे, हत्थ ना आवे रोटी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप मिलाए जोती। आप आपणी सरन लगाए। दर दरबार बहाए। दरगाह साची माण दवाए। सचखण्ड निवासी सचखण्ड समाए। थिर घर वासी थिर घर निवास रखाए। पुरख अबिनाशी सति सरूपी विच समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब घट वासी गुरमुख साचे साचे धाम बहाए। साचा धाम जगत न्यारा। आपे आप इक्क निरँकारा। जगे जोत अगम्म अपारा। एका जोत तीन लोक अकारा। लोक परलोक प्रभ चरन दुआरा। जोत सरूपी पवण हुलारा। पवण सरूप जीव जन्तां देवे स्वास अधारा। जोत सरूपी जोत प्रभ, लक्ख चुरासी पसर पसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक एकँकारा। अन्त ना पारावारा। ओंकार किया आकार। इक्क करतार विच संसार जामा धार, भगत उधार बेमुख सुधार कर ख्वार मारे शब्द मार। उठाए खण्डा दो धार, कर्म विचार मदिरा मास करन आहार। निहकलंक कलि लए अवतार। आपे पावे सर्ब दी सार। जन भगतां जाए दुतर तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पावे सर्ब दी सार। गुरमुखां पूरन आसा। प्रभ किया जोत प्रकाशा। आपे जाणे लेख लिखासा। जोत सरूपी किया वासा। तजी देह प्रभ अबिनाशा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे लेख लिखाए, आपे वेख वखाए, आपे मेख

लगाए, मानस जन्म कराए रासा। मानस जन्म रास कर। गुरमुख साचे पास कर। साचा आत्म धरवास धर। हउमे दुखड़ा नास कर। एका मेल सुरत शब्द अकाश कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप धराए, सोहँ जपाए रसन स्वास स्वास कर। सोहँ जाप वड प्रताप प्रभ करामात। देवणहार इक्क दातार। मंगण खड़े कोट द्वार। प्रभ साचे दा सच भण्डार। वरते वरतावे आपे विच संसार। गुरमुख विरला पावे, चल आवे चरन द्वार। चरन धूढ़ जन कोई नहावे, जिस किरपा करे गिरधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग रंगावे, गुरमुख साचे सिख पसार। गुरमुख साचे साची सीख्या। साचा लेख प्रभ साचे धुर दरगाहों लीख्या। ना कोई मेटे मेट मिटाए प्रभ आत्म लाई साची मेख्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दर घर आए दया कमाए, सरन लगाए मरन चुकाए, हरन फरन खुल्हाए, तारन तरन आप अखवाए, लक्ख चुरासी विच गुरसिख ना आए, वड वड मुन रिख प्रभ दे तराए, सोहँ पावे साचा नाम दान भीख्या। पाई भीख्या मिल्या वर। दर घर आए आपे हरि। खोल्ह वखाए आत्म दर। आप दिखावे अमृत आत्म सर। प्रभ अबिनाशी किरपा कर। अमृत भण्डारे देवे भर। एका जोत आप जगाए, एका बूंद मुख चुआए कँवल नाभ उलटा कर। स्वांत स्वांते आत्म शांते, प्रभ आप मिलाए आपणी किरपा कर। आपे बैठा वेखे विच इकांते, जोत जगाए अपर अपार। अपर अपार जोत जगाए। कर विचार दया कमाए। नर अवतार भरम भुलेखा सर्ब मिटाए। भगत उधारे साचा लेखा आप चुकाए। विच संसार साची रेख्या आप लिखाए। आपे पावे सार, गुरमुख साचा प्रभ साचा सरन लगाए। ना आवे हार, सोहँ जाप रसन जपाए। प्रभ साचा जाए तार, जिस जन दया कमाए। साचा देवे नाम जगत विहार, प्रभ अबिनाशी सेव कमाए। एका जोत करे चमत्कार, आत्म साचा दीप जगाए। दिवस रैण रैण दिवस एका रंग करतार, आत्म देवे सर्ब मिटाए। गुरमुखां देवे शब्द अधार, साची धुन आप उपजाए। प्रभ साचे दी साची कार, आत्म सुन्न आप खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे कर्म, प्रगट जोत सति सरूपी दरस दिखाए। गुरमुख साचे कर्म विचारया। सच्चो सच प्रभ साचा करे विहारया। प्रभ साचे सद सद बलिहारया। आवे जावे विच मात वारो वारया। कलिजुग अन्तिम अन्त निहकलंक जामा घनकपुरी विच धारया। गुरमुख साचे सन्त प्रभ सुरत शब्द आप जगा रिहा। जिस बणाई साची बणत, आपणा खेल आप खिला रिहा। आपे बैठा रहे इकन्त, आपणे भाणे विच चला रिहा। भेव ना पावे कोई जीव जन्त, कलिजुग जीव आप भुला रिहा। प्रभ माया पाई जगत बेअन्त, माया ममता विच डुला रिहा। सृष्ट सबाई आत्म जित, हउमे रोग सर्ब सता रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे कलिजुग देख आत्म साचा जोत सरूपी दीपक जोत जगा रिहा। आत्म चिन्ता

आप लगाए। जीव जन्त कोई भेव ना पाए। वड वड देवी देव प्रभ आप भुलाए। करोड़ तेतीस रहे बिल्लाए। सुरपति राजा इन्द प्रभ अबिनाशी दिस ना आए। प्रभ साचे दी साची बिन्द, गुरमुख साचे प्रभ साचा आप जगाए । कलिजुग जीव बेमुख करन जो निंद, अन्तिम अन्त नर्क निवास रखाए। निहकलंक वड वड मृगिन्द आपे दे सज़ाए। आप रुढ़ाए सागर सिंध, वहन्दे वहण जीव रुढ़ाए। आप कढाए बेमुखां जिंद, जमदूत दिवस रैण प्रभ मगर लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप आपणी सरन लगाए। सरन लाग क्यों सोए भाग। कलिजुग जीव जाग आत्म बुझा आग। सोहँ शब्द सुणा साचा राग। एका तन पहनाए सोहँ ताग। आपे पकड़े प्रभ साचा तेरी वाग। आप बणाए हँस काग। जोत प्रगटाए निहकलंक गुरमुख साचे चरन लाग। आप वजाए सोहँ साचा डंक, सुण सुण साची धुन गुरसिख साचा आए भाग। इक्क कराए राउ रंक, निमाणयां निताणयां आपे धोए दाग़। कलि जोत प्रगटाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव उठ उठ जाग। उठ जाग वक्त विचार। मानस जन्म जीव ना हार। फल ना लग्गे मुड़ के डार। लक्ख चुरासी आत्म कर विचार। कर कर हासी दर दर ना हो ख्वार। रसना होई मदिरा मासी, आत्म चल्लया सर्ब विकार। सच समग्री दर तों नासी, आपे रलयो कागां डार। भुल्लया प्रभ पुरख अबिनाशी, जिस दिया जन्म अपार। प्रगटाए जोत निहकलंक घनकपुर वासी, कलिजुग जीव चल आयण दर दरबार। वेला अन्तकाल कलि सर्ब सृष्ट पछतासी, प्रभ साचा करे ख्वार। आप कराए आपणे चरन दासी, दर दर फिरन भिखार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जामा धारे निहकलंक अवतार। निहकलंक कलि जामा धरया। जोत सरूपी अवतार नरया। गुरमुख विरले कलिजुग वरया। किरपा करे जिस गिरधरया। जो जन पूरन आसा वरया। आत्म जाग सोहँ साचा रसन उचरया। आत्म पापां धोया दाग़, प्रभ अबिनाशी सरनी पड़या। सोया जीव गया जाग, प्रभ साचे सिर हत्थ जिस जन धरया। आप सुणाया साचा राग, सोहँ धन्न भाग भरया। आत्म होई जगत त्याग, एका मिल्या हरि नर नर हरि नरायण नर अवतरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आदि जोत सरूप प्रगट जोत तेरे आत्म दर द्वार खड़या। आत्म दर सच दरवाजा। जिथ्थे वसे आप ग़रीब निवाजा। आपणा आप आप जिस साजन साजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नव दर सच्चा घर, आपे खोल्हे दस्म दुआरा। दस्म दुआर आप खुल्हाए। एका जोत अकार कराए। निराहार विच समाए। निराधार दिस ना आए। कर्म विचार जीव जन्त तराए। देवे चरन प्यार, जो जन आत्म रसना रस रस रस साचा पाए। एका दिसे सभ नर नार, जो जन रसना सोहँ गाए। सोहँ शब्द साची धार, साचे दर फुहार लगाए। गुरमुख साचा पाए सार, सच तीर्थ जो नाव्हण आए।

आपे देवे प्रभ साचा तार, साचा सीर मुख चुआए। आपे करे सच्ची कार, सोहँ शब्द तीर विन्ह आप चलाए। शब्द धुन उपजाए साची धार, आत्म सुन्न आप खुल्हाए। खुल्ले सुन्न जोत जगे अपर अपार, एका जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे आत्म साचे घर जगाए। आत्म घर जगे जोती। गुरमुख मैल दुरमति धोती। प्रभ साचा गुरमुख साचे माणक मोती। गुरमुख गुरमुख अन्तिम अन्त एका घर एका दर एका एक मिल्या हरि एका होए जोतम जोती। गुरमुख गुर एका जोत। गुरमुख गुर एका गोत। गुरमुख गुर ओत पोत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत निरँजण एका एक जगाए जोत। जोत देवे आत्म धीर। एका जोत गुरमुख साचे आत्म सीर। एका जोत गुरमुख साचे आत्म साचा नीर। एका जोत देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरा बजर कपाट चीर। बजर कपाट आप चिराए। आर पार शब्द लगाए। साची धार गुरसिख वहाए। इक्क अकार जोत कराए। निहकलंक अवतार आप आपणे विच समाए। भरम निवार गुरसिख तराए। किरपा कर आप गिरधार, मन का भरम भउ चुकाए। मानस जन्म गुरसिख सुधार, आप आपणे रंग रंगाए। कलिजुग बेड़ा पार कर, ब्रह्म सरूप विच ब्रह्म समाए। निज घर वासी निज घर वास कर, सचखण्ड निवास गुरसिख रखाए। एका जोत धरवास धर, धीरन धीर आप अख्वाए। जोत सरूपी इक्क प्रकाश कर, आत्म अन्धेर सर्ब मिटाए। सर्ब घटा घट वास कर, निज घर वेखे ताड़ी लाए। सोहँ शब्द रसन स्वास स्वास कर, आप आपणा नाम जपाए। गुरमुख साचे तेरा मानस जन्म रास कर, निहकलंक अपणी सरन लगाए। आप आपणा दास कर, जोत सरूपी दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तारन तरन आप अख्वाए। जगे जोत अगम्म अपारे। किरपा करे आप गिरधारे। खुल्हाए दर जोत निरँकारे। नुहाए सर कृष्न मुरारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे किरपा कर पार उतारे। गुर दर साचा घर। आया हरि गुरमुख साचे जायण तर। दरस कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे वड्याई आप आपणा कर्म कर। कर्म करे आपे हरे। जो जन आए दरे। सोहँ चलावे साचे घरे। खाली भण्डार आपे भरे। साचे कारज गुर दर सरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत प्रगटाए निहकलंक नरायण नर हरे। नरायण नर जोत हरि। दया कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, थिर घर वासी गुरमुख साचे आप आपणे दास कर। दास दास वास वास रास रास नास नास स्वास स्वास स्वास, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप छडाए तेरी आत्म मदिरा मास। आत्म देवे आप धीरा। आपे करे शांत सरीरा। आप पहनाए सोहँ साचा प्रभ तन चीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिस ना आए कलि किसे पीर फ़कीरा। सोहँ चीरा आप पहनाया। सतिजुग वरतीरा आप चलाया। गुरमुख साचे आत्म धीरा

आप धराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड वड पीरन पीरा आप अख्वाया। पीरन पीर आप अख्वाए। धीरन धीर आप हो जाए। सीरन सीर अमृत साचा सीर पिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साचा शब्द तेरे तन चीर पहनाए। तन पहनाया साचा चीरा। गुरसिख उपजाया साचा हीरा। माण गंवाया पीर फ़कीरा। जोत जगाए गुरसिख तराए, वड गुणी गहीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चलाए सोहँ साचा तीरा। सोहँ तीर आप चलाया। बीर बेताले सर्ब उठाया। गऊ ग्वाले जामा पाया। काहना कृष्ना विच मात दे आया। ब्रह्मा विष्न जिस दर अगे खड़े सीस झुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धराया। निहकलंक कलि नाउँ धराए। जोत सरूपी जामा पाए। छड देह अपार गुरमुख साचे विच समाए। आपे करे जगत विहार, ना कोई वेखे वेख वखाए। प्रभ साचे दी साची कार, आपणे भाणे चले चलाए। वेखे विगसे कर विचार, तिस देवे जिस दया कमाए। सृष्ट सबाई दब्बी भार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पावे साची सार। धुर दरगाह करे पुकारा। सुणी पुकार प्रभ गिरधारा। कलिजुग जीव होए दुष्ट दुराचारा। मेरी मति करन ख्वारा। किरपा कर जोत धर, दुष्ट सँघार भगत उधार अवतार नर दिखा डर, कलिजुग जीव आपणा आप गए हर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप लए अवतारा। धरत मात तेरी पुकार। अन्तिम मात कर्म कलि विचार। पाप अन्धेरी रात प्रभ दए निवार। वेख मार झात, निहकलंक लए अवतार। तेरा सीना करे शांत, दुष्ट दुराचारा करे ख्वार गुरसिख बणाए साचे सुत्त, साची जोत जगत धर, सतिजुग साचे करे पसार। आप मिटाए ज़ात पात, सोहँ देवे नाम भण्डार। चार वरन रखाए एका नात, सतिजुग वरते सति वरतार। ना कोई दिसे ज़ात पात, एका एक करे करतार। चार वरन भैण भ्रात, सोहँ देवे शब्द हुलार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरत मात तेरी सुणे आप पुकार दातार। धरत मात तेरा भरवासा। आपे देवे प्रभ अबिनाशा। कलिजुग अन्तिम होया नासा। सतिजुग साचा मात प्रकाशा। निहकलंक विच किया वासा। सोहँ शब्द कराए जीव जन्ता आत्म रासा। आप जपाए स्वास स्वासा। सच सुच्च विच देह वरताए, हउमे हँगता रोग विनासा। रच रच रच आपे रच जाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां करे आत्म रासा। सतिजुग तेरा माण रखाया। सोहँ साचा बाण चलाया। एका आण एका माण एका ताण एका जाण एका खाण एका बाण एका दान एका गान एका नाम बली बलवान आप अख्वाया। बली बलवान आप मेहरवान। भगत भगवान गुण निधान चतुर सुजान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। चतुर सुजाना आप भगवाना देवे चरन ध्याना। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना। जोत जगाए कोटन भाना। सोहँ बन्ने आत्म गाना। आपे देवे साचा नाउँ, किरपा करे गुण निधाना। आप

सुहाए साचा थाउँ, जोत जगाए आप महाना। प्रभ अबिनाशी अगम्म अथाहो, एका एक सच टिकाना। गुरमुख साचे आप चढ़ाए पकड़ बांहों, सचखण्ड निवासी सचखण्ड निवास रखाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा समां आप सुहाणा। आपणा वक्त आप सुहाणा। जोत सरूपी खेल रचाणा। देखा देख जगत भुलाणा। भेखा भेख भेख कर, भेखाधारी आप अख्वाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जोत धर, जोत सरूपी कर्म कमाणा। जोत सरूपी धारया जामा। मातलोक विच आया रामा। आपे जोत जगाई शामा। पूर कराए आपणे कामा। एका शब्द वजाए सोहँ सच दमामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जोत प्रगटाई, निहकलंक कलि पहरया जामा। जोत सरूपी जामा धरया। अचरज खेल पारब्रह्म कलि साचा करया। ना लाए घड़ी पल, जोत सरूपी आसा वरया। कोटन कोट जीव जन्त चल आयण दर, साचा नाउँ प्रभ साचे हिरदे धरया। साचा प्रभ सदा अखल, साचे खेल आपे आप आप प्रभ करया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप तराए ना देखे अज्ज कल, दर दरबार अग्गे खड़या। दर दरबारी अग्गे आप, आप दिसावे साचा राह। सोहँ जपावे साचा नाउँ, आप बहावे पकड़ बांह। आपे वेखे विगसे आपे दीसे ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए दूसर कोई ना। एका एक एक रहाए। एका एक एक समाए। एका अंक एका डंक आप वजाए। एका द्वार एका बंक सुहाए। एका अस्व अस्वार आपे आप अख्वाए। उनन्जा पवण सिर छत्र झुलार, पवण सरूपी आप हो जाए। एका जोत प्रभ उज्जयार, जोत सरूपी डगमगाए। ना कोई दीसे रंग करतार, बिन रंग रूप तीन लोक समाए। एका अंक जोत अकार, जीव जन्त रिहा जोत जगाए। एका एक एक भगवन्त, दूसर कोई नाहे। एका एक गुरमुख साचे आप उठाए। साचे सन्त साची जोत जगाए। आप बणाए साची बणत, जिस जन दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महिंमा अगणत, गुरमुख साचे आपे आण तराए। तारनहार आप गिरधारा। आपे पावे सारा आए दुआरा। देवे दरस अगम्म अपारा। रूप अनूप प्रभ अपारा। सच सरूप निहकलंक नरायण नर अवतारा। वड वड भूप जोत सरूप आपे आप आप किया पसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी आपे पावे सारा। सार समाले आपे आप। गुरमुख साचे प्रभ आपे पाले, जिउँ बालक माई बाप। आपे राखे चरन नाले, गुरमुखां करे वड प्रताप। आत्म बख्शे एका साचा लाले, सोहँ देवे वड करामात। नाम कुठाली आपे गाले, ना कोई पुच्छे ज़ात। गुरमुख साचे तेरी आत्म माले, सोहँ देवे प्रभ साची दात। एका रंग प्रभ रंग गुलाले, आत्म वेख मार झात। प्रभ अबिनाशी तेरे विच समाले, कलिजुग जीव क्यों होई अन्धेरी रात। कर दरस प्रभ करे स्वास सुखाले, साचा दिसावे पिण्ड प्रांत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

गुरमुख साचे आपे भाले आत्म वेख मार झात। आत्म झात मार कर। गुरमुख आपणा आप इकांत कर। आपणा आप शांत कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साक सज्जण सैण मात पित भैण भ्रात कर। भैण भ्रात आप पछाणे, वेले अन्त ना जायण नाल। झूठी काया झूठी दुनियां, झूठा जगत ज़ंजाल। अन्तिम अन्त जीव रूठा, कोई ना सके संभाल। आप फड़ाए बेमुखां ठूठा, दर दर फिरन कंगाल। गुरमुख साचे आत्म रंग चढ़ाए अनूआ, सोहँ देवे भट्ठी गाल। चरन प्रीती निभे नाल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं प्रितपाल। चरन प्रीती प्रीत कर। प्रभ अबिनाशी चीत धर । साचा प्रभ आप आपणा मीत कर । कलिजुग वेला अन्त गुरमुख साचे साची नीत कर । जोत प्रगटाई प्रभ भगवन्त, कर दरस आत्म शांत सीत कर। होए सहाई आदिन अन्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग साची रीत कर। जुगो जुग साची रीता। आपे देवे चरन प्रीता। गुरमुख साचे आत्म जीता। बेमुख वेला हत्थ ना आवे बीता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गाओ सर्ब सुख पाओ, दुःख मिटाओ भुक्ख चुकाओ, आत्म सुख सर्ब उपजाओ, दिवस रैण रैण दिवस राखो चीता। चीत रक्ख आत्म भाख अलखणा अलाख साचा साख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां उडाए अन्तिम अन्त कर आपे राख। राख कर लाख कर वख कर भक्ख कर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त लक्खों जाए कक्ख कर। लक्ख कक्ख होए सक्ख कीने वक्ख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई एका जोत अग्न लगाए, चार कुन्ट होए दुहाई, जीव जन्त सर्ब बिल्लाई सृष्टी होए भक्ख। होए भक्ख विच भंडाल। जोत अग्न अग्न जोत कुठाली प्रभ देवे गाल। कलिजुग जीआं प्रभ शब्द सरूपी पाया जाल। एका जोत आत्म अग्न प्रभ साचा देवे बाल। कलिजुग जीव होए आत्म नग्न, सोहँ गंवाया साचा लाल। गुरमुखां मुख लगाए प्रभ साचा सगन, होए आप भगत प्रितपाल। आप लगाए आत्म साची लग्न, सोहँ साचा रसना गाए जिस जन होए दयाल। जोत सरूपी दीपक गुरमुख आत्म जगण, जिस जन लए बिरद संभाल। दिवस रैण रहे एका मग्न महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप आपणे रंग सद समाल। आपणे रंग आप समालया। प्रभ अबिनाशी वड वड लालया। गुरमुख विरले कलिजुग भालया। प्रभ एका देवे सोहँ साचा नाम सुखालया। गुरमुख साचा प्रभ साचे, साचे मार्ग ला ल्या। जोत सरूपी जोत धर, सोहँ शब्द गुरमुख साचे कलिजुग ना डर, तेरे संग रला रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा सृष्ट सबाई पा ल्या। संग रलाया साचा संगी। अथर्बण होया आपे अंगी। अन्तिम अन्त एह मंग प्रभ दर मंगी। वेले अन्त अन्तकाल सृष्ट सबाई होए भुक्खी नंगी। साची मति कलिजुग जीआं कढ्ढ बाहर आपे टंगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए पिछली लिख्त रिहा

लिखाए वाक भविख्त मेट मिटाए सर्ब फरंगी। आप मिटाए सर्ब फरंगी। सोहँ शब्द वहाए कंघी। बीड़ा शब्द उठाए जंगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल वरताए वड सूरा सरबंगी। आपे होए सूरा सरबंग। आप वजाए सोहँ साचा मृदंग। चार कुन्ट पकड़ उठाए जोत सरूपी आप कराए एका जंग। कलिजुग जीव आप भन्नाए अन्तकाल जिउँ काची वंग। आपणे भाणे विच समाए आपे करे आपणे ढंग। थाउँ थांईं सर्ब उठाए, सोहँ चलाए आत्म डंग। जीव जन्त सर्ब तड़फाए आप कराए सारे नंग। चार कुंट होए दुहाई एका खून वगे गंग। कलिजुग जीव रहे बिल्लाए ना कोई देवे संग। प्रभ अबिनाशी खेल रचाए, सृष्ट सबाई कराए भंग। वड वड जोध आप उठाए, आप फरकाए साचे अंग। विच बबाणा आप चढ़ाए, अग्न मेघ चढ़ाए कंग। जीव जन्त खेत कराए, प्रभ वड किरसाणा वढ्ढ कट्ट मौत पुसाड़े देवे टंग। ना कोई राजा राणा, ना कोई दीसे साचा संग। गुरमुख साचे मेल मिलाणा प्रभ अबिनाशी लाए अंग। जोत सरूपी पहरया बाणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपे देवे साचा रंग। साचा रंग लाल गुलालड़ा। आपे देवे प्रभ साचा बालड़ा। कलिजुग टुट्टे डाल्ह, ना लग्गे फल डालड़ा। मावां छड्डुण बाल, ना मिले पुत्त संभालड़ा। जोत सरूपी पाया जाल, मेल ना होवे सर्ब उखालड़ा। कलिजुग जीव दले जिउँ दो फाड़े दाल, पातंगला आपे बणे गोफालड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत धर, कलिजुग साचा करे सभ थाई सुध संभालड़ा। सर्ब धाम करे वसेरा। प्रगटाए जोत ना लाए देरा। शब्द सरूपी चार कुन्ट चौगिर्द पाए घेरा। सृष्ट सबाई आप खपाए कर हेरा फेरा। कलिजुग जीव मेट मिटाए ना जाणे तेरा मेरा। गुरमुख साचे पार लँघाए, जिउँ खेवट बन्न्हे लाए बेड़ा। सोहँ देवे साची नाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर कर आपणी मेहरा। करे मेहर आप मेहरबान। भगत मिले आप भगवान। सन्तन देवे दरगाह माण। आदिन अन्त कर पछाण। कलिजुग जीव अन्तिम दु:ख पाण। ना जानण साचा कन्तन धरे जोत वाली दो जहान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगत महान। जगे जोत जगत महाना। आया कलि प्रभ भगवाना। साचा दिया नाम निधाना। गुरमुख बन्न्हाया सोहँ हत्थ गाना। साचा नाउँ जगत धराया, ऊँच नीच किया इक्क समाना। आपणा भेव आप खुल्हाया, राउ उमराउ मेट मिटाना। आपे बणे दाई दाया, सृष्ट सबाई आप उपजाना। आपे बणे भैणां भाई, मात पित आप अख्वाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पहरया बाना। जोत सरूपी जोत जगईआ। सोहँ चलाए साची नईआ। चार वरन कराए एका भैणां भईआ। एका पूर पार लँघाए, वंञ मुहाणा नाम रखईआ। आर पार विच संसार सच विहार सच दी कार, सर्ब नर नार एका धार एका प्यार, प्रभ साचा आप रखईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा सति वरतार, आपे लेख

लिखईआ। सतिजुग वरते सति वरतारा। सच सुच्च प्रभ भरे भण्डारा। साचो साच करे विहारा। साचा देवे नाम शब्द अधारा। साचा देवे नाम सोहँ जपणा रसन प्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग होए आप सहारा। सतिजुग होए आप सहार। एका देवे शब्द अधार। एका दिसे दर दरबार। वरन चार आयण चल द्वार। साचा घर प्रभ साचे दा साचा घर बाहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए मात एका एकँकार। सतिजुग तेरी साची मति। गुरमुखां देवे शब्द यति। सोहँ देवे आत्म तत्त। रसना जप जप जीव सोहँ सूत धागा कत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग तेरी रक्खे पति। साचा सूत आप कताया। रसना चरखा आप चलाया। अमृत बरखा मेघ लगाया। साचा ताणा आप तणाया। ताणा बाणा इक्क बणाया। विच समाना आप अख्वाया। राजा राणा इक्क घर वसाया। अन्ध अन्धेर सुध रखाया। आण बाट प्रभ पर्दा पाया। डूंघे घाट विच डुबाया। खिट्टा खाट विच सवाया। मिट्ठा चाट धुन उपजाया। विच ललाट जोत जगाया। साचा हाट मात गर्भ प्रभ साचे आप खुल्हाया। कदे ना आवे घाट, भर भर भर आत्म झोली आपणा तन मन भराया। उलटा बिरख रिहा रोत, दिवस रैण ना कदे भुलाया। प्रभ अबिनाशी साचे साच राच राच वाच वाच आपे होए सहाया। विच आन बाट छड्डया देही झूठा माट, आया बाहर आई घाट, प्रभ अबिनाशी आपणा आप भुलाया। कलिजुग माया वडी घाट, ना कोई चढ़े चढ़ धकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे किरपा कर, बांहों पकड़ पार तराया। आपे तारया काज संवारया पावे सारया। जन्म मरन दा गेड़ चुका रिहा। विछड़यां मेल मिला रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी अचरज खेल कलिजुग वरता रिहा। अचरज खेल कलि वरतार। ना कोई जाणे प्रभ दी सार। साचा प्रभ इक्क विहार। आपे आप करे वरतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म लए विचार। साचा कर्म धीरज सन्तोख। साचा नाम आत्म मोख। सोहँ मिटावे अन्ध अंध्यार कोख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे दरस मिटाए सर्ब दोख। दुखियां दुःख निवारना। प्रभ साचा शब्द उधारना। आवे जावे वारो वारना। नाम रखावे वक्त उचारना। सार पावे भगत सुधारना। दुष्ट खपाए हँकार निवारना। जुग उलटावे जगत जोत जगावणा। अन्तिम अन्त आप कराइ, लोकमात प्रभ जामा धारना। खण्ड ब्रह्मण्ड आप उलटाए, आपणा काज आप संवारना। विच वरभण्ड आप समावे जोत सरूपी निहकलंक नरायण नर निरँकारना। अंडज जेरज उत्भुज सेतज तजाए, लक्ख चुरासी जून उपारना। कलिजुग अन्तिम अन्त सर्ब मिटाए, विरला गुरमुख प्रभ साचे पार लँघावणा। जो जन सोहँ रसना गाए प्रभ साचे दरस दिखावणा। लक्ख चुरासी गेड़ कटाए, प्रभ साचे पार लँघावणा। मात गर्भ फेर ना आए, निहकलंक दर साचे जिस जन सेव कमावणा। अमृत साचे तीर्थ नहाए,

आत्म धीर धरावणा । अमृत साचा सीर मुख चुआए आपे जवाए आपे बणे मारना । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलिजुग गुरमुख साचे तेरा काज संवारना। गुरमुख साचे सच घर जाणा। एका दीसे सच टिकाणा। ना कोई दीसे राजा राणा। साची दरगाह इक्क समाणा। राउ रंक ऊँच नीच एका जोत एका अंक लगाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सूत एका धागा सृष्ट सबाई प्रभ साचे आप परोणा। एका धागा आप वटाया। एका राग आप उपाया। एका जाग आप लगाया। एका नाद आप वजाया। मोहण माधव माध आप अख्वाया। कलिजुग अन्तिम अन्त आप कराया। खेल रचाए काहना जिउँ जादव अन्त मिटाना। जोत सरूपी पहरया बाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मात नाउँ रखाणा। मात नाउँ धरनी धर। जोत जगाई साचे हरि। साचा कर्म रिहा कर। साचा धर्म देवे धर। साचा भरम जाए हर। एका दीसे साचा घर। जगे जोत अपार अपर। आप खुलाया साचा दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई अवतार नर। किरपा कर चुका डर वसा घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक वखा साचा घर। सच दरबारा एका एक। सच घर बाहरा एका एक। अवतार नर सृष्ट सबाई एका टेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां करे बुध बिबेक। चरन टेक बुध बबेके। प्रभ मिल्या एक, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सदा विसेख। सदा सद सदा बलिहार। सदा सदा सद जाए तार। सदा सदा लए अवतार। सदा सदा जन भगतां पावे सार। सदा सदा जोत धरे कर खेल अपार। सदा सदा सदा देवे दरस जिउँ बालक ध्रू गिरधार। सदा सदा प्रहलाद तराया, नर सिँघ रूप किया अपार। सदा सदा सद भेख मिटाए, मंगण आए बल द्वार। सदा सदा प्रभ भगत उपाए, जिउँ अमरीक पाए सार। खण्ड ब्रह्मण्ड इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक तजाए, एका आए सच दरबार। एका जोत जगाए निहकलंक जोत सरूपी जोत निरँकार। सदा सदा सद दस्सण जोग। जन भगतां देवे दरस अमोघ। जन भगत उधारे आत्म मिटावे रोग। साचा नाम जपावे आत्म चुगावे साची चोग। जन भगतां तराए जिउँ जनक जीआं जन्तां साचा नाम कट्टे रोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप सोहँ देवे साचा जोग। सदा सदा सद वड्याई। सदा सदा प्रभ साचे खेल रचाई। सद सदा सद सदा जन भगतां देवे आप वड्याई। प्रभ अबिनाशी किरपा निध राणी तारा मात तराई। जुगो जुग साचे प्रभ साची खेल मात वरताई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जोत निरँजण आदि अन्त जन भगतां होए आप सहाई। सदा सदा प्रभ जामा धारे। जन भगतां पावे आपे सारे। आपे आए चल दुआरे। देवे दरस कृष्न मुरारे। झुग्गी सुत्ता पैर पसारे। लाया भाग बिदर घर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग जामा विच मात दे धारे। भगतां हित प्रभ जामा धारे।

जोत सरूपी जोत प्रभ विच मात लए अवतारे। ल्या अवतार आप करतार। जामा धार कृष्न मुरार। भगत उधार सुदामा किया पार। प्रभ साचे दी साची कार। जुगो जुग विच मात लए अवतार। जोत जगाई लोकमात वज्जी वधाई। भगत जस गाई रैण सबाई। होए सहाई लए छुडाई। पति रखाई आपे आप प्रभ साचा मीत अख्वाई। जोत सरूपी जोत हरि सुत द्रोपद आण तराई। प्रभ साचे दी सच वड्याई। प्रभ साचा साची कारा। जन भगतां पावे आपे सारा। आपे आए चल दुआरा। लिखाया लेख जै दिउ अपारा। विच ललाट शब्द अपारा। खुल्ले कपाट देवे दरस आप मुरारा। इक्क दिसावे साचा घाट, बिधना बिध करे गिरधारा। देवे दरस प्रभ साचा जोत जगाए विच ललाट जोत सरूपी अगम्म अपारा। जुगो जुग प्रभ साचे दा सच विहारा। सैण बैणी आपे तार। चम्यार रविदास पाई सार। प्रभ अबिनाशी गुण विचार। जुगो जुग प्रभ साचे दी साची कार। नाम देव प्रभ साचे तारया। सदना सैण पार उतारया। गुरमुख बैणी संग रला ल्या। जोत सरूपी जोत प्रभ जुगो जुग भेख विच मात वटा ल्या। आप मिटाए जगत भेख। आप तराए गुरमुख वेख। आप मिटाए बिधना लिखी रेख। कर किरपा मस्तक फेर लगाए साची मेख। गुरमुख साचे प्रभ साचा वेख। साचा नाउँ रसना धरया। अन्तकाल पतित अजामल तरया। साचा नाउँ जिस जन वरया। विच बबाण प्रभ साचे खड़या। जुगो जुग प्रगट जोत, जन भगतां प्रभ आसा वरया। आपे तारे भगत जन। जिस जणाए तन मन। आप सुणाए शब्द कन्न। झूठा मिटावे आत्म जन। भाण्डा भरम भउ देवे भन्न। सोहँ लाए आत्म डन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे गुरमुख नाउँ ना लग्गे कदे संन। सच नाम वणज वपारा। साचा दीसे जगत विहारा। गुरमुख लग्गे सद प्यारा। बेमुखां लग्गे सदा रसना भारा। वेले अन्त रखाए प्रभ साचा बेमुखां सिर आरा। एका धड़ दो फाड़ कराए ना आर ना पारा। आपणी दाढ़े कलि चबाए, ना दीसे कोई किनारा। वेले अन्त ना कोई छुडाए, दोए जहानी आए हारा। बिन प्रभ साचे ना कोई होए सहाई, झूठा दिसे घर दुआरा। प्रभ साचे दी साची नाए, साचा देवे शब्द अधारा। आप बहाए साची थाए, जिथ्थे वसे आप गिरधारा। गुरमुख साचा फेर ना आए, जोती जोत होए मिलारा। सचखण्ड निवासी सचखण्ड निवास रखाए, एका होए जोत अकारा। बेमुख कोई थाउँ ना पाए, चार कुन्ट होए धुंधूकारा। वेला अन्त अन्त पछुताए, ना कोई दए सहारा। झूठे छड्डे भैण भ्राए, ना वेखे कोई संग यारां। अन्तिम अन्त एका भगवन्त होए सर्ब सहारा। सर्ब सहारा आपे होए। साचा नाम वणज वपारा जन करे कोए। साचा शब्द उधारा कोटन कोट पापां मैल गंवाए। देवे दरस निहकलंक अवतारा, सोहँ जपे जन रसना कोए। साचे प्रभ वड वड्याई दर घर आए होए। होए सहाई पतित पापीआं लए तराई। पापण पूतना जिउँ पार लँघाई। मोहण मम्मे विष

लगाई। काहना कृष्ना नाउँ धराई। प्रभ साचा बेमुख ना दिसना, माया ममता विच टिकाई। जोत सरूपी जोत हरि, आपणे भाणे सद समाई। आप पछाड़े वांग पहाड़े। विच उजाड़े सच दी बबाण आप चाढ़े। जोत सरूपी जोत हरि, आपणे खेल आपणे मेल आपे आप करे करावे। उपजावे साची जोत, जगावे विच बहत्तर नाड़े। साचे प्रभ खेल अपार। सति अहल्या दित्ती तार। चरन छुहाया आप गिरधार। गौतम अहल्या होई पार। जुगो जुग जन भगतां जाए तार। जन भगत आयण दर पायण दरस एका हरि। कर दरस जायण तर। जोत सरूपी जोत हरि। एक एक रहाए साचे घर। काना कृष्ना मुकट बैणा। सुंदर कुण्डल कँवल नैणां। जामा पावे जन भगतां साचा संग सैणां। बधक आप तराए, चरन कँवल तीर लगाए, मिरग समझ नैणां। जोत सरूपी जोत हरि, दर दरबार आए, पतित पापीआं साचा लहणा प्रभ दर लैणा। द्वापर गया बीत। काहन घनईआ सृष्ट सबाई गया जीत। आप रखाई साची नीहां, जन भगतां बताया एका गीत। एका गीत शब्द कन्न सुणाया, जिस जन होई आत्म सीत। सृष्ट सबाई राह दिखाया, लक्ख चुरासी राखे जीत। प्रभ अबिनाशी होए सहाया, सच मुरारी साचा मीत। जोत सरूपी जोत हरि, एका बख्शे सृष्ट सबाई चरन प्रीत। साची गाथा साची राथा। साचा साथा देवे जगत गोझ ज्ञान त्रैलोकी नाथा। एका दिया भगत ज्ञान। एका दिया भगत ध्यान। एका गया भगत अभिमान। एका भगत आत्म मिल्या आप भगवान। जोत सरूपी जोत हरि जगत चलाया। आपणा आप छुपाया। महांसाथीं आप अख्वाया। नाथ त्रैलोकी जन भगत बण रथवाही आपे आया। जोत सरूपी जोत हरि, अन्तिम अन्त बैठ इकन्त, द्वापर आण कराया। आपे बैठा सद अडोला। वड रथवाही रंग अमोला। सृष्ट सबाई बणया तोला। बेमुखां खुल्हाए आपे पोला। दुर्योध्न बणया प्रभ दर गोला। दर दरबारे मारया बोला। पंचम पांडो प्रभ चरन गोली गोला। देवे वड्याई साचा प्रभ सृष्ट सबाई आपे मौला। जोत सरूपी जोत हरि, गुरमुखां रक्खे वक्ख वक्ख, सृष्ट सबाई करे भक्ख, गुरमुख साचे विच मात उप्पर धरत जिउँ जल फुल्ल कँवला। गुरमुख फुल कँवल प्रभ रखाए। उप्पर धवल आपे आप रहाए। विच रिहा मवल, सृष्ट सबाई करे बवल, जोत सरूपी जोत हरि, काहना कृष्ना सँवल द्वापर अन्त कराए। जोत धर विस्मंत अख्वाए। वेख विचार कर जीव जन्त भुलाए। आत्म वड वड वड हँकार धर, प्रभ पकड़ उठाए। जोत सरूपी इक्क आकार कर, मति अपुठी आपे पाए। जोत सरूपी जोत हरि, आपणा रंग करतार कर, साँवल सुंदर रूप धर, सृष्ट सबाई कर दो फाड़। आप कटाए सिर धड़। आप उखाड़े सर्ब जड़। सो जन उधरे पार, जो जन लग्गे लड़। द्वापर अन्तिम अन्त गया हर। सच खेल आपे रच्चया। चार कुन्ट चार जुग चार मुख चार वरन चार चारे उपजानया। चारो चार वक्त विचार। जोत निरँकार पावे

सार। विच संसार जामा धार। कर्मां कर्म सर्ब विचार। अन्तिम अन्त कलि विचार। सतिजुग साचा सति सति कर लाया। सति पुरखां प्रभ आप उपाया। सर्ब थांएँ आपे आप आपणा विच टिकाया। सति मेहरवान सति सति समाया। बावन रूप धार त्रैलोए दो कर्म कराया। मच्छ कच्छ प्रभ भेख धर, जीव जन्त तराया। मोहणी रूप आप कर, त्रीया वेस जगत रखाया। जुगो जुग भेस कर, जोत सरूपी विच मात प्रभ साचे जामा पाया। आवे जोत जगावे नाम धरावे बली बलवान आप अख्वावे। वड वड सूरबीर प्रभ नष्ट करावे। एका एक एक प्रभ आप रह जावे। एका एक एक जगत धरावे। एका एक सेक सृष्ट सबाई जोत जगावे। जुगो जुग प्रगट जोत, आपणा खेल आप रचावे। आवे जग लगावे मग। बेमुख पकड़ पछाड़े शाह रग। गुरमुख साचे जायण चरन लग । जोत सरूपी जोत धर, साचा दीप जगाया जग। सतिजुग हरया त्रेता धरया। त्रेते वरया राम अवतरया। रघुवंस रघुनाथ सगला साथ आप अखवरया। जोत सरूपी जोत हरि, जुगो जुग आवे जावे, ना कदे जम्मे ना कदे मरया। जोत निरँकारा। मात अवतारा। दसरथ दुलारा राम प्यारा। देवी देव सद खड़े रहण दुआरा। वड बली बलवाना तोड़े आप हँकारा। बेमुख जीव ना पायण सारा। जोत सरूपी जोत हरि, आया मात लए अवतारा। राम रघुबंसा, आप चलाए साचा बंसा। साची उपजाए सच दी अंसा। सोढी वेदी दोए विच सहँसा। जोत सरूपी जोत हरि एका जोत दोए बंसा। राम अवतारी जोत निरँकारी। रावण सँघारी करे ख्वारी। एका कराई आपणे नाउँ जै जै जैकारी। दुष्टां आए हारी। आए चल सच घर दर दरबारी। सच दी बाण होए सिक्दारी। साची वरते जगत कारी। आपे आप सृष्ट सबाई करे ख्वारी। सीता सुत दोए अधारी। आपणी खेल अपर अपारी। बल त्रेता गया हारी। एका राम नाम अवतारी। सती अहल्या जिस पार उतारी। दर भीलनी बण जाए भिखारी। जोत सरूपी जोत हरि, निमाणयां निताणयां आपे पावे सारी। सतिजुग गया त्रेता भया। त्रेता गया जन्म द्वापर मात विच ल्या। द्वापर गया कलिजुग कर्म कांड झूठा आंड बाहरों झूठा भाण्ड आत्म रांड विच मात दे रिहा। झूठा जग ऐड़ा आया। ऐड़ा अथर्बण वेद लिखाया। वेद अथर्बण ऐड़ा अल्ला हू नूर उपाया। अल्ला हू अकबर नाअरा लाया। अल्ला बिसमिल्ल्रा बिस्म होए विच समाया। ऐड़ा अलाही जगत माही अहिमद मुहम्मद आप उपाया। अहिमद मुहम्मद मुहम्मद अहिमद एका रंग आप चढ़ाया। प्रभ अबिनाशी खेल कर, ऐड़ा अथर्बण वेद अल्ला अल्ल्राहू नूर उपाया। अल्ला अलाहू नूर उपा। कलिजुग अचरज खेल रचा। ईसा मूसा मुहंमद प्रभ साचा लए उपा। कलिजुग झूठी रचना लई रचा। झूठे मार्ग पीर फ़कीर आपे देवे प्रभ लगा। हज़रत ईसा मूसा ना कोई वेखे आपणे खेल आप रिहा करा। आरूस मारूस शाह अबनूश सर्ब सभ पवाए झूठे राह। एका शेख शाद शमस तबरेज़ इजराईल मकाईल ज़बराईल आपे

लए भुला ऐली शाह शाह सुल्ताना। आत्म देवे आप अभिमाना। पीर दस्तगीर राह भुलाना। वड वड शाहो शाह फ़कीरां प्रभ झूठे मार्ग लाना। फड़ फड़ फड़ देण सजाई, हकीरां पढ़ पढ़ संनदां आइत कुरानां। कलिजुग अन्तिम अन्त वेख झूठा भेख, ना कोई जाणे वेद पुराना। आप लिखाई उलटी रेख, झूठा जग प्रभ आप भुलाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि जोत प्रगटाई वज्जी वधाई निहकलंक वड बली बलवाना। दस्म गुर आए अवतार। एका शब्द गए उचार। सृष्ट सबाई एका धार। कलिजुग जियां ना करी विचार। अन्तिम अन्त आपणा मूल गए हार। प्रभ अबिनाशी पूर्ब कर्म विचार। जोत सरूपी जोत हरि, मातलोक आया जामा धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर पुरी घनक ल्या अवतार। निहकलंक कलि जामा पाया। आपे पाए जगत माया। कलिजुग जीआं दिस ना आया। झूठी काया जगत तजाया। जोत सरूपी गुरसिख समाया। दुःख भुक्ख तों बाहर रखाया। पूरन सिँघ आप तराया। पाल सिँघ सुत वड्आया। आत्म सुख प्रभ सद वसाया। उज्जल मुख विच जगत कराया। मात कुक्ख सुफल कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत धर, गुरमुख साचे विच समाया। गुरमुख साचे विच समाए। एका आपणा विच टिकाए। बेमुखां प्रभ आप भुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई उलटे मार्ग आप लगाए। झूठे मार्ग आप लगाए। बेमुखां ठूठे हत्थ फड़ाए। जूठे झूठे दर दुरकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मदिरा मास विष्टा मुख रखाए। मदिरा मास जीव हलकाया। स्वास स्वास स्वास प्रभ साचा मनों भुलाया। आपणा रास सति स्वास आत्म वास सर्ब गंवाया। पापी धरवास हड मास रसना चोग चुगाया। अन्तकाल करे प्रभ साचा नास, घोगढ़ जूनी दे लिखाया। निहकलंक लिख्त लिखाए। लिखी लिख्त ना कोए मिटाए। मदिरा मासी भृष्ट कराए। साचा इष्ट गए भुलाए। आत्म होई भृष्ट मदिरा मास मुख रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि प्रगट जोत, बेमुखां जन्म फेर दवाए। मदिरा मास रसना खाणा। प्रभ अबिनाशी जीव भुलाणा। घोगढ़ जून प्रभ साचे पाणा। विष्टा चोंच सद रखाणा। आत्म अन्तिम सद हलकाणा। जोत सरूपी जोत हरि आपे वरते आपणा भाणा। बेमुखां कलि ख्वार कर। दर दुरकार देवे हरि। घर घर फिरन नारी नर। मुख चोंच सद सद विष्टा भर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लिख्त भविख्त रिहा कर। कलिजुग औध गई बीत। कलिजुग माया गई जीत। कलिजुग जीआं प्रभ साचे परखी नीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात लोक प्रगटाई इक्क चलाई साची रीत। साची रीत जगत चलाए। एका प्रीत चरन रखाए। साचा मीत आप अख्वाए। मानस जन्म जीव जाए जग जीत, निहकलंक तेरी सरनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मार्ग सृष्ट सबाई आप लगाए। एका नाउँ जगत धरया। सोहँ साचा आसा वरया।

राउ रंक एका करया। एका अंक एका डंक प्रभ साचे फड़या। गुरमुख साचे आप उधारे जिउँ भगत जनक, आत्म रास स्वासां धरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा प्रगट जोत निहकलंक पहली माघ विच मात दे धरया। मातलोक जन्म दवाया। सतिजुग साचा पहली माघ प्रभ साचे आप उपजाया। सोहँ साचा शब्द राग, प्रभ साचे झोली पाया। आप पकड़ी निहकलंक हत्थ बाग, सृष्ट सबाई आप चलाया। गुरमुख साचे गए जाग, बेमुखां गूढ़ी नींद सवाया। एका जोत अग्न लगाई आग, दिवस रैण चैन ना पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ प्रगट जोत अमृत मेघ आपे आप वरताया। सतिजुग साचे जन्म दवा के। पहली माघ मात टिका के। नाम दान सच झोली पा के। गुण निधान वड दया कमा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मार्ग जाए जगत लगा के। साचा मार्ग जगत लगाया। सतिजुग साचे जन्म दवाया। भरम भुलेखा सर्ब चुकाया। कलिजुग लेखा आप दवाया। सन्त मनी सिँघ लाई मेखा साची रेखा निहकलंक पूर कराया। जोत सरूपी पहरया भेखा, ना कोई देखे देख दिखाया। सृष्ट सबाई रही भरम भुलेखा, जोत सरूपी प्रभ जामा पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी गुरमुख साचे विच समाया। निहकलंक आप अखवाए। जोत सरूपी विच मात प्रभ आए। गुरमुख साचे विच समाए। जगत लेख रिहा लिखाए। वेखा वेख कोई भुल ना जाए। साचा भेख प्रभ दे बणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एक चलाए साची नाए। साचा भेव जगत खलाउणा। आत्म सुत्या सर्ब जगाउणा। गुरमुख साचे विच समाउणा। पवण सरूपी शब्द चलाउणा। जोत सरूपी दीप जगाउणा। गुरमुख विरले प्रभ दरस दिखाउणा। बेमुखां प्रभ दर दुरकाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि खेल रचाउणा। बेमुखां प्रभ दर दुरकाए। आपणा भेव आप छुपाए। भज्जे फिरन देण दुहाए। प्रभ अबिनाशी दिस ना आए। गुरमुख साचा रसना गाए। जोत सरूपी नज़री आए। विच अन्ध कूपी जोत धराए। बिन रंग रूपी दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे विच समाए। गुरमुख तेरा पूरन काम। सोहँ पीआ साचा जाम। आत्म लीआ साचा नाम। मिल्या पिया साचा शाम। निर्मल जिया पाया राम। साचा हिया महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप पूर कराए सगले काम। वेख वेख विचारे। वेख वेख पावे सारे। वेखे वेख गुरमुख प्यारे। वेख वेख देवे जोत आप निरँकारे। वेख वेख गुरमुख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए आपणे दुलारे। गुरमुख तेरा रूप अगम्म। गुरमुख तेरा सच धर्म। गुरमुख तेरा पूर कर्म। गुरमुख तेरा एका एक जरम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे आप मिटाए सर्ब भरम। भरम भुलेखे जीव डुल्ले। लाल अनमुल्लड़ा कलिजुग रुले। प्रभ अबिनाशी दर दरवाजा खुल्ले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

साचा घर साचा दर साचा वर पाओ, कलिजुग जीव ना रहणा भुल्ले। भुल्लयां रुल्लयां जगत डुल्लयां, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे मेल मिलाए, आपे शब्द चलाए, आपे बणत बणाए, आपे तोल तुलाए गुरमुख साचे कांटे, दर घर साचा आपे साचे मल्लयां। साचा तोल्लया, प्रभ साचा सद सद रसना बोल्लया। आत्म जिंदा प्रभ साचे खोल्ल्या। भण्डार भर वसा घर साचा दर साचा दान देवे इक्क अतोल्लया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप भुलाई कलि रुलाई किया खेल अमोल्लया। अमोल अमुल अतोल अतुल अडोल अडुल अभोल अभुल महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप आपणे कीने तुल। गुरमुख रंगे एका रंग। एका देवे साचा संग। आपे कट्टे भुक्ख नंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सहाई अंग संग। जगत पित सदा सरनाया। भगतन हित आप रखाया। मात पित बिन बालक उपजाया। आपे जाणे गति मितक, दे मति आपे समझाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आपणी सरन लगाया। सरन लगा जोत जगा। सोग मिटा रोग गवा। जोग रखा आत्म भोग लगा। दरस अमोघ प्रभ साचे आप दिखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर आत्म चिन्त सर्ब मिटा। चिन्ता नासे जोत प्रकासे। प्रभ अबिनाशे होए वासे। जन्म रहिरासे दासन दासे। साचा शब्द एका धुन एका एक मिल्या अकासे। निहकलंक जाणे तेरे कवण गुण जोत सरूपी जगत प्रकासे। जोत सरूपी जगत उजागर। आपे आप वड वड सागर। गुरमुख गुरसिखां करे कर्म उजागर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत जगाई गुरमुख साचे झूठी देह गागर। रैण सबाई मंगलाचार। मातलोक दरबार। सिँघासण बैठा साचा निहकलंक नरायण नर अवतार। जगत जोत जगाई, साचा किया जगत विहार। भगतन हेत जोत प्रगटाई, साचा कर्म धर्म जरम दिया सुधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त लिखाई जगत अपर अपार। साचा वक्त आप विचार। किरपा करी आप गिरधार। धरी जोत विच संसार। गुरमुख साचे आयण चल द्वार। रसना गायण मोख द्वार। आत्म चिन्त मिटायण, मिटे अन्ध अंध्यार। गुरमुख साचे सद सद बिल्लायण, प्रभ अमृत बरसे बूंद स्वांती आपणी किरपा धार। प्रभ दरस दिखाए प्रगट जोत तीजे नैण, गुरमुख साचे एका रक्ख चरन प्यार। गुरमुख साचे साचा लहणा प्रभ दर लैण, सोहँ रसन उचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत निरँजण जीव जन्तां पावे सार। सारंग धर आप भगवान। भगवान बीठला साचा मान। एका रंग जगत जोत महान। दर साचा मंग ना आवे हान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप जोत निरँजण गुरमुख साचे सच पछाण। सच पछाता देवे दाता। सच पछाता आत्म साची जोत जगाता। सच पछाता सोहँ शब्द गुरमुख साचे प्रभ देवे साचा नाता। सच पछाता देवे वड्याई महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, सगला साथा। साचा प्रभ सगला साथ। आपे रक्खे दे कर हाथ। लेख लिखावे साचे माथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई त्रैलोकी नाथ। नाथ त्रैलोकी जोत जगाए। सतारां भांदों दिवस सुहाए। दर दरबारी प्रभ आप तराए। सच द्वारी जन आए सीस झुकाए। वड घर बाहरी आपे आप अख्वाए। शब्द सरूपी मारे शब्द उडारी पिण्ड बुग्घे भाग लगाए। सिँघ प्रेम देवे नाम खुमारी प्रभ साचा दरस दिखाए। साची लिख्त बणया आप लिखारी, गुरमुख साचे वेखे प्रभ आपणा आप वखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दर दरबार अग्गे आपे आप हो जाए। साचा दिवस जगत मनाया। सतारां भादों लेख लिखाया। प्रभ अबिनाशी भेख वटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया। सतारां भाद्रों दीपक बाल। गुरमुख साचे तेरी पूरन घाल। आपे लए सार संभाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दीपक देवे बाल। सतारां भाद्रों सति कर जाण। साचा दर साचा घर प्रभ दर पछाण। माण ताण चुक्के काण, एका जाण विष्नूं भगवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जीआं दा जाणी जाण। आपे जाणे आपणे भाणे, गुरमुखां मेल मिलाए। भगत भगवान इक्क हो जाए। जगत निशान नाउँ रह जाए। गुण निधान जिस दया कमाए। जोत जगाए जिस महाने साध संगत मंगत प्रभ दे वधाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जेठूवाल प्रभ सिँघ प्रीतम दरस दिखाए। सिँघ प्रीतम दरस देख। प्रभ अबिनाशी नेत्र पेख। सच लिखावे तेरी रेख। पकड़ उठाए गुरसिख वेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात पताल अकाश एका जोत जगाई, आपणा आप रिहा छिपाई, जोत सरूपी किया भेख। सतारां भाद्रों वक्त सुहञ्जणा। जोत जगाए प्रभ निरँजणा। दुःख मिटाए सर्ब भय भंजना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन धूढ़ देवे गुरमुख नेत्र अंजणा। प्रसाद कराया साचे दर। भोग लगाए जाए हरि। साध संगत बैठी घर। निहकलंक देवे वर। एका जोत जगाए अपर। देख दिखावे नारी नर। एका लाट एका घाट दसावे दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत हरि। दर घर साचे जाए भोग लगाए, सरबजीत सदा अतीत। आत्म करे प्रभ साचा सीत। आपे वेखे परखे नीत। मानस जन्म जाए जग जीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बख्शे चरन प्रीत। चरन प्रीती साचा नाता। आपे देवे साची दाता। उत्तम करे कलिजुग ज़ाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बुज्झे आपे बाता। अजीत जीत सीत मीत मीत हरि। प्रीत प्रीत रीत रीत साची कर चीत चीत एका हरि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खुल्हाया साचा दर। सतिगुर मनी सिँघ तेरा माणा। सतिजुग बणाए सतिगुर आप भगवाना। चरन लगाए सभ राजा राणा। एका छत्र तेरे सीस झुलाणा। निहकलंक आपणा हत्थ तेरे सिर टिकाणा। एका जोत जोती जोत जगे महाना। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर दरबार तेरा विच मात उपजाण। सतिगुर मनी सिँघ सति कर जाण। सतिगुर मनी सिँघ आपे देवे माण ताण। सतिगुर मनी सिँघ इक्क रखाए आण। सतिगुर मनी सिँघ ऊँच नीच राउ रंक इक्क कराए रंक राजान। सोहँ साचा डंक एका अंक आप उठाए शब्द बाण। सतिगुर मनी सिँघ देवे वड्याई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप बली बलवान। सतिगुर मनी सिँघ सच घर आया। साचा घर जगत वसाया। साचा दर प्रभ खुल्हाया। साचा वर सोहँ झोली पाया। अवतार नर सिर आपणा हत्थ टिकाया। किरपा अपर अपार कर, आत्म भेव सर्ब चुकाया। एका जोत अकार कर, जोत सरूपी आत्म दीपक जोत जगाया। वड वड वड प्रताप कर, साच छत्र सीस झुलाया। आपणा आप विच आप धर, जोत सरूपी पवण समाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर मनी सिँघ साचा तिलक ललाट आपे आप लगाया। सर्ब अरदास सुणे गिरधारे। पूरन आस कराए वारो वारे। जो जन बैठे प्रभ दुआरे। आत्म विचार प्रभ विचारे। आपे पावे सर्ब सारे। दुःख रोग सर्ब निवारे। जो जन आए आत्म दुख्यारे। साचा देवे नाम शब्द अधारे। कर किरपा प्रभ साचा तारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आयण चल दुआरे। आत्म सुणे सर्ब पुकारा। आप वजाए साची तारा। आप कराए सच विहारा। आप दिसाए इक्क दर दरबारा। आपे करे सर्ब विचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन मंगण आए द्वार मुरारा। आत्म मंग जीव ना मंगे। प्रभ दर आए सद ही संगे। आत्म कंगाल नाम सभ नंगे। झूठा दान दर ते मंगे। छिन विच आए छिन विच भंगे। सदा सहाई ना कोई संगे। एका दरस दान जन मंगे। प्रभ साचा आत्म साची रंगे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सहाई अंगे संगे। झूठा तन दुःख वसेरा। इक्क ना लथ्था दूजा पावे घेरा। आवे जावे ना लावे देरा। जीव क्या कोई करे हेरा फेरा। तेरा मेरा आपे कर नबेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं आपे करे नबेड़ा। झूठी मांगो जगत दात। सच दर सच घर सच वर साचा नात। एका कर दरस जाए तर, मिले वर ना आवे डर, जाए भण्डारे भर, सोहँ देवे साची दात। एका जोत जगाए सदा सदा इकांत। भैण भ्राए पत्र धीआं। दुक्खां विच रखाई नीआं। लैण भर बीज जो बिया। कलिजुग जीव भुल आगे कुछ ना किया। कलिजुग जीव प्रभ दर मल्ल, आत्म जोत जगाए दिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका अन्त दवाए रखाए साढे तिन्न हत्थ तेरी सीआं। कर्म रोग सर्ब विजोग। जीव जन्त रहे भोग। प्रभ अबिनाशी ना कदे मरे ना होए सोग। जैसा करे तैसा भरे, आप चुगावे शब्द चोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले आप जगाए आत्म जोत। दुःख जाए सुख आए। कलिजुग जीव प्रभ भुलाए। लक्ख चुरासी विच्चों जिस मुख रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले

आत्म सुख उपजाए। आत्म सुख पावे सो, सोहँ नाम ध्यावे जो। प्रभ अबिनाशी गावो सो, जिस जन दया कमावे ओह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चो सच लिखावे, आपे वरते आपे वरतावे, थाउँ थांईं बहावे सदा सदा सद निर्मोह। भैण भाई कोई ना सहाए। दुःख दर्द ना कोई मिटाए। सारंगधर आप अख्वाए। सोहँ नाम करद तन आप लगाए। आप मिटाए काया दर्द, जो जन रसना गाए। कलि होवे सो ही मरद, जो चरनी सीस झुकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां दे सजाए। उधरे पार जो आए द्वार। पावे सार जो आए द्वार। ना होए ख्वार जो आए द्वार। ना विछड़े डार जो आए द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा जाए तार। किरपा करे दीन का दाता। आपे होए सर्ब ज्ञाता। वेख वखाए बहु बिध नाता। गुरमुख विरला आप पछाता। जिस देवे चरन प्रीत साचा नाता। सोहँ नाउँ वड करामाता। दरगाह साची देवे थाउँ, निहकलंक जिस जन पछाता। आपे पार कराए पकड़ बांहों, महाराज शेर सिँघ बन्दी तोड़ आप अख्वाता। आप कराए बन्द खलासी। किरपा करे घनकपुर वासी। जोत धरे सर्ब घट वासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पारब्रह्म पूरन परमेश्वर जोत निरँजण पुरख अबिनाशी। जीव विचार किछ कर। पूरन इछ करे हरि। मांग रच्छया ना फेर डर। सोहँ भिछ पावे निहकलंक अवतार हरि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप दिसावे साचा घर। घर घरोगी आत्म जोगी। आत्म रस जीव साचा भोगी। दिवस रैण सद रहे विजोगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द धुन उपजाए आत्म मिटाए चिन्त सोगी। चिन्ता सोग आप मिटाए। आत्म सोग कोई रहण ना पाए। पूरन योग गुरसिख कमाए। दोइंग ना कोई दिसाए। ओअँ इक्क आप हो जाए। सोहँ सो पुरख निरँजण इक्क हो जाए। रसना जप आत्म जीव धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए आप सहाए। मन नट उलटे चट पल्ले घट आत्म तले तट्ट, सोहँ शब्द देवे कट्ट, एका रक्खी विच घट, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साचा दरस दिखाए, प्रगट जोत झट्ट। आत्म होया जीव जंजाला। दिवस रैण रहे बेहाला। तन जोड़ रहे पाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप होए रखवाला। तन मन काया हड्ड। दुःख रोग प्रभ देवे कढ्ढ। आत्म अन्धेरी दिसे खड्ड। वेख विचार आपे कर नैण प्राण गए छड्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द उधार कर विच्चों नर्क लए कढ्ढ। काया रोग नर्क मंझार। दुखीआ जीव आत्म अंध्यार। भुल्लया सुख सर्ब संसार। दुक्खां होई एका धार। दिवस रैण रहे झक्ख मार। ना कोई करे शब्द विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मारे शब्द मार। एका रोग आत्म सोग। एका रोग चिन्त विजोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए आत्म सोग। सिर पाउँ एका आग। एका टुट्टा काया ताग। झूठा दिसे नाता जग।

ना सुहाए सिर धरी पग्ग। एका लग्गी रहे आत्म अग्ग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर आप लगाए आपणे पग्ग। आत्म रोग खिटा पीड़। बन्दी जाए बदी खीड़। मास खाया घिरना घीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुःख दर्द मिटाए शब्द सरूपी देवे पीड़। पीड़ पिड़ाए दुखियां दुख। आप उतारे सारी भुक्ख। हरया होए सुक्कया रुक्ख। सुफल होए फेर कुक्ख। लेख लिखाए मेट मिटाए लग्गा दुख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप आपणी दया कमाए, सच उपजाए सच्चा सुख। आत्म सुख आपे देवे। साचा सुख जो जन लेवे। सोहँ नाउँ रसना सेवे। होए सहाए प्रभ अबिनाशी अलख अभेवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे इस हत्थ देवे इस हत्थ लेवे। इस हत्थ देवे शब्द अधारा। उस हत्थ देवे मदिरा मास अहारा। साचा देवे शब्द अधारा। रोग दुःख तन निवारा। पवण जोत इक्क हुलारा। आप गंवाए खुआया पारा। हड्ड हड्ड आप छुडाए दुःख लग्गा भारा। कढ्ढ कढ्ढ प्रभ आप दिखाए सोहँ जन रसन उचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर निहकलंक नरायण नर अवतारा। सोहँ साची बीन आप तड़फाए। रसूल गुलाम दीन मुहम्मद प्रभ साचा शब्द अग्न जलाए। तड़फन जिउँ जल मीन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भूत प्रेत देव परी मवकल दर दहलीजो पार कराए। नाम निरबाण आप लगाए। सोहँ बाण शब्द चलाए। गुणवन्त गुण निधान दया कमाए। सोहँ बाण आप चलाए। मसाण पवण घर रहण ना पाए। जम का डर नेड़ ना आए। कालका मात दे दुहाए। सोहँ खण्डा प्रभ सीस लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दरवाजिउँ बाहर कढाए। दर दुआरा जाण छड्ड। जीआं जन्तां सुखाले हड्ड। शब्द सरूपी प्रभ साचा देवे कढ्ढ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाए आपे जायण छड्ड। सोहँ शब्द तेरी धुन्कारा। भूत प्रेत पशू चक्र सुण करन पुकारा। मरू देवा ना पावे सारा। काल बाल मिटावे कर ख्वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी शब्द अधारा। इन्द्र जाल पाई माया। किया बेहाल छत्र छाया। प्रभ होया दयाल कर्म कमाया। भगत रच्छक वछल आप कृपाल चार द्वार सर्ब घर बाहर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा नाम ध्याया। दर आए हरि पाया। जिस साचा घर वसाया। जिस आत्म डर चुकाया। अमृत आत्म सिंच साचा दर खुल्हाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म बन्नृ वखाया। आत्म बन्नृे धीर धराए। अमृत साचा सीर मुख चुआए। नीरो नीर नीर आप टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साची अकसीर आप बणाए। सोहँ नाम रसना पी। निर्मल कराओ आपणा जीअ। साचा बीज गुरमुख बीज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर आप रखाई धीरज धीर। आपे देवे धीरन धीरा। आप छुडाए मारे कीड़ा। आत्म बद्धी कढ्ढी पीड़ा। साची बिधी सोहँ लाए तीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आप पिलाए बन्नृ

वखाए वैहन्दे वहण नीरा। नैण मुँधारी नेत्र खोल्ह। ना दीसे वसे कोल। माया किया अन्ध विरोल। कलिजुग जीआ होया अनभोल। आपणा आप गंवाया मूल। प्रभ अबिनाशी गया भूल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दूल्हो दूल। आत्म वेख नेत्र पेख। प्रभ भेख रंग वसेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लगाए आत्म मेख। आत्म मेख आप लगाए। जिस जन प्रभ साचा दया कमाए। तीजे लोयण रहे रुशनाए। हरन फरन प्रभ आप खोल्ह वखाए। हरन फरन फरन हरन तीन भवन दी बूझ बुझाए। अवण गवण कोई दीसे नाही, अमृत मेघ बरसे सवण आत्म रहे तृप्ताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी देवे स्वास पवण एका राह बताए। एका राह जगत न्यारा। जोत सरूपी दिसे गिरधारा। ना कोई दीसे महल मुनारा। बिन बाती बिन तेल दीपक जोत उज्जयारा। अचरज पारब्रह्म दा खेल, कलिजुग जीव ना भुल गंवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दरस दान दर मंग देवे आप गिरधारा। दरस दान प्रभ दर मंगो। आत्म नाम साचा रंगो। कर बेनन्ती मूल ना संगो। आत्म ध्यान साची गंगो। सुणया नाम रोग गंवाओ अंगो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सहाई अंग संगो। अंग संग होए सहाई आत्म देवे जोत रुशनाई। लोचन तीजा दे खुल्हाई। बहण सोयण जीव भुल जाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पवन आहार इक्क रघुराई। सच परीख्या सच सिखाई। सच दी भीख्या देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन दर दुआरे आए नेत्र पेख्या। साचा प्रभ देवे भण्डारा। अमृत देवे साची धारा। सर्ब मुख चुआए पावे सारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे नाम अधारा। दु:ख रोग आप तजाओ। मार्ग सिद्ध सच घर आत्म नाउँ, सोहँ साचा रसना गाओ। प्रभ मिलण दी साची बिध, स्वास स्वास प्रभ साचा ध्याओ। आपे देवे आत्म विध, आप बहाए थाउँ थाउँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे अगम्म अथाहो। अगम्म अथाह वड बेपरवाह। आप दिखाए साच राह। फड़ फड़ चलाए बांह। भुल्लणा गुरसिख ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पति रखाए दूसर कोई ना। तन बिमारी सद ख्वारी। आवे जावे वारो वारी। दिवस रैण रहे मति मारी। आत्म चिन्ता लग्गी भारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा आपे करे आपणी कारी। दु:ख रोग आप मिटाए। साचा प्रभ दया कमाए। जीव जन्त इक्क रंग समाए। बणाई बणत वेख वखाए। नाम जपत मन का मणका फेर वखाए। आपे मिल्या साचा कन्त, सोग रोग दर्द दु:ख आप मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म साचा सुख उपजाए। धन माल सच खजीना। आपे देवे प्रभ नाम प्रबीना। आपे होए दाना बीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिस उधारे जिस जन रसना चीना। रसना गावणा दु:ख मिटावणा। सुख उपजावणा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन ध्यान रखावणा।

जोत सरूपी भुल ना जावणा। साचा दान मंग ना फिर पछतावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई अंग संग, आप वसाए साचा घर चाढ़े साचा रंग, गुरसिख भुल ना जावणा।

* ४ कत्तक २००६ बिक्रमी बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल *

राम दास तेरा साचा घर। सर अमृत दर दर घर घर आवे डर। घर घर दर दर फिरन नारी नर। पसू प्रेत होए मानस जन्म गए हर। अन्तिम अन्तकाल आ गया, आपणा किया लैण भर । प्रभ जोत सरूपी जोत प्रगटा ल्या, बेमुखां बन्द कराए आत्म दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एक जोत जगाई अवतार नर। अवतार नर जोत जगाए। अचरज खेल आप रचाए। गुरमुखां आप रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत धर बेमुखां दे सजाए। सर अमृत तेरा साचा सीर। बेमुखा करे दर ख्वार। दर दुरकावे मदिरा मास जो जन रसना करन आहार। कलिजुग जीव होए दुष्ट दुराचार। आत्म होई अन्ध अन्धेर झूठी काया सर्ब संसार। साचे घर साचे दर धीआ भैणां करन वपार। प्रगट जोत कलंकनिह करे सर्ब ख्वार। आपे धरे शब्द कटारी। आपे करे दर भिखारी। उठ उठ भज्जण वारो वारी। एका दिसे पासा हारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर घर पाए हाहाकारी। हाहाकार आप कराए। दर दरबारी आप अख्वाए। सोहँ शब्द साचा धर गुरमुखां आप जगाए। आप होए असुर सँघार, सोहँ खण्डा हत्थ उठाए। आपणा किया लैण भर, प्रभ अबिनाशी गए भुलाए। दर दर घर घर आवे डर, कलिजुग जीव फिरन जिउँ सुंञे घर कांए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप दरगाह साची ना देवे थाएँ। साची दरगाह धुर दरगाह। एक बैठा बेपरवाह। दूसर कोई दीसे ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई जोत सरूप वड दाता अगम्म अथाह। आपे होए जगत बिलोए। आपे होए जगत रसोए। आपे होए एका दूआ दूआ एका ना जाणे कोए। आपे होए गुरमुखां मैल पापां धोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पकड़ उठाए सोए। गुरसिख उठाया सोहँ आत्म लाई जाग। गुरसिख उठाया आत्म तृखा बुझाई आग। गुरसिख उठाया दरस दिखाया चरन लगाया सोहँ सुणाया साचा राग। गुरसिख उठाया अमृत साचा जाम प्लाया आत्म धोया झूठा दाग़। गुरसिख उठाया भरम चुकाया जन्म दवाया मात बणाया हँस काग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन चरनीं गए लाग। चरन लगाए किरपा कर। दरस दिखाए जोत धर। तरस कमाए आपे हरि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आपे आए तेरे दर। दर द्वार बैठा मल। धरे जोत ना लावे पल। प्रभ अबिनाशी ना वेखे अज्ज कल। प्रभ का भाणा

सदा सदा अटल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सदा सदा बलि बलि। सदा सदा बलिहार। प्रभ साचा सच वरतार। गुरमुख साचे जाए तार। रुढ़दा बेड़ा लावे पार। ना डुब्बे विच मञ्झधार। भुगत जुगत मुक्त जुगत आपे देवे शब्द अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पावे सर्ब सार। पावे सार करे विहारा। देवे शब्द अधारा साची धुन्कारा। खुल्ले सुन्न चल्ले सच फुहारा। गुरमुख विरले चुण देवे दरस प्रभ गिरधारा। प्रभ अबिनाशी साचे गुण, जीव जन्त ना किसे विचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल पारब्रह्म करे आप करतारा। अचरज खेल किया करतार। क्या कोई करे जगत विचार। एका शब्द साची धार। सृष्ट सबाई करे दो फाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्न जोत जोत अग्न विच देवे साड़। वड भण्डारी सतिगुर एक। वड संसारी सतिगुर एक। वड सिक्दारी सतिगुर एक। एका जोत जोत निरँकारी सतिगुर एक। एका सृष्ट उधारी सतिगुर एक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन रखाए सोहँ साची एका टेक। चार वरन एका टेक। चार वरन करे बुध बिबेक। कलिजुग माया आप मिटाए गुरमुखां तन ना लागे सेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा बिरद समाले आपे आप एक। गुरसिख तेरी रक्खी लाज। आप संवारे तेरे काज। सोहँ देवे प्रभ आत्म साचा दाज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरा साजन साज। साजन साज गरीब निवाजा। आत्म धुन लगाए सोहँ अवाजा। गुरसिख जगाए बेमुखां खोल्ले पाजा। सोहँ शब्द चार कुन्ट जै जै जैकार कराए आपे होए वड राजन राजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप संवारे आपणे काजा। अमृत पीआ निर्मल जिया। आत्म जोत जगाया दिया। प्रभ साचे किया साचा हिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर लाज रखाए गुरसिख जिया। अमृत सर साचा कर्म कमाया। भरम चुकाया धर्म रखाया, मानस जन्म सुफल कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म सिंच तन मन हरा कराया। अमृत बरखे किरपा धार। आपे जाए पैज संवार। दुःख रोग सर्ब निवार। साचा शब्द दे अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी सार। अमृत देवे आत्म रस। पी अमृत दुःख जायण नस्स। चरन प्रीती उपजे रस। सोहँ शब्द प्रभ साचा जाए दस्स। रसना जप प्रभ साचा होए वस। अमृत नाम गुरसिख दर महां रस। कलिजुग अन्धेरी रात बेमुखां आत्म जिउँ चन्द मस्स। आत्म अन्धेर ना दीसे सञ्झ सवेर। शब्द सरूपी रक्खे घेर। कलिजुग जीव भुलाए कर कर हेर फेर। गुरमुख साचे आप तराए ना लाए देर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मुकाए मेर तेर। तेरा मेरा जीव क्या जाणे। आपणा आप ना मूल पछाणे। प्रभ अबिनाशी ना जीव जाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप चलाए आपणे भाणे। साचा भाणा वक्त विहाणा। जोत

सरूपी पहरया बाणा। ना कोई जाणे राजा राणा। साध सन्त ना किसे पछाणा। आदि अन्त एका रंग समाणा। गुरमुख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे आत्म दर साचे घर, जोत सरूपी किया इक्क टिकाणा। आत्म दर आप खुल्हाया। साचा हरि हरिमन्दिर आया। तन मन्दिर सच वसाया। आप तुड़ाया साचा जंदर, सोहँ चाबी आप लगाया। कलिजुग जीव फिराए दर दर जिउँ बन्दर, प्रभ अबिनाशी नज़र ना आया। गुरमुख साचे बांहो पकड़ उठाए कलिजुग अन्धेरी रात कंदर, जोत सरूपी दीपक आप जगाया। प्रभ का खेल सदा छिन भंगर, आवे जावे जगत रहावे भगत तरावे आप आपणे रंग समावे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा पाया। गुर गोबिन्द एका कारा। गुर गोबिन्द इक्क विहारा। गुर गोबिन्द भगत उधारा। गुर गोबिन्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप कर वरतारा। गुर गोबिन्द एका रीत। गुर गोबिन्द साचा मीत। गुर गोबिन्द पतित पुनीत। गुर गोबिन्द कर दरस गुरसिख साचे मानस जन्म जाए जग जीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां परखे आपे नीत। गुरसिखां आप पछाण दा। हरि वाली दो जहान दा। देवे वड्याई होए सहाई, पति लाज रखाई, जिस साचा नाउँ वखाण दा। गुरसिखां घर वधाई, घर घर दर दर पए दुहाई, रंग गुरसिख साचा माणदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप अनूप रंग सच्चे भगवान दा। साचा रंग जोत महाना। गुरमुखां कट्ट भुक्ख नंग सच तख्त बहाणा। आत्म चाढ़ मजीठी रंग, जोत सरूपी मेल मिलाणा। हउमे ममता आत्म ढाह कंध, सोहँ शब्द प्रभ आप चलाणा। रसना गाए जो जन विच बत्ती दन्द, माता सीर प्रभ आप बख्शाणा। मदिरा मास जो जन रसना लायण गन्द, लाड़ी मौत प्रभ बन्न्हाया हत्थ गाना। आपे करे कलिजुग नास, सोहँ खण्डा प्रभ आप उठाणा। गुरसिखां चरन दास कर, जोत सरूपी विच चरन बहाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव ना भुल निधाना। कलिजुग जीव मूल ना भुल्ल, अमुल्लड़ा लाल मूल ना रुल, एका अतुल्ल अभुल्ल आप अडुल्ल महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। गुरसिखां प्रभ माण दवाए। गुरसिखां प्रभ आण तराए। गुरसिखां प्रभ तृखा मिटाए। गुरसिखां प्रभ अन्तिम दिशा खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत जगाए। गुरसिखां प्रभ आप जगाया। गुरसिखां प्रभ आप उठाया। गुरसिखां प्रभ गुर संगत बणाया। गुरसिखां प्रभ अंग अंग संग संग आप समाया। गुरसिखां आत्म नाम रंग इक्क चढ़ाया। बेमुखां प्रभ नंग कराया। मानस जन्म भंग कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे दे गुरसिखां वड्आया। गुरसिखां प्रभ तारनहारा। गुरसिखां देवे शब्द अधारा। गुरसिखां करे जोत अकारा। गुरसिखां विच प्रभ सद पसारा। गुरसिखां एका एक अकारा। गुरसिखां देवे जोत सरूपी पवण शब्द हुलारा। गुरसिखां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप सद खड़ा

रहे आत्म दर दुआरा। आत्म दर सच दरवाजा। आप खुल्हावे गरीब निवाजा। गुरमुख साचे जिस तेरा साजन साजा। एका धुन उपजाए, सोहँ वजाए साचा वाजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात आप संवारे गुरसिख काजा। गुरसिख तेरा आत्म ध्यान। पूरन ब्रह्म प्रभ करे पछाण। जीव जन्तां प्रभ जाणी जाण । साधन सन्तां इक्क रंग समाण। आदिन अन्त जोत महान। गुरसिखां मिल्या प्रभ साचा कन्ता, देवे जोत कोटन भान। आप बणाए गुरमुख तेरी बणता, चरन धूढ़ देवे साचा इशनान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा सोहँ देवे दान। गुरसिख तेरी गति मितक जाणे। गुरमुख साचे आप पछाणे। आपणे रंग सद समाणे। जीव जन्त ना कोई जाणे। मात जोत धरे भगवाने। इक्क कराए गोत चार वरन चरन बहाणे। बेमुखां आत्म दुरमति मैल धोए, आपणे रंग सद समाणे। आप खुल्हाए सोए सोत, एका जोत जगे महाने। गुरमुख साचे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण खड़ा रहे सद सरहाए। गुरसिख गुरसिख दा राखा। आपे देवे आपे लेवे आपे बणे साचा साखा। सोहँ देवे साचा नाम प्रभ साचा अलखणा अलाखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कक्खों लक्ख लक्खों काखा। लक्ख कक्ख आप कराए सृष्ट भक्ख, गुरसिख कीने वक्ख वेले अन्त लैणे रक्ख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए साचा सक्ख। वेला अन्त आए जग। अग्न जोत जाए लग्ग। बेमुख पकड़ पछाड़े शाह रग। इक्क दिसावे जगत चलाए साचा मग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड सूरा सरबग। वड सूरबीर आपे बणया। सृष्ट सबाई ताणा तणया। जीव जन्त प्रभ आपे जणया। साध सन्त मात पित आपे बणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कराए साध सन्त तराए जो जन सरनाई आए आप आपणा आपे बणया। सरन आए लाए मस्तक चरन धूढ़। आप बणाए चतुर मूर्ख मुग्ध मूढ़। सोहँ साचा नाम चढ़ाए आत्म रंग गूढ़। वेले अन्त होए सहाए धर्म राए कटाए आपे जूड़। बेमुख जीव सर्ब खपाए, सोहँ पीड़े वेले बूड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां देवे गुरमुख लेवे चरन धूढ़। चरन धूढ़ मस्तक लाए। आत्म जूड़ प्रभ कटाए। साचा नूर दे उपजाए। आत्म भरपूर आप कराए। सद सदा हाज़रा हज़ूर, जोत सरूपी दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे विच समाए। हाज़रा हज़ूर आपे होए। एका दीसे भेव मिटाए दोए। सृष्ट सबाई अन्तकाल पीसे, गुरमुख जगाए सोए। गुरमुख साचा विरला दीसे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ बीज साचा बोए। सोहँ बीज आप बिजाए। गुरमुख रीझ आप कराए। तन मन सीज अमृत झिरना दे झिराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा विच टिकाए। सोहँ बीज आप बिजा के। आप आपणा विच समा के। पवण सरूपी स्वास चला के। स्वास स्वास नाम जपा के। रास रास मानस जन्म रास

करा के। नास नास नास मदिरा मासी नास करा के। ओअँ सोहँ गुरसिखां साचा जाप जपा के। अकाश अकाश गुरसिख साचा दीप टिका के। भरवास भरवास जीव आत्म अन्धेरी रात, आपणा आप प्रभ जाए जणा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तारे आप आपणी सरन लगा के। सरन लगाए मरन डरन चुकाए हरन फरन खुल्हाए। गुरमुख साचे ना दर दर फिराए। आत्म भण्डारे भरे प्रभ तृखा मिटाए। आप खुल्हाए साचा सर, कँवल नाभ उलटाए। झिरना झिरे अपार अपर, अमृत बूंद मुख चुआए। आप खुल्हाए साचा दर, जोत सरूपी विच समाए। गुरसिख वेखे आपणा घर, प्रभ साचा बैठा डेरा लाए। आपे लेवे साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए। आत्म दर आप खुल्हाया। साचा घर आप वसाया। अवतार नर दया कमाया। कलिजुग माया हर, प्रभ भरम चुकाया। कर दरस जाए तर, जो जन सरनाई आया। लक्ख चुरासी ना आवे डर, जन्म मरन प्रभ गेड़ चुकाया। हरि के पौड़े गया चढ़, जोत सरूपी जोत समाया। निहकलंक जिस तेरा फड़या लड़, कलिजुग अन्तिम पार कराया। कलिजुग जीव जायण झड़, पत्तझड़ प्रभ कराया। झूठे वहण जायण हढ़, आपणा बेड़ा आप रुढ़ाया। अन्तिम होए भाग मड़, प्रभ अबिनाशी मनों भुलाया। आप उखाड़ी आपणी जड़, विषे विकारां वक्त विहाया। गुरसिखां प्रभ अग्गे फड़या, बांहो पकड़ सचखण्ड निवास रखाया। सच गुरसिख साचा ल्या वर, ना मरे ना जाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे कराए जो आपणे मन भाया। सच धाम गुरसिख बहाए। थिर घर निवास रखाए। घनकपुर वासी अचरज खेल विच मात कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे सद समाए। भाणा वरतावणा भरम चुकावणा। सच लिखावणा कलिजुग मिटावणा। सतिजुग लगावणा सोहँ शब्द जपावणा। चार कुन्ट जै जै जैकार करावणा। वरन चार आपणी सरन लगावणा। वरन बरन सर्ब मेट मिटावणा। एक सरन निहकलंक रखावणा। एका अंक सोहँ शब्द चलावणा। सोहँ साचा डंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप वजावणा। सोहँ वज्जे सच नगारा। गुरमुखां उपजे धुन दिवस रैण रहे धुन्कारा। आप रखाए सिर सोहँ आर। आपे चीरे चीर चिराए, सृष्ट सबाई करे दो फाड़ा। सृष्ट सबाई आप खपाई आप विहाई मौत बणाई लाड़ी लाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख पार उतारे पाप पहाड़ां। प्रभ साचा गरीब निवाज़या। सृष्ट सबाई जिस साजन साज्जया। जोत सरूपी वड राजन राज्जया। साची जोत मात धर सचखण्ड बणाया साचा घर, जोत सरूपी प्रभ बराज्जया। गुरमुख साचे चरन लाग, प्रभ रखावे तेरी लाज्जया। आत्म धोए जूठ झूठ दाग़, सोहँ शब्द वजाए अनहद वाज्जया। आप सुणाए साचा राग, गुरमुख सोया जागया। प्रभ अबिनाशी चरनी लाग, भरम भाओ झूठा भागया। कलिजुग माया डस्सणी नाग, सतिजुग लाया प्रभ पहली माघया। आत्म

तृखा बुझाए आग, गुरसिख हँस बणाए कागया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख चले विच तेरी आज्ञा। गुरसिखां दिसे साची धारा। हिरदे वसे आप मुरारा। जगाए जोत कोट रवि सस्से, आत्म मिटे अन्ध अन्धयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख्शे चरन प्यारा। साची रीत जगत चलाए। चरन प्रीती आप लिखाए। आत्म अतीत गुरसिख कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग पिछली भुल बख्शाए। साचा लेख आप लिखावणा। वेख वेख गुरसिख जगावणा। झूठा भेख सर्ब मिटावणा। साची लिख रेख मस्तक दीपक जोत जगावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सच दस्से, साचा मार्ग जगत चलावणा। साचा मार्ग जगत धराए। सारंगधर आप अख्वाए। नारी नर इक्क राह चलाए। आत्म कारी कर दूई दुवैत सर्ब मिटाए। जिस घर आवे डर, भैण भ्रा ना कोई सहाए। एका एक प्रभ देवे कर, भुल भुल रहे वक्त विहाए। जोत प्रगटाई अवतार नर, वेला गया हत्थ ना आए। कर दरस गुरमुख साचे जायण तर, सुक्के डाल्ह प्रभ फल लगाए। गुरमुखां देवे प्रभ साचा वर, सोहँ झोली पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा वेखी वेखा आत्म लेखा आप चुकाए। आत्म लेखा आपे करे। बैठा अडोल सदा नर हरे। ना जन्मे ना उह मरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जुगो जुग विच मात दे धरे। महाराज शेर सिँघ जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ जीव जन्त तराई। महाराज शेर सिँघ साध सन्त रिहा समाई। महाराज शेर सिँघ आदि अन्त एका रंग रहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ धराई। नाउँ धराया महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। कर्म कमाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। जन्म दवाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। सरन लगाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। भरम चुकाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। धर्म रखाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपे करे सर्ब पछाण। महाराज शेर सिँघ तेरी वड्याई। महाराज शेर सिँघ जोत रघुराई। महाराज शेर सिँघ आपणी कल कलि प्रगटाई। महाराज शेर सिँघ सच घर वज्जी वधाई। महाराज शेर सिँघ सुणे गुणे ना वेखे लुकाई। महाराज शेर सिँघ गुरमुख विरले चुणे पुणे आपणी सरन रखाई। महाराज शेर सिँघ सोहँ शब्द उपजाए धुंने, सुरत शब्द मेल मिलाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आदिन अन्ता जीव जन्ता सर्ब पुकार सुणे आपणा आप रिहा छुपाई। जीव जन्तां सुणे पुकारा। आदिन अन्ता सच दातारा। साधन सन्तां सच विहारा। सोहँ देवे नाम अधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे भरे सर्ब भण्डारा। आप भण्डारा देवे भर। आप खुल्हावे साचा दर। साचा दर प्रभ अबिनाशी जिस वसे घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी अवतार नर। नर अवतार जामा धार। पसर पसार जगत विचार। कर ख्वार चार

दिवार सच विहार ना कोई पाए सार। डुब्बदे पत्थर देवे तार। गुरसिख मन बसन्त बहार। खिड़या फुल्ल सोहँ कचनार। ना जाए रुल हत्थ फड़या करतार। बेमुख जीव गए भुल्ल, फुल्ल ना लग्गा आत्म डार। विच मात कलि गए रुल, अन्तिम अन्त सर्ब ख्वार। प्रभ अबिनाशी गए भुल्ल, दर दर घर घर रहे झक्ख मार। आत्म दीपक होया गुल्ल, आत्म होई अन्ध अंध्यार। अमृत आत्म गया डुल्ल, तड़फे जीव ना मिले अधार। प्रभ अबिनाशी चरन आए जीव जो भुल्ल, प्रभ साचा देवे तार। सदा अडुल्ल अभुल्ल आपे आप करतार। सतिजुग दर साचा गया खुल्ल, गुरमुख साचे प्रभ साचे दे भरे भण्डार। प्रभ अबिनाशी वड अमुल्ल, गुरसिख तेरी रसना करे वणज वपार। तेवड जेवड कोई ना तेरे तुल, सोहँ रसना उचार। कलिजुग जीव जायण रुल, शब्द सरूपी मारे मार। आत्म चिखा बणाई चुल्ह, जोत सरूपी अग्न प्रभ देवे डार। गुरमुख साचे विच मात कँवल फुल्ल, सोहँ धागे आप परोए करतार। आपणे कंठ लगाया पाया हार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करी अवतार नर हरी आए चरन गुरसिख द्वार। चरन दुआरा गुरसिख घर बाहरा। गुर चरन प्यारा गुरसिख उधरे पारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा सर्ब निवारा। गुरमुख आत्म कलि विचार। सोहँ देवे प्रभ साची धार। बजर कपाटी होए पार। विच आन बाटी रसन उचार। ना आवे घाटी, साचा वणज वपार। हेटक चेटक नाटक नाटी, कर कर वेखे प्रभ खेल अपार। झूठी देही पुतला माटी, जीव झूठा करे माण हँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण सद रसना राटी मातलोक ना आए हार। मातलोक ना आए हारा। साचा दीसे गुर दरबारा। जोत सरूपी वसे गिरधारा। रंग अनूप रूप ना कोई पावे सारा। प्रभ साचा वड वड भूप, तीन लोक वडा सिक्दारा। जोती जोत सरूप, जोती जोत करे अकारा। ना दीसे रंग रूप, लक्ख चुरासी विच पसारा। जोत जगाए विच देह अन्ध कूप, जो जन करे निमस्कारा। सोहँ बत्ती लगाया साचा धूप, सच समग्री सति ख्वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरला जाणे तेरा सच दुआरा। सच द्वार जिस जाणयां। प्रभ अबिनाशी जिस सच पछाणयां। सर्ब घट वासी हर रंग समाणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरला जाणे तेरे भाणयां। साचा जाणे प्रभ का भाणा। आपणा किया आप पछाणा। राउ रंक सद इक्क समाणा। ना कोई दीसे राजा राणा। एका छत्र झुल्ले सीसे, निहकलंक बली बलवाना। सृष्ट सबाई झूठी दीसे, साची जोत जगत महाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप वरताए आपणा भाणा। भाणा वरते कलिजुग आण। आप चुकाए झूठी कान। आप गंवाए सर्ब माण। बेमुखां आए अन्तिम हाण। मदिरा मास जो जन खाण। आत्म होई सुंञ मसाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ मारे साचा बाण। सोहँ बाण साचा तीरा। बेमुख डुल्हाए कँवल नीरा। गुरसिख कढाए आत्म

पीड़ा। आत्म तृखा मिटाए, मेल मिलाए गुणी गहीरा। गुरसिख साची सिख्या आप दवाए, साचा शब्द लिखाए अखीरा। साचा देवे नाम भीख्या, आत्म देवे आपे धीरा। पाया वर धुर दरगाहों लिख्या, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शात कराए सरीरा। गुरसिख शांत कराए सरीरा। आत्म देवे साची धीरा। अमृत मुख चुआए सीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे सोहँ शब्द आप पहनाए साचा चीरा। साचा चीरा शब्द दस्तार। गुरमुख तेरी पावे सार। साचा घर ना होए ख्वार। वेख हरि कर दरस अपार। मूल ना डर, सुरत शब्द दे प्रभ देवे तार। प्रभ का भाणा सिर ते जर, साचा बचन मूल ना हार। आपणा किया लैणा भर, जो जन जाए बचन हार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काग रलाए कागां डार। कागां संग रलया काग। काम तृष्ना ना गई आग। साचा दर ना मात दिसणा, अन्तिम होए माढ़े भाग। शब्द लिखावे काहना कृष्ना, ना कोई जाणे झूठा राग। दर खड़े ब्रह्मा विष्ना, सृष्ट सबाई प्रभ हत्थ आपणे फड़ी वाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग जागण भाग, गुरमुख साचे आत्म धो आपणा दाग़। गुरसिख दाग़ आपे धोए। प्रभ गुण अवगुण ना जाणे कोए। सरगुण निरगुण रूप प्रभ आपे होए। जीव जन्त ना जाणे कोए। तीन लोक प्रभ सद वसोए। मानस जन्म ना गुरसिख खोए। अग्गे देवे जो जीव एथे बोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे वाली जहान दोए। दोवे जहानां आपे वाली। गुरसिखां सद बणया पाली। जोत सरूपी करे आप रखवाली। सच सच गुरसिखां आत्म फुल्ल लगाया प्रभ साचा बणया माली। गुरमुख साचा रुल ना जाए, रुल ना जाए भुल ना जाए, अन्तकाल ना जाए दोए हत्थ खाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई पैज रखाई, सच घर वज्जे वधाई, मंगलाचार सचखण्ड कराई, ना मंगे कोई दलाली। सच दलाल हक्क हलाल। गुर गोपाल होए रखवाल। गुरमुख साचा आपे भाल। सोहँ देवे सच्चा धन माल। आत्म धरे साचा सोहँ लाल। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख बणाए आपणे बाल। सोहँ देवे शब्द सुखाला। आपे होए भगत रखवाला। ना जाणे कोई सद प्रितपाला। बेमुख सोए गुरसिखां आत्म सद उजाला। सोहँ बीज जो जन बोए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप होए रखवाला। सोहँ बीज आत्म धरे वत्त। एका एक रखावे प्रभ सोहँ साचा तत्त। आपे आप टिकावे आत्म साची मति। आपे आप जणावे, आत्म देवे धीरज यति। आप आपणे मार्ग लावे, गुरसिखां देवे साची मति। सारंगधर भगवान बीठला आप अख्वावे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे मित गत। साची सीख्या प्रभ लिखाए। साची भीख्या गुरसिखां पाए। दरगाहों जो लेख है लिख्या, प्रभ साचा आप मिलाए। आपे करे सर्ब परीख्या हँकार निवारी आप अख्वाए। गुरमुख विरले कलिजुग दीख्या, दिवस रैण जो रसना गाए। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म आप सुणाए। साचा हुक्म होए परवान। धरे जोत आप भगवान। सर्ब जीआं प्रभ जाणी जाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा जोत पवण पवण जोत एका रंग समाण। हुक्म लखाए साची गाथा। आप चढ़ाए सोहँ राथा। आप तराए त्रैलोकी नाथा। शब्द लिखाए सति वरताए जगत रह जाए साची गाथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समराथा। सर्ब कला आपे समरथ। आप चलाए सतिजुग साचा रथ। सृष्ट सबाई मेट मिटाए आपे जाए मथ। वाक भविख्त रिहा लिखाई, शब्द सरूपी बेमुखां पाई नत्थ। लिख्त भविख्त ना कोई मिटाए, सृष्ट सबाई पकड़ी हत्थ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई जिउँ रामा घर दशरथ। जिउँ राम रमईआ लए अवतारा। आपणा किया मात पसारा। सच दुआरा आप दिखावे सच घर बाहरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप किया जोत पसारा। जोत पसारा आप कराए। सच दुआरा आप दिखाए। भगत भिखारा दर बिठाए। नाम अधारा शब्द दवाए। शब्द हुलारा आप उपजाए। मुकट मुनारा सीस टिकाए। चरन प्यार गुरसिख रखाए। मदिरा मास रसना तजाए। स्वासन स्वास प्रभ रसना जपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां पर दया कमाए। गुरमुख साचे जगत वेख। प्रभ अबिनाशी साचा भेख। चरन लगाए साचे वेख। आप मिटाए बिधना रेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप मिटाए पीर पैगम्बर औलीए शेख़। आप मिटाए शाह सुल्ताना। आप खपाए अञ्जील कुरानां। आप धराए सोहँ नाम हरि ध्याना। आप सुणाए जीव जन्त कन्न गुण निधाना। आपणे मार्ग लाए, आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना। साचा शब्द जणाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। साचा शब्द जीव विचारों। आपणा किया मूल ना हारो। एका गुर साचा द्वारो। कलिजुग बेड़ा आप करावे पारो। मानस जन्म ना आवे वार वारो। निहकलंक कर दरस जीव होए मोख द्वारो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बण सच भिखारो। बण भिखारी आउ दर। सोहँ देवे प्रभ साचा वर। खाली भण्डारे देवे भर। आप तुड़ावे आत्म जिंदरा दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे अंदर बैठे वड़। आपणे अंदर आप उपावे। साचा मन्दिर देह बणावे। काया कंदर दिस ना आवे। सदा सदा प्रभ वेस अंदर, भरम भुलेखे जीव भुलावे। घर घर भौंदे फिरन है बन्दर, दर दर रहे धक्के खाए। कोई ना तोड़े जीव तेरा आत्म जिंदर, झूठे दिसण मां पिउ भैण भ्राए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद वसे अंदर, जोत सरूपी ताड़ी लाए। जोत सरूपी लाई ताड़ी। पक्की पकाई छड्डुण हाढ़ी। कलिजुग जीआं किस्मत माढ़ी। कलिजुग हत्थ फड़ाई दाढ़ी। प्रभ अबिनाशी आप चबाए आपणी दाढ़ीं। चार कुन्ट गुरसिखां आपे आप दिसाए राती सुत्तयां विच उजाड़ी। साचा घर आप वसाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस घर वसे रसे हस्से बैठा

रहे लाए ताड़ी। वसे दर हरि का घर। साध संगत जाए तर । कलिजुग जीव आपणा किया लैण भर। मर मर जन्मे जन्मे जाए मर। सृष्ट सबाई घर घर दर दर आवे डर। भज्जे फिरन नारी नर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द कटारी लई फड़। शब्द कटारी आपे फड़। सृष्ट सबाई जाए झड़। गुरमुखां फड़ाए आपणा लड़। आपे बैठा सच अंदर वड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत मात उपजा शब्द सरूपी घोड़ी चढ़। शब्द सरूपी अस्व अस्वारा। तीन लोक इक्क हुलारा। लोक परलोक गुर चरन दुआरा। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक निहकलंक दर तेरे करन निमस्कारा। कोई ना सके डक, सृष्ट सबाई सोहँ शब्द चलाया खण्डा दो धारा। वेला वक्त ल्याए, सृष्ट सबाई आर पारा। ना दिसे भैण भाई, नारी छड्डण वड वड नारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तोड़े सर्ब हँकारा। हँकार निवारे दुष्ट सँघारे गुरसिख उधारे आपे खड़ा होए दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची खेल कलि वरतारा। वरते खेल अपर अपारे। निहकलंक इक्क करतारे। गुर वेखे कर विचारे। प्रभ अबिनाशी साचा पेखे, सृष्ट सबाई गई हारे। आप आपणे लाए लेखे, शब्द कटारी मारे। धर्म राए सच मंगे लेखे, बैठा प्रभ दुआरे। ओथे कढ्ढे सर्ब भुलेखे, मदिरा मास जो करन आहारे। इक्क इक्क स्वास लगाए लेखे, जो जन रहे रसन उचारे। आप लगाए सोहँ साची आत्म मेखे, भगत वछल आप गिरधारे। गुरमुख विरला नेत्र पेखे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी ल्या अवतारे। ल्या अवतार किया पसारा। जगत अन्धयारा ना पावे सारा। भावे करतारा झूठे हावे होए ख्वारा। बन्ने दाअवे ना कर्म विचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे सर्ब पसारा। सर्ब पसारा आप कराए। सच दुआरा आप रखाए। जोत निरँकारा मात टिकाए। जीव जन्त हँकारा सर्ब मिटाए। सोहँ शब्द साची धुन्कारा आप उपजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची धारा आपणी आप बणाए। साची धारा आप बणा के। सृष्ट सबई विच टिका के। चार वरन प्रभ आप समझा के। सोहँ साचा नाद वजा के। बोध अगाध शब्द लिखा के। माधव माध भेव खुल्हा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवी देव सरन लगा के। सच ध्याना चरन गुर। ब्रह्म ज्ञाना दर्शन गुर। सच इशनाना दर्शन गुर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिलाए लिख्या धुर। साची सेवा आप लगाया। सोहँ मेवा आप चुगाया। आत्म चिन्ता सोग मिटाया। दरस अमोघ आप दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ सेवा लाया। सन्त मनी सिँघ तेरी सेवा। आप लगाए अलख अभेवा। पकड़ लै आए सभ देवी देवा। आप मिटाए सर्ब दी पूजा सेवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप छुपाए आपणा भेवा। देवीआं फिरन दर दुआरे। ना दिसे साचा घर जिस घर वसे आप निरँकारे। पुरी घनक चार चुफेरे फिरन, ना दीसे गिरधारे।

जोत सरूपी जोत हरि, करे खेल अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जामा घनकपुरी विच धारे। घनकपुरी प्रभ जामा धार। सिँघ मताब ल्या अवतार। हरि गोबिन्द आया दातार। मीरी पीरी होया सिक्दार। कलिजुग करे अन्त ख्वार। सोहँ खण्डा फड़े दो धार। मेट मिटाए पीर पैगम्बर, कलिजुग अन्तिम आई हार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक ल्या अवतार। पीर फ़कीरां मेट मिटाणा। कोई ना दीसे राजा राणा। जोत सरूपी प्रभ पहरया बाणा। सोहँ खण्डा हत्थ उठाणा। आत्म रंडा जगत कराणा। विच वरभण्डा हाहाकार कर जगत रवाणा। जोत सरूपी वसे सचखण्डा, जै जै जैकार तीन लोक कराणा। बेमुख भज्जण दे के कंडा, सोहँ तीर आप चलाणा। घर घर बैठीआं रोवण रंडा, मिले ना सुहाग किसे हंढाणा। आप लगाए सोहँ डण्डा, चण्ड प्रचण्ड आप लगाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नव खण्ड आपे आप वरताए आपणा भाणा। नव खण्ड सृष्ट सबाई। घर घर पए दुहाई। अग्न जोत प्रभ इक्क लगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त आप लिखाई । नव खण्ड नव दरवाजे । प्रभ अबिनाशी साजन साजे। अन्तकाल कलि जूठे झूठे घड़े भन्ने भन्ने घड़े प्रभ साजन साजे। आप पिड़ाए जिउँ वेलणे गन्ने, जोत प्रगटाई विच प्रभ माझे। बेमुखां प्रभ आपे डन्ने, गुरमुखां प्रभ रक्खे आपे लाजे । गुरमुख विरले आत्म मन्ने, अनहद शब्द वजाए वाजे । होए सहाई जिउँ माल चराए धन्ने, गुरसिखां प्रभ पड़दे काजे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बेड़ा बन्ने, आप रखाए आपणी लाजे। लाज रखाए लाजावन्त । गुरसिख बणाए साचे सन्त । आत्म जोत टिकाए पूरन भगवन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव कोई ना पाए आदिन अन्त। आदि अन्त खेल अपारा। जुगो जुग लै अवतारा। आवे जावे खेल अपारा। गुरमुख विरला पावे सारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन देवे दरस अपारा। दरस अपार जिस जन दिया। प्रभ अबिनाशी किया हिया। आप रखाए साची निया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए सृष्ट सबाई आत्म दिया।

* ५ कत्तक २००६ बिक्रमी बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल *

कर दरस गुर वक्त सुहाया। बेमुखां सौं के वक्त गंवाया। वेला गया हत्थ ना आया। निहकलंक कलि जोत प्रगटाया। आपणे भाणे विच समाया। गुरमुख वेखे विरला नेत्र पेखे, जिस जन दया कमाया। आपे रक्खे भरम भुलेखे, जोत सरूपी दिस ना आया। आप मुकाए साचे लेखे, गुर संगत प्रभ विच समाया। आत्म लगाए सोहँ साची मेखे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन चरनीं सीस झुकाया। गुण विचारे गुणां गुणवन्त। भगत उधारे आप भगवन्त। सन्तन पावे सार,

प्रभ साचा कन्त। बेमुखां करे ख्वार माया पाए बेअन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव कोई ना जाणे जीव जन्त। कर दरस वक्त सुहञ्जणा। जोत जगाए प्रभ निरँजणा। कर दरस प्रभ साचा नाम देवे नेत्र अञ्जणा। कर दरस जोत प्रगटाई निहकलंक दर्द दुःख भय भञ्जणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाई एकँकार इक्क निरँजणा। जोत निरँजण जगत वेसा। दर घर आए गुरसिख प्रवेशा। जोत सरूपी वड मृगेसा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी धारया भेखा। जोत सरूपी भेख धार। जोत सरूपी किया अकार। आप भुलाया सर्ब संसार। गुरसिख उठाया कलिजुग फुल्ल लगाया सुक्के डार। निहकलंक कलि जामा धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन सरनाई आए, कर किरपा जाए तार। किरपा करे आप भगवाना। सोहँ देवे साचा दाना। आत्म जोत जगे महाना। देवे वड्याई साचा काहना। गुरसिखां प्रभ आप पछाना। आपे बद्धा हत्थीं गाना। साचा कन्त मिलाए निहकलंक बली बलवाना। जीव जन्त विच वड्याए वाली दो जहानां। आप बणाए गुरसिख साची बणत आपणे रंग आप रंगाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग आदि अन्त भगत भगवन्त साध सन्त जीव जन्त बण साचा कन्त आप चलाए आपणा भाणा। आपणा भाणा आपे वरते। जोत प्रगटाई उप्पर धरते। साचा खेल किया कलि करते। करे कराए कल आपणी वरते। वक्त ना जाए टल, लेख लिखाया धरनी धरते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जाउ सद बलि बलि, जन भगत सुहाए आपणे दर ते। भगत सुहाए आपणे घर। भगत सुहाए आपणे दर। आप वसाए देवे वर। ना मरे ना मर जाए चुकाए डर। जिस जन दया कमाए, एका एक जोत देवे धर। द्वार दस्म खुल्हाए आपणा आप वखाए हरि। जोत सरूपी विच समाए निहकलंक अवतार नर। गुरसिख तेरी महिंमा आप लिखाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका साचा दर। तीन लोक लोक परलोक खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्ड सर्ब दर भिखारी आए। सृष्ट सबाई दर भिखार। साचा दिसे इक्क दरबार। जिथ्थे वसे आप करतार। कोटन कोट रवि सस्से एका जोत अकार। बेमुख जायण दर तों नस्से, गुरसिखां देवे शब्द अधार। आपे आप हिरदे वसे, साचा बख्शे चरन प्यार। प्रगट जोत राह साचा दस्से, सोहँ जीव रसन उचार। साचा प्रभ तेरे हिरदे वसे, मूर्ख मुग्ध ना पावे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सदा सदा तेरे आत्म दर द्वार। आत्म दर साचा घर। वसे हरि जोत धर। एका एक अकार कर। अन्ध अंध्यार ख्वार कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप दीपक जोत अकार कर। दीपक जोत आप जगाए। जगे जोत होए रुशनाए। सुरत शब्द प्रभ दवाए। आप आपणा विच टिकाए। पवण सरूपी स्वास चलाए। स्वास स्वास सोहँ साचा आप जपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त बांहों पकड़ जिस

जन आपणी सरन लगाए। आपणी सरन आप लगाए। साचा कर्म आप कमाए। साचा ब्रह्म नाम दवाए। पूरन कर्म प्रभ सरनाई आए। जन्म मरन प्रभ गेड़ चुकाए। लक्ख चुरासी विच फेर ना आए। प्रभ बन्द खुलासी आप कराए। जो जन होए मदिरा मासी, प्रभ साचा दे सजाए। जोत प्रगटाए घनकपुर वासी, रंक राजान कोई रहण ना पाए। जगत भेख वेख वेख कर कर जायण हासी, आपणा आप प्रभ रिहा छुपाए। वेला अन्तिम अन्त कलि आ गया सृष्ट सबाई कराए चरन दासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत मात प्रगटाए। मात जोत अकार धरया। धरी जोत अवतार नरया। कलिजुग अन्तिम अन्त प्रभ साचे करया। गुरमुख साचे सन्त प्रभ अबिनाशी वर घर वरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप गुरसिखां सद आसा वरया। गुरमुखां प्रभ आस पुजाए। कोई निरास ना दर तों जाए। साच वास जोत धराए। इक्क प्रकाश आपणा आप कराए। ना होए कदे विनास, साची जोत डगमगाए। भगत जनां प्रभ होया दास, सर्ब अकाल पताल मातलोक प्रभ जोत प्रगटाए। बेमुखां कराए नास, निहकलंक कलि जोत प्रगटाए। जोत सरूपी रक्खे वास, गुरसिख साचे विच समाए। मानस जन्म कराए रास, जिस जन सोहँ साचा नाम जपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल आप वरताए। वरते खेल जगत न्यारी। आपे करे आपणी कारी। आया मात नैण मुँधारी। बाशक छड्डी सेज सिँघासण बैठ चरन पसारी। जोत सरूपी किया तेज, अग्न जोत प्रभ सृष्टी साड़ी। आपे आया आपणा आप उपाया। साचा नाम ध्याया। साचा थाउँ आप वसाया। सन्त मनी सिँघ संग उपाया। आपणे भाणे विच टिकाया। जोत सरूपी दीप जगाया। सतिजुग साचे माण दवाया। एका ताण आपणा आप रखाया। भगत वछल प्रभ गुण निधान साचा तिलक विच ललाट लगाया। सोहँ साचा हाट खुल्हाया। आपे तोला तोलणहार, आपे आप अख्वाया। गुरसिखां ना आवे घाट, आत्म झोली प्रभ दे भराया। आप कटाए आप छुडाए ना वखाए औखा घाट, धर्म राए ना दए सजाया। जन्म ना पाए विच आन बाट, निहकलंक जिस चरनीं सीस झुकाया। गुरमुख साचे दिवस रैण रैण दिवस सद रसना राट, साचा मार्ग प्रभ आप लगाया। आप खुल्हावे आप तुड़ावे बजर कपाट, सोहँ तीर आप चलाया। आत्म रस रसना रस गुरसिख चाट, मदिरा मास मन तन तजाया। काया झूठी झूठा माट, वेले अन्त प्रभ भन्न वखाया। मानस जन्म आई घाट, बेमुखां वेला गया हत्थ ना आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां होए आपे आप सहाया। कर किरपा भगत उधारदा। कर किरपा पार उतारदा। कर किरपा जन्म संवारदा। कर किरपा भरम निवारदा। कर किरपा आपे आप गुरमुख साचे ब्रह्म विचारदा। कर किरपा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां काज संवारदा। किरपा करे आप गिरधारा। देवे दरस अगम्म अपारा। साचा देवे शब्द अधारा।

भरम भुलेखा सर्ब निवारा। आत्म लेखा सच लिखारा। साची रेखा गुरसिखां लिखारी, प्रभ रक्खे चरन दुआरा। जगत मिटाए झूठा भेखा, निहकलंक ल्या अवतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक कराए जगत सति वरतारा। सति वरताए कराए जग। आप लगाए आपणे पग। बेमुखां जलाए आत्म अग्ग। सोहँ शब्द पहनाए साचा तग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जगत धराए साचा मग। साचा मग जगत धराया। आत्म तृष्ना अग्न बुझाया। प्रभ काहना कृष्ना लग सरनाया। दर खड़े ब्रह्मा विष्ना सीस झुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा आप उपाया। आपणा आप आप उपा के। दीपक जोती जगत जगा के। सृष्ट सोती आप उठा के। चार वरन कराए एका गोती, सोहँ नाउँ जपा के। आप बणाए माणक मोती, आपणे चरन लगा के। एका जगाए साची जोती, निहकलंक दया कमा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई। तीन लोक वज्जे वधाई। सुर नर मुन जन दर घर रहे जस गाई। बेमुखां आत्म सुंञ मसाण रखाई। बेमुखां घर सुंञ मसाणा। आप उलझाया आत्म ताणा। आप भुलाया जोत सरूपी पहरया बाणा। ना चरन लगाया राजा राणा। तख्तों लाहया महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच लिखाए लेख लिख्त, सन्त मनी सिँघ वाक भविख्त आपे सति कराया। सृष्ट सबाई रहे वेखी वेखा। गुरमुख विरले नेत्र पेखा। जिस जन प्रभ करे बुध बिबेका। आप लगाए गुरसिख तेरे मस्तक रेखा। साचे गुरसिख आप उपजाए, मातलोक लगाई साची मेखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाया पिछला लेखा। पिछला लेखा आप चुकाए। लहणा लहणेदर आप अख्वाए। देवणहार इक्क रघुराए। गुरसिखां किया हरि पसार, आपणी सरन लगाए। जुगो जुग प्रभ साचे दी साची कार, जन भगतां होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा भेव कोई ना पाए। भेव ना जाणे जीव अञ्याणा। माया ममता विच भुलाणा। आपणा आप जगत रुलाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तोड़े सर्ब अभिमाना। सर्ब सहारा आपे होया। देवणहारा अग्गे खलोया। सति करतार सद नवां नरोया। गुरसिखां कर प्यार, सोहँ बीज आत्म बोया। आपणी किरपा धार, आप जगाया गुरसिखां सोया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतार दूसर नाही कोया। ना कोई दूसर ना कोई दोए। एका एक जोत तीन लोक बलोए। गुरसिख साचे सन्त सोहँ धागे लए परोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मैल पापां धोए। आत्म कर्म आप निवारया। जन्म मरन गुरसिख संवारया। भव सागर पार उतारया। काची गागर विच जोत अकारया। झूठी देही काया गागर, ना दीसे नैण मुँधारया। निर्मल कर्म गुरसिख उजागर, जिस देवे दरस निहकलंक अवतारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन चरन निमस्कारया। निमस्कार सदा गुर देवा। मिल्या प्रभ अलख अभेवा। सोहँ देवे रसना

साचा मेवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप वड देवी देवा। सोहँ गावणा भरम चुकावणा। जन्म सुहावणा कर्म कमावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे विच्चों पावणा। सोहँ गाओ सुख उपजाओ। भरम चुकाओ चिन्त मिटाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महिंमा अगणत आप आपणी बणत बणाओ। सोहँ जपणा कोट उतारे पपणा। कलिजुग माया विच ना तपणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बणाए आपे आपणा। सोहँ पाया रिदे वसाया, रसना गाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचा आप दिखाया। दर घर दीख्या। मंगी साची भीख्या। सोहँ देवे नाउँ, धुर दरगाहों लीख्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां देवे साची सीख्या। साची सीख्या गुरसिख जाण। आपणा आप जीव पछाण। कलिजुग ना भुल बण अञ्याण। ना जाए रुल बण निधान। प्रभ बणाए कँवल फुल्ल जो जन रसना गाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दरगाह देवे माण। साची दरगाह सच दरबारा। वसे एका इक्क करतारा। एका करे जोत अकारा। जोत सरूप इक्क चमत्कारा। एका इक्क एक अनेक वरते विच संसारा। तीन लोक दिसे एका रंग थिर घर प्रभ सच पसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप धरे जोत निरँकारा। निरँकारी जोत अकारी। मात पसारी भगत उधारी दुष्ट सँघारी । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई करे ख्वारी। सृष्ट सबाई करे ख्वार। जो दब्बी पापां भार। उलटी नभी, अमृत डुल्लया साची धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल किया करतार। धरत मात अन्धेरी रात। कलिजुग टुट्टा नात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उपजाए आप बणाए सुक्के हरे कराए कलिजुग टुट्टे पात। धरत मात, इक्क नात, इक्क ज़ात, इक्क सात, इक्क तात, इक्क दात, सोहँ देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन बणाए भैण भ्रात। चार वरन कराए एका। चार वरन रखाए एका टेका। चार वरन सोहँ कन्न सुणाए करे बुध बिबेका। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरत मात आपे होए मां पिउ बेटा। सृष्ट सबाई एका मात। सृष्ट सबाई गोद उठाई, कलिजुग जीव वेख मार झात। प्रभ अबिनाशी दया कमाई, लक्ख चुरासी दित्ती दात। आपे जाणे आप पछाणे, आपे सुणे भुल कोई ना जाए, आपे पुच्छे सर्ब बात। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए ज़ात पात। गुरसिखां सुण पुकारा। आपे करे सर्ब विचारा। पावे सार जाओ बलिहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किया खेल अपारा। सुणे पुकार आपे दीना। प्रभ अबिनाशी वड प्रबीना। गुरसिख तड़फे बिन जिउँ जल मीना। प्रगट जोत देवे दरस, शांत कराए गुरसिख सीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन रसना चीना। रसना उचारया जन्म संवारया मिल्या गिरधारया। निहकलंक अवतारया रूप अपारया। रंग करतारया विरले कलि विचारया।

३०४ ०२

जिस सिर रक्खे हत्थ कृष्न मुरारया। आत्म दीपक उज्जयारया। जगे जोत अगम्म अपारया। बैठा अडोल आप निरंकारया। पड़दे देवे खोल्ह, जो जन दर आए हंकारया। एका सोहँ शब्द वजाए ढोल, सुणे सर्ब संसारया। आप खुल्हावे बेमुखां पोल, लिखाए लेख प्रभ आप लिखारया। गुरसिखां सदा वसे कोल, जोत सरूपी विच समा ल्या। आप जगाए जगत जोती, आप मिटाए आपे करे खेल अपारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग खपाए सतिजुग मात धराए, कलिजुग खपा ल्या। सतिजुग मात धराया, कलिजुग खपाया। सतिजुग धराया, चार वरन इक्क कराया। एका सरन निहकलंक रखाया। वरन बरन सर्ब मिटाया। तारन तरन आप अख्वाया। करता करन इक्क रघुराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाण्डा भरम सृष्ट सबाई आपे आप भन्नाया। सृष्ट सबाई होई अन्ध। माया आत्म होई कंध। मदिरा मास लगाया बत्ती दन्द। प्रभ अबिनाशी ना रसना गाया, आप गंवाया परमानंद। अन्तिम अन्त कलि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दरवाजे कीने बन्द। ना खुल्ले दर बन्द किवाड़। कलिजुग जीव होए भाग माढ़। मौत घोड़ी प्रभ देवे चाढ़। अग्न जोत विच देवे साड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एक जोत अग्न लगाई विच बहत्तर नाड़। बहत्तर नाड़ अग्न लगाई। वेखे विचारे सुणे लोकाई। आपे बैठा होए बाहरे, हाहाकार जगत कराई। करे खेल अपर अपारे, चार कुन्ट पै जाए दुहाई। भज्जण जायण नारी नारे, भैणां छड्डुण भाई। प्रभ अबिनाशी खेल कराए आपणी वारे, सुत ना जाणे माता तांई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका अग्न दे लगाई। जीव जन्त होए बावला। खेल रचाई गुर गोपाला। शब्द बणाए जगत दलाला। गुरमुख विरले कलिजुग भाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लिखाए जो वरताए हाला। सो वरते जो रिहा लिखाई। उप्पर धरते कहर हो जाई। घर दरे जीव तड़फाई। दर ते आए गुरसिख धाए होए सहाई। लए बचाए आपणी सरन लगाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म मरन गेड़ कटाई। आया वक्त जगत अख़ीर। सृष्ट सबाई होए वहीर। इक्क चलाया शब्द तीर। जोत खिचाए अठसठ नीर। गंगा गोदावरी ना देवे धीर। कलिजुग लथ्थे अन्तिम चीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां जाए पीड़। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ माण गंवाया। तट्ट तीर्थ कोई रहण ना पाया। साचा सीर गुर अमृत प्याया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई खेल रचाया। आप मिटाए कलिजुग धामा। जोत जगाए खेल रचाए रमईआ रामा। नाम धराए घनईआ शामा। आपणा आप प्रगटाए, निहकलंक कलि पहरया जामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल रचाए वरताए, सोहँ शब्द वजाए सच दमामा। जगे जोत जगत निराली। सृष्ट सबाई होए बेहाली। बेमुखां आए रात अन्धेरी काली। शब्द पवण इक्क संग चलाए कलिजुग जीव फुल्ल तोड़े डाल्ही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, आपणी खेल रचाए दो जहानां वाली। आपणी रचना आप रचाई। आपे वेखे वेख वखाई। झूठी रेखे आप मिटाई। साची भेखे विच समाई। गुरसिख लेखे गुर दर आई। वेखा वेख ना सीस झुकाई। साचा लेखा आप लिखाई। लिख्या लेख ना कोई मिटाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ देवे वड्याई, मस्तूआणे साची मेख आप लगाई। मस्तूआणे मेख लगा के। शब्द उचारे रसना गा के। जगत सुणाए निहकलंक ओट रखा के। ऊँची कूक पुकारे, रोए घगया के। राजे राणे आओ दर, निहकलंक कलि आया जामा पा के। टुट्टी गंढुणहार टुट्टी गंढे आपणी दया कमा के। एका जोत जगी करतारे, राउ रंक इक्क जाए करा के। सृष्ट सबाई करे पनिहारे, सोहँ शब्द जपा के। अमृत आत्म झिरना आप झिरा के। झिरना झिरे अपर अपारे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा जाम पिला के। सन्त मनी सिँघ सतिगुर जाणयां। प्रभ अबिनाशी जगत पछाणयां। देवे वड्याई प्रभ विच सुघड़ स्याणयां। चरन लगाए पकड़ पकड़ वड वड महांराणयां। आपणी दया कमाए, देवे जोत बिरधां बाल अञ्याणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चलाए आपणे भाणयां। एका रंग सर्ब समाए। साचा संग आप निभाए। अमृत चुआए प्रभ साचा मुख, तन मन हरा कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म सुख उपजाए। आप उपजाए साचा सुख। चिन्ता सोग मिटाए आत्म गंवाए तृष्ना भुक्ख। हउमे रोग जलाए, सोहँ बीज बिजाए आत्म चन्दन रुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए, वास ना पाए मात कुक्ख। अमृत मुख आप चुआया। साचे तीर्थ गुरसिख नव्हाया। साचा सीरथ आप प्लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म नीरथ आप वहाया। अमृत साचा मुख चुआए। आत्म भरम भउ गंवाए। जगत रोग सर्ब मिटाए। साचा नाउँ विच वसाए। साची दरगाह देवे थाउँ, धर्म राए ना दए सजाए। प्रभ अबिनाशी अगम्म अथाहो भेव कोई ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त होए सहाए। अमृत प्याया सुख उपजाया दुःख मिटाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा कर्म आप कमाया। अमृत लाए रसना रस। सर्ब घटां प्रभ जाए वस। आप उपजाए आत्म रस। प्रभ अबिनाशी होए वस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर गुर संगत आए नस। प्रभ अमृत मुख चुआया। आपे बणे दाई दाया। मात गर्भ होए सहाया। उलटा बिरख आप लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे विच समाया। अमृत देवे साचा नीर। आप गंवाए हउमे पीड़। भगत उधारे देवे धीर। कलिजुग माया देवे चीर। जिस जन मिल्या साचा सीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे आत्म धीर। घिरना घेर प्रभ देवे कढ्ढ। आप कराए सुखाले हड्ड। काया होई अन्धेरी खड्ड। आपणा बिया लैणा वढ्ढ। प्रभ दर मंगे दोवें हत्थ अड्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दुःख

३०७ हर अवतार नर सुख कर आप कराए सुखाले हड्ड। आत्म दु:ख मिटे सोग। ना रहे चिन्त ना रहे रोग। सोहँ दिया साचा योग। देवे दरस प्रभ अमोघ। साचा रस आत्म भोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए खिटा रोग। जीव दुखीआ होए लाचार। झूठे दिसे जगत विहार। ना दिसे आत्म कोई सहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उधारे किरपा धार। आत्म दु:ख आप निवारया। आप कढ्ढाए खादा पारया। हड्ड हड्ड विच फिरया आरया। सोहँ कीनी साची कारया। अमृत मुख चुआया जिउँ बालक माता सीर बत्ती धारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पावे साची सारया। आपे पावे सार। दुखियां दु:ख देवे निवार। भुक्खयां देवे शब्द अधार। सच शब्द जीव रसन उचार। आपणा बेड़ा कर लै पार। हेरा फेरा छड्ड, साचा कर वणज वपार। प्रभ दरस दिखाए ना लाए देर, ना दिसे पासा हार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लए कर्म विचार। सन्तां अंग संग सद होए। आपे कट्टे भुक्ख नंग, आप आपणा सिर हत्थ टिकाए। वड दाता सूरा सरबंग, देवणहार इक्क अख्वाए। आत्म चाढ़े मजीठी रंग, उत्तर ना जाए। बेमुखां तोड़े जिउँ काची वंग, ना कोई जुड़ाए। गुरसिख साचे साचे दर ना संग, बाहों पकड़ प्रभ साचा पार कराए। पार कराए गुरसिख बेड़ा। आप कटाए चुरासी गेड़ा। बिन प्रभ साचे कलिजुग पार लँघाए केहड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बन्न्हाए गुरसिख बेड़ा। गुरसिख बेड़ा आप बन्न्ह। आप उठाए आपणे कंध। आप उचारे आपणी रसन, आप उतारे आत्म जन। झूठे भाण्डे प्रभ देवे भन्न। सोहँ शब्द गुरसिख सुणावे कन्न। देवे शब्द सच्चा माल धन ना लग्गे संन्ह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग गुरसिखां बेड़ा ल्या आपे बन्न्ह। बेड़ा बन्न्ह बन्दी तोड़। आपे लए टुट्टी जोड़। गुरसिख साचे प्रभ साचे दी साची लोड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच प्रीती चरनीं जोड़। चरन प्रीती बख्शे दात। जगत रखाए साचा नात। सोहँ देवे वड करामात। गुरसिख पढ़ाए इक्क जमात। आप वड्याए विच मात। आपणी जोत जगाए, आत्म मिटाए अन्धेरी रात। एका गोत बणाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क कराए ज़ात पात। ज़ात पात इक्क कर। साचा नात आप कर। पुच्छे वात इक्क कर। एका पित एका मात इक्क घर। एका सोहँ साची दात सृष्ट सबाई विच धर। गुरसिखां देवे शब्द दात, आत्म पतित पुनीत कर। गुरसिख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा साजन मीत कर। सज्जण सुहेला तेरा मीता। प्रभ अबिनाशी राखो चीता। आप चलावे आपणी रीता। एका वड्याई सोहँ शब्द अठारां ध्याए गीता। होए आप सहाई, सृष्ट सबाई आपे जीता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना जप जीव तेरी आत्म सद अतीता। आत्म अतीत मिले जग जीत। परखे नीत गुरसिख तेरी काया कीनी सीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग मानस जन्म ३०७

०२ ०२

जाए जग जीत। मानस जन्म गुरसिख जीत्या। प्रभ साचे संग साची हित्या। अमृत आत्म प्रभ साचे सीत्या। आपे सखा सहाई सच्चा मीत्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख कर दरस वेला हत्थ ना आवे बीत्या। हत्थ ना आए वेला। प्रभ आया सज्जण सुहेला। जुगां जुगां दे विछड़े आप कलि कराया मेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। पारब्रह्म प्रभ अचरज खेल, आप कराए विछड़यां मेल। आत्म जोत जगाए बिन बाती बिन तेल। आपणा आप विच टिकाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए आपणा मेल। मेल मिलावा आपे दस। आपे हिरदे जाए वस। काम क्रोध मोह आपे जायण नस्स। गुरसिखां आत्म होए वस। एका जोत करे प्रकाश, कोटन कोट रवि ससि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर साचा घर गुर संगत आए नस्स। उठ जीव जाग वक्त विहाया। उठ जीव जाग, क्यों जगत पाई माया। उठ जीव जाग, आपणा मूल क्यों गंवाया। उठ जीव जाग, आत्म धो दाग़ निहकलंक कलि जामा पाया। उठ जीव जाग, प्रभ साचा दया कमाया। उठ जीव जाग, क्यों माढ़े भाग, कलिजुग गूढ़ी नींद सवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल थिर घर दे पुचाया। उठ जीव जाग, वक्त अख़ीर। उठ जीव जाग, क्यों तुटा धीर। उठ जीव जाग, सिर लथ्था चीर। उठ जीव जाग, निहकलंक कलि जामा पाया वड पीरन पीर। उठ जीव जाग, प्रभ साचा कट्टे भीड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां वेले अन्त देवे पीड़। उठ जीव जाग, प्रभ दर आ। उठ जीव जाग प्रभ अबिनाशी साचा पा। उठ जीव जाग, आत्म घर वसा। उठ जीव जाग, जोत सरूपी हरि बैठा जोत जगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता बेपरवाह। वड दाता गुणी गहीरा। बेमुखां करे वहीरा। गुरसिखां कट्टे भीड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ उठाए बीड़ा। सोहँ बीड़ा आप उठाया। आप आपणे संग पठाया। उलटी लट्ठ जगत गिढ़ाया। आपे चाढ़े सोहँ साचे भट्ठ, अग्न ममता जोत लगाया। गुरसिख रक्खे आत्म हठ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखाया। जोत सरूपी देवे दरस। गुरसिखां करे आपे तरस। अमृत साचा मेघ प्रभ देवे बरस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाए, आप मिटाए गुरसिख हरस। गुरसिख हरस आप मिटाई। कर तरस दया कमाई। देवे वड्याई सुणे लोकाई। साध संगत इक्क रंग रंगाई। रंगत नाम आप चढ़ाई। अंगद अंगीकार आप अख्वाई। गुरसिख दर ते आए मंगत, साची भिच्छया प्रभ झोली पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उपाए साची संगत, जोत सरूपी सद विच समाई। गुर संगत प्रभ सद समाया। संगत गुर गुर संगत आप अख्वाया। गुर संगत संग आप रलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा विच धराया। गुर संगत कलि कीनी वक्ख।

वेले अन्त प्रभ लए रक्ख। बेमुख जीव कराए लक्ख कक्ख। सृष्ट सबाई होए भक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल वरताए, ना कोई सके रक्ख। वरते कल जगत अन्धेरा। न जाए टल एका आए वेला। सृष्ट सबाई जाए हल, निहकलंक कलि पाया फेरा। आप कराए जल थल, थल जल कराए ना लाए देरा। जोत प्रगटाए ना लाए घड़ी पल, गुरसिख साचे विच वसेरा । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद जाओ बलि, आपे तारे कर के मेहरा। आपे तारे वड मेहरवान। आप उधारे इक्क भगवान। पावे सारे देवे जीआ दान। शब्द उधारे, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा गुण गुणी निधान। गुण निधान आप भगवन्ता। चतुर सुजान साचे सन्ता। बली बलवान आप अखवन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा वक्त आप सुहंता। वक्त सुहावणा कर्म कमावणा। जोत प्रगटावणा भेख वटावणा। शब्द सुणावणा राउ रंक निवावणा। सर्ब शंक मिटावणा। इक्क अटंक आप रहावणा। द्वार बंक आप सुहावणा। सोहँ डंक जगत वजावणा। राउ रंक उठावणा। एका अंक आप अख्वावणा। गुरसिख उधारे जिउँ भगत जनक, बल उधारे जिउँ धार रूप बावना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात फेर अख्वावणा। निहकलंक कलि वरता के। आपणे भाणे सर्ब चला के। राजे तख्तों लाह के। अञ्याणे निमाणे सरन लगा के। भाग निमाणे गले लगा के। वड वड महांराणे ख़ाक रुला के। सृष्ट सबाई आपणे भाणे आप चला के। साची जोत धरे भगवाने, सोहँ नाउँ जपा के। गुरसिख विरला रंग साचा माणे, प्रभ चरनीं सीस निवा के। बेमुख भुन्नाए जिउँ भठयाले दाणे, अग्न जोत प्रभ आप लगा के। आप भुलाए वड वड सुघड़ स्याणे, प्रभ कलिजुग माया पा के। गुरसिख साचे बाल अञ्याणे, प्रभ रक्खे आपणी गोद उठा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ सुवरन साचे धाम जाए बहा के। साचे धाम गुरसिख वसाया। साचे राम दर अग्गे बहाया। पूरन किया काम लहणा देणा सच चुकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दरबान आपणा आप बहाया। आपे बणयां वड दरबारी। सिँघासण बैठे जोत निरँकारी। सिँघ सुवरन सोहे चरन दवरी। सिँघ पाल सिर छत्र झुलारी। देवे वड्याई प्रभ गिरधारी। सचखण्ड खेल न्यारी। एका जोत प्रभ तीन लोक करे अकारी। इन्दलोक शिवलोक ब्रह्मलोक होए जै जै जैकारी। अन्तिम अन्त आ गया, ब्रह्मा छड्डुया सच घर बाहरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत मिला ल्या, सिँघ पाल देवे सच्ची सिक्दारी। पाल सिँघ प्रभ माण दवाया। साचे धाम आप बहाया। पूरन काम आप कराया। साचा नाम आप जपाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्मा ब्रह्म सरूप जोती जोत मिलाया। सिँघ पाल मिले वड्याई। सृष्ट सबाई हत्थ फड़ाई। आपे बणे सच रथवाही। प्रभ की महिंमा अकथ्थ कथी ना जाई। महांसार्थी आप अख्वाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण

जाणे तेरी वड्याई। प्रभ वड्याई क्या कोई जाणे। आपणा आप ना जीव पछाणे। गुरमुख साचा सच रंग माणे। साची दरगाह प्रभ देवे माणे। जिथ्थे वसे आप भगवान ना रोए ना हस्से सद इक्क रंग समाणे। महाराज शेर सिँघ सर्ब घटां दी आपे जाणे सतिगुर साचा सर्ब घटां दी आपे जाण। गुरमुख साचा लए पछाण। आपे बख्शे चरन ध्यान। आत्म जोत जगे महान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा देवे नाम दान। हरि मंगल गावणा आत्म सुख पावणा। साचा सुख गुर आप उपजावणा। आप मिटाए चिन्ता दुःख, सोहँ साचा नाम जपावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे मार्ग आप लगावणा। कर्म धर्म दोए जगत धराया। गुरमुख जन्म मात दवाया। कलिजुग जीव भाण्डे कच्च, विच कुकर्म आप फसाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत ब्रह्म सद विच समाया। ब्रह्म सरूप रंग अनूप। वड वड भूप एका जोत जगाई महिंमा जगत अनूप। कलि आया सति करतार, जोत अधार, शब्द प्यार, भगत उधार, जाए पैज संवार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। अवतार नरया जोत धरया। पूरन आसा वरया भगत जनां सद होए दासा, दर दुआरे अग्गे खड़या। मानस जन्म कराए रासा, बेमुख दर आए हासा, मानस जन्म विच कलि हारया। गुरसिख साचे चरन भरवासा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मन तन तन मन आपे हरया करया। तन मन हरा कराए आप। सोहँ धन दवाए आप। साचा राग कन्न सुणाए आप। आत्म जीव जाए मन, सति पुरखां देवे साचा जाप। आत्म धीरज देवे बन्न्, बैठा दिसे सद इकांत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साची देही साचा पिण्ड प्रांत। पिण्ड प्रांत वसे जीआ। जोत सरूपी प्रभ आप जगाया आत्म साचा दिया। पूर्ब लहणा आप चुकाए जो प्रभ साचे बिया। आप कराए साचा हिया। जगत रखाए निया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा आप आपणे जिहा किया। गुरसिख आत्म वेख विचार। एका दिसे रंग करतार। जोत सरूपी विच रिहा पसार। एका रंग साची धार। रूप अनूप सति सरूप जोत सरूपी जगत विहार। सोहँ पठाया साचा दूत, सृष्ट सबाई देवे हुलार। एका कताया साच सूत, रसना चरखा शब्द कटार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल रचाया, कलि आपणी किरपा धार। कलिजुग तेरा कर्म विचार। अन्तिम अन्त आई हार। साचा भुल्लया दर दरबार। झूठे तोल तुल्लया, मूर्ख मुग्ध गंवार। अमृत आत्म कलिजुग जीआं डुल्लया, रसना चल्लया मदिरा मास विकार। जो जन आए प्रभ दर भुल्लया, प्रभ अबिनाशी बख्शणहार। गुरमुख साचा विच मात ना रुल्लया, आपणी गोद उठाया कलंकनिह नरायण नर अवतार। प्रभ साचे दा दर खुल्लया, सोहँ देवे वड भण्डार। सोहँ शब्द वड अनमुलया, मेल मिलावे सति करतार। बेमुख खपाए उडाए पहले बुल्लया, एका देवे सृष्ट

सबाई शब्द हुलार। आपे पाणी पावे चुल्लया, बेमुख दर दर फिरन भिखार। गुरसिखां दर साचा मल्लया, देवणहार इक्क दातार। जो जन साचे संग रलया, आप मिटावे आत्म धुंदूकार। बेमुख कलिजुग जीव अन्तकाल कलि रुल्लया, ना दीसे सच दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत निरँकार। जोत निरँकार किया अकार। शब्द अधार गुरसिख सुधार। आत्म तृखा आप निवार। उज्जल कराए विच मुन रिख साचा देवे शब्द अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी किरपा धार। किरपा धारी पैज संवारी। प्रभ बनवारी गिरवर गिरधारी। कृष्न मुरारी कँवल नैण मुकट बैण साचा छत्र सीस झुलारी। मुकंद मनोहर लखमी नरायण अचुत्त पारब्रह्म परमेश्वर गुरसिख लगाए साची फुलवाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप बणाई मौत लाड़ी। मौत लाड़ी जगत प्रनाया। वेला अन्तिम कलिजुग आया। साधन सन्तन आप भुलाया। बेअन्तन बेअन्त आप अख्वाया। एका साचा कन्त, सृष्ट सबाई नाउँ रखाया। पावे सार जीव जन्त, जोत सरूपी विच समाया। जिस बणाई गुरसिख तेरी बणत, प्रभ अबिनाशी क्यों भुलाया। प्रभ दी महिंमा बड़ी अगणत, वेद पुरानां भेव ना पाया। एका एक आदिन अन्त, जुगो जुग जामा विच मात दे पाया। आप सँघारे वड वड देव दंत, साचा शब्द खण्डा हत्थ उठाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा कर्म आप कमाया। भिन्नीए रैणे गुरसिख तेरे साचे भाई तूं साची भैणे। बेमुख कलि गोद सवाए, गुरसिख दवाए साचे लहणे। कलिजुग जीव आप भुलाए। अन्ध अन्धेरी रात गुरसिखां वखाए आपणे नैणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा साचा रक्खे नात, गुरसिख साचे सतिजुग साचे संग सदा तेरे रहणे। गुरसिखां दिया साचा संग। साचा संग कलिजुग अन्धेरी रात, प्रभ दर मंगे साची मंग। तुध बिन कोई ना पुच्छे वात, कलिजुग जीआं मेरी काया कीनी नंग। अन्तकाल कलि टुट्टा नात, झूठा छड्डया जगत संग। आपे दे दर साची दात, साचे लेख लिखा विच मात, आपे वेखे मार झात, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां देवे साचा साथ। रैण भिन्नड़ी वक्त सुहाए। सतिजुग साचे माण दवाए। गुरमुख साचे संग रलाए। अंग अंग प्रभ आप समाए। साचा संग आप निभाए। मंगी मंग ना बिरथा जाए। जन भगतां रक्खे आपणे संग विच मात जन्म दवाए। दिवस रैण रैण दिवस एका लिव लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे सतिजुग साचे साची कारे लाए। साची कार आप लगाए। साची तार सोहँ इक्क रखाए। एका जोत अकार विच मात रखाए। सृष्ट सबाई होए जै जै जैकार, चार वरन प्रभ रसना गाए। भगत वछल रच्छक आप गिरधार, गुरमुख साचे रैण सबाई आपणी सेवा लाए। आपणी किरपा धार, आलस निंदरा मगरों लाहे। खोल्हे सच द्वार, दूई द्वैत जिंदरा आप तुड़ाए। एका जोत कर अकार, जोत सरूपी डगमगाए। एका

दीप होए उज्जयार, बिन बाती बिन तेल जगाए। साचा शब्द सच्ची धुन्कार, आत्म सुन्न आप खुल्हाए। खुल्ले सुन्न आत्म तुट्टे मुन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत स्वच्छ सरूप दरस दिखाए। स्वच्छ सरूप बिन रंग रूप, जोती जोत सरूप गुरसिखां दिसे प्रभ साचा सति सरूप, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बंधाए एका सोहँ साचे सूत। सोहँ ताणा आप तणाया। राजा राणा विच फसाया। गरीब निमाणा गले लगाया। साचा बाणा निहकलंक मात धराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखे जगत भुलाया। आपे होए सूत्रधारी। आपे होए पूज पुजारी। आपे होए दूज निवारी। आपे होए भेव गूझ खुल्हारी। आपे होए गुरसिख साचे पूज पुजारी। आपे होए आत्म सोए, काया कीती चार दिवारी। साची जोत विच बिलोए, बेमुखां आत्म होई अन्ध अंध्यारी । गुरसिख विरला वेखे कोए, जिस जन प्रभ किरपा धारी । जन्म जन्म दी मैल प्रभ दर धोए, सोहँ शब्द रसन उचारी। मातलोक लोक परलोक संवारे दोए, निहकलंक नरायण नर अवतारी। साची दरगाह पुच्छे ना कोए, बेमुखां धर्म राए करे ख्वारी। ना कोई देवे ढोए, मदिरा मासी फिरन भिखारी। गुरमुख साचे पैर पसारी सोए, प्रभ साचा खड़ा द्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत निरँजण सति जोत निरँकारी। निरँकारी निरँकार। आवे जावे विच संसार। करे कराए जो मन भाए, सृष्ट सबाई कर्म विचार। झूठे बन्न्हण दाअवे, ना कोई चले मन के भार। झूठे भैण भ्राए पकड़ उठावण चार पावे, भाण्डा भन्नण अधविचकारा। भाईआ संग अन्तिम नहावे, बांहों पकड़ दर कीता बाहर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन अवर ना कोई पावे सार। भैण भाई मात पित साक सज्जण सैणा। संग ना चले कोई, जिस वेखे जीव नैणां। एका भुल्लया प्रभ रघुराई, सच दुआरे जिस दे बहणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत आप लिखाए सति वरताए, लिख्या लेख ना कोई मिटाए, अगाध बोध प्रभ रिहा लिखाए। गुरसिख कोई भुल ना जाए। कलिजुग माया विच रुल ना जाए। कलिजुग अन्तिम अन्त प्रभ दर मंगे फल, कोई हुल्ल ना जाए। आप बणाए साचे सन्त, फुल्ल कँवल विच मात लगाए। आपे होए सहाई अन्त, कोई भुल ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, महिंमा जगत अगणत आपणे भाणे सद समाए। भाणा भगवानयां गुरसिख जानयां ब्रह्म पछानयां, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा सति कर मानयां। सति कर मन्नणा बेड़ा बन्न्हणा। आत्म रंगणा मूल ना संगणा। मानस जन्म ना होए भंगणा। सोहँ शब्द पवाए आत्म कंगणा। दुरमति मैल धवाए साचे नाम गुरसिख रंगणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई दर्द दुःख भञ्जणा। दुःख भञ्जणहारा प्रभ गिरधारा। जिस जन विचारा तिस दर दुआरा। होए सहारा भव सागर तारा। आप दिसावे सतिजुग सच किनारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बन्न्हे साची धारा।

३१२
०२

साची धार आप चलावे सच्ची सरकार। आप अख्वाए सच विचार। दया कमाए गुण विचार। आप रखाए जोत अधार। खेल कराए भगत उधार। आपे हो जाए वक्त विचार। गुरसिख उठाए भरम निवार। दरस दिखाए ना होए ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार। वाली हिन्द निहकलंक कलि जामा पाए। वड वड मृगिन्द, गुरसिख साचे विच समाए। आप उठाए सुरपति राजा इन्द, आपणी सरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सच दरबार विच दिल्ली आप लगाए। दिल्ली जावणा कर्म कमावणा। राजा संगरूर बांहों पकड़ संग रलावणा। आत्म हँकार सर्ब मिटावणा। इक्क अधार शब्द रखावणा। विच संसार आप चलाए आपणी भावना। जोत निरँकार आपणे चमत्कार, एका एक वार दिखावणा। सृष्ट सबाई होए उजिअर, लक्ख चुरासी आप जगावणा। सोहँ शब्द होए जै जै जैकार, तीन लोक प्रभ इक्क रहावणा। मात जोत प्रगटाए निहकलंक अवतार, जमन किनारे चरन टिकावणा। जमन किनारे चरन टिकाए। सर्ब हँकार आप मिटाए। आपणे रंग करतारे आपे आप वखाए। हँकारीआं दुष्ट दुराचारीआं झूठे महल मुनारे साची जोत आप जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक दिसाए आपणी सरन रखाए। एका जोत होए आकारा। विच मात होए उज्जयारा। वाली हिन्द आए चरन दुआरा। देवे दरस कृष्न मुरारा। मिटाए हरस राम अवतारा। नेत्र परस दीसे निहकलंक नरायण नर अवतारा। एका जोत जगे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे दर दरबारा। सच दरबार करे करतार। भरम निवार रसन उचार। आप चलावे साची धार। साचा दस्से जगत विहार। सृष्ट सबाई हिरदे जोत सरूप आप करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणे सृष्ट सबाई लेख लिखार। सृष्ट सबाई लेख लिखारा। आप लगाए सच दरबारा। आप गंवाए सर्ब हँकारा। आप कराए दर भिखारा। आपे आप हो जाए देवणहार दातार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल करे मात न्यारा। अचरज खेल आप कराए। गुरसिख वेखे प्रभ साचा आप वखाए। कढ्ढे भरम भुलेखे विच दिल्ली चरन टिकाए। बेमुखां लिखाए मिटाए रहे कुकर्म कमाए। सृष्ट सबाई आपे वेखे, ना कोई सके छुपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कार आप भुगताए। रोग गया सोग गया। दरस अमोघ भया। प्रभ अबिनाशी कीनी दया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग सदा रव रिहा। दया धारी जोत निरँकारी। गुरसिखां बणया आप लिखारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए वड सिक्दारी। सच सिक्दार आप अख्वाए। गुरसिख बेड़ा पार कराए। दुतर तार सच घर बाहर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप दिखाए। आपणी सरनाई साध संगत। गुर सरनाई साध संगत। प्रभ भिच्छया पाई साध संगत। पूरन इच्छया आप प्रभ कराई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप पछाणे सेव

कमाई। गुरसिख कमाए साची सेवा। प्रभ फल लगाए आत्म सोहँ साचा मेवा। सोया जीव आप जगाए, भेव चुकाए दोअँ दोआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां घर लै आया साचा ढोआ। सोहँ ढोआ आपे देवे। साचा बीज आत्म बोवे। पापां मैल आपे धोवे। सोहँ धागे विच परोवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां दिस ना आवे, आपणा बैठे वक्त खोए। बेमुखां ना प्रभ साचा दीस्सया प्रभ जगदीस्सया। माण गंवाए सुल्तान शाह अबनूस्सया। मेट मिटाए ईसा मूस्सया। आपणी भेट आप चढ़ाए सोहँ चन्दन तन पहनाए गुरमुखां, बेमुखां काला सूस्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी खेल वरताए, पकड़ उठाए शाह रूस्सया। उठे लशकर रूसा भारी। तीनां लोआं करे ख्वारी। देवे माण आप गिरधारी। वसे विच आप निरँकारी। कलिजुग जीव ना पायण सारी। अचरज खेल प्रभ अपारी। सृष्ट सबाई करे ख्वारी। आपे आप करे दो फाड़ी। कलिजुग जीव आत्म हँकारीआं आप हिलाए पकड़ दाढ़ी। ना दिसे पिच्छा अगाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आपे खेले बण वड खिलाड़ी। आपे खेल खिलावे। सृष्ट सबाई एका एक धकेल लगावे। बेड़ा शौह दरया आपे ठेल वखावे। थाउँ थाँईं बैठे प्रभ साचा पकड़ उठावे। वाहो दाही पाए सृष्ट सबाई आपे भेड़ भिड़ाए। राजे राणे भज्जण राही, कोई नेड़ ना आवे। एका भुल्लया साचा माही, कलिजुग जीव सुंञी भेड़ ना कोई संग रलावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखे खेल, बेमुखां विष्टा मुख चुगावे। वेखे खेल बण खिलाड़ी। छड्डी देह मारी शब्द उडारी। जगत बणाया साचा नेंह, सोहँ बणाया सच वपारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख परखे जोत निरँकारी। गुरसिख उठाया लाया अंग। गुरसिख उठाया आप रखाया आपणे संग। गुरसिख उठाया आप कसाया सोहँ साचा तंग। गुरसिख उठाया दया कमाया चरन बहाया सेवा लाया आपणे रक्खे सदा संग। अचरज खेल आप कराए, सृष्ट सबाई आप खपाए, छिड़े छिड़ाए ना कोई मोड़ मुड़ाए, शब्द सरूपी लाया जंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां सदा अंग संग। संगी साथी प्रभ रघुनाथी त्रैलोकी नाथी गुरसिखां बणया साचा साथी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां देवे साचा साथ। सोहँ चढ़ाए साचे राथ। जगत चलाए साची गाथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां देवे साचा साथ। संग साथा त्रैलोकी नाथा राखे दे कर हाथा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई सृष्ट सबाई होई भुक्खी नंगी। गुरसिख गुर दर अमृत पीवणा। सदा जग जीवणा गुर दर थीवणा। कलिजुग पाटा तन घाटा मन सोहँ धागे संग सीवणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म वरखे, गुरसिखां रज्ज रज्ज पीवणा। अमृत प्याया अग्न बुझाया। गुरसिखां मुख सगन लगाया। साचा दीपक गगन जगाया। एका जोत मग्न रखाया। गुरसिख

३१४ ०२

साचा साची रंगण विच रंगाया। सोहँ कंगण प्रभ साचे हत्थ पहनाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा गुरसिखां सीर प्लाया। गुर दर आओ अमृत मुख चुआओ। तृखा तृष्ना आप बुझाओ। काहना कृष्ना दर्शन दर पाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद सद रसना गाओ। अमृत फुहारया सच दरबारया। प्रभ अबिनाशी आपे आप वरता रिहा। गुरसिखां सच्ची जोत जगा रिहा। उज्जल कराए मात कुक्खां, दुःख रोग सर्ब मिटा रिहा। आत्म घर साची सुक्खा, प्रभ दीपक जोत जगा रिहा। जो जन आए प्रभ दर्शन भुक्खां, प्रगट जोत निहकलंक दरस दिखा रिहा। जो जन आए होए बेमुखां, प्रभ नर्क निवास रखा रिहा। खाली हत्थ जाए जिउँ सिंमल रुक्खा, फल फुल्ल प्रभ दोवें झड़ा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां अमृत आत्म सिंच तन मन हरा करा रिहा। तन मन हरया प्रभ पाया भागी भरया। देवे वड्याई दर अग्गे खड़या। होए सहाए निहकलंक जिस तेरा पल्ला फड़या। देवे वड्याई गुरसिख जिस तेरा घाड़न घड़या। गुरसिख बणाए भैणां भाई, बेमुख ना दर ते वड़या। गुर संगत भुल ना जाई, प्रभ अबिनाशी तेरे आत्म दर द्वार अग्गे खड़या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण तेरे अंदर वड़या। देवे साची मति, गुरसिख पूर्ब आत्म विचार कर। सोहँ देवे साचा यति, आत्म हँकार निवार कर। एक रखाए आपणा तत्त, गुरमुख चरन प्यार कर। शब्द सरूपी देवे साचा सति, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी किरपा धार कर। नाम सति धाम सति। राम सति नाम सति। शाम सति सोहँ शब्द जाण सति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक गुरसिखां वखाए धाम सति। गुर संगत धरे ध्याना। प्रभ करे सर्ब पछाना। रोग सोग प्रभ मिटाना। एका सोहँ तीर शब्द चलाना। किरपा करे आप भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए वड बली बलवाना। दुखीए जीव सर्ब बिल्लायण। दर दर घर घर सर्ब कुरलायण। कलिजुग माया खाए डायण। ना कोई दीसे भाई भैण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दुःख निवारे पावे सारे आप गिरधारे, जन आए दर दुआरे दुखड़े भारे पार उतारे, दुःख निवारे जो जन रसना गायण। दुःख निवारया काज संवारया। लाज रखा रिहा, चरन लगा रिहा। दाग़ मिटा रिहा साचा कन्त सुहाग वखा रिहा। सोहँ साचा राग उपजा रिहा। साध संगत साचा मेल, पहली माघ मिला रिहा। सोहँ शब्द साचा दूत दौड़ा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर गुर संगत माण दवा रिहा। गुर संगत प्रभ सुणे पुकारा। दुखियां दुःख आप निवारा। सोहँ धरया सिर पापां आरा। आप कराए चीर दो फाड़ा। इक्क उपजाए सोहँ साची धारा। सुणे सुणाए सच धुन्कारा। वड वड गुणे निहकलंक नरायण नर अवतारा। पहली माघ गुरमुख साचे प्रभ देवे शब्द हुलार। सोहँ उपजाए साची धुंन, आत्म मिटाए धुंदूकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

आप तराए गुर संगत आई दुआरा। गुर संगत प्रभ लाज रखाए। साजन साज काजन काज पूरन काज कराए। सोहँ साचा दाज, गुरसिखां प्रभ आप दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आई संगत चढ़ाई रंगत होई मंगत, रोग दुःख कोई नेड़ ना आए। आप मिटाए बीर बेताले। आप कढ्ढाए सर्ब दवाले। गुर दर होयण सर्ब बेहाले। आप आपणा बिरद समाले। गुरसिखां सद वसे नाले। बेमुखां मुख होए काले। मौत कुठाले आपे गाले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे आपे पाले जिउँ माता बाले। माता पूत सच्चा नाता। सो जाणे जिस प्रभ पछाता। आप वखाए जिस चलाए आपणे भाणे, आप रखाए चरनीं नाता। दरगाह साची देवे थाएँ, आपणी किरपा आप कराए, आपे बणे गुरसिख तेरा पित माता। विच जोती जोत मिलावे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पुरख बिधाता। पुरख बिधाता किरपा कर। गुरसिख लै जाए साचे घर। आप बहाए आपणे दर। जिथ्थे रहाए एका हरि। एका दिसे साचा सर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बहाए दया कमाए थिर घर।

* पहली माघ २००६ बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड बुग्घे ज़िला अमृतसर *

३१६ सन्त जनां घर साचा पाया। सन्त जनां हरि रिदे वसाया। सन्त जनां भाण्डा भरम भउ गंवाया। सन्त जनां महाराज ३१६
०२ शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरन लगाया। सन्त जनां हरि रसना गाया। सन्त जनां थिर घर वासी थिर घर ०२
में पाया। सन्त जनां रिद्ध सिद्ध होए दासी, प्रभ अबिनाशी सिर हत्थ टिकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा आप आपणी सेवा लाया। सन्त जनां हरि हिरदे वस्सया। खोल्ह कपाट राह साचा दस्सया। ना आवे घाट जगे जोत विच ललाट, होए प्रकाश कोट रवि सस्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा साची दरगाह जाए वस्सया। सन्त जनां हरि काज संवारे। आपे आवे चल दुआरे। एका जोत करे अकारे। जोत सरूप निहकलंक नरायण नर अवतारे। आए घर खाली भरे भण्डारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त जनां दुत्तर तारे। सन्त जन प्रभ साचे चुण। आप उपजाए शब्द धुन। आप खुल्हाए आत्म सुन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण जाणे तेरे गुण। गुणवन्त गुण विचारे। पारब्रह्म अपर अपारे। कलिजुग भेख सर्ब संसारे। माया अग्न काया चुल्हया, आप चलाए बहत्तर नाड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्तकाल बेमुख जीव अग्न जोत विच साड़े। सन्त जनां हरि माण दवाए। पूरन काम आप कराए। एका सोहँ साचा नाम जपाए। दोआँ दोआ भेव मिटाए। अठारां बरन सरन लगाए। चार वरन रहण ना पाए। एका एकँकार आपणी सरन रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाए। सन्त जनां हरि रस माणया। प्रभ अबिनाशी

साचा जाणया। पूरन ब्रह्म आप पछाणया। सच कर्म आत्म तुट्टा अभिमाणया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दरगाह साचा देवे माणया। दरगाह साची सन्त परवान। साचे सन्त इक्क रंग समान। आवण जावण चुक्के कान। लक्ख चुरासी मिटे, ना जाए मढ़ी मसान। एका इक्क हो जाए जोत मिलाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। सन्त जनां हरि सुण पुकार। मातलोक लए अवतार। पुरी घनक सुत्ता पैर पसार। सृष्ट सबाई अन्ध अंध्यार। गुरमुख विरला पावे सार। जिस जन देवे चरन प्यार। हरन फरन दए निवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार। सन्त जनां हरि माण दवाया। आप आपणा ताण रखाया। एका बाण शब्द लगाया। होए परवान जिस रसना गाया। छुट्टा आवण जाण लक्ख चुरासी गेड़ चुकाया। आप बिठाए विच बबाण, वेले अन्त होए सहाया। सर्ब घटां घट जाणी जाण, भेव किसे ना पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाया। सन्त जना हरि रंग राते। आपे मेल मिलाया, प्रभ अबिनाशी पुरख बिधाते। गुर गुर गुरसिख गुर संगत गुर चरन साचे नाते। सोहँ साचा नाउँ जीव जप दिवस राते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख आपे खड़ा रहे सरहाणे तेरे सुत्तयां राते। सन्त जनां हरि दे वड्याई। दर घर साचे माण रखाई। कलिजुग जीव भाण्डे काचे, वेले अन्त कलि दे भन्नाई। गुरसिख साचे सच दर वाचे, सच घर दे बहाई। बेमुख दर आए नाचे, कोई ना देवे थांईं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप साचो साचे, आपणे भाणे सद रहाई। सन्त हरि हरि सन्त दोए एका। जन सन्तां करे बुध बिबेका। एका देवे चरन टेका। कलिजुग माया ना लागे सेका। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक रंग रंगाए एका। गुरमुखां गुण विचारदा। कर किरपा पार उतारदा। दु:ख रोग सर्ब निवारदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रुढ़दे बेड़े कलिजुग पार उतारदा। गुरमुखां हरि नाम दवाए। बेमुखां दर दर फिराए। गुरमुखां प्रभ दरस दिखाए। बेमुखां प्रभ भिक्ख ना पाए। गुरमुखां आत्म इच्छा पूर कराए। बेमुखां वांग रिछां घर घर नचाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत विच सद समाए। घर घर होए हाहाकारी। कलिजुग होई रैण अन्ध अंध्यारी। कलिजुग काल आपणे हत्थ फड़ी कटारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप खण्डा दो धारी। खण्डा दो धारा। सच शब्द करतारा, बेमुखां करे ख्वारा, गुरसिखां पार उतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा सति दुआरा। सति दुआरा सति कर जाण। प्रभ अबिनाशी गुरसिख पछाण। मात जोत प्रगटाई वड दाते गुण गुणी निधान। कलिजुग वेला अन्त जीव ना भुल अञ्याण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सोहँ शब्द रसना आप चलाए बाण। रसना बाण आप चलाया। त्रैलोकी नाथ विच मात दे आया। गुरसिखां सगला साथ प्रभ आपे आप रखाया। आप

चलावे साची गाथ, सोहँ साचा सतिजुग मुख रखाया। आप वरताए दोए हाथ, गुरसिखां झोली दे भराया। साचे लेख लिखाए माथ, जो जन सरनाई आया। आपे रक्खे दे कर हाथ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी सरन लगाया। गुरसिख रंग प्रभ दर माणे। साचा घर गुरसिख पछाणे। जिथ्थे वसे आप भगवाने। एका जोत प्रकाश कोट रवि सस्से, गुरमुख विरला जाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा दर साचा घर, कोई विरला गुरमुख जाणे। साचा दर साचा घर वस्सया हरि किरपा कर गुरमुखां दुखड़े जाए हर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म खुल्हाए साचा सर। साचा अमृत भरया। प्रभ अबिनाशी गुरसिख तेरी आत्म धरया। गुरसिख गुर दर आए, विच आत्म सागर तरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर आप आपणे जिहा करया। अमृत आत्म आप प्याए। आत्म तृष्ना अग्न बुझाए। काहना कृष्ना विच जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव खुल्हाए। आप आपणा भेव खुल्हा के। जोत सरूपी दरस दिखा के। आत्म साचा दीप जगा के। जगे जोत होए रुशनाए। स्वच्छ सरूपी दरस दिखाए। बिन रंग रूपी कोई भेव ना पाए। वड वड प्रभ भूपन भूपे गुरसिख समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच अन्ध कूपे जोत जगाए। अन्ध कूप काया अंध्यार। कोई ना पावे साची सार। कलिजुग भुल्ला सर्ब संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले जाए तार। गुरसिख तारया जन्म संवारया। किरपा कर गिरधारया। लक्ख चुरासी गेड़ निवारया। मानस जन्म आप संवारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए चरन निमस्कारया। चरन दुआरा, सच घर बाहरा। विरला वसे गुरमुख प्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस अगम्म अपारा। अगम्म अपार, कर्म विचार, पावे सार, करे विचार, जाए तर, ना आए हार, गुरमुख आए सच दर दरबार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म तृखा जाए निवार। गुर चरन सच द्वार। गुर चरन पावे सार। गुर चरन गुरसिख उधरे पार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा जाए तार। जिस जन देवे सो जन लेवे आप लगाए आत्म फल सोहँ साचे मेवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अलख अभेवे। सोहँ एक अकार कर। कलि जोत सरूपी आपणा सच विहार कर। पंचम जेठ जोत मात धर। गुर चरन बणाए एका साचा सर। आप खुल्हाए दर आए, गुरसिखां दरस दुआर। एका इक्क दिस आए, नरायण नर अवतार हरि। आवे जावे वारो वारा। जोत सरूपी खेल अपारा। आपे करे सच विहारा। जुगो जुग मातलोक लए अवतारा। जन भगत आयण चरन दुआरा। नाम रंगत आपे दे आपे देवे शब्द भण्डारा। साची संगत आप बणावे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ साचे दी साची कारा। इक्क आकारा जोत रखावे। साची धारा जगत चलावे। निहकलंक कलि जामा पावे। सोहँ

साचा डंक वजावे। राउ रंक इक्क करावे। ऊँच नीच कोई रहण ना पावे। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान, सोहँ जन जो रसना गावे। सच शब्द हरि इक ध्यान, कलिजुग अग्न नेड़ ना आवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गावे। सोहँ लगाई आत्म साची जाग। कलिजुग जीव उठ सोया जाग। आप आपणा धो पापां दाग़। कलि गूढ़ी नींद सोया, आत्म तृष्ना ना बुझी आग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस हँस ना बण काग। गुरसिख गुर सद लोड़े। आपे तोड़ विछोड़े जोड़े। गुरमुख साचा गुर दरस सद लोड़े। आप चढ़ाए सोहँ घोड़े। वर पाए जिहा जन लोड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन लोड़े। रैण भिन्नड़ी हरि वक्त सुहाया। रैण भिन्नड़ी हरि हरि हरि रसना गाया । रैण भिन्नड़ी वर घर साचा पाया। रैण भिन्नड़ी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखाया। रैण भिन्नड़ी वक्त विचारे। जोत सरूपी मातलोक लए अवतारे। रैण भिन्नड़ी गुरसिख ना जाए गुर चरन हारे। रैण भिन्नड़ी अमृत मेघ आप वरखाए कर किरपा गिरधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां जन्म मरन संवारे। रैण भिन्नड़ी वक्त सुहञ्जणा। जोत जगावे प्रभ निरँजणा। गुरमुखां कराए चरन धूढ़ साचा मजणा। दुःख भय भञ्जणा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा साक सैण सज्जणा। सज्जण सखाई साचा मीत। गुरमुख राखो सद ही चीत। आपे परखे साची नीत । मानस जन्म जाओ जग जीत। गुर चरन प्रीती साची रीत। कर दरस हरि होए काया सीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे आत्म अतीत। आत्म कर आपे अतीती। जन भगतां परखे आपे नीती। पूर्ब लहणा आप दवाए, प्रभ अबिनाशी पतित पुनीती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो दर आए लए भुल बख़्शाए, पिछली भुल जो कीती। भुलयां रुल्लयां दर साचा खुल्ल्या। जगाए जोत प्रभ वड अनमुलया। वेले अन्तिम अन्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई शब्द अन्धेर जगत विच झुल्लया। शब्द अन्धेरी जाए झुल्ल। सृष्ट सबाई जाए रुल। उलटी नाभी अमृत जाए डुल्ल। बेमुख कलिजुग जीव गए हुल्ल । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई जो दर आए बख़्शाए आपणी भुल्ल । अन्तिम अन्त कलि होए अख़ीर। सृष्ट सबाई करे वहीर। ना कोई दीसे पीर फ़कीर। बेमुखां लथ्थे चीर। कलिजुग जीव बेमुख कुत्ते, बिरधां बाल अञ्याणयां हत्थ ना आवे नीर । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेट मिटाए जोत जगाए रहण ना पाए अठसठ नीर। अन्तिम अन्त कलिजुग आए । गुरमुख विरला सन्त प्रभ अबिनाशी रसना गाए। जिस मिल्या हरि साचा कन्त, वेले अन्त लए छुडाए। जिस बणाई साची बणत कलिजुग जीव गए भुलाए। प्रभ दी महिंमा बड़ी अगणत, माया रूपी पड़दा पाए। क्या कोई जाणे जीव जन्त, आप आपणा ल्या छुपाए। गुरमुख विरला जाणे सन्त, आत्म जोत सरूपी

३२० ०२

दीपक जोत जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तीन लोक करे रुशनाए। कलिजुग तेरा आया अन्त। गुरमुख विरला जाणे साचा सन्त। माया पाई प्रभ कलिजुग बेअन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग महिंमा सदा अगणत। चौथे जुग आई वार। वेले अन्त होए ख्वार। कर्म धर्म दोए गए हार। मानस जन्म जीव विचार। वेला अन्त ना जाए हार। हँस क्यों रलयो कागां डार। आपे आप सड़या कलिजुग झड़्या अग्न अन्गयार। प्रभ अबिनाशी वलीआ छलीआं, मातलोक जोत सरूपी आया जामा धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी सार। सोहँ बालड़ा वड लाड़ला। लाल गुलालड़ा सतिगुर साचे गुरसिख पालड़ा। सोहँ साचा फल लगाए सुक्के डालड़ा। अन्तिम काल ना खाए, प्रभ होए आप रखवालड़ा। जन्म मरन गेड़ कटाए, आपे होए गुरसिख गोद उठालड़ा। आप आपणी सरन लगाए, दीपक जोत आपे बालड़ा। माहणा सिँघ तेरी बिन्द आप तराए, आपे होए सद रखवालड़ा। सतिगुर मनी सिँघ भुल ना जाए, जिस आत्म वास गंवाया कालड़ा। वेले अन्त रुल ना जाए, हरि देवे स्वास सुखालड़ा। साची दरगाह फल लगाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणे वड वड मालड़ा। आपे वाली आपे पाली। आपे करे गुरसिख रखवाली। गुरसिख साचे प्रभ बणया तेरा पाली। जोत सरूपी भेख कलिजुग खेल निराली। जोत सरूपी प्रभ नेत्र पेख, आत्म चढ़े साची लाली। आप लिखाए साची रेख दो जहानां वाली। कलिजुग लगाए अन्तिम मेख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आसा मनसा पूर करा ली। आप लगाए आत्म मेख। सोहँ शब्द गुरसिख वेख। कोई ना जाणे पीर फ़कीर औलीआ शेख़। कलिजुग जीव रहे वेखा वेखे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद सदा गुरमुख साचे नेत्र पेख। नेत्र पेखणा। दर घर साचे वेखणा। आप लिखाए साची लेखणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आप मिटाए बिधना लिखी लेखणा। गुरसिख लिखाए साचा लेख। गुरसिख साचा लेख लिखाया। सतिगुर मनी सिँघ साचा शब्द जणाया। निहकलंक नरायण नर, बांहों पकड़ साची सरन लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तारन तरन आप अख्वाया। सन्त मनी सिँघ कर विचार। गुर साचा दिया तार। आप दिखाए दिसाए रहाए साचे सच दर दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बख्शे चरन प्यार। सन्त मनी सिँघ साची सीख्या। गुरमुख मंगे साचा दर सोहँ साचा नाम भीख्या। प्रभ देवे वर साचा हरि धुर दरगाहों लीख्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्तिम अन्त आपे आप करे गुरसिख तेरी प्रीख्या। सतिगुर मनी सिँघ सति कर मन्नणा। आपणा बेड़ा आपे बन्न्हणा। गुरमुख साचा कलिजुग अंदर जिउँ प्रभास चन्दना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे तोड़े तेरे फंदना। सन्त मनी सिँघ सति कमाई। दिवस रैण रैण दिवस प्रभ रसना गाई। ना मिले बहण, प्रभ अबिनाशी जोत जगाई।

छड्डे साक सज्जण सैण, एका आया निहकलंक तेरी सरनाई। कलिजुग माया खाए डैण, भाईआं तांई भाई। कलिजुग जीव वहे वहन्दे वहण, आप आपणी पति गंवाई। गुरमुख साचे साचा लहणा लैण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन आए तेरी सरनाई। सन्त मनी सिँघ सति ध्यान। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान। देवे दरस वड दाता गुणवन्त गुण गुणी निधान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ दर्शन पाया। मातलोक विच राह दिसाया। आप आपणा भेव खुल्हाया। जोत सरूपी दर्शन पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे रंग रंगाया। साची जोत होए उज्जयारे। तीन लोक इक्क अकारे। खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्ड जै जै जैकारे। कलिजुग जीव तेरी आत्म रंड ना मिल्या कन्त प्यारे। पंचां दित्ती एका गंढ, दूजा वस्सया विच हँकारे। वेले अन्त होए खण्ड खण्ड, सोहँ शब्द चले खण्डा दो धारे। साध संगत नाम साचा वंड, कर किरपा कलि पार उतारे। साची चोग चुगी वरभण्ड, कलिजुग जीव सुत्ते पैर पसारे। आपे वसे विच नव खण्ड, जोत सरूपी प्रभ गिरधारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धारे। अमृत मेघ हरि आप वरसाए। गुर चरन बैठ गुर संगत नहाए। पापां मैल दुरमति आप धुवाए। रोग सोग चिन्ता कर्म वियोग प्रभ आप मिटाए। साध संगत रस साचा भोग, अमृत साचा मुख चुआए। देवे वड्याई विच तीन लोक, मात कुक्ख सुफल कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म सिंच आत्म तृखा भुक्ख मिटाए। भुक्ख मिटाई सुख उपजाई उज्जल मुख कराई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ दया कमाई। पहली माघ भागां भरया। कर दरस गुरसिख तरया। प्रभ अबिनाशी आदि जुगादि सद आसा वरया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई वड धरनी धरया। साची जोत सच धरवासे। जोत सरूपी रक्खे वासे। एका जोत जगाई प्रभ पुरख अबिनाशे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत आदि जुगादि तेरा दासन दासे। पहली माघ भरम गंवाए। गुरमुख साचे कर्म लिखाए। जन्म जन्म दी मैल गंवाए। सच धर्म दी जोत जगाए। पूरन कर्म आप कराए। सच सरन इक्क रखाए। हरन फरन आप खुल्हाए। गुरमुख साचे आप तराए। निहकलंक फेर अख्वाए। चार कुन्ट जै जै जैकार कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए। चार कुन्ट होए जै जैकारा। निहकलंक ल्या अवतारा। जोत सरूपी खेल अपारा। भेव ना पाए जीव मूर्ख मुग्ध गंवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां खुल्हाए दस्म दुआरा। सच शाह सच राह आपणा आप दिखाए। जोत सरूपी प्रभ अथाह, जोती जोत डगमगाए। गुरमुखां पकड़ आपे बांह, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आत्म भेव गूझ खुल्हाए। आपणा भेव आप दिखाए। गुरमुखां सोहँ नाम जपाए। साध संगत हिरदे मेख लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

आप आपणा भेव चुकाए। गुरमुखां हरि माण दवाणा। दिवस रैण रैण दिवस इक्क रंग रंगाणा। गुरमुख साचे साचा लहणा लैण, बेमुखां सौं के वक्त लँघाणा। साध संगत सोहँ साचा गहणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे आत्म तन पहनाणा। सोहँ गहणा तन पहनाए। तीजे नैणां खोल्ह वखाए। गुरसिख साचे सद तेरे विच रहणा, प्रभ आपणा भेव खुल्हाए। प्रभ अबिनाशी सद है देणा, गुरमुख साचा आपणी झोली आप भराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी साचा कहणा, कलिजुग जीव भुल ना जाए। साचा कहणा भाणा सहणा लहणा लैणा सृष्ट सबाई वहे वैहन्दे वहणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख वेखे प्रभ वखाए नैणां, निहकलंक नर अवतार साध संगत सद तेरी आत्म अंदर रहणा। काया मन्दिर सच निवासा। जगाए जोत प्रभ अबिनाशा। खुल्हाए सोत सति ब्रह्म प्रकाशा। दुरमति मैल धोत मानस जन्म कराए रासा। सृष्ट सबाई एका गोत, आप कराए चरन दासा। लक्ख चुरासी एका जोत, ऊँच नीच प्रभ जोत प्रकाशा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना जप स्वास स्वासा। रसना जप जीव स्वास स्वासा सोहँ शब्द साचा जापा। आपे मारे हउमे तापा। आपे उतारे आत्म पापां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा देवे जापा। सोहँ शब्द जगत चलाया। प्रभ अबिनाशी मात धराया। सर्ब घट वासी दया कमाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे माण दवाया। सोहँ गावणा सुख उपजावणा। मुख सुहावणा, काया सुक्का रुक्ख हरा करावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद रसना गावणा। सोहँ तेरी साची कार। गुरमुख विरला पावे सार। जिस जन किरपा करे अपार। अमृत मुख चुआए आप खुल्हाए बन्द किवाड़। दीपक साची जोत जगाए, आप खुल्हाए दस्म दुआर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी सार। आपणी सार आप समाले। प्रभ अबिनाशी खेल निराले। गुरमुख साचे अञ्याणे बाले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत देवे जाम मेल मिलाए कलि कर खेल निराले। अमृत वेला साचा रस। सच कर्म प्रभ जाए दस्स। जोत सरूपी हिरदे वस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा वक्त सुहाए, साध संगत आत्म जोत करे, प्रकाश कोट रवि ससि। वेला अन्तिम आप सुहावणा। जोत सरूपी कर्म कमावणा। विच अन्ध कूपी जोत जगावणा। सति सरूपी सति वरतावणा। बिन रंग रूपी भेख वटावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा कर्म कमावणा। जामा धार लए अवतार। अचरज खेल करे करतार। वेखे विगसे करे विचार। बूझण बूझे सच विहार। एका करे जगत वरतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एक चलाए साची कार। एका किया इक्क अकार जोत सरूपी खेल अपार। सति सरूपी प्रभ कलि अवतार। बिन रंग रूपी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत निरँजण तीन लोक करे आकार। एका जोत आप जगाए। जुगो जुग

प्रभ जामा पाए। भगतन हित नित नवित्त एह खेल रचाए। वाक भविख्त आप लिखाए। लिखी लिख्त ना कोई मिटाए। साची लिख्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जो दीसे सुकदे रुक्ख, गुरसिख साचे प्रभ अमृत फल बणाए। जुगो जुग अवतार धर। आपणा भेख आपे कर। गुरमुख साचे वेख, आप बहाए आपणे दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख वसाए साचे घर। जुग जुग जुगा जुग जामा धार। जन भगतां पाए आपे सार। आपे देवे नाम अधार। शब्द सरूपी देवे साची सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आपणा करे पसार। आप आपणा किया पसारा। जोत सरूपी ल्या अवतारा। पुरी घनक हरि का दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक ल्या अवतारा। पुरी घनक प्रभ भाग लगाए। एका साची जोत जगाए। बरन गोत कोई रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा धाम सुहाए। आप सुहाए आपणा धामा। जोत जगाए रमईआ रामा। वक्त सुहाए घनईआ शामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि पहरया जामा। निहकलंक कलि जामा धार। अथर्बण वेद ल्या विचार। अल्ला अलाहू नूर अन्तिम करे ख्वार। आत्म तोड़े सर्ब हँकार। सोहँ शब्द मारे मार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी सार। आपणी सार आपे जाणे। जन्म कर्म सर्ब पछाणे। सृष्ट सबाई आप रखाए आवण जाणे। गुरमुख साचे आप तराए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां तोड़े सर्ब अभिमाने। विष्नूं भगवाना तोड़े अभिमाना। सोहँ तीर चढ़ाए रसना खिच कमाना। चार कुन्ट बहीर कराए, वड बली बलवाना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपे वरते आपणा भाणा। आपणा भाणा आप वरता के। राजा राणा तख्तों लाह के। सुघड़ स्याणा आप अख्वा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा जाए नाम जपा के। आप आपणा नाम जपाए। साचा नाम जगत टिकाए। कलिजुग भेख सर्ब मिटाए। जूठ झूठ रहण न पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग अनूठ आत्म सर्ब चढ़ाए। आत्म रंग आप चढ़ाणा। साचा संग आप रखाणा। कट्ट भुक्ख नंग, सोहँ साचा जाप रिदे वसाणा। मानस जन्म ना होए भंग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण सद रसना गाणा। दिवस रैण सद रसना गाओ। प्रभ अबिनाशी निज घर में पाओ। आप आपणी चिन्त मिटाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस आत्म तृखा अग्न बुझाओ। आत्म तृखा अग्न बुझा के। जोत सरूपी दर्शन पा के। आत्म जिंदा आपणा आप तुड़ा के। सोहँ चाबी नाम लगा के। वड प्रतापी बैठा हरि जोत जगा के। कोटन कोट उधरन पापी, निहकलंक तेरा दर्शन पा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई, गुरसिख तराए आपणी सरन लगा के। मातलोक प्रभ जामा धरया। अचरज खेल पारब्रह्म कलि करया। बेमुख जीव ना आवे दर डरया। गुरसिख

साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी सरनी पड़या। सरन लग जावणा। जन्म सुहावणा। दु:ख रोग मिटावणा। सोहँ साचा जोग, प्रभ दर ते पावणा। दरस अमोघ प्रभ आप दिखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी साची जोत जगावणा। जगे जोत आत्म उज्जयारी। एका दिसे नर अवतारी। गुरमुख हिरदे विच विचारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे खेल न्यारी। खेल न्यारा जोत पसारा। कलि अवतारा शब्द अखारा। देवे गिरधारा गुरमुख पावे दर दरबारा। आप वसावे सच घर बाहरा। जोत जगावे एका दीसे आप निरँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप रंग अनूप एका एकँकारा। रंग एक अंग एक संग एक। सोहँ नाम गुरमुख मंग एक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे चरन टेक। चरन टेक आपे दे। आपे वरसे आत्म अमृत मेंह। बेमुखां दर कराए अन्तिम थेह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त गुरसिखां रखाए चरन नेंह। गुरमुख गुर विचारया। कर किरपा पार उतारया। गुरमुख साचे देवे वड्याई विच संसारया। गुरमुख साचे रंग रंगे आप करतारया। जिस जन किरपा करे आप गिरधारया। संसा रोग सर्ब मिटा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा राग आत्म धुन उपजा रिहा। आत्म धुन आप उपजाए। वड रिख मुन आप अख्वाए। गुरसिख तेरी आत्म तृख आप बुझाए। गुर दर लथ्थे भुक्ख, मदिरा मास रसन तजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जोत जगाए। मदिरा मास रसन तजावणा। स्वास स्वास सोहँ गावणा। पूरन आस प्रभ करावणा। गुरमुख उधारे जिउँ बलधार रूप बावना। जे कोई वेखे वेख वखाए। साचा हाट प्रभ मात खुल्हावणा। किसे ना आवे घाट, सोहँ दात प्रभ झोली पावणा। मिले वड्याई विच लोकमात, जिस जन रसना गावणा। ना होए अन्धेरी रात, जोत सरूपी प्रभ डगमगावणा। गुरसिख बैठ इकांत, हरि हिरदे विच ध्यावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत निहकलंक जोत सरूपी दरस दिखावणा। आप आपणा दरस दिखा के। भरम भुलेखा सर्ब चुका के। पिछला लेखा आप मुका के। मस्तक लेखा सच लिखा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा मार्ग ला के। आप आपणा मार्ग लाए। सोहँ साचा नाम जपाए। सोहँ दोआँ ओआँ इक्क कराए। दूई द्वैत सर्ब मिटाए। आप आपणी बूझ बुझाए। चार वरन इक्क सरनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका नाउँ जगत चलाए। साचा नाम जगत चलाया। शाम वेद माण गंवाया। रिग वेद रहण ना पाया। युजर वेद अन्त कराया। वेद अथर्बण आप मिटाया। अल्ला अलाही नूर गंवाया। अचरज खेल प्रभ बणाया। ईसा मूसा मुहम्मदी इक्क भेख वटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम आप आपणा डंक वजाया। आप मिटाए वेद पुराना। आप मिटाए अञ्जील कुरानां। आप मिटाए

३२४
०२

शाह सुल्तानां। आप मिटाए वड वड हँकारीआं आत्म तोड़ अभिमाना। आप मिटाए वड राज राजाना। आप मिटाए झूठे शाम जो बण बैठे गोपीआं काहना। आप मिटाए भेखा धारी झूठा पहरया जिन्हां जामा। आपे लेख लिखारी वाली दो जहानां। आपे वड संसारी, तीन लोक विच इक्क रंग समाना। आपे होए वड सिक्दारी, सृष्ट सबाई चरन लगाणा। ना कोई दीसे वंड विहारी, सोहँ शब्द आप चलाणा। गुरमुखां देवे नाम खुमारी, रसना जपे नाम भगवाना। सोहँ शब्द देवे उडारी, जोत सरूपी मेल मिलाना। जो जन आए नाम भिखारी, सोहँ देवे साचा दाना। बेमुखां मति गई मारी, भुल्लया हरि विष्नूं भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे रंग सद समाणा। आप आपणे रंग समाया। सृष्ट सबाई पाई माया। झूठे वहण जगत विहाया। वेले अन्त ना कोई सहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां देवे आप सज़ाया। बेमुखां प्रभ दे सज़ाए। गुरमुखां प्रभ पार कराए। बेमुखां गुर दर दुरकाए। गुरसिखां घर सच बहाए। बेमुख कोई थांएँ ना पाए। गुरसिख सद रसना गाए। सरन रखाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दरस दान मंगे, सोहँ भिच्छया प्रभ साची पाए। नाम सच मंगया, आत्म रंगया, ना दर सन्गाया, आत्म वहाए साची गन्गाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर साचा साचा दरस दान गुरसिख मंगया। साची मंग चाढ़े रंग। वसे अंग सदा संग। मानस जन्म ना होए भंग। आत्म अमृत नीर चलाए गंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सहाई अंग संग। अंग संग सगला साथा। प्रभ अबिनाशी त्रैलोकी नाथा। सोहँ शब्द चलाए साची गाथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समराथा। सर्ब कला आपे समरथ। सृष्ट सबाई पाए नत्थ। गुरसिख चढ़ाए सोहँ साचे रथ। बेमुखां धर्म राए पाए नत्थ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे पार उतारे आपे रक्खे सिर ते हत्थ। आपणा हत्थ सिर टिकाया। दर घर साचे माण दवाया। आवण जाण आप कटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरगाह साची माण दवाया। दरगाह साची साचा घर। जोत सरूपी वसे हरि। एका साचा दिसे दर। कोटन कोट खड़े दर। आपे देवे सर्ब वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर। खड़े रहण कोट दुआरे। वज्जे चोट शब्द धुन्कारे। कढ्ढे खोट जन्म संवारे। कलिजुग जीव आलूणयो डिगे बोट, ना कोई पाए सारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त खपाए कर कर वड दुख्यारे। कलिजुग जीव होयण दुखिअर। कोई ना पावे सर। आपणा कर्म गए हार। मानस जन्म होया ख्वार। मदिरा मास कलि आहार। स्वास स्वास ना जप्या करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे मारे कर ख्वार। करे ख्वारी वड संसारी। सृष्ट सबाई होए भिखारी। घर घर मंगण नर नारी। दु:ख रोग लग्गी भुक्ख बिमारी। जीव जन्त सभ बिल्लायण, चार कुन्ट

होए हाहाकारी। जो जन प्रभ अबिनाशी रसना गायण, आत्म रहे सद खुमारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर साचा पायण, देवे दरस आप बनवारी। घर घर दर दर हाहाकार। कलिजुग होए अन्ध अंध्यार। दुखीए जीव करन पुकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी मारे मार। चार कुन्ट हाहाकार। रोयण सर्ब नारी नार। भैणां छड्डुण भाई, किसे ना होए कोई सहार। माता छड्डुण पूत कोई ना पावे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वरते खेल अपर अपार। कलिजुग जीव दु:ख अन्त भर। निन्दक दुष्ट जन्म गए हर। दर दर घर घर आवे डर। आपणा किया लैण भर। कच्चे फल जायण झड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां फड़े आपे लड़। सृष्ट सबाई वरते कहर। सृष्ट सबाई होए गहर। सृष्ट सबाई आपे वगाए एका नहर। सृष्ट सबाई आप तपाए, आप लगाई जेठ दुपहर। सृष्ट सबाई आप ल्याई घेर। सृष्ट सबाई आप मिटाई, आप करनी हेर फेर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच जोत प्रगटाए ना लाए देर। जोत प्रगटाए सृष्ट उलटाए। त्रैभवन हिलाए, आवा गवण मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका पवण आप चलाए। चले पवण जगत हुलारा। कलिजुग जीव होए ख्वारा। छिन भंगर आरा पारा। झूठे मन्दिर ना दीसे महल मुनारा। बेमुख जीव फिरन जिउँ बन्दर, ना दीसे कोई सहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे दरस अपारा। सच पवण आप चलाए। पवण पाणी इक्क हो जाए। खाणी बाणी सर्ब मिट जाए। चोज वडाणी खेल रचाए। वड वड अभिमानी माण गंवाए। शब्द ज्ञानी आप हो जाए। सोहँ कानी आप लगाए। आपे बानी आप मिटाए। आप जाणी जाण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे विच समाए। एका पवण एका रास। एका पवण सर्ब स्वास। एका पवण हो जाए विनास। एका पवण सद वसे गुर चरन पास। एका पवण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जप स्वास स्वास। स्वास स्वास पवण चलाए। सोहँ साचा नाम जपाए। अजपा जाप आप कराए। इक्क घड़ी स्वास तिन्न सौ सठ्ठ चलाए। साचा नाम विच लेख आप लिखाए। गुरमख साचे वेख दया कमाए। साचा कलि प्रभ दा भेख कोई भुल ना जाए। कलिजुग जीव रहे वेखा, वेख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क अभुल्ल आप अख्वाए। ना भुल्ले ना कोई भुलावे। कलिजुग जीव बन्ने झूठे दाअवे। आप उपावे आपे खावे। आपे खेले खेल खिलावे। आपे मेल होए हरि नाम जपावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव खुलावे। आप आपणा भेव खुलावे। सच सुच्च प्रभ वरताए। साचा धर्म साचा कर्म साचा जन्म मात धराए। गुरमुख साचे आप उपाए। आप आपणी सेवा लाए। साध संगत संग रलाए। नाम रंगत आप चढ़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरला रसना गाए। रसना गाओ गहर गम्भीर। तन मन हरया शांत

सरीर। हरि मिल्या वड पीरन पीर। आपे देवे आत्म धीर। गलों कट्टे जगत ज़ंजीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत मुख चुआए साचा सीर। अमृत मुख आप चुआए। आप आपणे रंग समाए। सति संगत गुर संग समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मंगण मंगत देवणहार इक्क रघुराए। इक्क रघुराता, इक्क दाता, इक्क ज्ञाता, इक्क पित माता, एका दीसे पुरख बिधाता, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले कलिजुग पछाता। गुरमुख विरला जाणे कोए। कलिजुग जीव रहे सोए। गुरमुख साचे सोहँ धागे लए परोए। आप उपजाए साचे रागे, दूसर जाणे ना कोए। किरपा करे प्रभ पहली माघे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख जगाए सोए। गुरसिख सोया आप जगाया। आप आपणी सरन लगाया। सच सरन इक्क रघुराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेख वटाया। आपणा भेख आप वटा के। सृष्ट सबाई आप भुला के। माया रूपी पड़दा पा के। अग्न जोत विच आप सड़ा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप मिटाए आप खपाए दो धड़ करा के। सृष्ट सबाई होए दो धड़। एका कांग आए चढ़। बेमुख जीव जायण हड़। कोई ना दिसे किल्ला गढ़। ना कोई बैठे अंदर बाहर आपे मारे फड़ फड़। चारों तरफ होए कड़ कड़। आपे भन्ने जेहड़े बणाए घड़ घड़। आपे डन्ने जिन्हां छड्डुया साचा लड़। आत्म अन्ने धर्म राए अग्गे लाए फड़। गुरमुखां बेड़ा आपे बन्ने, शब्द सरूपी घोड़ी चढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पार लँघाए, साचे धाम आप बहाए, पूरन काम आप कराए, साचा नाम आप जपाए, साचा जाम अमृत प्याए, करे रुशनाए विच बहत्तर नाड़। कलिजुग जीव किस्मत माढ़ी। कलिजुग हत्थ फड़ाई आपणी दाढ़ी। पाई नत्थ खड़ा अगाड़ी। कोई ना जाए साथ खड़ी मौत लाड़ी। प्रभ दी महिंमा बड़ी अकथ्थ, आप चबाए आपणी दाढ़ीं। गुरमुख चढ़ाए साचे रथ। होए सहाई जंगल जूह पहाड़ीं। सोहँ देवे साची वत्थ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत विच मात सच्ची फुलवाड़ी। सच फुलवाड़ी साचा माली। करे खेल आप निराली। जोत सरूपी दीपक बाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां रखाए आत्म घटा काली। काली घटा होए घनघोर। कलिजुग झूठा करे शोर। प्रभ हत्थ आत्म अंदर तुहाढ्ढी डोर। प्रभ अबिनाशी तेरी साची लोड़। शब्दे अंदर रक्खे जोड़। शब्दे अंदर निभाए तोड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ साचे दी साची लोड़। घटा काली जगत अन्धेर। कलिजुग जीव फल टुट्टे डाली, प्रभ चाढ़े एका वेर। जल थल थल जल एका घड़ी एका पल वेला जाए ना टल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख पार उतारे करके आपणी मेहर। झक्खड़ झाँगी वगे जग। सृष्ट सबाई लग्गे अग्ग। कलिजुग जीव फिरन जिउँ सुंञे घर कग। अग्न जोत जोत अग्न जाए लग। आपे पकड़ पछाड़े प्रभ पकड़ शाहरग।

बेमुखां दिन आए माढ़े, कलिजुग अन्धेरी जाए वग। मौत घोड़ी चाढ़े लाड़े, सोहँ पहनाया आत्म तग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख कलिजुग जीव अग्गे धर्म राए लगाया वग। कलिजुग जीव होए अवारा। पापां रहे तन अफारा। देही दुःख लग्गा भारा। साचा सुख हरि नाम वसारा। आत्म तृष्ना ना उतरी भुक्ख, बेमुख सदा रहे झक्ख मारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो जन पावे जो जन करे चरन निमस्कारा। निमस्कार पूरे गुर। मिल्या हरि लिख्या धुर। गुरसिख गुर चरन गए जुड़। एका शब्द एका सुर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिलाया गुरसिख लिख्या धुर। मेल मिलाया खेल खलाया। बिन बाती बिन तेल दीपक जोत जगाया। पारब्रह्म अचरज खेल आपणा भेद आप छुपाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सज्जण सुहेल आपे होए सहाया। आपे होए सहाई देवे वड्याई। पूरन बूझ बुझाई। एक दूज मिटाई। भुलयां सच मार्ग पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच घर वसे रघुराई। सच घर सच टिकाणा। जगे जोत इक्क महाना। ना कोई दीसे राजा राणा। आप भुलाया जगत रुलाया भरम भुलेखा सर्ब पाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे सच टिकाणा। सच टिकाणा थिर घर। जिथ्थे वसे साचा हरि। खुल्ले रहण सदा दर। सदा रहे भण्डारे भर। सृष्ट सबाई देवे वर। जो जन मंगे आए दर। आपणी किरपा देवे कर। आप खुल्हाए आत्म दर। जो जन मंगे साचे घर। आपणी किरपा करे हरि। जोत जगाए अंदर वड़। हो जाए रुशनाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप दिखाए साचा घर। सच घर सच दुआरा। सच घर सच पसारा। सच घर सच वरतारा। सच घर सच दरबारा। सच घर सच भण्डारा। साचा हरि आप वरतारा। गुरमुख आए दर देवे वर, ना दिसे पासा हारा। रसना जप जाए तर, झूठा जगत सर्ब विहारा। भरम भउ ना आवे डर, जिस मिल्या हरि पुरख अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मंग आत्म रंगो साचा दर दरबारा। सच दरबार आप लगाया। पहली माघ दया कमाया। काग हँस गुरसिख बणाया। राज हँस आपे आप अख्वाया। साचा बंस गुर संगत आप बणाया। पूर कराए आसा मनसा, जिस जन रसनी गाया। दुष्ट सँघारे जिउँ काहना कंसा, जोत सरूपी जामा पाया। गुरसिखां देवे सोहँ आप आपणी दया कमाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे कराए जो मन भाया। मन भाए सो कराए, ना देर लाए, अन्धेर गंवाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सोहँ नाम जपाए। सोहँ जप साचा नाम। सोहँ जप पूरन काम। सोहँ जप मिले साचा शाम। सोहँ जप, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे साचा दान। सोहँ जप आत्म रस। प्रभ अबिनाशी होए वस। मिटे अन्धेर दुःख जायण नस्स। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे जोत प्रकाश कोट रवि ससि। जोत जोत जोत, हरि जोत जगाई। जोत जोत जोत,

हरि खेल रचाई। जोत जोत जोत, हरि मेल मिलाई। जोत जोत जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ विच मात जोत प्रगटाई। जोत जोत जोत प्रभ जोत प्रगटा के। जोत जोत जोत, प्रभ गुरसिख दीपक जोत जगा के। जोत जोत जोत, सोहँ साचा मोख रखा के। जोत जोत जोत, प्रभ रोग सोग जाए मिटा के। जोत जोत जोत, प्रभ सभ जाए भेख गवा के। जोत जोत जोत, प्रभ गुरसिखां दरस अमोघ दिखा के। जोत जोत जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जाए जोत जगा के। जोत जोत जोत, हरि जोत पसारा। जोत जोत जोत, हरि जोत अधारा। जोत जोत जोत, लक्ख चुरासी विच पसारा। जोत जोत जोत, हरि आप दिसाए साचा घर बाहरा। जोत जोत जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। जोत जोत जोत निरँकारी। जोत जोत जोत, हरि एका जोत तीन लोक पसारी। जोत जोत जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा आप निवारी। जोत जोत जोत, जगे जगत जोती। गुरसिख बणाए गुर साचा माणक मोती। सृष्ट सबाई रही सोती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए चार वरन एका गोती। चार वरन इक्क कराणा। ऊँच नीच भेव चुकाणा। आप आपणी सरनी लाणा। राजा राणा तख्तों लाहणा। आप आपणा भेव खुल्हाणा। जोत सरूपी खेल रचाणा। सृष्ट सबाई भेढ़ भिड़ाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क उखेड़ जगत लगाणा। इक्क उखेड़ा आप लगाए। नगर खेड़ा कोई रहण ना पाए। धरत मात तेरा खुल्हा वेहड़ा आप कराए। कलिजुग जीवां झेड़ा आप चुकाए। गुरमुख साचे वेख मार झात, प्रभ अबिनाशी तेरे विच समाए। आपे पुच्छे तेरी बात, वेले अन्त होए सहाए। सोहँ देवे साची दात, आत्म देवे दीप जगाए। सोहँ सच शब्द वड करामात, तीन भवन प्रभ बूझ बुझाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तीन लोक जै जै जैकार कराए। तीन लोक होए जै जैकारा। सोहँ शब्द उपजे साची धारा। साची जोत जगाए काया झूठे महल मुनारा। गुरमुख साचे आप उठाए खिच ल्याए चरन दुआरा। आप आपणा दरस दिखाए रूप दिखाए, अगम्म अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप करे सर्ब पसारा। जोत सरूपी सर्ब पसार। एका जोत जगत विहार। प्रभ साचे दी साची कार। आवे जावे वारो वार। पावे गावे गुरमुख कर विचार। साचा तीर्थ गुर चरन नहावे, प्रभ देवे मोख द्वार। बेमुख बन्न्हण झूठे दाअवे, वेले अन्त होयण ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां बेड़ा कर जाए पार। गुरसिखां बेड़ा आपे बन्न्ह। दूई द्वैत भाण्डा भन्न। आत्म जोत जगाए चढ़ाए साचा चन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए तन। आत्म अन्धेर आप गंवाए। ना लाए देर जोत जगाए। एका जोत डगमगाए। काया कोट होए रुशनाए। कढ्ढे खोट पापां मैल धुवाए। सोहँ शब्द लगावे चोट,

अनहद धुन उपजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरा बजर कपाट आप खुल्हाए। बजर कपाटी आपे खोल्हया। गुरसिख पूरा पूरे तोल तोल्लया। जोत सरूपी वसे विच गुरसिख, सोहँ शब्द आपे बोल्लया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द सबाई बणाए आपे गोल्लया। सर्ब जीआं एका माण। सर्ब जीआं एका ताण। सर्ब जीआं एका पुरख सुजान। सर्ब जीआं एका दीसे, आत्म विच भगवान। सर्ब जीआं एका देवे सोहँ साचा दान। सर्ब जीआं एका एक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। एका एक एक अनेक। अनेक अनेक वरते एक। एका एका एका साची टेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे सृष्ट सबाई करे बुध बिबेक। सतिजुग साचा सच चलाए। साचा रथवाही आप अख्वाए। एका थाएँ चार वरन बहाए। ऊँच नीच कोई रहण ना पाए। सर्ब बीच आप समाए। आत्म गंढ्ढां देवे पीच, फिर खुल्ल ना जाए। आपे होए नीचो नीच, कीटां अंदर कीट समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग एका संग आप निभाए। सच्चा होए आपे संगी। आपे वरते होए बहु रंगी। सृष्ट सबाई रंग बरंगी। वेले अन्त होए तंगी। माया नागणी जाए डंगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए आपणे रंग रंगी। वाक भविख्त आप जणाए। साची लिख्त आप लिखाए। लिखाए लिख्त आप वरताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ जो रिहा लिखाए। वरते वरतावे वरतावण जोग। ना कदे चिन्त ना कदे सोग। ना कदे लग्गे कोई दुःख, ना लग्गे रोग। ना कोई भोगे झूठा भोग। एका दिसे साचा जोग। गुरमुख कमाए दिखाए दरस अमोघ। सोहँ शब्द चुगाए गुरमुख साचे साची चोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे कट्टे हउमे रोग। हउमे रोग आप कटाया। चिन्ता सोग आप मिटाया। शब्द रस भोग आप दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दर आप खुल्हाया। अतम खोल्हे सच द्वार। साची देवे शब्द धुन्कार। खुल्ले सुन्न होए आकार। टुट्टे सुन्न दिसे करतार। गुरमुख विरले चुण देवे शब्द अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे सति विहार। गुरमुख साचे आप जगाए। आप आपणी सरन लगाए। गुरमुख साचे सच घर विच सद समाए। थिर घर वसे हरि साचे धाम आप रहाए। किरपा कर चुकाए डर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोती जोत मिलाए। जोती मेल आप मिलईआ। आपे चढ़ाए साची नईआ। पार कराए दूई द्वैत दवईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग रंगईआ। एका रंग सच रंगावणा। सोहँ मजीठ आप चढ़ावणा। कलिजुग जीव कौड़े रीठ भन्न वखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आप वरतावणा। भाणा वरते विच संसार। सृष्ट सबाई होए दो फाड़। आप उठाए सोए जगाए, खण्डे फड़ाए हत्थ दो धार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप करे सच विहार। आपे करे सर्ब अख़ीर।

आपे उठाए वड वड सूरबीर। एका पिलाए हँगता नीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई जाए पीड़। आप उठाए बली बलवाना। वेखे खेल जिउँ कृष्ना काहना। जोत सरूपी विष्नूं भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चण्ड प्रचण्ड विच नवखण्ड शब्द सरूपी आप कराणा। नव खण्ड चण्ड प्रचण्ड। आपे देवे सर्ब वंड। बेमुखां कलिजुग आई कंड। सोहँ शब्द लगाया विच सिर डण्ड। रंडी होई मात सर्ब वरभण्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां भन्न वखाए काया कच्चे अंड। एका वर मुहम्मद मंगया। प्रभ देवे वड सूरा सरबन्गया। सदी चौधवीं होए भन्गया। आप मिटाए सर्ब फरंगीआं। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग रवे नव रंगया। आपे लेखा लेख लिखाए। अहमद मुहम्मद वक्त चुकाए। सच धाम सच राम जिस दोए नष्ट कराए। चार यारां संग रलाए। होए ख्वार थाएँ ना पाए। बेमुख फिरन जिउँ भेडां अवारा, पाली कोई दिस ना आए। घर घर रंडीआं होवण नारां, कन्त सुहागण ना कोई हंढाए। मौत बणाए लाड़ी लाड़ा, कलिजुग हत्थीं आप प्रनाए। उप्पर धवल बणाए रचाए अखाड़ा, दोवें दल आप उठाए। आपे पकड़े आपे मारे, भेव ना किसे जणाए। आपे करे सृष्ट उजाड़ा, जीव जन्त कोई दिस ना आए। वाहो दाही विच पहाड़ां, ना कोई बेली होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त चार कुन्ट वहीर कराए। सदी चौधवीं होए अख़ीर। तुरकां लाहे आपणे चीर। ना कोई दीसे पीर फ़कीर। पीर पैगम्बर औलीआ ना कोई देवे किसे धीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सोहँ शब्द चलाया तीर। सोहँ शब्द चलाया अणयाला। घर घर रोवण अञ्याणे बाला। बेमुखां ना वेला अन्त संभाला। प्रभ अबिनाशी ना साचा भालया। सन्त मनी सिँघ जो वखा ल्या। आप आपणे कंध उठा ल्या। अनन्दपुरी दे विच फिरा ल्या। होका दे दे शब्द सुणाए, वाली दो जहानां विच मात दे आ गया। जोत सरूपी जामा धार, अमाम मैहन्दी नां रखा ल्या। आपे देवे सारयां वर, उम्मत नबी रसूल दी कलिजुग अन्त मिटा ल्या। वेला अन्त ना जाए टल, वेला गया हत्थ ना आ गया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान खेल वरताए। भेख मिटाए सृष्ट भुलाए। जोत जगाए अग्न कुण्ड विच मात रखाए। धर्म राए हरि पहरा लाए। इजराईल दर दर फिराए। जबराईल हुक्म सुणाए। इसराफील बिगल वजाए। मेकाईल राज़क रिज़क रहीम रिज़क पुचाए। वेले अन्त कलिजुग सर्ब छुप जाए। अचरज खेल महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी आप वरताए। मनी सिँघ सच कर्म कमाया। मन्नया हुक्म धुरों जो आया। सृष्ट सबाई आख सुणाया। सुणे लोकाई ना भेव जणाया। पावे दुहाई बेमुखां हस्स हस्स के वक्त गंवाया। हत्थ कलम उठाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान देवे वड्याई, सृष्ट सबाई लेख लिखाई, वेले अन्त ना कोई होए सहाया। लिख्या लेख ना कोई मिटाई। माझा हद्द घविंड

रखाई। सन्त मनी सिँघ साची कलम आपणे हत्थ चलाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूपी बूझ बुझाई। कलम उठाए सतिगुर पूरा। शब्द उपजाए निहकलंक वड सूरन सूरा। शब्द धुन टुट्ट ना जाए, सिर रक्खे हत्थ प्रभ सर्ब कला भरपूरा। शब्द भण्डार दिया हरि साचे, विच मात निखुट्ट ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणे भाणे विच रखाए। साचे सन्त पाई सार। चरन कँवल किया प्यार। उप्पर धवल रिहा उधार। होया मवल खिड़ी गुलजार। वस्सया सँवल कृष्न मुरार। शब्द सरूपी होया बवल, एका दीसे रंग करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपे बख्शे चरन प्यार। चरन प्रीती दया कर। आप वसाया साचा घर। नाम दवाया साचा वर। शब्द चलाया किरपा कर। भरम चुकाया जोत धर। मानस जन्म सुफल कराया, आप आपणा मेल कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप अचरज खेल कर। अचरज खेल कर वरतंत। करे खेल प्रभ भगवन्त। गुरमुख विरला जाणे सन्त। जिस हिरदे वस्सया साचा कन्त। कलिजुग माया पाई बेअन्त। आप बैठा विच इकन्त। जोत सरूपी विच जीव जन्त। ना रंग रूप एका सति सरूप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पूरन भगवन्त। पूरन भगवन्त पारब्रह्म। सन्त मनी सिँघ विचारे कर्म। आप संवारे गुरमुख जरम। आप निवारे आत्म भरम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप दिसाए एका साचा ब्रह्म। साचा ब्रह्म सच पछाणा। प्रभ अबिनाशी साचा जाणा। सर्ब घट वासी रसन वखाणा। सृष्ट सबाई करे रासी, एका रंग रंगाणा। प्रगटाए जोत घनकपुर वासी, मिटाए माण सर्ब अभिमाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ दिया नाम निधाना। सन्त मनी सिँघ देवे वड्याई। हरन फरन प्रभ देवे खुल्हाई। एका सरन आप रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत विच टिकाई। साची जोत प्रकाश कर। आत्म अन्धेरा नास कर। आपे हिरदे वास कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द धुन उपजाए, एका बाणी अकाश कर। आपणी बाणी आप वखाणे। आपणी महिंमा आपे जाणे। जीव जन्त ना बूझ बुझाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए, सन्त मनी सिँघ देवे माणे। सन्त मनी सिँघ माण दवाया । सन्त मनी सिँघ आण रखाया। सन्त मनी सिँघ सोहँ साचा बाण लगाया। सन्त मनी सिँघ दसवां दर किरपा कर साचे हरि आपे आप खुल्हाया। जगे जोत अगम्म अपारा, जोत सरूपी दीप टिकाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा दरस दिखाया। आप आपणा दरस दिखाए। एक अनेक होए ना भेव जणाए। जोत सरूपी तेज अग्न जोत लगाए। आप बणाए साची पैज, सतिगुर मनी सिँघ सिर उप्पर हत्थ टिकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बैठ आप अटंक कलि खेल वरताए। खेल वरताए अपर अपारी। ना कोई जाणे जीव संसारी। सृष्ट सबाई रही झक्ख मारी। ना कोई सच द्वारी।

ना कोई पाए मोहण माधव कृष्न मुरारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौथे जुग आया मात निहकलंक नरायण नर अवतारी। नर अवतार जामा धारे। सर्ब नरां प्रभ आप विचारे। सर्ब दरां घरां प्रभ आप पसारे। सर्ब सरां प्रभ चरन दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले लाए किनारे। गुरमुखां दीसे सच किनारा। बेमुख वहण विच मंझधारा। ना कोई दीसे आरा पारा। मदिरा मासी होए ख्वारा। मिले ना थाउँ सच दुआरा। साचा न्याउँ हरि वड सरकारा। पकड़े बाहों जो जन दर आए हँकारा। एथे ओथे मिले ना थाउँ, दूई दुष्ट रहे झक्ख मारा। प्रभ अबिनाशी अगम्म अथाहों, अन्त ना पारा वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सच दरबारा। सच दरबार मात लगाए। ज़ात पात सर्ब मिटाए। एका नात गुर चरन रखाए। तट्ट तीर्थ कोई रहण ना पाए। साचा सीरथ प्रभ अमृत आत्म मुख चुआए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप आपणी दया कमाए। दया कमाई साचे सन्त। होए मिलावा साचे कन्त। मिटया आवण जाण, जोत सरूपी बैठा विच हरि इकन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप तराया मनी सिँघ साचा सन्त। मनी सिँघ तेरी पूरन आस। बीस बरस आत्म रक्ख प्यास। मन बैरागी होया उदास। सिँघ साहिब महताब सिँघ छड्डुया चरन निवास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपे जोत जगाए पुरख अबिनाश। बीस बरस आस रखा के। दिवस रैण रसना गा के। साचा वर साचा घर सिँघ महताब कोलों आया पा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुत्तयां अवाज़ लगाए सन्त मनी सिँघ आप जगा के। सन्त मनी सिँघ अवाज लगाई। आप आपणा दरस दिखाई। कँवल नैण सुंदर कुण्डल मुकट बैण मुकंद मनोहर लखमी नरायण जोत प्रगटाई। गुरमुख साचे सृष्ट सबाई झूठा वहण, आओ चल सरनाई। दरस पेखो नेत्र नैण, एका जोत तीन लोक रुशनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ विच मात रामगढ़ीआं घर जोत जगाई। सन्त मनी सिँघ सुणे धुन्कारी। कौण खड़ा मेरे आत्म दर द्वारी। ना कोई दीसे एका शब्द उपजे साची धारी। आपे विगसे जोत सरूप हिरदे चाउ भरम भउ निवारी। कलिजुग लाया साचा दाउ, सार पासा कोई विरला खेडे खेड सन्त खिलाड़ी। गुर पूरे सद सद शाबाश, गुरसिखां लाज रखाए जिन्हां चरन छुहाई दाढ़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुखां माण दवाए, एका जोत जगाए विच बहत्तर नाड़ी। गुरसिख तारे कर्म विचार। गुरमुख तारे भरम निवार। गुरसिख तारे आत्म तोड़ सर्ब हँकार। गुरसिख तारे हउमे ममता आत्म मार। गुरसिख तारे आपे देवे चरन प्यार। गुरसिख तारे जो आए भुल रुल जन चरन द्वार। गुरसिख तारे आप उतारे सिरों पापां भार। गुरसिख तारे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म जाए सुधार। गुरसिख तारे देवे साची मति। गुरसिख तारे आप धराए धीरज यति। गुरसिख तारे सोहँ बिजाए साचे वत्त। गुरसिख तारे चरन

प्रीत निभावे साचा नत्त। गुरसिख तारे शब्द सरूपी देवे साचा तत्त। गुरसिख तारे आपे देवे साची मति। गुरसिख तारे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे रक्खे अन्तिम पति। आपणी पति आप रखाए। गति मितक आपणी आप जणाए। यति सति तत्त इक्क थां वसाए। सोहँ साचा सूत्र कत्त, रसना चरखा आप चलाए। रक्त बूंद पाणा लाए रत्त, ताणा पेटा आप बणाए। वेला गया ना आवे हत्थ, काया ताणा ना कोई सुलझाए। कोई ना चाढ़े साचे रत्थ, वेले अन्त ना कोई छुडाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तराए आपे दे मति समझाए। बुध कबुधी देवे शब्द धीर। आप पिलाए अमृत साचा सीर। दूई द्वैत देवे चीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए दस्तगीर। दस्तगीर सच दरगाह। होए सहाई साचे थां। उथे लेखा कोई मंगे ना। गुरसिख घर साचे जाए कलि संगे ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपे आप बहाए चंगे थां। साचा धाम हरि दरबारा। गुरसिख वेखे खेल अपारा। साचा मेल इक्क करतारा। बिन बाती बिन तेल, जोत सरूपी दीपक किया उज्जयारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम लए छुडाए आप बहाए चरन दुआरा। वेला अन्त अन्त संभाल। लुट्टया माल धन ना हो कंगाल। पंच चोर बैठे लायण संन्ह, आपणा पल्ला आप संभाल। प्रभ अबिनाशी बेड़ा देवे बन्न्ह, जगत तृष्ना छड्ड जंजाल। काया भाण्डा प्रभ देवे भन्न, केहड़ी वस्तू तेरे चल्ले नाल। कलिजुग जीव क्यों होया आत्म अन्ध, प्रभ अबिनाशी सद समाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरसिखां करे आपे प्रितपाल। आपे पाले आपे पोसे। आपे बणाए संग शब्द तोसे। धर्म राए ना मारे घोसे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप लुहाए गुरसिख तेरे काले सूसे। बुध बिबेक आपे कर। एका वेख साचा हरि। जेहड़ा वस्सया साचे दर। दिवस रैण बैठा रहे तेरे आत्म घर। चोरां यारां ठग्गां प्रभ आपे लए फड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका शब्द सुणाए, गुरमुख दूजा अक्खर ना विच जगत पढ़। एका अक्खर आप सुणाया। साची वक्खर वस्त रखाया। जोती जोत सरूप, आपणा आप गुरसिख तेरे विच मस्त रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे वड अनमुल्लड़ा लाल, कलिजुग माया भुल क्यों ख़ाक रुलाया। माया छाया निभे ना नाल। झूठी काया जगत ज़ंजाल। भाई भैण ना देवण बाहल। एका वेख आत्म साची धर्मसाल। जिथ्थे बैठा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दीपक बाल। गुरसिख कदे मति ना होए खोटी। आपे भेव खुल्हाए पकड़ उठाए चोटी। सोहँ शब्द मगर लगाए तन लगाए सोटी। बेमुख प्रभ पीड़ पिड़ाए, आप कराए बोटी बोटी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर द्वार सद खड़े रहण भिखार कोटन कोटी। गुरसिख वक्त सच संभाल। साचा दिया प्रभ नाम धन माल। आत्म वेख अमुलड़ा लाल। झूठी माटी देख क्यों भुल्लड़ा, अन्त ना निभे तेरे नाल। कलिजुग

विच क्यों आपे रुलड़ा, आपणा वक्त आप संभाल। अमृत निझरों अजे ना डुलड़ा, प्रभ अबिनाशी दए प्याल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अपणा बिरद लए संभाल। आपणा बिरद आप संभाले। आपे करे सच वरतारे। गुरमुख साचे झूठी काया झूठे महल मुनारे। साक सज्जण सैण भाई भैण अन्त खड़े रहण दुआरे। एका देवण तैनूं वड्याई, भाण्डा भन्नण अधविचकारे। आया गया गया ना आया, ना कोई होए सहारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे रखे पति सुरत शब्द दे मति सिख समझाए। देवे मति शब्द ज्ञाना। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना। सुन्न समाध खोल्हे आप भगवाना। बोध अगाध शब्द लिखाणा। आत्म सोध दया कमाणा। वड जोधन जोध राज रजाना। सच तख्त सच सुल्ताना। साचो सच प्रभ वरताणा। धरे जोत वाली दो जहान, साच करे विच टिकाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा लक्ख चुरासी गेड़ कटाणा। लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। मात गर्भ गुरसिख ना आए। आपणी किरपा गुरमति गुर कमाए। गुरसिख चले गुर के भाए। आप आपणा लए बचाए। काम क्रोध लोभ मोह दए तजाए। सनकादकां संग ना प्रेम वधाए। तेरे गुण प्रभ आप बुझाए। हँकार निवार प्रभ सोझी पाए। काया कोट चार द्वार, प्रभ अबिनाशी विच समाए। बिन गुर पूरे अन्ध अंध्यार, ना कोई वेखे ना वेख वखाए। प्रभ अबिनाशी किरपा धार, पूरन बूझ बुझाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम भेव गूझ खुल्हाए। बाल जवानी गई बीत। अजे ना होई काया सीत। आत्म होई ना अजे अतीत। गुरमुख डोले ना तेरी कदे नीत। जिस जन बख्शे चरन प्रीत। चरन परस मिटा हरस, प्रभ देवे दरस मानस जन्म जाए जग जीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर तरस गुरसिख तेरी आपे परखे नीत। आपे परखे परखणहारा। आपे रक्खे रक्खणहारा फड़ फड़ कीने वक्खे, सोहँ कसवटी रंग अपारा। गुरमुख विरला लाह साचा खट्टे, जो चरन करे निमस्कारा। प्रभ अबिनाशी दिसे घट घटे, जोत सरूपी सर्ब पसारा। कलिजुग जीव जगत तमाशा जिउँ बाजीगर खेल तमाशा नटे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सच दुआरा ना कोई तीर्थ ना कोई तट्टे। गुरसिख आत्म देख विचार। साचा मूल ना अन्तिम हार। लहणा देवणहार इक्क करतार। देवणहार सर्ब संसार। गुरमुख विरला पावे सार। शब्द भण्डारा देवे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर आप लँघाए गुरसिख पार। गुरसिख साचा पार कराया। जोत सरूपी दरस दिखाया। मातलोक सच मार्ग लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा सांग वरताया। आपणा सांग आप वरता के। सोहँ कांग आप चढ़ा के। गुरमुख साचे विच नुहा के। साचा जाम नाम प्या के। पूरन काम आप करा के। सुक्के ताम हरे करा के। एका जोत राम जगा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा कर्म कमा के। कर्म कमाया विच प्रभ मात।

सोहँ देवे साची दात। चार वरन कराए भैण भ्रात। गुरमुख पढ़ाए इक्क जमात। होए सद प्रकाश, ना होए अन्धेरी रात। प्रभ अबिनाशी सद अबिनाश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब देखे मार झात। सर्ब वेखे वेख वखाणे। आपणा भाणा आपे जाणे। राणे महांराणे दर दर फिराणे। गुरमुख सुघण स्याणे प्रभ दर बहाणे। गरीब बाल अञ्याणे प्रभ गले लगाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीव भुनाए जिउँ भठयाले दाणे। जोत भठ आप तपाए। कलिजुग उलटी लट्ठ आप गिढ़ाए। एका वक्त सृष्ट सबाई आए। इक्ठ थल जल जल थल वहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड राठन राठ महांकाल आप बुलाए। महांकाल आए द्वार। प्रभ अबिनाशी चरन करे निमस्कार। करो हुक्म सच्ची सरकार। सच तख्त बैठा गिरधार। सृष्ट सबाई रिहा कर्म विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप वरताए आपे बणया लेख लिखार। महांकाल हरि दर ते आए। प्रभ अबिनाशी सीस निवाए। साचा हुक्म जगत लगाए। बीर बैताली सर्ब उठाए। हाकन डाकन संग रलाए। आवण चल विच मात दे धाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आप वरताए। बीर बेताले होए बेहाले। खाली होए लहू प्याले। साची मद रहण मतवाले। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख जीवां आप पिड़ाए, भर प्याए प्याले। सोई थाएँ सुहंदा, जिथ्थे गुर चरन रखंदा। सोई थान सुहंदा, जिथ्थे गुर भरम गवंदा। सोई थान सुहंदा, जिथ्थे गुर दरस दिखंदा। सोई थाएँ सुहंदा, जिथ्थे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव खुल्हंदा। कलि थान सुहंदा, हरि खोल्हे भेदा। दस अट्ठ अठारां गाए रहे, भेव ना पायण चार वेदा। हरि हिरदे विच समाए रहे, ना कोई कथे विच कतेबां। एका जोत जुगो जुग जगाए रहे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अछल अछेदा अभेद अभेदा। अछल अछलीआ होए आप। होए आप आपे करे वड प्रताप। आपे होए सृष्ट सबाई माई बाप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द जपावे साचा जाप। अनहद शब्द वजावे साचा वाजा। हउमे रोग जलावे मारे तीनो तापा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव खुल्हावे आपणा आपा। साचा भेव जाए खुल्ल। गुरसिख पूरे तोल जाए तुल। मिल्या नाम सोहँ वड अनमुल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ किया कलिजुग दिया किया गुल। कलिजुग दीपक आप बुझाया। वेद अथर्बण रहण ना पाया। सतिजुग साचा मार्ग लाया। पहली माघ आप लिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा कर्म कमाया। सतिजुग लग्गा पहली माघ। साध संगत तेरे जागे भाग। आपे धोए पापां दाग़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गल लगाए दया कमाए माण दवाए, जिउँ बिदर अलूणा खाया साग। निमाणयां निताणयां प्रभे आपे आप पछाणयां। गुरसिखां भगत अंञाणयां, प्रभ देवे ब्रह्म ज्ञानया। खाणी बाणी विच समाणयां। भेव ना पाए कोई वेद पुराणयां।

चार वरन इक्क थां बहाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाणयां। सोहँ चले तीर कमाना। साचा दिसे तीर निशाना। होए अन्धेर ज़िमीं अस्माना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुन्ट कराए दीवाना। जोत सरूपी जामा धार। कलिजुग आया कल्गी अवतार। माझा देस होए ख्वार। लेख लिखावे बैठ विच दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वरते जगत वरताए सुंञे दिसण महल मुनार। सुंञे होयण महल मुनारे। छड्ड छड्ड भज्जण नारी नारे। घर घर होए हाहाकारे। गुर बिन कोई ना लँघावे पारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर सृष्ट सबाई करे ख्वारे। माझा देस होए ख्वारी। बेमुख जीवां किस्मत माढ़ी। भुल्ले रहे जीव गंवारी। घर साचे आया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर अवतारी। हरि मन्दिर सच दुआरे। कलिजुग जीव होए अंध्यारे। आपे वरते खेल अपारे। दुष्ट दुराचर आप सँघारे। फड़ फड़ डोबे विच मंझधारे। सच नगरी हाहाकारे। साची जोत गई मार उडारे। गुर अर्जन सुंञा होए दर दरबारे। जिथ्थे सेवा करी प्रगट जोत आप निरँकारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां करे ख्वारे। बेमुखां करे आप पछाण। भुल्ले जीव सर्ब अञ्याण। माया लग्गी धर्म गंवाण। पूजा लालच सर्ब अस्थान। फड़ फड़ पीड़े जिउँ कोहलू घाण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। गुर धाम जिस धर्म गंवाया। वेले अन्त प्रभ दे वखाया। नक्क नत्थ दर दर फिराया। वेले अन्त काला मुख विच जगत रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल रचाया। साध संगत तेरा साचा संग। आदि जुगादी एका रंग। प्रभ दर मांगे साची मंग। दु:ख रोग प्रभ कीने भंग। आप छुडाए बद्धे अंग। आप कटाए गुरसिख भुक्ख नंग। होए सहाई सदा अंग संग। बेमुख भन्नाए जिउँ काची वंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस पार जाए लँघ। पार लँघे गुरसिख संसारा। आप वखाए साचा दरबारा। साचा धाम जोत अकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी इक्क पसारा। पसर पसारा आपे किया। सृष्ट सबाई आप जगाया एका दिया। आप रखाए साची निया। आपे आप किया आपणा हिया। सोहँ बीज साचा बिया। अमृत देवे साचा रस, गुरमुख विरले गुर दर पिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए निर्मल जीआ। आप कराए निर्मल निर्मला। साचे फल लगाए जो खड़े रुक्ख सिंमला। आत्म अग्न बुझाए, बले जो बालू बिमला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बरसाए सोहँ मेघ रिम झिमला। सोहँ मेघ आप बरसाए। आत्म तृप्त कराए गुरसिख ध्याए। कलिजुग तप्त कढाए होए अन्त सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपे भाणे विच समाए। टुट्टी गंढुणहार गोपाला। आप होए भगत रखवाला। भगत वछल रच्छक दीन कृपाला। सोहँ देवे साचा धन माला। सोहँ शब्द देवे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच कलिजुग किया उजाला।

पहली माघ वक्त सुहाया। फूलन वरखा आपे लाया। गुरसिखां सिर छत्र झुलाया। दु:ख दलिद्दर मगरों लाहया। छल छिद्र कोई नेड़ ना आया। अमृत मेघ बरसे अंदर, गुरसिखां हरि पर्दा लाहया। आपे तोड़े आत्म जंदर, दूई द्वैत नास कराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत आप आपणा दरस दिखाया। सिँघ मनी इक्क खेल अपारा। साचा किया मात विहारा। निहकलंक लीआ अवतारा। घनकपुरी धाम अपारा। देवे माण जो जन आयण चल दुआरा। बेमुख चारों तरफ फिरन बिल्लायण, ना दीसे कोई किनारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ बूझ बुझारा। सन्त मनी सिँघ शब्द जणाए। आपणा हुक्म आप सुणाए। देवीआं आवण सर्ब सरनाए। आपे लए मुख छुपाए। भरम भुलेखे आप भुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आप वरताए। सन्त मनी सिँघ हुक्म एका दूजे आप मिटाया। शब्द बूझ आप लिखाया। दर घर साचा सूझ, निहकलंक दर्शन पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सुरत सन्त मनी सिँघ आप दवाया। देवीआं फिरन चार चुफेर। आत्म होई सर्ब अन्धेर। शब्द डण्डा हरि हत्थ फड़ाया, सन्त मनी सिँघ ल्याया घेर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाए दया कमाए, जामा पलटे दूजी वेर। आपे सेवा पूज चुकाई। आप आपणी ना बूझ बुझाई। भेव गूझ आप रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा आप रिहा छुपाई। रैण भिन्नड़ी आप सुहाए। साध संगत दर मंगल गाए। दुक्खां संगल आप कटाए। सोहँ कंगण तन पहनाए। एका वर साचा मंगण, साचा नाम प्रभ भिच्छया पाए। आत्म चाढ़े प्रभ साची रंगण, पूरन इच्छया आप कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ दया कमाए। भिन्नी रैण वक्त सुहेला। साध संगत गुर चरन कराया मेला। आपे होए साचा सज्जण सुहेला। मानस जन्म सुफल कराया, अमृत फल लगाया अमृत केला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, परब्रह्म अचरज खेल कलिजुग खेला। भिन्नी रैण सदा सुखदाई। साध संगत गुर चरन बहाई। साचा प्रभ देवे वड्याई। साध संगत भैण भ्रा बणाई। साचा साक सज्जण आप हो जाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हत्थ रक्खे वड्याई। भिन्नी रैण रंग साचा माण। भिन्नी रैण होए मेल भगत भगवान। भिन्नी रैण आप चुकाए जम की कान। भिन्नी रैण सोहँ शब्द आप वरताए ल्याया धुर फ़रमाण। भिन्नी रैण साध संगत गुर दर साचा सच निशान। भिन्नी रैण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए महान। भिन्नी रैण जगे जोत। चार वरन कराए एका गोत। गुरसिखां मैल आत्म धोत। बेमुख कलिजुग जीव रहे सोत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खुल्हाए गुरसिखां सोत। भिन्नी रैण रंग अवल्लड़ा। मात जोत प्रगटाए त्रैलोकी नाथ इकल्लड़ा। एका शब्द चलाए वरताए, गुरसिखां होए भारा पल्लड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द

लिखाए जपाए साचा शब्द सुखल्लड़ा। भिन्नड़ी रैण साचा रंग। जन भगतां लई प्रभ दर मंग। आप वहाए अमृत साची गंग। सोहँ साचा आप सुणाए सतिजुग साचा परसंग। बाकी सभ वेले अन्त कराए भंग। एका माण एका ताण एका आण जगत रखाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड सूरा सरबंग। भिन्नड़ी रैण साचे दात। गुरमुख वेख मार झात। प्रभ अबिनाशी खोल्हे तेरा आत्म ताक। एका जोत जगाए वरते ताको ताक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे आप बणाए पाकी पाक। भिन्नड़ी रैण रंग मजीठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई जाए पीठ। भिन्नड़ी रैण रंग चलूल। गुरसिख संभाले आपणा मूल। बेमुखां लाए शब्द त्रिसूल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जोत खिचाए अठसठ तीर्थ नबी रसूल। भिन्नड़ी रैण देवे वर। प्रगट जोत आया घर। कर दरस गुर संगत गई तर। खाली भण्डारे प्रभ जाए भर। गुरसिखां चुकाए जम का डर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा सिर हत्थ धर। भिन्नड़ी रैण चमकण तारे। गुरसिख खड़े निहकलंक तेरे चरन दुआरे। सतिजुग साचे आप बणाए आपणे सच दुलारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर्म धर्म दोए आप संवारे। भिन्नड़ी रैण वक्त सुहावणयां । भिन्नी रैण गुरसिख जगावणयां । भिन्नड़ी रैण सोहँ शब्द जपावणयां। भिन्नी रैण स्वास स्वास ध्यावणया। भिन्नड़ी रैण दुखड़ा नास करावणयां। भिन्नड़ी रैण मुखड़ा उज्जल गुरसिख करावणयां। भिन्नड़ी रैण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा सच वक्त सुहावणयां। भिन्नड़ी रैण रंग अगम्मा। आप मिटाए गुरसिख भरमां। गुरसिख साचा प्रभ दर आए, आप लिखाए साचा कर्मा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुफल कराए मानस जन्मा। भिन्नी रैण वेख विचार। सोहँ देवे शब्द अधार। उपजे धुन खुल्ले द्वार। गुरमुख साचे चुण पहली माघ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए जाए तार। भिन्नड़ी रैण जिस जन वखाणी। भिन्नड़ी रैण गुरमुख विरला जाणे प्राणी। भिन्नड़ी रैण प्रभ अबिनाशी किरपा कर रसन उचारे बाणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे आप बणाए राणी। सच राणी सच सुल्तान। साचे तख्त बैठा भगवान। गुरमुख विरले डीठा जिस किरपा करे महान। सोहँ शब्द जपाए साचा मीठा, आत्म सुख उपजाए मेहरवान। काया कोट कौड़ा रीठा, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, धरे जोत आप बली बलवान। भिन्नड़ी रैण रंग दिखाए। भिन्नड़ी रैण गुरसिख उठाए। भिन्नड़ी रैण प्रभ अबिनाशी तुठ, गुर संगत दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन गए रुठ, शब्द सरूपी मेल मिलाए। भिन्नड़ी रैण साची धार। भिन्नड़ी रैण जगे जोत अगम्म अपार। साचे रंग वसे करतार। बेमुख रोवे गुरमुख हस्से, जिस मिल्या सच भतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका पुरख, सृष्ट सबाई नार। भिन्नड़ी रैण आई मात। भिन्नड़ी

रैण गुरसिखां बणाए साचा नात। भिन्नड़ी रैण आपे होए भैण भ्रात। भिन्नी रैण महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए रहे खुमारी दिवस रात। भिन्नड़ी रैण सद बलिहारी। भिन्नड़ी रैण प्रभ किरपा धारी। भिन्नड़ी रैण गुरसिख गुर चरन साची फुलवाड़ी। भिन्नड़ी रैण महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां देवे सोहँ वड भण्डारी। भिन्नड़ी रैण रंग अपारा। भिन्नड़ी रैण सच भण्डारा। भिन्नड़ी रैण सोहँ वरते विच संसारा। भिन्नड़ी रैण आपे बणे शब्द वरतारा। भिन्नड़ी रैण आप कराए जै जै जैकारा। भिन्नड़ी रैण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां देवे मोख दुआरा। भिन्नड़ी रैण निज घर वास। भिन्नी रैण आप कराए आपणे दास। भिन्नी रैण आप रखाए साचा वास। भिन्नड़ी रैण साध संगत प्रभ सद वसे पास। भिन्नी रैण महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा साची जोत प्रकाश। भिन्नी रैण जोत प्रकाशे। कलिजुग अन्धेर सर्ब विनासे। गुरमुख जीवे गुर चरन भरवासे। आप कराए मानस जन्म रासे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पुरख अबिनाशे। भिन्नी रैण पुरख अबिनाशी। भिन्नी रैण जोत प्रगटाए घनकपुरी वासी। भिन्नी रैण मेट मिटाए मदिरा मासी। भिन्नी रैण सोहँ शब्द जाप जपाए स्वास स्वासी। भिन्नी रैण साध संगत कलिजुग माया तेरे दर तों नासी। भिन्नी रैण प्रभ साचा करे बन्द खलासी। भिन्नी रैण बेमुखां प्रभ दर आए हासी। भिन्नी रैण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत मात प्रकासी। भिन्नी रैनड़ीए तेरे हत्थ वड्याई। भिन्नी रैनड़ीए हरि प्रभ तेरी रुत्त सुहाई। भिन्नी रैनड़ीए पारब्रह्म अचुत्त तेरे विच समाई। भिन्नी रैनड़ीए गुरसिख बणाए साचे सुत्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच तेरी वड्याई। भिन्नी रैनड़ीए तेरा मिटे अन्धेरा। भिन्नी रैनड़ीए प्रभ अबिनाशी पाया फेरा। भिन्नी रैनड़ीए प्रभ साचे ढाहया भरमां डेरा। भिन्नी रैनड़ीए बेमुखां आप भुलाया कर कर हेरा फेरा। भिन्नी रैनड़ीए गुरसिखां दरस दिखाए ना लाए देरा। भिन्नी रैनड़ीए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए तेरा मेरा। भिन्नी रैनड़ीए रंग साचा वेख। प्रभ अबिनाशी नेत्र पेख। भिन्नी रैनड़ीए तेरी रुत्त सुहाए, गुरसिखां लिखाए हरि साचे लेख। सतिजुग साचे सुत उपजाए, आप लगाए साची मेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी धारया भेख। जोत सरूपी भेखा धार। मातलोक ल्या अवतार। कलिजुग अन्तिम करे ख्वार। आपे आप करे करावणहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द बेमुखां लगाए मार। भिन्नी रैनड़ीए तेरी साची जाति। भिन्नी रैनड़ीए आप लगाए गुरसिख फुलवाड़ी शब्द डाल्ह पाती। बेमुखां होए किस्मत माड़ी, वक्त गंवाया सुत्तयां राती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां मुख चुआए अमृत बूंद स्वांती। भिन्नी रैनड़ी अमृत धारा। गुरमुख पीवे गुर चरन दुआरा। झिरना झिरे निझरों अगम्म अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए जोत अकारा। भिन्नड़ीए रैणे गुरसिख साचे गुर चरन बहणे।

आप चुकाए लहणे देणे। सोहँ शब्द आत्म तन पहनाए साचे गहणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दिखाए गुरमुख साचे पेखे तीजे नैणे। भिन्नी रैनड़ीए तेरा साचा रस। प्रभ अबिनाशी होया वस। गुरमुख विरला माणे आत्म रस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दिखाए दरस, गुरसिख गुर दर आए नस्स। भिन्नी रैण साची जाण। इक्क कराए रंक राजान। सोहँ शब्द लगाए बाण। ऊँच नीच सर्ब मिट जाण। आपे मेटे वेद पुरान। ना कोई दीसे अञ्जील कुरान। सच शब्द वरते सोहँ बली बलवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन भाग गुर साचा पाया। पूरन भाग दर घर साचे मंगल गाया। पूरन भाग प्रभ धर्म राए संगल आप कटाया। पूरन भाग विच जूहां जंगल होए आप सहाया। पूरन भाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ माण दवाया। पूरन भाग गुरसिख जाणे। पूरन भाग हरि रंग समाणे। पूरन भाग आप तराए गुरसिख बाल अञ्याणे। पूरन भाग प्रभ अबिनाशी खड़ा सद सरहाणे। पूरन भाग सोहँ गीत जिन्हां रसना गाणे। पूरन भाग परखे नीत आप भगवाने। पूरन भाग आप आपणा बिरद पछाणे। पूरन भाग जोत सरूपी हरि पहरया बाणे। पूरन भाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां जोत जगाए महाने। पूरन भाग सतिगुर सरनाया। पूरन भाग गुरसिख गुर संगत गुर चरन बहाया। पूरन भाग मरन डरन हरि भउ चुकाया। पूरन भाग काग हँस गुरसिख बणाया। पूरन भाग सोहँ चोग आप चुगाया। पूरन भाग गुरसिख गए जाग, प्रभ खिच चरन बहाया। पूरन भाग उपजे राग, वज्जे सोहँ साचा नाद, चार कुन्ट जै जै जैकार कराया। शब्द लिखाए बोध अगाध, भेव किसे ना पाया। पूरन भाग नर नरायण नर जामा विच मात दे पाया। पूरन भाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत बेड़ा बन्हू वखाया। पूरन भाग जगत वडभागे। पूरन भाग गुरसिख साचे चरन लागे। दया कमाई प्रभ पहली माघे। अनहद शब्द वजाए साचे वाजे। आप रखाए गुरसिख लाजे। जोत प्रगटाई विच देस माझे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द घनघोर अनहद धुन अनाहद वाजे। अनहद धुन होए धुन्कार। सोहँ वरते विच संसार। चार कुन्ट होए जै जै जैकार। शब्द सरूपी अस्व अस्वार। पवण सरूपी शब्द हुलार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल करे करतार। पूरन भाग गुरमुख साचा गया जाग। आपे पकड़े गुरसिख तेरी वाग। सोहँ शब्द लगावे आत्म जाग। देवे वड्याई पहली माघ। सतिजुग साचे मिली वधाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन गए चरन लाग। पूरन भाग माण दवाया। पूरन भाग भगत भगवान आपे मेल मिलाया। पूरन भाग गुरसिख साचा चतुर सुजान, प्रभ अबिनाशी आप बणाया। पूरन भाग गुण निधान, सोहँ साचा दान प्रभ झोली पाया। पूरन भाग देवे माण ताण, वाली दो जहान दरगाह साची माण दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गेड़

चुरासी आप कटाया। पूरन भाग तृष्न मिटाई। पूरन भाग मात जोत कृष्न प्रगटाई। पूरन भाग पहली माघ गुरसिखां मिले वधाई। पूरन भाग तीन लोक होए रुशनाई। पूरन भाग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खण्ड ब्रह्मण्ड सर्ब थांईं रिहा समाई। पूरन भाग हरि पाया गम्भीर। पूरन भाग करे शांत सरीर। पूरन भाग सोहँ देवे आत्म धीर। पूरन भाग अमृत आप चुआए आत्म साचा सीर। पूरन भाग, सोहँ रसना आप जपाए, गुरमुखां साचा अमृत नीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे आपणी धीर। आपे देवे धीर ध्याना। आप उपजाए ब्रह्म ज्ञाना। एका जोत जगाए महाना। होए रुशनाए कोटन भाना। मात जोत प्रगटाए कृष्ना काहना। जोत सरूपी पहरया बाणा। निहकलंक कलि नाउँ धराए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। पूरन भाग जप स्वास स्वासा। पूरन भाग आत्म होई रासा। पूरन भाग जिस तज्या मदिरा मासा। पूरन भाग आप रखाया सच घर वासा। पूरन भाग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कराए रासा। पूरन भाग गुरसिख बूज्झया। पूरन भाग घर साचा सूज्झया। पूरन भाग गुरमुख गुर चरन लूज्झया। पूरन भाग आप खुल्ह्रावे भेव गूज्झया। पूरन भाग आप मिटावे भरम भउ दूज्जया। पूरन भाग चार वरन इक्क थां बहावे, साचा राह हरि साचे सूज्झया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां कलिजुग आपे बूज्झया। पूरन भाग भगत विचारा। पूरन भाग शब्द अपारा। पूरन भाग आप दिखाए मुक्त दुआरा। पूरन भाग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे खोल्ह्रे आत्म किवाड़ा। पूरन भाग वेख हरि। पूरन भाग कर दरस जग तर। पूरन भाग कर तरस देवे हरि वर। पूरन भाग अमृत मेघ बरस सुक्के रुक्खड़े हरे जाए कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर। पूरन भाग भरम चुकाया। पूरन भाग प्रभ साचे साचा मार्ग लाया। पूरन भाग सारंग धर भगवान बीठला, आपे होए सहाया। पूरन भाग आत्म चढ़ाए मजीठला, रंग फिर उतर ना जाया। पूरन भाग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन डीठला, भरम भउ दे चुकाया। पूरन भाग हरि मिल्या मीत। पूरन भाग राखो चीत। पूरन भाग एका कराए काया सीत। पूरन भाग हरि दर्शन पाए, मानस जन्म ल्या जग जीत। पूरन भाग आप उपजाए चरन प्रीत। पूरन भाग गुरसिखां परखे आपे नीत। पूरन भाग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप वखाए साची रीत। पूरन भाग जीव कलि जाण, मिल्या जिस हरि भगवान। तुठ्ठ तिस जिस मेल मिलाया आण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाण। सच तख्त सच सुल्ताना। जोत सरूपी एका बाणा। आवण जावण खेल जहाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे वरते आपणा भाणा। आवण जावण खेल रचाया। भगतां हेत जोत प्रगटाया। आपे बणे साचा मित, नित नवित्त विच मात दे आया। आवे जावे वारो वारी। अचरज खेल रंग करतारी। साचा

मेल भगत गिरधारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए वड सिक्दारी। तीन लोक वड सिक्दार। तीन लोक इक्क सरकार। तीन लोक इक्क करतार। तीन लोक एक सोहँ शब्द चले जैकार। तीन लोक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुणे सर्ब पुकार। आपे सुणे सर्ब पुकार। दुखियां दुःख जाए निवार। उपजे सुख आत्म द्वार। मिटे भुक्ख हरि दरस अपार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वेले अन्त जाए तार। तारनहार आप समराथा। आपे राखे दे कर हाथा। सोहँ शब्द चलावे साची गाथा। बिन गुर पूरे ना कोई टिकावे माथा। बिन गुर पूरे ना कोई चढ़ाए साचे राथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगो जुग अकथ्थना अकाथा। अकथ्थ कथा ना जाणे कोए। सभ तों वक्खर आपे होए। एका अक्खर गुरसिख आप परोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ धागा आपे वट्टे रसना सूत्र धोए। गुरमुख रागी गुरमुख वडभागी। गुरमुख आए गुर दर पहली माघी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत जगत विच लाधी। साचा लाधा गुर दरबार। जिस ने बद्धा शब्द सरूपी सर्ब संसार। वड वड भूपन भूप खड़े द्वार। बिन रंग रूपी वडा इक्क सिक्दार। कलिजुग अन्तिम अन्त अन्ध कूपी एका जोत करे अकार। गुरमुख दिसे सति सरूपी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी किरपा धार। किरपा धारे वड गिरधारे। सिरजणहारे खेल अपारे रंग करतारे। कलिजुग जीव ना करे विचारे। भरम भुलेखे सारे मारे। आपे अंदर आपे बाहरे। आपे खड़ा आत्म दर दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी करे खेल अपारे। कदे अंदर कदे बाहर। आपे होए मात जाहर। आपे होए वड वड शाइर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त आप खपाए कलिजुग जीव काइर। वेले अन्त आप खपा के। गोदी मौत आप सवा के। गुरसिखां रक्खे आप उठा के। आपे पकड़े आपणी दया कमा के। सोहँ गुड्डी गुरसिखां हत्थ फड़ा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग रंगाए साचा नाम जपा के। साचा नाम रंग रंगीला। गुरमुख साचे गुर दर पी ला। वेला अन्त कर लै हीला। प्रभ अबिनाशी वेख लीला़। कलिजुग जीव एका जोत अग्न लगाए तीला। अग्न जोत आप लगाए। चार कुन्ट होए दुहाए। वेला अन्त ना कोई देवे थाएँ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पवण पाणी सर्ब समाए। वेला अन्तिम आप लिखा के। सृष्ट सबाई भेव खुला़ के। वड देवी देव दया कमा के। गुरमुख साचे सेव सरन लगा के। बेमुख कलिजुग जीव औझड़ राह पा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त मिटाए सोहँ खण्डा हत्थ उठ के। सोहँ खण्डा हत्थ उठावणा। तोड़े माण जिउँ रामा रावणा। जोधे बीरां मिले ना सौवणा। हुक्मे अंदर आप रखौणा। अचरज खेल वरतौणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरसिख रसना गौवणा। गुरसिख सोहँ रसना गाए, सृष्ट सबाई होए हाए हाए। गुरसिख

सोहँ रसना गाए, चार कुन्ट जीव बिल्लाए। गुरसिख सोहँ रसना गाए, अग्न जोत प्रभ दे लगाए। गुरसिख सोहँ रसना गाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द कटारी रसन चलाए। सोहँ शब्द जगत कटारा। जगत चलाए आप दो धारा। सृष्ट सबाई होए ख्वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख सोहे तेरे चरन दुआरा। सृष्ट सबाई लाए अग्ग। कलिजुग जीव जायण दग। आप उलटाए चौथा जुग। सतिजुग साचा मार्ग लाए, प्रभ अबिनाशी वड अभग्ग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे चरन लग्ग। गुरसिख साचे चरन लागे। वेला अन्त सोए जागो। जो वरते सो वखाए पहली माघो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर चरन दुआरे गुरसिख भागो। वेला अन्त आया कलि। प्रभ का भाणा ना जाए टल। शब्द सरूपी जाए दल। काल रूपी चलाए हल। कलिजुग जीव उखाड़े फल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए जल थल। कलिजुग तेरा अन्तिम अन्त। भुल्ले फिरन वड वड सन्त। ना दीसे प्रभ साचा कन्त। माया पाई आप बेअन्त। मूर्ख मुग्ध बणाए वड वड दंत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची चोग चुगाए आप बणाए साची बणत। लशकर उठे रूसा भारी। चार कुन्ट होए ख्वारी। ईसा मूसा मुहम्मदी भज्जे फिरन वारो वारी। वेला अन्तिम अन्त कलिजुग आ गया, ना दीसे किसे पिच्छा अगाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जीवां एका बणाई मौत लाड़ी। मौत लाड़ी जगत प्रनाया। धर्म राए दे घर वसाया। कुंभी नर्क निवास कराया। मदिरा मास जिस रसना लाया। प्रभ अबिनाशी मनों भुलाया। घनकपुर वासी देवे आप सज़ाया। पुरख अबिनाशी विच मात जोत प्रगटाया। सृष्ट सबाई सद विनासी, इक्क अबिनाश आप अख्वाया। गुरमुख साचे तेरी आत्म रहिरासी, सोहँ रसना गाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे चरन लगाया। मौत लाड़ी साची नार। बेमुख सारे होए भतार। आपे मारे कर ख्वार। दिवस रैण रही वक्त विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल करे करतार। लाड़ी मौत प्रेम विछोह। आपे करे पती ध्रोह। कलिजुग नाता तुट्टा मोह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सोहँ धागे लए परो। मौत लाड़ी घर साचे आई। मातलोक प्रभ आप प्रनाई। सस्स सौहरा देवर जेठ, बेमुख जीव बन्नू लै जाई। आपे रक्खे धर्म राए पैरां हेठ, वड वड दे सज़ाई। जो कलि दिसण वड वड सेठ, तिन्नां मिले ना कोई थाँई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आपणे संग रखाई। मौत लाड़ी सदा हस्से। बेमुख जीव झूठा कन्त ना घर वसे। आपणा भेव धर्म राए आपे दस्से। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां अन्तिम नर्क निवास राह साचा दस्से। लाड़ी मौत गौर कर। सृष्ट सबाई बैठी अंदर वड़। साचा वक्त अन्त कलि आया, जीव आप मिटावे भरम घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा

कर्म कर। ईसा मूसा होए ख्वारी। चण्डी चमकी दो तरफ़ी भारी। वेखे खेल आप गिरधारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप होए शब्द लिखारी। शब्द लिखावे भारत खण्ड। खेल वरतावे विच नवखण्ड। आप कराए झूठी वंड। बेमुख पायण झूठी डण्ड। अन्तिम अन्त कलिजुग आई कंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तोड़े सर्ब घमंड। सन्त मनी सिँघ कलम चलाई। लिख्त भविख्त हरि रिहा वरताई। आपे देवे सर्ब वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अचरज खेल रचाई। शब्द लिखाया पहली माघा। छेड़ छिड़ाए कोल वागा। आप फिराए चौ बलद सुहागा। माझा देस होया अभागा। प्रभ सच जोत प्रगटाई ना सोया जागा। ना घर वज्जी वधाई, ना गाए गीत सुहागा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बुझाए घर घर चरागा। घर घर बुझण सर्ब चिराग। माझा देस किसे चुल्ले ना लभ्भे आग। जायण पहले बुल्ले पार ब्यासों भाग। कलिजुग अन्तिम आपे हुल्ले, सोहँ शब्द ना गाया साचा राग। आपे रहे जगत भुल्ले, प्रभ अबिनाशी आप वजाया रसना नाद। अन्तकाल कलिजुग आपे रुले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लगाई आत्म आग। आत्म अग्न लगाए आप। बेमुख जीव नग्न फिराए, बेमुख दर दर मंगण ना भिच्छया पाए आप। गुरमुख साचे पार लँघण, सोहँ जप्या साचा जाप। आप उठाए आपे अंगण, आपे होए माई बाप। साचा दरस दान गुरसिख साचे मंगण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे मारे तीनो ताप। करे खेल अपर अपारा। गुरसिख घर जै जै जैकारा। बेमुखां घर हाहाकारा। सृष्ट सबाई आरा पारा। आप उतारे सिरों भारा। सतिजुग जीव उपाए सभ पुरख अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे कर आंपणा विहारा। भाणे अंदर खेल वरता के। साध संगत मेल मिला के। आप आपणे मार्ग पा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका बैठे जोत जगा के। आप गिड़ाए उलटी लट्ठ। गुर संगत दर आए नट्ठ। साध संगत होए बुग्घीं इक्ठ। बेमुख वाड़े अग्न भट्ठ। ना कोई होए सहाई तीर्थ अठसठ। गंगा गोदावरी जोत खिचाए, आप छुडाए सारे हट्ठ। करोड़ तेतीस चरन बहाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे गट्ठ। सोहँ देवे आत्म बन्नॖ। गुरमुख साचा रसना गाए कहे धन्न धन्न। प्रभ अबिनाशी आप उठाए, गुरसिखां बेड़ा आपणे कन्नॖ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरला जाणे जन। आपणा बेड़ा आप बन्नॖाए। दूरों नेड़यो संग रलाए। बुग्घे खेड़ा नाउँ लिखाए। अन्तिम झेड़ा आप चुकाए। खुलॖा वेहड़ा माझा देस हो जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका गेड़ा आप गिड़ाए। जोत जगाए विच हरि बुग्घीं। भाग लगाए गुरसिख प्रेम सिँघ तेरी झुग्गी। धाम बणाए सतिजुग उग्घी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एह गल्ल ना रहणी गुझी। सतिजुग बणे धाम न्यारा। चार वरन आए दुआरा। एका खुल्ले सच भण्डारा। एका तोल तुले सर्ब संसारा।

एका देवे नाम वड अनमुल्ले, सोहं शब्द अपर अपारा। प्रभ अबिनाशी दर द्वार, गुरसिखां देवे नाम भण्डारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप सुहाए सच दरबारा। सतिजुग साचे माण दवाए। जाणी जाण आप लिखवाए। खाणी बाणी कोई भेव ना पाए। महां ज्ञानी किसे दिस ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल रिहा वरताए। सतिजुग साचे साचा दर। बुग्घीं खोल्ह आपे हरि। गुरसिखां भण्डारे दए भर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर। सतिजुग साचे सच विहारी। सृष्ट सबाई एका कारी। आप कराए चरन पनिहारी। एका जोत जगाए एका वारी। सतिजुग साचे सन्त जन मारन शब्द उडारी। मुखों कहण धन्न धन्न, आयण निहकलंक चरन द्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे साचा नाम सच्ची सरदारी। साचा नाम सच सरकारा। साचा कर्म सच विहारा। साचा नाम जोत अधारा। साचा नाम शब्द वपारा। सतिजुग ना दीसे मदिरा मासी कोई प्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म वरते गुरसिखां खोल्हे कुण्ड फुहारा। अमृत कुण्ड आप खुल्हाए। पतित पावन दया कमाए। आत्म भेव जीव खुल्हाए। अमृत बूंद कँवल मुख पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत सावण मेघ बरसाए। वरसे मेघ साची धारा। सतिजुग वरते विच संसारा। साधां सन्तां रंग अपारा। आदिन अन्ता विच संसारा। जीआं जन्तां इक्क अधारा। ऊँच नीच ना कोई दीसे, प्रभ साचा भरम निवारा। एका छत्र झुल्ले निहकलंक तेरे सीसे, चार वरन खड़े रहण दुआरा। चार वरन खड़े दुआरे। साचा मंगण नाम अपारे। आपणे अंगण रक्ख करतारे। ना दर ते संगण, दोए जोड़ कर निमस्कारे। प्रभ साचे दी साची लोड़, आदि अन्त सद पावे सारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे गुरमुख बणाए सच सच दुलारे। सतिजुग तेरी साची गाथा। सोहँ चले साचा राथा। बेमुखां ना आवे हाथा। गुरसिख चढ़ाए त्रैलोकी नाथा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त सगला साथा। सच तत्त, इक्क मति इक्क वत्त, एका वस्त प्रभ देवे घत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द लिखावे सतिजुग रखाए एका सति। आप समझाए दे के मति। सोहँ बीज बिजाए आत्म साचे वत्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप जणाए आपणा तत्त। आप जणा के, सृष्ट सबाई सच मार्ग ला के। सोहँ साचा जाप जपा के। चार कुन्ट जै जै जैकार करा के। वरन बरन सर्ब मिटा के। ऊँच नीच इक्क करा के। राजा राणा तख्तों लाह के। आपणा भाणा आप वरता के। सतिजुग साचा नाम निधाना आपे जाए जपा के। होए मेल महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख उधरे पार रसना गा के। साचा माण गुरमुख दवाया। साध संगत आख सुणाया। ना होए मंगत, दूजे दर ना सीस झुकाया। ना होए नंगत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गाया। रसना गावणा सुख उपजावणा।

दु:ख मिटावणा रिदे वसावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे विच्चों पावणा। आप आपणे विच्चों पाओ। सोहँ साचा नाम गाओ। आप बहाए साचे थाउँ। जिथ्थे वसे बेपरवाहो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अलख लखाओ। बुग्घे पिण्ड माण दवा के। आपणा चरन जाए उठा के। राम सर चरन छुहा के। गुरमुख गरीब निमाणा गले लगा के। आपे बणे वञ्झ मुहाणा, बेड़ा करे पार तरा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे संग रला के। पार ब्यासों चरन टिकाए। दुआबे मालवे होए रुशनाए। माझे कोई सार ना पाए। विच मालवे चारे राणे लए उठाए। जोत सरूपी दरस दिखाए। अन्न्हे काणे संग रलाए। भज्जे आवण वाहो दाए। दिस ना आए प्रभ भगवन्त, शब्द सरूपी आप जगाए। बहु रंग रूपी नज़र ना आए। वड वड भूपी आप तड़फाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दिस ना आए। चारे राणे होयण भिखार। साचा मंगण इक्क द्वार। सोहँ देवे हरि नाम अधार। चाढ़े साची रंगण, झूठा दिसे सर्ब संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी करे आप अकार। जोत सरूपी करे अकारी। राणयां महांराणयां घर करे ख्वारी। अन्तिम बाजी आपणी हारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना बूझ बुझाए दस्म दुआरी। सुरत शब्द आप जगा के। भरम भुलेखे विच रुला के। आपे बैठा आपणा आप छुपा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल अपार चरन ब्यासों पार टिका के। अचरज खेल आप वरताए। विच दुआबे पए दुहाए। गुरसिख वेखण साचा माहे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे संग रलाए पकड़ बांहों। बाहों पकड़ संग रलाया। शब्द जकड़ बन्न्ह चलाया। आत्म अकड़ सर्ब मिटाया। शब्द तकड़ आप तुलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मालवे चरन टिकाया। विच मालवे चरन टिकाए। जोत सरूपी खेल रचाए। एका जोत करे रुशनाए। गुरमुख साचे सन्त प्रभ पकड़ उठाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुरत शब्द मेल मिलाए। सुरत शब्द मेल मिला के। सुरत शब्द खेल वखा के। सुरत शब्द रंग नवेल आप चढ़ा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा चरन टिकाए, मस्तूआणे साचा समा सुहा के। मस्तूआणे चरन छुहाया। आपणा बाणा आप उलटाया। भरम भुलेखा सर्ब ढाहया । दूई द्वैत पड़दा लाहया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत सिँघासण डेरा लाया। सिँघासण डेरा आप लगा के। जोत सरूपी तेज वधा के। पंज पंज गज़ लकीर लगा के। अग्न जोत रक्खे धाम तपा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघासण बैठे जोत सरूपी अडोल अतोल, सृष्ट सबाई जाए आप तुला के। सिँघासण डेरा लाए। साची जोत डगमगाए। चार चौफेर होए रुशनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राजे राणे घेर आपणी सरन लगाए। आपे होए दीन कृपाला। आपणे रंग सद समाला। सो वेखे जिस हरि वखाला। महाराज शेर

३४७ ०२

सिँघ विष्नूं भगवान, राणे संगरूर आत्म तोड़े सर्ब जंजाला। पहली जोत जगे संगरूरे। जोत सरूपी एका नूरे। पकड़ उठाए राणा संगरूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला भरपूरे। राणा संगरूर हरि आप उठाए। भय भयानक दरस दिखाए। अचन अचानक एह वक्त ल्याए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आप वरताए। राणे संगरूर होए जणाई। साची धुन आप उपजाई। मुन सुन हरि आप खुल्हाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखाई। जोत सरूपी दर्शन पावे। भन्ना आवे वाहो दाहे। आत्म अन्न्हा वक्त गंवाए। सतिगुर मनी सिँघ वड धन्न धन्ना, तीन तीन लेख जिस घर पुचाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घनकपुरी विच जामा पाए। राजे राणे होए मगरूर। आए ना चल सच हज़ूर। अन्तिम कलि टुट्टा सर्ब गरूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चरन लगाए घूर। जोत सरूपी दरस दिखाए। भुल्ले रुले डुल्ले तरस कमाए। कलिजुग रुले वड अनमुल्ले, अमृत मुख फेर चुआए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा राह बताए। राणा आए चल हज़ूर। प्रभ अबिनाशी जोत जगाए जिउँ कोहतूर। आपे बैठा डगमगाए वड दाता सूरबीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म विन्ह वखाए सोहँ शब्द चलाए तीर। आए दर बण भिखारी। होए निमाणा करे चरन निमस्कारी। प्रभ अबिनाशी बख्शणयोग, गुण अवगुण ना करे विचारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप जोत अधारी। राणा संगरूर सरन लग जाए। सवा लक्ख अरदास कराए। सच घर हरि वास रखाए। मदिर मास दे तजाए। एका सरन निहकलंक रखाए। मस्तूआणा धाम सुहाए। आप आपणा चरन छुहाए। राजा राणा सरन लगाए। ऊँच नीच इक्क थां बहाए। सूचो सूच आप भगवान, एका ब्रह्म जगत रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रखाए आपणी आना। मस्तूआणा वरतण भाणे। वेखण सारे राजे राणे। भुल्ले होए जीव निधाने। वेला गया सर्ब पछताने। सन्त मनी सिँघ तेरी लिख्त महाने। निहकलंक आप लिखाई जो वरताए भाणे। आप कराए शब्द लिखाए, फरंगी जायण सिरां उप्पर बद्धे काने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आप वरताए आप चलाए आपणे भाणे। मातलोक ल्या अवतार। जोत सरूपी जामा धार। सच दरबारी लाए सच दरबार। साध संगत सुण पुकार। दुखीए आयण छड्ड घर बाहर। एका रक्खण टेक करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दु:ख दर्द दे निवार। दु:ख निवारे किरपा कर। जन्म संवारे किरपा कर। कोट जन्म पाप उतारे किरपा कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए चरन द्वार। चरन द्वार जो जन आया। काया कोढ़ सर्ब मिटाया। सन्मुख होए मन लोड़ फल पाया। दोए जोड़ जन हरि सरनाई आया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बन्दी तोड़ आप अख्वाया। काया बंधन आप कटाए। सोहँ

चन्दन तिलक लगाए। परमानंद सुख उपजाए। निजानंद प्रभ आप समाए। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां पूरन आस आप कराए। गुरसिखां होई पूरन आसा। एका मिल्या चरन भरवासा। कर दरस दुखड़ा नासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कराए रासा। मानस जन्म होया रास, पूर कराई गुरसिख आस। आप धराए सच धरवास। दुःख रोग सभ होए विनास। झिरना झिरे अमृत नभ, खुल्ले कँवल होए प्रकाश। प्रगट जोत दरस दिखाए झब्ब, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुणवन्त गुणां गुणतास। गुणवन्त गुण निधाना। पारब्रह्म पूरन भगवाना। रूप अनूप जोत महाना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा गुरसिखां बन्ने सोहँ गाना। सोहँ गाना बन्ने हत्थ। सगल वसूरे जायण लथ्थ। आत्म भरपूर प्रभ देवे साची वत्थ। जो जन आए चल दर दुआरे ,प्रभ रक्खे सिर दे कर हत्थ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ। पान्धी आए चल राही। पहली माघ गुर चरन मनाई। आत्म दाग हरि दे मिटाई। तृष्ना आग दे बुझाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया कमाई। सतिगुर वेखे वेख विचारे। दुखियां आत्म दुखड़े भारे। कोई रोए कोई बिल्लाए कोई करे हाहाकारे। विच मात ना मिले ढोई, दुध्ध पुत्त दे खाली रहे भण्डारे। बिन हरि पुच्छे ना कोई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत जगाए काया महल मुनारे। वसे विच आप करतारा। दस्से राह जगत न्यारा। खाली भरे आप भण्डारा। एका खुल्हा सच दुआरा। जो जन आए भुल्ला, प्रभ पावे सारा। सोहँ शब्द वड अनमुल्ला, प्रभ देवे देवणहारा। सच भण्डारा विच मात दे खुल्ल्हा, निहकलंक बणे वरतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत पावे सारा। गुर संगत गुर कर्म विचारया। जन्म मरन भरम निवारया। दुःख ना पोहे अन्तिम वारया। सच सुख हरि सच दरबारया। होए सहाई आप गिरधारया। देवे दरस वड निरंकारया। कर दरस गुरसिख चरन बलहारया। दोए कलि जोड़ कर चरन निमस्कारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारया। किरपा करे आप गिरधारा। गुर संगत करे आप पसारा। दर आए मंगत प्रभ देवे शब्द भण्डारा। जो जन भुक्खे नंगत, सिर रक्खे हत्थ आप करतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा रंग चढ़ाए अपारा। आत्म रंग देवे चाढ़। दुःख रोग प्रभ देवे साड़। जोत सरूपी एका अग्न लगाए बहत्तर नाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उतारे कोट पाप पहाड़। कर दरस रोग गया, सोग गया, दरस अमोघ भया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप साचा शब्द जोग दिया। साचा शब्द साचा जोग। सोहँ कट्टे हउमे रोग। मिले गुर दर साचा हट्टे, मैल पापां धोवे धोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर अवतार नर जोत धर, रसन चुगाए सोहँ चोग। सोहँ चोग माणक मोती। गुरमुख जगाए एका जोती। सृष्ट सबाई रही सोती।

३४६
०२

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरी दुरमति धोती। दुरमति मैल दुरजनां। उतरे मैल मिल हरिजनां। रही फैल कलिजुग जीआं तन जला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका लोड़े सर्ब भला। सर्ब जीआं हरि देवे सुख। रसना गायण उज्जल मुख। आप मिटायण सर्ब भुक्ख। भाग लगायण माता कुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर्शन पाओ उपजाओ साचा सुख। साचा सुख सच घर पावणा। संसा रोग दुःख मिटावणा। सोग विजोग सर्ब तजावणा। एका जोग हरि शब्द कमावणा। रसना सचा भोग प्रभ अबिनाशी गावणा। आपे कट्टे काया रोग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पकड़े गुरसिख दामना। रसना गुण हरि गुण गाए। अवगुण आपणे लए बख्शाए। निरगुण सरगुण रूप प्रभ सद रहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप थांईं होए सहाए। सर्ब थाँईं होए सहायक। प्रभ अबिनाशी साचा नायक। सर्ब घट वासी सर्ब सुखदायक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गाए वड गायक। गुर संगत साची तारे। संगत गुर वसे इक्क दरबारे। गुर संगत दुःख निवारे। गुर संगत एका जोत करे अकारे। गुर संगत देवे दरस अपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संगत गुर एका शब्द हुलारे। संगत गुर शब्दी जोड़। आपे रिहा टुट्टी जोड़। गुरमुख साचा सतिजुग साचा बिरख लगाया बोहड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए काया कोढ़। काया कपट तन दुख। इक्क घड़ी ना उपजे सुख। आप बंधाए दुक्खां दुख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस उज्जल होए मुख। उज्जल मुख आप कराया। साचा सुख आप उपजाया। तन मन दुःख आप कटाया। साचा धन शब्द झोली पाया। गुर संगत सुण कन्न प्रभ रिहा शब्द लिखाया। आपे बेड़ा देवे बन्नृ, बन्नृणहार इक्क रघुराया। झूठे भाण्डे देवे भन्न, मदिरा मास जिस रसन लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा हुक्म आप लिखाया। साचा हुक्म आप लिखाए। ना कोई तोड़े ना कोई मोड़े ना कोई मोड़ मुड़ाए। चरन प्रीती जो जन जोड़े, दुःख रोग कोई नेड़ ना आए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे लए अन्त छुडाए। आपे होए अन्त सहाई। जीव जन्त जिस बणत बणाई। गुरमुख साचे मिल साचे कन्त, तेरी आत्म शांत कराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग भरम भरम ना जाओ भुलाई। भरम भुल ना जाणा भुल्ल। कलिजुग अन्त ना जाणा रुल। झूठा कलंक ना लाउणा कुल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सोहँ नाम देवे अनमुल्ल। गुर पूरे तेरी अचरज माया। गुरसिख पले तेरी छत्र छाया। देवे नाम जोत सवाया। दर पाया जिहा मन भाया। काया रंगन रंग मजीठ चढ़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस डीठ भाण्डा भरम भउ भन्नाया। गुर पूरे जन्म संवार। डुब्बदे जांदे कलि विच मञ्झधार। सृष्ट सबाई रही झक्ख मार। दर दर घर घर होए

विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंकी निहकलंक कर किरपा मात ल्या अवतार। निहकलंक वज्जा डंक, मिटया शंक आया द्वार बंक। प्रभ फिरावे मन का मणक। रक्खी विच जोत टिकाए इक्क दाणा कणक। गुरमुख साचे आप वड्याए जिउँ राजा जनक। जुगो जुग सांग वरताए, विच मात बार अनक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा न्याउँ कराए वासी पुरी घनक। गुरसिख फड़ हरि का लड़। साची पौड़ी जाए चढ़। धनी जाए चरनीं पड़। आपणी पत्नी घर आपणे खड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे तोड़े किल्हा हँकारी गढ़। साचा गुर सच वड्याई। नदरी नदर निहाल कर। गुरसिख साचे पार लँघाई। साध संगत संग संभाल कलि, साचे पति आप रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर चौथे दी बूझ बुझाई। पहला घर तेरा दस्सया। तारा सिँघ गुरो नाल दूजा वस्सया। तीजा घर प्रभ दर साध संगत रस्सया। चौथा घर हरि फड़ लड़, गुरसिख साचे धुर दुआरे जोत सरूपी वस्सया। आपणा घर सच पछाण। प्रभ बिठाए विच बबाण। एका रक्खे चरन ध्यान। दुष्ट दुराचार ना होयण दर परवान। गुरमुख साचे डुल्ले भुल्ले रुले गुर दर आए तर जाण। चौथा घर चौथा पद। आपे ओथे लैणा लद। दुःख भुक्ख सभ देवे रद्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख एका शब्द पिलाए मदि। साचा घर वेख विचार। एका घर साचा हरि का द्वार। एका वसे प्रभ करतार। सृष्ट
३५१ सबाई झूठ पसार। आवे जावे वारो वार। इकना भार उठाए इक्क होए रहे त्यार। कलिजुग जीव ना भुल गंवार। धर्म ३५१
०२ राए मारे कर ख्वार। प्रभ अबिनाशी रिहा किरपा कर, कर दरस जाए तार। आत्म छड्ड सर्ब हँकार। एका वर अवतार ०२
नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच भतार। भरम भुलेखे आप भुलावे। झूठे साक सज्जण सैण मां पिउ भैण भ्रा ना कोई होए सहाए। विच मात सारे बैठे रहण आपणे आपणे दाए। एका साचा गुर चरनी लाग, वेले अन्त लए छुडाए। अंदर वेख मार झात, जोत सरूपी डगमगाए। जोत सरूपी आपे सार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, थिर घर वसाए। थिर घर साचा घर। गुरमुखां मिल्या साचा वर। प्रभ अबिनाशी आपे बैठे आप खुल्हाए साचा दर। गुरमुख कोई भुल ना जाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप समाए आपणे घर। जिस जन जाणयां, राम रहीम करीम पछाणयां। साचा नाम संग समाणयां। पूरन काम करे भगवानयां। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, ना जाणो बाल अञ्याणया। ना भुल्ले ना डुल्ले ना रुले ना तुल्ले, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच भण्डारे सदा खुल्ल्हे। प्रभ अबिनाशी सदा अडोल। सृष्ट सबाई रिहा तोल। गुरमुखां सद वसे कोल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म भेद देवे खोल्ह। भरम निवारना जन्म संवारना कर्म विचारना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बन्न्हाए साची धारना। जोत धरे विच संसारा। जोत सरूपी

किया पसारा। पूरा न्याउँ सच दरबारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए सृष्ट सबाई सहारा। सर्ब सहाई आपे होए। जो जन नेत्र पेखे दोए। आप खुल्हाए तीजा लोए। गुरसिख गुर भेद रहे ना कोए। आप अभेद सृष्ट सबाई तेरे हिरदे सद सोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे लोक परलोक संवारे दोए। लोक परलोक आप सुधारया। तीन लोक होए जै जैकारया। मात पताल अकाश वरते विच संसारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्त ना पारावारया। बेअन्त बेअन्त बेअन्त। भेव खुल्हाए विरले साध सन्त। जुगो जुग खेल रचाए वरते एक अनन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा एक कन्त। साचा मार्ग जगत पाओ। प्रभ अबिनाशी चरन लग जाओ। दिवस रैण सद रसना गाओ। घर दर गुर आपणा पाओ। वड दाता वड देवी देव एक सरन ओट रखाओ। मिटे आत्म भेव, संसा भरम सर्ब चुकाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस मदिरा मास रसन तजाओ। मदिरा मास ना रसन लगाणा। आपणा मूल ना आप गंवाणा। कलिजुग वरते अन्तिम भाणा। कोई ना छुट्टे राजा राणा। फड़ फड़ डन्न सर्ब लगाणा। वेले अन्त सारे दिसण खाली, नाल कुछ नहीं जाणा। गुरमुख विरले बेड़ा आपणा बन्नुण, प्रभ अबिनाशी ओट रखाणा । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे आत्म ब्रह्म ज्ञाना। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान। ब्रह्म सरूप जीव भगवान। एका ब्रह्म आप पछाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे तेरी कल्याण। ब्रह्म सरूप ब्रह्म समाया। जोत सरूपी जामा पाया। आप तजाए आपणी काया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत देवे वड्आया। तजी देह खेल अपारी। आपे गया मार उडारी। शब्द सरूपी लील्हा भारी। प्रगटे जोत ना कोई पावे सारी। गुरमुख साचे विच पसारी। सृष्ट सबाई अन्ध अंध्यारी। गुरमुख विरले किसे विचारी। जिस हत्थ रक्खे आप मुरारी। आपे करे आत्म कारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां होए नाम अधारी। गुरमुखां देवे नाम अधार। आप कराए जोत उज्जयार। जगाए जोत अगम्म अपार। जोत सरूप सद निराहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बैठा मल्ल द्वार। गुरमुखां मल्ले आत्म द्वार। कदे अंदर कदे बाहर। गुरमुख विरला करे विचार। एका एक एक एकँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसे धाम न्यार। न्यारा धाम वस्सया राम। किसे ना पाया काहना शाम। मदिरा मास रसना लाया झूठा जाम। कलिजुग होए निसफल सभ काम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सोहँ शब्द प्यावे साचा जाम। सोहँ नाम तेरी वड्याई। ईश जीव इक्क हो जाई। सोहँ सो प्रभ निरँजण इक्क रघुराई। आपणा खेल आप वरताई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव देवे आप खुल्हाई। मस्तूआणा धाम सुहा के। पूरन काम आप करा के। चार वरन इक्क थां बहा के। एका वरन मात बणा के। साची सरन निहकलंक रखा के। सोहँ साचा

नाम जपा के। ओअँ संग मेल मिला के। दोअँ दुआ भेव चुका के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पा के। साचा लागे इक्क दरबार। राजे राणे खड़न द्वार। गरीब निमाणे होयण भिखार। देवणहारा इक्क दातार। आपे देवे किरपा धार । खाली भरे जगत भण्डार । चार कुन्ट कराए जै जै जैकार। सोहँ शब्द सच्ची धुन्कार। अनहद वाजा वज्जे विच संसार। साधन सन्तां सुणे पुकार। आदिन अन्ता किया पसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धार। जामा धार ल्या अवतारा। जोत सरूपी खेल अपारा। परब्रह्म कलि भेव न्यारा। ना कोई बूझे ना होए विचारा। ना किसे तत्त साचा सूझे, दर दर फिरन कलिजुग जीव गंवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां सुरत शब्द मेल मिलाए, सोहँ देवे नाम अधारा। सोहँ नाम आपे दिया। आत्म जोत जगाया दिया। सतिजुग रखाई साची निया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ बीज साचा बिया। बीज बिया किया हिया। आपे बोया आपे होया आपे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख उठाया सोया। सोया सिख आप उठाए। राणा संगरूर माण गंवाए। एका आण सोहँ शब्द रखाए। साचो साचा सच निशान, जोत सरूपी डगमगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल आपणी आप वरताए। आपे देवे आत्म ज्ञाना। आप बुझाए आप जगाए जोत सरूपी पहरया बाणा। आप उठाए आप लगाए आपणे चरन ध्याना। जोत जगाए दरस दखाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। जगे जोत जगत निरालम। प्रगटाए हरि वेखे सभ आलम। आपे मेट मिटाए दुष्ट दूत सभ ज़ालम। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हत्थ उठाई एका कालम। इक्क कलम हत्थ उठा के। सृष्ट सबाई लेख लिखा के। कलिजुग अन्तिम अन्त करा के। जूठ झूठ सभ नष्ट करा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एक रंग अनूठ सृष्ट सबाई जाए आप चढ़ा के। सृष्ट सबाई आत्म रंगे। आपे होए सदा संगे। माण दवाए भुक्खे नंगे। आप लगाए आपणे अंगे। सृष्ट सबाई आप खपाए, नव खण्ड लगाए जंगे। कलिजुग बेमुख जीव धर्म राए दर जायण टंगे। गुरमुख साचे सन्त जन, प्रभ अबिनाशी हरि हरि संगे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दान जो दर मंगे। वरते खेल मस्तूआणे। चरनी डिग्गण राजे राणे। तोड़ माण अभिमान वड ज़रवाणे। एका शब्द उठाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाने। शब्द उठाए खण्डा दो धारी। बेमुखां करे जगत ख्वारी। गुरसिखां करे आत्म कारी। बेमुखां करे दर दर भिखारी। गुरसिखां देवे नाम ख़ुमारी। बेमुखां होए मुशकल भारी। गुरसिखां मिल्या इक्क शब्द अधारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल करे अपारी। अचरज खेल आप रचा के। जन भगतां हरि मेल मिला के। साधां सन्तां सुरत दवा के। शब्द सरूपी बूझ बुझा के। बिन रंग रूपी जोत सरूपी खेल बणा के। वड

३५३
०२

वड भूपी राणे महांराणे सरन लगा के। कलिजुग अन्तिम होए अन्धेर अन्ध कूपी, जोत सरूपी जाए दीप जगा के। एका दिसे सति सरूपी, मस्तूआणे बैठे सिँघासण डेरा ला के। सिँघासण डेरा आप लगाए। सिँघ रूप होए वखाए। बेमुखां अन्तिम खै कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा कर्म कमाए। कर्म कमावणा, धर्म रखावणा, वक्त सुहावणा, मस्तूआणा साचा धाम उपजावणा। जोत सरूपी दीप जगावणा। राजा राण भन्न ल्यावणा। चार वरन इक्क करावणा। अन्न्हे काणे माण दवावणा। बाल अंवाणा सुघड़ स्याणा ऊँच नीच इक्क थां बहावणा। वड वड महांराणा जोत सरूपी आप अख्वावणा। आपे वरते आपणा भाणा, माण ताण सर्ब मिटावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खेल विच मात वरतावणा। मातलोक खेल वरताए । अग्न जोत सृष्ट लगाए। आप जलाए बिन बाती बिन तेल। अन्तिम अन्त कलि आ गया, बेड़ा शौह दरया जाए ठेल। प्रभ साचा वक्त सुहा गया, गुरमुखां कराए मेल। जोत सरूपी निहकलंक नाउँ रखा ल्या, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मस्तूआणे भाग लगा ल्या। मस्तूआणे लग्गे भागा। शब्द लिखाया पहली माघा। चार वरन धोए आत्म दागा। प्रभ अबिनाशी दर्शन पाए, आत्म उपजे साचा रागा। हउमे ममता मैल गंवाए, अनहद धुन वजाए साचा वाजा। चिन्ता रोग सोग मिटाए, सोहँ शब्द देवे वड अनरागा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर गुरसिख हँस बणाए, कलिजुग जीव होए कागा। कलिजुग जीव होए काग। वेले अन्त ना गए जाग। आप ना धोया पापां दाग़। तृष्ना भुक्ख ना जाए आग। प्रभ अबिनाशी जोत प्रगटाए, दर्शन पाया पहली माघ। गुरसिखां मन वज्जी वधाई, प्रभ चरन गए लाग। वेले अन्त होए सहाई, आपे पकड़े गुरसिख वाग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द लगाए आत्म जाग। चार वरन इक्क थां बहा के। पूरन काम आप करा के। राणा संगरूर संग रला के। गुरमुख साचे अग्गे ला के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाए चरन उठा के। गुर संगत प्रभ संग मिलाए। आप आपणा चरन उठाए। अंग संग संग अंग आप हो जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जमन किनारे डेरा लाए। जमन किनारे लग्गे डेरा। आप मिटाए कलि अन्धेरा। जोत जगाए ना लाए देरा। बेमुखां भुलाए कर कर हेरा फेरा। साचे सन्त आप उठाए, करे अन्त नबेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बन्न्हे साचा बेड़ा। जमन किनारे डेरा ला के। जोत सरूपी खेल वरता के। आप आपणा सर्ब जणा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होए दिल्ली जा के। वाली हिन्द दरस दिखाउणा। सिँघ रूप होए फड़ उठाउणा। काहना कृष्ना नज़री अउणा। निहकलंकी भेव खुल्हाउणा। गुरसिख साचे विच समाउणा। सोहँ डंक आप वजाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छिन्न भंगर एह खेल वखाउणा। देवे दरस सुत्तयां जा के। आप

उठाए भेव खुल्हा के। जोत सरूपी दरस दिखा के। माण गंवाए ताण गंवाए शान गंवाए, इक्क आण चरन रखा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उठाए गले लगा के। शब्द सरूपी वरते खेल। शब्द सरूपी होए मेल। निन्दक दुष्ट दुराचार आप धकाए जेल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज करे विच मात दे खेल। शब्द चलाए इक्क बहु रंगां। सुणे धुन ना जाणे कोई संगा। टुट्टे मान जोत सरूपी दीसे वड सूरा सरबंगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक रंगा। इक्क रंग इक्क वखाया। एका इक्क आप उपाया। एका एकँकार दिखाया। एका इक्क सोहँ नाम उपाया। एका इक्क दोअँ सोहँ ओअँ एके रंग रंगाया। एका इक्क चार वरन इक्क कराया। एका एक बरन अठारां दे मिटाया। एका एक नरायण नर जोत धर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा मार्ग लाया। एका एक एक जगदीस। दूसर कोई ना करे रीस। सृष्ट सबाई जाए पीस। गुर संगत गुर बीस इकीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका छत्र झुलाए आपणे सीस। वाली हिन्द आप उठाए। रुठ्ठे होए आप मनाए। माया कुठ्ठे भरम चुकाए। प्रभ अबिनाशी तुठ्ठे दरस दिखाए। बेमुख जीव कुठ्ठे ना कोई छुडाए। निन्दकां हत्थ फड़ाए ठूठे, दर दर मंगण भिक्ख ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली हिन्द आपणा दरस दिखाए। गुर चरन हरि का दुआरा। गुर चरन सच घर बाहरा। गुर चरन गुरसिख सद करे प्यारा। गुर चरन दिवस रैण कर निमस्कारा। गुर चरन परस उतरे गुरसिख पारा। गुर चरन मिटे हरस दु:ख उतरे भारा। गुर चरन गुरसिख ना तरस, प्रभ देवणहार इक्क भण्डारा। अमृत देवे गुर आपे बरस, अन्तिम होए मोख दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर चरन कर निमस्कारा। गुर चरन सद निमस्कारो। गुर चरन पावो पारब्रह्म करतारो। गुर चरन गुरमुख उतरे पारो। गुर चरन साचा धर्म विच संसारो। गुर चरन साचा वरन साचा ब्रह्म अपारो। गुर चरन चुक्के डरन मरन जन्म संवारो। गुर चरन गुरसिख तरन, हरन फरन खुल्हारो। गुर चरन साची सरन, जाओ साचे घर बाहरो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बहाए चरन द्वारो। गुर चरन सच प्रीत। गुर चरन साची रीत। गुर चरन कर दरस आत्म अतीत। गुर चरन लाग जागे, भाग मानस जन्म ल्या कलि जीत। गुर चरन गुरसिख काया सीत। गुर चरन साची प्रीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग चलाए साची रीत। गुर चरन हरि का घर। गुर चरन साचा दर। गुर चरन चुक्के डर। गुर चरन मिले वर। गुर चरन पाओ दरस अवतार नर। गुर चरन दुखड़े जाओ हर। गुर चरन मुखड़े उज्जल जाओ कर। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क रखावे दिसावे वसावे साचे घर। गुर चरन सच ध्यान। गुर चरन सच इशनान। गुर चरन सच दान। गुर चरन सच ब्रह्म ज्ञान। गुर चरन मेल भगत भगवान। गुर

चरन पाओ दरस गुणी निधान। गुर चरन आत्म जोत जगे महान। गुर चरन विरला लग्गे पुरख सुजान। गुर चरन महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा आपे देवे चरन ध्यान। गुर चरन साची रासा। गुर चरन सच भरवासा। गुर चरन गुरसिखां मिल्या जिउँ सोना पासा। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख कराए निवासा। गुर चरन थिर घर। गुर चरन मिल्या हरि। गुर चरन खुल्लया दर। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बहाए साचे घर। गुर चरन गुरमुख पछाण। गुर चरन सति कर जाण। गुर चरन धूढ़ी कर इशनान। गुर चरन परस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। गुर चरन मिले गोबिन्दा। गुर चरन लाग हरि सदा सदा बख्शिंदा । गुर चरन खड़े सुरपति राजे इन्दा। गुर चरन आत्म टुट्टे जिंदा। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद बख्शिंदा। गुर चरन मिटे सोग। गुर चरन मिटे विजोग। गुर चरन मिटे रोग। गुर चरन संवारे गुरसिख लोक परलोक। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे मोख। गुर चरन साची धारा। गुर चरन सच विहारा। गुर चरन गुरमुख विरला पावे सारा। गुर चरन गुरमुख उधरे पारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप वखाए सच दुआरा। गुर चरन भरम भउ भागे। गुर चरन गुरसिख सोया जागे। गुर चरन उपजे शब्द वड वड रागे। गुर चरन अनहद वाजे। गुर चरन गुरसिख साचा गाजे। गुर चरन गुरमुख विरला आए विच
३५६ ०२ देस माझे। गुर चरन कोटन कोट संवारे काजे। गुर चरन गुरसिखां रक्खे लाजे। गुर चरन सोहँ मिले साचा दाजे। गुर ३५६ ०२
चरन एका धुन अनाहद वाजे। गुर चरन टुट्टे सुन्न, दूई द्वैत अंदरों भाजे। गुर चरन खुल्ले सुन्न, देवे दरस गुरसिख होए वड वड भागे। गुर चरन कर तरस महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां रक्खे आपे लाजे। गुर चरन सच दरगाह। गुर चरन वेख साचे बेपरवाह। गुर चरन पार कराए सागर संसार वड अस्गाह। गुर चरन इक्क दिसाए साचा राह। गुर चरन अन्नॄयां पाए साचे राह। गुर चरन भागां मन्दयां, गुर संगत दए रला। गुर चरन जगत छोड़ झूठे धन्दया, वेले अन्त पकड़े बांह। गुर चरन ना आए बेमुख भागां मन्दया, प्रभ अबिनाशी दे सजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे ढाह लगाए आत्म कन्धयां, काया करे स्वाह। गुर चरन मिटे अन्धेरा। गुर चरन दिसे सवेरा। गुर चरन ना कोई जाणे तेरा मेरा। गुर चरन ना होए हेरा फेरा। गुर चरन लक्ख चुरासी विच्चों मिले इक्क वेरां। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बन्नॄ लै जाए गुरसिख तेरा बेड़ा। गुर चरन गुण गुणा गुणवन्ता। गुर चरन परसे गुरमुख विरले सन्ता। गुर चरन पार लँघाए आदिन अन्ता। गुर चरन साची धार जगत चलाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरन भगवन्ता। गुर चरन साचा गुर, मातलोक चल आया तुर। गुर चरन गुरसिख जुड़। गुर चरन ना खाली हत्थ जाए मुड़। गुर चरन

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुक्खां रोगां पापां आप पिसाए जिउँ चक्की पुड़। गुर चरन गुरसिख बूझ। गुर चरन मिटाए दूज। गुर चरन गुरसिख जाए जूझ। गुर चरन गुरमुख लूझ। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बुझाए साची बूझ। गुर चरन बूझ विचारो। गुर चरन उतरस पारो। गुर चरन ना होए ख्वारो। गुर चरन साची सरन, ना फिरो दर दर भिखारो। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका वड सिक्दारो। गुर चरन सच्ची सिक्दारी। गुर चरन साची सरदारी। गुर चरन साचा मिले शब्द अधारी। गुर चरन आत्म जीव होए उज्जयारी। गुर चरन गुरमुख साचे बण वपारी। गुर चरन ना दीसे पासा हारी। गुर चरन साची दिसे इक्क फुलवाड़ी। गुर चरन साध संगत साची लाड़ी। गुर चरन रक्खे लाज गुरसिखां दाढ़ी। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई विच उजाड़ी। गुर चरन परमानंद। गुर चरन गुर उपजाए निजानंद। गुर चरन दुःख कटाए बन्द बन्द। गुर चरन आत्म पड़दा ढाहे होई कंध। गुर चरन कर दरस अन्धेर गंवाए जोत जगाए जो जन होए अन्ध। गुर चरन कर दरस, साध संगत रसन ना लाए मदिरा मास गन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आस कराए पूर जो जन मंगे बत्ती दन्द। गुर चरन सद निमस्कारो। गुर चरन पाओ मोख द्वारो। गुर चरन वसावो सच घर बाहरो। गुर चरन चुक्का डर, ना आवो जावो वारो वारो। गुर चरन कटावो लक्ख चुरासी गेड़ अपारो। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस उतरो पारो। गुर चरन आत्म अतीती। गुर चरन काया पतित पुनीती। गुर चरन मिल जाओ हरि साचे मीती। गुर चरन आप बख्शाओ पिछली भुल जो कीती। गुर चरन आप लगाओ गुरसिख सच प्रीती। गुर चरन बलि बलि जाओ, जिस काया शांत कीती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चलाए एका रीती। गुर चरन इक्क दुआरा। गुर चरन इक्क वरतारा। गुर चरन इक्क भण्डारा। गुर चरन इक्क घर बाहरा। गुर चरन इक्क रंग इक्क मंग साचे दर दुआरा। गुर चरन ना होए भुक्ख नंग, सोहँ शब्द भरे भण्डारा। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप करे सति वरतारा। गुर चरन सति सति वरते। गुर चरन लाग ना गुरसिख मरते। गुर चरन बुझाए तृष्ना आग, ना गुरमुख जलते। गुर चरन आप मिटाए पापां दाग़, गुरमुख साचे सदा हर हरे दर ते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल कराया कादर करते। गुर चरन उधरे जीओ। गुर चरन अमृत रस साचा पीओ। गुर चरन आत्म जोत जगाओ दीओ। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निर्मल कराओ जीओ। गुर चरन साचा योग। गुर चरन रस साचा भोग। गुर चरन मिले दरस अमोघ। गुर चरन मिले सोहँ चोग। गुर चरन मिटे हउमे रोग। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए चिन्ता सोग। गुर चरन गुर

३५७
०२

साचा दीख्या। प्रभ अबिनाशी सच परीख्या। गुर चरन मिले साची भीख्या। धुर दरगाहों लेख जो लीख्या। गुर चरन मिले साची सीख्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन नेत्र पेख्या। दुःख दर्द तन खाए। मूंह से निकले हाए हाए। अंग अंग बद्धा ना कोई छुडाए। औखध दारू सच लध्धा, सोहँ नाम रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। दुःख रोग लग्गा तन। सीतल होया ना कदे मन। दिवस रैण ना निकले जन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे धीरज बन्नू। सिर पैरां विच लग्गे अग्ग। सीने खून रिहा वग। काया सारी रही दग। भार ना झल्लण तन पग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर बुझी जोत जाए जग। आत्म दुःख आपे कढु। अन्धेरी डूंघी खड्ड। दिवस रैण बैठा रहे मूंह अड्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दुखड़ा हर दूर कर दर आई निमाणी डड्ड। दर आए कर परवान। दुक्खां पीड़या तन जिउँ कोहलू घाण। बद्धा रहे सदा मन पवण सरूपी विच शब्द धर निशान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे सर्ब पछाण। आपे करे सर्ब पछाणा। पवण सरूपी कढे मसाणा। जिस ने किया विच टिकाणा। ना कोई दीसे अन्नृा काणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हड्ड हड्ड आप छुडाणा। पवण सरूप विच समाए। जे कोई वेखे दिस ना आए। दिवस रैण रिहा दुःख वधाए। दुखीआ जीव रिहा बिल्लाए। प्रभ दर बद्धा छुट्ट ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच भण्डारा निखुट्ट ना जाए। मसाण जाए बाण जाए भूत जाए भविख्त जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द स्वास चलाए। नाड़ी नाड़ी विच स्वास। आप आपणा करे वास। दुक्खां रोगां करे नास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे कर बन्द ख़लास। बन्द खलासी आपे कर। चरन दासी आपे कर। दुनियां हासी दूर कर। घनकपुर वासी दुःख दर्द निवार कर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तृष्ना भुक्ख निवार कर। सेवा करे चरन दुआरे। तन मन दुखड़े लथ्थे भारे। दर आया हरि काज संवारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा जाओ बलिहारे। बलिहारी गुर साचे सूरे। काया रोग कीते दूरे। कट्टे संगल विच हज़ूरे। बद्धा तन तपे वांग तन्दूरे। हरया करे मन तन, सोहँ शब्द आत्म भरपूरे। प्रभ सुणाए कन्न, उतरे सगल वसूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद सद रक्खे विच हज़ूरे। हरि घर साचा वडा पाया। दर दरवाजा कोई नज़र ना आया। अनहद वाजा इक्क वजाया। सोहणा साजन साजा गुरसिख विच बहाया। प्रगटी जोत विच देस माझा, तीन लोक होए रुशनाया। सृष्ट सबाई होए भाजा, गुरसिखां गुर दर बहाया। आप उठाए मार सुत्तयां वाजां, आपणी सरन ल्याया। आप छुडाए जगत काजा, झूठे धन्दयां जगत रहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा बिरद रखाया। गुरमुख पूरन

घाल कराई। तन मन ज़ंजाल कटाई। आत्म कंगाल रहे ना राई। टिकाए जोत इक्क रघुराई। वेखे विचारे भरम ना राई। गुरमुखां दे वड्याई सुणे लोकाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रहे दिवस रैण जस गाई। दिवस रैण जिस जस गाया। प्रभ अबिनाशी रिदे वसाया। सर्ब घट वासी होए सहाया। मदिरा मासी विच संगत रहण ना पाया। आत्म रक्खे सदा उदासी, दर दर फिरे जिउँ सुंञे घर काया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बन्नॢ बन्नॢ जूड़ जूड़ दे सज़ाया। मदिरा मासी विच संगत आए। ना कोई बोले ना बोल बुलाए। हाहाकार दर दर बिल्लाए। पूरा गुर विच मात दे सजाए। अग्गे कोई थाउँ ना पाए। एथे ओथे गया पति गंवाए। सो जन उधरे पार, जो हरि साचे पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंगत नाम गुर संगत आप चढ़ाए। गुर संगत रंग इक्क चढ़ाउणा। दूई द्वैत पड़दा लाहुणा। इक्क शरायत शब्द लिखाउणा। पंच पंचाइत राज कराउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लाउणा। पंचां विच होए प्रधाना। पंचां देवे नाम निधाना। पंचां हत्थ हरि बद्धा गाना। पंचां विच हरि आप समाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच तख्त सच सुल्तान वाली दो जहानां दो जहानां आपे वाली। लक्ख चुरासी जीव उपा ली। नौं लक्ख विच जल रखा ली। यारां लक्ख विच अंडज टिका ली। बीस लक्ख बनास्पती उगाली। दस लक्ख ढिड भार रिड़ा ली। तीस लक्ख चार पाउँ चला ली। चार लक्ख मानस देह बणा ली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी विच समा ली। चुरासी गेड़ बणाया साचा फेरा। मारे मार जवाए कर कर हेरा फेरा। प्रभ अबिनाशी ना कोई सार समाले, ना कोई जाणे प्रभ साचे दा खुल्ला वेहड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग आप वरताए, गुरसिखां गुरमुखां बन्नॢ वखाए बेड़ा। बेड़ा बन्नॢया जिस जन मन्नया। होए पाली जिउँ माल चराए धन्नयां। गुरसिखां फुल टुट्टे ना डाल्ली, प्रभ साचा बणया माली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख कँवल फुल सतिजुग लै आया साची डाल्ली। गुरसिख गुरमुख जाण। गुरसिख गुर इक्क समाण। गुरसिख मेल इक्क भगवान। गुरसिख सतिजुग साचा सोहँ निशान। गुरसिख सतिजुग साचे आप प्रगटे निहकलंक बली बलवान। गुरसिख साचा इक, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सच कर जाण। सति सति कर जानणा। तत्त तत्त तत्त कर गुर पछानणा। मति मति मति बुध समझावणा। वेला अन्त साचा वत्त आत्म बीज शब्द बिजावणा। साचा लैणा सूत कत्त, रसना चरखा दिवस रैण चलावणा। वेला गया फिर ना आवे हत्थ, जोत सरूपी हरि आप समझावणा। बिन गुर पूरे अन्त पए विच नक्क नत्थ, धर्म राए चवी कुण्ड विच फिरावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा घर साचे दर जावणा। चवी कुण्ड नर्क निवास। आप फिराए जो मदिरा पीण खायण मास। जम

जमदूत पकड़ ल्यायण, दूज कोई ना होवे पास। कलिजुग जीव ना भुल मौत भुक्खी फिरे डायण, लक्ख चुरासी करे नास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख जप स्वास स्वास। स्वास स्वास एका जाप। होए सहाई हरि प्रभ आप। मिले वड्याई वड प्रताप। जिस बणत बणाई गुरसिख तेरा माई बाप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे मारे तीनो ताप। गुर संगत मन वधाई। पहली माघ ख़ुशी मनाई। वड वड भागी रुत्त सुहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पाया सुखदाई। गुर संगत मन चाउ घनेरा। प्रभ अबिनांशी लोकमात पाया फेरा। घनकपुर वासी जोत प्रगटाए ना लाए देरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीपक जोत जगाए मिटे अन्धेरा। गुर संगत मन तृप्तास्सया। आत्म पूरन होई रहरास्सया। हरि मिल्या शाह शबाशया। आत्म दुखड़ा सारा नास्सया। जोत सरूपी हिरदे वास्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए बन्द ख़लास्सया। गुर संगत हरि दे वड्याई। दर घर साचे ख़ुशी मनाई। दिवस रैण हरि रसना गाई। नाम निधान गुर दर ते पाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाई। दया कमाए दया निध। गुरमुखां कराए कारज सिद्ध। घर उपजाए नव निध। शब्द उपजाए कन्न सुणाए प्रभ मिलण दी साची बिध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कारज कीने सिद्ध। निमस्कार निमस्कार गुरदेवा। प्रभ पाया अलख अभेवा। गुर दर परवान होई गुर सेवा। गुरसिखां देवे हरि सोहँ साचा मेवा। गुरमुख साचा दिवस रैण जपे सद जेहवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दरस दिखाए वड देवी देवा। गुर संगत मन रंगया। प्रभ मिल्या साचा सन्गया। मानस जन्म ना होया भन्गया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे परखे बुरे चन्गया। आपे परखे परखणहारा। आपे रक्खे रक्खणहारा। गुरमुख साचे दोए जोड़ कर निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। साचा समां आप सुहाया। जोत सरूपी दरस दिखाया। साध संगत आत्म तृप्ताया। दर आई संगत सोहँ भिच्छया पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाया। सोहँ भिच्छया दर ते पाए। जो जन आए नाम तिहाए। खाली कोई ना दर तों जाए। आसा मनसा पूर कराए। आत्म संसा रहण ना पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी रिहा लिखाए। जोत सरूपी लेख लिखाउणा। वेख वेख गुरसिख जगाउणा। सृष्ट भेख सर्ब मिटाउणा। एका लेख हरि आप लिखाउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत साचा मेल मिलाउणा। गुर संगत साचा मेल मिलाए। गुर संगत साचा नाम जपाए। गुर संगत साचा राह दिसाए। गुर संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका धाम बहाए। गुर पूरे सद निमस्कार। गुर पूरे सद जाओ बलिहार। गुर पूरे कलि दित्ता तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर अपार। साध संगत आप वड्याए। साचा बचन इक्क

सुणाए। गुरमुख कोई भुल ना जाए। मदिरा मास कोई रसन ना लाए। स्वास स्वास सोहँ गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाए। देखे दरस गुर संगत सारी। जोत सरूपी भेख्या धारी। मातलोक कलंकनिह नर अवतारी। काया झूठी अपर अपारी। गुरमुख साचे विच हरि जोत पसारी। अचरज खेल किया गिरधारी। क्या कोई जाणे क्या वखाणे ना आवे किसे विचारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माया जगत पसारी। गुरसिख बहाए दर दरवेश। जोत सरूपी गुरसिख प्रवेश। तिस साहिब को सदा आदेस। जोत सरूपी किया वेस। दूजी काया पलटया भेस। ना कोई जाणे ब्रह्मा विष्न महेष। जुगो जुग प्रभ साचे दा साचा वेस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तीन लोक जोत सरूपी इक्क मृगेश। इक्क राजा इक्क सुल्तान। एका किया इक्क जहान। एका जीआ सोहँ फल गुरमुख विरले खाण। आत्म जोत जगे दिया, जो जन रसना गाण। बेमुख पाण आपणा किया, प्रभ अबिनाशी करे पछाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, विष्नूं भगवान। विष्नूं भगवान वड बलकारी। तीन लोक इक्क खिलाड़ी। शब्द सरूपी रक्खे उडारी। आपे करे सर्ब ख्वारी। साचा प्रभ जगत विहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बैठा माया पसारी। मुक्त दुआरा गुर घर। जीव जुगत दुआरा गुर घर। जीव सुरत दुआरा गुर घर। जीव ना कदे झूरत गुर दुआरा। जीव महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे चरन प्यारा। जीव जाग वक्त विहाए। जीव जाग वेला गया हत्थ ना आए। जीव जाग प्रभ चरन लाग, मात जोत प्रगटाए। जीव जाग धो दाग़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ भट्ठी आप चढ़ाए। जीव गुर दर आओ। आपणी आए भुल बख्शाओ। वड अमुल्ल ना जन्म गंवाओ। प्रभ अतुल साचे कंडे आपणा आप तुलाओ। प्रभ अडुल्ल गुर चरन लाग आप अडुल्ल हो जाओ। प्रभ अभुल्ल आप अभुल्ल हो जाओ। प्रभ दर गया खुल्ल, साचा नाम लै घर जाओ। ना कोई लग्गे ऐथे मुल्ल, चरन प्रीती सेव कमाओ। आप बरखाए सोहँ फुल्ल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे मानस जन्म सुफल कराओ। जीव जगाया दया कमाया। दरस दिखाया गुरसिख बणाया। कलिजुग विच्चों आप तराया। बांहों पकड़ सरन लगाया। आत्म गंवाई अकड़, आपणे चरनीं सीस धराया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां उप्पर दया कमाया। गुरसिख कर्म विचारया। प्रभ साचे पार उतारया। जन्म मरन जगत संवारया। जोत सरूपी जामा मात विच धारया। किरपा करे अपर अपारया। देवे दरस कृष्न मुरारया। धरी जोत राम अवतारया। निहकलंक नाम लिखा रिहा। साचा डंक सोहँ शब्द वजा रिहा। राजा राणा तख्तों लाह रिहा। राउ रंक इक्क करा रिहा। सच द्वार बंक प्रगट जोत आप सुहा रिहा। गुरमुखां मिटाए शंक, शब्द सरूपी साचा ज्ञान दवा रिहा। बैठा रहे सद अटंक, जोत सरूपी खेल वरता

रिहा। गुरमुख तराए जिउँ राजा जनक, कोटन पापी नाल तरा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरी बणत बणा रिहा। गुरसिख तेरी बणत बणाई। चार जुग मिले वड्याई। पिण्ड बुग्घे लिख्त लिखाई। पहली माघ दया कमाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी रसम चलाई। रसम चलाए शब्द अपारे। आप आपणी किरपा धारे। गुरसिख लेख लिखाए अपारे। सद वसे अंदर ना दिसे बाहरे। एका जोत सच रंग करतारे। एका जोत कलिजुग जीव भुल्ले गंवारे। आओ दर्शन पाओ नैण, प्रभ पापन पाप उतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बैठा सच दरबारे। सच दरबारे साचा शाह। सर्ब जीआं साचा पातशाह। आदि अन्त सद बेपरवाह। बिन प्रभ पूरे कोई ना पकड़े गुरसिख बांह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप तराए, आप वड्याए, आप चढ़ाए, आप उठाए, आप बहाए, सचखण्ड वास रखाए, जिथ्थे कोई जावे ना। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी, जोत प्रकाशी घनकपुर वासी, सृष्ट सबाई होए दासी, गुरमुखां मुख रखाए सदा हासी। सोहँ जपण स्वास स्वासी। कलिजुग माया होए दासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सद बलि जासी। बलि बलि बलि बलिहारे। गुर पूरे चरन निमस्कारे। आओ दर चुकाओ डर, वसाओ घर वेख वखाओ हरि, ना भुल्लो जीव गंवारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक विच जामा धारे। जामा धारया खेल अपारया वेखे संसारया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात करे जो कारया। मातलोक जो करे कारी। वेखे सर्ब नर नारी। प्रभ अबिनाशी करे ख्वारी। सर्ब भुलाया एका वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाई वज्जी वधाई, जै जै जैकार कराई। सोहँ साचा शब्द विच मात चलाई। सतिजुग साचे पहली माघ नींह रखाई। कलिजुग अवध अन्त मिटाई। साध संगत रिदे जणाई। शब्द सुरत हरि मेल मिलाई। हरि गुण प्रभ दे जणाई। प्रभ उपजाए रुण झुण, धुन टुट्ट ना जाई। सोहँ शब्द वजाए धुन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुणे सर्ब लोकाई। उपजे धुन शब्द धुन्कारा। सन्त जनां देवे चरन प्यारा। आप मिलाए किरपा कर, जोत सरूपी कन्त प्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी लए अवतारा। जोत सरूपी वड अवतारी। कलंकनिह दुष्ट सँघारी । साचा नेंह गुर चरन द्वारी। अमृत बरसे मेंह, गुरसिख तृखा तृष्ना भुक्ख निवारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए पूज पुजारी। आपे कराए आपणी पूजा। कलिजुग भेख मिटाए दूजा। साचा राह हरि साचे सूझा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाया गूझा। सोहँ शब्द तेरी सिक्दारी। चार वरन सद रसन उचारी। विच मात देवे सरदारी। पवण सरूपी अस्व अस्वारी। चार कुन्ट कराए जै जै जैकारी। नव खण्ड विच ब्रह्मण्ड, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे नाउँ होए जै जै जैकारी। जै जै जैकार होए नव खण्ड। एका

३६२ ०२

शब्द चलाए विच वरभण्ड। आप कर्म कमाए, सतिजुग साचे ना कोई दीसे रंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए वंड। नहावणा कर चरन धूढ़ इशनान। ध्यावणा हरि का नाम भगवान। पावना प्रभ अबिनाशी बली बलवाल। दु:ख कटावणा कर दरस वाली दो जहान। भरम चुकावणा घर आया गुण निधान। जन्म सुहावणा कर दरस हरि मेहरवान। पूर कराए भावना, जो जन चरनी डिगे आण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। गुर पूरे बलि बलि जावणा। जिस दा दित्ता पीणा खावणा। साचा हरि आओ दर आत्म दर खुल्हावणा। साचा घर जिथ्थे अन्तिम सिख वसावणा। सरन पर प्रभ फेर जन्म ना पावणा। साची तरनी तर, निहकलंक चरनी सीस झुकावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूर कराए भावणा। गुर दर गुरसिख साचे आवणा। साचा घर हरि आप दिखावणा। जंगल जूह विच प्रभासे, सिर प्रभ आपणा हत्थ टिकावणा। विच लक्ख चुरासी ना गुरसिख भवावणा। ना होए गर्भ वासे, प्रभ सोहँ नाउँ जपावणा। आपे करे बन्द खलासे, साचा देवे ब्रह्म ज्ञानणा। मानस जन्म कराए रासे, पतित पापी सभ तरावणा। जो जन रसन लाए मदिरा मास, प्रभ नर्क निवास रखावणा। दर आए जो कर जाए हासी, प्रभ लक्ख चुरासी विच फिरावणा। साची जोत घनकपुर वसी, निहकलंक नाउँ रखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा डंक वजावणा। साचा डंक शब्द वजावणा। राउ उमराउ पकड़ उठावणा। वड वड शाहो ख़ाक रुलावणा। एका भाउ जगत चलावणा। एका दाउ निहकलंक लगावणा। जूठ झूठ विच जगत वसावणा। आत्म भूख सर्ब सतावणा। बेमुखां लग्गे दूख, ना किसे मिटावणा। गुरमुखां देवे हरि साचा सूख, आपणी सरन लगावणा। सुफल कराए माता कूख, सोहँ नाम जपावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नाउँ रखावणा। किरपा करे भगत भगवानणा। गुरसिखां होवे आत्म चानणा। साचा रंग गुर दर मानणा। होए प्रकाश कोटन भानणा। आया घर आया दर, जीव बलि बलि बलि जावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल रचावणा। हरि मन्दिर हरि आप सुहावणा। काया अंदर जोत जगावणा। हउमे रोग अंदर सर्ब मिटावणा। झूठा फुरना बन्दर नष्ट करावणा। सोहँ साचा डण्डा सिर पंचां लावणा। सोहँ साचा खण्डा प्रभ आप उठावणा। गुरसिखां माण दवाए विच वरभण्डां, प्रभ साचा कर्म कमावणा। गुरसिख तेरी वड्याई विच नव खण्डा, निहकलंक तेरा लेख लिख्त लिखावणा। आप तुलाए साचा कंडा, पासा घट कदे ना आवणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा पासा सद निवावणा। गुरमुख तेरा पासा भारा। गुर पूरा खड़ा तेरे दर दुआरा। सृष्ट सबाई करे तेरी पनिहारा। आपे होए तेरा रख्वारा। चार चुफेरे देवे पहरा। किला कोट मन तन सोहँ शब्द अपारा। ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाए, नाम जिंदा लाए भारा। ना कोई मोड़े मोड़ मुड़ाए, खण्डा

आप चलाए दो धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। गुरसिखां मन चढ़े चाउ। हरि पाया जन साचा शाहो। आप दिसाए थाउँ अगम्म अथाहो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चलाए साचा राहो। गुरसिख तेरे काटे बंधन। आप उपजाया मात जिउँ प्रभासे चन्दन। लक्ख चुरासी कट्टे फंदन। आप उपजाए परमानंदन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, त्रिलोकी नंदन। त्रिलोकी नंदना गुरसिख बणाया चन्दना। आप बंनाए सोहँ साचे तन्दना। आप चढ़ाए गुर दर आए तिल फुल्ल कंदना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सद कर बन्दना। तिल फुल दर परवान। गुरसिख तेरा साचा माण। देवे वड्याई आप भगवान। होए सुखदाई चुक्के कान। एका नाम ध्याई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। गुरसिख साचा मित कर। आपे साची मति धर। सोहँ साचा तत्त धर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुखड़े सारे जाए हर। सतिगुर साचा सच सज्जण पाया। सच नाम दृढ़ाया। साचा राह गुरसिख दिखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा मार्ग लाया। मार्ग लाए कलि अख़ीर। आप मिटाए वड पीरन पीर। बेमुखां लाहे तन दे चीर। बालक छड्डण माता सीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई देवे बेमुखां धीर। बेमुख जीव जगत बेहाला। बेमुख जीव कलिजुग कंगाला। बेमुख जीव ना वक्त संभाला। बेमुख जीव ना छुडाए जगत जंजाला। बेमुख जीव ना मिल्या सोहँ सच्चा धन माला। बेमुख जीव ना आयण गुर चरन सच्ची धर्मसाला। बेमुख जीव धर्म राए दर होए हड्डां पाला। बेमुख जीव अन्तकाल कलि दर घर साचे होए मूंह काला। कलिजुग जीव, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे मारे कर बेहाला। बेहाल बेहाल बेहाल। आप डुबाए कुंभी नर्क डूंघे ताल। हत्थ कोई ना आवे, ना कोई सके संभाल। साथ कोई ना जावे, जेहड़े जम्मे माता लाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त भन्ने बेमुख डालृ। बेमुख आत्म अन्ध अन्धयारा। बेमुख धुर दरगाहों मारा। बेमुख दुष्ट दुराचारा। बेमुख आत्म चल्लया झूठ हँकारा। बेमुख दर दर फिरे गंवारा। बेमुख घर घर फिरे झक्ख मारा। बेमुख मानस जन्म कलि हारा। बेमुख अन्तकाल पावे दुःख भारा। बेमुख सोहँ शब्द प्रभ रखाए सिर आरा। बेमुख आपे चीरे चीर चिराए करे दो फाड़ा। बेमुख अन्तकाल ना पल्ले नाउँ भाड़ा। बेमुख धर्म राए चबाए आपणी दाढ़ा। बेमुख लाड़ी मौत प्रनाए, आप बणाए लाड़ी लाड़ा। बेमुख रूं वांग पिंजाए जिउँ तेली ताड़ा। बेमुख तत्ते तेल विच पाए जिउँ बाणीआं भट्ठ चाढ़ा। बेमुख उप्पर अग्न नग्न बहाए आप लगाए लम्बू झाड़ा। बेमुख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच फिराए अन्ध अन्धेर विच उजाड़ा। बेमुख धृग जीवणा। बेमुख धृग खाणा पीवणा। बेमुख धृग पहनणा सोवणा। बेमुख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठा बीज ना सतिजुग बोवणा। बेमुख भाग मन्देरा। बेमुख आत्म अन्ध अन्धेरा। बेमुख

ना दीसे सञ्झ सवेरा। बेमुख छुपाए कर कर हेरा फेरा। बेमुख दुःख उठाए ना आए चरन नेरा। बेमुख प्रभ कुठ वखाए, आप डुबाए शौह दरयाए बेड़ा। बेमुख पुठ टंगाए, हरि बिन छुडाए केहड़ा। बेमुख झूठा ठूठा हत्थ फड़ाए, नाम दान ना कोई पाए, नर्क निवास झूठा वेहड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सच करे नबेड़ा। बेमुख वेख विचार। बेमुख साचा नाम रसन उचार। बेमुख सिर दब्बा पापां भार। बेमुख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे ख्वार। बेमुख ख्वारा, दुष्ट दुराचारा। बेमुख हँकारा, रिहा झक्ख मारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे दुरकाए दर दरबारा। बेमुख दुष्ट दुराचारी। बेमुख आत्म पापां भरी भारी। बेमुख काया होई हुशयारी। बेमुख अन्त आया पासा हारी। बेमुख झूठी खेल कलि खेल खिलाड़ी। बेमुख अन्त उजड़ी कर्मी वाड़ी। बेमुख जमदूतां हत्थ फड़ाई आपणी दाढ़ी। बेमुखां ना दीसे पिच्छा अगाड़ी। बेमुख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग इक्ठी वढ्ढे हाढ़ी। बेमुख छड्ड हँकारा। बेमुख काया झूठा महल मुनारा। बेमुख चार नदीआं वहण अंदर जल धारा। बेमुख हिँसा लोभ मोह हँकारा। बेमुख ना कोई दीसे पार किनारा। बेमुख फिरे विच विचकारा। बेमुख अन्तकाल गया जन्म हारा। बेमुख कोई ना देवे अन्त सहारा। बेमुख साचे दर करे पुकारा। बेमुख धुर दरगाहों गया दुरकारा। बेमुख पकड़ ल्याया धर्म दुआरा। बेमुख हिसाब कराया पापां भारा। बेमुख लेखा वेख शरमाया, दुःख उठाया ना पावे सारा। बेमुख चित्रगुप्त तेरे विच रखाया, आपे करे स्वास विचारा। बेमुख भुलेखे भरम जन्म गंवाया, मदिरा मास रसन अहारा। बेमुख आपणा किया आपे पाया, धर्म राए करे ख्वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे सर्ब विचारा। बेमुख आत्म होई अन्ध। बेमुख काया पापां कंध। बेमुख रसन ना गाया प्रभ अबिनाशी सदा बख्शंद। बेमुख आपणा आप गंवाया आत्म परमानंद। बेमुख आपणा आप डुबाया, विषे विकारां डूंघे गन्द। बेमुख आपणा आप रुढ़ाया, माया मोह पाया फंद। बेमुख आत्म जिंदा ना किसे तुड़ाया, हरि ना गाया बत्ती दन्द। बेमुख बांहों पकड़ अग्गे लगाया, दर दरवाजा होया बन्द। बेमुख धर्म राए दे दर बहाया देवे सज़ाए उलटा टंग। सच न्याउँ आप कराया, बेमुख कीनी कलिजुग कंड। साचा हुक्म सच फ़रमाण आप सुणाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी सिर लाया डण्ड। बेमुख जीव अन्तिम दुख। बेमुख जीव ना उतरे तृष्ना भुक्ख। बेमुख जीव हरि बिन ना आवे आत्म सुख। बेमुख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लगाए मात गर्भ उलटा रुक्ख। बेमुख तेरी आत्म खोटी। बेमुख पकड़े जायण, तेरी फड़ाए चोटी। बेमुख धर्म राए दे सज़ाए, आप लगाए अग्न तपाई सोटी। बेमुख तूम्बे वांग उडाए, मास कटाए बोटी बोटी। बेमुख पुठ्ठे बन्न्ह लटकाए, हत्थ ना आवे रोटी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां लाहे

अन्त लंगोटी। बेमुख तेरा जगत दवाला। एथे ओथे ना कोई रखवाला। धर्म राए कराए तेरा मूंह काला। छित्रां हार पवाए बेमुख तेरी माला। कुंभी नर्क निवास रखाए, दिवस रैण ना आए स्वास सुखाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पावे सर्ब ज़ंजाला। बेमुख तेरी दुरमति देह। बेमुख अन्तकाल कलि होणा खेह। बेमुख इस हत्थ ले इस हत्थ दे। बेमुख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठे मन्दिर घर आप कराए थेह। बेमुख तेरे ऊँचे मन्दिर। बेमुख अन्तकाल वज्जणे जंदर। बेमुख नाम माल ना तेरे अंदर। बेमुख काया अन्धेरी डूंघी कंदर। बेमुख नक्क नत्थ पवाए, धर्म राए फिराए जिउँ दर दर बन्दर। बेमुख जमदूतां वस कराए, डूंगर थाउँ बहाए जिउँ वाड़े डंगर। तन पाटे चीर लुहाए, तुरे फिरन जिउँ दर दर कंगर। प्रभ दर अंदर रहाए, सर्ब लिखाए, मुकाए चुकाए, पढ़ सुणाए, भरम मिटाए, लिखदा रहे बैठा अंदर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां ना दीसे अंदर। बेमुख तेरी नीती खोट। बेमुख आलणयो डिगा कलिजुग बोट। बेमुख खाया अन भरी पेट। बेमुख सच शब्द ना लाई चोट। बेमुख कलिजुग पलया झोट। बेमुख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे आत्म कढ्ढे खोट। बेमुख कलिजुग गया भूल। बेमुख आप गंवाया आपणा मूल। बेमुख आप लगाई पापां आत्म सूल। बेमुख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी भन्नी काया चूल। बेमुख तेरी झूठी वंड। बेमुख आई कलिजुग कंड। बेमुख झूठी माटी काया अंड। बेमुख झूठी पाए जगत डण्ड। बेमुख कोई ना पाए सीने ठंड। बेमुख पल्ले बध्धी पापां गंढु। बेमुख दर दुरकाया, ना सुहागण ना उह रंड। बेमुख धर्म राए तुड़ाए सर्ब घमंड। बेमुखां झूठा भन्न वखाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया भाण्डा विच वरभण्ड। बेमुख जीव रिहा सोया। जगत विहारां रिहा मोहया। अग्गा याद ना आया कोया। पापां मैल ना आपणा धोया। साचा बीज नाम ना बोया। रसना हल ना काया अंदर जोया। ना घड़ी ना पल, प्रभ अबिनाशी रिदे वसोया। वेला अन्त ना जाए टल, धर्म राए वांग बक्करे कोहया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना दरगाह साची देवे ढोहया। दरगाह साची मिले ना ढोई। बेमुखां राह दीसे ना कोई। सृष्ट सबाई कलिजुग सोई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए बेमुख जगत धरोही। बेमुख आत्म मूढ़। बेमुख काया जूड़। बेमुख धर्म राए उडाए जिउँ किरसाना तूड़। बेमुख आप पिड़ाए जिउँ वेलना गन्ने बूड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना देवे चरन धूढ़। बेमुख ना मिले धूढ़ चरन। अन्तकाल दुःख दुख डाहढा भरन। संसार सागर औखा होया तरन। अग्गा पिच्छा कोई ना दीसे अधविचकारे बैठे डरन। पापां चक्की आपे पीसे आपणा किया आपे भरन। धर्म राए चुकाए विष्टा सीसे, हाए हाए हाए पए करन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना आप लगाए आपणी सरन। बेमुख उलटा मघ। बेमुख आत्म तन

रहे तृष्ना अग्ग। बेमुख झूठे धन्दे लग्गा जग। बेमुख आत्म अन्धे हँस बणयो कग। बेमुख मदिरा मासी गन्दे, भज्ज जाए वांग काची वंग। बेमुख दर घर वज्जण जिंदे, साचा टुट्टा नाम संग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात जड़ तेरी करे भंग। बेमुखां प्रभ जड़ उखाड़े। कलिजुग अन्त आए दिन माढ़े। बेमुख प्रभ अबिनाशी करे दो फाड़े। बेमुख धर्म राए चलाए जिउँ टटू भाड़े। बेमुख जमदूत पठाए, जिउँ शिकारी मिरग उजाड़े। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका अग्न लगाए बहत्तर नाड़े। बेमुख ना मिले सुख। बेमुख ना उतरे भुक्ख। बेमुख आत्म चिन्ता लग्गा दुख। बेमुख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उखाड़े वड मुनारे जिथ्थे सुत्ता पैर पसारे झूठे रुक्ख। बेमुख ना संगी कोए। बेमुख ना मिले ढोए। बेमुख कलिजुग रहे सोए। बेमुख धर्म राए तारां विच परोए। बेमुख बत्ती धारां ना कोई बख्शोए। बेमुखां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर ना देवे ढोए। बेमुख जगत चण्डाला। बेमुख जगत कंगाला। बेमुख ना जगत वक्त संभाला। बेमुख ना ल्या नाम दलाला। बेमुख ना जपया राम सुखाला। बेमुख टुट्टा अम्ब लग्गया डाल्ह़ा। बेमुख वेले अन्त गया कम्ब, जमदूतन खड़े आण दुआला। बेमुख ल्या झम्ब, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचा पंच पंजाला। बेमुख तन अग्न। बेमुख तन नग्न। बेमुख झूठी माया झूठा सगण। बेमुख झूठे धन्दे झूठी लग्न। बेमुख झूठे बन्दे अन्त दगन। बेमुख मदिरा मासी गन्दे विच अग्न जगन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साचे फंदन बेमुखां झूठा साद। बेमुख करे झूठ विवाद। बेमुख रसन वजाए झूठा नाद। बेमुख आपणा आप ना ल्या साध। बेमुख वेले अन्त ना कोई देवे दाद। बेमुख प्रभ अबिनाशी ना ल्या अराध। बेमुख आत्म भरी झूठे रस स्वाद। बेमुख रसन ना गाया हरी, इक्क घड़ी ना किया याद। वेले अन्त औखी बणी, ना कोई सुणे फरियाद। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप पिड़ाए जिउँ वेलणे विच कमाद। बेमुख कलि छड्ड विहारा। बेमुख कलि झूठा वणज वपारा। बेमुख साचा कर्म नाम अधारा। बेमुख आत्म धर हरि जू प्यारा। बेमुख सद डर, भय कर प्रभ गिरधारा। बेमुख भाणा जर, आप आपणे साचे घर खुल्ह़ा दर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख होर झूठा वणज वपारा। बेमुख गल पाया पापां हारा। बेमुख ना आया चल गुर दुआरा। बेमुख कर्म धर्म ना दोए विचारा। बेमुख धर्म शर्म भुल्ला संसारा। बेमुख साचा ब्रह्म मनों विसारा। बेमुख मानस जन्म कलिजुग हारा। बेमुख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे दर दुरकारा। बेमुख तुट्टे धीर। बेमुख हउमे रहे पीड़। बेमुख प्रभ साचा जाए पीड़। बेमुख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी तोड़े हड्डी रीड़। बेमुख जीव कलि अन्याण। बेमुख साचा घर सुंञ मसाण। बेमुख आत्म छड्ड सर्ब गुमान। बेमुख हिंसा छड्ड कर चरन ध्यान। बेमुख मंग दोवें हत्थ अड्ड, देवणहार आप भगवान। बेमुख

आपणा किया लैणा भर वड अग्गे बैठा चतुर सुजान। आप वजाए आपणा ढिड, मंगया मिले ना कोई पकवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, बेमुखां देवे दुःख महान। बेमुख अन्त बिल्लाए। बेमुख अन्त तड़फाए। बेमुख अन्त करन हाए हाए। बेमुख धर्म राए दे सजाए। बेमुख आपणे आप रहे पछताए। बेमुख आपणा गए मूल गंवाए। बेमुख मानस जन्म कँवल फुल्ल गए डुबाए। बेमुख उप्पर धरत धवल गए पाप कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां आपे दे सजाए। बेमुख सदा विजोग। बेमुख झूठा रस रिहा भोग। बेमुख आत्म टुट्टे ना चिन्ता सोग। बेमुखां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झूठा लाया हउमे रोग। बेमुख हउमे छड्ड। आत्म हँकार विच्चों कढ्ढ। जेहा बीजे तेहा अग्गे लैणा वढ्ढ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना देवे लेखा छड्ड। बेमुख औखा देणा सच घर लहणा। बेमुख झूठे वहण ना कलिजुग वहणा। बेमुख कोई ना साथी सज्जण साक भाई भैणां। बेमुख साचा फल दरगाह साची लैणा। बेमुख झूठे जूठे मिले ना उथे बहणा। बेमुख साचा भाणा सिर ते सहणा। बेमुखां धर्म राए चुकाए साचा लहणा। बेमुख जमदूत डण्ड पवे सहणा। बेमुख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए लहणा देणा। बेमुख आपणा कर्म विचार। अन्त ना लग्गे बेड़ा पार। बेमुख डुब्बे विच अन्धकार। ना कोई दीसे पार किनार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां करे ख्वार। बेमुख तेरी मौत लाड़ी। घर विआह लै जाए उजाड़ी। विच अग्न तत्त देवे साड़ी। उडे ख़ाक मिल जावे झाड़ी। अन्तिम अन्त कलि ना दिसे अगाड़ी। कर्मी फल ना बोया हाढ़ी। वेला जाए ना टल, धर्म राए फड़े फड़ कुठे दाढ़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां लिखाए किस्मत माढ़ी। बेमुख तेरे आत्म चोर। बेमुख विच वसण पंज हराम खोर। बेमुख दिवस रैण पौंदे रहण शोर। बेमुख आपणा आप संभाल ना जन्म गाल क्यों होइउँ ढोर। बेमुख आपणा आप क्यों गाल नरकीं घोर। बेमुख अन्तकाल मल मूत्र प्रभ भाण्डा देवे फोड़। बेमुख अन्तकाल उखड़े तेरा काया रूपी बोहड़। बेमुख तेरी देही चले कोढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप तुड़ाए तेरे हड्ड हड्ड जोड़ जोड़। हड्ड हड्ड दीने वढ्ढ। भरम भुलेखे देणे कढ्ढ। लहणे देणे ना देणे छड्ड। आपणा किया लैणा वढ्ढ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बिठाए विच अन्धेरी खड्ड। हरि जनां हरि नाम ध्याया। हरि जनां हरि मंगल गाया। हरि जनां हरि रिदे वसाया। हरि जनां हरि नव निध उपजाया। हरि जनां हरि कारज सिद्ध आप कराया। हरि जनां हरि मन तन विधे, सोहँ तीर चलाया। हरि जनां आप बणाए बिधे, शब्द सरूपी मेल मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि जनां दे विच समाया। हरिजन हरि का रूप। हरिजन सति सरूप। हरिजन हरि एका रूप। हरिजन जन हरि एका सूत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए डर जमदुत। जन जन हरि हरि

के भाए। हरि हरि नाम ध्याए। जन हरि हरि सोहँ रसना गाए। जन हरि हरि सद रिदे वसाए। जन हरि हरि हरि कर भव सागर बेड़ा पार तराए। जन हरि हरि जन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दोए एका थां बहाए। हरिजन हरि विच समाणा। हरिजन हरि तेरे विच टिकाणा। जन हरि हरि जन हरि आपणा आप पछाणा। हरिजन जन हरि साचा वेख जोत सरूप हरि भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दीसे सच टिकाणा। हरिजन हरि ध्याए। हरिजन हरि गाए। हरिजन अमरा पद पाए। हरिजन हरि सद घर लै जाए। हरि जन दिवस रैण सद छन्द हरि के गाए। जन हरि हरि जन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे संग रखाए। हरिजन हरि का मीत। हरि जन हरि एका रीत। हरिजन हरि साची चरन कँवल प्रीत। हरि जन हरि चरन लाग जाए जन्म जीत। हरिजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया करे सीत। हरिजन हरि का प्यारा। हरिजन गाए हरि दुआरा। हरिजन पाए मोख दुआरा। हरिजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे शब्द भण्डारा। हरिजन हरि रंग राता। हरिजन हरि आप पछाता। हरिजन हरि पित माता। हरिजन हरि इक्क रंग रंगाता। हरि जन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद आपणे रंग समाता। जन हरि हरि रंग रंगया। जन हरि साचा दरस दान दर मंगया। जन हरि साचे घर मूल ना सन्गया। जन हरि वेले अन्त खुल्ले दर, सच दरगाहे लँघया। जन हरि चुकया डर गया घर, प्रभ बिठाए जोती सच पलँघया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि जनां सद अंगे सन्गया। हरिजन तेरी वड्याई। हरिजन हरि मित गति कहण ना पाई। हरिजन हरि इक्क चित ध्याई। हरिजन हरि इक्क मित बणाई। हरिजन हरि निंत दर्शन पाई। हरिजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा होए आप सहाई। हरिजन हरिभगती घाल। हरिजन हरि लेवे भाल। हरिजन हरि लए संभाल। हरिजन होण ना देवे विंगा वाल। हरिजन हरि आप चलाए साची चाल। हरिजन हरि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद रिहा विच समाल। हरिजन तेरी उत्तम मति। हरि जन तेरा उत्तम तत्त। हरिजन तेरा साचा यति। हरिजन उत्तम मति। हरि जन तेरा साचा सति। हरिजन तेरा साचा वत। हरिजन हरि सोहँ बीज देवे आत्म साचे वत्त। हरिजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एक रखावे चरन साचा नत। हरिजन हरि साचा मन्नणा। हरिजन बेड़ा आपणा कलिजुग बन्नणा। हरिजन काया नाम मजीठी रंगणा। हरिजन हरि सद एका रंगणा। जन हरि हरि दरस दर सदा मंगणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा मूल ना संगणा। हरिजन हरि रसना गाओ। हरिजन अमृत फल सोहँ दर ते पाओ। हरिजन एका रंग हरि हो जाओ। हरिजन भुक्ख नंग हरि जप कटाओ। हरि जन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद रसना गाओ। हरि जन सद रसना गावणा। हरिजन पतित पुनीत

आप हो जावणा। हरिजन सद सद चीत हरि वसावणा। हरिजन साचा मीत हरि अख्वावणा। हरिजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा संग आप निभावणा। हरिजन सद साचा संगे। हरिजन हरि देवे दान, जो जन मूंहों मंगे। हरिजना हरि देवे माण, आप लगाए आपणे अंगे। हरिजना हरि मिल्या मेहरवान, सदा इक्क रंगे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचा दरस दान, मंगे। गुर पूरा भाग लगावंदा। गुरसिखां चोग चुगावंदा। आत्म दुःख सर्ब मिटावंदा। तृष्ना भुक्खां सर्ब गवावंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सीतल सीतल सीतल सीत प्रसाद साध संगत तेरी रसना रस दवावंदा। गुर प्रसादि रसना रस। गुर प्रसादि आत्म विकार गए नस्स। गुर प्रसादि पांचों होए वस। गुर प्रसाद, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरसिखां देवे हत्थ। गुर प्रसाद गुर साचे दिया। गुरसिख तेरी बणत बणाए कर के साचा हिया। महिंमा अगणत गणी ना जाए, तेरी आत्म जोत जगाया दिया। गुरमुख साचे सन्त पहली माघ गुर दर्शन जिन किया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा बीज विच आत्म दे बिया। गुर प्रसादि गुर पूरा जाणयां। प्रभ अबिनाशी घर सच पछाणयां। सच तख्त हरि बैठा वड सुल्तानया। गुरमुखां गुरसिखां पार लँघाए कर कर कर वड मेहरबानिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगादि आदि जुगो जुग तेरी सच निशानीआं। आदि जुगादि सच वरतारा। गुरमुखां करे सद प्यारा। जन भगतां खड़े दर दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए पहरेदारा। गुर प्रसादि जन गुर दर पाए। कलिजुग अग्न ना माया सताए। गुरमुख साचे साचा सगन, प्रभ तेरे मुख लगाए। आत्म दीपक तेरे जगण, घट घट होए रुशनाए। अन्त बिठाए विच गगन, जिथ्थे कोई नहीं जाए। पवण उनन्जा उथे वगण, गुरसिख तेरे छत्र सीस झुलाए। एका रंग लग्गी रहे लग्न, प्रभ जोत सरूपी घर लै जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे धाम गुरसिख बहाए। गुरसिख तेरा धाम अवल्लड़ा। जिथ्थे वसे हरि इकल्लड़ा। एका रंग लाल गुलल्ड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख आप तराए आप लै जाए भीड़ कटाए, सोहं दस्से राह सुखल्लड़ा। सोहँ खुल्हाए आत्म दर। जिथ्थे बैठा हरि जी वड़। आप बणाया साचा घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत झिरना आप झिराए गुरमुख तेरे आत्म सर। अमृत झिरना आप झिरा के। अमृत बूंद आप उपजा के। कँवल नाभ हरि आप उलटा के। किरपा करे मुख बूंद आप चुआ के। खुल्ले कँवल प्रभ मिल्या आ के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां जाए आपणी दया कमा के। खोल्हु वखाए आत्म सुन्न। इक्क उपजाए साची धुन। गुरमुख साचे सद कन्न सुण। दिवस रैण रहे रुण झुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण जाणे तेरे गुण। दस्म दुआरा अमृत फुहारा। विच जोत अंग्यारा, दुरमति मैल देवे धोत। गुरमुख दर बण भिखारा। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मेल मिलाए सच करतारा। सच करतार मिले मेल। गुरसिख वेख पारब्रह्म अचरज खेल। दीवा बले अगम्म बिन बाती बिन तेल। इको इक्क वरतदा। उथे ना कोई दूजा सज्जण सुहेल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर जोत धर अवतार नर, पाप हर, तेरा आप कराया मेल। गुर प्रसादि गुर दर खावणा। हँगता रोग सर्ब गवावणा। हँकार विकार सर्ब तजावणा। विच संसार प्रेम वधावणा। विच मंझधार ना चरन टिकावणा। दिवस रैण हरि हरि रसना गावणा। अंदर वेख मार झात, प्रभ जोती दीप जगावणा। झूठा दिसे जगत नात, अन्तकाल छड्ड जावणा। ना कोई दिसे भैण भ्रांत, एहनां चुक्क बाहर कढावणा। बिन प्रभ साचे कोई ना पुच्छे तेरी बात, जिस आपणी गोद उठावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे साचा पित मात बणावणा। गुर संगत गुर दया कमाए। गुर संगत गुर पूरन आस कराए। गुर संगत सोहँ शब्द स्वास स्वास जपाए। गुर संगत विच सद निवास रखाए। गुर संगत मानस जन्म रास कराए। गुर संगत अंगीकार करे जिउँ अंग लगाया अंगद, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दया कमाए। अंगी संगी वड सूरा सरबंगी। दरस दान गुरमुख साचे मंगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी आत्म रंगी। गुर संगत गुर पाया गहर सागर। गुर संगत गुरसिखां कराए निर्मल कर्म उजागर। गुर संगत गुर पूरा पार उतारे साचे घर। गुर संगत गुर अमृत मुख चुआए, एह काया माटी गागर। गुर संगत गुर पर्दा आपे पाए नाम चिट्टी चादर। गुर संगत माण दवाए, दर घर आया देवे आदर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां पार उतारे जगत सागर। गुर संगत हरि गुण गाए। प्रभ अबिनाशी दया कमाए। आप आपणे विच रिहा समाए। साचा शब्द आप लिखाए। गुरमुख कोई भुल ना जाए। कलिजुग माया वेख डुल्ल ना जाए। पाप अन्धेरी वगे कलि, गुरसिख हुल्ल ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात कँवल फुल्ल लगाए। गुरसिखां हरि माण दवा के। आवना जावणा लेखे ला के। पिछला लेखा आप चुका के। साचे मार्ग गुरसिख लगा के। सोहँ दान झोली पा के। भगत भगवान दरस दिखा के। गुर दर आओ दरस पाओ, घर जाओ ख़ुशी मना के। भैणां भाईआ तांईं सुणाओ, पिछली भुल चल बख़्शाओ, निहकलंक कलि आया जामा पा के। सोहँ शब्द ढोल वजाओ, कलिजुग जीवां कन्न सुणाओ, अपणी रसना खेल करा के। शब्द अमृत घोल पिलाओ। साची दरगाह गुरसिख माण पाओ। आप तरे कुटम्ब तारया अवरे होर तराओ। पंज जेठ पए ठंड वर्हे गंढु गुर घर मनाओ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कर दरस अमरा पद पाओ। गुरसिख गुर साचे पाउणा। भरम भुलेखे विच ना आउणा। झूठा संसा आत्म लाहुणा। कार विकार सर्ब तजाउणा। झूठा प्यार पंचां छुडाउणा। गुर चरन फेर सीस निवाउणा। साचा जगदीश्र

दर्शन पाउणा। एका छत्र झूल्ले सीस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली दो जहानां आप अख्वाउणा। गुरसिख उधरे पार, हरि दर्शन पा के। गुरसिख उधरे पार गुरसिखां जाए तार, हरि जोत प्रगटा के। पूरा करे विहार, कलिजुग जामा पा के। सच करे वरतार, कलिजुग झूठा भेख मिटा के। धीआं भैणां ना कोई करे वपार, आपे बख्शे सीस निवा के। ना कोई दीसे ठग्ग चोर यार, प्रभ जाए सर्ब खपा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जाए सतिजुग साचा मार्ग ला के। गुरसिखां मन वधाईआ। आसां मनसां प्रभ पूर कराईआ। विच संसार दे वडयाईआ। साध संगत पहली माघ जो ख़ुशीआं मनाईआ। धन्न धन्न धन्न गुरसिख आए गुर चरन, धन्न जणेदी माईआ। धन्न गुरसिख धन्न तेरी वडयाईआ। मिले माण भैणां भाईआ। धन्न गुरसिख आए दर्शन करन, मात कुक्खां सुफल कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां तोड़ निभाईआ। गुरसिख तेरी निभे तोड़। चरन प्रीत एका जोड़। आप मिटाए काया कोढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचा प्रभ, प्रभ साचे दी साची लोड़। साचा प्रभ सर्ब का दाता। साचा प्रभ सर्ब का ज्ञाता। साचा प्रभ सर्ब का भ्राता। साचा प्रभ सर्ब का नाता। साचा प्रभ विरले कलि किसे पछाता। साचा प्रभ गुरमुखां मिल्या पुरख बिधाता। साचा प्रभ आप मिटाए ज़ातां पातां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग रंगाता। गुरसिख गुर सज्जण बणाया। गुरसिखां गुर चरन धूढ़ इशनान कराया। गुरसिखां चतुर सुजान, प्रभ मूढ़ो मूढ़ बणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए सर्ब सहाया। गुरसिख घर आपणे जाणा। साचा नाम ना मन भुलाणा। साचा राख इक्क टिकाणा। प्रभ करे वक्ख, सोहँ शब्द जिस रसना गाणा। कलिजुग जीव जलाए जिउँ अग्न कक्ख, एका लम्बू जोत लगाणा। गुरसिखां प्रभ लए रक्ख, आप आपणा सिर हत्थ टिकाणा। सृष्ट सबाई जाए मथ्था, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। भगवान भगवान भगवान। दान दान देवे दान। माण माण माण देवे माण। अञ्याण अञ्याण अञ्याण गुर दर तर जाण। बिरध बाल जवान इक्क रंग समाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वाली दो जहान। गुरसिख सोया कलिजुग जागा। प्रभ साचे दी चरनी लागा। सोहँ शब्द रंगण चढ़ाए जिउँ कंचन सुहागा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आई संगत धोवे पिछले दागां। पिछला लेखा गया चुक्क। लहणा देणा गया मुक्क। अग्गे लई सुखणा सुख। प्रभ साचे दा वेख मुख। आप उतारे तृष्ना भुक्ख। कलिजुग जीव ना भुल मनुक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुफल कराए मात कुक्ख। रिद्धां सिद्धां आप उपजाए। नव निधां अठारां सिद्धां दर बहाए। गुरसिख प्रभ तन मन विधा, सोहँ तीर चलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा कर्म कमाए। साध संगत देवे वड्याई। सुरत शब्द मेल मिलाई। गुर संगत प्रभ विदा कराई। नाम निधान दात

झोली पाई। गुण निधान सच कर्म कमाई। आप आपणी खेल वरताई। पहली माघ ख़ुशी मनाई। निहकलंकी जोत आप प्रगटाई। कल्गीधर अवतार आप अख्वाई। आवे जावे खेल रचाई। आपे करे सचखण्ड चढ़ाई। जोत सरूपी जोत मिल जाई। छड्डे देह, गुरसिख जो रिहा समाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवासी सच्चखण्ड निवास रखाई। जीव झूठा जगत पसारा। जीव झूठा सर्ब कारो बारा। जीव झूठा वेख ना भुल्ल, माया मोह विच ना रुल, होए अन्त ख्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे अन्त ख्वारी। जीव झूठी जगत झाकी। लेखा देणा पवे बाकी। दर घर साचे कोई ना रहे आकी। किसे ना चले ओथे कोई चालाकी। पाटे थां ना लग्गी टाकी। बिन प्रभ पूरे कोई ना पड़दा ढाकी। जगत पति गंवाई, सिर पाई ख़ाकी। बेमुखां लज ना अई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहणा देणा आप चुकाई, जो अग्गे रिहा बाकी। लहणा देण गुरसिख चुकाया। सोहँ गहणा तन पहनाया। ख़ाकी बन्दा आत्म अन्धा, अन्तिम ख़ाक रुलाया। दर दर फिरे सिर मारे कंधां, खैर किसे मुट्ठ ना पाया। अन्तकाल तुड़ाए तन्दा तन्दा, शब्द तेसा आप चलाया। साध संगत विच कोई रहे ना गन्दा, धुर दरगाहों प्रभ आप कढाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ रंदा आत्म उप्पर आप फिराया। साध संगत तेरा साचा मूल। साध संगत तेरा साचा असूल। साध संगत प्रभ दर ना भूल। साध संगत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए चुल्ह् चूहल। गुरसिखां दीनी साची सीख्या। घर साचा साची पाई भीख्या। पिछला लेखा आप चुकाया, जो धुर दरगाहों लीख्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भुल गए जो तेरी सीख्या। सच दरबार जो जाए भुल्ल। आत्म दिया होए गुल्ल। अमृत आत्म गया डुल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दरगाहों कलंक लगाया कुल। कुल मिटाई दे सज़ाई। मुख छाई पाई। साध संगत विच रहण ना पाई। नाम रंगत मिले ना राई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे मन आपणे भाई। ना कोई भरम ना कोई उहला। सभ कुछ प्रभ संपूरन कला सोला। झूठी माटी क्या कोई जाणे, अन्तिम होया गोला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे खोल्हे सारा पोला। आप खुल्हाए सारा पोल। शब्द सरूपी वजाए ढोल। सोहँ कंडे साचा तोल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन तेरे मोड़े बोल। बचन अमोड़या, सच घर विछोड़या। निउँ झूठा जोड़या। जूठे धन्दे नाम माल साचा रोढ़या। की कर्म कमाया अन्तिम अन्धे, अन्त होए कोढ़या। दर दरवाजे होयण बन्द, जिन्हा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लड़ तेरा छोड़या। गुरमति गुर दर ते पाईए। भाण्डा भरम भउ चुकाईए। आत्म नाम सच वसाईए। आत्म जोत सच जगाईए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलि दर्शन पाईए। गुरमति गुर दर। गुरमति चुक्के डर। गुरमति लै गुरसिख तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान किरपा

कर। गुरमति गुरसिख विचारे। गुरमति इक्क शब्द अधारे। गुरमति गुर देवे प्रगट जोत संसारे। गुरमति महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे गुरसिखां कर कलि खेल अपारे। गुरमति साची धारा। गुरमति मिले गुर चरन दुआरा। गुरमति सोहँ शब्द अपर अपारा। गुरमति देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां पार उतारनहारा। गुरमति गुर आप समझाई। गुरमति सोहँ साचा तत्त गुरसिख वसाई। गुरमति इक्क यति जगत रह जाई । गुरमति गुरसिख सोहँ साचा सच आत्म विच बिजाई । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि तेरा होए आप सहाई। साची मति गुर आप दवावे। साची मति दूज मिटावे। साची मति गुर बूझ बुझावे। गुरमति आत्म भेव गूझ खुल्हावे। गुरमति देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा नाम जपावे। साची मति सरन गुरदेव। साची मति तरन गुर सेव। साची मति खुल्ह्हे हरन फरन प्रभ वड्याई देवे विच देवी देव। साची मति देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा अमृत फल गुरसिखां देव। गुरमति दे गुर आप उधारे। गुरमति दे गुरसिख गुर पार उतारे। गुरमति गुरसिख एका जोत जगाए, गुरसिख तेरी काया महल मुनारे । गुरमति गुरसिख दे आप मिटाए आत्म अन्ध अंध्यारे। गुरसिख एका जोत होए चमत्कारे, एका मति देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द सर्ब संसारे। एका मति देवे गुर दीनां। उतरे पार जिस जन रसना चीना। साचा देवे शब्द अधार, प्रभ अबिनाशी दाना बीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा मन तन सद सदा भीन्ना। गुरमति गुर का रंग। गुरमति साचा संग। गुरमति गुर देवे, गुरसिख दोए जोड़ दर मंग। गुरमति देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म ना होए भंग। गुरमति समझावे जीआ। गुरमति निर्मल कराए जीआ। गुरमति सोहँ बीज बिजाया साचा बिया। गुरमति गुरसिख तेरी आत्म जोत जगाया दिया। गुरसिख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे जिहा किया। गुरमति उतरे दुख। गुरमति उतरे भुक्ख गुरमति गुर देवे गुरसिख आत्म उपजे सुख। गुरमति देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गर्भवास ना होवे गुरसिख उलटा रुक्ख। गुरमति जो जाणे आपणा आप कलिजुग पछाणे। प्रभ चलाए आपणे भाणे। साचा रंग सद दर माणे। गुरसिख मिले चरन बाल अञ्याणे। गुरसिख होए चतुर सुघड़ स्याणे। गुरसिखां मैल पापां धोए, सोहँ देवे नाम निधाने। साचे धागे लए परोए, आवण जावण भेव चुकाणे। अन्तकाल ना संगी कोए, झूठे दिवस भैण भ्राने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्तकाल कलिजुग गुरसिखां सद खड़ा सरहाणे। अन्तकाल कलिजुग वरतंत। जोत प्रगटाए साचा कन्त। माया पाए जगत बेअन्त। गुरसिख पछाणे विरला सन्त। सोहँ जपावे जेहवा मंत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई ना जाणे आदिन अन्त। गुरमति जीव सच पछाण। गुरमति जगत प्रधान।

गुरमति उपजे ब्रह्म ज्ञान। गुरमति पावे नाम निधान। गुरमति मूर्ख मुग्धां करे चतुर सुजान। गुरमति सच चढ़ाए शब्द बबाण। गुरमति सच दी साची खाण। गुरमति देवे वाली दो जहान। गुरमति देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। गुरमति साची आप सिखाए। दिवस रातीं रिहा समझाए। अमृत बूंद स्वांती रिहा पिलाए। झूठी काया धाती, प्रभ सोहँ पारस रिहा छुहाए। अंदर मार जीव झाती, साचे लेख रिहा लिखाए। साची दरगाह उत्तम जाति, जो चले गुर रजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे मति आपे समझाए। गुरमति गुर की धारा। गुरमति शब्द भण्डारा। गुरमति गुरसिख पाए गुर चरन दुआरा। गुरमति आत्म तोड़े सर्ब हँकारा। गुरमति पापां फेरे सिर आपे आरा। गुरमति साचा बीच अमृत फुहारा। गुरमति गुरसिख साचे देवे कर कर कर्म विचारा। गुरमति जन हिरदे वाचे, जोत सरूपी होए उज्जयारा। गुरमति महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे विच संसारा। गुरमति साची रीती। गुरमति काया करे पतित पुनीती। गुरमति साचा यति रक्खे, परखे आपे नीती। गुरमति रक्खे साचा यति, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दात जिस दित्ती। गुरमति गुरसिख विचारे। गुरमति पावे गुर दरबारे। गुरमति वसावे विच आपणी काया महल मुनारे। गुरमति सद रिदे वसावे, अनहद शब्द उपजे धुन्कारे। गुर शब्द देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बण बण आप लिखारे। गुर मती दे समझाया। परमगती सच राह बताया। आत्म जती गुरसिख रखाया। नार सबाई होए सती, एका निहुं साचे पीआ संग लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां आपे समझाया। गुरमति सच विहारा। गुरमति नाम अधारा। गुरमति कर्म उज्जयारा। गुरमति धर्म रहे विच संसारा। गुरमति गुरसिख उतरे पारा। गुरमति गुरसिख मिटाए अन्ध अन्धयारा। गुरमति देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां कर प्यारा। गुरमति सति सन्तोख। गुरमति अन्तिम मोख। गुरमति ना लग्गे दोख। गुरमति देवे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द साचा सोख। गुरमति गुरसिख सुणाए कन्न। गुरमति गुरसिख जाए मन्न। गुरमति आत्म कढ्ढे जन। गुरमति भाण्डा भरम देवे भन्न। गुरमति गुरसिख कमाए आत्म लग्गे ना संन्न। गुरमति गुर धीर धराए पंजे रक्खे बन्न्। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे गुरमति साचा सीर पिलाए बेड़ा देवे बन्न्। निहकलंक तेरी वड्याई, गुरसिख पैज रखाई, मुखों कहे धन्न धन्न। गुरमति देवे गुरदेव। गुरमति साची गुर चरन सेव। गुरमति पाए प्रभ अलख अभेव। गुरमति देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ जपणा सद रसना जेह्व। गुरमति रसन जाप। गुरमति कोट उतारे पाप। गुरमति आपे मारे तीनो ताप। गुरमति साचा दर, दूजा लग्गे ना कोई सराप। गुरमति देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां जिउँ बालक माई बाप। गुरमति देवे सच भरवासे। गुरमति देवे गुरसिख जिस मिल्या प्रभ अबिनाशे। गुरमति लेवे गुरसिख,

रक्ख मन धरवासे। गुरमति देवे हरि साचा शाहो शाबासे। गुरमति देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ जपाए स्वास स्वासे। गुरमति साची धार। गुरमति कमाए नारी नार। गुरमति एका साचा जगत पसार। गुरमति देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा धार। गुरमति औखा घाट। गुरमति साचा हाट। गुरमति आप खुल्हाए बजर कपाट। गुरमति देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द सद रसना राट। गुरमति गुर की न्याई। गुरमति गुर पूरा पाई। गुरमति गुरसिख लै इक्का लिव लाई। गुरमति देवे आप रघुराई। गुरमति गुरमुख साचे पाई। गुरमति देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच शब्द रिहा लिखाई। गुरमति गुर मिलाए। गुरमति धुर पुचाए। गुरमति करोड़ तेतीस सुर सरन लगाए। गुरमति देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख गुर भुल ना जाए। गुरमति गुर आप जणाई। एका साची प्रभ सरनाई। दूजी ओट ना कदे रखाई। मन इच्छया फल पूरन पाई। सोलां कला सम्पूरन सद रसना गाई। सर्ब थाँई भरपूरन तोट रहे ना राई। सद वसे नेड़े जिस जाणो दूरन, जोत सरूप बैठा मुख छुपाई। अनहद शब्द उपजे साची तूरन, सोहँ साचा राग कन्न सुणाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे मति गुरसिख तेरी वड्याई। गुरमति गुर उपदेशा। गुरमति लेवे दर खड़े ब्रह्मा विष्न महेषा। गुरमति सृष्ट सबाई, जुगो जुग जोत सरूपी कर के वेसा। गुरमति देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द धुर दरगाही सच संदेसा। गुरमति सच संदेश। गुरमति पुचाए साचे देस। गुरमति लै जाए जिथ्थे वसे इक्क नर नरेश। गुरमति गुर जोत मिलाए, गुर पूरे को सद आदेस। गुरमति कलिजुग जीआं देवे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी सिँघ पूरन विच हो प्रवेश। सिँघ पूरन कलि आसा वरया। प्रभ अबिनाशी सद दर अग्गे खड़या। साचा भाण्डा विच मात प्रभ घड़या। जोत सरूपी जोत प्रभ विच आपे रहे वड़या। वेद पुरान ना कोई वखाणे, ना कोई जाणे कलिजुग पढ़या। आपणे रंग आप समाणे, सृष्ट सबाई जिस घाड़न घड़या। एका जोत भगत भगवाने, गुरसिखां लड़ साचा फड़या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाई आपणे घर साचे खड़या। फड़ो लड़ जाओ चढ़। अंदर वड़ प्रभ साचा महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां लगाए आपे जड़्ह। सच घर हरि का दुआरा। सच घर जोत पसारा। सच घर एका जोत करे उज्जयारा। सच घर सच दर एका वरतारा। सच घर सच दर सच वर, गुरसिखां शब्द भण्डारा। सच घर सच दर देवे भर, गुरसिख आत्म अमृत जल धारा। साचा घर, साचा सर जाओ तर, दरस कर चुक्के डर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर आओ चरन दुआरा। नेत्र पेख प्रभ अबिनाशी साचा वेख। सर्ब घट वासी ना रहे भुल भुलेख। घनकपुर वासी आत्म जोत जगाए एका एक वसेख। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दर आए भरम चुकाए तीजे नेत्र पेख। तीजा लोया जगाया सोया। आत्म पाप पिछला धोया। सोहँ साचा बीज बोया। रसन स्वासी हल्ल चलाया, गुरसिख तेरे आत्म दर दुआरे, प्रभ अबिनाशी आण खलोया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुण ना जाणे कोया। गुरसिख साचा आत्म जगाए। आत्म दर भाग लगाए। देवे वर सोहँ साची जाग लगाए। अवतार नर आत्म तृष्ना अग्ग बुझाए। किरपा कर साचा हरि, अनहद साचा राग सुणाए। गुरसिख साचा दुतर जाए तर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन दया कमाए। गुरसिखां सद मेहरबान। उतारे भुक्खां सोहँ देवे दान। उतारे दुक्खां एका धुन उपजाए कान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा विष्नूं भगवान। आत्म धुन आप उपजाए। आत्म सुन्न आप खुल्हाए। गुरमुख चुण प्रभ दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दीपक जोत जगाए। दीपक जोत आप जगाए। बजर कपाट आप खुल्हाए। औखे घाट बांहों पकड़ आप चढ़ाए। सोहँ खुल्हाया साचा हट, गुरसिखां वणज कराए। साच लाहा गुर दर खाट, अन्तिम अन्त जोती मेल मिलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लक्ख चुरासी गेड़ कटाए। सोहँ खुल्हाया साचा हट्ट। गुरमुख साचा लाहा जाए खट्ट। बेमुख वज्जे आत्म फट्ट। कलिजुग ना कोई दीसे हट्ट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सद वसे घट घट। गुरसिख गुर दर वड्याई। गुरसिख गुर पूरन बूझ बुझाई। गुरसिख गुर साची सूझ दवाई। गुरसिख महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग रंगाई। एका रंग आप रंगाए। साचा संग आप निभाए। जो जन मंगे साची मंग, सोहँ दान प्रभ झोली पाए। आत्म चाढ़े मजीठी रंग, कलि उत्तर ना जाई। होए सहाई सदा अंग संग, गुरसिखां सद वधाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच तेरी सरनाई। साची सरना गुरसिख तरना। होए ना मरना चुक्के डरना, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लगाए आपणी सरना। चरन लगाया, दाग़ मिटाया, भाग जगाया, राग सुणाया, हँस काग बणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन चरनीं सीस झुकाया। चरनी सीस झुकाए, दुःख गंवाए। लेख लिखाए भेख मिटाए। निजानंद निज मांहे पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा सिर हत्थ टिकाए। निज घर वासा जोत प्रकाशा। प्रभ पुरख अबिनाशा। होई बन्द खलासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे चरन भरवासा।

३७७
०२

* २ माघ २००६ बिक्रमी प्रेम सिँघ दे गृह पिण्ड बुग्घे *

रक्ख चित पारब्रह्म, हरि काज संवारे। रक्ख चित पारब्रह्म, हरि पैज संवारे। रक्ख चित पारब्रह्म, दूती दुष्ट प्रभ

आप सँघारे। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिखां आए घर अवतार नर पार उतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे लेख लिखारे। रक्ख चित पारब्रह्म, हरि गोबिन्द गोबिन्दा। रक्ख चित पारब्रह्म, वड सुरपति राजे इन्दा। रक्ख चित पारब्रह्म, जुगो जुग विच मात जोत रखंदा। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ अबिनाशी सच खेल वरतन्दा। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिखां प्रभ सद बख्शिंदा। रक्ख चित पारब्रह्म, बेमुख दुष्ट खपाए दर आए जो करन निंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि एकँकार जोत अधार पसर पसार सृष्ट सबाई इक्क अधार रखंदा। सृष्ट सबाई इक्क अधारे। एका जोत प्रभ करतारे। जोती जोत सरूप एका एकँकारे। वड भूपन भूप खड़े रहण दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सति सरूप, सति पुरखां पार उतारे। रक्ख चित पारब्रह्म, जिस देह बणाई। रक्ख चित पारब्रह्म, जिस हत्थ वड्याई। रक्ख चित पारब्रह्म, पवण रूपी स्वास चलाई। रक्ख चित पारब्रह्म, रक्त बूंद तन उपजाई। रक्ख चित पारब्रह्म, एका इक्क आकार पंज विकार अट्ठ धार नौं द्वार प्रगट दसवां गुप्त रखाई। रक्ख चित पारब्रह्म, जोत सरूप ल्या अवतार, मातलोक आया जामा धार, निहकलंक नरायण नर अवतार, बेमुखां जाए सँघार, गुरसिखां जाए तार, जिस साची बणत बणाई। रक्ख चित पारब्रह्म, आत्म होए उज्जयारा। रक्ख चित पारब्रह्म, हउमे रोग गया दुःख भारा। रक्ख चित परब्रह्म, जोग सच गुर चरन दुआरा। रक्ख चित पारब्रह्म, पावे दरस परमेश्वर जगतेश्वर महेश्वर रखेश्वर गुरसिख पूरन पुरख अपारा। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खुल्हाए गुरसिख दस्म दुआरा। रक्ख चित पारब्रह्म, गुर देवे धीर। रक्ख चित पारब्रह्म, कलिजुग प्रगटे वड पीरन पीर। रक्ख चित पारब्रह्म, कलिजुग माया कट्टे गलों जंजीर। रक्ख चित पारब्रह्म, अमृत गुरसिखां प्याए साचा सीर। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ शब्द चलाए आत्म तीर। रक्ख चित पारब्रह्म, बजर कपाटी देवे चीर। रक्ख चित पारब्रह्म, औखी घाटी आप चढ़ाए देवे अमृत साचा नीर। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता गहर गम्भीर। रक्ख चित पारब्रह्म, पूरन आसा। रक्ख चित पारब्रह्म, दुःख लग्गे ना मासा। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ देवे दरस पुरख अबिनाशा। रक्ख चित पारब्रह्म, सर्ब जीआं हरि घट घट रक्खे वासा। रक्ख चित पारब्रह्म, आत्म दीपक जोत करे प्रगासा। रक्ख चित पारब्रह्म, अनन्द विनोद सर्ब गुणतासा। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां करे बन्द खुलासा। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ भए दयाला। रक्ख चित पारब्रह्म, देवे दरस गुर गोपाला। रक्ख चित पारब्रह्म, किरपा करे भगत वछल आाप कृपाला। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ शब्द जपावे आत्म दिखावे साची धर्मसाला। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ शब्द पाए गल माला। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख तेरी पूरी

होए घाला। रक्ख चित पारब्रह्म, आत्म तोड़े सर्ब जंजाला। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कलिजुग अन्तिम अन्त सोहँ शब्द देवे सुखाला। रक्ख चित पारब्रह्म, हरि इक्क रघुराई। रक्ख चित पारब्रह्म, जिस जीव जोत जगाई। रक्ख चित पारब्रह्म, जिस जीव निर्मल देह कराई। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जिस हत्थ तेरी वड्याई। रक्ख चित पारब्रह्म, वड गुण गुणावान। रक्ख चित पारब्रह्म, पूरन जोत इक्क भगवान। रक्ख चित पारब्रह्म, जिस उपाए तीन लोक सच अस्थान। रक्ख चित पारब्रह्म, जिस उपाए लक्ख चुरासी जिस दा दिया जीव जन्त सभ खाण। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जीआं दा जाणी जाण। रक्ख चित पारब्रह्म, पूरन भगवन्ता। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ माण दवाए गुरसिख विच साधन सन्तां। रक्ख चित पारब्रह्म, देवे दरस आदन अन्ता। रक्ख चित पारब्रह्म, मेल मिलाए हरि साचे कन्ता। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ शब्द विच मात वरतंता। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस बणाई तेरी बणता। रक्ख चित पारब्रह्म, जीव अधारी। रक्ख चित पारब्रह्म, भुल्ले जीव सर्ब संसारी। रक्ख चित पारब्रह्म, भव सागर अन्त देवे तारी। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ देवे शब्द ख़ुमारी। रक्ख चित पारब्रह्म, आप बहाए सच दरबारी। रक्ख चित पारब्रह्म, शब्द सरूपी किला कोट रिहा उसारी। रक्ख चित पारब्रह्म, सभ दे अंदर तेरी सच अटारी। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख आपणी हत्थीं तेरी पैज संवारी। रक्ख चित पारब्रह्म, वेले अन्त उठाए, लै जाए चरन द्वारी। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख हरि आप उठाए गोद जिउँ मात बालक प्यारी। रक्ख चित पारब्रह्म, आप जगाए आप उठाए आप हसाए जोत जगाए अचरज खेल न्यारी। रक्ख चित पारब्रह्म, छुट्टे रोग जगे जोत अगम्म अपारी। रक्ख चित पारब्रह्म, आप बहाई सचखण्ड सच धाम सच नाम सच काम सच राम सच शाम एका जोत जगे निहकलंक अवतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर जोत धर, गुरसिखां बहाए साचे खण्ड साचे घर सच्ची अटारी। रक्ख चित पारब्रह्म, हरि लाज रखाए। रक्ख चित पारब्रह्म, हरि घर दिखाए। रक्ख चित पारब्रह्म, हरि घर घर हर लै जाए। रक्ख चित पारब्रह्म, दर दर हरि हरि दर बहाए। रक्ख चित पारब्रह्म, कलिजुग तर पावे हरि, ना आवे डर, एका मिल्या अवतार नर, शब्द उडारी गुरसिख उठावे। रक्ख चित पारब्रह्म, भरम निवारी, गुरसिख तारी सच दरबारी सच धाम बहाए। रक्ख चित पारब्रह्म, एका जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका गोत गुरसिख अन्त जोती जोत मिल जावे। रक्ख चित पारब्रह्म, सदा अभेदा। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ अबिनाशी सद अछल अछेदा। रक्ख चित पारब्रह्म, भेव ना पाया हरि चार वेदा। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना दिसे विच कतेबा। रक्ख

चित पारब्रह्म, जिस जोत जगाई। रक्ख चित पारब्रह्म, जिस सृष्ट उपाई। रक्ख चित पारब्रह्म, तीनां लोआं करे रुशनाई। रक्ख चित पारब्रह्म, खण्डां वरभण्डां ब्रह्मण्डां इक्क रंग समाई। रक्ख चित पारब्रह्म, अकाश पताल मात सर्ब थाँईं होए सहाई। रक्ख चित पारब्रह्म, जल थल थल जल जो रिहा समाई। रक्ख चित पारब्रह्म, घड़ी घड़ी पल पल रिहा लेख लिखाई। रक्ख चित पारब्रह्म, जुगो जुग जोत सरूप हरि रिहा भेख वटाई। रक्ख चित पारब्रह्म, देख देख वेख वेख भेख भुल ना जाई। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ साचा सिख साचे सद दे वड्याई। रक्ख चित पारब्रह्म, जीव भाण्डा काचा कलिजुग भज्ज ना जाई। रक्ख चित पारब्रह्म, जिस साजन साजा, वड राजन राजा, वड काजन काजा, जोत प्रगटाई विच देस माझा, अनहद धुन दे उपजाई। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ शब्द वजावे वाजा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस देवे सो जन प्रभ दर ते पाई। रक्ख चित पारब्रह्म, सच सज्जण सुहेला। रक्ख चित पारब्रह्म, जिस विछड़यां कराया कलिजुग मेला। रक्ख चित पारब्रह्म, अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। रक्ख चित पारब्रह्म, बेमुखां बेड़ा शौह दरयाए ठेला। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सज्जण सुहेला। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख साची मति। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख कदे ना टुट्टे आत्म यति। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ लै साचे हट्ट। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रगट जोत कलिजुग देवे साची मति। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बंधावे धीरज सति। रक्ख चित पारब्रह्म, सदा अतीता। रक्ख चित पारब्रह्म, हरि मिल्या साचा मीता। रक्ख चित पारब्रह्म, हरि देवे दर्शन बख्शे चरन प्रीता। रक्ख चित पारब्रह्म, बेमुखां परखे नीता। रक्ख चित पारब्रह्म, जिस चरन लाग धोत दाग़, पापी होण पतित पुनीता। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मानस जन्म गुरसिख जग जीता। रक्ख चित पारब्रह्म, सच उपदेश। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ जुगो जुग करदा आया वेस। रक्ख चित पारब्रह्म, ब्रह्मा विष्न महेष सद करन आदेस। रक्ख चित पारब्रह्म, विच मात कलिजुग विच सिख प्रवेश। रक्ख चित पारब्रह्म, वड दाता वड मृगेश। रक्ख चित पारब्रह्म, जिस वखाया साचा वेस। रक्ख चित पारब्रह्म, जिस दरस दिखाया, भरम चुकाया, मेल मिलाया, जोती साचा दीप जगाया, गुर चरन सेव कर केस। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द गुरसिखां सुणाए साचा संदेश। रक्ख चित पारब्रह्म, कलिजुग जीव। रक्ख चित पारब्रह्म, अमृत नाम गुर दर पीव। रक्ख चित पारब्रह्म, आत्म सच्ची जगाओ दीव। रक्ख चित पारब्रह्म, आपणी आप रखाओ नीव। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान चरन लाग उपजे राग पूरे भाग, गुरसिख सदा जग जीव। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ साची जोती। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख

बण जाए साचा मोती। रक्ख चित पारब्रह्म, दुरमति मैल जाए धोती। रक्ख चित पारब्रह्म, आत्म जगाए प्रभ साचा सोती। रक्ख चित पारब्रह्म, एका एक एक अनेक करे बुध बिबेक, इक्क मिलाए एका जोती। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख मिलाए जोतन जोती। रक्ख चित पारब्रह्म, गुर दया धारे। रक्ख चित पारब्रह्म, आप बहावे चरन दुआरे। रक्ख चित पारब्रह्म, पावे दरस अगम्म अपारे। रक्ख चित पारब्रह्म, पूरन कर्म विच संसारे। रक्ख चित पारब्रह्म, सच धाम कलि साची कारे। रक्ख चित पारब्रह्म, अनहद शब्द उपजे साची धुन्कारे। रक्ख चित पारब्रह्म, खुल्ले सुन्न काया महल मुनारे। रक्ख चित पारब्रह्म, निर्मल जोत होए उज्जयारे। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सर्ब जीआं अधारे। रक्ख चित पारब्रह्म एका ओट। रक्ख चित पारब्रह्म, हउमे विच्चों कढ्ढ खोट। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ शब्द लगावे साची चोट। रक्ख चित पारब्रह्म, कदे ना आवे कलिजुग तोट। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उतारे गुरसिख तेरे पापन कोट। कोट पाप उतार गुरसिख तारया। किरपा कर हरि आप, बहावे सच द्वारया। सोहँ देवे साचा जाप, मात साचा राह चला रिहा। जोती प्रगटाई नर हरि हरि नर आप, सृष्ट सबाई लेख लिखा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा सर्ब मिटा रिहा। रक्ख चित पारब्रह्म, क्यों आपणा

३८१ ०२ मूल गवा रिहा। रक्ख चित पारब्रह्म, क्यों भुल वक्त खुहा रिहा। रक्ख चित पारब्रह्म बेमुख हो क्यों मुख भुवा रिहा। ३८१ ०२

रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख रसना जप अमरापद हरि दवा रिहा। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सर्ब थाँईं माण दुवा रिहा। रक्ख चित पारब्रह्म, सभ थान थनँतर। रक्ख चित पारब्रह्म, सद वसे पताल गगनंतर। रक्ख चित पारब्रह्म, आवे जावे किसे तरावे किसे डुबाए जुगां जुगन्तर। रक्ख चित पारब्रह्म, बेमुखां भुलावे, गुरसिखां तरावे, साचे मार्ग लावे, साचा नाम जपावे सोहँ साचा मन्त्र। रक्ख चित पारब्रह्म, जिस बणाई तेरी बणतर। रक्ख चित पारब्रह्म, साचा रस भोग। रक्ख चित पारब्रह्म, कदे ना होए विजोग। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ देवे दरस अमोघ। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ शब्द देवे साचा जोग। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ सोहँ शब्द देवे साचा चोग। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां चुगाए सोहँ चोग। रक्ख चित पारब्रह्म, रक्खे लाज। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ देवे सिर ताजां ताज। रक्ख चित पारब्रह्म, लोक परलोक संवारे काज। रक्ख चित पारब्रह्म, छड्ड दुनियां झूठा राज। रक्ख चित पारब्रह्म, ना सोच कल्ह कि आज। रक्ख चित पारब्रह्म, वेला अन्त ना कोई जाणे, किस वेले होए भाज। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो रिहा साजन साज। रक्ख चित पारब्रह्म, पूरन प्रमोद। रक्ख चित

पारब्रह्म, शब्द लिखावे अगाध बोध। रक्ख चित पारब्रह्म, कलिजुग प्रगटे वड जोधन जोध। रक्ख चित पारब्रह्म, गुर चरन लाग आत्म सोध। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उठाए आपणी गोद। रक्ख चित पारब्रह्म, साचा गुसाईं। रक्ख चित पारब्रह्म, सद रसन ध्याई। रक्ख चित पारब्रह्म, जीव भुल ना जाई। रक्ख चित पारब्रह्म, सद रक्खे सरनाई। रक्ख चित पारब्रह्म, तोट कदे ना आई। रक्ख चित पारब्रह्म, दु:ख रहे ना राई। रक्ख चित पारब्रह्म, हरि सुख दे उपजाई। रक्ख चित पारब्रह्म, आत्म तृष्ना भुक्ख दे मिटाई। रक्ख चित पारब्रह्म, मात कुक्ख सुफल कराई। रक्ख चित पारब्रह्म, उज्जल मुख जगत रह जाई। रक्ख चित पारब्रह्म, मिले वड्याई सभनीं थांईं। रक्ख चित पारब्रह्म, साध संगत रक्ख भैणा माई। रक्ख चित पारब्रह्म, साध संगत जाण भैणा माई। रक्ख चित पारब्रह्म, कलिजुग मेल मिलाया जुगां जुग भैणां भाई। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त गुरसिख पार लँघाए फड़ के दोवें बाईं। रक्ख चित पारब्रह्म, चतुर्भुज। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ चरनीं लुझ। रक्ख चित पारब्रह्म, कलिजुग अग्न विच ना भुज्ज। रक्ख चित पारब्रह्म, जीव आत्म मैल गंवाए गुझ। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ शब्द देवे साची धुज। रक्ख चित पारब्रह्म, आत्म भेव खुल्ावे गुझ। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख दरस दिखाए तुझ। रक्ख चित पारब्रह्म, जोती निरँकारी। रक्ख चित पारब्रह्म, सदा भगत उधारी। रक्ख चित पारब्रह्म, निरवैर निराहारी। रक्ख चित पारब्रह्म, जोत सरूप सदा निराधारी। रक्ख चित पारब्रह्म, मातलोक कलंकनिह अवतारी। रक्ख चित पारब्रह्म, जोत सरूप खेल अपर अपारी। रक्ख चित पारब्रह्म, साध संगत ना दिसे रंग रूप, आप भुलाया सर्ब संसारी। रक्ख चित पारब्रह्म, तीन लोक वड सिक्दारी। रक्ख चित पारब्रह्म, सृष्ट सबाई जिस पसारी। रक्ख चित पारब्रह्म, कलिजुग माया पाए अपर अपारी। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिखां बांहों पकड़ जाए तारी। रक्ख चित पारब्रह्म, साचा साहिब सद चरन निमस्कारी। रक्ख चित पारब्रह्म, सद बेऐब परवरदिगारी। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रक्खे लाज आप मुरारी। रक्ख चित पारब्रह्म, जीव जोत निरँजणा। रक्ख चित पारब्रह्म, सद दु:ख भय भंजना। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिखां देवे सोहँ शब्द नेत्र अंजना। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ साचा साक सैण सज्जणा। रक्ख चित पारब्रह्म, काया भाण्डा अन्तकाल भज्जणा। रक्ख चित पारब्रह्म, झूठा घर झूठी दर अन्त जिंदा वज्जना। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख तेरा अन्त बेड़ा बन्ह्णा। रक्ख चित पारब्रह्म, वेले अन्त भाई भैण मात पित कोई ना चले साक सैण सज्जणा। रक्ख चित पारब्रह्म, कर दरस अन्तिम अन्त गुरसिख तेरी आत्म रज्जणा। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे

दर साचे घर जाए वड़, फेर मातलोक नहीं लज्झणा। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख अमोल। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख उतरे पूरे तोल। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ अबिनाशी सद वसे तेरे कोल। रक्ख चित पारब्रह्म, आत्म जिंदा खोलॢ। रक्ख चित पारब्रह्म, अनहद शब्द वजाए ढोल। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ शब्द सुणावे साचा बोल। रक्ख चित पारब्रह्म, तन मन धन गुर चरन घोल। रक्ख चित पारब्रह्म, कर दरस आत्म तैकुटी हिरदा खोलॢ। रक्ख चित पारब्रह्म, सतिजुग साची पौह फुट्टी, प्रभ अबिनाशी रिहा मुखो बोल। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरमुख साचा साचा नाम जायण लुट्टी, प्रभ अबिनाशी देवे हिरदा खोलॢ। रक्ख चित पारब्रह्म, जमदूत ना आवण कोल। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मानस जन्म संवारे अनमोल। रक्ख चित पारब्रह्म, गुर साचा दीना। रक्ख चित पारब्रह्म, अमृत रस साचा पीना। रक्ख चित पारब्रह्म, साचा दाना बीना। रक्ख चित पारब्रह्म, मिले गुरसिख जिउँ जल मीना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे जिहा कीना। रक्ख चित पारब्रह्म, साचा हरी। रक्ख चित पारब्रह्म, जिस किरपा करी। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ पूरन आसा वरी। रक्ख चित पारब्रह्म, जिस मात जोत धरी। रक्ख चित पारब्रह्म, निहकलंक अवतार नर हरी। रक्ख चित पारब्रह्म, सृष्ट सबाई दर दरी। रक्ख चित पारब्रह्म, माता गोद जिस खाली करी। रक्ख चित पारब्रह्म, सृष्ट सबाई मौत घर आप मिटाए लाए इक्क घड़ी। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख तराए बन्द कटाए दरस दिखाए दर आए खड़ी। रक्ख चित पारब्रह्म, सृष्ट सबाई अन्तकाल कलिजुग आप सवाए विच गौर मढ़ी। रक्ख चित पारब्रह्म, कलिजुग रुत्त खिजां आप कराए कलिजुग जीव झड़न जिउँ पत्त झड़ी। रक्ख चित पारब्रह्म, महल मुनारे आप ढवाए, शब्द सरूपी खेल वरताए, इट्ट नाल इट्ट ना रहे खड़ी। रक्ख चित पारब्रह्म, आपणे भाणे विच समाए, घर घर जलाए, किसे घर ना दीसे इक्क कड़ी। रक्ख चित पारब्रह्म, साचा सच वरताए ना देर लगाए, सृष्ट सबाई परोए इक्क लड़ी। रक्ख चित पारब्रह्म, एका हुक्म वरताए, एका शब्द चलाए, एका मार कराए, कोई ना पीवे हुक्का नड़ी। रक्ख चित पारब्रह्म, साची कार कराए, मदिरा मासी मार खपाए, भंग पोसत किते रहे ना अड़ी। रक्ख चित पारब्रह्म, वड मेहरवान आप मिटाए सिगरट तमाकू पान, शब्द वाड़ कर खड़ी। रक्ख चित पारब्रह्म, साचा जगत धर्म मिले हरि पारब्रह्म, सोहँ शब्द लाए झड़ी। रक्ख चित पारब्रह्म, पूरन होए गुरसिख कर्म, रास आया मानस जन्म, आप मिटाए सभ भरम, गुरसिखां प्रभ दर आए खड़ी। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साध संगत प्रभ रसना जप, सद सरन पड़ी। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख ना वहण झूठे वहण। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ दरस दिखाए तीजे नैण। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ सोहँ देवे आत्म गहण। रक्ख चित

पारब्रह्म, गुरसिख गुर संगत बणाए भाई भैण। रक्ख चित पारब्रह्म, सतिगुर साचा आप बणे सज्जण साक सैण। रक्ख चित पारब्रह्म, कलिजुग माया खाए डायण। रक्ख चित पारब्रह्म, बेमुख लैण ना देवे चैन। रक्ख चित पारब्रह्म, बेमुखां सदा गुनाही रहण। रक्ख चित पारब्रह्म, वड वड्याई गुरसिख प्रभ दर ते लैण। रक्ख चित पारब्रह्म, भरम भुलेखे सर्ब लहण। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस जो जन रसना गायण। रक्ख चित पारब्रह्म, वड ऊँचन ऊँचा। रक्ख चित पारब्रह्म, वड सूचन सूचा। रक्ख चित पारब्रह्म, कलिजुग चार कुन्ट कराया कूचा। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख चरन जिउँ कुकड़ी खम्बां हेठ चूचा। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड सूचन सूचा। रक्ख चित पारब्रह्म, त्रैलोकी नाथ। रक्ख चित पारब्रह्म, सगला साथ। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ चढ़ावे साचे राथ। रक्ख चित पारब्रह्म, आपे रक्खे दे कर हाथ। रक्ख चित पारब्रह्म, साचे लेख लिखावे माथ। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा कदे ना टुट्टे साथ। रक्ख चित पारब्रह्म, एका जगदीस। रक्ख चित पारब्रह्म, छत्र झुलावे तेरे सीस। रक्ख चित पारब्रह्म, सृष्ट सबाई जाए पीस। रक्ख चित पारब्रह्म, भेव चुकाए बीस इकीस। रक्ख चित पारब्रह्म, जिस गायण राग छतीस। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरी कोई ना करे रीस। रक्ख चित पारब्रह्म, कढ्ढे भरम भुलेखा। रक्ख चित पारब्रह्म, आप मिटाए पिछला लेखा। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ लगाए साची मेखा। रक्ख चित पारब्रह्म, आप लिखाए गुरसिख तेरी साची रेखा। रक्ख चित पारब्रह्म, पूरन परमेश्वर जोत सरूपी किया भेखा। रक्ख चित पारब्रह्म, सृष्ट सबाई आप भुलाई पाया भरम भुलेखा। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे गुरसिख तेरे दर आए नेत्र पेखा। रक्ख चित पारब्रह्म, नैण मुँधारी। रक्ख चित पारब्रह्म, राम अवतारी। रक्ख चित पारब्रह्म, जोत सरुप शब्द उडारी। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ शब्द चार कुन्ट कराए जै जै जैकारी। रक्ख चित पारब्रह्म, तीन लोक एका करे अकारी। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ शब्द दे प्रभ वड भण्डारी। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख सोहण गुर चरन द्वारी। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर वडा दरबारी। रक्ख चित पारब्रह्म, वड दरबारा। रक्ख चित पारब्रह्म, वड पसारा। रक्ख चित पारब्रह्म, वड अकारा। रक्ख चित पारब्रह्म, कोई ना पावे सारा। रक्ख चित पारब्रह्म, आदि अन्त एका एकँकारा। रक्ख चित पारब्रह्म, विरले गुरमुख सन्त देवे दरस अपारा। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ देवे रंग करतारा। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस ने दिखाया आप आपणा सच दुआरा। रक्ख चित पारब्रह्म, कर दरस उतरे पार। रक्ख चित पारब्रह्म, मिटे हरस ना होए

ख्वार। रक्ख चित पारब्रह्म, कर तरस जाए तार। रक्ख चित पारब्रह्म, अमृत मेघ बरसाए साची धार। रक्ख चित पारब्रह्म, चरन धूढ़ इशनान कराए रोग सोग देवे उतार। रक्ख चित पारब्रह्म, रसना भोग रस विचार। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ देवे जोग कर्म विचार। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ साचा धर्म विच संसार। रक्ख चित पारब्रह्म, मानस जन्म उतरे पार। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर चरन कर गुरसिख निमस्कार। रक्ख चित पारब्रह्म, भाणे जाए ना टल। रक्ख चित पारब्रह्म, सृष्ट सबाई जाए हल्ल। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरमुख विरले रहण अटल। रक्ख चित पारब्रह्म, दर घर साचा गुरसिख मल्ल। रक्ख चित पारब्रह्म, दरगाह साची धाम अटल। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ दरस दिखाए ना लाए घड़ी पल। रक्ख चित पारब्रह्म, सृष्ट सबाई जाए छल। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख प्रभ आप उठाए जिउँ मालन फूलन डल। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरमुख आप तरे संसार, सागर जिउँ कँवल ऊपर जल। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द मुख लगावे गुरसिखां अमृत फल। रक्ख चित पारब्रह्म, पूरन भाग। रक्ख चित पारब्रह्म, आप मिटाए तृष्ना आग। रक्ख चित पारब्रह्म, गुरसिख गुर चरनी लाग। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे धोए तेरे पापां दाग़। रक्ख चित पारब्रह्म, सद चरन बल जाओ। रक्ख चित पारब्रह्म, अगम्म अथाहो। रक्ख चित पारब्रह्म, सद बेपरवाहो। रक्ख चित पारब्रह्म, अमरा पद पाओ। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ धन्न साचा नाम चढ़ाओ। रक्ख चित पारब्रह्म, अगाध बोध बोध अगाध अलख लखाओ। रक्ख चित पारब्रह्म, वड जोधन जोध भय सर्ब चुकाओ। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आए दरस घर पाओ। रक्ख चित पारब्रह्म, हरि चाढ़े रंगत। रक्ख चित पारब्रह्म, प्रभ कट्टे भुक्ख नंगत। रक्ख चित पारब्रह्म, दूजे दर ना होवे मंगत। रक्ख चित पारब्रह्म, मानस जन्म ना होवे भंगत। रक्ख चित पारब्रह्म, कलिजुग अन्तिम पार लँघत। रक्ख चित पारब्रह्म, जिस उपाए जीव जन्नत। रक्ख चित पारब्रह्म, तीन लोक जिस दी मन्नत। रक्ख चित पारब्रह्म, महिंमा जिस दी बड़ी अग्नत। रक्ख चित पारब्रह्म, जिस नूं ध्यायण सर्ब साध संनत। रक्ख चित पारब्रह्म, सोहँ शब्द सुणाए कन्नत। रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रलाए साची संगत।

* १७ चेत २०१० बिक्रमी मेरठ छाउणी विहार होया *

सच सुरत हरि आप दवाए। गुरमुख साचे सन्त जन आप उठाए सोए। आत्म तृखा निवार कर, मैल पापां धोए।

एका साची जोत प्रकाश कर, साची जोत बिलोए। बेमुखां कलिजुग नास कर, आपणा खेल रचाए ना जाणे कोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक अनेक वसे तिन्न लोए। तिन्न लोअ इक्क अकार। तिन्न लोअ इक्क जोत इक्क निरँकार। तिन्न लोक इक्क शब्द इक्क भण्डार। तिन्न लोक एका एक आप करे वरतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप आदि अन्त विच मात लए अवतार। मातलोक हरि जामा धार। आपणा खेल करे करतार। धरती दब्बी पापां भार। कलिजुग अन्तिम आई हार। किरपा करे सच करतार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, पुरी घनक लए अवतार। पुरी घनक जामा धर। मातलोक आया अवतार नर। गुरसिखां खुल्ावे साचा दर। बेमुखां दर साचे आवे डर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत प्रगटाई निहकलंक नरायण नर। नरायण नर भगत अधारे। सच खेल रंग करतारे। जोत सरूपी सद निराहारे। वड वड भूपी तीन लोक इक्क सिक्दारे। जोत पवण पवण जोत सोहँ शब्द सच सच उडारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप चिट्टे अस्व अस्वारे। सच अस्व सच अस्वारा। जोत सरूपी पवण हुलारा। शब्द सरूपी खेल अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग देवे वड्याई गुर चरन प्यारा। गुरसिख वड्याई, सुणे लोकाई, कलि होए दुहाई, सुणे सृष्ट सबाई, गुरमुख साचे सचखण्ड निवासी आपणी गोद उठाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धन्न तेरी वड्याई। वडी वड्याई गुरसिख जणाई। बेमुख गूढ़ी नींद सवाई। आत्म दुःख चिन्त लगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव रिहा छुपाई। भेव खुल्ले पंचम जेठ। पकड़ उठाए वड वड सेठ। पीड़ पिड़ाए कलिजुग कौड़े रेठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लताड़े चरनां हेठ। मेट मिटाए सेठ वड सिठाणयां। करे करावे आपणे भाणयां। माण गंवावे राजे राणयां। एका ओट चरन रखाणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी पहरया बाणयां। हरि गुण हरिभगत जाणे। किरपा करे आप महाने। आप भुलाए वड वड राणे। जीव जन्त होए बाल अञ्याणे। आपणा मूल ना आप पछाणे। सच शब्द कलि चल्लया बाणे। आप भुन्नाए जिउँ भठयाले दाणे। गुरमुख साचा रंग साचा माणे। जोत सरूपी आपे देवे आत्म ब्रह्म ज्ञाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे नाम निधाने। आत्म देवे नाम निधाना। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना। सच काज हरि रस वखाणा। इक्क दर गुरसिख रखाणा। सोहँ अवाज़ कन्न लगाए बेड़ा बन्न्ह अन्त वखाणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत प्रगटाए विष्नूं भगवाना। विष्नूं भगवान कलिजुग जोत धर। गुरमुख साचे पार जाए कर। अन्तिम अन्तकाल आपणा सिर हत्थ धर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां विच्चों वक्ख कर। गुरमुख साचे दर द्वारी। बेमुखां कलि करे ख्वारी। गुरसिख सोहँ नाम रसन उचारी। बेमुख मदिरा मासी दर दुरकारी।

गुरमुख साचे जोत जगे निरँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पार उतारी। गुरमुख तेरा दर दुआरा। प्रभ अबिनाशी चरन दुआरा। आप दिसावे आपणा घर बाहरा। जिथ्थे वसे जोत सरूप निराधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द चलाए आप खुल्हाए तेरा दस्म दुआरा। दस्म दुआरा आप खुल्हाया। साचा गुरसिख आप बणाया। गुर चरन सेव विच मात लगाया। आत्म जिंदा आप तुड़ाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक विच जामा पाया। पुरी घनक लग्गे भाग। गुरमुख सोए जायण जाग। प्रभ साचे दी चरन जायण लाग। आप मिटाए तृष्ना आग। हँस बणाए गुरसिख कलिजुग काग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी आत्म धोवे पापां दाग़। हरि नर नर हरि किरपा कर। कलिजुग अन्तिम आवे डर। कर्म धर्म दोए गए हर। कोई ना दीसे साचा घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मात जोत धर। कलिजुग अन्तिम होए अन्धेर। ना किसे दीसे सञ्झ सवेर। पापां अग्न रही घेर। भुल्ले जीव कर कर हेर फेर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगटावे जोत ना लावे देर। प्रगटे जोत पंचम प्रधान। जोत पवण बली बलवान। बिन रंग रूपी ना कोई करे पछाण। आत्म होई अन्ध अन्धान। साचा धाम सुंञ मसान। गुरमुखां दर सति सरूपी धरे जोत आप भगवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब घटां घट जाणी जाण। पंचम पंचम पंचम होए बलधार। वेखे विगसे करे विचार। सच शब्द भगत अधार। आपे पावे गुरमुखां सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं जोत अधार। सर्ब जीआं हरि आपे जाणे। गुरमुखां हरि आप पछाणे। साचा कन्त इक्क रंग समाणे। बेमुख अन्त ना भुल कलिजुग पछताणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त गुरसिखां खड़ा रहे सरहाणे। आदि अन्त होए सहाई। गुरमुख साचे आण तराए पकड़ बांहीं। एका दिसाए साचा थाउँ दूसर कोई नाहीं। कलिजुग जोत प्रगटाई महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अगम्म अथाही। अगम्म अथाह बेपरवाह। आप दिसावे साचा राह। कलिजुग झूठ जाए मिटा। सतिजुग साचा मार्ग ला। सोहँ साचा नाम जपा। चार कुन्ट जाए जै जै जैकार करा। साचा डंक इक्क वजा। राजा राणा तख्तों लाह। राउ रंक इक्क करा। ऊँच नीच इक्क थां बहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई सोहँ देवे मति जाए समझा। सोहँ देवे सुरत ध्यान। आत्म लावे साचा बाण। इक्क रखाए आपणी आण। साचा उपजे ब्रह्म ज्ञान। जो जन रसना गान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ देवे वड दानी दान। सोहँ दान साचा शाह सुल्तान। साचो सच सच फ़रमाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सच द्वार गुरमुखां करे पछान। सच दुआरा जिस जन जानयां। दर घर जिस पछानया। आपे आप उठाए गुरसिखां बांहों पकड़ बाल अञ्याणयां। सोहँ साचा नाम जपाए मिलाए मेल जोत भगवानयां। महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, विरले कलि पछानयां। आत्म जोत आप जगाए। एका दूजा भेव चुकाए। गुरमुख साचे सेव लगाए। करोड़ तेतीस विच माण दवाए। आण बाण इक्क आपणे हत्थ रखाए। वाली दो जहान दया कमाए। गुरमुख तेरे छत्र सीस झुलाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे विच रहाए। सोहँ शब्द खण्डा दो धारा। उठाए आप प्रभ गिरधारा। रसन चलाए सृष्ट सबाई कराए दो फाड़ा। चीर चिराए दो फाड़ कराए, बेमुखां आए पासा हारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुख साचे सोहण चरन दुआरा। चरन द्वार साचा दर। गुरमुख जाए साचा तर। किरपा कर जाए हरि। आत्म चुकाए आत्म डर। साचा दर आत्म खुल्हाए सर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी किरपा कर। किरपा करे गोबिन्द गोबिन्दा। वड वड राजन सुरपति राजे इन्दा। भगत जनां हरि हरि सद बख्शिंदा। आप तुड़ाए आत्म अन्तिम जिंदा। बेमुखां लक्ख चुरासी विच फिराए, जो दर आए करन निंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड सागर सिंधा। जगत भेख आप मिटाए। कलिजुग अन्तिम कोई रहण ना पाए। साचा कन्त इक्क अख्वाए। गुरमुख साचे सन्त आप जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सेव लगाए। कलिजुग झूठा भेख धर। सृष्ट सबाई गया वर। अन्तिम बन्द कराया दर। जित्थे वसे साचा हरि। बेमुखां आवे झूठा डर। मानस जन्म जायण हर। आपणा किया लैण भर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाई अवतार नर। बेमुख जीव आप पछाणे। धर्म राए दे दर बहाणे। झूठे वहण आप वहाणे। मायाधारी हत्थ बद्धे गाने। अन्तिम अन्त आप भुन्नाए जिउँ भठयाले दाने। वेले अन्त ना कोई छुडाए मात पित भैण भ्राने। दरगाह साची ना कोई जाए बिन प्रभ पूरे, कलिजुग जीव ना भुल निधाने। राए धर्म सच दरबारी। कोटन कोट आयण द्वारी। पकड़ पछाड़े जिउँ किरसान हाढ़ी। बेमुखां ना दीसे पिच्छा अगाड़ी। अन्तिम अन्त होए किस्मत माढ़ी। एका एक प्रनाए मौत लाड़ी। विच चुरासी आप फिराए, कलिजुग हत्थ फड़ाए दाढ़ी। गुरमुख साचे सन्त जन विच मात लगाए साची फुलवाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप प्रगट जोत सदा खड़ा रहे अगाड़ी। गुरसिखां दर आपे आए। हरिजन हरि हरि हरि मेल मिलाए। आप आपणा भेव चुकाए। सोहँ साचा मेव रसन लगाए। इक्क चरन सेव हरि मात दिसाए। गुरमुख साचा जन कोई भुल ना जाए। वड वड देवी देव निहकलंक इक्क रघुराए। अलख अभेव, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दर घर साचा सेव कमाए। सेव कमाए साचे घर। आत्म खुल्हावे साचा दर। पावे दरस अवतार नर। भरम भुलेखा चुकावे झूठा डर। इक्क दिसावे आपणे घर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए अवतार नर धरनी धर। धरनी धर आप नरायण। वेले अन्त अन्तकाल बेमुख आपणा किया भर लैण। गुरमुख साचे सन्त

जन, निहकलंक तेरी चरनी बहण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साचे साक सज्जण सैण। आप कराए साचा मेला। वाली दो जहान गुरसिखां सदा सुहेला। बेमुखां बेड़ा शौह दरया ठेला। गया हत्थ ना आए वेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मात जोत प्रगटाई अचरज खेल कलि खेला। पारब्रह्म कलि खेल न्यारी। जन भगत साची फुलवाड़ी। आप बणाए लगाए साची वाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका शब्द जपाए जोत जगाए बहत्तर नाड़ी। जगे जोत आत्म उज्जयारी। गुरसिख दर साचा घर साचे बण भिखारी। प्रगटी जोत हरि नर नरायण आया मात वड वड भण्डारी। कोटन कोट ब्रह्मा विष्न महेष खड़े रहण द्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत तीन लोक निरँकारी। जावे आवे वारो वारा। विच मात ल्या अवतारा। पारब्रह्म मिटाए भरम, सुफल कराए जन्म जो आयण चरन दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका एक साचा घर बाहरा। सच घर बाहर गुर चरन द्वार। गुरमुखां सद करे प्यार। आदि अन्त साध सन्त प्रभ साचा जाए तार। बेमुखां पाए माया बेअन्त, देवे दर दुरकार। गुरमुख साचे प्रभ साचा कन्त, सोहँ देवे आत्म शब्द अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत निहकलंक नरायण नर अवतार। नरायण अवतार चरन बलिहारी। सच सिरजणहारी। गुरसिखां करे आत्म कारे, बेमुखां करे ख्वारी। गुरसिख रसन कराए सोहँ जै जै जैकारी। पंच जेठ बणे सच लिखारी। वड वड सेठ चार कुन्ट, निहकलंक तेरी आयण चरन द्वारी। सोहँ देवे साचा नाम, राजे राणे मंगण बण बण भिखारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका जोत शब्द अस्वारी। शब्द अस्वारा पवण हुलारा। तीन लोक इक्क जैकारा। चार कुन्ट हाहाकारा। पंचम जेठ लिख्त लिखाए, भेव खुलाए सृष्ट सबाई सारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मात जोत प्रगटाई बेमुखां भरम निवारा। बेमुखां माण गंवाए शान गंवाए, एका शब्द बाण लगाए। बली बली आप उठाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान लिख्त भविख्त पंचम जेठ आप लिखाए। पंचम जेठ शब्द लिखावणा। सोहँ साचा शब्द तीर चलावणा। लोक परलोक अवण गवण सर्ब भवण वांग सवण अग्न मेघ वरसावणा। दामनी दमन कामनी कमन जोत पवण सोहँ चण्डी आप चमकावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत शब्द सरूपी खेल रचावणा। आप वरताए अचरज खेल। आप जलाए सृष्ट सबाई बिन बाती बिन तेल। गुरमुख साचे सन्त जन, गुर चरन मिलाए मेल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई, कलिजुग मिटाए कलिजुग झूठा खेल। कलिजुग झूठी खेल मिटावणी। एका वेला एका वक्त आप कटाए हाढ़ी सावणी। एका जोत एका अग्न चार कुन्ट लगावणी। जोत सरूपी वसे विच उनन्जा पवनी। आपे आप वरते तीन भवनी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोती जोत सरूप बेमुखां आप मिटाए जिउँ रामा रावणी। चौथा

जुग आई हार। कलिजुग अन्त होए ख्वार। जामा धारे आप करतार। आपे करे सृष्ट सबाई आर पार। इक्क शब्द दो धार। गुरमुखां जाए तार। बेमुखां करे ख्वार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कोई ना पावे तेरी सार। सार ना जाणे जीव अञ्याणे। माया धारी आत्म काणे। विषे विकारी सुघड़ स्याणे। आत्म अन्ध अंध्यारी वड वड राणे महांराणे। होए हँकारी ना जाणे भगवाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान वड बली बलवाने। वड बली बलवाना। एका झुल्ले तेरा सच निशाना। सोहँ शब्द विच पवण बबाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द आप चलाए आप वरताए करे कराए जो मन भाणा। आपणे भाणे आपे वरते। वरते कहर उप्पर धरते। करया खेल आप कादर करते। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सो जन उधारे जो जन आए दर ते। दर दुआरा जाए खुल्ल्ह। सोहँ नाम मिले अनमुल्ल। जो जन दर ते आए भुल्ल। आप संवारे आपणी कुल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिन्ता चिखा मिटाए काया झूठी चुल्ल्ह। काया अकारी जोत पसारी। कलिजुग जीव ना मनों विसारीं। साचा बण चरन पुजारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर सच दरबारी। सच दरबारा सच घर आवणा। सच घर बाहरा कलिजुग पावणा। सच विहारा। आत्म भरम भउ मिटावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे दर आए दर्शन पावणा। दरस पाओ सच जगदीश। एका छत्र झुलाओ सोहँ साचा सीस। आप चुकाओ गुरसिख बीस इकीस। गुरमुखां कोई ना करे रीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर कोई ना दीस। ना कोई दूसर ना कोई दोआ। ना उह जम्मे ना उह मोआ। ना उह जागे ना उह सोया। गुरमुख साचे सद सदा तेरे आत्म दर द्वार प्रभ अबिनाशी सदा खलोया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ बीज साचा बोया। जीउ पिण्ड जिस जन साज्जया। जीव सो क्यों भुल्ला गरीब निवाज्जया। कलिजुग डुला, ना कोई रक्खे लाज्जया। झूठी माया विच रुला, अन्तकाल भाण्डा काचा भाज्जया। सच द्वार विच मात दे खुल्ला, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जिस जीव साजन साज्जया। साजन साजे साजणहारा। पंच तत्त तन किया पसारा। सच सुच्च विच जोत अकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप विच बैठा रहे निराधारा। गुरमुखां सदा वसे कोल, ना जाणे मूर्ख मुग्ध गंवारी। जूठे झूठे कलिजुग जीव, रसना रहे झक्ख मारी। ना पछाणे आपणा मूल, वेले अन्त होए ख्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दर दरबारी। गुरचरन लाओ धूढ़। नाम रंग चढ़ाए गूढ़। आप कटाए पापां जूड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान चरन प्रीती साची लोड़। चरन प्रीती साची जाण। एका देवे चरन ध्यान। सर्ब जीआं दा जाणी जाण। मात जोत प्रगटाई महाराज शेर सिँघ वाली दो जहान। वाली दो जहान साचा हरि। आप वसाए साचा घर। रसन जपाए हरि हरि हरि। महाराज शेर सिँघ

विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे किरपा कर। किरपा करे किरपा निध। दर घर आए कारज कीने सिद्ध। सोहँ शब्द चलाए आत्म जाए विध। आपणा मेल मिलाए विच मात कराए साची बिध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे कारज कीने सिध्ध। घर उपजाए नौं निध। नौं निध घर उपजाए, आयण चरन द्वारी। कारज सिद्ध भगत उधारी। आप खुल्हाए दस्म दुआरी। शब्द चलाए इक्क उपजाए धुन्कारी। उपजे धुन खुल्ले सुन्न, देवे दरस आप निहकलंक नरायण नर अवतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां जाए पैज संवारी। आपे आए जाए पैज संवार। गुरमुख साचे दर दरबार। बेमुख झूठे कलि सुत्ते पैर पसार। बेमुख नाम विहूणे, मानस जन्म गए कलि हार। नाम भण्डारे रहे ऊणे, कोई ना देवे वस्त हरि थार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मदिरा मासी अन्तिम कलिजुग देवे दर दुरकार। मदिरा मासी दर दुरकारे। चार कुन्ट कराए हाहाकारे। घर घर दर दर फिरन भिखारे। आवण जावण वाहो दाही नारी नारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग करे खेल अपारे। वरते खेल अन्तिम कलि। प्रभ का भाणा ना जाए टल। काल रूप होए खाए कलि। आप भन्नाए काचे डल। शब्द सरूपी चलाए हल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ सर्ब भेव खुल्हाए जिउँ कराए जल ते थल। जल थल आप करावणा। आपणा भेव आप खुल्हावणा। सर्ब लेखा आप चुकावणा। वेखा वेख जगत भुलावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माया रूपी पड़दा पावणा। माया रूपी पड़दा पाए। आपणा आप ना किसे जणाए। सोहँ साचा शब्द चलाए। गुरमुख साचे कन्न सुणाए। धन्न धन्न धन्न गुरसिख आत्म जाए मन्न, हरया तन मन, प्रभ साचा दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग बेड़ा बन्न्ह वखाए। सोहँ शब्द सुणावे कन्न। गुरमुखां बेड़ा जाए बन्न्ह। साचा नाम देवे माल धन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे दान, ना लग्गे कदे संन्ह। नाम दान साचा धन। गुरसिख साचे पल्ले बन्न्ह। विष्नूं बंसी सूरया बंसी काहना कंसी जोत प्रगटाए। गुरमुखां माण दवाए विच सहँसी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी दया कमाए। आत्म साची जोत जगाई, आप बणाए साचे फुल। साचा हँस साची कुल। सोहँ शब्द संग जाए तुल। विच मात होए गुरमुख अनमुल्ल। बेमुख कलिजुग जीव जायण भुल। अमृत आत्म गया डुल। सोहँ धुन खुल्ले सुन्न। आप खुल्हाए गुरमुख साचे चुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क उपजाए शब्द धुन। साची धुन सच धुन्कारा। गुरमुख विरला सुणे विच संसारा। बेमुखां आत्म अन्ध अन्धयारा। मदिरा मास रसन चले विकारा। दूती दुष्ट रहे झक्ख मारा। गुरमुखां देवे प्रभ आत्म अमृत सोहँ सच भण्डारा। सच सच सच वरते चार कुन्ट कराए जै जै जैकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कराए सच वरतारा। सच वरतारा आप करावणा। जोत

सरूपी भेख वटावणा। राउ रंक सरन लगावणा। राजा राणा पकड़ उठावणा। आप आपणी सेव लगावणा। मस्तूआणे चरन टिकावणा। साचा धाम आप उपजावणा। चार वरन इक्क थां बहावणा। ऊँच नीच ज़ात पात बरन अठारां इक्क करावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक जोती जोत सरूप प्रभ अख्वावणा। मस्तूआणा धाम सुहा के। चार वरन इक्क थां बहा के। आप आपणी गोद उठा के। सोहँ साचा नाम जपा के। राणा संगरूर संग रला के। साध संगत विच मिला के। आप आपणी सेव चरन लगा के। चरन धूढ़ मस्तक छुहा के। जोत ललाट विच जगा के। औखे घाट आप चढ़ा के। बजर कपाट आप खुल्हा के। साची ओट इक्क रखा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अचरज खेल वरते वरताए, वाली हिन्द पकड़ उठाए, जोत सरूपी दरस दिखा के। राणा संगरूर संग रलावणा। आप आपणा कर्म कमावणा। जमन किनारे डेरा लावणा। दिल्ली विच हरि साचे साचा डंक वजावणा। सच धाम साचे हरि साचा दर आप खुल्हावणा। प्रगट होए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच दिल्ली दरस दिखावणा। जमन किनारे डेरा लाए। जोत सरूपी खेल वरताए। एका शब्द पवण चलाए। वड वड भूपी तीन गवन उठाए। अमृत मेघ सवण आप बरसाए। एका शब्द विच पवण वसाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तीन लोक एका आपणा नाम वरताए। इक्क शब्द आप चलाए। सच धर्म दी कार कराए। कूड़े कुड़यार सर्ब मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जमन किनारे डेरा लाए। लग्गे डेरा जमन किनार। एक शब्द होए गुंजार। साधां सन्तां सुणे पुकार। आदिन अन्ता विच संसार। साचा कन्ता बणे सच भतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल करे करतार। साध सन्त आप उठाए। सुन्न मुन आप खुल्हाए। रुण झुण इक्क रखाए। आप आपणा दरस दिखाए। स्वच्छ सरूपी महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जोत जगाए। जोत सरूपी खेल अपारया। मातलोक हरि जामा धारया। अचरज खेल करे करतारया। आवे जावे वारो वारया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक कलि जामा धारया। जामा धारे एका अंक। सोहँ शब्द वजाए साचा डंक। इक्क कराए राउ रंक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपे आप तराए जिउँ राजा जनक। आप चढ़ाए आत्म रंग। गुरसिख साचे पार जायण लँघ। होए सहाई संग अंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता सूरा सरबंग। सूरा सरबंग दीन दयाले, सच जोत मूर्त अकाल नज़री आए। वेख विचारे जन किरपा धारे, आपे होए सहाए। भरम निवारे देवे चरन प्यारे, एका नाम जपाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका छत्र आपणे सीस झुलाए। एका छत्र झुल्ले सीस। प्रगट होए विच मात कल्गीधर जगदीस। सृष्ट सबाई जाए पीस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई ना करे तेरी रीस। उच्च दर उच्च दरबारा। उच्च दर

सच घर बाहरा। उच्च घर वसे निरँकारा। उच्च दर एका जोत इक्क अधारा। उच्च दर एका एक सर्ब पसारा। उच्च दर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा। ऊँच दर हरि निरँकारी। ऊँच दर जोत सरूपी पसर पसारी। ऊँच दर वरते वरतावे विच संसारी। ऊँच दर मिले वर देवे प्रभ वड भण्डारी। ऊँच दर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। निहकलंक अगम्म अगम्मा। आप मिटाए आत्म भरमा। सुफल कराए माणस जन्मां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां लिखाए साचे कर्मा। उच्च दर सच दरगाह। उच्च दर जोत प्रगटाई बेपरवाह। उच्च दर गुरसिखां बिठाए साचे थां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूसर कोई ना। उच्च दर एका जोती। उच्च दर गुरसिख उणाए माणक मोती। गुरमुखां सुणाए साचा राग, आत्म जगाए सोती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस तेरी आत्म मैल जाए धोती। उच्च दर रंग अपार अनूप। हरि प्रगटाया जोत सरूप। उच्च दर भेव कोई ना पाए वड वड भूप। किसे दिस ना आए प्रभ अबिनाशी बिन रंग रूप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सति सरूप। उच्च दर उच्च घर वसे हरि। उच्च दर किरपा जाए कर। उच्च दर गुरमुख साचे चरन लाग, प्रभ खाली भण्डारे दए भर। उच्च दर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक अवतार नर। उच्च दर दीन गोपाला। आत्म देवे सोहँ साची माला। उच्च दर आपे होए सर्ब रखवाला। उच्च दर साचा सर आत्म जोत जगाए जिउँ जोत ज्वाला। उच्च दर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात विरले गुरमख भाला। उच्च दर एका ओट। उच्च दर गुरमुखां कढे आत्म खोट। उच्च दर सोहँ शब्द लगावे आत्म चोट। उच्च दर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख साचे कलिजुग गोद उठाए बेमुख आलूणिओ डिगे बोट। उच्च दर सच घर वासी। उच्च दर मात जोत प्रगटाए प्रभ अबिनाशी। उच्च जोत आपणी दया कमाए घनकपुर वासी। उच्च जोत सृष्ट सबाई कराए चरन दासी। उच्च जोत आप मिटाए अन्तिम अन्त मदिरा मासी। उच्च जोत गुरमुखां करे बन्द खलासी। उच्च जोत बेमुखां दर आए हासी। उच्च जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति पुरख निरँजण गुरमुख साचे सद सद बलि बलि बलि जासी। उच्च दर जोत निरँजण। उच्च दर बेमुखां दुःख दर्द भय भञ्जण। उच्च दर साचा साक सैण सज्जण। उच्च दर गुरमुखां नेत्र पावे, साचा चरन धूढ़ अंजन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप एका आप निरँजण। उच्च दर साची धारा। उच्च दर गुर चरन दुआरा। उच्च दर गुरसिख कर गुर चरन प्यारा। उच्च दर आप दिखावे प्रभ गिरधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका दर दुआरा। सच दुआरा चरन अरदास। आत्म दुखड़ा होए नास। एका जोत करे प्रकाश। किरपा करे प्रभ अबिनाश। जन भगतां होया दास। मात

३६३
०२

जोत प्रगटाए सोहँ शब्द जपाए स्वास स्वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दर घर आए पूर कराए आस। पूरन आसा होए जन। हरया होए मन तन। बेमुखां प्रभ साचा जाए डन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां शब्द सुणाए कन्न। सोहँ शब्द सच दुखड़ा नासा। पूरन दिया गुर चरन भरवासा। मानस जन्म कराए रासा। सचखण्ड कराया घर साचे वासा। देवे दरस सर्ब गुणतासा। करे तरस प्रभ अबिनाशा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम कलिजुग पुरी घनक जोत सरूपी किया वासा। पुरी घनक धाम अटल। आप अपारे गुरमुखां तारे जिउँ दर घर जाए बल। बेमुखां पकड़ पछाड़े, कर कर वल छल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जुगो जुग अटल। आप अटल सर्ब निवासी। दुखियां करे बन्द खुलासी। आत्म होए सर्ब रहरासी। कलिजुग माया दर तों नासी। एक छाया सर्ब घट वासी। साचा तीर्थ गुर चरन नुहाया, सोहँ गाया रसन स्वासी। प्रभ अबिनाशी घर साचा पाया, अन्तिम जोत सच प्रकाशी। भाण्डा भरम भउ भन्नाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुखियां करे बन्द खलासी। आत्म रोग प्रभ देवे कट्ट। गुरमुख साचे सन्त जन, दर साचे सोहँ लाहा लैण खट्ट। विच मात मुख उज्जल, अग्गे पहनण पट्ट। एका शब्द जपाया गुर चरन दिखाया साचा तीर्थ तट्ट। साचे मार्ग पाया, हरि वस्सया घट घट। सच भण्डार खुल्हाया गुर पूरे साचा हट्ट। गुरमुखां वणज वपार कराया, सोहँ लैण लाहा खट्ट। बेमुखां दर दर फिराया, जिउँ बाजीगर नट। माया ममता विच रुलाया, मदिरा मासी विष्टा रहे चट्ट। गुरसिखां सोहँ स्वास स्वास चलाया, दूई द्वैत कढ्ढी घट। प्रगट जोत स्वच्छ सरूपी दरस दिखाया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान झट्ट। तन मन दुःख जाए नस्स। एका शब्द चलाया कस। लक्ख चुरासी होवे वस। आप उपाए आप मिटाए आपे करे भस्स। आप जगाए आप बुझाए आपे गुरमुखां लेख लिखाए राह साचा जाए दस्स। साची धुन उपजाए आत्म सुन्न मुन खुल्हाए, गुरमुख विच मात कलिजुग चुण जगाए, इक्क दवाए सोहँ साचा रस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां सद होया वस। दुःख दर्द जीव दुहेला। आवे जावे इक्क अकेला। भैणा भाईआ झूठा मेला। एका साचा पित रक्खे हित वसे तेरे आत्म चित, प्रभ अबिनाशी साचा सज्जण सुहेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगां जुगां दे विछड़यां पंचम जेठ कराए मेला। पंचम जेठ होए मेल। अचरज वरते पारब्रह्म खेल। इक्क लगाए सृष्ट धकेल। आप लगाए उपाए गुरसिख सोहँ बीज बिजाए, गुरमुख उपजाए साची वेल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए, गुरमुख तेरी आत्म डगमगाए, अज्ञान अन्धेर मिटाए, बिन बाती बिन तेल। बिन तेल जगाए जोती। आप बणाए आपणे गोती। सृष्ट सबाई रही सोती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ गुरसिख साचे आप बणाए माणक मोती। साध

संगत सच जणाई। पंचम जेठ मातलोक वज्जे वधाई। तीन लोक जै जै जैकार सुणे लोकाई। करोड़ तेतीस हरि दर ते आई। शिव शंकर चल आयण दर, बाशक तशक गल लटकाई। ब्रह्मा विष्न महेश, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर बहण सीस झुकाई। वाक भविख्त प्रभ रिहा लिखाई। पंचम जेठ गुर संगत मिले वड्याई। दर घर साचे माण दवाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब सुखदाई। पंचम जेठ आवे जग। कलिजुग जीव सर्ब कराए कग। माया धारी झूठे धन्दे गए लग्ग। सोहँ साचा शब्द मूंह लगाए सग। एका शब्द गुरसिख तेरे तन पहनाए, सन्तोख धीरज धज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान वड सूरा सरबंग। वड सूरबीर। सृष्ट सबाई करे वहीर। एका शब्द चलाए तीर। मेट मिटावे खपावे अठसठ नीर। गंगा गोदावरी रहण ना पावे, जोत खिचावे खवाज़ा खिज़र पीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त करे, ना कोई दिसे पीर फ़कीर दस्तगीर। पीर दस्तगीरा पैण वहीरा। लथ्थण चीरा ना कोई देवे किसे धीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप मिटाए कलिजुग तेरीआं लिखीआं धुर तकदीरां। जोत सरूपी धारे प्रभ अबिनाशी भेख। सृष्ट सबाई रही वेखा वेख। गुरमुखां आत्म विच लगाए सोहँ साची मेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख नेत्र पेख। आत्म नेत्र आप खुल्हाए। आप आपणी बूझ बुझाए। भेव गूझ कोई रहण ना पाए। एका दूज सर्ब मिट जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां दया कमाए। अमृत मेघ आप वरसाया। किरपा कर आप रघुराया। अमृत साचा मुख चुआया। आत्म सुख इक्क उपजाया। दुःख भुक्ख सभ रोग मिटाया। गुरमुखां मुख भोग लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा जोग नाम दवाया। अमृत आत्म आप चुआए। सोहँ साचा जाम पिलाए। सुक्का ताम हरा कराए। रमईआ राम दया कमाए। घनईआ शाम जोत प्रगटाए। नाम निधान झोली पाए। गुण निधान जन भगतां पार कराए। साध संगत साचा दर द्वार खुल्हाए। आप चढ़ाए साची रंगत, दुःख दर्द सर्ब मिटाए। दूसर दर ना कोई मंगत, देवणहार इक्क रघुराए। जो रल जायण साची संगत, अज्ञान अन्धेर प्रभ दे मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी आत्म दीप जगाए। आत्म दीप जगे एक। जो जन रक्खे चरन टेक। आप कराए बुध बिबेक। कलिजुग माया ना लागे तन सेक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगो जुग एका एक। इक्क ओंकार जोत सरूपी, सति वरतार सति सरूपी, सृष्ट सबाई होए अन्ध कूपी, ना कोई जाणे शाह वड भूपी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुखां बूझ बुझाए, आत्म दुःख सर्ब मिटाए, तृष्ना भुक्खा दे मिटाए, मात कुक्खा सुफल कराए, एका दिसे सति सरूपी। सति सरूपी सति वरतंत। एका जोत सच भगवन्त। वेखे खेल हरि जुगा जुगन्त। होए मेल दर साचे घर साचे हरि जाए भगवन्त। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप मिलाए जन साचे सन्त। सन्त जनां हरि धुन उपजाई। गुण अवगुण ना किसे जणाई। सर्ब गुण आप हो जाई। निरगुण सरगुण आप रघुराई। वरते खेल सर्ब थांईं। गुरमुख साचे विच गोद बिठाए पकड़ बाहीं। आप आपणे अंग लगाए जिउँ बालक माई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो जन लेवे जिस जन देवे, महिंमा गणी ना जाई। महिंमा अगणत ना कोई जाणे। वेद कतेब ना कोई पछाणे। आप अभेद गुण निधाने। अछल अछेद सर्ब भुलाणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाणे। देख देख वेख वेख भेख भेख, कलिजुग जीव ना भुल्ल। वेख वेख देख देख भेख भेख झूठी माया विच ना रुल। वेख वेख भेख भेख देख देख, ना लगा कलंक कुल। वेख वेख भेख भेख देख देख, मानस जन्म गवा ना अनमुल्ल। वेख वेख देख देख भेख भेख झूठा कलिजुग जीव ना तुल। वेख वेख भेख भेख देख देख, मानस जन्म गंवाया कँवल फुल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए पंचम जेठ सच भण्डारा जाए खुल्ल। वेख वेख भेख भेख, मस्तक मिटे रेख। चरन लाग जागण भाग, होए बुध बिबेक। आत्म तृष्ना बुझा आग, झूठा काया जगत भेख। प्रभ साचा जन चरनी लाग, सोहँ शब्द लगा आत्म मेख। आत्म धो पापां दाग़, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दरस दर नेत्र पेख। नेत्र पेखणा हरि हरि हरि जीओ। साचा नाम निधान दर घर साचे पीओ। गुरमुख साचे सन्त जनो, निर्मल कराओ जीओ। मदिरा मास तजाओ मन तनों, आत्म जोत जगाओ दीओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा दान, आत्म मारे ब्रह्म बाण, कलिजुग घाटा तन आत्म पाटा सोहँ धागा लै रसना सीओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची लिख्त लिखाए, वाक भविख्त आप वरताए, ना कोई मेटे मेट मिटाए, आपणी आप सतिजुग रखाए नीओ। सतिजुग साचा सच उपजाया। पहली माघ जन्म दाया। एका सोहँ साचा राग झोली पाया। प्रभ अबिनाशी हत्थ आपणे पकड़ी वाग, चार कुन्ट आप दुड़ाया। गुरमुखां धोए आत्म दाग़, पवण सरूपी विच स्वास चलाया। आप बणाए हँस काग, साची धुन उपजाया। जो जन गए चरन लाग, प्रभ साचा होए सहाया। कलिजुग पापी ना डस्से नाग, सोहँ मणका प्रभ आप छुहाया। गुरमुख साचे गए जाग, दर घर आए दर्शन पाया। आत्म तृष्ना बुझी आग, भाण्डा भरम भउ भन्नाया। साध संगत मन वज्जे वधाई, जिउँ मिले बिदर वड्याई, दर घर आए साग अलूणा खाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई, भरम चुकाई, दर आया माण दवाई, दुखियां दुःख मिटाई सोहँ नाम जपाया। आए जन दर सच मंगण। आप पहनाए हत्थ सोहँ कंगण। आपा साचा नाम जपाए, इक्क चढ़ाए रंगण। अंग संग संग अंग प्रभ सद समाए, आपे रक्खे आपणे अंगण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन

दर साचा मंगण। एका मंगया साचा दर। जिथ्थे वस्सया साचा हरि। भण्डारे खाली जाए भर। प्रभ अबिनाशी देवे साचा वर। चरन लाग गुरमुख साचे विच मात कलिजुग तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई अवतार नर। पतित पापी पार उतारदा। जो जन चरन आए निमस्कारदा। साचा रंग सच्चे करतार दा। गुण अवगुण ना किसे विचारदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए साचे तारदा। पतित पापी पार उतारना। आप कराए आपणे कारना। सर्ब जीआं जाणे सारना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगादि आदि सद सदा सद तारना। पतित पापीआं उतरे रोग। आप गंवाए झूठा भोग। आप मिटाए चिन्ता सोग। आप दिसाए दरस अमोघ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चुगावे रसना आत्म चोग। पतित पापीआं देवे मति। सच शब्द आत्म धीरज देवे साचा सति। आपे रक्खे दर आया पति। साचा बीज बिजाए, आत्म साचे वत्त। रसना चरखा आप चलाए, सोहँ सूत्र देवे कत्त। झूठी काया सच जोत जगाए, सोहँ शब्द बुझाए साचा तत्त। एका एक डगमगाए, एक दिसाए चरन नत्त। जो जन साचा चरन लग जाए, प्रभ साचा देवे साची मति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप आप समझावे, दर आया देवे साची मति। साची मति साची सीख्या। प्रभ अबिनाशी सच घर परीख्या। जो जन मंगण आए घर, साचा प्रभ देवे साची भीख्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां लेखा साचा लीख्या। लिख्या लेख सच दरबारे। निहकलंक नर अवतारे। वज्जे डंक गुर संगत तेरे दर दुआरे। इक्क इक्क इक्क दिसाए अंक, एका शब्द सच्ची धुन्कारे। आप मिटाए आत्म शंक, जो जन आए खड़े दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा सर्ब निवारे। भरम भुलेखा आप कढ्ढे। अज्ञान अन्धेरा शब्द खण्डा आपे वढ्ढे। जोत जगाए देह अन्धेरी खड्डे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झोली देवे भर, जो जन दर मंगे दोवें हत्थ अग्गे कढ्ढे। मंगे दर होए निमाणा। देवे वर आप भगवाना। सच तख्त सच सुल्ताना। जीव जन्त दे विच समाणा। नाथ त्रैलोकी विष्नूं भगवाना। कलिजुग जीव ना भुल निधाना। सृष्ट सबाई सुंञ मसाना। एका आप रघुराई, जिस साचा खेल रचाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान चरन सेवा एका सच टिकाना। सच टिकाना दर दरगाह। एका बैठा बेपरवाह। बेमुखां कलि दीसे नाह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान इक्क बहाए साचे थां। राज जोग भगत दान। सच भोग चरन धूढ़ इशनान। मिटे रोग आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान। जगे जोत आत्म कोटन भानन भान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, किरपा करे आप भगवान। आत्म जोत होए उज्जयारी। काया कंदर देह अंध्यारी। इक्क अकगरी जोत निरँकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचा शब्द अधारी। सच शब्द जगत अनमुल्ल। एका एक आप अतुल। सृष्ट सबाई रही भुल्ल।

आत्म दिया होया गुल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना दर आया कोई रुल। आत्म दर होया बन्द। कलिजुग जीव अन्तिम अन्ध। पापां अंदर होई कंध। दुखी होया बन्द बन्द। कलिजुग नाता टुट्ट गया तन्द। माया फाही ल्या फंद। धर्म राए अन्तकाल भन्ने दन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म मारे पापां जंद। आत्म जिंदा गया वज्ज। कौण देवे पड़दे कज्ज। मदिरा मास खा पी लै रज्ज। झूठे भाण्डे अन्त जाणा भज्ज। प्रभ अबिनाशी दे मति समझाए, ना तैनूं आवे लज्ज। धर्म राए दे सजाए सिर बन्ह्र्राए छज्ज। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेख लिखाए, ना कोई मिटाए, जीव ना वेख कल कि अज्ज। कल्ह अज्ज वेख विचार। फिर ना आवे दूजी वार। लक्ख चुरासी होए ख्वार। मरे जन्मे आवे वारो वार। नित उठावे दुःख, ना प्रभ पावे तेरी सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां देवे सच नाम अधार। सच घर इक्क दातारा। सच घर इक्क पसारा। सच घर इक्क वरतारा। सच घर एका एक वसे जोत सरूप रंग अनूप वड वड भूप प्रभ निरँकारा। सच घर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सच दुआरा। सच घर बैकुण्ठ निवासी। सच घर जोत प्रकाशी। सच घर सर्ब घटा घट होए वासी। सच घर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मात जोत प्रगटाए, भाग लगाए घनकपुर वासी। सच घर सच अस्थाना। सच घर जोत महाना। सच घर एका एक वसे भगवाना। सच घर कोटन कोट जगे जोत भानन भाना। सच घर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। सच घर साची धारा। सच घर सच गुंजारा। सच घर अमृत सच फुहारा। सच घर सच वर देवे आप करतारा। सच घर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ वरतावे सच भण्डारा। सच घर सच भण्डारी। सच घर सच संसारी। सच घर सच सिक्दारी। सच घर सच सरदारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द देवे जोत अधारी। सच शब्द जोत अधार। सच शब्द रंग अपार। सच शब्द इक्क धुन्कार। सच शब्द सुन्न खुल्ह्रार। सच शब्द सुन्न मुंन देवे आप निवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां मिले सच भतार। सच शब्द विच नव खण्ड। सच शब्द प्रभ चरन आप वखावे सर्ब वरभण्ड। सच शब्द गुर चरनी प्रीती प्रभ आप रखाए विच ब्रह्मण्ड। सच शब्द, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचा दर गुरसिख तेरी आत्म होए ना रंड। गुरसिख आत्म सदा सुहागण। गुरमुख साचे प्रभ चरन लाग सद जागण। गुरसिख साचे विच मात वड वड भागण। प्रभ आप उपाए साचा रागण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन तेरे चरन लागण। चरन लागो कलिजुग सोए जागो। जोत प्रगटाए वज्जी वधाई सतिजुग साचे नींह रखाई, पहली माघो। देवे वड्याई आपणे घर, हँस बणाए कागों। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर साचा दर साचे लागो। दर घर साचा आपे पावणा। भाण्डा काचा

विच दीपक जोती जोत जगावणा। सोहँ शब्द जन हिरदे वाचा, भगत भगवान हरि मेल मिलावणा। बेमुख दर ते आए नाचा, खाली हत्थ घर मुड़ जावणा। गुरमुख साचे पल्ले साचो साचा, पवे साचा नाम बंधावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा अन्तिम अन्त मुकावणा। सच नाम पल्ले बन्नू। आप मिटाए आत्म जन। प्रभ अबिनाशी बेड़ा अन्तिम उठाए आपणे कंध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां दे वड्याई, रसना कहे धन्न धन्न धन्न। गुरसिख तेरी वड्याई। गुर चरन सेव कमाई। आप आपणा सिर हत्थ टिकाई। सर्ब कला समरथ, मात पताल अकाश तेरा होए सहाई। बेमुखां पाए नत्थ, दर दर विच मात भवाई। सृष्ट सबाई होए सत्थ, भैणां छड्डण भाई। कलिजुग झूठी लद्दु प्रभ भन्नाई। प्रभ दी महिंमा बड़ी अकथ्थ, ना कोई जाणे ना किसे जणाई। गुरमुख साचे तेरा आप चलाए रथ, होए आप रथवाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस तेरी गुरसिख बणत बणाई। गुरमुखां हरि हरि हरि रखवाला। आदि जुगादि सदा प्रितपाला। बोध अगाध अगाध बोध शब्द चलाए मात सुखाला। गुरमुखां आत्म जाए सोध, सोहँ शब्द गल बन्नावे साची माला। जोत सरूपी वड जोधन जोध, आप खपाए सभ दुष्ट चण्डाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरे गलों कट्टे जगत जंजाला। जगत जंजाल आप कटाए। होए कंगाल जो दर ते आए। सच धन माल सोहँ प्रभ झोली पाए। गुरमुख साचे साची वस्त संभाल, प्रभ तेरी आत्म विच टिकाए। फिर हत्थ ना आवे अज्ज जो दित्ता अनमुल्लड़ा लाल, गुरमुख साचा भुल ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप गुरमुखां सुत्या दरस दिखाए। गुरसिख सोए हरि साचा जागे। शब्द लिखाया हरि पहली माघे। शब्द उपजाए अनहद अनाहद वाजे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख भाग लगाए, आत्म जोत जगाए, तेरी काया धोवे दागे। झूठी काया महल मुनार। कलिजुग जीव ना भुल गंवार। एका हरि सच्चा करतार। एका दर भरे भण्डार। देवे वर हरि देवणहार। जाओ तर कर चरन निमस्कार। आत्म खुल्ले दर अमृत सर झिरना झिरे अपर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर जाए तार। अमृत झिरना आप झिराए। किरना किरना मेघ बरसाए। बरसे मेघ कँवल मुख चुआए। मुख कँवल आप उलटाए। उलटे कँवल होए रुशनाए। आत्म बवल ना सुध रहाए। जोत सरूपी दिसे सँवल, सद डगमगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख साचे तेरे आत्म आत्म दर द्वार खुल्लाए। आत्म दर सच दरवाजा। जिथ्थे वसे गरीब निवाजा। जिस तेरा साजन साजा। एका शब्द सद सद सद अवाज़ा। आपे रक्खे तेरीआं लाजां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत संवारे काजा। सतिगुर साचा शब्द ढंडोरा। जोत जगाए विच अन्ध घोरा। आप मिटाए तोरा मोरा। आपणे हत्थ पकड़े डोरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं

३९९
०२

भगवान संपूरन कला सोलां। सतिगुर साचा सच संदेश। जोत सरूपी किया वेस। लोकमात वटाया भेस। भाग लगाया माझा देस। भेव किसे ना पाया, आप भुलाया वड वड नरेश। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ साचे को सदा अदेस। माझे देस जोत जगाई। पुरी घनक होए रुशनाई। सचखण्ड सच धाम सतिजुग बण जाई। विच वरभण्ड देवे आप वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान लेख लिख्त रिहा लिखाई। पुरी घनक जोत जगाए। सृष्ट सबाई करे रुशनाए। कलिजुग अन्तिम अन्त हो जाए। साध सन्त सभ सुन्न खुल्हाए। आत्म मुन किसे रहण ना पाए। शब्द धुन आप उपजाए। सच गुण आप जणाए। बेमुख चुण नष्ट कराए। हरिभगत चुण हरि नाम दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक जोत प्रगटाए। पुरी घनक जोत प्रगटाई। देवे शब्द इक्क रघुराई। पारब्रह्म पूरन जोत जगाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब थांई होए सहाई। सर्ब थाँईं होए सहाया। आपणे भाणे विच समाया। आवण जाण जाण आवण खेल रचाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा मेल मिलाया। आपणा मेल मिलाए कलि। सृष्ट सबाई जाए दल। प्रभ का भाणा ना जाए टल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बहाए जल ते थल। जल थल होए वहीरा। आप कराए नीर नीरा। बालकां हत्थ ना आवे सीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एक शब्द चलाए तीरा। शब्द तीर आप चलाए। जगत वहीर आप कराए। पीर फ़कीर सर्ब मिट जाए। धीरन धीर जगत धीर कटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर दर फिराए। दर दर फिरन भिखारी। राजे राणयां होए ख्वारी। एका दिसे पासा हारी। एका चले शब्द कटारी। सृष्ट सबाई होए दो फाड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए विच जूह जंगल पहाड़ी। जोत लगाए अग्न विच उजाड़ां। आप बणाए धरत मात इक्क अखाड़ा। सृष्ट सबाई मौत बणाए लाड़ी लाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चबाए आपणी दाढ़ा। आप चबाए आपणी दाढ़। चार चफेर होए काड़ काड़। एका उठे रूसा धाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप सवाए विच झाड़। उठे लशकर रूसा भारा। सृष्ट सबाई होए ख्वारा। दर दर फिरन नारी नारा। ना कोई देवे किसे सहारा। वाहो दाही चारे यारा। अहिमद मुहम्मद होए ख्वारा। ईसा मूसा आरा पारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द सिर धराया आरा। ईसा मूसा होए ख्वारी। एका दिसे पासा हारी। कुरान अञ्जील होए दुख्यारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोई ना पावे तेरी सारी। माण गंवाए कुरान अञ्जीला। आप कराए एका हीला। अग्न जोत लगाए तीला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप हिलाए पवन सरूपी आप झुलाए शब्द जगत डुलाए टीला। कलिजुग माण गंवाए वेद पुराना। सत्तर लक्ख चढ़े पठाना। प्रभ जोत सरूपी पहरया

बाना। भेख मिटाए कृष्ना काहना। तीर चलाए सोहँ बाना। साची खेल रचाए महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। एका लशकर आए चढ़। सवण वहण जिउँ वहन्दे हढ़। ना कोई दीसे किला गढ़। चार कुन्ट कराए दड़ दड़ धड़ धड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी विच माझे देस खड़। विच देस माझे खड़। आप तुड़ाए किले गढ़। बेमुख जीव मर जायण लड़। अड्ड अड्ड कराए सिर धड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उखाड़े बेमुखां जड़। माझे देस भक्ख करा। बेमुख जीव वक्ख करा। कक्ख कक्ख लक्ख लक्ख विच ख़ाक रुला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर अमृत देवे थेह करा। सर अमृत मेट मिटाई। चार कुन्ट पै जाए दुहाई। बेमुख भज्जण वाहो दाही। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरी पैज रखाई। सर अमृत तेरी होए ख्वारी। वाघे उठे लशकर भारी। लिख लिख्त अचल अपारी। जूठयां झूठयां हत्थ फड़ाए प्रभ काचे ठूठयां, दर दर फिरन भिखारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क धकेल लगाए आप कराए पार ब्यास किनारी। वेखे खेल कोल ब्यासा। लाड़ी मौत फड़ाया हत्थ काला कासा। जोत सरूपी किया वासा। बेमुखां होए चार चफेर नासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा दासन दासा। आस पास वेख ब्यास। ना दिसे किसे वास। होए थेह तेरा साचा घर गुर राम दास। कलिजुग जीवां वेसवां घर बणाया, करन सद सद सद हास। दिवस रैण तेरे सर सरोवर विच वड़न, खाण पीण मदिरा मास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेट मिटाए, ख़ाक ख़ाक ख़ाक कराए सर अमृत विच रहण ना पाए जिस खाया मदिरा मास। मदिरा मासी सच दर ते जाए नासी। जोत प्रगटाई घनकपुर वासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप धकाए ना कोई कराए बन्द खलासी। सच घर अमृत सर। मूर्ख मुग्ध अञ्याण आपणा किया लैण भर। पापी पाप कमावण, धीआं भैणां लैण फड़। गुर रामदास तेरा साचा घर, इस घर विच्चों आवे डर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द मार कर। शब्द उठाए खण्डा दो धारी। वड गिरधारी सृष्ट सबाई ना भुलेखा रहे नर नारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माझे देस पाए ख्वारी। माझा देस गया भुल्ल। अमृत साचा गया डुल्ल। किसे ना मिले अग्ग चुल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो जन उधरे जो चरन आयण भुल्ल। अमृत बूंद सुहावणी। गुरमुखां जोत जगावणी। अज्ञान अन्धेर मिटावणी। सुख सहजे सहज समावणी। साचा नाथ सच करामात, हरि सोहँ शब्द जपावणी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूर कराए भावनी। रसक रसक रसक आत्म रस पाया। रस रस रसना प्रभ साचे सच दवाया। जन भगतां दासन दास दसना, प्रगट होए दरस दिखाया। माण दवाए विच सहँसा, सन्त जनां दुःख रोग दे मिटाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा मुख चुआया। अमृत साचा गुरमुख पी।

निर्मल कराओ गुर दर जी। आप बणाए पुत्तर धी। मात रखाए साची नींह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां अमृत मुख चुआए आत्म जोत जगाए, बेमुखां लै जाणा की। बेमुख आत्म चले विकार। घर साचे रिहा झक्ख मार। वक्ख वक्ख करे करतार। होए कक्ख कक्ख विच संसार। लक्ख लक्ख जन्म पावे आवे जावे वारो वार। भक्ख भक्ख भक्ख होए रसन आहार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त करे ख्वार। अन्तिम अन्त होए ख्वारा। दिवस रैण रहे तन अफारा। काया तन लग्गा दुःख भारा। वैद हकीम ना कोई चले चारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत मुख चुआए आप फिराए सिर पापां आरा। अमृत मुख चुआया सीतल धार। सांतक सति सति सति वरतावे, प्रभ साचा पावे सार। रत्त रत्त नाड़ नाड़ छुडावे, दुःख काया दे निवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए साचे दर दरबार। अमृत आत्म साचा फल। दीपक जोती जाए बल। किशना शुक्ला निकले वल। कोटन कोट दुखड़े जायण जल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन दर आए चल। आए दर साचे पान्धी। कलिजुग दुक्खां आत्म बांधी। रोगां सोगां पाई फांदी। वैद हकीमां लुट्टी चांदी। ना किसे छुडाई तन बद्धी बांदी। आत्म होई सभ दी आंधी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत मुख चुआए आत्म शांत शांत शांत सवांदी। आत्म शांत सति सन्तोख। सोहँ घर लै जाणा साचा मोख। रसना गाओ उतरन सभ दोख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा राह दिसाए कलिजुग अन्तिम सौख। साचा मार्ग सोहँ गावणा। प्रभ अबिनाशी साचा पावणा। दिवस रैण गुरसिखां पकड़े दामना। आदि अन्त सद होए जामना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत दर आई पूर कराए भावना। मनों कामना होए पूरी। आत्म चिन्ता ना रहे अधूरी। आप उतारे सगल वसूरी। सोहँ शब्द साची तूरी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए आत्म करे नूरो नूरी। साचा नूर जोत भगवान। कलिजुग जीव ना भुल निधान। सोहँ शब्द आत्म बान। देवे दरस आप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। दरस देख साचा रंग। दरस दान दर साचे मंग। गुरमुख साचे साध संगत विच ना संग। मानस जन्म ना होवे भंग। एका एक चढ़ाए प्रभ साचा मजीठी रंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप कट्टे तेरी भुक्ख नंग। भुक्ख नंग होए दूर। किरपा कर प्रभ साचा सर्ब कला भरपूर। वसे नेड़ जिस जाणो दूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द आत्म देवे साचा सति सरूर। सति सरूर आत्म देवे। सोहँ फल जीव साचा मेवे। गुरमुख विरला प्रभ दर लेवे। बेमुख रहे भरम भुलेवे। सो जन उधरे पार, जो जन रसना सेवे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर आपणा आप जपाए रसना जेहवे। सुरत शब्द हरि मेल मिलाए। शब्द सुरत हरि भरम चुकाए। सुरत शब्द हरि कर्म कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

साचा शब्द रिहा जणाए। सुरत शब्द साचा जोग, देवे दरस प्रभ अमोघ। सुरत शब्द रस साचा भोग। सुरत शब्द प्रभ बूझ बुझाए आप मिटाए चिन्ता सोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां चोग चुगाए सोहँ मोती चोग। सोहँ चोग रसना चुण। सच शब्द कन्न धर गुरसिख सुण। आत्म दूई द्वैत प्रभ साचा देवे पुण। एका एक उपजाए, अनहद साची धुन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सीतल सीत प्रसाद वरताए मुख लगाए गुरसिख साचे चुण। सिर पैरां तन लग्गी अग्ग। झूठा दिसे सारा जग। अग्न पवन तन रही वग। कोई ना चले सूत्र तग। किरपा करे प्रभ अभग्ग। काया सीत कराए, जित लग्गी रहे अग्ग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए पग। आत्म सोग रहे नित। दुखियां रहे सदा चित। कोई ना दीसे जगति मितक। झूठा दिसे सारा हित। किरपा करे प्रभ साचा पित। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरनी लाग गुरमुख साचे मानस जन्म जाए जग जित। चरन लाग मूल ना भूलना। सोहँ शब्द प्रभ मात झुलाए साचा झूलना। साचे तख्त बिठाए आप दवाए चुकाए पिछला मूलना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आदि अन्त तेरा साचा सच कन्तूलना। खिट्टा रोग होए दूर। हड्ड हड्ड जिस कीता चूर। किरपा करे सर्ब गुणां भरपूर। अमृत देवे साचा नूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना जप उतारे तप मिटे पप आत्म रहे सति सरूर। सति सरूर सर्ब सुख दानी। गुरमुख गुर चरन लाग तेरी आत्म होए ब्रह्म ज्ञानी। कलिजुग जीव सोया जाग, अन्तकाल साची मिले नाम निशानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई घर आया गुण निधानी। गुण निधान साचा कन्त। देवे वड्याई सर्ब जीव जन्त। जोत जगाई विच बैठ इकन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरी फिर बणाए बणत। बणत बणाई जाए बण। आपे कढ्ढे काया कण। अग्न जोत लगाई जिउँ धागा सण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी शब्द चलाए पवण। पवन सरूपी पवण चलाए। नाम निरबाण इक्क लगाए। पवण मसाण कोई रहण ना पाए। जम का बेटा कोई नेड़ ना आए। हाकन डाकन सिर मुंडवाए। लोहे की मुगली सीस लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छल छिद्र सोहँ शब्द संग मेट मिटाए। पवण सरूपी देही वासा। प्रभ अबिनाशी किया नासा। आत्म अग्न जगत तमासा। झूठी दुनियां करे हासा। पवण मसाणी होया वासा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए तेरे चरन भरवासा। गुर चरन सच प्रीती। प्रभ साचा परखे नीती। आपे बख्शे भुल जो कीती। साची दात प्रभ दर जिस जन साचे लीती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे वड्याई मानस जन्म जाए जग जीती। गुर चरन सच कर मन्नणा। आपे बेड़ा आपणा बन्नणा। वेख वेख कलिजुग जीव ना संगणा। साचा नाम साचा तन गुरमुख साचे रंगणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

एका दर दरबार विच मातलोक दे मंगणा। भरे रहण सद भण्डारे। देवणहार इक्क दतारे। गुरमुख साचे खड़े दुआरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा बणे आप वरतारे। नाम दान आप वरताया। गुरमुख साचे तेरी झोली पाया। आप पले प्रभ साचे दी थल्ले छत्र छाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई, साध संगत विच साचा बचन लिखाया। साचा बचन आप लिखाए। वेख वेख गुरसिख जगाए। गुरमुख साचे नेत्र पेख, प्रभ आत्म शांत कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत काहना कृष्ना दरस दिखाए। काहना कृष्ना मुकट बनवारी। खड़े रहण तेरे दर दरबारी। जोत सरूप हरि हरि निरँकारी। भगत वछल आप गिरधारी। गुरमुख साचे देवे नाम कलिजुग बण वपारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे आत्म करे कारी। आत्म कारी आपे कर। साची जोत प्रभ देवे धर। आप चुकाए जम का डर। चरन लाग विच लोकमात तर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त आप लै जाए साचे घर। अन्तिम अन्त प्रभ आपे आए। गुरमुख साचा फड़ गोद उठाए। दरस अमोघ आप दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धर्म राए दे बन्द कटाए। होए सहाई प्रगट जोत आप रघुराई। विच बबाण लए बिठाई। सच अस्थान प्रभ दे उपजाई। एका जोत जिथ्थे जगाई। दिवस रैण रहे रुशनाई। गुर नानक दर दर्शन पाई। गगन में थाल शब्द लिखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप थिर घर वसे साचा रघुराई। थिर घर हरि साचा वस्सया। गुरमुख साचे राह साचा दस्सया। बेमुख दर तों जाए नस्सया। अन्तकाल जमदूतां बेमुखां पकड़ कस्सया। गुरमुख साचे प्रगट जोत करे प्रकाश कोट रवि सस्सया। गुरसिख सचखण्ड जाए हस्सया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां आत्म अन्धेर कराई जिउँ चन्द मस्सया। गुरमुखां प्रभ दया कमाए। सोहँ साचे कंडे आप तुलाए। भुल्ले भुलाए मार्ग पाए। भगत जनां होए सहाए। कलिजुग डुल्ले आप भुलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान भुलयां रुलयां सच मार्ग पाए। आत्म अडोल सोहँ कंडे प्रभ देवे तोल। प्रभ अबिनाशी ना जाणो अनभोल। सोहँ साचा शब्द वजावे ढोल। जोत सरूपी वसे कोल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द लिखाए रसना बोल। सच शब्द होए सहाए। दुःख रोग देह मिटाए। चिन्ता सोग ना रहे राए। आपणे भाणे विच समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। दया कमाए दीन दयाला। भगत जनां देवे सोहँ धन माला। गलों कट्टे जगत जंजाला। गुरसिख ना होए कदे कंगाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम देवे स्वास सुखाला। स्वास स्वास स्वास रसना गावणा। धरवास धरवास धरवास रखावणा। आस आस आस, प्रभ पूरन आस करावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दुःख रोग सोग मिटावणा। सच प्रेम पूरन भगवन्ता। होए मेल प्रभ साचे कन्ता। देवे वड्याई विच

जीव जन्ता। आप मिटाए आत्म चिन्ता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए आप टिकाए एका किणका। आत्म जोत आप बिलोए। प्रभ अबिनाशी साचा धोए। लोक परलोक संवारे दोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना गावे गुरमुख विरला जाणे कोए। रसना गावणा सुख उपजावणा। भरम मिटावणा कर्म कमावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सरूपी सद रिदे वसावणा। रिदे वसाओ साचा हरि। कलिजुग अन्तिम जाओ तर। साध संगत बण आओ दर। सच मंगत वर पाओ हरि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत किरपा देवे कर। गुर संगत गुर एका रंग। गुर संगत गुर एका संग। गुर संगत दरस दान दर मंग। गुर संगत होए सदा अंग संग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बेमुख भन्नाए काची वंग। गुरमुख तेरी धीरज सति। सोहँ साचा नाम बीज वत । आप रंगाए आत्म रत । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे रक्खे तेरी पति । रक्खे पति आप वड पतवन्त। प्रभ अबिनाशी साचा कन्त। गुरसिख साचे आप तराए धीर धराए बणाए साचा सन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कोई ना जाणे आदि अन्त। आदि अन्त आपे होए। एका दूआ ना जाणे कोए। साचा सूआ आपे होए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सोहँ धागे लए परोए। सोहँ धागा साची माला। साचा पित दीन कृपाला। भगत रच्छक गुर गोपाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,
४०५ गुरसिख साचे तेरे सदा अंग संग वसे नाला। गुर संगत तेरे मन वधाई। दर घर साचे मंगल गाई। प्रभ साचा देवे आप ४०५
०२ वड्याई। पूरन इच्छया आप कराई। साची भिच्छया प्रभ झोली पाई। चार वरन होए रुशनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं ०२
भगवान, मात जोत प्रगटाई। चार दिशां इक्क दिसायण। जोत प्रकाश प्रभ अबिनाशे कलिजुग मिटाए अन्धेरी रैण। साध संगत प्रभ चरन दास, गुरमुख साचे मिल विच बहण। बेमुख दर ते आए हासे, साचा लहणा गुरसिख लैण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस दिखाए गुरमुखां तीजे नैण। तीजे नैण दस्म दुआरा। आप लिखाए देवे शब्द हुलारा। जोत सरूपी जोत जगाए आप खुल्हाए सच दुआरा। आप आपणा डगमगाए गुर साचे बूझ बुझारा। भेव आपणा आप खुल्हाए, देवे दरस अगम्म अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान वसे तेरे आत्म दर दुआरा। आत्म वेख मार झाकी। पिछला लेखा ना रहे बाकी। गुर चरन लाग ना आत्म रहे आकी। सोहँ साचा जाम पिलाए प्रभ साचा बणे साकी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मिटाए तेरा आत्म अन्ध अन्धयारा, सोहँ लाए चाबी आप खुल्हाए ताकी। आत्म ताक आप खुल्हाए। भविक्खत वाक आप लिखाए। साची सिखत आप दवाए। गुर संगत कलि भुल ना जाए। कलिजुग माया विच रुल ना जाए। प्रभ अबिनाशी अडुल्ल, गुरसिख कोई डुल्ल ना जाए। प्रभ अबिनाशी सदा अतुल्ल, सृष्ट सबाई आप तुलाए। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आप अभुल्ल, सृष्ट सबाई आप भुलाए। सृष्ट सबाई गई भुल्ल। कलिजुग अन्तिम गए डुल्ल। कलिजुग माया विच गए हुल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां देवे सोहँ नाम वड दात अनमुल्ल। वड वड शब्द वड हीरा। आत्म तृखा आप बुझाए, सोहँ पिलाए साचा सीरा। अमृत साचा मुख चुआए, माण गंवाए अठसठ नीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचे तेरे सीस बंधाए सोहँ चीरा। सोहँ चीरा सच दस्तार। गुर चरन प्रीती साचा प्यार। एका एक साची रीती सोहँ रसन उचार। साची जोत जगाई, सच सच सति सति वरते विच संसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सोहँ शब्द कराए जै जै जैकार। सोहँ शब्द मात चलावणा। खाणी बाणी सर्ब मिटावणा। वेद पुरान कोई रहण ना पावणा। ज्ञान गीता अन्त करावणा। कुरान अञ्जील मेट मिटावणा। एका शब्द डंक वजावणा। पवण सरूप विच समावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक फेर अखवावणा। जोत सरूपी आपे उठ। गुरसिखां प्रभ जाए तुठ। बेमुखां प्रभ जाए रुठ्ठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेट मिटाए जगत सबाई झूठ जुठ। जूठ झूठ सभ नष्ट करावणा। बेमुखां हत्थ ठुठ फड़ावणा। दर दर घर घर प्रभ साचे आप फिरावणा। गुरमुखां घर साचे सोहँ गीत सुहाग गावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत साध संगत तेरे विच सुहावणा। साध संगत प्रभ चरन दुआरे। दिवस रैण सोहँ शब्द उचारे। बेमुख जीव होयण ख्वारे। चार कुन्ट सुंञे दिसण महल मुनारे। आपे कलि खेल वरताए करतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत निरँकारे। वरते खेल जगत वरतारा। अचरज रूप प्रभ गिरधारा। ना कोई पावे जीव सारा। आदि अन्त दुष्ट सँघारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन मंगया तेरा चरन दुआरा। जो जन आयण चरन हज़ूर। दुःख दर्द प्रभ कीने दूर। जोत प्रगटाई वड दाते सूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला भरपूर। सर्ब कला आपे समरथ। साध संगत प्रभ रक्खे दे कर हत्थ। सोहँ देवे साची वत्थ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई सर्ब जीआं का साचा सथ। साचा राग आप सुणाए। साचा स्वांग आप वरताए। एका कांग जगत चढ़ाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे विच समाए। अमृत वेले गुरसिख जागे सदा सुखीए होए वडभागे। शब्द चलाया प्रभ अनरागे। आत्म जाग सोहँ लागे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार उतारे चरन दुआरे जो जन लागे। उठ जीव जाग वक्त सुहञ्जणा। जोत जगाए प्रभ निरँजणा। उठ जीव जाग कलि बेड़ा बन्नणा। उठ जीव जाग, अन्तिम अन्त अन्तकाल कलि पार लँघणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर साचा मंगणा। उठ जीव जाग, जगत वक्त सुहेला। उठ जीव जाग, गुर पूरे गुरसिख कराया मेला। उठ जीव जाग, अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला।

उठ जीव जाग क्यों होया जगत दुहेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचा गुर विच मात साचा सज्जण सुहेला। उठ जीव जाग, जगत अन्धयारा। उठ जीव जाग, ना दिसे कोई किनारा। उठ जीव जाग, प्रभ देवे नाम अधारा। उठ जीव जाग, गुरमुखां प्रभ भरे भण्डारा। उठ जीव जाग, बेमुख सोए दर आए पैर पसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका घर सच दुआरा। उठ जीव जाग, आत्म रस। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी होवे वस। उठ जीव जाग, अमृत वेला पी अमृत साचा रस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत राह साचा जाए दस्स। उठ जीव जाग, प्रभ साचा जोत धरे। उठ जीव जाग, गुरसिख बण दर आए खड़े। उठ जीव जाग, प्रभ भाग लगाए तेरे घरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी पूरन आस करे। उठ जीव जाग, प्रभ भए दयाला। उठ जीव जाग, प्रभ सोहँ देवे नाम सुखाला। उठ जीव जाग, तेरी आत्म ना होए कंगाला। उठ जीव जाग, कलिजुग घनघोर घटां काला। प्रभ साचा तेरा आत्म सच द्वार खुल्हाए सच्ची धर्मसाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए साचा गुर गोपाला। गोपाल गोपाल गोपाल आत्म दीपक देवे बाल। जोत सरूपी जोत टिकाए विच अनमुल्लड़ा लाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां बणाए विच लोकमात निराली चाल। गुरसिख मार्ग सति। सच शब्द साचा तत्त। आत्म धीरज देवे यति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आया रक्खे पति। पति परमेश्वर पूरन भगवाना। देवे नाम सच भगवाना। सोहँ बद्धा गुरमुख हत्थ साचा गाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाणा। जाण पछाण आपे कर। भगत दान अग्गे धर। जोत महान आत्म धर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चतुर सुजान देवे कर। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञाना। एका देवे चरन धूढ़ इशनाना। सोहँ देवे नाम निधाना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जिस जन रसना गाणा। रसना गाओ रोग सोग मिटाओ। सति पुरख निरँजण आप आपणे विच्चों पाओ। जगत भेख वेख भुल ना जाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस मिटे हरस ना रहो तरस, साचा सुख आत्म उपजाओ। साध संगत गुर दर वधाई। जोत सरूपी प्रभ विदा कराई। आत्म तृष्ना भुक्ख मिटाई। फूलन बरख़ा प्रभ साचे लाई। करोड़ तेतीस सरन बहाई। गण गंधरब गुरसिख साचे सेव लगाई। गुरसिख साचे सन्त जन निहकलंक तेरी सरनाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत दर घर आया आपे दे वड्याई। गुर चरन गुरसिख निमस्कारो। मानस जन्म कलि सुधारो। अन्तिम अन्त उतरो पारो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा बलिहारो।

* १६ चेत २०१० बिक्रमी मेरठ छाउणी विहार होया *

गुर पाया वड वडभागी। कलिजुग आत्म सोई जागी। ना कोई पछाणे ना कोई जाणे वेदी रागी। सो जन जाणे जिस प्रीत चरन प्रभ लागी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए सतिजुग साचा लाए पहली माघी। सतिजुग साचा सच वरतंत। गुरमुख साचे आप जगाए प्रभ साचा कन्त। देवे आप वड्याई विच जीव जन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत निरँजण आदि अन्त। एका जोत इक्क अकारी। आवे जावे वारो वारी। ना कोई जाणे जीव संसारी। जन भगत देवे नाम शब्द अधारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग जोत निरँकारी। जोत निरँकारी साची आए। कलिजुग अन्तिम अन्त कराए। दुःख भुक्ख सर्ब मिटाए। गुरमुख साचे आप जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा पार लँघाए। किरपा कर पार लँघाए। वेले अन्त आप छुडाए। साचा कन्त इक्क रघुराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे रंग रंगाए। गुरमुख साचे आपणी सेव लगाए। वड देवी देव दया कमाए। आप आपणा भेव खुल्हाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, लोकमात विच जामा पाए। जोत सरूपी जामा धर। सृष्ट सबाई जाए हर। मूर्ख मुग्ध भुल्ले दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख आप जगाए चुकाए झूठा डर। गुरमुख जाग वक्त सुहेला। गुरमुख जाग ना रहे जगत अकेला। गुरमुख जाग प्रभ अबिनाशी विछड़यां आप कराए मेला। गुरमुख जाग आत्म धो दाग़, हत्थ ना आवे वेला। गुरमुख जाग दर साचे भाग सुण साचा राग बण साचा सज्जण सुहेला। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, बण गुरसिख साचा चेला। गुरसिख जाग वक्त विचार। गुरमुख जाग वेला अन्त ना हार। गुरमुख जाग प्रभ चरन लाग आत्म आपणी आप सुधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर जाए तार। गुरसिख जाग चरन प्यार। गुरसिख जाग प्रभ साचे दी साची कार। गुरसिख जाग प्रभ साचा सच अवतार। गुरसिख जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नरायण नर हरि का द्वार। नरायण नर हरि साचा। सृष्ट सबाई भाण्डा काचा। एका दर एका घर साचा हरि हरि साचा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप निरँजण घर साचो साचा। सच सच आपे करतारा। सच सच आपे निरँकारा। सच सच गुरमुख साचे दर साचे करो निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका साचा दर सच दरबारा। सच दरबार त्रैलोकी नाथ। गुरसिखां रक्खे आपे दे कर हाथ। साचा सज्जण सुहेला साचे लेख लिखाए माथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चढ़ाए सोहँ साचे राथ। आप आपणा मार्ग लाया। गुरमुखां प्रभ साचे साचा राह बताया। बेमुखां वहन्दे वहण वहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत धर अचरज खेल

आप वरताया। अचरज खेल रंग करतारा। घर घर रोवण नारी नारा। अन्तिम बाज़ी गए हारा। कलिजुग जीव भुल्ले गंवारा। प्रभ अबिनाशी ना किसे विचारा। साची जोत करे अकारा। कलिजुग माया झूठा विहारा। गुरमुख विरले किसे विचारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दी पावे सारा। सर्ब आधार इक्क शब्द चलाया। सोहँ धार दो रखाया। गुरसिख उधार बेमुख खपाया। विच संसार सच मार्ग लाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप आपणी दया कमाया। दया कमाए दीन का दाता। जन भगतां कलि आप पछाता। देवे माण जिउँ बालक माता। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, दिवस रैण रैण दिवस इक्क रंग रंगाए आप मिटाए ज़ाता पाता। ज़ात पात कोई रहण ना पाए। गुर चरन नात इक्क दिसाए। चार वरन विच मात भैण भ्रा बणाए। सोहँ शब्द वड करामात साचा शब्द जपाए। जन भगतां देवे साची दात। जो दर मंगण आए। आपे पुच्छे दर घर साचे आए बात, रोग सोग कोई नेड़ ना आए। गुरमुख साचे वेख मार झात, जोत सरूपी तेरे विच समाए। झूठे दिसण भैण भ्रात, वेले अन्त ना कोई छुडाए। दर साचा, घर साचा, वर साचा, साचा दाता, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात जोत प्रगटाए। प्रगटे जोत निहकलंक। सोहँ शब्द वजावे साचा डंक। मेट मिटाए द्वार बंक। एका एक कराए राउ रंक। हँकारीआं दुष्ट दुराचारीआं आप मिटाए मन का शंक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां आत्म जोत जगाए तनक। जोत सरूपी शब्द हुलारा। देवे आप हरि गिरधारा। मारे तीनो ताप शब्द खण्डा दो धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे हत्थ उठाए सृष्ट सबाई आरा पारा। आरा पारा होए ख्वारा। ना झल्ले मारा शब्द दो धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई करे दो फाड़ा। चण्ड प्रचण्ड प्रभ देवे वंड। विच नवखण्ड पावे डण्ड। रोवण रंड टुट्टी गंढु। उडी झण्ड ना पावे किसे ठंड। बेमुखां आई कंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एह खेल रचाई लोकमात विच जामा धार, खण्ड ब्रह्मण्ड प्रभ देवे वंड। बेमुख पायण झूठी डण्ड। राणयां महांराणयां तोड़े घमंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए सच नव खण्ड। बेमुखां प्रभ डन्न लगाए। राजे राणे तख्तों लाहे। कलिजुग गए मुख भवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी खेल रचाए। आप उठाया खण्डा दो धारी। बेमुखां करे आप ख्वारी। सृष्ट सबाई हाहाकारी। ना कोई दिसे जीव एका जोत लोकमात प्रभ साचे साची धारी। निहकलंक वेले अन्तिम अन्त कलिजुग सर्ब करे ख्वारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरी खेल अपर अपारी। सच विहार हरि साचा खेल। सृष्ट सबाई सच पिलाए अग्न जोत लगाए बिन बाती बिन तेल। बेमुखा बेड़ा शौह दरया देवे ठेल। गुरमुखां आप कराए आपणा मेल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सज्जण सुहेल। सतिगुर साचा एका हरि। आप चुकाए

जगत डर। सोहँ देवे साचा वर। दरस दान जो मंगे दर। तरस कर देवे साचा हरि। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर। किरपा करे आप रघुनाथ। आप निभाए आपणा साथ। सोहँ शब्द जपावे साची गाथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चढ़ाए साचे राथ। साचा साथी प्रभ साचा जाण। आपणा आप जीव पछाण। एका ओट सच भगवान। ना आवे तोट वड दाता गुण निधान। कढ्ढे खोट आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता वड मेहरवान। सतिगुर साचा साचा रंग। सतिगुर साचा साचा संग। सतिगुर साचा दरस दान दर मंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा रहे तेरे अंग संग। सतिगुर साचा सोहँ साचा रंग चढ़ाए। सतिगुर साचा एका नाम दे मजीठी फिर उत्तर ना जाए। सतिगुर साचा गुरमुखां अंग संग समाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई एका नाम जपाए। सतिगुर साचा गुरमुखां जाए तारी। सतिगुर साचा साचा शब्द अधारी। सतिगुर साचा, गुरमुखां जाए पैज संवारी। सतिगुर साचा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात कराए सोहँ शब्द जैकारी। सतिगुर साचा सच जैकारा। सतिगुर साचा आपणा आप करे विहारा। सतिगुर साचा तीन लोक सच्चा सिक्दारा। सतिगुर साचा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आवे जावे वारो वारा। सतिगुर साचा आप जगाए शब्द जोती। सतिगुर साचा एका जोत जगाए सृष्ट उठाए सोती। सतिगुर साचा, बेमुखां अन्तिम अन्त आप कराए बोटी बोटी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पंचम जेठ आप उठाए आपणे हत्थ शब्द सोटी। शब्द बाण आप चलाए। लहू घाण आप चलाए। अग्न जोत ना कोई बुझाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अठसठ तीर्थ माण गंवाए। अठसठ तीर्थ टुट्टे माण। साचा सीरथ गुर चरन ध्यान। चरन धूढ़ साचा इशनान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। गुर चरन लाग जागण भाग। बुझे आग मिटा दाग़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा राह चलाया। साचा राह धुर दरगाह। गंगा गोदावरी रहण ना पाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक हरि नाम धराया। गंगा गोदावरी अन्त कराई। लोक तीन हरि जोत जगाई। तट्ट तीर्थ सभ देण दुहाई। कोई ना राखे पत्त, बिन साचे रघुराई। आप कराए सारे भट्ठ, विच प्रभास अग्न लगाई। आप रखाए साची मति, साची जोत डगमगाई। आप चढ़ाए सोहँ साचे रथ, कलिजुग बेड़ा पार कराई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, साची जोत मात जगाई। जोत सरूपी हरि जामा धार। जोत सरूपी वरते विच संसार। बिन रंग रूपी ना कोई पावे सार। हरि साचा सति सरूपी, अचरज खेल करे करतार। वड वड शाहन शाह वड भूपी देवे दुरकार। सृष्ट सबाई होई अन्ध कूपी ना किसे दिसे सच दरबार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग करे कराए धराए चलाए रखाए विच संसार। विच संसार खेल

अपारा। विच संसार करे विहारा। जोत अधारा भगत जनां कर्म विचारा। धर्म शर्म रक्खणहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे आपणी सारा। आप आपणी जाणे सार। सच करता धरता हरि सच द्वार। साचा हरि साचा दर साचा घर हरि अवतार। आपणा किया लैण भर, ना आए सच दरबार। बेमुखां आई हार। गुरमुख साचे लाए पार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा जामा धार। तारनहारा पुरख अपारा। सोहँ देवे नाम भण्डारा। आपे बणे भगत वरतारा। जगत सबाई होए ख्वारा। गुरमुख विरला पावे सारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे दर भरे रहण भण्डारा। देवणहार दातार ना आवे हार। कर्म धर्म दोए लए विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप आपणी किरपा धार। किरपा करे आप गिरधारे जो जन आयण चल दुआरे। भरे रहण सद भण्डारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत जगाए तेरी काया महल मुनारे। आत्म दीपक होए उज्जयारी। एका जोत शब्द उडारी। वेखे विगसे करे विचारी। मानस जन्म जाए संवारी। जो जन चरन करे निमस्कारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जाओ सदा बलिहारी। प्रभ अबिनाशी तारनहारा। सोहँ देवे नाम अधारा। नाम रंग जोत अपारा। दूती दुष्ट दंडे चलाए खण्डा दो धारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका सच दुआरा। तीन लोक इक्क विहारा। तीन लोक इक्क जैकारा। तीन लोक इक्क भण्डारा। तीन लोक एका एक शब्द हुलारा। तीन लोक एका हरि एका दर देवे साचा वर, प्रभ साचे दा सच दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप देवणहार सच वरतारा। तीन लोक साचा वासी, तीन लोक हरि पुरख अबिनाश। तीन लोक एका जोत करे प्रकाश। एका शब्द चलाए स्वास। आप कराए आपणे चरन दास। साचा शब्द सोहँ चलाए स्वास। आप कराए आपणे चरन दास। साचा शब्द सोहँ बेमुखां करे नास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप कराए आपणी रास। साची रास साची धार। सोहँ शब्द तेज कटार। गुरमुखां आत्म करे उजयार। अमृत बरखे इक्क फुहार। गुरसिखां देवे बैकुण्ठ द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप जपाए आप रखाए चढ़ाए नाम खुमार। नाम खुमारी दिवस राती। शब्द लगाए साची काती। जोत जगाए बिन तेल बाती। मिले वड्याई विच जीव माती। ज़ात पात ना हरि पछाती। देवे दान आप बणाए चरन नाती। सच मात गुरसिख जाणे, हरि देवे दरस सुत्तयां रातीं। आप पढ़ाए सोहँ इक्क जमात, भरम भुलेखा ना होवे बहु भातीं। आपे पुच्छे अन्तिम वात, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुख साचे खड़ा रहे सरहाणे तेरे सुत्तयां राती। गुरसिख सोया प्रभ साचा जागे। सद खल्होया हरि साचा आगे। दाग़ पापां धोया, कलिजुग फेर ना लागे। सोहँ बीज साचा बोया, शब्द लिखाया जो पहली माघे। प्रभ अबिनाशी भेव चुकाए दोया, गुरसिख हँस बणाए कागे। बेमुख गूढ़ी नींद

कलिजुग सोया, ना सोया जागे। अन्तकाल मिले ना ढोया, जूठे झूठे दर तों भागे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो जन उधरे जो चरनी लागे। चरन लाग सच प्रीती। हरि साचा जग साची रीती। मानस जन्म जाओ जग जीती। औध जाए कलिजुग बीती। आप कराए पतित पुनीती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन कमाए चरन प्रीती। चरन प्रीती जो जन कमाए। सोहँ शब्द रसना गाए। दासन दासना दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि, हरि सद जगत रहाए। हरि हरि हरिभगत वरतारा। हरि हरि हरि खेल अपारा। हरि हरि हरि इक्क अकारा। हरि हरि हरि इक्क पसारा। हरि हरि हरि जोत धर, देवे जुगो जुग विच संसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क जोत निरँकारा। हरि हरि हरि जोत अबिनाशी। हरि हरि हरि सर्ब घट वासी। हरि हरि हरि मात जोत धर दुष्टां जाए सँघार, सृष्ट सबाई कराए चरन दासी। हरि हरि हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप घनकपुर वासी। हरि हरि हरि जोत प्रगटाई। हरि हरि हरि चौथे जुग अन्तिम अन्त खेल रचाई। हरि हरि हरि वेद अथर्बण अन्त मुकाई। हरि हरि हरि करनी कर धरनी धर आपणे भाणे विच समाई। हरि हरि हरि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरी घनक हरि भाग लगाई। हरि हरि हरि रंग अवल्लड़ा। हरि हरि हरि जोत प्रगटाई नित वसे इकल्लड़ा। हरि हरि हरि अन्तिम अन्त कलि साचा नाम धराई, सोहँ शब्द सच सुखल्लड़ा। हरि हरि हरि गुरमुखां झोली पाई, कराए भारा पल्लड़ा। हरि हरि हरि इक्क जोत जगाए, गुरसिख बणाए लाल अमुल्लड़ा। हरि हरि हरि साचा दर, कलिजुग जीव रहे अन्तकाल कलि भुल्लड़ा। हरि हरि हरि जोत लई मात धर, बेमुख ना आवे दर, अन्तकाल विच मात दे रुलड़ा। हरि हरि हरि आत्म जोत देवे धर, जोती जोत सरूप काया तन बणाए साचा कुलड़ा। हरि हरि हरि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चरन लाग तेरा अमृत आत्म अज्जे ना डुल्लड़ा। हरि हरि हरि अमृत धारी। हरि हरि हरि गुरसिखां जाए पैज संवारी। हरि हरि हरि गुरसिख जाए तर विच मात आए चरन द्वारी। हरि हरि हरि कलंकनिह अवतार नर, आप फड़े हत्थ शब्द कटारी। हरि हरि हरि गुरमुखां खुल्हाए आत्म दर, एका जोत करे अकारी। हरि हरि हरि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सोहण तेरे चरन द्वारी। हरि हरि हरि प्रभ साचा सोख। हरि हरि हरि साचा मोख। हरि हरि हरि आप मिटाए आत्म दोख। हरि हरि हरि शब्द साचे सन्त आप जपाए सोहँ साचा नाम सोख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कर दरस, ना विच मात तरस, मिटा हरस, अमृत मेघ प्रभ देवे बरस, आप मिटाए तेरी तृष्ना भोख। हरि हरि हरि तृष्न निवारी। हरि हरि हरि आत्म देवे नाम अधारी। हरि हरि हरि वड दाता शब्द भण्डारी। हरि हरि हरि खण्ड ब्रह्मण्ड हरि पवण आहारी।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत निरँकारी। निरँकार निरँकारा। हरि साचा रूप अपारा। कलिजुग जीव भाण्डा काचा, ना जाणे अगम्म अपारा। जिस जन हिरदे वाचा, तिस पावे हरि सारा। जूठे झूठे होयण ख्वारा। गुरमुख साचे सोहँ साचा शब्द करे वणज वपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान चार वरन एका सरन सच दरबारा। चार वरन हरि काज संवारे। चार वरन सोहण चरन दुआरे। खुल्ले हरन फरन जो जन सोहँ रसना उचारे। किरपा करे धरनी धरन, प्रभ साचा काज संवारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप कर किरपा पार उतारे। चार वरन वेख विचार। प्रभ अमृत बरख़े किरपा धार। ना कोई देवे बिन प्रभ आत्म ठार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां बख्शे चरन प्यार। आपे बख्शे चरन प्यारा। चार वरन इक्क दुआरा। आपे वरते नाम भण्डारा। साचा नाम सोहँ शब्द अपारा। साचा जाम पी गुरसिख रहे सदा खुमारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खुल्हाए तेरा दस्म दुआरा। प्रभ अबिनाशी जोत जगाए वड दाता अनमुल्ल। कलिजुग जीव माया वेख ना कलिजुग भुल्ल। सोहँ कंडा प्रभ साचे लाया, प्रभ साचे दर आओ जाओ तुल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप सदा सदा अतुल्ल अनभुल्ल। आप अनभुल्ल जगत भुलाया। आप अतुल्ल जगत तुलाया। आप अडुल्ल जगत डुलाया। आप अरुल जगत रुलाया। शब्द अन्धेरी कलिजुग जाए झुल्ल। गुरमुख साचे सच द्वार ना जाणा भुल्ल। सोहँ दान प्रभ झोली पाए, सच द्वार गया खुल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पंचम जेठ गुरसिखां देवे नाम अनमुल्ल। पंचम जेठ हरि गुरसिख वड्याए। जन भगतां हरि लेख लिखाए। वाक भविख्त सुणाए। बहत्तर जामे पूर कराए। इक्क इकत्तर आप हो जाए। सत्तर बहत्तर ना कोई रहाए। शब्द पत्र आप झुलाए। एका बत्तर सच बीज उपजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ मेघ बरस गुरमुखां आत्म सिंच सिंचाए। गुरमुख साचे माण दवावणा। सचखण्ड निवासी सच कर्म कमावणा। खण्ड वरभण्ड ब्रह्मण्ड सर्ब उलटावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा मार्ग लावणा। ब्रह्मलोक हरि आप उलटाए। सच निवास ब्रह्मा छड्ड जाए। इक्क प्रकाश जोत हरि राए। सर्ब विनास, कोई रहण ना पाए। दासन दास दया कमाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा चन्न चढ़ाए। सतिजुग साचा चढ़े चन्न। गुरमुखां बेड़ा जए बन्न्ह। आप उठाए आपणे कन्न्ह। अन्तकाल ना काल खोहे तन। शांत कराए गुरमुख मन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचा शब्द सुणाए कन्न। साचा शब्द कन्न सुणाया। आत्म अन्ध अन्धेर मिटाया। गुरमुख साचे दूजी वेर जन्म दवाया। आप आपणी सरन लगाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सेव लगाया। सेव कराई आपणे हत्थ रक्खे वड्याई। वेले अन्त होए सहाई। साचे सन्त पैज रखाई। देव दंत सरन लगाई। साचा

कन्त पति रखाई। घनकपुर वासी मात जोत प्रगटाई। जोत सरूपी जोत हरि, रचना सच रचाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाउँ रखाई। निहकलंक कलि नाम लिखारा। कलिजुग मिटाए धुंदूकारा। एका जोत मातलोक करे अकारा। गुरमुखां पावे आपे सारा। आपे देवे नाम अधारा। सच प्रीती चरन दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत देवे अपर अपारा। अमृत बरखा आपे करे। गुरमुख सुक्के होए हरे। आप गंवाए जगत डरे। ना उह जन्मे ना उह मरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरे दर दुआरे खड़े। आत्म वेख दर द्वारी। जिथ्थे वसे आप निरँकारी। प्रभ देवे दरस जोत सरूप अपारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सरूपी शब्द अधारी। सृष्ट सबाई लाए डन्न। गुरमुखां बेड़ा जाए बन्नृ। गुरमुखां मिटाए झेड़ा झूठा जन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान धरत मात तेरा खुलृाए कराए वेहड़ा खुलृा। धरत मात तेरा खुलृा वेहड़ा। आप मुकाए जगत झेड़ा। सृष्ट सबाई कराए भेड़ भेड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक चुकाए गेड़ा। गुरमुखां वक्त सुहावणा। गुरसिखां रसना गावना। प्रभ अबिनाशी साचा पावणा। सर्ब घट वासी हिरदे विच वसावणा। एका जोत मात प्रकाशी, कलिजुग अन्धेर मिटावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पंचम जेठ साचा वाक भविख्त लिखावणा। पंचम जेठ सच लिखावणा। वेख वेख वेख बेमुख मिटावणा। भेख भेख भेख जगत वखावणा। लेख लेख लेख सतिजुग साचा लेख लिखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि नाम धरावणा। आपे बणे वड सिक्दारी। हरि हरि हरि सच्चा हरि निरँकारी। चार कुन्ट कराए हाहाकारी। तीन लोक बिल्लायण, कोई ना दीसे सच दरबारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मात साची जोत करे अकारी। होए अकारा विच संसारा। प्रभ गिरधार शब्द अधारा। जोती जोत सरूप लए मात अवतारा। पंचम जेठ पंच परवान हरि बणे सच वरतारा। पंचम जेठ पंचम परवान। पंचम पंचम पंचम प्रभ देवे आत्म ब्रह्म ज्ञान। पंचम पंचम पंचम प्रभ साची जोत धरे महान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बिठाए विच शब्द बबाण। शब्द बबाण गुरसिख उठाए। आप आपणे संग रलाए। अंग संग आप हो जाए। तूर तुरंग वड सूरा सरबंग चार कुन्ट हो आए। सृष्ट सबाई कराए तंग, आप अटल जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां कराए भंग, गुरसिखां सद विच समाए। अमृत नाम गुण निधाना। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना। रसना जप जप जीव होए चतुर सुजाना। एका साचा तप धीरज यति रखाणा। सोहँ शब्द साचा वत्त, सच आत्म बीज बिजाणा। आपे दे समझावे मति, मदिरा मास रसना तजाणा। आपे जाणे मित गति, साची शब्द धुन उपजाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाणा। अमृत साचा गुरसिख जाणो। साचा सर अमृत आत्म पछाणो। कलिजुग ना

भुल्ले जीव अञ्याणो। अन्तिम अन्त ना रुलो, दर आओ साचे साचा रंग माणो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सर्ब घटां घट जाणी जाणो। अमृत पीओ साचा सीर। बजर कपाटी देवे चीर। काया माटी चाटी प्रभ शब्द रखाए धीर। आप चढ़ाए औखी घाटी, वड वड दाता वड पीरन पीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूई द्वैत देवे चीर। दूई द्वैत दूर कर। एका जोत नूर देवे धर। साचा सति सरूप दिसे आत्म घर। सर्ब गुणां भरपूर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म देवे साचा वर। सर्ब गुणां हरि हरि हरि भरपूरा। अनहद शब्द वजावे साची तूरा। गुरमुख साचे लैण सुण, बेमुख कलि रहे झूरा। साचे सन्त घर साचे गज्जण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप बणाए वड वड सूरा। वड वड सूर आप वड दानी। सोहँ देवे आत्म होए ब्रह्म ज्ञानी। गुरमुख साचे सन्त जन, हरि देवे शब्द जगत निशानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त जन भगतां करे मेहरबानी। मेहरबान मेहरबान वड मेहरबान। सोहँ देवे साचा दान। आत्म इक्क लगाए खिच बाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आप रखाए आपणी आण। आप आपणी आण रखाए। निताणयां ताण आप हो जाए। निमाणयां सुघड़ बाल अञ्याणयां प्रभ गले लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड वड जरवाणयां विच ख़ाक रुलाए। वड वड वड जरवाणे। ना कोई दिसण राजे राणे। आप मिटाए वड वड महांराणे। एका जोत जगे भगवाने। दूसर ना कोई दिसे जगत निशाने। सोहँ शब्द गुरसिखां हत्थ प्रभ बद्धे गाने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जो जन साचा जाणे। साचा मानो हरि भगवन्त । देवे वड्याई विच जीव जन्त । आप बणाए गुरसिख साचे सन्त। सोहँ शब्द जपाए जेह्वा कराए साचा मंत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई करे भस्मंत। सृष्ट सबाई होए भस्मंत। कलिजुग वेला आया अन्त। प्रभ अबिनाशी भुल्ले सर्ब जीव जन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माया पाई बेअन्त। जन भगत आप जगाए। आप आपणा रिहा छुपाए। जोत सरूपी खेल वरताए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अन्ध अन्धेर जगत कराए। आप कराए अन्ध अन्धेर। ना किसे दीसे सञ्झ सवेर। सृष्ट सबाई आप डुलाए भुलाए रुलाए कर कर हेर फेर। वेले अन्त आप खपाए पवाए विच चुरासी गेड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख अन्त दए नबेड़। बेमुखां अन्त नबेड़ कर। कलिजुग झूठी खेल मेट कर। गुरमुख साचे सन्त जन, सोहँ पल्लू विच लपेट कर। प्रभ अबिनाशी सन्त मनी आपणा सीस साचा भेट धर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचा सतिगुर उपजाए लक्ख चुरासी वेख कर। मनी सिँघ तेरे हत्थ वड्याई। साचा छत्र तेरे सीस झुलाई। किरपा करे आप रघुराई। तीन लोक जिस जोत जगाई। अवण गवण पवण मेघ सवण बरखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जै जैकार कराई। सन्त मनी सिँघ

४१५
०२

वड दाता। चार वरन का एका ज्ञाता। देवे वड वड दात प्रभ सोहँ वड दाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं का एका पुरख बिधाता। सतिजुग मनी सिँघ सतिगुर बनाणा। सतिजुग साचे आप उपजाणा। साचा लेख पंचम जेठ लिखाणा। सृष्ट सबाई झूठा भेख निहकलंक लिखावणा। बेमुख जीव वेख वेख कर, प्रभ साचे नष्ट करावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि कल्की अवतार फिर अख्वावणा। निहकलंक कल्की अवतारा। मातलोक जामा धारा। गुर गोबिन्द तेरा शब्द अपारा। वेले अन्त बणिओ लेख लिखारा। सृष्ट सबाई होए दुःख भारा। बेमुखां ना सुणे कोई पुकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी विच मात ल्या अवतारा। गुर गोबिन्द एह शब्द लिखा के। गुरमुख साचे मार्ग पा के। एका माण एका ताण इक्क निशान रखा के। सच शब्द विच बबाण चढ़ा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटा के। गुर गोबिन्द तेरा लिख्या लेख। प्रभ अबिनाशी धुर दरगाहे बैठा रिहा वेख। अन्तिम कलि मात विच आया कर जोत सरूपी भेख। आप पकड़ पछाड़े बेमुखां कलि वेख। कलिजुग मिटाए अन्त झूठी रेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप जगाए कलिजुग वेख। गुर पूरे सद बलिहारी। गुर पूरे सद निमस्कारी। गुर पूरे किरपा धारी। गुरमुख साचे मात लगाए सच्ची फुलवाड़ी। आपे रक्खे लज पति जो चरन छुहाए दाढ़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप संवारे पिच्छा अगाड़ी। सच गुर चरन निमस्कारो। कर दरस पारब्रह्म गुर करतारो। सच गुर चरन बलिहारो। जन्म मरन कलि गेड़ निवारो। सच गुर सच घर बाहरो। चरन लाग आत्म खोल्हो दर द्वारो। सच घर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलंकनिह नरायण नर अवतारो। सच गुर वड सूरबीरा। गुरमुख उपजाए विच मात सतिजुग साचा हीरा। सच गुर सोहँ शब्द चलाए तीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच गुर, गुरसिख बन्न्हाए सिर सोहँ चीरा। सच गुर वड पीरन पीरा। सच गुर अन्तिम अन्त कलि माण गंवाए पीर फ़कीरां। सच गुर गुरसिखां कट्टे गलों जंजीरा। सच गुर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका शब्द देवे धीरा। सच गुर सर्ब भरवास। सच गुर गुरमुखां करे दुखड़े नास। सच गुर सच शब्द चलाए स्वास स्वास। सच गुर मानस सच गुर गुरसिख वड्याए लोक तीन विच मात पताल अकाश। सच गुर गुरसिखां कराए सचखण्ड निवास। सच गुर आदि जुगादि सद सदा गुरसिखां वसे पास। सच गुर दर आए सीस झुकाए कोई ना जाए निरास। सच गुर अमृत साचा सीर पिलाए, साची देवे शब्द धरवास। सच गुर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हउमे रोग गंवाए, होए गुरसिखां दास। सतिगुर साचा दास दसन्तर। सतिगुर साचा आप बुझाए पंचां लग्गी बसन्तर। सतिगुर साचा सर्ब जीआं दी जाणे आत्म अन्तर। सतिगुर साचा मात जपाए, सतिजुग साचा मार्ग लाए, सोहँ रखाए साचा मन्त्र।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई फेर बणाए साची बणतर। सतिगुर साचा बणत बणाए। आप अगणत ना गणया जाए। साध सन्त कोई भेव ना पाए। बेअन्त बेअन्त सभ गए गाए। आदि अन्त ना कोई जणाए। जीव जन्त कलिजुग भुल्ले रहे झूठे मृदंग वजाए। मायाधारी विच माया रुले, प्रभ अबिनाशी गए भुलाए। गुरमुखां घर साचा खुल्ले, पंचम जेठ निहकलंक मात जोत प्रगटाए। सृष्ट सबाई जाए पहले बुल्ले, एका शब्द अन्धेर झुलाए। चार कुन्ट विच ख़ाक दे रुले, बांहों पकड़ ना कोई उठाए। अन्तकाल कलिजुग गए अनमुल्ले, कोई कौडी मुल्ल ना पाए। अमृत भाण्डे सभ दे डुल्ले, मदिरा मासी रसन हलकाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त कलिजुग पाणी पाए चुल्ले, किसे घर ना होए रुशनाए। झूठे फल वांग सिमल हुल्ले, दूजी वार ना कोई मात लगाए। गुरसिखां दर साचे खुल्ले, सोहँ भिच्छया प्रभ साचा पाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप आपणी दया कमाए। सतिगुर साचा जोती जोत। चार वरन कराए एका गोत। गुरसिखां दुरमति मैल जाए धोत। आप खुलाए आत्म सोत। बेमुख कलिजुग अन्तिम रहे रोत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप मिटाए खपाए ना किसे रहे दोध पोत। मेट मिटाए होए अन्ध। आपे ढाहे पापां कंध। ना किसे दीसे सवेर सञ्झ। आत्म वज्जा झूठा जंद। आपणा आप गंवाया बेमुखां परमानंद। वेला गया हत्थ ना आया, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान शब्द लिखाया विच बत्ती दन्द। लिख्या लेख कौण मिटाए। वड वड वड फड़ फड़ फड़ धौण सभ सरन लगाए। सोहँ चलाए विच उनन्जा पवण, तीन लोक जै जै जैकार कराए। गुरमुखां मिले ना सवण, दिवस रैण इक्क रंग रंगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा संग आपणा आप निभाए। आप निभाए आपणा संग। आत्म चाढ़े साचा रंग। सोहँ शब्द कस्से तेरा तंग। शब्द सरूपी सच तुरंग। सृष्ट ख्वारी होए भंग। कलिजुग जीव भन्नाए जिउँ काची वंग। धर्म राए दे दर देवे टंग। वेले अन्तिम अन्तकाल, प्रभ कीने सारे नंग। झूठी माया जगत धन माल, ना कोई जावे पार लँघ। सोहँ वस्त सच संभाल। वेले अन्त होवे संग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचा दरस दान जीव दर मंग। दर घर मंगो इक्क ध्याना। सच शब्द गुर रूप समाना। आदि अन्त देवे प्रभ साचे सन्त इक्क भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचो सच वखाणा। साचो सच हरि आप वखाणयां। जोत सरूपी पहर बणयां। सृष्ट सबाई आप भुनाए जिउँ भठयाले दाणयां। गुरमुख साचे रंग साचा माणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी गोद उठाए गुरसिखां बाल अञ्याणया। गुरसिखां हरि गोद उठाई। आत्म सोध दया कमाई। अगाध बोध बोध अगाध प्रभ रिहा शब्द लिखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भेव ना किसे जणाई। आपणा भेव ना किसे जणाया। सृष्ट सबाई आप भुलाया। आपणे भाणे विच

रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे विच समाया। सृष्ट सबाई ना किसे जणाया। आपणा खेल आप रचाया। आवण जाण जाण आवण आदि अन्त विच मात रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त कलि आपणा आप धर्म धराया। कर्म कर तीन लोक उपजाई। चौदां लोक हरि समाई। नाभ कँवल ब्रह्मा उपजाई। आत्म साची बूझ बुझाई। दीपक जोती जोत जगाई। काया सोती आप उठाई। झूठी मैल धोती साची बूझ बुझाई। जोत सरूपी जोत हरि, एका देवे जगत वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरसिखां आत्म जोत धरे महाना। एका देवे वड वड दान। आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान। साचा करे चरन ध्यान। एका शब्द धुन लग्गे कान। मुन सुन जन खोल्हे वड मेहरबान। जोती जोत सरूप किरपा करे आप भगवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा किरपा करे आप भगवान। साचा शब्द देवे वत। रसना जप सृष्ट सबाई एका जप। शब्द सरूपी साचा तप। सृष्ट सबाई भरी पप। जोती जोत निरँजण करे खेल अप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई माई बप्प। आप करे सर्ब पछाण। सोहँ देवे ब्रह्म ज्ञान। गुरमुख सद रसन वखाण। सृष्ट सबाई करे वैरान। अन्तिम अन्तकाल ना लिखाया किसे वेद पुरान। जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे आपे करे पछाण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। कलिजुग वेले अन्त होसण भस्मंत। ना जानण जीव जन्त। ना प्रभ अबिनाशी कोई जाणे माया पाई बेअन्त। कलिजुग झूठे खेल मिटाए सारी बणत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना किसे पछाणया साचा कन्त। ब्रह्मा अन्तिम होए अख़ीर। कोई ना देवे अन्तिम धीर। कलिजुग अन्तिम लथ्थे चीर। विच ब्रह्मण्ड होए वहीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलि करे अख़ीर। ब्रह्मा तेरा माण चुकाया। वेला अन्तिम अन्त आया। लिख्या लेख आप रघुराया। चौथे जुग आण मुकाया। लहणा लहिणेदार आप अख्वाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे भाणे विच समाया। लहिणेहार इक्क करतारा। देवणहार सर्ब संसारा। आपे लेखा अन्त चुकावे, प्रभ अबिनाशी वड गिरधारा। आप मिटावे आप खपावे आप उपावे, ना कोई पावे सारा। कोई ना जाणे प्रभ दा अन्त। आपे आप हरि भगवन्त। जोत सरूप सर्ब वरतंत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप उपजाए गुरमुख साचे सन्त। गुरसिख तेरे हत्थ वड्याई। सच पदवी प्रभ दर ते पाई। मातलोक दर सेव कमाई। साची जोत हरि विच टिकाई। सचखण्ड निवास आप रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान चौथे जुग अन्तिम खेल कराई। ब्रह्मा ब्रह्मलोक तजाए। जोत सरूपी हरि जोत मिलाए। आप आपणे विच समाए। भेव कोई रहे ना राए। चौथा वेद अन्त हो जाए। चार मुख जो ब्रह्मा लिखाए। आपे वेख विचार भेख मिटाए। आप आपणे संग रलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मातलोक जोत धर कलिजुग अन्त कराए। आप

जणाए ब्रह्मा गुण। ब्रह्मण्ड खण्ड चुक्कया आवण जाण। अंडज जेरज ना होए परवान। सच जोत धरे भगवान। जोत सरूपी जोत हरि, जोती जोत बली बलवान। चार जुग चार घर चार दर चार वर आपे आण। वेला अन्त जाए कर, ब्रह्मा ब्रह्मलोक जाए हरि, प्रभ साचा देवे सच निशान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी बिठाए बबाण। जोत सरूपी विच बबाणा। आप बिठाए सच टिकाणा। एका ओथे आणा जाणा। दूसर किसे थाउँ ना पाणा। तीसर कोई दिसे ना टिकाणा। चौथे संग प्रभ वेख वेख, चढ़ाए रंग महाना। जगे जोत भगत भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप विच जोती मेल मिलाना। ब्रह्मा जोती जोत मिलाया। आप आपणे संग रलाया। अंग संग ना कोई भेव रखाया। लक्ख लक्ख जो बचन लिखाया। वक्ख वक्ख वक्ख प्रभ आपणा आप रखाया। रक्ख रक्ख रक्ख अन्तकाल प्रभ साचे धाम बहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप आपणे विच समाया। साचा धाम एक अटल। एका जोत जगे अचल्ल। ना होए अन्धेरा घड़ी पल। जोत उनन्जा रही चवर झल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका आप अटल, हरि हरि हरि साचा सद रहे आप अचल्ल। सच धाम आप बहाया। पूरन काम प्रभ आप कराया। आपणे धाम आप सुहाया। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा जोती जोत सरूप सद डगमगाया। सदा सदा हरि डगमगाए। अंग संग आप हो जाए। साचा नाम रंग चढ़ाए। सोहँ साचा तग विच मात आप तन पहनाए। बेमुख झूठे जीव रहे बिल्लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द विच गुर संगत आप सुणाए। गुर संगत हरि रिहा समाए। गुर संगत सति जणाए। लिख्या लेख ना कोई मिटाए। सृष्ट सबाई आप खपाए। चार कुन्ट दह दिस उठ धावे। कोई विरला जन चरन धूढ़ इशनान नहावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुखां दया कमावे। गुरसिखां दर साचे थीवणा। कर दरस विच मात जीवणा। चरन लाग उतरे भुक्ख, आप जवाओ आत्म दीवणा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, रस आत्म दर साचे पीवणा। अमृत पीवणा सदा जग जीवणा। तन पाटा विच मात घाटा, ना मिले शब्द आटा, की अग्गे जाए चाटा, बेमुखां दिसण दूर वाटां, गुरसिखां कट्टीआं घाटां, सोहँ शब्द जपावे रिदे वसावे जोत जगावे विच ललाटा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूर कराए दर आया घाटा। दर आए दरगाह परवान। जिथ्थे झुल्ले सच निशान। साचे कंडे तुले दर परवान। भाग लगायण आपणी कुले, जो जन निहकलंक तेरी सरन सीस झुकाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा विष्नूं भगवान। भगत भगवानयां, देवे दानयां, आत्म जान्यां, धूढ़ इशनान्यां, ब्रह्म ज्ञानयां जोत जगाए महान्यां, जाणी जाण वेद पुरान्यां, आदि अन्त एका रंग एका अंक प्रभ साचे जाण्यां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आया देवे शब्द दान्यां। शब्द दान तुट्टे माण देवे भगवान, गुरमुख विरले रसना गाण,

प्रभ अबिनाशी साचा पाण। सर्ब घट वासी रिदे समाण। गर्भवास फेर ना आण। दस दिसासी फेर फिराण। शाहो शबासी सति पुरख सुजान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति पुरखां करे पछाण। पुरख अपारा, भगत अधारा, जगत सुधारा, शब्द आरा। सृष्ट सबाई चीर चिराए करे दो फाड़ा। दोए दल उठे धाड़ा। एका जोत अग्न लगाए, जूह जंगल विच पहाड़ा। बैठ मग्न खेल वरताए, सृष्ट सबाई चबाए हेठ दाढ़ा। आपणा भाणा आप वरताए, बेमुख कलिजुग जीवां मौत बणाए लाड़ी लाड़ा। अन्तकाल कलिजुग विदा कराए, मौत घोड़ी प्रभ साचे चाढ़ा। धर्म राए राह सिध्धा दिसाए, नर्क निवास सच अखाड़ा। अन्तकाल ना कोई छुडाए, ना कोई बन्नाए पल्ले नाम भाड़ा। जमदूतां प्रभ हत्थ फड़ाए, आप उजाड़े कर्मी वाड़ा। पुठ्ठे कर दर टंगाए, अग्न लगाए विच बहत्तर नाड़ा। पापां संग आप नुहाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दरगाहों पाए झाड़ां। धुर दरगाह ना जाए ढुक। धर्म राए दर जाए रुक। जूठा झूठा स्वास जाए सुक्क। लहणा देणा एथे जाए मुक्क। बेमुखां हत्थ ना आवे टुक। दिवस रैण रहे बिल्लाए, कोई ना जाए नेड़े ढुक। बेमुख कलिजुग जीव वेले अन्त जायण मुक्क। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुखां अन्तिम अन्त कलिजुग आपणी गोद लए चुक्क। आपणी गोद आप

४२० उठाए। धर्म राए जम नेड़ ना आए। जो जन प्रभ साचे सरन लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा ४२०

०२ संग निभाए। गुरसिख मिल्या एका साचा दर। सदा सद वसे साचे घर। दर द्वार बहाया साचे हरि। कलिजुग अन्तिम ०२

देवे कर। ध्रू दरबान दर अगे खड़। प्रभ अबिनांशी फड़या लड़। चौथी पौड़ी गया चढ़। साचे अंदर जाए वड़। विच अकाश उखाड़ी जड़। आप मिटाए जो लए घड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत मेल मिलाए जन भगतां बांहों फड़। बांहों फड़ दर ध्रू उठाया। स्वच्छ सरूपी दरस दिखाया। आप आपणे विच मिलाया। आवण जाण पतित पावन लेख मुकाया। वेले अन्त जिउँ बल बावन दया कमाया। पूर कराई अन्तिम कामन, चौथे जुग लेख लिखाया। जन भगत बणे आपे जामन, वेले अन्त लए छुडाया। वक्त चुकाया ब्रह्मा ब्राह्मन, ध्रू जोती संग जोत मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्ड दे उलटाया। ध्रू तजे सच अस्थान। किरपा करे आप भगवान। आप बिठाए जोत बबाण। तीन लोक चुकाए आवण जाण। लोक परलोक ना पवण मसाण। ना होए घर साचे रोक, जोती जोत अन्त मिल जाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, किरपा करे आप वड बली बलवान। वड बली आप बलवाना। जोत सरूपी रमईआ रामा। करे खेल जिउँ कृष्ना काहना। जोत सरूपी पहरया बाना। लेख लिखाए जिउँ गीता ज्ञाना। वेख वेख भगत उठाए आत्म शब्द वसाए चलाए जिउँ अर्जन तीर कमाना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूपी पहरया बाना। जोत

सरूपी पहरया बाना। प्रभ अबिनाशी खेल महाना। गुरमुखां आत्म जोत जगाए, सोहँ देवे नाम निधाना। चार कुन्ट चार वरन जै जै जैकार कराए, साचा झुल्ले शब्द निशाना। राउ रंक इक्क कराए, ऊँच नीच इक्क रंग समाना। सोहँ साचा डंक वजाए, कुन्ट चार वाली दो जहानां। आपे द्वार बंक सुहाए, साचा चरन प्रभ आप छुहाना। एका अंक जगत रखाए, चार वरन सरन लगाना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा विष्नूं भगवाना। जोत सरूप विष्नूं भगवाना। चार वरन एका देवे दाना। साचा दान मेल भगवाना। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा गुरमुखां करे दर परवाना। दर परवान होए गुरसिख। प्रभ दर मंगे साची भिक्ख। साचे लेख प्रभ देवे लिख। आत्म उतरे सारी भुक्ख। देवे वड्याई विच मुन रिक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो सिख्या तेरी लैण सिख। सिख सिख्या सच वरतारा। सच सुच्च जगत विहारा। साचा नाम सच भण्डारा। अवगुण कट्टे आत्म भारा। ना कोई किसे करे विचारा। जन्म मरन कर दए निवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आया करे पार उतारा। दर आया हरि पार उतारे। सच द्वार जो आए करे निमस्कारे। आत्म जोत जगाए काया महल्ल मुनारे। शब्द सरूपी पवण हुलारे। सति सरूपी रंग करतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे करे सर्ब पसारे। सर्ब पसारा आपे किया। आप कराए आपणा हिया। साचा बीज कलिजुग बिया। गुरमुखां आत्म जोत जगाया साचा दिया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रखाए साची नीहा। साची नींह सतिजुग सच दरवाजा। प्रगटाए जोत प्रभ ग़रीब निवाजा। भाग लगाए विच देस माझा। गुरसिखां संवारे दर घर आए काजा। बेमुखां पाए घर घर भाजा। गुरमुखां आप उठाए, सोहँ शब्द लगाए अवाजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे सीस रखाए सृष्ट सबाई एका ताजा। एका ताज सच जगदीस। सृष्ट सबाई जाए पीस। आप मिटाए बीस इकीस। प्रभ साचे दी ना कोई करे रीस। आपे आप मेट मिटाए कुरान अंज़ील हदीस। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा मात जोत धरे अवतार नर वार चौबीस। सप्तम जेठ सति पुरख सतिवादी। परम जोत विच मात लाधी। नर नरायण नाद अनादी। सति वस्त सति धाम टिकाई, जोत सरूप सद विस्मादी। साचा नाम जाम पिलाए जोत सरूप वड ब्रह्मादी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप बोध अगाधी। बोध अगाध अगाध बोधा। गुरमुख साचे हिरदा सोधा। कलिजुग कराया सोहँ नाम साचा सौदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता सूरबीर वड जोधन जोधा। वड जोधा वड बली बलवान। जन भगतां करे आप कल्याण। सिँघ सवरन विच मात करे पछान। आपे देवे दर वड्याई, साचा बहाए दर दरबान। तीन लोक वज्जे वधाई, आप बिठाए विच बबाण। साध संगत सद रसना गाए, प्रभ अबिनाशी जाणी जाण। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, मेल मिलाए भगत

भगवान। सिँघ सवरन काज संवारया। कर किरपा पार उतारया। मात पित उज्जल मुख विच मात करा रिहा। साचा धाम साचा राम साचा शाम आपणे चरन छुहा रिहा। पूरन काम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सेव सरन बहा रिहा। साची सेव सरन लगाई। वड वड देवी देव देवे वड्याई। सोहँ साचा मेव रसना फल साचा लाई। दिवस रैण सदा सद सद हरि साचा सच धाम निवास रखाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिँघ सवरन देवे वड्याई। सिँघ सवरन धाम न्यारा। आप जगाए दीपक जोत विच अकाश करे उज्जयारा। साचा दीपक होए प्रकाश, कलिजुग मिटे अन्ध अन्धयारा। सच धर्म तेरे होए दास, आप कराए सच वरतारा। किरपा करे कलि दस्में मास, आप बिठाए चरन दुआरा। जगत छड्डया सास ग्रास, भरम भुलेखा सर्ब निवारा। मात पित भाई भैण नारी ना कोई होए सहाई, किरपा करे आप गिरधारा। गुरमुखां सद वसे कोल, देवे दरस अगम्म अपारा। साची खेल साची रास, जोत सरूपी खेल अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान किरपा करे निहकलंक नरायण नर अवतारा। सिँघ सरवन तेरी रक्खी पति। प्रभ अबिनाशी आप उठाए सोहँ साचा बीज बिजाए आत्म साचे वत्त। धीरज तत्त ज्ञान ध्यान सच वड्याई, आप रखाए आपणी पति। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मात दया कमाई, लोक परलोक चरन प्रीती देवे साची मति। चरन प्रीती साचा नाता। प्रभ अबिनाशी जगत पछाता। सोहँ शब्द जपावे वड वड करामाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे रंग रंगाता। आप रंगाए रंग मजीठ। प्रभ अबिनाशी साचा ल्या डीठ। बेमुख कलिजुग जीव अन्तकाल सभ होए ढीठ। प्रभ अबिनाशी झूठी काया देवे भन्न कौड़े रीठ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, एका एक सभ थाँईं वसीठ। सर्ब थांईं हरि आपे वसे। गुरमुखां राह साचा दस्से। आत्म जोत करे प्रकाश कोटन कोट कोट रवि सस्से। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे आत्म दर द्वार वसे। आत्म दर वेख विचारो। प्रभ अबिनाशी रंग करतारो। भरम भुलेखा सर्ब निवारो। मदिरा मास ना झक्ख मारो। काया रस ना लावे पारो। प्रभ साचा गुर संगत होए वस, सोहँ शब्द हरि भरे भण्डारो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारो। निहकलंक नरायण नर। सृष्ट सबाई बन्द होया दर। ना आप खुल्हाया दसवां घर। गुरमुख विरले पाया, प्रभ देवे नाम साचा वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन देवे नाम साचा वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग गुरमुख साचे जायण तर। बेमुखां आत्म बन्द रखाया। अज्ञान अन्धेर विच कंध रखाया। परमानंद सभ गंवाया। मदिरा मास मुख गन्द रखाया। बत्ती दन्द ना प्रभ अबिनाशी रसना गाया। मानस जन्म जिस मात दवाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे चरन लाग एका रस साचा पाया। मदिरा मासी दुष्ट दुराचारी। प्रभ साचा

देवे दर दुरकारी। कलिजुग बीता अग्गे सतिजुग वारी। गुरमुख साचे सन्त जन प्रभ सच लगाए विच मात सच्ची फुल्लवाड़ी। बेमुख कलिजुग जीवां इक्ठी वढ्ढे हाढ़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कच्चे फल देवे झाड़ी। कच्चे फल जायण झड़। वहन्दे वहण जायण हड़। चार कुन्ट मरे लड़। ना कोई दीसे किल्ला गढ़। बैठे कोई ना अंदर वड़। एका होए कड़ कड़। गुरमुख साचे प्रभ अबिनाशी फड़या लड़। हरि की पौड़ी जाए चढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द विच मात बणाए साचा गढ़। आप उठाए बली बलवाना। आप उडाए विच अस्मानां। आप लगाए अग्न विच बबानां। वेखे खेल अन्तिम कलि वाली दो जहानां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब घटां घट जाणी जाणा। अग्न जोत आप लगाए। सृष्ट सबाई वाग आपणे हत्थ रखाए। साचा ताग तन तुड़ाए। साचा राग ना कोई सुणाए। झूठे धन्दे लाग मानस जन्म गए गंवाए। हँस बणे गुरसिख काग, मदिरा मास रहे रसन लगाए। कोई ना पकड़े अन्त वाग, जो दर साचा गए भुलाए। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुरमुखां लए अन्त छुडाए। मदिरा मासी अन्त ना भुल्ल। कलिजुग माया विच ना रुल। कोई ना पावे तेरा मुल्ल। शब्द अन्धेरी जाए झुल्ल। वेले अन्त अन्त कलिजुग दर साचा गया खुल्ल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा नाम वड अनमुल्ल। वड नाम घर साचे पाओ। आत्म बुझी दीप जगाओ। आपणी भुल आप बख्शाओ। मानस जन्म ना मात गवाओ। मात कुक्ख सुफल कराओ। वेले अन्त ना दुःख उठाओ। बण साचे सन्त, नाद धुन शब्द वजाओ। मिल साचे कन्त, प्रभ अबिनाशी दर घर साचे पाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस सद रसना गाओ। रसना गाओ गहर गम्भीर। गुरमुख होए शात सरीर। सोहँ पिलाए अमृत साचा सीर। आप बन्नाए आत्म तेरी धीर। अमृत मेघ बरखाए हरि साचा नीर। गुरसिख ना कदे बिल्लाए, प्रभ हउमे कढ्ढे पीर। जो जन आए दरस ध्याए, प्रभ किरपा करे अख़ीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दूई द्वैत देवे चीर। दूई द्वैत पड़दा वढ्ढ। जोत जगावे गुरमुख तेरी आत्म अन्धेरी काया खड्ड। साचा दरस दान दर मंग, प्रभ अग्गे दोवें हत्थ अड्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लडाए जोत सरूप साचा लड। गुर गोबिन्द एका घर। गुर गोबिन्द एका दर। गुर गोबिन्द वेख सर। गुर गोबिन्द महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां दर आवे डर। बेमुख आप विचारे। मातलोक कलि जामा धारे। रामदास तेरे दर दुआरे। भुल्ले जीव सर्ब गंवारे। सर अमृत तेरे खाली होए भण्डारे। बेमुख कलिजुग जीव धीआं भैणां करन वपारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कलि जामा धारे। गुर गोबिन्द तेरी साची धार। कलिजुग वरतया विच संसार। कर्मी दित्ती सारी हार। बेमुख जीव कलिजुग माण गंवाया, रामदास तेरे साचे दर दरबार। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए बेमुखां करे ख्वार। भुल्ले जीव वड ज्ञानी। वड वड बणे आप बुध मानी। आपणा आप ना सके पछानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मात जोत प्रगटाए वाली दो जहानी। बेमुख पकड़ पछाड़े झूठे सन्त। मायाधारी आप उजाड़े, माया पाए जगत बेअन्त। झूठी जड़ जगत उखाड़े, प्रभ अबिनाशी साचा कन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच ख़ाक मिलाए झूठे जीव जन्त। सर अमृत तेरा सच दरबारा। बेमुख जीआं ना विचारा। मदिरा मासी करन विकारा। आत्म होए सर्ब दुःख भारा। वेखे विगसे करे विचारा। अचरज खेल अपर अपारा। शब्द चलाए खण्डा दो धारा। वेख विचार करे करतारा। नारी नारा तेरे दर होयण ख्वारा। प्रगट जोत निहकलंक मानीआं अभिमानीआं वड वड अन्ध अज्ञानीआं सिर फेरे आरा। एका शब्द चीर चिराए करे दो फाड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप उठाए खण्डा दो धारा। बेमुख जीव आप उठाए। फड़ फड़ सर अमृत दे विच कुठाए। कुठ कुठ मुठ मुठ प्रभ दरों धकाए। तुठ तुठ तुठ गुरसिखां गले लगाए। माझे देस विच एका मुठ सिँघ रह जाए। गुर रामदास तेरे दर तों रुठ, बेमुख होए सर्ब नठ्ठ जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणा फेर तेज वखाए। अमृत सर हरि लिख्त लिखाए। वाक भविख्त गुरसिख सुणाए। लिखी लिख्त ना कोई मिटाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान भरम भुलेखा सर्ब कढाए। सर अमृत तेरे पुजारी। दूतां दुष्टां करे ख्वारी। साचे दर होए भिखारी। लुट लुट खायण माया धारी। गुर गोबिन्द जो लिख्त लिखारी। वेले अन्त कलिजुग होई सर्ब आत्म अन्ध अंध्यारी। बेमुख होए साचे दर दरबार रहे झक्ख मारी। दिवस रैण रैण दिवस रहे रात अन्ध अंध्यारी। कोई ना करे पापां कारी। वड वड होए मदिरा मासी जीव आहारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब सीस शब्द फिराए आरी। सर्ब सीस प्रभ देवे वढ्ढ। राम दास तेरे घर साचे विच्चों देवे कढ्ढ। आप वहाए वहन्दी धार ब्यासा खड्ड। बोटी बोट तुड़ाए खवाए मच्छली डड्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मात जोत प्रगटाए गुरमुखां बांहों पकड़ कढाए, आप लडाए आपणा लड। अमृत सर सच दरबारा। सेवा करे आप निरँकारा। सिर उठाए भर भर गारा। चार वरन खुल्हाया इक्क दुआरा। बेमुख हँकारीआं ना वक्त विचारा। दुःख भुक्ख आपणे सुख प्रभ अबिनाशी मनों विसारा। बेमुख होए वड वड मनुक्ख, दुष्ट दूत रहे झक्ख मारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम करे ख्वारा। सच शब्द जगत ढंडोरा। आया वक्त वेला रह गया थोड़ा। आप कटाए बेमुखां भोरा भोरा। दर घर विच्चों आप कढाए, गुर रामदास तेरा धन्न चुराया चोरा। साचा शब्द मगर लगाए, आप कढ्ढे थोड़ा थोड़ा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गलीआं विच फिराए मगर पवाए ढोरा। वड वड ग्रन्थी वड विद्वानी। मायाधारी होए अभिमानी। प्रभ अबिनाशी तेरी भुल्ली सच निशानी। एका

लग्गे सोहँ शब्द तीर कानी। आपे प्रगट होया वाली दो जहानी। खालसा पन्थ दा बणया बानी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोती जोत सरूप आपणी करे एका सच निशानी। अमृतसर साचा घर आवे डर। बेमुख आपणा किया लैण भर। प्रभ अबिनाशी खेल रिहा कर। जाणे जणावे जो वरते विच सर। बेमुख तीर्थ नहावे, ना रक्खे हरि का डर। कोट अपराध कमावे, आपणा किया लैण भर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तिम अन्त मेट मिटावे कलिजुग साचा सर। साचा सर आप मिटाए। दर दरवाजा बन्द कराए। सच अनन्द ना किसे दिखाए। इट्ट इट्ट कंध कंध सर्ब ढह जाए। बन्द बन्द सर्ब कट्ट जाए। घर घर जंद जंद सर्ब वज्ज जाए। मदिरा मास गन्द गन्द सर्ब मिट जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आप वरताए। सर अमृत होए सुंञ मसाण। अग्न जोत शब्द आण। झूठे जीआं टुट्टे डाहण। आप गंवाए माण अभिमान। बेमुख खपाए जो खायण पूजा धान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब जीआं दा जाणी जाण। पूजा धान जिस जन खाधा। आप मिटाए किया वाधा। नर्क निवास रखाए ना जाणे साधन साधा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान शब्द लिखाए बोध अगाधा। शब्द लिखाए लेख लिखईआ। आप डुबाए झूठी नईआ। मेल मिलाए भैण भईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सचा लेख लिखईआ। साचा लेख आप चुकाए। बेमुख सारे आण मिटाए। आण शान ना किसे रहण पाए। गुरमुख साचे भगत भगवान मेल मिलाए। सुंञ मसाण माझा देस हो जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आप वरताए। माझा देस होए वैराना। प्रभ अबिनाशी ना किसे पछाना। जोत सरूपी पहरया बाना। प्रगटाई जोत जिउँ कृष्ना काहना। आपे पकड़ पछाड़े जिउँ रावण रामा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख बणाए चतुर सुजाना। गुरसिखां प्रभ आप उठाए। सच शब्द सच घर जणाए। आपणी महिंमा आप जणाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जामा पाए। वेले अन्त जाए उठ। प्रभ अबिनाशी साचा तुठ्ठ। गुरसिख कराए एका मुट्ठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान ना नेड़ बहाए भाण्डे जुट्ठ। शब्द मार प्रभ साचे मारी। दर दर घर घर होए ख्वारी। ना कोई किसे विचारी। दुखियां दु:ख लग्गा अति भारी। ना कोई दिसे शाह सवारी। साचा शाह आप गिरधारी। आपे बैठा साची खेल पसारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारी। खेल वरताए आपणा आप। जन भगतां मिटाए तीनो ताप। कोटन कोट गंवाए पाप। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सहाई आपे आप। सदा सहाई आपे होए। दुरमति मैल पापां धोए। गुरसिखां भाग जगाए सोए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन नाम रिदे परोए। रसना नाम साचा गावणा। प्रभ अबिनाशी साचा पावणा। घनकपुर वासी दरस दिखावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

साध संगत तेरा साचा मेल विच पिण्ड बुग्घे मेल मिलावणा। बुग्घे खेड़ा होए इक्ठ। गुरसिख साचा आए नठ्ठ। सृष्ट सबाई उलटी लट्ठ। आप कराए साची चट्ठ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई पाए भट्ठ। साध संगत संग रल। प्रभ अबिनाशी संग चल। आप कराए जल थल। ना कोई जाणे अज्ज कल्ल। प्रभ का भाणा ना जाए टल। बेमुख भुलाए कर कर वल छल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए लाए घड़ी पल। साध संगत संग रलाए। साचा हरि दया कमाए। पार ब्यासों चरन टिकाए। साची बेड़ी आप चढ़ाए। सोहँ चप्पू नाम लगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिण्ड भंडाल चरन छुहाए। पिण्ड भंडाल धाम न्यारा। मनी सिँघ तेरा सच दुआरा। प्रभ अबिनाशी करे खेल अपर अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई पावे सारा। पार ब्यासों आपे आए। दुआबे मालवे होए दुहाए। किसे ना दिसे कोई थाएँ। सारे भज्जण वाहो दाहो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जोत जगाए। आपणी जोत जगाए हरि। आपणी किरपा देवे कर। साचा खोल्ह देवे दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अवतार नर। नर अवतार किरपा धारे। शब्द सरूपी खेल अपारे। साचा खेल रंग करतारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच मालवे होए उज्जयारे। साचा खेल आप वरतंता । जोत जगाए साचे सन्ता। भगत उधारे बणाए साची बणता। महाराज शेर सिँघ बेअन्त बेअन्ता। प्रभ अबिनाशी तेरी साची माया। गुरसिख पल्ले तेरी छत्र छाया। चरन धूढ़ साचा नाव्हण नहाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप जोत मेल मिलाया। पिण्ड भंडाल होए वहीर। साचा शब्द चले तीर। गुरसिखां कट्टे गलों ज़ंजीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच शब्द देवीं धीर। सच शब्द देवे संदेसा। जोत सरूपी साचा वेसा। वड्याए प्रभ माझा देसा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी गुरसिख प्रवेशा। जोत सरूपी खेल निराला। ना कोई जाणे हरि घर दर ज़ंजाला। आत्म होई सर्ब कंगाला। वेला अन्त ना किसे संभाला । संग ना चले कोई धन माला । सच दीपक नाम ना किसे बाला । सोहँ ना जप्या नाम सुखाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तकाल कलिजुग करे मूंह काला। किरपा करे हरि जू हरि राए। सच शब्द धुन उपजाए। चारे राणे लए उठाए। सुन्न समाध लए खुलाए। आदि जुगादि साचो साच दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप आपणी दया कमाए। जोत सरूपी किरपा धार। राणयां जाए दर द्वार। आपणा भेख हरि आपे धार। सोहँ देवे सच हुलार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा भेव खुलार। आप आपणा भेव खुल्हाए। दे दरस हरि चिन्त मिटाए। आत्म सिंच तन मन हरा कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, राणे महांराणे आप उठाए। आत्म दर आप खुल्हा के। सोहँ शब्द जाग लगा के। आत्म तृखा

अग्न बुझा के। सोहँ साचा राग उपजा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप आत्म दर खुल्ला के। शब्द सरूपी ढोल वजा के। शब्द सरूपी वज्जे ढोल। प्रभ अबिनाशी देवे पड़दे खोल्ल। जोत सरूपी आत्म वसे कोल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे पूरे तोल देवे तोल। राजे राणयां होए जणाई। साचा शब्द कन्न सुणाई। आत्म बेड़ा बन्न्ह वखाई। बद्धा मन ना कोई छुडाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी खेल आप जाणे रघुराई। वरते खेल राज दरबार। राजे राणे करन विचार। किसे ना आवे कोई सार। जिथ्थे वसे हरि करतार। किरपा कर राह साचा दस्से, गुरमुख साचे विच जोत पसार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा धार। आपे आए आपणे घर। सच खुल्हाए आपणा दर। मस्तूआणा मात सर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतार। मस्तूआणे आए हरि। आपणा कर्म लए कर। चार वरन सच तख्त बैठ प्रभ साचा देवे वर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलंकनिह नरायण अवतार नर। मस्तूआणा सच दुआरा। चार वरन होए भिखारा। दस अट्ठ अठारां एका घर बाहरा। ऊँच नीच ना किसे विचारा। राउ रंक निहकलंक तेरे खड़े रहण चरन दुआरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे अपर अपारा। अपर अपार आप अपरम्परा। करे कराए सर्ब थाएँ वरतंतरा। सोहँ नाम जपाए चार वरन गुर साचा मन्त्रा। साचा मोख दवाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दी जाणे अन्तरा। अन्तरजामी पुरख बिधाता। सर्ब जीआं दा होए ज्ञाता। सोहँ देवे साची दाता। चार वरन करे भैण भ्राता। आपे होए पित माता। चरन प्रीती देवे साचा नाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका पुरख निरँजण सर्ब जीआं दा एका ज्ञाता। इक्क दातार विच वरभण्ड। इक्क आकार होए नवखण्ड। इक्क विहार होए विच वरभण्ड। इक्क वपार होवे नव खण्ड। इक्क रुज़गार होवे वरभण्ड। इक्क बहार होवे नवखण्ड। इक्क संसार होए वरभण्ड। एका शब्द अधार होए नवखण्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई देवे दंड। सृष्ट सबाई इक्क अधार। सृष्ट सबाई इक्क प्यार। सृष्ट सबाई इक्क सरकार। सृष्ट सबाई इक्क भतार। सृष्ट सबाई ना कोई होए ख्वार। सृष्ट सबाई ना कोई करे झूठा वणज वपार। सृष्ट सबाई ना कोई मंगे किसे कोलों कोई अधार। सृष्ट सबाई पूरे तोल तुलाए, प्रभ साचा परवरदिगार। सृष्ट सबाई महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणी किरपा करे अपार। सृष्ट सबाई एका राह। सृष्ट सबाई एका थां। सृष्ट सबाई एका जपे सोहँ जापे साचा नां। सृष्ट सबाई एका पार वेले अन्त पकड़े बांह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नवखण्ड बणाए साचा थां। नवखण्ड पृथ्मी नावां दर। सच घर वसे प्रभ साचा हरि। सतिजुग साचा खुल्ल जाए दर। एका रंग रंगाए सृष्ट सबाई प्रभ नारी नर। एका शब्द

४२७
०२

जपाए, आप आपणी किरपा कर। साचे तख्त आपे आप सज जाए, साचा छत्र सीस धर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सच जगदीस विच हरि। सति सति सति वरतारा। सति सति सति विहारा। सति सति सति कराए विच संसारा। यति यति यति रह जाए सभ नारी नारा। तत्त तत्त तत्त इक्क सोहँ शब्द अपर अपारा। मति मति मति प्रभ आपे पाए सृष्ट सबाई घड़न भन्नणहारा। पति पति पति आप रखाए साचा सज्जण मीत प्यारा। वथ वथ वथ सोहँ बीज बिजाए तन बणाए सच क्यारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप खुल्हाए गुरसिखां दस्म दुआरा। दस्म दुआरा सूत्र धार। शब्द गुंझार, सच धुन्कार, गुरमुख सुनार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन किरपा करे अपार। आप उपजाए आत्म धुन। गुरमुखां खुल्हाए काया सुन्न। अमृत बूंद कँवल मुख पाए गुरमुख साचा चुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कवण जाणे हरि तेरे गुण। कवण गुण हरि आप वखाणे। प्रभ अबिनाशी कोई विरला जाणे। जिस चलाए आपणे भाणे। सो जन रंग साचा माणे। साचा देवे नाम निधाने। आत्म तोड़े सर्ब अभिमाने। एका बख्शे चरन ध्याने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ देवे साचा दाने। साचा दान देवे पुरख सुजान। साची दरगाह पावे माण। साचे घर सच निशान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सति पुरखां मेल मिलाए जोत जगाए जगत जहान। मेल मिलाया, कर्म कमाया। मातलोक प्रभ जन्म दवाया। प्रगट जोत दरस दिखाया। गुरमुखां प्रभ कर तरस अमृत मेघ बरसाया। अमृत मेघ बरस आत्म तृखा बुझाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो जन उधरे पार जो जन तेरी चरन धूढ़ नहाया। चरन धूढ़ जो जन नहावे। प्रभ अबिनाशी रसना गावे। दिवस रैण हरि रिदे ध्यावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा दरस दिखावे। दरस दिखावे दीन दयाला। भगत जनां सद होए रखवाला। सोहँ शब्द जपावे गल पावे साची माला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे जगत धन माला। सोहँ देवे साचा धन। गुरसिख आत्म जाए मन्न। आपणा बेड़ा जाए बन्न्ह। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कढाए आत्म जन। आत्म जन आप चुकाए। साचा राग कन्न सुणाए। सोहँ जाग तन लगाए तृखा आग आप बुझाए। जिउँ बिदर अलूणा खाया साग, दर घर आए भोग लगाए। आपे पकड़े तेरी वाग, वेले अन्त होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन दरस आ पाए। जो जन आए तृखा वन्त। आत्म तृखा मिटाए प्रभ साचा सन्त। साची बूझ बुझाए आप बण जाए साचा कन्त। आत्म भेव गूझ खुल्हाए, आप मिटाए झूठी चिन्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए साची बणत। उठ जीव जाग, क्यों कलिजुग सोया। उठ जीव जाग, क्यों साचा वक्त खोया। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी जोत जगाई भेव खुल्हाए दोऊँ दोआ। मिले वड्याई गुरमुख दर आए कोआ।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भववान सोहँ बीज साचा बोया। उठ जीव जाग, सुरत संभाली। उठ जीव जाग, मातलोक हरि जोत प्रगटाली। उठ जीव जाग, हरि आपे बणया माली। उठ जीव जाग, ना जए दर तों खाली। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मात जोत प्रगटाए वाली दो जहानीं। उठ जीव जाग सोहँ शब्द लगावे जाग। उठ जीव जाग, सुण साचा राग। उठ जीव जाग, आत्म तृखा बुझाए आग। उठ जीव जाग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान हँस बणावे काग। उठ जीव जाग, लै आत्म रस। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी सोहँ शब्द देवे हस्स। उठ जीव जाग, प्रभ चरनी लाग साचा राह जाए दस्स। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुखां सद होए वस। उठ जीव जाग, जगत अन्धेरा। उठ जीव जाग, नां दिसे किसे संझ सवेरा। उठ जीव जाग, प्रभ अबिनाशी पाया मात फेरा। उठ जीव जाग, आप चुकाए तेरा मेरा। उठ जीव जाग, प्रभ ढाए भरम दा डेरा। उठ जीव जाग, मिटे अन्धेरी रात, गुरसिखां होया सवेरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप वसाए तेरा आत्म नगर खेड़ा। आत्म खेड़ा तेरा आपे वसे। होए प्रकाश जोत रवि सस्से। अज्ञान अन्धेर तेरे दर ते नस्से। प्रभ अबिनाशी तेरे हिरदे वसे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दर दुआरा राह सच दस्से। गुर चरन सीस निवाया। दुःख रोग सर्ब गंवाया। चिन्ता सोग हरि मिटाया। प्रगट जोत जोत सरूप स्वच्छ सरूपी दरस दिखाया। गुरसिख कर दरस अमोघ, साचा समां हरि आण सुहाया। सोहँ शब्द साचा जोग, दूई द्वैत दे मिटाया। साचा रस रसना ल्या भोग, सोहँ साचा गाया। कलिजुग माया झूठा लोभ, ना कोई होए सहाया। आपणा आप लैण सोध, कल्गीधर जगदीस विच मात जोत प्रगटाया। वड जोधा वड जोधन जोध, सूरबीर आप अख्वाया। बेमुखां जाए सोध, सोहँ शब्द तीर इक्क चलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर घर आए दर दरबान पूरन आस कराया। दुःख रोग लथ्था दर। जो जन आए साचे घर। कर दरस कलिजुग जायण तर। निहकलंक जोत प्रगटाई अवतार नर। साचा शब्द डंक वजाई, दिओ वधाई घर घर सुणे मातलोक लोकाई वज्जे वधाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरसिखां चुकाए सर्ब डर। दुःख दर्द प्रभ देवे खण्ड। गुरसिखां ना देवे किसे दंड। भन्न वखाए प्रभ कच्चे अंड। कलिजुग जीव जो पायण डण्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए बेमुखां झण्ड। दुःख दर्द हरि दे निवार। दर घर आए प्रभ साचा जाए तार। साचा सर सच्चा दरबार। एका एक देवे कर हँगता रोग निवार। आत्म खुल्हाए साचा दर, जो जन करे चरन प्यार। अन्तकाल ना जाए मर, प्रभ देवे दरस अपार। आप वसाए साचे घर, जिथ्थे वसे आप निरँकार। गुरमुख साचे जायण तर, किरपा करे अपर अपार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए लाया सच दरबार। सच दरबारा

सच दुआरा। गुरसिखां वखाए आप निरँकारा। आए दर जाए तर, चुक्के डर ना जाए मर, पति रक्खे हरि आप आप गिरधारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर तरस गुरसिखां करे प्यारा। गुरसिख हरि करे प्यार। प्रेम भगत दे जावे तार। पूरन काम सच धाम हरि चरन द्वार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन आए तेरे द्वार, अन्तिम पायण मोख द्वार। मोख दुआरा, गुर घर भगत अधारा। गुर घर जन्म संवारा। गुर घर कर्म विचारा। गुर घर भरम निवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म मरन संवारा। जन्म मरन हरि आप चुकाए। झूठा भरम सर्ब गंवाए। सच धर्म प्रभ मार्ग लाए। सारंगधर आप अख्वाए। नर अवतार महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग अन्तिम अन्त नाउँ रखाए। सच धाम गुर चरन छुहाए। सच धाम प्रभ आप सुहाए। गुरसिखां गुर संगत बणाए। सच धाम प्रभ अबिनाशी भुक्ख नंग गंवाए। सच धाम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां अंग संग सुहाए। सच धाम जगत उजागर। सच धाम गुरसिख बणाए प्रभ सोहँ शब्द सच सुदागर। सच धाम गुरसिखां जोत जगाए, प्रभ झूठी काया गागर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच भण्डारे आप भराए आत्म गुरसिख सागर। सच धाम साचा वेला। सच धाम प्रभ मिल्या सज्जण सुहेला। सच धाम गुरसिखां होया कलिजुग मेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाया आपणा चेला। सच धाम धर्म जोत।
४३० सच धाम एका गोत। सच धाम आप खुल्हाए आत्म सार सोत। सच धाम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती ४३०
०२ कर आत्म जगाए साची जोत। सच धाम सच दर। सच धाम सच घर। सच धाम आया हरि। सच धाम गुरसिखां देवे ०२
सोहँ साचा वर। सच धाम मात जोत प्रगटाई, निहकलंक अवतार नर। सच धाम अवतार नरया। सच धाम आप सुहाया प्रभ अबिनाशी भाग भरया। साचे धाम गाया गुरसिखां आसा वरया। साचा धाम पाया निहकलंक, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत सरूपी दर द्वार अग्गे पड़या। सच धाम सच द्वारी। सच धाम गुरसिख आए निहकलंक तेरे चरन पुजारी। सच धाम सच राम साची जोत जगे निरँकारी। सच धाम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जन भगतां जाए उधारी। सच धाम चरन द्वार। सच धाम गुर दरस अपार। सच धाम कर किरपा जाए तार। सच धाम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बख्शे चरन प्यार। सच धाम चरन धूढ़। गुरसिख बणाए गुर आत्म मूढ़। आत्म कट्टे माया जूड़। सोहँ शब्द टिकाए साचे हट्टे, रंग चढ़ाए एक गूढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां पीड़ पिड़ाए विच शब्द सरूपी बूड़। सच धाम शब्द अनमोल। सच धाम गुरसिख साचे दोए चरन तन मन घोल। सच धाम प्रभ अबिनाशी जोत सरूप वस्सया कोल। सच धाम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आत्म पड़दे देवे खोल्ह। सच धाम मिटे अन्धेरा। सच धाम दिसे सवेरा। सच धाम

गुरसिखां ढाहे भरमां डेरा। सच धाम, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुकाए लक्ख चुरसी गेड़ा। लक्ख चुरासी आप कटाए। चरन दासी आपणी आप कराए। घनकपुर वासी विच मात जोत प्रगटाए। साची जोत जगत प्रकाशी, तीन लोक होए रुशनाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो जन उधरे जो चले हरि के भाए। हरि का भाणा वेख विचारो। जन्म मरन ना दोए हारो। साचा धर्म गुर चरन प्यारो। जन्म मरन दोए संवारो। अन्तकाल ना होए ख्वारो। आओ चल निहकलंक द्वारो। अन्तकल कलिजुग उतरे पारो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान देवे दरस अपारो। आपे देवे दरस अमोघ। आप चुकाए चिन्ता सोग। सच शब्द गुरसिख साचा जोग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दर घर आए रस साच भोग। रसना रस, आत्म वस, दुखड़े जायण नस्स। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सोहँ चलाए स्वास स्वास। स्वास स्वासी पवण रासी। सद अबिनाशी ना कदे विनासी। गुर संगत तेरा होया दासी। रसन ना लाओ ना बण जाओ मदिरा मासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौं निध कराए गुरसिख तेरी दासी। नौं निध होए तेरे दास। कारज सिध्ध प्रभ हिरदे वास। दर घर दुखड़े होयण नास। प्रभ मिलण दी साची बिध, सोहँ जीव स्वास स्वास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची जोत करे प्रकाश। साची जोत आप जगाए। सोहँ साचा जो जन गाए। हिरदे वाचा हरि दरस दिखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां उप्पर तरस कमाए। तरस कमाए दीन का दाता। गुरमुख साचे हरि रंग राता। हरि हरि हिरदे वाचे, सोहँ देवे साची दाता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना गंवाए गुर संगत तेरी अज्ज दी बिरथी राता। भिन्नड़ी रैण लेखे लाई। गुर संगत तेरे मन वधाई। आपे लए गोद उठाई। जिउँ नानक अंगद अंग लगाई। गुर संगत साचा संग, गुर चरन निभ जाई। आपे देवे दरस दान, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस हत्थ तेरी वड्याई। भिन्नड़ी रैण गुरसिख साचे सन्त जन तेरे प्रभ अबिनाशी चरन बहणे। दर घर आए साचे लैण लहणे। आत्म तन पहनाए प्रभ सोहँ साचे गहिणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी दरस दिखाए गुरसिख तीजे नैणे। नेत्र तीजे गुरसिख वेख। प्रभ बैठा धार जोत सरूपी भेख। गुप्त चित्र विच बैठा आप लिखाए तेरे लेख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख चरन लाग जगाए भाग, उपजाए राग, धोए दाग, आप मिटाए बिधना लिखे लेख। लिखे लेख आप मिटाए। साचे लेख फिर लिखाए। जोत सरूपी खेल रचाए। वड वड औलीए शेख प्रभ नष्ट कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका अलख अलेख सोहँ शब्द चलाए। एका शब्द अलख अलेखक। आप मिटाए साचा भेखक। कलिजुग मिटाए झूठी रेखक। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां कराए बुध बिबेक। साची मति गुरसिख सिख। साचे लेख प्रभ देवे लिख।

सच शब्द तेरी झोली पाए भिक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची सिख्या देवे गुरसिख लैण सिख। साची सिख्या गुर चरन द्वारो। मानस जन्म ना जग विच हारो। निहकलंक एक सरन पूरन अवतारो। वेले अन्त सृष्ट सबाई होए ख्वारो। सोहँ शब्द वज्जे साचा डंक, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका संग सच्चा जगत ना बणो फेर भिखारो। जगत भिखारी होए जीव संसारी। ना कोई पावे दर द्वारी। दर दर होए खुआई। साधां सन्तां मति गई मारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदिन अन्ता प्रगट जोत आपे करे कारी। सन्त सुहेले संग मेलड़ा, चरन लाग जाओ तर। ना होए जगत दुहेलड़ा, सच घर तों आए डर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रंग रलीआं खेलड़ा, कर दरस जाओ तर। रंग रली माणो हरि। आत्म कली प्रभ देवे धर। साची फली शब्द हरि। गुरमुखां मिल्या साचा बली, जीव सरनी जाए पर। सोहँ तली जोत धरी, वली छली सृष्ट सबाई जाए हर। नौं खण्ड पृथ्मी निहकलंक तेरे द्वार खड़ी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जोत प्रगटाए गुरसिख ध्याए ना लाए घड़ी पल। गुरमुख आत्म साची प्रीत। प्रभ मिलण दी राखे नीत। काया होए छिन्न छिन्न छिन्न सीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए गुरसिख साचे विच मातलोक सदा रहे अतीत। आत्म होए सदा अतीती। राख एक चरन प्रीती। पिछली भुल बख्शाओ कीती। आए प्रभ परखे नीती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर दरस गुरसिखां आत्म जीती। आत्म आपणा जाओ जित। गुर चरन प्रीती साचा हित्त। प्रभ अबिनाशी जोत प्रगटाए गुरसिख तेरे दर दुआरे नित नवित्त। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुगा जुगन्तर साचा मित। मीत प्यारा प्रभ गिरधारा। गुरसिखां करे प्यारा। आवे जावे वारो वारा। अचरज खेल रंग करतारा। भरम भुलेखा पाए जीव गंवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत आत्म पिलाए साची धारा। गुर चरन प्यारा साची धारा। गुर चरन मोख दुआरा। गुर चरन मुख उज्जयारा। गुर चरन भुक्ख निवारा। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरले करे वपारा। गुर चरन साचा नीर। गुर चरन साचा पीर। गुर चरन मिले धीर। गुर चरन देवे प्रभ अमृत साचा सीर। गुर चरन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत प्रगटाई वड पीरन पीर। गुर चरन बुध बिबेक। गुर चरन साची टेक। गुर चरन दरस एक। गुर चरन ना लागे सेक। गुर चरन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप रखाए आपणी टेक। गुर चरन जगत उधार। गुर चरन पतित सुधार। गुर चरन शब्द खिड़ी गुलज़ार। गुर चरन, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां वखाए सच बहार। गुर चरन गुर रूप। गुर चरन माण गंवाए वड राजन भूप। गुर चरन जन मस्तक छुहाए बहु दरस दिखाए बिन रंग रूप। गुर चरन जो जन नुहाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट होवे सति सरूप। गुर चरन

गुर दीदार। गुर चरन गुरसिख प्यार। गुर चरन आत्म दुःख दे निवार। गुर चरन वड वड मुन रिख देवे भरम निवार। गुर चरन लेख साचे देवे लिख, आपे बणे लेख लिखार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे किरपा धार। गुर चरन जगननाथ। गुर चरन साचा सगल साथ। गुर चरन लग्गण इक्क रघुनाथ। गुर चरन दीपक जगण गगन, आपे बणे साचा साथ। गुर चरन महिंमा जगत अकथ्थ। गुर चरन गुरसिखां मिले साची वथ। गुर चरन कर दरस सगल वसूरे जायण लथ्थ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दुःख दर्द गुर संगत जाए मथ। गुर चरन जो जन लागा। काया रोग दुखड़ा भागा। चिन्ता सोग बुझी आगा। गुरमुख सोया कलिजुग जागा। आप उपजाए अनहद साचा रागा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन सरनी तेरी लागा। अमृत आत्म गुरसिख भरया। सच तारी गुरसिख विरला तरया। आत्म सति सरूर अंदर जिस जन साचा वरया। झूठी काया अन्धेर कंदर, बेमुखां तन आए डरया। गुरसिखां बणाए प्रभ साचा मन्दिर, अमृत आत्म भरया। आप तुड़ाए माया जंदर, दस्म दुआरी अग्गे खड़या। बेमुख जीव नचाए कलिजुग जिउँ बन्दर, ना कोई फड़े लड़या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत रसना गाओ, सद सद सद आपणे विच्चों पाओ, दिवस रैण रहे अंदर वड़या। अमृत मेघ आप बरसाया। कर किरपा हरि नाम दवाया। साचा धाम आप सुहाया। रमईआ राम जोत जगाया। घनईआ शाम इक्क रघुराया। वेखे वेख वखाए गुरमुखां मन चाउ चढ़ईआ। भेखी भेख वटाए, स्वांगी स्वांग रचईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आत्म भण्डारे करे भरपूर जो दर मंगण अईआ। जो जन आए नाम भिखारी। सोहँ देवे वड भण्डारी। आपे खोल्हे तेरी दस्म दुआरी। एका जोत प्रभ साचा करे उज्जयारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द उपजाए साची धुन्कारी। सोहँ शब्द एका धुन। गुरसिख सुण एका शब्द उपजाए प्रभ अबिनाशी कन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म उपजाए रुण झुण। आत्म धुन सच्ची धुन्कार। गुरमुख साचा सुणे शब्द गुंजार। एका शब्द रैण रैण दिवस एका तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां बख्शे कर चरन प्यार। गुरसिख आत्म आप जगाओ। प्रभ अबिनाशी वर घर साचा साचा पाओ। आत्म जीव जंदर सोहँ जप रसना आप खुल्हाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कोटन कोट दर आए पाप गवाओ। कोटन पाप आप निवारे। तीनो ताप प्रभ साचा मारे। पतित पापी दर घर आए जो निमस्कारे। अमृत मेघ मुख चुआए गुण अवगुण ना हरि विचारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सदा सदा भरे रहण भण्डारे। प्रभ अबिनाशी वड भण्डार। कोटन कोट खड़े द्वार। गुरमुख मंगण बण भिखार। प्रभ अबिनाशी देवे नाम दान, जो जन आए दरबार। किरपा करे आप भगवाान, जोत सरूपी खेल अपार। आप बणाए गुरसिख चतुर सुजान,

अमृत बख्शे साची धार। आप बिठाए विच बबाण, जा बहाए सच दरबार। आप चुकाए जम की कान, जोत सरूपी अगम्म अपार। गुरसिख तेरा माण ताण गुर चरन द्वार। भगत वछल आप भगवान, तेरा साचा सच सहार। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, कलिजुग पार कराए, ना डोबे विच मंझधार। गुरसिख गुर तेरा विचोला। हरि शब्द लिखाए ना रक्खे उहला। पंचम जेठ बेमुखां खोल्ले पोला। एका शब्द सृष्ट सबाई रसना गाए सोहँ ढोला। एका शब्द विच पवण चलाए, चार वरन झुलाए एक झोला। साचा सीस हरि जगदीस, मिटाए बीस इकीस, गुरसिख सज्जण सुहेला। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, साचा गुर ना कोई जाणे दुहेला। साचा गुर सच दरबारी। परम पुरख आप निरँकारी। गुरमुख गुरसिख सोहण चरन द्वारी। सृष्ट सबाई करे पनहारी। आपणे आप रखाए वडी इक्क सिक्दारी। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, वड शाहो चिट्टे अस्व अस्वारी। चिट्टे अस्व सच अस्वार। पवण सरूपी चतुर्भुज गिरधार। पवण सरूपी खेल अपार। वड वड भूपी ना पावण सार। आत्म अन्ध कूपी भुल्ले जीव गंवार। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान गुरसिख बुझाए साचा सच द्वार। दुखीए जीव दर बिल्लायण। लिख्या लेख आपणा पायण। भैण भाई ना कोई छुडायण। पिच्छा छोड़ दूर नठ्ठ जायण। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आपे होए सज्जण सैण। सिर पैर तन दुख। दिवस रैण ना लग्गे भुक्ख। सुफल होई ना अजे कुक्ख। गर्भवास ना होया उलटा रुक्ख। जगत तृष्ना ना उतरी भुक्ख। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, किरपा कर उतारे संसा दुख। संसा दुःख रोग गंवाया। दर आयां हरि माण दवाया। एका शब्द बाण लगाया। पवण मसाण कोई रहण ना पाया। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सच तेरी सरनाया। छल छिद्र आप मिटाए। टूणा जादू कोई रहण ना पाए। काल बाल प्रभ परे हटाए। सच थान सच वस्त विच तन टिकाए। सच धन माल सोहँ शब्द प्रभ रसन जपाए। सच कुठाली देवे गाल, सोहँ सुहागा आप चढ़ाए। आत्म दीपक देवे बाल, जो जन रसना नाम ध्याए। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दुखियां दुःख दे मिटाए। दुखीआ दुःख जगत जंजाल। आत्म होई बड़ी कंगाल। ना घर दिसे कोई धन माल। औखे होए पालणे बाल। कोई ना तोड़े रोगां जाल। नेड़े औंदा दिसे काल। काया बख्शे जिस अन्त डाल। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, किरपा कर देवे स्वास सुखाल। सज्जी कुक्ख चड़्या रंग। खिटा रंग होया भरन। अमृत चले आत्म गंग। सोहँ शब्द रसना गाए चाढ़े साचा रंग। सच दात दर मंगण आए, प्रभ पूरी करे मंग। दर घर साचे जो जन जाए भुल्ल, अन्तकाल प्रभ देवे टंग। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सदा सहाई होए अंग संग। तन अग्ग मन अफार। काया उप्पर रहन्दा भार। कोई ना करे कार। कालजे पवे सदा घार। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, किरपा

कर दुःख दर्द देवे निवार। पुत्त पोतरे होए दुख। सर्ब जीआं दी मंगे सुख। आप ना जाणे आपणा दुःख, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर चरन प्रीती उपजे साचा सुख। पुत्तर धीआं नारी प्रभ कराए दर ते कारी। आत्म क्रिया प्रभ विचारी। जो जन आया आसा धारी। दुःख दर्द प्रभ दे निवारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं करे कारी। शब्द प्यार जिस मन रक्खी आस। आप बुझाए तृखा प्यास। इक्क कराए सच घर वास। सोहँ जपाए स्वास स्वास। साची जोत करे प्रकाश। सच घर दिसावे साचा वास। जो जन तजाए रसना मदिरा मास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप जन भगतां होए दास। चरन प्रीती मंगे दोए जोड़। आप मिटाए काया कोढ़। सोहँ शब्द चढ़ाए साचे घोड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रभ साचे दी सची लोड़। आत्म विचारे शब्द गुण। आप उपजाए एका धुन। गुरसिखां उठाए चुण चुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान बेमुखां विच्चों पुण पुण। आत्म रक्खे भरम भुलेखा। आप चुकाए एथे लेखा। दर घर जाए प्रभ साचा आप भुलाए ना जाणे कोई भेखा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप मिटाए झूठी रेखा। जो जन आए दर हँकारी। प्रभ साचा करे ख्वारी। गुर दर आए आत्म अन्ध। औखा होया बन्द बन्द। आत्म वज्जे साचा जंद। आप तुड़ाए प्रेम तन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख बणाए आत्म अन्ध। आत्म अज्ञानी गुर दर जो रहे अभिमानी। हराम खोर लक्ख चुरासी विच भवानी। ना कोई जाणे भेव, आवण जावण खेल रचानी। कलिजुग लाई बैठा झौर, बेमुख दिवस रैण पछानी। झूठा चल्लया कलिजुग दौर, सृष्ट सबाई करे बेईमानी। गुरसिखां सिर झुल्ले चौर, गुर पूरे दी एह निशानी। मानस जन्म जाए सौर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस मिल्या गुण निधानी। ग़रीब अञ्याणे बाल्यां प्रभ माण दवाए। दुःख भुक्ख रोग गंवाए। प्रभ माण रखाए आपणा वेला आप निभा ल्या, हरि दया कमाए। रैण सबाई प्रभ अबिनाशी रसना गा ल्या, हरि देवे सच वड्याई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेख लिखा ल्या, तोट रहे ना राई। साची रीती जगत कार। साचा करे जगत विहार। प्रभ अबिनाशी पावे सार। दुःख रोग भुक्ख दए निवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा लेख लिखा जो जन मंगे बण भिखार। भिखारी मंगे साची भीख्या। प्रभ अबिनाशी देवे साची सीख्या। आप मिटाए बिधना लीख्या। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच कर जाणो देवे साची सीख्या। आत्म प्रेम शब्द कटार। सोहँ शब्द साची धार। गुरसिख खोल्ह दस्म दुआर। जो जन पावे सार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे जन्म मरन देवे संवार। सच शब्द गुर दर पावणा। दिवस रैण रसना गावणा। पूर कराए प्रभ साचा भावना। दूर कराए आत्म । नूर चढ़ाए सच रंग सुहावणा। सर्ब कला भरपूर कराए, जिस जन साचे रसना

गावणा। इक्क लक्ख अस्सी हज़ार बंधाए। भूत प्रेत कोई नेड़ ना पाए। सोहँ शब्द तीर चलाए। तीन लोआं विच फिराए। नाम निरबाण बाण लगाए। सोहँ आण सर्ब रखाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए। बीर अठारां होयण वस। सोहँ शब्द चलाया कस। दर साचे तों जायण नस्स। दोए जोड़े करन बस बस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए सर्ब भस। नर नारी सभ होयण ख्वार। दुष्ट दुराचारी करे ख्वार। सोहँ शब्द वड हथिआर। फड़ फड़ मारे दुष्ट दुराचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब करे ख्वार। साचा शब्द किया आकार। बचन ते बाहर खाए मार। किरपा करे आप करतार। सन्त का दोखी होए खुआर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द चलाए खण्डा दो धार। जीव पिण्ड काचा शब्द साचा। गुरमुख साचे हिरदे वाचा। बीर बेताला दर ते नाचा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा शब्द लिखाए साचो साचा। हाकनी डाकनी सर्ब बंधाए। छल छिद्र टूणा जादू कोई नेड़ ना आए। काल बाल जगत जंजाल प्रभ दूर कराए। उलट वाहू दे सिर पवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी दया कमाए। राजा का तेज चोर का घोर रड़ा डूंघर प्रभ साचा होए सहाए। दीन दुनी दा पातशाह, जो जन सरनीं लग जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कर किरपा पार लँघाए। इक्क तिन्न दो धड़। दुक्खां रोगां बणया गढ़। दिवस रैण रिहा लड़। ना कोई मिटावे, अंदर बैठा वड़। सोहँ शब्द जपाए, दर घर साचे जाए चढ़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन फड़या तेरा लड़। सुरत शब्द प्रभ देवे वर। एक खुल्हाए आत्म दर। सच्चो सच दिसावे खुल्हाए साचा वर। एका एक रहाए दूसर ओथे कोई ना जाए, सुख साचा थान साचा पाए, जो जन पकड़े साचा लड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप दिसाए साचा घर। सच ध्यान ब्रह्म ज्ञाना। आत्म जोत जगे महाना। शब्द चले साचा बिध नाना। आपे आप सुणाए, घर सुत्तयां काना। गुरसिख साचा सेव कमाए, सोहँ बन्हाया हत्थ साचा गाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे नाम दान वड दानी दाना। वड दान दिया गुर पूरे। अनहद शब्द उपजाए साची तूरे। अज्ञान अन्धेर कराया दूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला भरपूरे। सर्ब कला प्रभ भरपूर। आप उपजाए जोती नूर। गुरसिख साचे नाम दवाए, आलस निंदरा कीनी दूर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साचा सूरबीर। गुण गाओ सद रसना गुण निध। कारज सारे होवण सिध्ध। आप उपजाए घर नव निध। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए मेल मिलाए कराए आपणी बिध। शब्द दान देवे गुर पूरा। अनहद धुन उपजाए साची तूरा। गुरसिख उतरे बचन पूरा। आत्म लथ्थे सगल वसूरा। मदिरा मास जाण जिउँ कौड़ा अक धतूरा। दर घर साचे शब्द सरूपी रंग साचा माण, आत्म

जोत जगे जिउँ कोहतूरा। सोहँ जपे स्वास स्वासे आत्म होए रासी, प्रभ साचा करे बन्द खुलासी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए शब्द कटाए रोग मिटाए काया सतिगुर पूरा। शब्द मोन आत्म इक्क धारो। पवण सुरत हरि हुलारे। सच शब्द सुरत धुन्कारो। अकाल मूर्त दरस द्वारो। गुरसिख कदे ना झूरत, हरि देवणहार भण्डारो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण सद रसन उचारो। सच नाम जपे जेहा। फल अमृत खाए सोहँ साचा मेवा। देवे वड्याई प्रभ साचा वड देवी देवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए ना बिरथा जाए सेवा। गाओ गुण गुर गोबिन्द। जोत प्रगटाई सुरत राजे इन्द। गुरसिख उपजाए बणाए साची बिन्द । आप मिटाए गुरमुखां चिन्द। बेमुखां नष्ट कराए, जो दर आए कर जायण निन्द। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान मात जोत प्रगटाई, भाग लगाया विच हिन्द। भारत जागी होए वडभागी। प्रभ अबिनाशी चरन धूढ़ जिस जन मस्तक लागी। सोई किस्मत जुग चोथे जागी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपे बणे सृष्ट सबाई वागी। धरत मात एका धवल। गुरसिख उपजाए तेरे उप्पर फुल्ल कँवल। जोत सरूपी विच रिहा मवल। सृष्ट सबाई होए बवल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक अव्वल। एका एक इक्क करतार। एका टेक सर्ब संसार। सतिजुग साचे करे बुध बिबेक, गुरसिखां कलि कर्म विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात विच जामा धार। सतिजुग साचा सच वरतावणा। सच सच विच हरि मात चलावणा। रच रच रच गुरमुखां हिरदे रच विच समावणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे फड़े गुरसिखां दामना। गुरसिख फड़या साचा दामन। पूर कराए हरि सचा कामन। सोहँ जपाए हरि साचा नामन। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप दरगाह साची साचा जामन किशना शामन। शब्द निशान चुक्के कान। काया दुःख लग्गा महान। ना मिले खाण पकाण। आप मिटाए पवण मसाण। ऐवें भुल्ले जीव अञ्याण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं करे पछाण। बीर मसाणी आत्म कीनी जिस ने दास। सीने निकले ना सुखाला स्वास। तन मन बद्धा रहे आवे बास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर दुःख दर्द करे नास। मन चिन्ता आत्म घार। झूठा दिसे जगत विहार। दुक्खां दर्दां पाया भार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे आप अपार। दुःख रोग लग्गा तन। ना कोई कढ्ढे आत्म जन। वांग तन्दूर तपे तन। काया लाया दुक्खां डन्न। प्रभ अबिनाशी सभ देवे भन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान किरपा कर बेड़ा देवे बन्न्ह। आत्म घोर जीव रोगी। साचा सुख ना अनदिन भोगी। होए बेहाल जिउँ तन जोगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान कर किरपा तारे रोगी। शुक्ला किशना पख अन्धेरा। काया तन ना कोई जाणे हेरा फेरा। झूठा बन्द बद्धा दुक्खां डेरा। किरपा कर

आप कटाए घेरा। घेर घार आत्म धार दुःख जाए निवार, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आया करे नबेड़ा। सच घर सच अरदासा। पूरन देवे हरि प्रभ भरवासा। देवे दान चरन ध्यान पुरख अबिनाशा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गाओ स्वास स्वासा। सोहँ शब्द सच धरवास। गुरमुख हिरदे रक्खे वास। रसना जपे स्वास स्वास। आपे करे दुखड़े नास। सुक्के रुखड़े होए वास। बालक भुक्खड़े ना होए उदास। उज्जल मुखड़े जिस वसे पास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन पूर कराए आस। गुर प्रसाद गुर भोग लगाए। साध संगत मुख चोग चुगाए। काया रोग सोग मिटाए। सोहँ साचा योग दवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत दरस अमोघ दिखाए। गुर प्रसादि गुर पूरा पाया। रैण सबाई दर मंगल गाया। भैण भाई साक सज्जण सैण तराया। धन्न धन्न धन्न मात पिता जिस बालक जाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन तेरी चरनी सीस झुकाया। गुर प्रसादि गुर पूरा जाणयां। किरपा करे आप भगवाणयां। रैण सबाई रंग साचा माणयां। जन भुल बख्शाई टुट्टा अभिमाणयां। मन वज्जी वधाई सोहँ शब्द हत्थ बद्धा गाणयां। गुरसिख साचे भुल ना जाई, कलिजुग माया विच रुल ना जाई, मदिरा मास खा ना बण हैवाणयां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रुल ना जाई, रल झूठे यार शैताणयां। गुर प्रसादि गुर पद पाए। गुर प्रसादि गुर सद घर लै जाए। गुर प्रसादि गुरसिखां प्रभ सद सद तराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेले अन्त पकड़ बांहे। गुर प्रसादि गुरसिख जाण। गुर प्रसादि गुरसिख रसना गाण। प्रसादि गुर अमृत सच वखाण। गुर प्रसादि महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन चरनी डिग्गण आण। गुर प्रसादि आत्म चीत। गुर प्रसादि काया सीत। गुर प्रसादि प्रभ देवे गुरसिखां चरन प्रीत। गुर प्रसादि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां रक्खे जगत सुरजीत। गुर प्रसादि सभ दुःख गंवाया। गुर प्रसादि सभ सुख गुर चरन पाया। गुर प्रसादि उतरी भुक्ख हरि दर्शन पाया। गुर प्रसाद, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुरमुखां आप दवाया। गुर प्रसादि गुरसिख खाए मानस जन्म ना बिरथा जाए। आपणा लेखा लए चुकाए। वेखा वेख जो रहे शरमाए। वेले अन्त फिरन जिउँ सुंञे घर काए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दरगाह ना देवे थाएँ। गुर प्रसाद गुर दर खाओ। गुरसिख साचे बण अमरापद पाओ। प्रभ अबिनाशी जोत जगाई, कर दरस सच घर जाओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन सेव सद सद कमाओ। गुर संगत गुर माण दवाए। संगत गुर इक्क थां बहाए। गुर संगत गुर लेखे लाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सेव लगाए। गुर संगत प्रभ किरपा धारी। संगत गुर सोहे सच द्वारी। गुर संगत हरि पैज संवारी। जोत सरूपी मात आए कलि कल्गी अवतारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर

अवतारी। भिन्नी रैनड़ीए तेरे साचे लहणे। गुर संगत बणाई भाई भैणे। कोई ना वेखे झूठे नैणे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा धाम गुरसिख चरनी बहणे।

* पहली जेठ २०१० बिक्रमी माता बिशन कौर दे गृह पिण्ड जेठूवाल *

लोकमात मार झात, कलिजुग अन्धेरी रात। बिन गुर पूरे, कोई ना पुच्छे तेरी वात। प्रभ अबिनाशी एका एक, बैठा रहे सद इकांत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन सरन इक्क रघुनाथ। एका नाता देवे गंढु। साचा नाम चार वरन प्रभ देवे वंड। शब्द पवण पवण शब्द एका रूप आप समाए, आप चलाए विच नव खण्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुख बैठा दे कर कंड। खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्ड, एका शब्द लाए डण्ड। ना कोई पूजे करीर जंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच जोत वरताए विच वरभण्ड। वरभण्डी दुष्टां दंडी, आप मिटाए भरम भुलेखे जीव घमंडी। आत्म होई कलिजुग रंडी। एका शब्द सोहँ प्रभ हत्थ उठाए चण्डी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा खेल करे वरभण्डी। करे खेल होए मेल सज्जण सुहेल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्न जोत लगाए सृष्ट सबाई बिन बाती बिन तेल। सच शब्द सच फ़रमाणा। पूरन जोत हरि भगवाना। गुरमुख साचे सद सुख हेत, सोहँ साचा रसना गाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ आपणा; खेल रचाना। पंचम जेठ वरते वरभण्ड। जगे जोत विच नव खण्ड। होए प्रकाश विच ब्रह्मण्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेमुखां देवे आत्म डण्ड। पंचम जेठ होए विहारा। सतिजुग साचे खेल अपारा। वरते वरतावे विच संसारा। बणावे ढाहवे जगावे बुझावे दीपक जोती जोत अपारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ आपणे सीस धरे दस्तारा। हरि जगदीस गुरसिखां करे प्यारा। मेट वखाए बीस इकीस, लिख्त लिखाए अपर अपारा। छत्र झुल्ले निहकलंक तेरे सीस, सृष्ट सबाई चरन भिखारा। कोई ना करे प्रभ साचे दी रीस, राजे राणे चल आयण दुआरा। बेमुख जायण पीस, कलिजुग अन्तिम होए ख्वारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि वरते वरतावे विच संसारा। संसारी विहारी गिरधारी सृष्ट सबाई पासा हारी। गुरसिख साचा तरे साची तारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत धरे निहकलंक निरँजण नर अवतारी। जोत निरँजण रंग अपारा। जोत निरँजण गुरमुख विरला पावे सारा। जोत निरँजण गुरसिखां देवे आत्म जोत अधारा। जोत निरँजण सोहँ देवे साचा शब्द विच मात करे वरतारा। जोत निरँजण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आदि अन्त एका एक ओंकारा। जोत निरँजण हरि का भेख। जोत निरँजण

गुरसिख साचे नेत्र पेख। जोत निरँजण, मस्तक साचा लेख। जोत निरँजण महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख साचा रिहा वेख। राउ रंक इक्क दरबार। राउ रंक इक्क करतार। राउ रंक इक्क सरकार। राउ रंक इक्क विहार। राओ रंक इक्क जोत अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका देवे सोहँ शब्द खुमार। राउ रंक इक्क दुआरा। राउ रंक इक्क भण्डारा। राउ रंक इक्क वरतारा। राउ रंक, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्क कराए आपणे चरन प्यारा। राउ रंक इक्क धार। राउ रंक इक्क विचार। राउ रंक इक्क संग साचा चरन प्यार। राउ रंक इक्क थान बंक इक्क शब्द अधार। राउ रंक महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वासी पुरी घनक सोहँ शब्द देवे सर्ब संसार। राउ रंक उधारे। जन भगत जोत उज्जयारे। पूर्ब कर्म विचारे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार वरन पावे सारे। राउ रंक आप अधारा। चार वरन इक्क दुआरा। सोहँ शब्द हरि वरतारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे आप गिरधारा। राउ रंक आए दर चरन सरन लाग जाए तर। आप चुकाए जम का डर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा सिर हत्थ धर। राउ रंक एका रंग। राउ रंक एका संग। राउ रंक दर घर मंगे एका साची मंग। राउ रंक, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आदि अन्त सदा वसे अंग संग। अंग संग सदा सुहेला। अचरज खेल पारब्रह्म कलि खेला। आप कराए विछड़यां कलि मेला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आप लगावे इक्क धकेला। सृष्ट सबाई इक्क धकेल। शौह दरयाए बेड़ा जाए ठेल। जन भगतां कराए आपणा मेल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी सदा सुहेल। आत्म देवे धीर ध्याना। गुरसिख लेवे चतुर सुजाना। सोहँ लाए साचा बाणा। एका शब्द सुणाए काना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन धूढ़ साचा इशनाना । चरन धूढ़ साचा इशनान । आत्म उपजे ब्रह्म ज्ञान । देवे दरस गुणवन्त गुण गुणी निधान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाण। सर्ब जीआं हरि आप पछाणे। खोटे खरे आपे जाणे। जो जन आए दरे, सोहँ देवे नाम निधाने। आप वसाए साचे घरे, जिथ्थे वसे आप भगवाने। ना उह जन्मे ना उह मरे, चरन लाग गुरसिख तरे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे आप महाने। चरन लाग जाओ तर। प्रभ अबिनाशी किरपा देवे कर। अवतार नर नरायण देवे साचा वर। बेमुखा अन्तकाल कलि आवे डर। गुरसिखां मिल्या प्रभ साचा हरि। हरि घर साचा देवे वर। खाली भण्डारे देवे भर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी किरपा कर। किरपा करे आप गिरधारा। सोहँ देवे नाम भण्डारा। देवणहार इक्क करतारा। कोटन कोट खड़े दुआरा। दिवस रैण दोए जोड़ करन चरन निमस्कारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका मंगण सच दुआरा। एका दर एका वर, तीन

लोक एका आकार। तीन लोक इक्क सिक्दार। तीन लोक इक्क भण्डार। तीन लोक एका जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान वड दाता वड सिक्दार। एका जोत एका कन्त। तीन लोक हरि वरतंत। शब्द सरूपी सृष्ट सबाई देवे सोहँ साचा मंत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि महिंमा जगत अगणत। आत्म धर हरि भगवाना। साचा घर जोत महाना। एका दर साचा हरि आपे रक्खे इक्क टिकाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए भेव खुल्हाणा। एका हरि एका ओट। आत्म कढ्ढे पापां खोट। एका शब्द साची चोट। प्रभ अबिनाशी रसना गावे, कदे ना आवे तोट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म पाप उतारे कोटन कोट। एका शब्द सच धुन्कारी। रुण झुण रंग अपारी। खुल्ले सुन्न तुट्टे मुन जोत होए आकारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दरस अगम्म अपारी। आत्म खुल्ले दर दरवाजा। जिथ्थे वसे गरीब निवाजा। अनहद शब्द अनाहत वाजा। शब्द धुन सद रहे गाजा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत आप बिलोए जिस साजन साजा। आत्म दर आप खुल्हाए। अमृत आत्म साचा सर प्रभ आप नुहाए। कर दरस कलि जाए तर, जोत सरूपी होए सहाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन रसना गाए। सुरत शब्द सच घर वास। सुरत शब्द सच धरवास। सुरत शब्द सच स्वास। सुरत शब्द मानस जणावे करावे रास । सुरत शब्द गुरसिख उपजाए जिउँ चन्दन प्रभास। सुरत शब्द इक्क रंग रंगाए, आप कराए आपणा दास। सुरत शब्द साचा संग निभाए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान एका जोत करे प्रकाश। सुरत शब्द सच ध्याना। सुरत शब्द गुर गुरसिख देवे आत्म धरे हरि ध्याना। सुरत शब्द शब्द सुरत हरि साचा मेल मिलाना। सुरत शब्द शब्द दीपक जोती जोत जगाणा। सुरत शब्द शब्द सुरत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे नाम निशाना। सुरत शब्द हरि आप दवाए। एका एक ध्यान चरन रखाए। सुरत शब्द हरन फरन खुल्हाए। सुरत शब्द, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी सरन लगाए। सुरत शब्द सूत्र धार। सुरत शब्द गुरसिख देवे कर प्यार। गुरसिख साचे रिहा कर्म विचार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा देवे नाम अधार। साचा नाम इक्क अधारा। राखे मन हरया तन मिटया जन सुणया कन्न सोहँ शब्द अपारा। ना लग्गे संन्ह, साची वस्त हरि थारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा शब्द देवे साची धुन्कारा। साची धुन खोल्हे सुन्न, गुरमुख दर टुट्टे मुन, कवण जाणे हरि साचे गुण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक बहाए घर साची थाँएँ, अन्त पकड़े बांहे, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां पुकार सुण। सच शब्द धीरज सन्तोख। अन्तिम देवे मोख। आत्म तृष्ना मिटे भोख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुफल कराए मात कोख। शब्द रंग गुरसिख जाण। साचा संग इक्क भगवान।

साची मंग प्रभ दर मंग नाम निधान। होए सहाई अंग संग देवे जोत आत्म महान। मानस जन्म ना होए भंग, लक्ख चुरासी विच सुल्तान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सच शब्द देवे दानी दान। दानी दान आप वड दाता। सर्ब जीआं का आपे ज्ञाता। पूरन पुरख बिधाता। सृष्ट सबाई लेख लिखाता। आत्म साचा रंग चढ़ाता। कट्टे भुक्ख नंग, एका देवे सच सुख दाता। सच शब्द आत्म चढ़ाए कंग, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जो जन दर होए मंग मंगाता। दर मंगणा मूल ना संगणा। आत्म साचा रंगणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म तन पहनाए सोहँ साचा कंगणा। अमृत वरखे साची धार। गुर संगत प्रभ करे प्यार। आत्म तृखा देवे निवार। साची भुक्ख गुर शब्द अधार। साची सिख्या गुर चरन प्यार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत मुख चुआए दुःख रोग देवे निवार। काया दुःख आत्म इकांती। आत्म बूंद देवे अमृत स्वांत स्वांती। काया अग्न प्रभ शब्द बुझाई, लग्गे लग्न दिवस रैण मग्न, आत्म दीपक होए प्रकाश विच माती। सोहँ शब्द प्रभ साचा मुख लगाए सगन, देवे दरस सुत्तयां राती। बैठा रहे तेरे विच इकांती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द स्वास स्वासी। हरि प्रभ साचा होए वस। साचा घर सोहँ शब्द तीर चलाए कस। बजर कपाटी देवे चीर आत्म जोत जगावे कोट रवि ससि। तेरे आत्म दर दुआरे वस। कोई ना जाणे पीर फ़कीर, प्रभ साचा होया किसे ना वस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द सच मार्ग रिहा दस। अमृत पीओ निर्मल जीओ, गुर चरन थीओ, गुरसिख साचे सन्त रसना मदि साची पीओ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा जाप जपाए, निर्मल कराए जीओ। जीआ दान देवे भगवान। भगत भगवान इक्क हो जाण। जोती जोत सरूप इक्क रंग रंगाण। वड भूपी भूप वड दाता शाह सुल्तान। बिन रंग रूप ना जाणे जीव अञ्याण। सृष्ट सबाई होए अन्ध कूपी, गुरमुख विरले चतुर सुजान। प्रभ साचा दिसे सति सरूपी, एका जोत जगे महान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, विष्नूं भगवान। अमृत पीओ साचा सीर। दूई द्वैत देवे चीर। एका शब्द पिलाए साचा नीर। गुरसिख आत्म आप बंधाए प्रभ साचा साची धीर। चरन धूढ़ जन साचा नहाए, हउमे कढ्ढे प्रभ आत्म पीड़। सोहँ जन रसना गाए, आप पहनाए बंधाए सिर साचा चीर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त गुरसिखां साचा दस्तगीर। दस्तगीर धुर दरगाह। जिथ्थे वसे बेपरवाह। साचा धाम साचा राम जगे जोत कोई जाणे ना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप हरि वसे साचे थां। साचा धाम सच कर जाण। जीव जन्त ना करे कोई पछाण। ओथे होए ना कदे सुंञ मसाण। आदि जुगादि जुगो जुग एका जोत जगे बली बलवान। जिन मिल्या हरि साचा कन्त, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। भोग लगाए हरि घर मन्दिर। काया कोट तुड़ाए आत्म

४४३ ०२

जंदर। साची जोत जगाए विच अन्धेर कंदर। बेमुख जीव दर दर फिराए, फिरन जिउँ बन्दर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोती जोत सरूप गुरसिखां सद वसे अंदर। वसे अंदर साचे अस्थान। साची जोत हरि भगवान। दुरमति मैल जाए धोत, किरपा करे गुण निधान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म तोड़े सर्ब अभिमान। आत्म विकार वेख विचार, मारे शब्द कटार, देवे भरम भउ निवार। साची जोत करे अकार। जो जन आए चरन करे निमस्कार। वर घर साचा पावे, वसे विच दरबार। अमृत आत्म तीर्थ नहाए, झूठी मैल देवे उतार। सोहँ शब्द रसना गाए, बांहों पकड़ प्रभ जाए तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा दे निवार। भरम भुलेखा देवे कढ्ढ। आत्म हँकार जन देवे छड्ड। दर द्वार मंगे दोवें हत्थ अड्ड। आत्म जोत करे अकार विच अन्धेरी खड्ड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं देवे अधार, सोहँ बीज आत्म बीज अग्गे लैणा वढ्ढ। सोहँ साचा बीज बिजाणा। गुरमुख सोया आप जगाणा। आप आपणी सरन लगाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दरस दिखाणा। दु:ख रोग प्रभ देवे निवार। आपे पावे दर आया सार। साचा दर द्वार जन मंगण बण भिखार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ साचा नाम जपाए, गुरमुखा कर प्यार। गुरसिख साचा मंगे दरस भिक्ख। आत्म उतारे प्रभ तृष्ना तृख। कलिजुग ना लग्गे माया दु:ख, साचा लेख प्रभ जाए लिख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, माण दवाए गुरसिख विच वड वड मुन रिख। आत्म धर ध्यान, दर आया लए पछाण, आत्म रोग लग्गे दु:ख भार। तोड़े माण अभिमान, एका रंग रंगाए बिरध बाल। अचरज खेल हरि रचाए करतार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो जन पावे जो जन मंगे बण भिखार। मंगे दर होए भिखारी। देवे वर वड संसारी। जाओ तर हरि चरन निमस्कारी। आप खुल्हाए आत्म दर, साची लाए जिथ्थे ताड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका जोत जगाए बहत्तर नाड़ी। जीआं दान जोत अधार। आपे रिहा पसर पसार। काया दे रक्त बूंद उसार। साची थित्त धरे जोत अपार। आए वक्त प्रभ साचा जाए तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख बेड़ा लाए पार। सुणे पुकार प्रभ साचा मीता। गुर चरन प्रीती गुरसिख रखाए चीता। परखे नीती जीआ दान प्रभ साचे दीता। अन्तिम औध घट बीती, किरपा कर प्रभ करे फेर सुरजीता। काया होए सीतल सीती, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सोहँ शब्द सुणाए साची गीता। वेला अन्तिम आत्म कंध। आप कटाए जम का फंद। दु:ख रोग मिटाए, सोहँ जपाए विच बत्ती दन्द। काया कोढ़ हटाए, सुखी कराए बन्द बन्द। टुट्टी गंढु वखाए, गुरमुख उपजाए आत्म परमानंद। बेड़ा बन्न्ह तराए, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच घर चढ़ाए साच चन्द। सच चन्द सच चन्द्रायण। किरपा करे आप नरायण दर घर साचे गुरमुख साचे सद रहण। आत्म

चढ़ाए साचा रंग, साचा सुख विच मात दे लैण। होए सहाई सदा अंग संग, महाराज शेर सिँघ दर्शन पेखण तीजे नैण। कर दरस उतरे भुक्ख। मात गर्भ ना होए उलटा रुक्ख। दर घर साचे मंग जीव दान देवे प्रभ साचा सुख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुफल कराए मात कुक्ख। मात गर्भ आप कटाया। अन्ध अन्धेर दूर रखाया। हेरा फेरा सर्ब चुकाया। साचा डेरा, सिँघ ठाकर गुर चरन चारों तरफ पाए घेरा, सोहँ शब्द तेरे गिरद बहाया। दूती दुष्ट ना कोई नेड़े आया। प्रभ अबिनाशी आपणा बिरद रखाया। कलिजुग मिटाए झूठा झेड़ा जोती जोत मिलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणे तेरा दाई दाया। सच सरनाई। गया तर दर सीस झुकाई। मंगया वर प्रभ पूर कराई। अन्तकाल प्रभ साचा लै जाए साचे घर, लक्ख चुरासी गेड़ ना आई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रगट जोत देवे दरस गुरसिखां देर ना लाई। ना दूर ना दुराडा। गुरसिखां आप लडाए गोदी लाडा। प्रभ अबिनाशी सतिगुर डाहढा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका इक्क रघुराई गुरसिखां माण रखाए, सतिगुर साजन असाडा। साजन मीत उलटी चलाए जगत रीत। गुरमुख करे पतित पुनीत। साचे घर हरि वास रखाए, एक जोत डगमगाए, आपणी सेवा आप लगाए दर बैठे सरबजीत। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दिवस रैण रैण दिवस घर साचे बैठे गाए गीत। गाए गीत गोबिन्द राए। चरन प्रीत सेव कमाए। मानस जन्म गए जग जीत, धर्म राए ना दे सजाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सच घर वासी बैकुण्ठ निवासी सच धाम रहाए। सच धाम रंग अगम्मा। आप मिटाए जगत भरमां। सुफल कराए मानस जन्मा। जगत रखाया धीरज धरमा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप रखाए गुरसिख तेरी शरमा। गुर गोबिन्द गुर गोपाल। गुरसिख उठाए जिउँ गोदी माता बाल। दिवस रैण विच जोती मिलाए आपे करे संभाल। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे आप तराए कलिजुग अनमुल्लड़ा लाल। अनमुल्लड़ा लाल वणज वपारा। कोई ना पावे इस दी सारा। हिरदे वस्सया मुरारा। राह साचा दस्सया निहकलंक दुआरा। गुरमुख आए घर साचे वस्सया, जन्म मरन प्रभ दोए संवारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान पूरन जोत मात अवतारा। पूरन जोत पूरन भगवाना। राउ रंक इक्क रंग समाना। थाउँ बंक सुहाना। साचा अंक सोहँ शब्द चलाना। वजाना डंक उठाए राउ रंक, बैठे आप अटंक, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। बैठे अटंक वासी पुरी घनक। गुरमुख उठाए शब्द लगाए तनक। गुरसिख तराए जिउँ भगत जनक। आदि जुगादि जुगो जुग मात जोत प्रगटाए बार अनक। अनक बार जोत प्रगटाई। चार वेद कथन ना जाई। अकथ्थ कथा रहे कथाई। सच वस्त किसे हत्थ ना आई। इक्का असत इक्क रथवाही। एका वस्त सर्ब टिकाई। बैठे मस्त साची जोत डगमगाई। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करोड़ तेतीस दिवस रैण रहे बिल्लाई। करोड़ तेतीस देवत सुर। मंगण दरस हरि साचे घर। ना मिटे हरस, आत्म फुरना रिहा फुर। प्रभ अबिनाशी कर तरस, तेरी चरनी गए जुर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां मेल मिलाए लिख्या धुर। लिख्या लेख सच दरबार। गुरमुख साचे वेख बांहों पकड़ कलि जाए तार। आपे कढ्ढे भरम भुलेखा, साचा शब्द देवे उडार। सृष्ट सबाई वेखा वेखी, गुरमुख पूरा करे चरन निमस्कार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा रंग देवे करतार। साचा रंग नाम चलूल। गुरमुख साचे कलिजुग ना जाणा भूल। प्रभ अबिनाशी जोत प्रगटाई हरि साचा कन्त कन्तूल। साचे घर दे पुचाई, सच पंघूड़ा शब्द झूल। आत्म वज्जे सच वधाई, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सोहँ देवे साचा मूल।

* * * * *
* * * * *
* * * * *
* * * * *